मतिवा ४ ? गोयमा ! वेमायाए आणमतिवा ४ ॥ एवं जाव मणुस्सा ॥ वाणमतरा जहा नागकुमारा ॥ जोइसियाण भंते ! केवइकालस्स आणमतिवा ४ ? गोयमा ! जहण्णेण मुहुत्त पहुत्तस्स उक्कोसेणवि मुहुत्तपुहुत्तस्स आणमंतिवा ४ ॥ वेमाणियाण भंते ! केवइकालस्स आणमतिवा ४ ? गोयमा ! जहण्णेण मुहुत्तपुहुत्तस्स, उक्कोसेण तेत्तीसाए पक्खाण आणमतिवा ४ ॥ सोहम्मग देवाण भंते ! केवइ कालस्स आणमंति ४ ? गोयमा ! जहण्णेण मुहुत्तपुहुत्तस्स उक्कोसेण दोण्हपक्खाण आणमतिवा ४ ॥ ईसाणगदेवाण भंते ! केवइकालस्स आणमंतिवा ४ ॥ गोयमा ! जहण्णेण साइरेगस्स मुहुत्तपुहुत्तस्स उक्कोसेण साइरेगाणं दोण्ह पक्खाण आणमतिवा ४॥

श्वासोश्वास लेते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य सात स्तोक में उत्कृष्ट मुहूर्त पृथक्त्व में (दो मुहूर्त से नव मुहूर्त तक में क्यों कि इन का जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट पल्योपम का ही आयुष्य होता है) जैसा नाग कुमार का कहा वैसा ही यावत् स्तनित कुमार तक का कहना ऐसे ही आगे भी प्रश्नोत्तर सर्व स्थान

जहां दुःख है वहां श्वासोश्वास की अधिकता है और सुख अधिक है वहां श्वासोश्वास की अल्पता है इसलिये देवता में जितने सागरोपम का आयुष्य होता है उतने पक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं

सणकुमाराण देवाण भते ! केवइकालस्स आणमतिवा ४ ? गोयमा ! जहण्णेण दोण्हं पक्खाण उक्कोसेणं सत्तण्हं पक्खाण आणमतिवा ५ ॥ माहिंदग देवाणं भते ! केवइकालस्स आणमतिवा ४ ? गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगाण दोण्ह पक्खाण उक्कोसेण साइरेगाण सत्तण्हं पक्खाणं आणमतिवा॥ बभलोय देवाण भते ! केवइकालस्स आणमतिवा ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तण्हं पक्खाण, उक्कोसेण दसण्ह पक्खाण आणमंतिवा ॥ लंतग देवाण भते ! केवइ कालस्स आणमतिवा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसण्ह पक्खाण, उक्कासेणं चउद्दसण्हं पक्खाण आणमतिवा ४ ॥ महा सुक्क देवाण भते ! केवइ कालस्स आणमतिवा ४ ? गोयमा ! जहण्णेण चउद्दसण्ह

जानना अहो भगवन् ! पृथ्वीकायिक जीवों कितने काल में श्वासोश्वास लेते हैं ? अहो गौतम ! वेमाया अर्थात् समान रहित श्वासोश्वास लेते हैं जैसा पृथ्वीकाया का कहा तैसा ही पांचों स्थावर तीनों विकलेन्द्रिय तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य तक कहना वाणव्यन्तर का जैसा नागकुमार देवों का कहा वैसा कहना अर्थात् जघन्य सात स्तोक में उत्कृष्ट मुहूर्त पृथक्त्व में ज्योतिषी जघन्य और उत्कृष्ट मुहूर्त पृथक्त्व में ही श्वासोश्वास लेते हैं* समुच्चय वैमानिक देवता जघन्य मुहूर्त पृथक्त्व में उत्कृष्ट तेंतीस पक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं और विशेष से–१ सो

* जघन्य दो की संख्या से लगाकर उत्कृष्ट ९ तक संख्या को पृथक्त्व कहते हैं

पक्खाणं उक्कोसेणं सत्तरसण्हं पक्खाणं आणमंति वा ४ ॥ सहस्सारग
देवाणं भंते! केवइकालस्स आणमंति वा ४? गोयमा!
जहण्णेणं सत्तरसण्हं पक्खाणं उक्कोसेणं अट्ठारसण्हं पक्खाणं आणमंति वा ४ ॥
आणयदेवाणं भंते! केवइकालस्स आणमंति वा ४? गोयमा! जहण्णेणं अट्ठार
सण्हं पक्खाणं उक्कोसेणं एगूणवीसाए पक्खाणं आणमंति वा ४ ॥ पाणयदेवाणं भंते!
केवइकालस्स आणमंति वा ४? गोयमा! जहण्णेणं एगूणवीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं
वीसाए पक्खाणं आणमंति वा ४ ॥ आरणदेवाणं भंते! केवइकालस्स आणम
ति वा ४? गोयमा! जहण्णेणं वीसाए पक्खाणं उक्कोसेणं एक्कवीसाए पक्खाणं
आणमंति वा ४ ॥ अच्चुयदेवाणं भंते! केवइकालस्स आणमंति वा ४? गोयमा! जहण्णेणं
एक्कवीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं बावीसाए पक्खाणं आणमंति वा ४ ॥ हेट्ठिम हेट्ठिम

पहेले देवलोक के देव जघन्य मुहूर्त पृथक्त्व में उत्कृष्ट एक पक्ष में २ ईशान देवलोक के देव जघन्य कुछ
अधिक मुहूर्त पृथक्त्व में उत्कृष्ट कुछ अधिक दो पक्ष में, सनत्कुमार देवलोक के देव जघन्य दो पक्ष में
उत्कृष्ट सात पक्ष में, ४ माहेन्द्र देवलोक के देव जघन्य कुछ अधिक दो पक्ष में उत्कृष्ट कुछ अधिक सात
पक्ष में ५ ब्रह्मदेवलोक के देव जघन्य सात पक्ष में उत्कृष्ट दश पक्ष में ६ लांतक देवलोक के देव जघन्य
दश पक्ष में उत्कृष्ट चौदह पक्ष में ७ महाशुक्र देवलोक के देव जघन्य चौदह पक्ष में उत्कृष्ट सत्तरह पक्ष में

गविज्जगदेवाण भते! केवइकालस्स आणमतिवा ४?गोयमा!जहण्णेणं बावीसाए पक्खाणं उक्कोसेण तेवीसाए पक्खाण आणमतिवा ४॥ हेट्ठिम मज्झिम गेविज्जग देवाण भते! केवइ कालस्स आणमतिवा ४?गोयमा!जहण्णए तेवीसाए पक्खाण उक्कोसेण चोवीसाए पक्खाण आणमतिवा ४॥ हेट्ठिम उवरिम गविज्जग देवाण भते! केवइकालस्स आणमतिवा ४? गोयमा! जहण्णेण चोवीसाए पक्खाण उक्कोसेण पणवीसाए पक्खाण आणमतिवा ४॥ मज्झिम हेट्ठिम गेविज्जग देवाण भत! केवइकालस्स आणमतिवा ४? गोयमा! जहण्णेण पणवीसाए पक्खाण, उक्कोसेण छव्वीसाए पक्खाण आणमतिवा ॥ मज्झिम मज्झिम गेविज्जग देवाण भंत! केवइ कालस्स आणमतिवा ४ गोयमा! जहण्णेण छव्वीसाए पक्खाण, उक्कोसेण सत्तावीसाए पक्खाण आणमतिवा ४॥ मज्झिम

८ सहस्रार देवलोक के देव जघन्य सतरह पक्ष में उत्कृष्ट अठारा पक्ष में, ९ आणत देवलोक में जघन्य अठारापक्षमें उत्कृष्ट उन्नीस पक्षमें, १० प्राणत देवलोकके देव जघन्य उन्नीस पक्षमें उत्कृष्ट वीस पक्ष, में ११ आरण देवलोक के देव जघन्य वीस पक्षमें उत्कृष्ट इक्कीस पक्षमें, १२ अच्युत देवलोक के देव जघन्य इक्कीस पक्ष में उत्कृष्ट बावीस पक्ष में नीचे के ग्रैवेयक के देव जघन्य बावीस पक्ष में उत्कृष्ट तेवीस पक्ष में, नीचे के बीच के ग्रैवेयक के देव जघन्य तेवीस पक्ष में उत्कृष्ट चौवीस पक्ष में. नीचे के ऊपर के ग्रैवेयक के देव

उवरिमगेविज्जग देवाण भंते ! केवइकालस्स आणमतिवा ४ ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तावीसाए पक्खाण,उक्कोसेण अट्ठावीसाए पक्खाण आणमतिवा ४ ॥ उवरिम हेट्ठिम गेविज्जग देवाण भंते ! केवइय कालस्स आणमतिवा ४ ? गोयमा ! जहण्णेण अट्ठावीसाए पक्खाण, उक्कोसेण एगूणतीसाए पक्खाण आणमतिवा ४ ॥ उवरिम मज्झिम गेविज्जग देवाण भंते ! केवइ कालस्स आणमतिवा ४ ? गोयमा ! जहण्णेण एगूणतीसाए पक्खाण, उक्कोसेण तीसाए पक्खाणं आणमतिवा ४ ॥ उवरिमं उवरिम गेविज्जग देवाण भंते ! केवइकालस्स आणमतिवा ४ ? गोयमा ! जहण्णेण तीसाए पक्खाण, उक्कोसेण एकतीसाए पक्खाण आणमतिवा ४॥

जघन्य चोवीस पक्ष में उत्कृष्ट पचीस पक्ष में, बीच के नीचे के ग्रैवेयक के देव जघन्य पचीस पक्षमें उत्कृष्ट छब्बीस पक्ष में, बीच के बीच के ग्रैवेयक के देव जघन्य छब्बीस पक्ष में उत्कृष्ट सत्तावीस पक्ष में, बीच के ऊपर के ग्रैवेयक के देव जघन्य सत्तावीस पक्ष में उत्कृष्ट अट्ठावीस पक्ष में ऊपर के नीचे के ग्रैवेयक में जघन्य अट्ठावीस पक्षमें उत्कृष्ट गुनतीस पक्षमें, ऊपर के बीच के ग्रैवेयक में जघन्य गुनतीस पक्ष में उत्कृष्ट तीस पक्ष में, ऊपर के ऊपर के ग्रैवेयक में जघन्य तीस पक्ष में उत्कृष्ट एकतीस पक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं

श्वासोश्वास के प्रमाण का यत्र

स्थान	नरक	असुरकुमार	नवनीकाय	५ स्थावर तीन विकलेन्द्रिय तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य	व्यन्तर	ज्योतिषी	वैमानिक	सौधर्म	ईशान
जघन्य	अममान	७ स्तोक	७ स्तोक		७ स्तोक	पृथक्त्व मुहूर्त	पृथक्त्व मुहूर्त	पृथक्त्व मुहूर्त	पृथक्त्व मुहूर्त अधिक
उत्कृष्ट	०	१ पक्ष	पृथक्त्व मुहूर्त	जघन्योत्कृष्ट विषम मात्रा	पृथक्त्व मुहूर्त	पृथक्त्व मुहूर्त	११ पक्ष	२ पक्ष	२ पक्ष अधिक

सन०	माहेन्द्र	ब्रह्म	लान्तक	शुक्र	सह०	आन	प्राण	आर	अच्यु	भद्र	सुभद्र	सुजा०	सुमन
२ पक्ष	२ पक्ष अधिक	७ पक्ष	१०	१४	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
७ पक्ष	७ पक्ष अधिक	१० पक्ष	१४	१७	१८	१०	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६

प्रियदर्श	सुदर्श	अमोह	यशोधर	प्रतिबद्ध	विजय	विजयंत	जयंत	अपराजित	सर्वार्थ सिद्ध
२५	२७	२८	२	३०	३१	३१	३१	३१	३३
२७	२८	२९	३	३१	३३	३२	३३	३३	३३

विजय वेजयंत जयंत अपर जित विमाणसु देवाणं भंते ! केवइकालस्स आणमंतिवा ४ ? गोयमा ! जहण्णेणं एकत्तीसाए पक्खाणं उक्कोसेणं तेत्तीसाए पक्खाणं आण मंतिवा ४ ? सव्वट्ठसिद्धग देवाणं भंते ! केवइ कालस्स आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा ? गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसेणं तेत्तीसाए पक्खाणं आण मंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा ॥ इति पण्णवणाए भगवईए ऊसासपयं॥७॥

विजय वैजयंत जयंत और अपराजित इन चार विमान के देवता जघन्य एकतीस पक्ष में उत्कृष्ट तेतीस पक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं और सर्वार्थ सिद्ध विमान के देवता अजघन्योत्कृष्ट तेतीस पक्ष में श्वास प्राण श्वासोश्वास लेते हैं इति प्रज्ञापना भगवती का श्वासोश्वास नामक सातवा पद समाप्त ॥ ७ ॥

❋ अष्टम सज्ञा पदम् ❋

कइण भंते ! सण्णाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! दस सण्णाओ पण्णत्ताओ तंजहा आहार सण्णा, भयसण्णा, मेहुण सण्णा, परिग्गह सण्णा, कोहसण्णा, माणसण्णा।

अब आठवा सज्ञा पद कहते हैं अहो भगवन् ! कितनी सज्ञा कही है ? अहो गौतम ! दस सज्ञा कही है उन के नाम—१ आहार सज्ञा, २ भय सज्ञा, ३ मैथुन सज्ञा, ४ परिग्रह सज्ञा ५ क्रोध सज्ञा, ६ मान सज्ञा, ७ माया सज्ञा, ८ लोभ सज्ञा, ९ लोकसज्ञा और १० ओघसंज्ञा ॥ सज्ञा की व्याख्या वेदनीय और मोहनीय कर्म के उदय कर तथा ज्ञानावरणिय दर्शनावरणिय के क्षयोपशमकर विचित्र प्रकार की इच्छा का जिस समय में उद्भव होवे उसे सज्ञा कही जाती है १ क्षुधा वेदनी के उदयकर उस के उपशमनेरूप पुद्गलों के ग्रास सयोग का चितवन वह आहार सज्ञा, २ भयमोहनीय कर्मोदय दृष्टी मुख रोमावली का उद्भवनरूप क्रिया वह भय सज्ञा ३ चारित्र मोहनीय के उदय स्त्री पुरुष नपुंसकादि के सम्बन्ध का चितवन वह मैथुन सज्ञा, ४ परिग्रह मोहनीय के उदय सचित्त अचित्त मिश्र वस्तु के सग्रह का चितवन वह परिग्रह सज्ञा, ५ क्रोधमोहनीय उदय मुखनत्रादि का चेष्टा का पलटना वह क्रोध सज्ञा, ६ मान मोहनीय उदय अहंकार कर आत्मोत्करूप पना वह मान सज्ञा, ७ माया मोहनीय के उदय परिणामों की संक्लिष्टता

मायासण्णा, लोभसण्णा, लोगसण्णा ओघसण्णा ॥ नेरइयाण भंते ! कइसण्णाओ पण्णत्ताओ? गोयमा ! दस सण्णाओ पण्णत्ताओ तंजहा आहार सण्णा जाव ओघसण्णा असुरकुमाराण भंते ! कइसण्णाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! दस सण्णाओ पण्णत्ताओ तंजहा आहारसण्णाओ जाव ओघसणा, एव जाव थणिय कुमाराण,॥एव पुढवी काइयाणं जाव वेमाणियावसाणाण णेयव्व ॥ नेरइयाण भंते ! किं आहारसण्णोवउत्ता, भयसण्णोवउत्ता, मेहुणसण्णोवउत्ता परिग्गहसण्णोवउत्ता ? गोयमा! उसण्ण कारणं पडुच भयसण्णोवउत्ता, संतइभावपडुच आहारसण्णोवउत्तावि जाव परिग्गह सणोवउत्तावि ॥ एएसिण भंते ! नेरइयाण आहार सण्णोवउत्ताण

वह माया संज्ञा, ८ लोभ मोहनीय के उदय आस्त्रि से अधिक सचित्तादि परिग्रह की चाहना वह लोभ संज्ञा, ९ मतिज्ञान के क्षयोपशम से जो घट पटादि विचार वह लोक संज्ञा, और १० सम्यक् दर्शन के अवधापकर सामान्यपने घट पटादि का ग्रहण जैसे यथा किसी पदार्थ को देखा देखी ग्रहण तो करता है परन्तु उसको पिछानता नहीं है वैसे होवे वह ओघसंज्ञा अहो भगवन् ! नरक के जीवके कितनी संज्ञा पाती है? अहो गौतम ! दश ही संज्ञा होती है उन के नाम—१ आहार संज्ञा २ भय संज्ञा ३ मैथुन संज्ञा ४ परिग्रह संज्ञा ५ क्रोध संज्ञा ६ मान संज्ञा ७ माया संज्ञा ८ लोभ संज्ञा ९ लोक संज्ञा और १० ओघ संज्ञा

भयसण्णो वउत्ताण, मेहुण सण्णोवउत्ताण, परिग्गह सण्णोवउत्ताण कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा नेरइया मेहुणसण्णोवउत्ता, आहारसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, परिग्गहसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, भयसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा॥ तिरिक्खजोणियाण भंते! आहार सण्णोवउत्ताणं जाव परिग्गहसण्णोवउत्ताण कयरे २ जाव विसेसाहिया ? गोयमा! उसण्णं कारण पडुच्च आहार सण्णोवउत्ता सतइ

अहो भगवन् ! असुर कुमार में कितनी संज्ञा ? अहो गौतम ! दश ही संज्ञा पाती है उन के नाम—आहार संज्ञा यावत् ओघ संज्ञा जैसा असुर कुमार का कहा वैसा ही नाग कुमार आदि नव ही भुवनपति देव का मानना ऐसे ही पृथ्वीकायादि पांच स्थावर में भी दश ही संज्ञा जानना यावत् वैमानिक पर्यन्त चौवीस ही दंडक में दश ही संज्ञा मानना

इन में से त्रसजीवों में तो दश ही संज्ञा व्यक्त प्रगट है और स्थावरों में दश ही संज्ञा अव्यक्त है, जैसे १ वृक्षादि वनस्पति पानी आदि का आहार ग्रहण कर वह आहार संज्ञा, २ लज्जालु आदि भय भीत हो शरीर को संकोचे वह भय संज्ञा ३ तारुण्यपने मंजरी आदि के प्रकार प्रगट (पुष्प चिन्ह देखावे) मैथुन संज्ञा, ४ पत्रादि कर फलादि को गुप्त करे वह परिग्रह संज्ञा, ५ छेदनादि करसे कुमलानादि हो वह क्रोध संज्ञा, ६ तारुण्यपन में सुशोभित रहे वह मान संज्ञा, ७ अपने फलादि को पत्रादि से छिपावे वह माया संज्ञा, ८ फल पत्रादि से भार भूत होते भी हरीभरी रहे वह

माव पहुच आहारसण्णो वउत्तावि जाव परिग्गह सण्णोवउत्तावि ॥ एएसिण भते ! तिरिक्खजोणियाण आहारसण्णोवउत्ताण जाव परिग्गहसण्णोवउत्ताण कयरे २ हिंतो विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तिरिक्ख जोणियाण परिग्गह सण्णोवउत्ता, मेहुणसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, भयसण्णोवउत्ता संखिज्जगुणा, आहारसण्णो वउत्ता संखज्जगुणा ॥ मणुस्साण भते ! किं आहारसण्णोवउत्ता जाव परिग्गह सण्णोवउत्ता ?

अहो भगवन् ! तिर्यंच क्या आहार संज्ञावाले हैं कि भय संज्ञावाले हैं कि मैथुन संज्ञावाले हैं कि परिग्रह संज्ञावाले हैं ! अहो गौतम ! कृष्णता कर अर्थात् भद्री भयरूपने करके पाषु सतापन कर तो भय संज्ञावाले बहुत हैं क्यों कि यहां पर पार्थिव का प्रयोग है यहां धन करके कुंवादि का भय है अन्य ... शस्त्रादि का प्रयाग कर भय की बहुलता है और आस्ति माष करके अर्थात् मगर अनभम ... , आहार आदिक चार संज्ञावाले हैं अहो भगवन् ! इन आहार संज्ञावाले

लोम संज्ञा, ९ स...प समपा कृष्ण के पत्र संकोच पावे सूर्य चद्र का उदय हुवे सूर्य विकासी चन्द्र विकासी कमलादि विकसायमान होवे यह लोक संज्ञा और १० मार्गादि में जाति वेलडी चढकर वृक्षादि को ग्रहण करे वह ओघ संज्ञा इस प्रकार स्थावरों में लक्षण कर देखी ही संज्ञा का प्रमान होता है यों त्रस में व्यक्त और स्थावर में अव्यक्त रूप लेखाय यह संज्ञा कही।

गोयमा! उसण्णंकारणं पडुच्च मेहुणसण्णोवउत्ता, सन्तइभावं पडुच्च आहारसण्णोवउत्तावि जाव परिग्गहसण्णोवउत्तावि ॥ एएसिणं भंते! मणुस्साणं आहारसण्णोवउत्ताणं जाव परिग्गहसण्णोवउत्ताणय कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा! सव्वत्थोवा मणुस्सा भयसण्णोवउत्ता आहारसण्णोवउत्ता संखिज्जगुणा,

में भय संज्ञावाले में मैथुन संज्ञावाले में और परिग्रह संज्ञावाले में कौन २ अल्प है, बहुत है, तुल्य है, या अधिक है? अहो गौतम! सब से थोडे मैथुन संज्ञावाले हैं, क्यों कि नरक में चक्षुइन्द्रिय की मात्र स्पर्श नहीं है, मात्र मन ही के योग से कुच्छ इच्छा मात्र मैथुन संज्ञा होती है उस से आहार संज्ञा वाले संख्यातगुन क्यों कि वहां इच्छित आहार का अभाव होने से अनंत क्षुधा की आवश्यकता से आहार संज्ञा अधिक है, उन से परिग्रह संज्ञा संख्यातगुनी है क्यों कि आहार का तो वहां कुछ नहीं किन्तु शरीर स्थानादिक का सम्बन्ध है उस के रक्षण में इच्छा अधिक है, और उस से भयसंज्ञा संख्यातगुनी है क्यों कि सदैव मरणान्त पर्यन्त वे भयभीतही रहते हैं ॥ अहो भगवन्! तिर्यंच योनिक क्या आहार संज्ञा वाले हैं कि भयसंज्ञा वाले हैं मैथुन संज्ञा वाले हैं कि परिग्रह संज्ञावाले हैं? अहो गौतम! बाहुल्य तारक्त आहार संज्ञा वाले बहुत हैं और विधानभाव करके आहार आदिक चारोंसंज्ञा वाले हैं? अहो भगवन्! तिर्यंच योनिक में इन आहार आदिक चारों संज्ञा में से किस संज्ञा वाले अल्प हैं, ज्यादा हैं

परिग्गहसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, मेहुणसण्णोवउत्ता संखिज्जगुणा ॥ देवाणं भंते ! किं आहारसण्णोवउत्ता जाव परिग्गह सण्णोवउत्ता ? गोयमा ! उसण्णंकारणं पडुच्च परिग्गहसण्णोवउत्ता, संतइभावं पडुच्च आहारसण्णोवउत्तावि जाव परिग्गह सण्णोवउत्तावि ॥ एएसिणं भंते ! देवाणं आहारसण्णोवउत्ताणं जाव परिग्गहसण्णोवउत्ताणं

तुल्य है व अधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे परिग्रह संज्ञा वाले क्यों कि पशुवत्कर ममता कम है, उस से मैथुन संज्ञा वाले संख्यात गुने क्यों कि परिग्रह से मैथुन का काल उन का संख्यातगुना है, उस से भयसंज्ञा वाले संख्यातगुने क्योंकि पराधिनताकर भयकी अधिकता है और उससे आहार संज्ञा वाले संख्यात गुने हैं क्यों कि तिर्यंच के क्षुधावेदनीय का उदय की आवश्यकता है और इच्छित आहार का सम्बन्ध यहां है ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य आहार संज्ञा वाले हैं कि यावत् परिग्रह संज्ञा वाले हैं ? अहो गौतम ! मनुष्य में बाहुल्यता करके मैथुन संज्ञावाले अधिक हैं क्यों कि मनुष्यपने में मोहकी आवश्यकता अधिक रहती हैं विद्यमान भावकर आहार आदि चारों संज्ञावाले हैं ॥ अहो भगवन् ! इन आहार संज्ञा यावत् परिग्रह संज्ञा वाले मनुष्य में कौन २ किस से अल्प हैं ज्यादा है तुल्य है या विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सबसे थोडी भयसंज्ञा है क्यों कि स्वाधिनता की बहुल्य है तथा ज्ञान की भी अधिकता है, उस से आहार संज्ञा संख्यातगुनी क्षुधा की आवश्यता है, उस से परिग्रह संज्ञा संख्यात गुनी क्यों कि

कयरे २ अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा देवा आहारसण्णोवउत्ता, भयसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, मेहुणसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, परिग्ग हसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा ॥ इति पण्णवण्णाए भगवईए सण्णापयं अट्ठम सम्मत्तं ॥८॥

कुटुम्ब धन गृहादि पर ममत्व अधिक है, और उस से मैथुन संज्ञा संख्यात गुनी ॥ अहो भगवन् ! देवता आहार संज्ञावाले हैं कि यावत् परिग्रह संज्ञावाले हैं ! अहो गौतम ! बाहुल्यता करके परिग्रह संज्ञा वाले हैं क्यों कि यहां वैभव परिवारादि परिग्रह की बाहुल्यता है, सन्तीभाव करके आहार आदिक चारों संज्ञावाले हैं ॥ अहो भगवन् ! देवता में आहार आदि चारो संज्ञा में से कौन २ सी संज्ञा वाले कमी है, ज्यादा हैं, तुल्य हैं अधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे आहार संज्ञा वाले क्यों कि यहां क्षुधा वेदनीयका उदयमंद है, इच्छा होवे तृप्त होजाते हैं, उस में भयसंज्ञा वाले संख्यात गुने आभोगी देवता आदिको इन्द्रादिका भय अधिक रहता है, उस से मैथुन संज्ञावाले संख्यात गुने क्यों अग्रमहिषी आदिका परिवार भी अधिक है और भोगकाल भी अधिक है और उस से परिग्रह संज्ञा वाले संख्यात गुन ॥ इति पनवणा भगवति का संज्ञा नामक आठम पद समाप्तम् ॥ ८ ॥

॥ नवम योनि पदम् ॥

कइविहाणं भंते ! जोणी पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा जोणी पण्णत्ता ? तंजहा सीयाजोणी, उसिणाजोणी, सीओसिणा जोणी ॥ १ ॥ नरइयाणं भंते ! किं सियाजोणी उसिणाजोणी सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! सीयावि जोणी, उसिणावि जोणी, नो

अब नववा योनि पद कहते हैं जीव का अनादि सम्बन्धी तेजस कार्माण शरीर जब औदारिक वैक्रेय शरीरपन परिणमता है तब इन शरीर के पुद्गल स्कंध का समुदाय मिल कर मिश्रित होता है उस उत्पत्ति स्थान को योनि कहते हैं अहो भगवन् ! योनि कितने प्रकार की कही है ? अहो गौतम ! योनि तीन प्रकार की कही है उन के नाम—१ शीत योनि सो उत्पत्ति स्थान शीतल होवे, २ उष्ण योनि सो उत्पत्ति स्थान उष्ण होवे, और ३ शीतोष्ण योनि सो उत्पत्ति स्थान शीतोष्ण दोनों स्पर्शमय (मिश्र) होवे ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नेरीये क्या शीत योनिये हैं कि उष्ण योनिये हैं कि शीतोष्ण योनि हैं ? अहो गौतम ! नेरिये शीत योनिये भी हैं, उष्ण योनिये भी हैं परंतु शीतोष्ण योनिये नहीं हैं रत्नप्रभा, शर्करप्रभा और वालुकप्रभा इन तीनों नारकी के उत्पत्ति स्थान शीत स्पर्श कर परिणमित हैं, और उत्पत्ति स्थान छोड कर अन्य स्थान उष्ण स्पर्श कर परिणमित है, इस लिये उन शीत योनिक उत्पादक नेरियों को उष्ण की महा वेदना होती है चौथी पंकप्रभा नरक में उत्पत्ति स्थान शीत स्वभावमय

सीओसिणाजोणी ॥२॥ असुरकुमाराणं भंते ! किं सीयाजोणी उसिणा जोणी, सीओ सिणाजोणी ? गोयमा ! नो सीयाजोणी नो उसिणाजोणी, सीओसिणाजोणी ॥ एवं जाव थणियकुमाराणं ॥३॥ पुढविकाइयाणं भंते ! किं सीयाजोणी उसिणाजोणी सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! सीयाविजोणी, उसिणाविजोणी सीओसिणाविजोणी ॥४॥ एवं आऊ, वाऊ, वणस्सइ, बेइंदिया, तेइंदिया चउरिंदियाणेवि पत्तेय२ भाणियव्वं॥५॥ तेउकाइयाणं भंते ! किं सीयाजोणि उसिणाजोणि, सीओसिणाजोणी ? गोयमा !

परिणमित बहुत हैं और उष्ण स्वभाव परिणमित थोडे हैं, जहां शीतोत्पत्ति स्थान हैं वहां नेरीये के रहने का उष्ण परिणाम परिणमित क्षेत्र है और जहां उष्णोत्पत्ति स्थान है वहां नेरीयों का शीत क्षेत्र है, पांचवी धूम्र प्रभा में उत्पत्ति स्थान उष्णस्वभाव परिणमित बहुत हैं और शीत स्वभाव परिणमित थोडे हैं, वगैरह उक्त प्रमाण, और छठी तम प्रभा सातवी तमतम प्रभा में उत्पत्ति स्थान उष्ण स्वभाव परिणमित हैं, और नरक के शीत की वेदना है उष्णता में शीत की वेदना अधिक होती है ॥२॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार देवता क्या शीत योनिक हैं कि उष्ण योनिक हैं कि शीतोष्ण योनिक हैं ? अहो गौतम ! शीत योनिक और उष्ण योनिक नहीं है परंतु शीतोष्ण योनिक है क्यों कि देवता में शीतोष्ण की वेदना नहीं है असुर कुमार के जैसा ही यावत् स्तनित कुमार तक कहना ॥३॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया क्या शीत योनिक है उष्ण योनिक है कि शीतोष्ण योनिक है ? अहो गौतम ! तीनों प्रकार की योनिवाले

णा सीयाजोणी उसिणाजोणी, णा सीओसिणाजोणी ॥६॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाण भंते ! किं सीयाजोणी उसिणाजोणी सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! सीयाविजोणी, उसिणाविजोणी, सीओसिणाविजोणी ॥ सम्मुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणवि एवंचेव ॥ गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाण भंते ! किं सीयाजोणी, उसिणाजोणी, सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! नो सियाजोणी ना उसिणाजोणी, सीओसीणाजोणी ॥ ७ ॥ मणुस्साण भंते ! किं सीयाजोणी, उसिणाजोणी, सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! सीयाविजोणी उसिणाविजोणी, सीओसिणाविजोणी ॥ सम्मुच्छिम मणुस्साण भंते ! किं सीताजोणी उसिणाजोणी सीतोसिणाजोणी ? गोयमा ! तिविहाजोणी ॥

है ॥८॥ ऐसे ही अप्काय वायुकाय वनस्पतिकाय बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय का भी असन्नीमनुष्य सब में तीनों प्रकार की योनि पाती है ॥ ॥ तेउकाय शीत योनिक और शीतोष्ण योनिक नहीं है परंतु उष्ण योनिक है ॥९॥ अहो भगवन् ! पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक क्या शीत योनिक है कि उष्ण योनिक हैं कि शीतोष्ण योनिक हैं ? अहो गौतम ! तीनों प्रकार की योनिवाले हैं समूर्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय का ऐसे ही जानना गर्भजतिर्यंच पंचेन्द्रिय शीत योनिक और उष्णयोनिक नहीं हैं परंतु शीतोष्ण (मिश्र) योनि-

गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं भंते ! किं सीयाजोणी उसिणाजोणी, सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! नो सीयाजोणी नो उसिणाजोणी, सीओसिणाजोणी ॥८॥ वाणमंतर देवाणं भंते ! किं सीयाजोणी उसिणाजोणी सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! नो सीयाजोणी नो उसिणाजोणी, सीओसिणाजोणी ॥ जोइसिय वेमाणियाणवि एवंचेव ॥९॥ एएसिणं भंते ! जीवाणं सीयाजोणियाणं, उसिणाजोणियाणं, सीओसिणा जोणियाणं, अजोणियाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुआवा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा

है ॥७॥ अहो भगवन् ! मनुष्य क्या शीत योनिक है उष्ण योनिक हैं कि शीतोष्ण योनिक हैं ? अहो गौतम ! तीनों प्रकार के हैं ऐसे ही संमूर्च्छिम मनुष्य का तीनों प्रकार की योनि जानना और गर्भज मनुष्य शीत योनिक उष्ण योनिक नहीं है परंतु शीतोष्ण (मिश्र) योनिक हैं ॥८॥ वाणव्यन्तर ज्योतिषी और वैमानिक देव भी शीत और उष्ण योनिक नहीं परंतु एक शीतोष्ण योनिक है ॥९॥ अहो भगवन् ! इन शीत योनिक उष्ण योनिक शीतोष्ण योनिक और अयोनिक में अल्प, बहुत, तुल्य व विशेष कौन २ हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे जीवों शीतोष्ण योनिक, क्यों कि चारों जाति के देवता गर्भज मनुष्य और तिर्यंच तथा कितनेक चार स्थावर तीन विकलेन्द्रिय असंज्ञी तिर्यंच, मनुष्य इनमें ही योनी है, २ उससे उष्णयोनिक असंख्यातगुने, क्यों कि तेउकाय तो त्रसकाय से अधिक ही है और कितनी नरक और कितनेक चार स्थावर विकलेन्द्रिय

जीवा सीओसिणजोणिया, उसिणजोणिया असंखेज्जगुणा, अजोणिया अणंतगुणा, सीय जोणिया अणंतगुणा॥ १ ॥कइविहाणं भंते! जोणी पण्णत्ता? गोयमा! तिविहा जोणी पण्णत्ता ? तंजहा सचित्ताजोणी अचित्ताजोणी मीसिया जोणी॥ १ १॥नेरइयाणं भंते! किं सचित्ताजोणी अचित्ताजोणी मीसिया जोणी ? गोयमा! नो सचित्ता जोणी अचित्ताजोणी णो मीसियाजोणी॥ १ २॥असुरकुमाराणं भंते! किं सचित्ताजोणी अचित्ताजोणी, मिसियाजोणी ? गोयमा! नो सचित्ताजोणी, अचित्ताजोणी, नो

असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय मनुष्य इस में हैं १ उस से अयोनिक अनंत गुन सिद्ध भगवंत और उस से शीत योनिक अनंतगुन क्यों कि निगोदिये सब शीत योनिक हैं ॥ और भी योनी का पूछते हैं ॥ अहो भगवन्! योनि कितने प्रकार की कही है ! अहो गौतम! योनि तीन प्रकार की कही है उस के नाम १ सचित्त योनी, जो जीव के सम्बन्ध सहित होवे २ अचित्त योनि सो जीव के सम्बन्ध रहित होवे, और ३ मिश्र योनि सो जीव अजीव के प्रदेशों की मिश्रता कर होवे॥११॥अहो भगवन्! नरक की क्या सचित्तयोनी है कि अचित्तयोनी है कि मिश्रयोनी है ? अहो गौतम! सचित्त और मिश्रयोनी नहीं है परंतु एक अचित्त योनि है, यद्यपि एकेन्द्रिय जीव सर्व लोक व्यापी हैं तथापि योनि स्थान उस सम्बन्ध से रहित है अहो भगवन्! असुर कुमार क्या सचित्त योनिक है कि अचित्त योनिक हैं कि मिश्र योनिक

मीसियाजोणी, एव जाव थणियकुमाराण पुढविकाइयाण भंते ! किं सचित्ताजोणी, अचित्ताजोणी, मीसियाजोणी ? गोयमा ! सचित्ताविजोणी, अचित्ताविजोणी, मीसियाविजोणी ॥ एव जाव चउरिंदियाण ॥ सम्मुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं सम्मुच्छिम मणुस्साणय एवचेव॥१२॥ गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाण गब्भ वक्कंतिय मणुस्साणय नो सचित्ताजोणी,नो अचित्ताजोणी मीसियाजोणी,॥१३॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणियाण जहा असुरकुमाराण ॥१४॥ एएसिण भंते ! जीवाण सचित्ता

है ! अहो गौतम ! सचित्त और मिश्र योनिक नहीं है परंतु अचित्त योनिक है ऐसे ही स्थनित कुमार पर्यंत मानना अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया क्या सचित्त योनिक है अचित्त योनिक है मिश्र योनिक है ? अहो गौतम ! तीनों प्रकार की योनि पाती है क्यों कि सचित्त योनि तो इस प्रकार है कि त्रस स्थावर दोनों के शरीर में पृथ्वीकाया की उत्पत्ति होती है जैसे सीप के जीव बेन्द्रिय उस के उदर में मोती पृथ्वीकाया उत्पन्न होवे एस ही सर्प के मस्तक की मणि, मनुष्य के मस्तक की मणि, मनुष्य के पेट की पत्थरी, मगर मच्छ के दाढ में तथा मस्तक में मोती सूअर के दाढ में मणि, गज के मस्तक के मोती यह सब पृथ्वीकाया मानना वैसे ही पृथ्वी पर्वत भवन विमानादि ये स्थान सचित्त मानना, ऐसे ही पानी से निपक उत्पन्न होवे ऐसे ही पानी भी पानी में उत्पन्न होवे नगरादि के मिश्र पानी में

जोणियाण, अचित्तजोणियाण मीसिय जोणियाण अजोणियाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा मीसजोणिया अचित्तजोणिया असंखेज्जगुणा, अजोणिया अणंतगुणा, सचित्तजोणिया अणंतगुणा॥ १५॥ कइविहाण भंते! जोणी पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा जोणी पण्णत्ता ? तंजहा संवुडाजोणी, वियडा जोणी, संवुडवियडाजोणी ॥१६॥ नरइयाण भंते! किं संवुडाजोणी, वियडाजोणी, संवुडा

भी उत्पन्न होवे अचित्त योनि वो जैसे अचित्त लोह से तथा काष्ठ से लकडी में, अग्नि की उत्पत्ति होती है, ऐसे ही वायु सचित्त अचित्त मिश्र सर्व स्थान में उत्पन्न होता है वनस्पति भी सचित्त वृक्षादि में उत्पन्न होवे अचित्त गोमयादि में उत्पन्न होवे ऐसे ही बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय भी समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय समूर्च्छिम मनुष्य इन सब की तीनों प्रकारकी योनि होती है ॥१२॥ गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय और गर्भज मनुष्यकी मिश्रयोनि॥१३॥ और वाणव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक असुरकुमारादि केवली अचित्त योनि जानना ॥१४॥ अहो भगवन् ! सचित्त योनिक अचित्त योनिक मिश्र योनिक अयोनिक इनमें कमी ज्यादा तुल्य अधिक कौन २ है ! अहो गौतम ! सब से थोडे मिश्रयोनिक क्यों कि गर्भज तिर्यंच और मनुष्य ही मिश्र है ? इस से अचित्त योनिक असंख्यात गुना क्यों कि देवता नारकी तथा किसी पांचों स्थावर विकलेन्द्रिय असंज्ञी मनुष्य तिर्यंच में पाती है ३ उस से अयोनिक अनंत गुने क्यों कि सिद्ध भगवन् हैं और उससे सचित्त योनिक अनंतगुने क्योंकि निगोदीये जीवोंकी सचित्तयोनी है ॥१५॥ और भी योनि

त्रियडाजोणी ? गोयमा ! सवुडा जोणी, नो वियडाजोणी, नो सवुडावियडाजोणी ॥ एवं जाव वणस्सइ काइयाणं ॥१७॥ बेइंदियाण पुच्छा ? गोयमा! नो सवुडाजोणी, वियडाजोणी, नो सवुडावियडाजोणी ॥ एवं जाव चउरिंदियाण ॥ सम्मुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाण सम्मुच्छिम मणुस्साणय एवंचेव ॥ १८ ॥ गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं गब्भवक्कंतिय मणुस्साणय नो सवुडाजोणी, नो वियडाजोणी सवुडा

भाश्रिय प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन् ! कितने प्रकार की योनि कही है ? अहो गौतम ! तीन प्रकार की योनी कही है उन के नाम १ संवृत योनिक जिस का मुख संकुचित होने से उस में जीवोत्पत्ति दृष्टीगत न होवे यह, २ विवृतयोनी मुख खुल्ला होने से जीवोत्पत्ति दृष्टीगत हो जावे यह, और ३ संवृतविवृत योनी सो कुछ जानने में आवे कुछ जानने में नहीं आवे जैसे मनुष्यनी तिर्यंचनी का गर्भ पेट बढने से ही जानने में आवे ॥१८॥ अहो भगवन्! नारकी की क्या संवृतयोनी है कि विवृतयोनी है कि संवृतविवृत योनी है? अहो गौतम ! संवृत योनी है परंतु विवृत और संवृत विवृत योनी नहीं हैं क्यों कि नरकमें उत्पन्न होने के गवाक्ष बिल जैसे स्थान हैं वहां उत्पन्न होते हैं वे अस्रमाण से भी नीचे पडते हैं तथापि भी खेंचकर निकालते हैं नरक के जैसेही दश भुवनपतिकी और पांचों स्थावरोंका कहना क्योंकि देवताकी शैया और पांचों स्थावरकी उत्पत्ति स्थान अप्रत्यक्ष देखता हैं॥१७॥ अहो भगवन्! बेइन्द्रिय के किस प्रकारकी योनि है ? अहो गौतम! बेइन्द्रिय क

वियडाजोणी॥१९॥वाणमंतराजोइसियावेमाणियाणं जहा नेरइयाणं॥२०॥एएसिणं भंते! जीवाणं संवुडा जोणियाणं वियडा जोणियाणं संवुडवियड जोणियाणं अजोणियाण कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा, तुल्लावा, विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा संवुडवियडाजोणिया, वियडजोणिया असंखेज्जगुणा, अजोणिया अणंतगुणा, संवुडाजोणिया अणंतगुणा ॥२१॥कइविहाणं भंते! जोणी पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा जोणि पण्णत्ता? तंजहा कुम्मुन्नया जोणी,संखावत्ताजोणी, वंसीपत्ताजोणी॥२२॥कुम्मु-

संवृता और संवृता विवृता योनि नहीं है परंतु विवृता योनि है ऐसे ही तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य की जानना ॥१८॥ और गर्भज तिर्यंच की तथा गर्भज मनुष्य की संवृता और विवृता योनि नहीं है एक संवृता विवृता योनि है,॥१९॥वाणव्यन्तर ज्योतिषी और वैमानिक देवकी नरक के जैसे संवृता योनि है ॥२०॥अहो भगवन् ! इन संवृत, विवृत, संवृताविवृत और अयोनिक में कौन २ किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडा संवृतविवृत योनिवाले हैं, क्योंकि गर्भज तिर्यंच और गर्भज मनुष्य को ही होती है, उस से विवृत योनिक असंख्यात गुने अधिक, क्योंकि विकलेन्द्रिय और असंज्ञी तिर्यंच व मनुष्य में होती है, उस से अयोनिक (सिद्ध) अनंत गुने और उस से संवृत योनिक अनंत गुने क्यों कि निगोदीये जीवों को यही होती है ॥२१॥ और भी योनी आश्रिय ती

१२ योनिक यत्र

योनी	७ नरक	१० भवन	५ स्थावर	१ तस	३ विकल	ति पं	समु ति.	गर्भज ति	मनुष्य	स मनुष्य	गर्भ मनु	वाणव्य	ज्योतिषी	वैमानिक	अल्पाबहुत्व
१ शीत	है	०	है	०	है	है	है	०	है	है	०	०	०	०	४ अनंत गुने
२ उष्ण	है	०	है	है	है	है	है	०	है	है	०	०	०	०	२ असंख्यातगुने
३ शीतोष्ण	०	है	है	०	है	है	है	है	है	है	है	है	है	है	१ सब से थोड़े
४ अयोनी		०		०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	३ सिद्ध अनंतगुने
१ सचित्त	०	०	है	है	है	है	है	०	है	है	०	०	०	०	४ अनंतगुना
२ अचित्त	है	है	है	है	है	है	है	०	०	०	०	है	है	है	२ असंख्यातगुने
३ मीश्र	०	०	है	है	है	है	है	है	है	है	है	०	०	०	१ सब से थोड़े
४ अयोनिक	०	०	०	०	०	०		०	०	०	०	०	०	०	३ अनंत गुने
१ संवृत	है	है	है	है	०	०	०	०	०	०	०	है	है	है	४ अनंत गुने
२ विवृत	०	०	०	०	है	है	है	०	है	है		०	०	०	२ असंख्यातगु
३ मिश्र	०	०	०	०		है	०	है	है	०	है	०	०	०	१ सबसे थोड़े
४ अयोनिक	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		०	०	३ अनंत गुने

भयाणजाणी उत्तमपुरिस माऊयाण, कुम्मुन्नयाएण जोणीए, उत्तमपुरिसा गब्भंवक्कमति तंजहा अरहंता, चक्कवट्टी, बलदेवा, वासुदेवा ॥ संखावत्ताणं जोणी इत्थिरयणस्स, संखावत्ताएणं जोणीए बहवे जीवाय पोग्गलाय वक्कमंति विउक्कमंति चयति उववयंति नोचेवणं णिप्फज्जति ॥ वंसीपत्ताणं जोणि पिहुजणस्स, वंसीपत्तियाएण जोणीए पिहुजणे गब्भवक्कमति ॥ इति पण्णवणा भगवईए णवम जोणी पयं सम्मत्त ॥ ९ ॥

पूछते हैं ॥ अहो भगवन् ! कितने प्रकार की योनि कही है ? अहो गौतम ! तीन प्रकार की योनि कही है, उन के नाम -१ कुर्मक योनिक जो काछवे की पृष्ठकी जैसी ऊची होवे, २ शंखावर्तयोनि शंख जैसे आवृत वाली होवे और वंशीपत्र योनी यह बांस के पत्र समान संपूट मिले हुवे होवें ॥ इस में कुर्मक योनीतो उत्तमपुरुषों की होती है, जिस से उत्तम पुरुष उत्पन्न होते हैं उन के नाम १ तीर्थंकर, २ चक्रवर्ती, ३ बलदेव और ४ वासुदेव दूसरी शंखावर्तयोनि चक्रवर्ती महाराजा के स्त्रीरत्न की होती है, उस में अनेक जीवो अनेक पुद्गलों आकर उत्पन्न होते हैं उस में से चवते (मरते) भी हैं और उत्पन्न भी होते हैं, किन्तु योनी में किसी का जन्म नहीं होता है, और वंशीपत्र यानि सामान्य माताओं की होती है उस में अनेक जीवों उत्पन्न होते भी हैं और नहीं भी होते हैं॥ इति नववा योनी पद संपूर्णम् ॥९॥

॥ दशम चरिम पदम् ॥

कइण भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ पुढवीओ पण्णत्ताओ तंजहा रयणप्पभा, सक्करप्पभा, वालुयप्पभा, पंकप्पभा, धूमप्पभा, तमप्पभा, तमतमप्पभा, इसीपब्भारा ॥ १ ॥ इमाण भंते ! रयणप्पभा पुढवि किं चरिमा, अचरिमा, चरिमाइं अचरिमाइं, चरमतपएसा अचरिमतपएसा ? गोयमा ! इमाण रयणप्पभा

अब दशवा चरिम अचरिम पद कहते हैं—अहो भगवन् ! पृथ्वी कितनी कही है ? अहो गौतम ! आठ पृथ्वी कही है ? उस के नाम—१ रत्नप्रभा, २ शर्कर प्रभा, ३ बालु प्रभा, ४ पंक प्रभा, ५ धूम्रप्रभा, ६ तम प्रभा, ७ तमतम प्रभा और ८ इषत् प्राग्भार ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! यह रत्नप्रभा पृथ्वी द्रव्य से चरम है कि अचरम है [एक वचन] ३ चरिमा है कि अचरिमा है (बहु वचन) ४ क्षेत्र से चरिम प्रदेशी है कि अचरिम प्रदेशी है ? + अहो गौतम ! यह रत्नप्रभा पृथ्वी चरिम नहीं है वैसे ही अचरिम भी नहीं है (एक वचन) चरिमा भी नहीं है अचरिमा भी नहीं है (बहु वचन) चरम प्रदेशी भी नहीं है अचरिम प्रदेशी भी नहीं भी क्यों कि यह प्रश्न रत्नप्रभा पृथ्वी का है जो अन्य

+ जैसे मोक्षगामी के अन्तिम शरीर को चरिम शरीर कहते हैं ऐसे ही रत्नप्रभा नरक मध्य की अपेक्षा कर अन्तिम के द्रव्य को व प्रदेश को चरिम कहे हैं और अन्तिम द्रव्य व प्रदेश की अपेक्षा कर मध्य को अचरिम कहे हैं

पुढवि नो चरिमा नो अचरिमा नो चरिमाइं नो अचरिमाइं नोचरिमतपएसा, नो अचरिमंतपएसा, नियमा अचरिम चरिमा णियमचरिमतपएसाय, अचरिमतपएसाय एवं जाव अहेसत्तमापुढवी, सोहम्मादि जाव अणुत्तर विमाणाण एवंचेव ईसिप्पब्भारापुढवि लोगेवि, एवंचेव, एवं अलोगेवि, ॥२॥इमीसेण भंते! रयणप्पभा पुढवीए अचरिम

रत्नप्रभा पृथ्वी होती तो उस की अपेक्षा कर यह चरिम अचरिम कही जाती कि अमुक रत्नप्रभा पृथ्वी के यह अन्त में है इसलिये चरिम है और अमुक रत्नप्रभा पृथ्वी के मध्य में है इस लिये यह अचरिम है, परंतु अकेली ही रत्नप्रभा पृथ्वी होने से उक्त छही प्रश्नों का यहां निषेध किया है तब यह कैसा है सो कहते हैं-कि यह रत्नप्रभा पृथ्वी भवन आश्रिय अचरिम चरिम है और प्रदेश आश्रिय चरिमान्त प्रदेश, अचरिमान्त प्रदेश मध्य का पृथ्वी का जो खण्ड है उस की अपेक्षा अचरिम है और अन्तिम पृथ्वी का जो खण्ड है उस की अपेक्षा चरिम है और रत्नप्रभा पृथ्वी के अन्त में प्रदेश है वे चरिम प्रदेश हैं और मध्य में प्रदेश वे अचरिम प्रदेश है जैसा यह रत्नप्रभा पृथ्वी का कहा वैसा ही सातों ही पृथ्वी का कहना, और इस ही प्रकार सौधर्म देवलोक से यावत् अनुत्तर विमान पर्यंत कहना, वैसा ही ईषत्प्राग भार पृथ्वी (सिद्ध शिला) का भी कहना और वैसा ही संपूर्ण लोक का तथा अलोक का भी निर्विक्षेप कहना इस प्रकार एकक में चार २ बोल पाते हैं या नरक, २६ स्वर्ग, १ सिद्ध शिला, अलोक और लोका लोक; यों सब

रयण चरिमाणय चरिमत पएसाणय अचरिमतपएसाणय दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुआवा, तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे इमीसे रयणप्पमाए पुढवीए दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे, चरिमाइ असंखेज्जगुणाइं, अचरिम चरिमाणिय दोवि विसेसाहिया॥ पएसट्ठयाए सव्वत्थोवा इमीसे रयणप्पमाए पुढवीए चरिमतपएसा, अचरिमतपएसा असंखेज्जगुणा, चरिमतपएसाए

१७ सूत्र हुव इन को उक्त चार बोल से चौगुने करते सब १४८ सूत्र होते हैं ॥ २ ॥ अब इन की अल्पाबहुत्व करते हैं—अहो भगवन् ! यह रत्नप्रभा पृथ्वी का १ अचरिमांत का एक खण्ड, २ चरिमांत के बहुत खण्ड, ३ चरिमांत के बहुत प्रदेश, और ४ अचरिमान्त के बहुत प्रदेश, यह द्रव्य आश्रिय, प्रदेश आश्रिय और द्रव्य प्रदेश आश्रिय कौन २ से थोडे हैं अधिक हैं तुल्य हैं विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडा इस रत्नप्रभा पृथ्वी द्रव्यार्थ पने एक अचरिम खण्ड, क्यों कि तथा विरुद्ध एक स्कंध परिणाम परिणित एक ही अचरम खण्ड विविक्षित है २ उस से चरम खण्ड असंख्यातगुने, क्योंकि चारों तरफ हैं, ३ उससे अचरिम और चरिम यह दोनों विशेषाधिक क्योंकि इसमें दोनों ही सामिल होगये अब प्रदेशार्थ कहते हैं-सबसे थोडे रत्नप्रभा पृथ्वीके चरिमांत प्रदेश क्योंकि अन्तिम प्रदेशही ग्रहणकिये हैं; उससे अचरिम असंख्यातगुने क्योंकि मध्य के सब प्रदेश समागये, और उससे चरिमान्त अचरिमान्त दोनों विशेषाधिक इसमें

अचरिमतपएसाय दोवि विसेसाहियावा ॥ दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए—सव्वत्थोवे इमीसे-रयणप्पभा पुढवीए दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे, चरिमाइं असंखेज्जगुणाइं, चरिम अचरि-माणिय दोवि विसेसाहियाइं, चरिमतपएसा असंखेज्जगुणा, अचरिमतपएसा असंखे ज्जगुणा, चरिमतपएसाय अचरिमंतपएसाय दोवि विसेसाहिया ॥ एवं जाव अहे सत्तमाए ॥ सोहम्मस्स जाव लोगस्सय एवंचेव ॥ २ ॥ अलोगस्सण भंते ! अचरि मस्सय चरिमाणय चरिमंतपएसाणय अचरिमंतपएसाणय दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए,

दोनों का या सब रत्नप्रभा के प्रदेशों का समावेश हो गया अब द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ दोनों सामिल आश्रिय सब से थोडे इस रत्नप्रभा पृथ्वी का द्रव्यार्थपने एक अचरिम खण्ड, क्यों कि सब पृथ्वी का एक ही बडा खण्ड है, २ उस से चरिम खण्ड असंख्यातगुने, क्यों कि चारों तरफ के खण्ड आगए, उस से चरिम और अचरिम खण्ड दोनों विशेषाधिक, उस से चरिमान्त प्रदेश असंख्यातगुने क्यों कि चारों तरफ के अन्तिम प्रदेश आगये, उस से अचरिम प्रदेश असंख्यातगुने क्यों कि बीच के सब प्रदेश आगये और इस मे चरिमान्त अचरिमान्त प्रदेश विशेषाधिक सब प्रदेशों का समावेश हो गया इस रत्नप्रभा पृथ्वी के जैसा ही सातों ही पृथ्वी का छब्बीस ही देवलोकों का सिद्ध सिला का और संपूर्ण लोक का कथन करना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! अलोक का अचरिम खण्ड, चरिम खण्ड, चरिमान्त प्रदेश और

दव्वट्ठयपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावी तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे अलोगस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे, चरिमाइं असंखेज्जगुणाइं, अचरिमचरिमाणिय दोवि विसेसाहियाइं, पएसट्ठयाए सव्वत्थोवा अलोयस्स चरिम तपएसा, अचरिमंतपएसा अणंतगुणा चरिमंतपएसाय अचरिमंतपएसाय दोवि विसेसाहिया ॥ दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवे अलोयस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे, चरिमाइं असंखेज्जगुणाइं, अचरिमंच चरिमाणिय दोवि विसेसाहियाइं, चरिमंतपएसा असंखेज्जगुणा, अचरिमंतपएसा अणंतगुणा, चरिमंतपएसाय अचरिमंतपएसाय दोवि विसेसाहिया ॥ ४ ॥ लोगालोगस्सणं भंते ! अचरिमस्सय चरिमाणय चरिम

अचरिमान्त प्रदेश द्रव्यार्थपने प्रदेशार्थपने और द्रव्यार्थपने प्रदेशार्थपने कौन २ से अल्प हैं ज्यादा हैं तुल्य हैं विशेष हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडा अलोक का द्रव्यार्थ एक अचरिम खण्ड क्यों कि एकही है २ उस से चरिम खण्ड असंख्यातगुना, ३ उससे चरिम अचरिम खण्ड विशेषाधिक. अब प्रदेशार्थपने सब से थोडे अलोक के चरिमान्त प्रदेश, उस से अचरिमान्त प्रदेश अनंतगुने, उस से चरिमान्त अचरिमान्त अनंत गुने अब द्रव्यार्थपने प्रदेशार्थपने सब से थोडा अलोक का द्रव्यार्थपने एक अचरिम उस से चरिम खण्ड असंख्यातगुने इस से अचरिम चरिम प्रदेश दोनों विशेषाधिक, उस से चरिमान्त प्रदेश अनंतगुने क्यों की अलोक अनंत है, उस से चरिमान्त अचरिमान्त दोनों विशेषाधिक ॥ ४ ॥

तपएसाय अचरिमंतपएसाणय दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा लोगा लोगस्स दव्वट्ठयाए एगमेगे अचरिमे, लोगस्स चरिमाइं असंखेज्जगुणाइं, अलोगस्स चरिमाइं विसेसाहियाइं, लोगस्सय अलोगस्सय अचरिम चरिमाणिय दोवि विसेसाहियाइं ॥ पएसट्ठयाए-सव्वत्थोवा लोगस्स चरिमंत पएसा, अलोगस्स

अब लोक अलोक का कहते हैं अहो भगवन् ! लोक अलोक का अचरिम खण्ड, चरिम खण्ड, चरिम प्रदेश, अचरिम प्रदेश द्रव्यार्थपने, प्रदेशार्थपने, द्रव्यार्थ प्रदेशार्थपने कौन २ से थोडे, ज्यादा, तुल्य, विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडा लोक अलोक का द्रव्यार्थपने एक लोक का और एक अलोक का अचरिम खण्ड यहां दोनों एकेक ही ग्रहण किये हैं उस से लोक का चरिम खण्ड द्रव्यार्थपने असंख्यातगुना उस से अलोक के चरिम खण्ड द्रव्यार्थपने विशेषाधिक क्यों कि यहां लोक का चरिम खण्ड, असंख्यात कहे हैं वे कल्पना से इस प्रकार लोक के तो चार दिशा के [और चार विदिशा के यों आठ खण्ड होते हैं और अलोक के चार दिशा के चार तथा चार विदिशा के आठ यों बारे खण्ड होते हैं इस लिये विशेषाधिक कहे इस से लोक के अलोक के चरिम खण्ड विशेषाधिक क्यों कि पीछे लोक के आठ खण्ड कहे थे और एक खण्ड चरिम का यों ९ तथा अलोक के बारे खण्ड कहे थे और एक

चरिमंत पएसा विसेसाहिया लोगस्स अचरिमंतपएसा असंखेज्जगुणा, अलोगस्स अचरिमंतपएसा अणंतगुणा, लोगस्स अलोगस्स य चरिमंत पएसाय अचरिमंतपएसाय दोवि विसेसाहियाओ,दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवे लोगालोगस्स दव्वट्ठयाए एगमेगे अचरिमे, लोगस्स चरिमाइं असंखेज्जगुणाइं, अलोगस्स चरिमाइं विसेसा हियाइं, लोगस्सय अलोगस्सय अचरिमंच चरिमाणिय दोवि विसेसाहियाइं, लोयस्स

चरिम का यों ११ यों सब २२ खण्ड होते हैं, उस अलोक के चरिम खण्ड से लोकालोक के चरिम खण्ड सब समुदाय विशेषाधिक अब प्रदेश से कहते हैं—सब से थोड़े लोक के चरिमान्त प्रदेश, क्यों कि यहां पूर्वोक्त आठ ही ग्रहण किये हैं, २ उस से अलोक के चरिम प्रदेश विशेषाधिक, क्यों कि १२ है उस से लोक के अचरिम प्रदेश असंख्यातगुना क्यों कि क्षेत्र बहुत है उस से अलोक के अचरिमान्त प्रदेश अनंतगुने क्यों कि क्षेत्र अनंत हैं, उस से लोक के चरिमान्त प्रदेश अचरिम प्रदेश अलोक के चरमान्त प्रदेश अचरमान्त प्रदेश यह चारों एकत्र करे ये विशेषाधिक अब द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ की अल्पाबहुत्व १ सब से थोड़े लोकालोक के द्रव्यार्थ आश्रिय एक अचरिम खण्ड, २ उस से लोक का चरम खण्ड असंख्यातगुना क्यों कि क्षेत्र असंख्यात है, ३ उस से अलोक का चरम खण्ड द्रव्य से विशेषाधिक क्षेत्र की अधिकता कर, ४ उस से लोक के चरम द्रव्य और अचरम द्रव्य अलोक के चरम द्रव्य और अचरम द्रव्य यह चारों सामिल विशेषाधिक ५ उस से

चरिमंत पएसा असंखेज्जगुणा, अलोयस्स चरिमंत पएसा विसेसाहिया, लोयस्स अचरिमंतपएसाय असंखेज्जगुणा, अलोगस्स अचरमंतपदेसा अणंतगुणा, लोगस्सय अलोगस्सय चरमंतपदेसाय अचरमंतपदेसाय दोवि विसेसाहिया, सव्वदव्वा विसेसाहियाओ सव्वपएसा अणंतगुणा सव्वपज्जवा अणंतगुणा ॥ ५ ॥ परमाणुपोग्गलाणं भंते ! किं १ चरिमे, २ अचरिमे, ३ अवत्तव्वए, ४ चरिमाइं, ५ अचरिमाइं, ६

लोक के चरम प्रदेश असंख्यातगुने (क्यों कि एक खण्ड के असंख्यात प्रदेश का समावेश होता है ६ उस से अलोक के चरमान्त प्रदेश विशेषाधिक, क्षेत्र की विशेषताकर, ७ उस से लोका लोक के अचरमांत प्रदेश असंख्यागुने, क्षेत्र की अधिकताकर ८ उस से अलोक के अचरमान्त प्रदेश अनंतगुने, क्योंकि अनंत अलोक है ९ लोक के चरमान्त अचरमान्त प्रदेश तथा अलोक के चरमान्त प्रदेश अचरमान्त प्रदेश प्रदेश यह चारों के एकत्र करे विशेषाधिक, १० सब लोकालोक के चरमान्त अचरमान्त प्रदेश मे सर्व द्रव्य विशेषाधिक क्योंकि एकेक आकाश प्रदेश पर अनंत जीवों तथा परमाणु व स्कन्ध रहे हैं वे विशेषाधिक हैं ११ सर्व प्रदेश अनंतगुने क्यों कि एकेक द्रव्य के प्रदेश अनंत हैं १२ उस से पर्याय अनंतगुनी क्योंकि प्रति प्रदेश अनंत पर्याय का सद्भाव होता है॥५॥ अब परमाणु आश्रिय चरिम अचरिमके २६ भांगे कहते हैं—परमाणु की व्याख्या इसप्रकार है—परम=उत्कृष्ट, अणु=सूक्ष्म पुद्गल—

अवचव्वयाइ, ७ उदाहु चरिमेय अचरिमेय, ८ उदाहु चरिमेय अचरिमाइ, ९ उदाहु चरमाइ अचरिमेय, १० उदाहु चरिमाइच अचरिमाईच, पढमा चउभंगी ११ उदाहु चरिमेय अवत्तव्वएय, १२ उदाहु चरिमेय अवत्तव्वयाईच १३ उदाहु चरिमाईच अवत्तव्वएय, १४ उदाहु चरिमाइच अवत्तव्वयाइच, बितिया चउभंगी १५ उदाहु अचरिमेय अवत्तव्वएय, १६ उदाहु अचरिमेय अवत्तव्वयाइच, १७ उदाहु अचरिमाइ अवत्तव्वएय, १८ उदाहु अचरिमाईच अवत्तव्वयाइ, तइया चउभंगी

पूरे बिखरे (मिले—अलग होवे) उसे परमाणु पुद्गल कहते हैं अहो भगवन्! १परमाणु पुद्गल चरिम है एक संयोगी २ अचरिम है ३ अवक्तव्य है (चरिम भी न कहा जाय, अचरिम भी न कहा जाय ऐसा) अवक्तव्य है तीनों भांग यह एक वचनी; ४ चरिमा है, ५ अचरिमा है, ६ अवक्तव्या है, (यह तीनों भंगि अनेक वचनी) यह छे भांगे एक संयोगी हुवे ७ एक चरिम एक अचरिम कहना क्या ! ८ एक चरिम बहुत अचरिम कहना क्या ! ९ बहुत चरिम एक अचरिम कहना क्या ! १० बहुत चरिम बहुत अचरिम कहना क्या ! यह प्रथम चौभंगी ११ एक चरिम एक अवक्तव्य, कहना क्या ! १२ एक चरिम बहुत अवक्तव्य, कहना क्या ! १३ बहुत चरिम एक अवक्तव्य, कहना क्या ! १४ बहुत चरिम बहुत अवक्तव्य कहना क्या ! यह दूसरी चौभंगी १५ एक अचरिम एक अवक्तव्य, कहना क्या ! १६ अचरिम बहुत

१९उदाहु चरिमेय अचरिमेय अवत्तव्वएय, २०उदाहु चरिमेय अचरिमेय अव्वत्तव्वयाइं २१उदाहु चरिमेय अचरिमाइंच अवत्तव्वएय २२ उदाहु चरिमेय अचरिमाइंच अवत्तव्वयाइं, २३ उदाहु चरिमाइं अचरिमेय अव्वत्तव्वएय, २४ उदाहु चरिमाइं अचरिमेय अवत्तव्वयाइं, २५ उदाहु चरिमाइंच अचरिमाइंच अव्वत्तव्वएय, २६ उदाहु चरिमाइंच अचरिमाइंच अव्वत्तव्वयाइंच ॥ एव ते छव्वीसभगा ? गोयमा ! परमाणु पोग्गल नो चरिमे नो अचरिमे, नियमा अवत्तव्वए, सेसा भंगापरिसेहेयव्वा

अवक्तव्य कहना क्या? १७बहुत अचरिम एक अवक्तव्य,कहना क्या ? १८ बहुत,अचरिम अवक्तव्य कहना क्या? तीसरी चौभंगी,यह द्विक संयोगीकी तीन चौभंगी के १२ भांगे हुए १९एक चरिम एक अचरिम एक अवक्तव्य कहना क्या? २० एक चरिम एक अचरिम बहुत अवक्तव्य, कहना क्या? २१ एक चरिम बहुत अचरिम एक अवक्तव्य कहना क्या?२२ एक चरिम बहुत अचरिम बहुत अवक्तव्य कहना क्या? २३ बहुत चरिम एक अचरिम एक अवक्तव्य कहना क्या? २४बहुत चरिम एक अचरिम बहुत अवक्तव्य कहना क्या? २५बहुत चरिम, बहुत अचरिम एक अवक्तव्य कहना क्या ? और २६ बहुत चरिम बहुत अचरिम बहुत अव क्तव्य कहना क्या इन छव्वीस भांग में स परमानुपुद्गलमें कितने भांगे पाते हैं? अहो गौतम ! परमानुपुद्गल १ चरिम नहीं है २अचरिमभी नहीं है क्योंकि मध्य नहीं इसलिये नियमासे अवक्तव्य है क्योंकि कुछ कहसके नहीं उक्त२६ भांगे में से एक तीसरा भांगा पाता है, बाकी२५ भांगका निषेध करना ॥१॥ अहो भगवन्!

॥ ६ ॥ दुपदेसिएणं भंते! खंधे पुच्छा ? गोयमा ! दुपएसिए खंधे सिय चरिमे, नो अचरिमे, सिय अवत्तव्वए, सेसा भंगा पडिसेहेयव्वा ॥ ७ ॥ तिपएसिए णं भंते! खंधे पुच्छा? गोयमा ! तिपएसिए खंधे १ सिय चरिमे, २ नो अचरिमे, ३ सिय अवत्तव्वए, ४

द्विप्रदेशिक स्कन्ध में उक्त २६ भांगे के कितने भांगे पाते हैं ? अहो गौतम ! द्विप्रदेशिक स्कन्ध स्यात् चरिम है क्यों कि [figure] दो आकाश प्रदेश अवगाह कर दो परमाणु रहे हैं वह पहिले की अपेक्षा दूसरा चरिम और दूसरे की अपेक्षा पहिला चरिम कहा जाता है, अचरिम नहीं है क्यों कि दो परमाणु स्कन्ध के विभाग नहीं होते हैं इस लिये मध्य नहीं है और ३ कदाचित् अवक्तव्य भी है क्यों कि द्विप्रदेशिक स्कन्ध एक ही आकाश प्रदेश अवगाह कर रहा हो तो चरिम अचरिम कुछ भी नहीं कह सके. इसलिये यह २ भांगे पाते हैं बाकी २४ भांग का निषेध करना ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! त्रिप्रदेशिक स्कन्ध में उक्त २६ भांगे में के कितने भांगे पाते हैं ? अहो गौतम ! त्रिप्रदेशिक स्कन्ध स्यात् चरिम है क्यों कि जिस तरह दो आकाश प्रदेश अवगाह कर सम श्रेणि से रहे, तब द्विप्रदेशिक के जैसे एकेक की अपेक्षा से एकेक चरिम है, तब अचरिम नहीं क्यों कि दो आकाश प्रदेश के अवगाह से मध्य रहित है, और एक आकाश प्रदेश अवगाह कर रहे तब चरिम अचरिम दोनों ही नहीं

नो चरिमाई, ५ नो अचरिमाई ६ नो अवत्तव्वयाइ, ७ नो चरिमेय अच रिमेय, ८ नो चारिमेय, अचरिमाइ, ९ सिय चरिमाइय अचरिमेय, १० नो चरि माइय अचारमाईय, ११ सिय चरिमेय अवत्तव्वएय, सेसा भगा पडिसेहेयव्वा ॥ ८ ॥ चउप्पएसिएण भंते! खंधे पुच्छा? गोयमा! चउप्पएसिए खंधे १ सिय चरिमे, २

होने से स्यात् अवक्तव्य भी है, बहुत वचन की अपेक्षा चरिम नहीं है बहुत अचरिम भी नहीं बहुत अवक्तव्य भी नहीं अब द्विसंयोगी भांगे कहते हैं—एक चरिम और एक अचरिम भी न होवे क्योंकि तीन हैं, चरिम का एक अचरिम के बहुत यह भी नहीं है, परंतु स्यात् तीनों परमाणुओं तीन प्रदेश अवगाह कर रहे हैं तब दोनों तरफ दो परमाणु रहे वे बहु वचन आश्रिय चरिम है और एक परमाणु बीच में है वह एक वचन आश्रिय अचरिम है, यह १९ वा भांगा पाता है, बहुत चरिम बहुत अचरिम यह भी नहीं पावे परंतु स्यात् एक चरिम एक अवक्तव्य यह भांगा पावे, जब तीनों प्रदेश में का दो परमाणु को दो आकाश प्रदेश, सम श्रेणि से अवगाहवे और एक विषम अवगाहवे ०ृ० तब जो दो सम श्रेणि से रहे हैं वे एकेक की अपेक्षा से चरिम हैं और जो विषम श्रेणि स रहा है वह अवक्तव्य है, यों इग्यारहवा भांगा पाता है इस प्रकार त्रिप्रदेशिक स्कन्ध में ४ भांग पाते हैं, बाकी २२ भांग का निषेध करना ॥ ८ ॥ अहो भगवन्! चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध में कितने भांगे पाते हैं!

नो अचरिमे, ३ सिय अवत्तव्वए, ४ नो चरिमाइं, ५ नो अचरिमाइं, ६ नो अवत्तव्वयाइं, ७ नो चरिमेय अचरिमेय, ८ नो चरिमेय अचरिमाइंच, ९ सिय चरिमाइं अचरिमेय, १० सिय चरिमाइंच अचरिमाइंच, ११ सिय चरिमेय अवत्तव्वएय, १२ सिय चरिमेय अवत्तव्वयाइंच, १३ नो चरिमाइंच अवत्तव्वएय,

अहो गौतम ! चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध में सात भांगे पावे हैं, सो कहते हैं—१ जब चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध दो आकाश प्रदेश का अवगाह कर एकेक प्रदेश पर दो २ परमाणु समश्रेणि से रहे तब दो प्रदेशी अवगाह स्कन्ध को चरिम कहना २ अचरिम नहीं कहना क्यों कि द्विप्रदेशावगाही है ३ स्यात् अवक्तव्य है क्यों कि जब चारों प्रदेश एक आकाश प्रदेश अवगाह कर रहे तब अवक्तव्य कहे जावे ४ बहुत वचन से चरिम नहीं,५ बहुत वचन से अचरिम नहीं ६ बहुत वचन से अवक्तव्य नहीं ७ एक चरिम और एक अचरिम यह भी द्विसंयोगी सातवा भांगा भी नहीं, ८ एक चरिम और बहुत अचरिम यह आठवा द्विसंयोगी भांगा भी नहीं, ९ स्यात् चरिम बहुत और अचरिम एक यह मिल जाय क्योंकि जब चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध तीन आकाश प्रदेश का अवगाह कर [०॥२८॥०] समश्रेणिपने रहे वे आदि अंत के प्रदेश अवगाह यह बहुत चरिम और मध्य का एक प्रदेश अवगाहे वह अचरिम १० स्यात् दशवा भांगा चरिम भी

१४नो अचरिमाई अवत्तव्वयाइच, १५नो अचरिमेय अवत्तव्वएय, १६नो अचरिमेय अवत्तव्वयाइच, १७नो अचरिमाइच,अवत्तव्वएय, १८नो अचरिमाइच अवत्तव्वयाइच

बहुत अचरिम बहुत भी यह भी पावाई क्योंकि जब चारों परमाणु समश्रेणिसे चार आकाशप्रदेश[०।०।०।०] अवगाह कर रहे उस में आदि अन्त के दो प्रदेश अवगाहे वे बहुत चरिम, दो आकाश प्रदेश दो मध्य के परमाणु अवगाहकर रह वह बहुत अचरिम, ११ स्यात् एक चरिम एक अवक्तव्य यह भी भांगा पाता है क्यों कि जब चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध तीन आकाश प्रदेश का अवगाहकर रह उस में दो आकाश प्रदेश तो समश्रेणि अवगाह कर और एक आकाश प्रदेश विषमसमश्रेणि अवगाहकर रहे [०।०॰।०] इस में जो समश्रेणिसे दो आकाश प्रदेश अवगाहे वे एकेकी की अपेक्षा से चरिम है, और एक विषम श्रेणिसे रहा है वह अवक्तव्य है, १२ स्यात् एक चरिम बहुत अवक्तव्य यह भी भांगापावे क्यों कि जब चार प्रमाणुओं दो आकाशप्रदेशको [०:० / ०:०] समश्रेणिसे अवगाहकर रहे और दो परमाणु विषमश्रेणिसे आकाशप्रदेश अवगाह कर रहे इस में दो परमाणु जो समश्रेणि से रह उनोने दो प्रदेश अवगाहे इस लिये द्विप्रदेशिक स्कन्ध एक चरिम और दो परमाणुओं विषम श्रेणि स रह वे अवक्तव्य १३ चरिम बहुत और अवक्तव्य एक यह भी नहीं पाता है, १४ अचरिम बहुत अवक्तव्य भी बहुत यह भी नहीं पाता

१९ नो चरिमेय अचरिमेय, अवत्तव्यएय, २० नो चरिमेय अचरिमेय अवत्त चव्वयाइच, २१ नो चरिमेय अचरिमाइच अवत्तव्वएय, २२ नो चरिमेय अचरिमाइ अवत्तव्वयाइच, २३ सिय चरिमाइ अचरिमेय, अचरिमेय अवत्त-

है, १५ अचरिम एक अवक्तव्य भी एक यह भी नहीं, १६ अचरिम एक अवक्तव्य बहुत यह भी नहीं, १७ अचरिम बहुत अवक्तव्य एक यह भी नहीं, १८ अचरिम, बहुत अवक्तव्य बहुत यह भी नहीं, १९ एक चरिम, एक अचरिम एक अवक्तव्य यह भी नहीं, २० एक चरिम, एक अचरिम बहुत अवक्तव्य यह भी नहीं, २१ चरिम का एक, अचरिम बहुत, अवक्तव्य एक यह भी नहीं, २२ चरिम एक, अचरिम बहुत अवक्तव्य बहुत यह भी नहीं बहुत चरिम एक अचरिम एक अवक्तव्य एक यह भांगा पाता है क्यों कि जब वह चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध आकाश के चार प्रदेश अवगाह कर रहे उस में तीन परमाणु तो तीन आकाश प्रदेश को विषम श्रेणिसे अवगाहकर रहे, एक परमाणु भी विषम श्रेणि के उन से अलग २ है व तीन परमाणुओं को समश्रेणि रो रहे हैं वे आदि के और अन्त के परमाणु की अपेक्षा बहुत चरिम है, और एक मध्य में है वह अचरिम है और एक अलग एक आकाश प्रदेश अवगाह कर रहा है वह अवक्तव्य है यों पहिला तीसरा, नवेवा, दशवा, इग्यारवा, वारवा, और तेवीसवा ऐसे सात भांगें चतुष्प्रदेशिक स्कन्ध में पावे हैं

व्वएप सेसाभगा पडिसेहेयव्वा॥ १ ॥पंचपएसिएण भंते खंधे पुच्छा? गोयमा!पंचपए सिए खंधे १ सिय चरिमे, २ नो अचरिमे, ३ सिय अवत्तव्वए, ४ णो चरिमाइं, ५ नोअचरिमाइं, ६ नो अवत्तव्वयाइं, ७ सिय चरिमेय अचरिमेय ८

बाकी २ ४-५-६ ७-८ ११ १४ १५ १६ १७-१८ १९ २० २१-२२ २४ २५ २६ यह १९ भांगे का निषेध करना ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! पांच प्रदेशि स्कन्ध में कितने भांगे पाते हैं ? अहो गौतम ! ११ भांगे पाते हैं यथा १ स्यात् चरम है. क्यों कि पांच प्रदेश में से दो परमाणु एक आकाश प्रदेश अवगाहकर रहे हैं और तीन एक आकाश प्रदेश अवगाहकर रहे यों पांचो दो आकाश प्रदेश का अवगाहा करने से एकेक की अपेक्षा एकक चरम है, २ अचरिम नहीं है ३ स्यात् अव्य क्तव्य है क्यों कि पांचो एक ही आकाश प्रदेश का अवगाहाकर रहे तब चरम अचरमकी अपेक्षा रहित अवक्तव्य है, ४ ६ तीनों बहुत वचनके भांगे भी नहीं पाते हैं,७स्यात एक चरम एक अचरम है क्यों कि जब चार परमाणु चारों तरफ के आकाश प्रदेश का अवगाहकरे और एक मध्य का प्रदेश का अवगाह करे इस अपेक्षा से चारों अलग २ चारदिशा के चार चरम हुवे और मध्य का अचरम हुवा ऐसे ही खडी श्रेणि से तथा आडी श्रेणि से ग्रहणकरे तो भी होते हैं, ८ चरम एक अचरिम बहुत भी नहीं पाता है, ९ स्यात् चरम बहुत अचरम एक यह भांगा पाता है क्यों कि जब पांच प्रदेशिक स्कन्ध तीन आकाश प्रदेशमय श्रेणि से अवगाहकर रहे उस में पहिले के दो परमाणु एक आकाश प्रदेश एक

नो चरिमेय अचरिमाइय ९ सिय चरिमाइय अचरिमेय, १० सिय चरिमाइय अचरिमाइय, ११ सिय चरिमेय अवत्तव्वएय, १२ सिय चरिमेय अवत्तव्वयाइय, १३ सिय चरिमाइय अवत्तव्वएय, १४ नो चरिमाइय अवत्तव्वयाइय, १५ नो अचरिमेय अवत्तव्वएय, १६ नो अचरिमेय अवत्तव्वयाइय, १७ नो अचरिमाइ अवत्तव्वएय, १८ नो अचरिमाइय अवत्तव्वयाइय, १९ नो चरिमेय अचरिमेय,

मध्य के प्रदेशपर और दो अंतिम प्रदेशपर रहे [diagram] इस प्रकार दोनों तरफ के दो दो परमाणु बहुत चरम और मध्य का एक परमाणु अचरम, १० स्यात् चरम बहुत अचरम बहुत क्यों कि जब पांच परमाणु स्कन्ध चार आकाश प्रदेश का अवगाहकर रहे इस में तीन परमाणु तो तीन प्रदेशी अलग २ अवगाहे और दो परमाणु एक २ प्रदेश अवगाहे [diagram] इस में आदि एक प्रदेशी चरम और अंत के प्रदेश के दो परमाणु भी चरम इसलिये चरम बहुत और मध्यवर्ती दो परमाणु से अचरिम भी बहुत ११ स्यात् एक चरिम एक अवक्तव्य भी है क्यों कि जब पांच प्रदेशिक स्कन्ध तीन आकाश प्रदेश का अवगाह कर रहे इस में दो परमाणु तो दो आकाश प्रदेश का

अवत्तव्वए य, २० नो चरिमेय अचरिमेय अवत्तव्वगाइंच, २१ नो चरिमेय अचरिमाइंच अवत्तव्वए य, २२ नो चरिमेय अचरिमाइंच, अवत्तव्वयाइंच २३ सिय चरिमाइंच अचरिमेय अवत्तव्वए य २४ सिय चरिमाइंच अचरिमेय अवत्तव्वयाइंच २५ सिय चरिमाइंच अचरिमाइंच अवत्तव्वए य, २६ नो चरिमाइंच अचरिमाइंच अवत्तव्वयाइंच

अवगाह कर समश्रेणि से रहे, और एक विषम श्रेणि से रहे इस में चार परमाणु ने दो आकाश प्रदेश का अवगाह किया वहां द्विप्रदेशी स्कन्ध यह एक चरिम और एक परमाणु विषम श्रेणिसे रहा यह अवक्तव्य, १२ स्यात् एक चरिम बहुत अवक्तव्य भी भांगा पाता है क्यों कि जिस एक पांच प्रदेशिक स्कन्ध चार आकाश प्रदेश अवगाह कर रहे उस में तीन परमाणु तो समश्रेणि से दो आकाश प्रदेश का अवगाह कर रहे और दो विषमश्रेणि से दो आकाश प्रदेश का अवगाह कर रहे उस में समश्रेणिपने रहे यह द्विप्रदेशिक स्कन्ध, चरम और तीन विषम श्रेणिसे रहे अलग २ आकाश प्रदेश का अवगाहकर रहे वे बहुत अवक्तव्य, १३ स्यात् बहुत चरम एक अवक्तव्य यह भी भांगा पाता है क्यों कि जब पांच प्रदेशिक स्कन्ध पांच आकाश प्रदेश का अवगाहकर रहे उस में दो परमाणु ऊपर के दो

॥ १० ॥ छप्पएसिएणं भंते ! खंधे पुच्छा ? गोयमा ! छप्पएसिएण खंधे १ सिय चरिमे, २ नो अचरिमे, ३ सिय अवत्तव्वए ४ नो चरिमाइं ५ नो अचरिमाइं ६ नो अवत्तव्वयाइं ७ सिय चरिमेय अचरिमेय, ८ सिय चरिमेय अचरिमाइंच, ९ सिय चरिमाइंच अचरिमेय, १० सिय चरिमाइंच अचरिमाइंच ११ सिय चरिमेय अवत्तव्वएय १२ सिय चरिमेय अवत्तव्वयाइंच, १३ सियचरि-

आकाशप्रदेश समश्रेणिसे अवगाहकर रहे और दो नीचे के यह चार प्रदेश चारिम है और एक मध्य का अवक्तव्य है १४ चउदवा १० पंदरवा, १६ क परमाणु भी दो आकाशप्रदेश समश्रेणिसे अवगाहकर रहे एक मध्य की श्रेणि के अन्त में रहे इसमें दो ऊपर लहवा, १७ सतरवा १८ अठारवा १९ उन्नीसवा, २० वीसवा, २१ वा, और २२ वा यह ९ भांगे नीं पावे हैं, २३ स्यात् बहुत चरिम एक अचरिम एक अवक्तव्य यह भांगापाता है क्योंकि षट् प्रदेशिक स्कन्ध चार आकाश प्रदेश अवगाहकर रहे उस में तीन आकाश प्रदेश समश्रेणि से अवगाहे प्रथम एक परमाणु मध्य के दो परमाणु विषम श्रेणि से रहे रहे दो प्रदेश सो चरिम है उन तीनआकाश प्रदेश में आदि का और अन्तका प्रत्यावगाही बहुत वचन से मध्य

माइय मवत्तव्वएय, १४ सिय परिमाइय अवत्तव्वयाइंच १५ नो अपरिमेय अवत्तव्वएय, १६ नो अपरिमेय अवत्तव्वयाईच, १७ नो अपरिमाइय अवत्तव्वएय, १८ नो अपरिमाइंय अवत्तव्वयाइय १९ सियपरिमेय अचरिमेय अवत्तव्वएय २०नो परिमेय अपरिमेय अवत्तव्वयाइंच, २१नो परिमय अपरिमाइय अवत्तव्व

मदेशवर्ती अपरिम, और विषम श्रेणिसे एकेक मदेश अवगाहकर रहे वे अवक्तव्य २४ स्यात् परिम के बहुत अपरिम को एक और अवक्तव्य बहुत यह भी मांगा है क्यों कि .... इस में पांच मदेशिक स्कन्ध पांच आकाश मदेश का अवगाहकर रहे उसमें तीन .... मथम परमाणु तीन आकाश मदेशपर समश्रेणिपने रहे हैं विषम श्रेणि से रह .... दुवे तीन आकाश मदेश पर रह हैं उस में आदि अन्त के दो मदेश अन्तवर्ती है परिम बहुत, मध्यवर्ती एक, मदेश वह अपरिम, विषम श्रेणी के दोनों मदेशों अवक्तव्य बहुत २५ स्यात् परिम भी बहुत अपरिम भी बहुत अवक्तव्य एक यह भी मांगा पाता है क्यों कि पांच मदेशिक स्कन्ध पांच आकाश मदेश अवगाहे उस में चार परमाणु तो समश्रेणि से रहे और एक विषम रहा इन चार आकाश मदेश पर रहे आदि अन्त का एक २ परमाणु परिम है मध्य के दो और विषम श्रेणिसे रहा एकपरमाणु अवक्तव्य और

एय, २२ नो चारिमेय अचरिमाइंच, अवत्तव्वयाइंच, सिय चरिमाइंच अचरिमेय अवत्तव्वएय, २४ सिय चरिमाइंच अचरिमेय अवत्तव्वयाइंच, २५ सियचरिमाइंच अचरिमाइंच अवत्तव्वएय २६ सियचरिमाइंच अचरिमाइंच अवत्तव्वयाइंच ॥११॥ सत्तपएसिएणं भंते! खंधे पुच्छा? गोयमा! सत्तपएसिएणं खंधे १ सियचरिमे २ नो अचरिमे

२३वा भांगा नहीं पाता यों पांच प्रदेशिक स्कन्धमें १ २-७-९+१० ११-२१ २४ और २१ यों २ भांगे पावे हैं शेष नहीं पावे॥१०॥अहो भगवन्! छः प्रदेशिक स्कन्धमें कितने भांग पावे? अहो गौतम! १८ भांग पावे १ स्यात् चरिमहै, क्योंकि छः प्रदेशिक स्कन्ध दो आकाशप्रदेश अवगाहकर रहे उस अपेक्षा चरिम है २ दूसरा भांगा नहीं पाता हो ३ स्यात् अवक्तव्य भी है क्यों कि छही एक आकाश प्रदेश पर रहे तब चरिम अचरिमकी अपेक्षा रहित अवक्तव्य है, चौथा पांचवा छठा भांगा नहीं पावे, ७ स्यात् एक चरिम एक अचरिम यह भांगा पाता है क्यों कि छः प्रदेशिक स्कन्ध पांच आकाश प्रदेश का अवगाह कर रहे इन में चारों तरफ अन्तमें रहे वे एकेक ही चरिम है और मध्य में रहे किन्तु जिन का वर्ण गंध रस स्पर्श एकसा होने से एक ही अचरिम है ८ स्यात् चरिम एक अचरिम बहुत यह भी पावे क्यों की उक्त स्थापना प्रमानेही चारों तरफ के चरिम और दो मध्य के अलग २ वर्ण गंध रस स्पर्श वाले होने से अचरिम बहुत हैं ९ स्यात् चरिम बहुत अचरिम एक यह भी पावे क्यों कि जब छः प्रदेशी स्कन्ध तीन आकाश प्रदेश अवगाह

३ सिय अवक्तव्य ४ नो चरिमाई ५ ना अचरिमाई, ६ ना अवक्तव्याई ७

सियचरिमे अचरिमेय ८ सियचरिमेय अचरिमाइंय, ९ सियचरिमाइंय अचरिमेय,

१० सियचरिमाइंय अचरिमाइंय, ११ सियचरिमेय अवक्तव्यय, १२ सियचरिमेय अवक्त

[illegible] परमाणु [illegible] इस में आदि व अंत क [illegible] १० स्यात् चरिम भी बहुत अचरिम भी बहुत [illegible] इस में [illegible] और परमाणु पद में [illegible] ११ स्यात् एक [illegible] इस में दो [illegible] १२ स्यात् [illegible]

अयाइस्स १३ सिय चरिमाइस्स अवत्तव्वएय, १४ सिय चारिमाइस्स अवत्तव्वयाईस, १५

बहुत अवक्तव्य पद भी है क्योंकि जब छप्रदेशिकस्कन्ध चार आकाश प्रदेश अवगाह कर रहे उस में दो परमाणु प्रथम प्रदेशमें दो समश्रेणी और दो विषम श्रेणी इस में चार परमाणु दो आकाश प्रदेश अवगाह उसमें एक चरिम बीचमें श्रेणिपने दो प्रदेश अवगाहे ते बहुतअवक्तव्य

११ स्यात् बहुत चरिम एक अवक्तव्य पद भी आकाश प्रदेश अवगाहे उसमें दो परमाणु ऊपर दो प्रदेश की श्रेणिपन, दो परमाणु नीचे समश्रेणिपने, इस में दो प्रदेश अवगाही द्विप्रदेसिक दो आकाश प्रदेश मध्य भाग में विषमश्रेणिपन, स्कन्ध ऊपर के, दो परमाणु का नीचे का स्कन्ध, यह बहुत प्रदेश अवगाही और दो प्रदेश एकेक प्रदेश अवगाही यह अवक्तव्य

१४ स्यात् चरिम भी बहुत अवक्तव्य भी बहुत यह भी है क्यों कि छ परमाणु का स्कन्ध छ आकाश प्रदेश अवगाहे उस में दो परमाणु ऊपर के आकाश प्रदेश समश्रेणि स अवगाहे दो परमाणु नीचे क दो प्रदेश पर समश्रेणि रहे हैं फिर एक ऊपर की श्रेणि में और एक नीचे की श्रेणि में रहे इस में एक ऊपर का चरिम एक नीचे का चरिम और शेष अवक्तव्य १५ पन्द्रहवा, सोलहवा, सतरहवा, अठारहवा भांगा नहीं पाता है, १९ स्यात् चरिम एक, अचरिम एक अवक्तव्य एक पद पाता है क्यों कि सप्त प्रदेशिक स्कन्ध

ना अचरिमेय अवक्तव्यय, १६नो अचरिमेय अवक्तव्याइच, १७नोअचरिमाईच अवच

६ आकाश प्रदेश अवगाह कर रहे इस परमाणे मानना बीसवा एकीसवा बावीसवा नहीं पाता है,

२३ स्यात् चरिम बहुत अचरिम एक अवक्तव्य एक पद है क्यों कि छ प्रदेशिक स्कन्ध चार आकाश प्रदेश अवगाहे इस में दो २ परमाणु तो दो आकाश प्रदेशपर समश्रेणि से रहे तीसरे चौथे आकाश प्रदेश पर एकेक परमाणु रहे यह विषम श्रेणिसे इस में प्रथम आकाश प्रदेशपर अवगाहे वे दो परमाणु चरिम बहुत, तीसरे प्रदेश पर रहे वह अचरिम एक, दूसरे आकाश प्रदेश विषम श्रेणि से रहे वे अवक्तव्य,

२४ स्यात् चरिम बहुत अचरिम एक अवक्तव्य बहुत यह भी है क्यों कि छ प्रदेशिक स्कन्ध पांच आकाश प्रदेश का अवगाह कर रहा उस में तीन आकाश प्रदेश तो विषम श्रेणी से अवगाह आदि के दो आकाश समश्रेणि से अवगाहे इस में आदि का अन्त का प्रदेश अवगाहे वह चरिम है मध्य का अचरिम, विषम श्रेणि से तीनों रहे वे अवक्तव्य,

२५ स्यात् चरिम बहुत अचरिम भी बहुत और अवक्तव्य एक पद भी भांगा पाता है क्योंकि जब छ प्रदेशिक स्कन्ध पांच आकाश प्रदेशका अवगाह

वत्तव्वय १८ नो अचरिमाइस्स अवत्तव्वयाइच १९ सिय चरिमेय अचरिमेय अवत्तव्वयए, २०

सिय चरिमेय अचरिमेय अवत्तव्वयाइस्स, २१ सियचरिमेय अचरिमाइच अवत्तव्वएय,

कर रहे इस में चार आकाश प्रदेश तो समश्रेणि से अवगाहे और एक विषम श्रेणि से अवगाहे इस में प्रथम अन्तिम दोनों चरिम मध्य के तीन अचरिम और विषम श्रेणि का एक अवक्तव्य, और २६ स्यात् चरिम बहुत अचरिम बहुत और अवक्त

व्य बहुत यह भी पाता है क्यों कि जिस षट्क ७ प्रदेशिक स्कन्ध छ आकाश प्रदेश का अवगाह कर रहे इस में चार प्रदेश समश्रेणि से अवगाहे दो प्रदेश दोनों तरफ विषम श्रेणि से अवगाहे इस में आपस्त के दो

परमाणु चरिम मध्य के दो परमाणु अचरिम और विषम श्रेणिके दो अवक्तव्य यों ७ प्रदेशिक स्कन्ध में १ ३-७ ८ ९-१० ११ १२ १३ १४ १९ २३ २४ २५ २६ यह १५ भागे पाते हैं शेष नहीं पाते हैं

॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! सात प्रदेशिक स्कन्ध के कितने भांगे हैं ! अहो गौतम ! सात प्रदेशिक स्कन्ध में १७ भांग पाते हैं यथा—१ स्यात् चरिम यह भी पाता है २ अचरिमका भांगा नहीं पाता है, ३ स्यात् अवक्तव्य मानो ही एक आकाश प्रदेश

अवगाह कर रहे ४ तीनों बहु वचन के भांगे नहीं पाते हैं, ७ स्यात् एक चरिम एक

अचरिम पद भी पावे, ८ चरिम एक अचरिम बहुत पद भी पावे • स्यात्
चरिम बहुत अचरिम एक ९ • स्यात् चरिमभी बहुत
अचरिमभी बहुत
११ स्यात् एक चरिम
एक अवक्तव्य १२ स्यात् एक चरिम बहुत अवक्तव्य १३ स्यात्
चरिम बहुत अवक्तव्य एक १४ स्यात् चरिमभी बहुत अवक्तव्यभी बहुत
१५ • एक चरिम एक अवक्तव्य, पन्नरवा सोलवा सतरवा
अठारवा यह चार भांग नहीं पाते है १९ चरिम एक
अचरिम एक अवक्तव्य बहुत
२० स्यात् चरिम एक अचरिम एक अवक्तव्य बहुत यह भी है
२१ चरिम एक अचरिम बहुत अवक्तव्य एक
२२ बावीसवा भांगा नहीं पावे

२२नो चारिमेय अचरिमाइच, अवत्तव्वयाइंच २३ सिय चरिमाइच अचरिमेय अवत्तव्वएय, २४ सियचारिमाइच अचरिमेय अवत्तव्वयाइच २५ सियचरिमाइच अचरिमाइच अवत्तव्वएय, २६ सियचरिमाइच अचरिमाइच अवत्तव्वयाइच ॥१२॥ अट्ठपएसिएण भंते! खंध पुच्छा ? गोयमा ! अट्ठपएसिए खंधे १ सिय चरिमे २ नो अचरिमे, ३ सिय अवत्तव्वएय ४ नो अचरिमाइच, ६ नो अवत्तव्वयाइच, ७ सिय चरिमेय अचरिमेय, ८ सिय चरिमेय अचरिमाइच, ९ सिय चारिमाइच अचरिमेय, १० सिय

२१ स्यात् चरिम चरिम बहुत अचरि रिम बहुत अव बहुत अचरिम बहुत बहुत अचरिम एक अवक्तव्य भी एक म एक अवक्तव्य बहुत २८ स्यात् कव्य एक अवक्तव्य भी २५ स्यात चरिम बहुत अच और २६ चरिम बहुत पो सात भंगे

शिक स्कन्ध में १ ३ ७-८ ९-१० ११ १२ १३ १४ १९ २० २१ २३ २५ २ २६ यों सतरे भांगे पाते हैं बाकी ० नहीं पाते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन्! आठ प्रदेशिक स्कन्ध में कितने भांगे पाते हैं? अहो गौतम! १८ भांगे पाते हैं इसमें

अपारिय पद भी पाय, ८ पारिय एक अपारिय बहुत पद पीपाय • स्यात्
पारिय बहुत अपारिय एक ९ स्यात् पारियभी बहुत
अपारियभी बहुत
११ स्यात् एक पारिय
१२ एक अवक्तव्य १३ स्यात् एक पारिय बहुत अवक्तव्य १३ स्यात्
पारिय बहुत अवक्तव्य एक १४ स्यात् पारियभी बहुत अवक्तव्यभी बहुत
१५ एक पारिय एक अवक्तव्य, पचरया सोल्या सतरया
भंगाका पद चार भांग नहीं पाते हैं १९ पारिय एक
अपारिय एक अवक्तव्य बहुत
२० स्यात् पारिय एक अपारिय एक अवक्तव्य बहुत पद भी है
२१ पारिय एक अपारिय बहुत अवक्तव्य एक
२२ पारिया भांगा नहीं पाय

१५ नो अचरिमेय अवत्तव्वएय, १६ नो अचरिमेय अवत्तव्वयाइंच, १७ नो अचरिमाइंच अवत्तव्वएय, १८ नो अचरिमाइंच अवत्तव्वयाइंच १९ सियचरिमेय अचरिमेय अवत्तव्वएय, २० सियचरिमेय अचरिमेय अवत्तव्वयाइंच २१ सियचरिमेय अचरिमाइं अवत्तव्वएय, २२ सिय चरिमेय अचरिमाइंच अवत्तव्वयाइंच, २३ सिय चरिमाइंच अचरिमेय अवत्तव्वएय, २४ सिय चरिमाइंच अचरिमेय अवत्तव्वयाइंच, २५ सिय चरिमाइंच अचरिमाइंच अवत्तव्वएय, २६ सिय -

अचरम एक २३ चरिम बहुत, अचरिमएक अवक्तव्य एक
२४ चरिम बहुत अचरिम एक अवक्तव्य बहुत

२५ स्यात् चरिम २६ स्यात् चरिम भी बहुत, अचरिम भी बहुत, और अवक्तव्य भी बहुत, अचरिमबहुत बहुत, यह भी भांगा पाता है क्यों कि आठ प्रदेशिक स्कन्धने और अवक्तव्य एक आदि अंतका आकाशबहुत प्रदेशोंकर अवगाहा इसलिये बहुत चरिमहै मध्यमें बहुत प्रमाणु रहे इसलिय बहुत अचरिम है और कौन में दो २ आकाश प्रदेश रहे इसलिये बहुत अवक्तव्य है

परिमाइच अन्तरिमाइच अत्रचम्मयाइच ॥ ससेज्ज पएसिए खंधे असंसेज्जपएसिए अणतपएसिएय खंधे जहेव अट्ठपएसिए तहेव पंचेय २ भाणियव्वा ॥ १३ ॥ (गाहा) परमाणुम्मियतइओ, पढमोतइओअ होइ दुपएसे ॥ पढमो तइओ नवमो, एक्कारसमोअ तिपएसे ॥ १ ॥ पढमो तइओनवमो, दसमो एक्कार बारसमो ॥ भंगा चउप्पएसे तवीसइमाय बाधव्वो ॥ २ ॥ पढमोय तइओसत्तम नवम दस एक्कारस बारतेरसमा ॥ तेवीस चउव्वीसम, पणवीसइमोय पंचमए ॥ ३ ॥ विपडरय

यों १ ३ ७-८ ९-१० ११ १२ १३ १४ १९ २० २१ २२-२३ २४ २५ और २६ सब १८ भांगे पाते हैं बाकी २ ४ ५-६ १५-१६ १७ १८ यों ८ नहीं पाते हैं यों जिस प्रकार आठ प्रदेशिक स्कन्ध के भाठर भांग होते हैं, वैसे ही संख्यात प्रदेशिक में असंख्यात प्रदेशिक में और अनंत प्रदेशिक में आठ प्रदेशिक के जैसे ही १८ भांगे पाते हैं, बाकी के आठ भांगे शून्य हैं ॥ १३ ॥ अब उक्त कथन को संक्षेप में कहते हैं—परमाणु पुद्गल में एक तीसरा भांगा पाता है, द्विप्रदेशिक स्कन्ध में प्रथम और तीसरा भांगा पाता है, त्रिप्रदेशिक स्कन्ध में-पहिला, तीसरा, नववा, दशवा, इग्यारहवा और बारहवा यों ६ भांग पाते हैं ॥ १ ॥ चार प्रदेशिक स्कन्ध में सात भांगे पाते हैं ७ तो उक्त और तेवीसवा ॥ २ ॥ पांच

पंच छट्ठ, पन्नरस सोलंच सत्तरट्ठार ॥ वीसेक्कवीस बावीसग च वज्जेउ छट्ठामि ॥ ४ ॥ बिपउत्थ पचछट्ठ पण्णरससोलच सत्तरट्ठार ॥ बावीसइमविहूणा ॥ सत्तपए संमिसखंधेमि ॥ ५ ॥ बिचउत्थ पंचछट्ठ पन्नरस सोलच सत्तरट्ठार ॥ एएवज्जिय भगा सेसा सेसेसु खंधेसु ॥६॥ १४ ॥ कइण भंते ! संठाणा पण्णत्ता ? गोयमा! पंचसंठाणा पण्णत्ता तजहा परिमंडल, वट्टे तसे, चउरंसे, आयतेय ॥ परिमंडलाणं भंते ! संठाणा किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता? गोयमा ! णो संखेज्जा,णो असंखेज्जा,

प्रदेशिक में ११ भांग यथा—१ ३ ७-९ १० ११ १२ १३ २३ २४ २५ यह पाते हैं ॥ ३ ॥ छ प्रदेशिक स्कन्ध में २ ४ ५ ६ १५ १६ १७ १८ २० २१ २२ यह इग्यारह छोड कर बाकी १५ भांग पाते हैं ॥ ४॥ सात प्रदेशिक स्कन्ध में २ ४ ५ ६ १५ १६-१७ १८ २२ यह छोड कर बाकी के सतरे भांग पाते हैं॥५॥ दूसरा चौथा पांचवा पन्नरहवा, सोलहवा यह आठ भांग छोड कर शेष १८ भांग आठ प्रदेशिक स्कन्ध में पाते हैं ॥ ६ ॥ १४ ॥+ अहो भगवन् ! संस्थान कितने प्रकार के कहे हैं ? अहो गौतम ! पांच प्रकार

+ असंख्यात प्रदेशात्मक लोक में अनंत प्रदेशिक स्कन्ध किस तरह रहता है ? जिस प्रकार एक कमरे में अनेक दीपक लगाने से उन का प्रकाश अलग २ होने पर भी एकेक में समावेश होता है तसे ही पुद्गलों का भी परस्पर समावेश होजाता है

अणता ॥ एव जाव आयए ॥ परिमडलणं भते ! सठाण किं सखेज्जपएसिए, असखेज्जपएसिए अणत पएसिए ? गोयमा ! सिय सखेज्जपएसिए, सिय असखेज्ज पएसिए, सिय अणत पएसिए ॥ एव जाव आयए ॥ परिमडलण भते ! सठाणे किं सखेज्ज पएसिए असंखेज्ज पएसिए अणत पएसिए ? गोयमा ! सिय संखेज्ज पएसिए सिय असखेज्ज पएसिए सिय अणत पएसिए एव जाव आयए परिमडलेण भते ! संठाणे सखिज्ज पएसिए संखेज्ज पएसोगाढ, असखेज्ज पएसोगाढ, अणत पएसोगाढे ?

के कहे हैं यथा—१ परिमडल (गोल चूडी जैसा) २ वर्तुल (गोल-लड्डू जैसा) ३ त्रिकोन सिंघाडे जैसा, ४ चतुष्कोन-चौकी जैसा, और आयत, लंबी लकडी जैसा अहो भगवन् ! परिमडल संस्थान क्या संख्यात है कि असंख्यात है कि अनंत है ? अहो गौतम ! संख्यात असंख्यात नहीं है परंतु अनंत है ऐसे यावत् आयत संस्थान पर्यंत अनंत प्रदेशिक का कहना अब अनंत द्रव्यात्मक है अब प्रदेश आश्रिय पूछते हैं अहो भगवन् ! परिमडल संस्थान क्या संख्यात प्रदेशी है कि असंख्यात प्रदेशी है कि अनंत प्रदेशी है ? अहो गौतम ! कदाचित् संख्यात प्रदेशी है कदाचित् असंख्यात प्रदेशी है कदाचित् अनंत प्रदेशी भी है एस ही यावत् आयत संस्थान पर्यंत कहना अब अवगाहना आश्रिय पूछते हैं अहो भगवन् ! संख्यात प्रदेशिक परिमडल संस्थान क्या संख्यात प्रदेशावगाही है कि असंख्यात प्रदेशावगाही है कि अनंत प्रदेश अवगाही है ? अहो गौतम ! संख्यात प्रदेशावगाही है

असखम्ज पएसोगाढे नो अणत पएसोगाढे ॥ एवं जाव आयए ॥ परिमंडलेण भते सठाणे अणतपएसिए किं सखेज्ज पएसोगाढे, असखेज्ज पएसोगाढे, अणत पएसोगाढे ? गोयमा ! सिय सखेज्ज पएसोगाढे, सिय असखेज्ज पएसोगाढे णो अणत पएसोगाढ ॥ एव जाव आयए ॥ १५ ॥ परिमडलेण भते! सठाणे सखेज्ज

किन्तु असंख्यात और अनंत प्रदेशावगाही नहीं है। ऐसे ही यावत् आयत संस्थान पर्यंत कहना ॥ अहो भगवन् ! असंख्यात प्रदेशिक परिमडल संस्थान क्या संख्यात प्रदेश अवगाही है कि असंख्यात प्रदेशावगाही है कि अनंत प्रदेशावगाही है ? अहो गौतम ! कदाचित् संख्यात प्रदेश अवगाही भी है, कदाचित् असंख्यात प्रदेशावगाही भी है परंतु अनंत प्रदेशावगाही नहीं है ऐसे ही यावत् आयत संस्थान पर्यंत कहना अहो भगवन् ! अनंत प्रदेशी परिमडल संस्थान क्या संख्यात प्रदेशावगाही है कि असंख्यात प्रदेशावगाही है कि अनंत प्रदेशावगाही है ? अहो गौतम ! कदाचित् संख्यात प्रदेश अवगाही भी है कदाचित् असंख्यात प्रदेशावगाही भी है परतु अनंत प्रदेशावगाही नहीं है क्यों कि लोक असंख्यात प्रदेशात्मक ही है ऐसे ही यावत् आयत संस्थान पर्यंत कहना ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! संख्यात

अणता ॥ एवं जाव आयए ॥ परिमंडलणं भंते ! संठाणे किं संखेज्जपएसिए, असंखेज्जपएसिए, अणंत पएसिए ? गोयमा ! सिय संखेज्जपएसिए, सिय असंखेज्ज पएसिए, सिय अणंत पएसिए ॥ एवं जाव आयए ॥ परिमंडलेणं भंते ! संठाणे किं संखेज्ज पएसिए असंखेज्ज पएसिए अणंत पएसिए ? गोयमा ! सिय संखेज्ज पएसिए असंखेज्ज पएसिए अणंत पएसिए एवं जाव आयए परिमंडलेणं भंते ! संठाणे संखिज्ज पएसिए संखेज्ज पएसोगाढे, असंखेज्ज पएसोगाढे, अणंत पएसोगाढे ?

के कहे हैं तद्यथा—१ परिमंडल (गोल चूडी जैसा) २ वर्तुल (गोल-लड्डू जैसा) ३ त्रिकोन सिंघाड़े ... चौकोन-चौकी जैसा, और आयत, लम्बी लकडी जैसा अहो भगवन् ! परिमंडल संस्थान ...) कि असंख्यात है कि अनंत है ? अहो गौतम ! संख्यात असंख्यात नहीं है परंतु ... है ऐसे यावत् आयत संस्थान पर्यंत अनंत प्रदेशिक का कहना ॥ ४ ॥ अनंत पुद्गलात्मक है अब ... अहो भगवन् ! परिमंडल संस्थान क्या संख्यात प्रदेशी है कि असंख्यात ... गौतम ! कदाचित् संख्यात प्रदेशी है कदाचित् असंख्यात ... अवगाहना

सज्ज पएसिए ... ...

परिमंडलेण भंते ! संठाणे असंखेज्ज पएसिए असंखेज्ज पएसोगाढे, किं चरिमे पुच्छा? गोयमा ! असंखेज्ज पएसिए असंखेज्ज पएसोगाढे, णो चरिमे जहा संखेज्ज पएसोगाढे ॥ एवं जाव आयए ॥ १७ ॥ परिमंडलेण भंते ! संठाणे अणंत पएसिए संखेज्ज पएसोगाढे किं चरिमे पुच्छा ? गोयमा ! तहेव जाव आयते

परिमंडल प्रदेशात्मक असंख्यात प्रदेशावगाही क्या चरिम है पृच्छा ! अहो गौतम ! असंख्यात प्रदेशी परिमंडल संस्थान असंख्यात प्रदेशावगाही का भी जैसा संख्यात प्रदेशात्मक का कहा वैसा ही कहना ऐसेही यावत् आयत संस्थान पर्यंत कहना ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! परिमंडल संस्थान अनंत प्रदेशात्मक संख्यात प्रदेशावगाही क्या चरिम है ? प्रश्न ? अहो गौतम ! उक्त प्रमाने ही कहना और ऐसे ही यावत् आयत संस्थान पर्यंत कहना अनंत प्रदेशिक असंख्यात प्रदेशिक असंख्यात प्रदेशावगाही का भी संख्यात प्रदेशात्मक जैसा ही कहना और ऐसे ही यावत् परिमंडल पर्यंत कहना अहो भगवन् ! परिमंडल संस्थान

अणतपएसिए असंखेज्ज पएसोगाढ जहा संखेज्ज पएसोगाढे, एवं जाव आयते ॥ परिमंडलस्सणं भंते ! संठाणस्स संखिज्ज पएसियस्स संखेज्ज पएसोगाढस्स अचरिमस्सय चरिमाणय चरिमंतपएसाणय अचरिमंत पएसाणय, दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए, दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा ! सव्वत्थोवे परिमंडलस्स संठाणस्स संखिज्ज पएसियस्स संखिज्ज पएसोगाढस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे, चरिमाइं संखेज्जगुणाइं, अचरिम य चरिमाणिय दोवि विसेसाहियाइं ॥ पएसट्ठयाए सव्वत्थोवा परिमंडलस्स संठाणस्स संखेज्ज

प्रदेशात्मक संख्यात प्रदेशावगाही अचरिम चरिम के प्रदेशिक और अचरिमान्त प्रदेशिक इनमें द्रव्यार्थपने प्रदेशार्थपने, यथा द्रव्य प्रदेशार्थपने कौनसे थोडे ज्यादे हैं तुल्य हैं विशेष हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे परिमंडल संस्थान संख्यात प्रदेशिक संख्यात प्रदेशावगाढ द्रव्यार्थपने एक अचरिम खण्ड, उस से चरिम बहुवचन होने से संख्यात गुने क्यों कि संख्यात प्रदेशिक हैं, उस से अचरिम और चरिम दोनों मिलकर विशेषाधिक अब प्रदेशार्थपने—सब से थोडे परिमंडल संस्थान संख्यात प्रदेशिक संख्यात प्रदेशावगाढ के चरिम प्रदेश, उस से अचरिमान्त प्रदेश संख्यात गुने, चरिमंत प्रदेश

चरिमंत पएसाय अचरिमंत पएसाय दोवि विसेसाहिया, ॥दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवे परिमंडलस्स संठाणस्स संखिज्ज पएसियस्स संखेज्ज पएसोगाढस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे चरमाई संखेज्जगुणाइ, अचरिमंच चरिमाणिय दोवि विसेसाहियाइ, चरिमंत पएसा संखेज्ज गुणा अचरिमंत पएसा संखेज्जगुणा चरिमंत पएसाय अचरिमंत पएसाय दोवि विसेसाहिया॥एवं वट्टंस चउरंस आयएसुवि जोएयव्वं ॥ १८ ॥ परिमंडलस्सणं भंते ! संठाणस्स असंखिज्ज पएसियस्स संखेज्ज पएसोगाढस्स अचरिमस्सय

अचरिमांत प्रदेश दोनों मिलकर विशेषाधिक अब द्रव्यार्थ प्रदेशार्थपने—सब से थोडे परिमंडल संस्थान संख्यात प्रदेशात्मक संख्यात प्रदेशावगाही के द्रव्यार्थपने एक अचरिम, २ उस से चरिम संख्यातगुने, ३ उस से अचरिम चरिम दोनों मिलकर विशेषाधिक, ४ उस से चरिमांत प्रदेश संख्यातगुने, ५ उस से अचरिमांत प्रदेश संख्यातगुने, ६ उस से चरिमांत प्रदेश अचरिमांत प्रदेशिक दोनों मिलकर विशेषाधिक ऐसे ही वर्तुल, त्रिकोन, चतुष्कोन और आयत का कहना ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! परिमंडल संस्थान असंख्यात प्रदेशिक संख्यात प्रदेशावगाढ के अचरिम द्रव्य [एक वचन]

चरिमाणय चरिमंतपएसाणय अचरिमंतपएसाणय दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे परिमंडलस्स संठाणस्स असंखेज्जपएसियस्स संखेज्जपएसोगाढस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे, चरिमाइं संखेज्जगुणाइं, अचरिमंय चरिमाणिय दोवि विसेसाहियाइं ॥ पएसट्ठयाए सव्वत्थोवा परिमंडलस्स संठाणस्स असंखिज्ज पएसियस्स संखेज्ज पएसोगाढस्स चरिमंत पएसा अचरिमंत पएसा संखेज्जगुणा चरिमंत पएसाय अचरिमंत पएसाय दोवि विसेसाहिया ॥ दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवे परिमंडलस्स संठाणस्स असंखेज्जपएसियस्स संखेज्ज पएसोगाढस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरिमे

चरिम द्रव्य (बहु वचन) चरिमांत प्रदेश द्रव्यार्थपने प्रदेशार्थपने तथा द्रव्यार्थप्रदेशार्थपने कौन २ से अल्प बहुत तुल्य विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे परिमंडल संस्थान के असंख्यात प्रदेशिक संख्यात प्रदेशावगाह के द्रव्यार्थपने एक अचरिम, इस से अनेक चरिम संख्यातगुने, और अचरिम चरिम दोनों विशेषाधिक, प्रदेशार्थपने सब से थोडे परिमंडल संस्थान असंख्यात प्रदेशिक, संख्यात प्रदेशावगाहि चरिमान्त प्रदेश अचरिमांत संख्यातगुने और चरिमान्त प्रदेश अचरिमान्त दोनों विशेषाधिक. द्रव्यार्थ प्रदेशार्थपने सब से थोडे परिमंडल संस्थान असंख्यात प्रदेशिक संख्यात प्रदेश अवगाही के द्रव्यार्थपने

अचरिमंत पएसा संखेज्जगुणा, चरिमंतपएसाय अचरिमंत पएसाय दोवि विसेसाहिया ॥ एवं जाव आयए ॥ १९ ॥ परिमंडलस्सणं भंते ! संठाणस्स असंखिज्ज पएसियस्स असंखेज्ज पएसोगाढस्स अचरिमस्स चरिमाणय चरिमंत पएसाणय अचरिमंत पएसाणय दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! जहा रयणप्पभाए अप्पाबहुयं तहेव निरवसेसं भाणियव्वं, एवं जाव आयए ॥ २० ॥ परिमंडलस्सणं भंते ! संठाणस्स अणंत पएसियस्स संखेज्ज पएसोगाढस्स अचरिमस्सय चरिमाणय चरिमंत पएसाणय

एक अचरिम उस से चरिमा संख्यातगुने और चरिम अचरिम दोनों विशेषाधिक चरिमांत प्रदेश अचरिमांत प्रदेश संख्यात गुने उस से चरिमांत प्रदेश और अचरिमांत प्रदेश विशेषाधिक ऐसे ही यावत् आयत संस्थान तक कहना ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! परिमंडल संस्थान असंख्यात प्रदेशात्मक असंख्यात प्रदेशावगाही अचरिम एक चरिम बहुत चरिमान्त प्रदेश, अचरिमान्त प्रदेश द्रव्यार्थपने प्रदेशार्थपने तथा द्रव्यार्थ प्रदेशार्थपने कौन २ अल्पबहुत तुल्य विशेष हैं? अहो गौतम ! जिस प्रकार रत्नप्रभा की अल्पाबहुत कही वैसी ही निरवशेषपने यहां भी कहना और ऐसे ही यावत् आयत संस्थान पर्यंत कहना ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! परिमंडल संस्थान अनंत प्रदेशिक संख्यात प्रदेशावगाही चरमादि चारों में कौन २ अल्प ज्यादा विशेष हैं ? अहो गौतम ! जैसा

अचरिमत पएसाणय दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! जहा संखेज्ज पएसियस्स सव्वत्थ पएसोगाढस्स नवरं संकमेण अणंतगुणा, एवं जाव आयए॥ परिमंडलस्सणं भंते! संठाणस्स अणंत पएसियस्स असंखेज्ज पएसोगाढस्स अचरिमस्सय चरिमाणय चरिमंत पएसाणय अचरिमंत पएसाणय दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! जहा रयणप्पभाए णवरं संकमेण अणंतगुणा॥एवं जाव आयए॥२१॥जीवेणं भंते! गइचरिमेणं किं चरिमे अचरिमे? गोयमा! सिय चरिमे सिय अचरिमे एवं निरंतरं जाव वेमाणिया॥ नेरइयाणं भंते!

संख्यात प्रदेशिक संख्यात प्रदेशावगाही का कहा वैसा इस का भी कहना परंतु उस में इतना विशेष अल्प बहुत्व में अनंत गुना कहना, एस ही यावत् आयत संस्थान पर्यंत कहना अहो भगवन्! परिमंडल संस्थान अनंत प्रदेशिक असंख्यात प्रदेशावगाही अचरिमादि चारों में कौन २ अल्प ज्यादा तुल्य विशेषाधिक हैं? अहो गौतम! जैसा रत्नप्रभा का कहा वैसा ही यहां भी कहना परंतु उसमें इतना विशेष संक्रमण के स्थान अनंत गुना कहना यों यावत् आयत पर्यंत कहना॥ इति॥ २१॥ अब जीवादि के चरिमा चरिम का पृच्छते हैं॥ अहो भगवन्! जीव गति पर्याय आश्रिय क्या चरिम है अर्थात् उस गति में

गायमा ! चरिमावि अचरिमावि ॥ एवं निरंतर जाव वेमाणिए ॥ २२ ॥ नरइएणं भंते ! ठिइ चरिमेण किं चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे ॥ एवं निरंतर जाव वेमाणिए ॥ नरइयाण भंते ! ठिई चरिमेण किं चरिमा

फीर नहीं आवे, या अचरिम है अर्थात् पीछा उस में उत्पन्न होता है ? अहो गौतम ! कदाचित् चरिम है क्यों कि मुक्त में जाते हैं और कदाचित् अचरिम भी है क्यों कि फिर भी उसगति में आते हैं यों निरंतर वैमानिक पर्यंत चौवीस ही दंडक का प्रश्नोत्तर कहना अब बहुत जीवों आश्रिय पूछते हैं-अहो भगवन् ! बहुत जीवों गति के चरिम हैं कि अचरिम हैं ! अहो गौतम ! बहुत जीवों चरिम भी हैं और बहुत जीवों अचरिम भी हैं अहो भगवन् ! नरक के जीवों चरिम हैं कि अचरिम हैं ? अहो गौतम ! चरिम भी हैं अचरिम भी हैं ऐसेही यावत् वैमानिक पर्यंत कहना॥२२॥दूसरा स्थितिद्वार अहो भगवन्! नरकके जीवों स्थिति आश्रिय चरिम हैं कि अचरिम हैं अहो गौतम! कितनेक चरिम हैं अर्थात् पुनः नरक की स्थिति को प्राप्त नहीं होते हैं और कितनेक अचरिम भी हैं अर्थात् पुनः नरक की स्थिति को प्राप्त होते हैं यों निरंतर वैमानिक पर्यन्त कहना अहो भगवन् ! बहुत नरक के नेरीयों चरिम हैं कि अचरिम हैं ? अहो

अचरिमा ? गोयमा ! सिय चरिमावि अचरिमावि ॥ एवं निरंतर जाव वेमाणिए ॥ २३ ॥ नेरइएणं भंते ! भवचरिमेणं किं चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे ॥ एवं निरंतर जाव वेमाणिए ॥ नेरइयाणं भंते ! भव चरिमेण किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! सिय चरिमा सिय अचरिमा ॥ एवं निरंतर जाव वेमाणिया ॥ २४ ॥ नेरइएणं भंते ! भासा चरिमेण किं चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे ॥ एवं एगिंदिय वज्ज निरंतरं जाव वेमाणिए ॥ नेरइयाणं भंते ! भासा चरिमेण किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमावि अचरिमावि ॥ एवं एगिंदिय वज्जा निरंतर

गौतम ! चरिम भी है अचरिम भी है ऐसे यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना ॥ २३ ॥ तीसरा भव द्वार अहो भगवन् ! नरीय नरक के भव आश्रिय चरिम है कि अचरिम है ? अहो गौतम ! चरिम भी है अचरिम भी है अहो भगवन् ! बहुत नेरीय नरक के भव आश्रिय चरिम हैं कि अचरिम हैं ? अहो गौतम ! स्यात् चरिम भी हैं स्यात् अचरिम भी हैं ऐसे ही यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना ॥ २४ ॥ चौथा भाषा द्वार-अहो भगवन् ! नरक के जीवों भाषा आश्रिय क्या चरिम है कि अचरिम है ? अहो गौतम ! चरिम भी है अचरिम भी है यों एकेन्द्रिय छोडकर (क्यों कि एकेन्द्रिय में भाषा नहीं है) यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना अहो भगवन् ! बहुत नेरीय भाषा आश्रिय चरिम हैं कि अचरिम हैं ?

गोयमा ! सिय चरिम सिय अचरिमे ॥ एव निरतर जाव वेमाणिए ॥ नेरइयाणं भंते ! आणापाणु चरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरमावि अचरिमावि ॥ एव निरतर जाव वेमाणिया ॥२६॥ नेरइएणं भंते ! आहार चरिमेणं किं चरिमे अचरिमे? गोयमा! सियचरिमे सियअचरिमे ॥ एवं निरंतर जाव वेमाणिए ॥ नेरइयाणं भंते ! आहार चरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमावि अचरिमावि एव

अहो गौतम ! चरिम भी हैं, अचरिम भी हैं ऐसे ही एकेन्द्रिय छोडकर यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना ॥ २८ ॥ श्वासोश्वास द्वार अहो भगवन्! नेरीये श्वासोश्वास आश्रिय क्या चरिम है कि अचरिम है ? अहो गौतम ! चरिम भी है अचरिम भी है यों निरंतर वैमानिक पर्यन्त कहना अहो भगवन् ! बहुत नरक के नरीये श्वासोश्वास आश्रिय क्या चरिम हैं कि अचरिम हैं ? अहो गौतम ! स्यात् चरिम भी हैं स्यात् अचरिम भी हैं ॥ २९ ॥ आहारद्वार अहो भगवन् ! नेरीये आहार की अपेक्षा क्या चरिम है कि अचरिम है ? अहो गौतम ! स्यात् चरिम भी है स्यात् अचरिम भी है यों निरंतर यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना अहो भगवन् ' बहुत नेरीये आहार अपेक्षा चरिम हैं कि अचरिम हैं ? अहो गौतम !

निरतर जाव वेमाणिया॥ २७ ॥ नरइएण भते ! भावचरिमेण किं चरिम अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिम ॥ एव निरतर जाव वेमाणिए ॥ नरइयाण भते ! भाव चरिमेण किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमावि अचरिमावि ॥ एव निरतर जाव वेमाणिया ॥ २८ ॥ नेरइएण भत ! वण्ण चरिमेण किं चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरिम सिय अचरिमे ॥ एव निरतर जाव वेमाणिए ॥ नरइयाण भते! वण्ण चरिमेण किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमावि अचरिमावि ॥ एव निरतर जाव वेमाणिए ॥ नरइएण भते! गध चरिमेण किं चरिम अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे ॥ एव निरतर जाव वेमाणिए ॥ नेरइयाण भते ! गध चरिमेण किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमावि अचरि

दोनों प्रकार के हैं यों वैमानिकतक कहना ॥ २७ ॥ भाव द्वार अहो भगवन् ! नेरीये भाव आश्रिय चरिम है कि अचरिम है ? अहो गौतम ! दोनों प्रकार के हैं यों यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना अहो भगवन् ! बहुत नेरीये भाव (वर्णादि पर्याय) आश्रिय चरिम हैं कि अचरिम हैं ? अहो गौतम ! दोनों प्रकार के हैं यों वैमानिक तक कहना ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! नेरीये वर्ण आश्रिय चरिम है कि अचरिम है ? अहो गौतम ! चरिम भी है अचरिम भी है ऐसे ही बहुत जीवों आश्रिय भी कहना

११ चरिम प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। चरिम प्र। ३

१० चरिम प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। चरिम प्र।

चरिम प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। चरिम प्र।

चरिम प्र। अच प्र। अच । अच प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। चरिम प्र

चरिम प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। चरिम प्र।

७ चरिम प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। चरिम प्र

चरिम प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। चरिम प्र ४

८ चरिम प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। अच प्र। चरिम प्र ५

वायव्यकून चरिम प्र। चरिम । चरिम । चरिम नैरुत्यकून

७ पश्चिम दिशा ५

उत्तरदिशा ७ — पूर्व दिशा

मात्रि ॥ एव जाव वेमाणिया ॥ नेरइएण भते ! रस चरिमेण किं चरिमे अच रिमे ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे ॥ एव निरतर जाव वेमाणिए ॥

ऐसे ही दो आलापक गंध के, दो आलापक रस के, दो आलापक स्पर्श के कहना यावत् बहुत नरीये

नेरइयाणं भंते ! रस चरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमावि अचरिमावि॥ एवं निरंतरं जाव वेमाणिया॥ नेरइयाणं भंते! फास चरिमेणं किं चरिमे अचरिमे? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे ॥ एवं निरंतरं जाव वेमाणिए ॥ नेरइयाणं भंते ! फास चरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमावि अचरिमावि ॥ एवं निरंतरं जाव वेमाणिया ॥ संगहणि गाहा—गइ ठिइ भवेअभासा, आणापाण चरिमेय बोधव्वे॥ आहार भाव चरिमे, वण्ण गंधरस फासेय ॥ इति पण्णवणाए भगवईए दसमं चरिमं पय सम्मत्तं ॥ १० ॥

स्पर्श आश्रिय चरिम भी हैं और अचरिम भी हैं अब इन ११ द्वार के नाम संग्रहणी गाथा कर कहते हैं १ गतिद्वार, २ स्थितिद्वार, ३ भवद्वार, ४ भाषाद्वार, ५ श्वासोश्वास द्वार, ६ आहारद्वार, ७ भावद्वार, ८ वर्णद्वार, ९ गंधद्वार, १० रसद्वार, और ११ स्पर्श द्वार यह चौबीस ही दंडक पर एक जीव आश्रिय और अनेक जीव आश्रिय, यों ४८ सूत्र कहे हैं इति दशवा चरिम पद समाप्त ॥ १० ॥

से णूण भंते! मण्णामीति ओहारिणी भासा, चिंतेमीति ओहारिणी भासा, अह मण्णा-मिति ओहारिणी भासा अह चिंतेमीति ओहारिणी भासा, तह मण्णामीति ओहारिणी भासा, तह चिंतेमिति ओहारिणी भासा ? हंता गोयमा ! मण्णामीति ओहारिणी भासा, चिंतेमीति ओहारिणी भासा , अहमण्णामिति ओहारिणी भासा, अह चिंते-मीति ओहारिणी भासा,तह मण्णामित ओहारिणी भासा, तह चिंतेमीति ओहारिणी भासा ॥ १ ॥ ओहारिणीण भंते! भासा, किं सच्चा मोसा सच्चामोसा, असच्चामोसा?

अब अग्यारहवे पद में भाषा का वर्णन करते हैं अहो भगवन् ! निश्चय करके मैं मानता हूं कि अवधारणी भाषा है, मैं चिंतवता हूं कि अवधारणी भाषा है, अवबोधार्थभूता अवधारणी भाषा मैं विशेष कर मानता हूं, मैं विशेषकर चिंतवता हूं, तैसे मानता हूं कि अवधारिणी भाषा और चिंतवन करता हूं कि अवधारणी भाषा है ? हां गौतम ! तू मानता है ऐसी अवधारिणी भाषा है तू चिंतवता है ऐसी अवधारणी भाषा है, विशेष मानता है कि अवधारणी भाषा है, विशेष चिंतवन करता है कि अवधारणी भाषा है, तैसे मानता है कि अवधारणी भाषा है तैसे चिंतवन करता है कि अवधारणी भाषा है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! अवबोधभूता अवधारिणी भाषा क्या सत्य है, असत्य है सत्य मृषा (मीश्र) है या असत्य

गोयमा ! सियसच्चा, सियमोसा, सियसच्चामोसा, सिय असच्चामोसा ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ओहारिणीणं भासा सिय सच्चा सिय मोसा सियसच्चा मोसा सिय असच्चामोसा ? गोयमा ! आराहणसिच्चा, विराहणी मोसा, आराहणी विराहणी सच्चामोसा, जेणेव आराहणी तेणव विराहणी, तेणेव अराहणाविराहणी असच्चामोसा णाम सा चउत्थी भासा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ ओहारिणीणं

मृषा (व्यवहार) भाषा है ? अहो गौतम ! अवधारिणी भाषा स्यात् सत्य है, स्यात् असत्य है, स्यात् सत्यमृषा है व स्यात् असत्यमृषा है अहो भगवन् ! किस कारन ऐसा कहा है कि अवधारणी भाषा स्यात् सत्य, स्यात् असत्य, स्यात् सत्यमृषा व स्यात् असत्यमृषा है ? अहो गौतम ! सत्य वस्तु का स्थापन करने में सर्वज्ञ पथ को अनुसरती होवे और जिस भाषा से मोक्ष का साधन होसके वह सत्य भाषा है २ जिस भाषा से आरंभादि की, सर्वज्ञ के वचनकी व मोक्ष पथकी विराधना [नाश] होवे वह असत्य भाषा है, ३ उक्त दोनों मिलकर मीश्र होवे अर्थात् कुच्छ आराधना करनवाली होवे और कुच्छ विराधना करने वाली होवे सो सत्यमृषा, और ४ जो भाषा एकान्त आराधना करनेवाली होवे नहीं वैसे ही एकांत विराधना करनेवाली भी होवे नहीं वह असत्यमृषा कहाती है इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा है कि अवधारणी

भासा सियसच्चा सियमोसा सिय सच्चामोसा सिय असच्चामोसा॥ २॥ अहण भंते ! गाऊ, मिया, पसु,पक्खी पण्णवणीण एसा भासा, णएसा भासा मोसा? हंता गोयमा! गाऊ, मिया, पसू,पक्खी पण्णवणीण एसाभासापण्णवणी नएसा भासा मोसा॥ ३॥अह भंते ! जाय इत्थिवऊ, जाय पुमवऊ, जाय णपुंसगवऊ, पण्णवणीण ऐसा भासा ण एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! जाय इत्थिवाऊ, जाय पुमवऊ, जाव णपुंसगवऊ पण्णवणीण एसा भासा, णएसा भासा मोसा ॥ अह भंते ' जायइत्थी आणवणी, जाय पुम आणमणी, जाय णपुंसग आणमणी पण्णवणीण एसाभासा णएसा भासा

भाषा स्यात् सत्य है स्यात् असत्य है, स्यात् सत्य मृषा है, और स्यात् असत्य मृषा है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! गाय मृग, पशु (अजा) और पक्षी का अर्थ बताने वाली भाषा है तो क्या वह मृषा भाषा नहीं है ? अहो गौतम ! गाय मृग पशु व पक्षी का अर्थ बताने वाली भाषा है वह मृषा भाषा नहीं है क्यों कि गाय कहने से संपूर्ण गौजाति का ज्ञान होता है इस में तीनों लिंगों का समावेश होता है इस तरह यथावस्थित अर्थ कहनेसे प्रज्ञापनी भाषा कहाती है ॥३॥अहो भगवन्! जो स्त्री वचन प्रतिपादिका जैसे गंगा, पुरुष वचन प्रतिपादिका जैसे घटादि और नपुंसक वचन प्रतिपादिका जैसे कुम्भादि यह भाषा क्या मृषा नहीं है ? अहो गौतम ! स्त्री वचन प्रतिपादिका, पुरुष वचन प्रतिपादिका व नपुंसक वचन प्रतिपादिका

मोसा ? हंता गोयमा ! जायइत्थी आणमणी, जाय पुमआणवणी, जायण-पुंसग आणवणी पण्णवणीण एसाभासा, णएसा भासा मोसा ॥ ५ ॥ अह भंते ! जाय इत्थीपण्णवणी, जाय पुमपण्णवणी जाय णपुंसगपण्णवणी पणवणीण एसा भासा, णएसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! जाय इत्थी पण्णवणी, पुमपण्णवणी, नपुंसग पण्णवणी एसा भासा, णएसा भासा मोसा ॥ ६ ॥ अह भंते ! जाइति इत्थीवऊ, जाइति पुमवऊ, जाइति णपुंसगवऊ पण्णवणीण एसभासा, णएसा भासा, मोसा ? हंता गोयमा ! जाइति इत्थीवऊ, जाइतीति पुमवऊ जाइति णपुंसगवऊ पण्णवणीण

भाषा मृषा भाषा नहीं है ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! स्त्री मानने की, पुरुष मानने की व नपुंसक मानने की भाषा क्या मृषा भाषा नहीं है ? अहो गौतम ! स्त्री माननेकी, पुरुष माननेकी, नपुंसक माननेकी मृषा भाषा नहीं है ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! स्त्री के लक्षण प्ररूपने वाली, पुरुष के लक्षण प्ररूपनेवाली व नपुंसक के लक्षण प्ररूपने वाली प्रज्ञापनी भाषा है यह क्या मृषा भाषा नहीं है ? अहो गौतम ! जो स्त्री के लक्षण प्ररूपनेवाली, पुरुष के लक्षण प्ररूपनेवाली व नपुंसक के लक्षण प्ररूपनेवाली भाषा है यह मृषा भाषा नहीं है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! जाति मे स्त्री प्रतिपादिका जैसे ब्राह्मणी क्षत्रियाणी, जाति में पुरुष प्रतिपादिका ब्राह्मणादिक और जाति में नपुंसक भिक्षादि का भाषा है यह क्या मृषा भाषा नहीं है ? अहो गौतम ! स्त्री

णसाभासा, णएसा भासा मोसा ॥ ७ ॥ अह भंते ! जायति इत्थी आणवणी, जायति पुम आणवणी, जायति णपुसग आणवणी पण्णवणीण एसाभासा णएसा भासा मोसा ? हता गोयमा ! जायति इत्थी आणवणी, जयति पुम आणवणी, जायति णपुसग आणवणी, पण्णवणीण ऐसा भासा णएसा मोसाभासा ॥८॥ अह भंते ! जातीति इत्थी पण्णवणी, जातीति पुमपण्णवणी, जातीति णपुसग पण्णवणीण एसा-भासा णएसाभासा मोसा? हंता गोयमा! जातीति इत्थी पण्णवणी जातिति पुमपण्णवणी जातीति नपुसग पण्णवणीण एसा भासा णएसा भासा मोसा ॥ ९ ॥ अह भंते !

पुरुष व नपुंसक जाति प्रतिपादिका भाषा मृषा भाषा नहीं है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! जाति में स्त्री माननेवाली, जाति में पुरुष माननेवाली, जाति में नपुंसक माननेवाली, प्रज्ञापनी भाषा क्या मृषा नहीं है ? अहो गौतम ! जाति से स्त्री जानने वाली, पुरुष जाति माननेवाली व नपुंसक जाति माननेवाली भाषा मृषा नहीं है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! स्त्री जाति के लक्षण बताने वाली, पुरुष जाति के लक्षण बतानेवाली व नपुंसक जाति के लक्षण बतानेवाली भाषा मृषा भाषा नहीं है ? अहो गौतम ! स्त्री जाति के लक्षण बताने वाली, पुरुष जाति के लक्षण बताने वाली व नपुंसक जाति के लक्षण बताने वाली भाषा

मदकुमारेवा मदकुमारियावा, जाणतिवयमाणे, बुयमाणा अहमसे बुयामि अहमेसे बुयामिति! गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे णण्णत्थ सण्णिणो ॥ १० ॥ अह भंते ! मदकुमारएवा मदकुमारियावा जाणति आहारं आहारमाणे अहमेस आहार माहारेमि अहमेसे आहार माहारेमिति ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ सण्णिणो ॥ ११ ॥ अह भंते ! मदकुमारएवा, मदकुमारियावा, जाणति अयमे अम्मापियरो ? गोयमा ! णोइ-

मृषा नहीं है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! मंदकुमार अर्थात् जिस बच्चे का अभिज्ञान मंद है उत्थानादि क्रिया रहित है वैसे ही मंदकुमारिका स्वपक्ष या परपक्ष पुद्गलों ग्रहण कर बोलता हुवा ऐसा जाने कि मैं बोलता हूं, मैं यह बोलता हूं अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है यद्यपि मन पर्याप्ति से पर्याप्त हैं तथापि उन का मनःकरण अपटु है और उस में श्रुतज्ञान का क्षयोपशम भी मंद है मात्र संज्ञी पंचेन्द्रिय अवधि ज्ञानी व जाति स्मरण ज्ञानी जान सके ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! मंद-कुमार अथवा मंदकुमारिका आहार करते हुवे मैं आहार करता हूं मैं आहार करता हूं ऐसा क्या जानता है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है, अर्थात् नहीं जान सकता है, मात्र अवधि ज्ञानी व जाति स्मरण ज्ञानवाले संज्ञी जान सकते हैं ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! मंदकुमार अथवा मंदकुमारिका क्या ऐसा जान सके कि यह मेरे मात पिता हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है, मात्र अवधि ज्ञानी

पट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ सण्णिणो ॥ १२ ॥ अह भंते ! मंदकुमारएवा मदकुमारियात्वा जाणति अयंमे अतिराउले अयमे अतिराउलेति? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे णण्णत्थ सण्णिणो ॥ १३ ॥ अह भंते ! मदकुमारएवा मदकुमारियात्वा जाणति अयमे भट्टि दारए अयमे भट्टिदारिएति ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ सण्णिणो ॥ १४ ॥ अह भंते ! उट्टे, गोणे, खर, घोडए अए, एलए, जाणाति सूयमाणे अयमे से वूयामि ? गोयमा ! णोइणट्ठ समट्ठे, णण्णत्थ सण्णिणो ॥ अह भंते ! उट्ट जाव एलए जाणइ आहारेमाणे अहमेसे आहारेमिति ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ

व जाति स्मरण ज्ञानवाले जान सकते हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! मंद कुमार या मदकुमारिका क्या ऐसा जान सकते हैं कि यह मेरा स्वामिकुल है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है, मात्र संज्ञी, अवधि ज्ञानी व जाति स्मरण ज्ञानवाले जान सकते हैं ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! मंद कुमार या मंद कुमारिका जानते हैं कि यह मेरे स्वामि का पुत्र है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है मात्र संज्ञी अवधिज्ञानी व जाति स्मरण ज्ञानवाले जानसकते हैं ॥१४॥ अहो भगवन्! ऊंट बैल, खर (गर्द) अश्व, बकरी बकरा बोलते हुवे जाने की मैं बोलता हूं ? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं है परंतु संज्ञी प्रबल बुद्धिवाला जान सकता है अहो भगवन् ! ऊंट यावत् एलक आहार करता हुवा क्या जानता है कि मैं अमुक

सण्णिणो ॥ अहभंते ? उट्टे गोणे खरे घोडए अए एलए जाणाति अयमे अम्मा पियरो ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, णण्णत्थ सण्णिणो ॥ अह भंते ! उट्टे जाव एलए जाणति अय अतराइले ? गोयमा ! जाव णण्णत्थ सण्णिणो ॥ अह भंते ! उट्टे जाव एलए जाणाति अयम भट्टिदारए ? गोयमा ! जाव णण्णत्थ सण्णिणो ॥ १५ ॥ अह भंते ! मणुस्स महिसे आसे हत्थी सीहे वग्घे वगे दीविए अच्छे तरच्छे परस्सरे सियाले विराले सुणए कोलए सूयर कोकंतीए ससए चित्तए चिल्ललए

प्रकार का आहार करता हूं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है, परंतु संज्ञी प्रबल बुद्धिवाला जान सकता है अहो भगवन् ! ऊंट यावत् एलक क्या जान सकते हैं कि यह मेरे मात पिता हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है मात्र संज्ञी प्रबल बुद्धिवाला जान सकता है अहो भगवन् ! ऊंट यावत् एलक क्या जान सकता है कि यह मेरे स्वामिका गृह है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है परंतु संज्ञी जान सकता है अहो भगवन् ! ऊंट यावत् एलक क्या जानसके कि यह मेरे स्वामी हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है मात्र संज्ञी जानसकता है ॥१५॥ अहो भगवन् ! मनुष्य, भैंसा, अश्व, हाथी सिंह, व्याघ्र, वरगडा, चित्ता, रींछ, तरछ, भ्रमर, गेंडा, शृगाल, बिलाव, श्वान, कोला, सूअर काकडी खरगोश, चिते, चिल्लक, और भी इस प्रकार के पशुओं को क्या एक वचन कहना ? हां गौतम ! उन

जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वासा एगवऊ ? हंता गोयमा ! मणुस्से जाव पिल्लए जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वासा एगवऊ ॥ अह भंते ! मणुस्सा जाव पिल्लगा जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वसो बहुवऊ ? हंता गोयमा ! मणुस्सा जाव पिल्लगा सव्वासा बहुवऊ॥ १६ ॥ अह भंते ! मणूस्सी महिसी, विगळी विलवी, हत्थिविया सीहीवग्घीविग्गी दीविया अत्थी,तरस्थी परस्सरी रासभी सियाली विरिळी सुणिया कोल सुणिया कोक्षतिया सासिया चिचिया चिक्षिलिया जायानण्णा तहप्पगारा सव्वासा इत्थीवऊ ? हंता गोयमा ! मणुस्सी जाव चिक्खलिया जेयावण्णा तहप्पगारा सव्वासाइत्थीवऊ ॥ १७ ॥ अह भंते ! मणुस्से जाव पिल्लए जेयावण्णे तह

सब को एक वचन कहना अहो भगवन् ! बहुत मनुष्य यावत् बहुत पिल्लक का क्या बहुवचन कहना ? हां गौतम ! बहुवचन कहना ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! मनुष्यणी, महिषी, घोडी, हथनी, सिंहनी, व्याघ्रनी, बकरी, मक्षस रीछनी, तीरछी गेंडी, भयडी, मृगालनी मार्जारी, कुत्ती, कोकवरी, ससली, चिल्लकी और भी इस प्रकार के सभा स्त्री वचन में कहना ? हां गौतम ! मनुष्यणी यावत् चिल्लकी सब स्त्री वचन में होते हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य यावत् चिल्लक सभी पुरुष वचन में होवे

प्पगारा सव्वासा पुमवऊ ? गोयमा ! मणुस्से महिसे आसे हत्थी सीहे वग्घे वग्गे दीविए अच्छे तरच्छे परस्सरे रासभ सियाल विराले सुणए कोलसुणए कोक्कतिए ससए चित्तए चिल्ललए जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वासा पुमवऊ ॥१८॥ कंस, कंसोय, परिमंडल,सेल,थूभ,जाल थाल, तारं, रूवं, अच्छिपव्व, कुंड, पउम, दुद्ध, दहिं, णवणीय, आसण, सयण, भवण, विमाण, छत्त, चामरं, भिंगार, अंगण, निरंगण, आभरणं, रयणं, जेयावण्णे तहप्पगारा सव्व तं णपुंसगवऊ ? हंता गोयमा ! कंसं जाव रयण जेयावण्णे तहप्पगारा त सव्वं णपुंसगवऊ ॥१९॥ अह भंते ! पुढवीति इत्थिवऊ,आउत्तिपुमवऊ धण्णोत्ति णपुंसगवऊ,पण्णवणीण एसा भासा,ण एसा भासा

है ? अहो गौतम ! मनुष्य वगैरह सब पुरुष वचन में होते हैं ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! कांस्य, कांस्यपात्र, परिमंडल, शैल, स्तुंभ, जाल, थाल, तार, रूप, अक्षिपर्व, कुंड, पद्म, दुग्ध, दधि, नवनीत, (मक्खन) आसन, शयन, भवन, विमान, छत्र, चमर, भृंगार, अंगन, निरंगन, आभरण, रत्न, और भी इस प्रकार के सब क्या नपुंसक वचन में हैं ? अहो गौतम ! कांस्य यावत् रत्न वगैरह सब नपुंसक वचन में हैं. ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वी स्त्री वचन, अप् पुरुष वचन और धन नपुंसक वचन प्रज्ञापनी भाषा

मोसा ? हंता गोयमा ! पुढविति इत्थीवऊ, आउत्ति पुमवऊ, वणेत्ति णपुंसगवऊ, पण्णवणीणं एसा भासा णएसा मासा, मोसा ॥ २० ॥ अह भंते ! पुढवित्ति इत्थी आणमणी, आउत्ति पुम आणवणी, वणत्ति णपुंसग आणवणी पण्णवणीण एसा भासा, णएसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! पुढवीत्ति इत्थी आणवणी, आउत्तिपुम आणवणी, वण्णेत्ति णपुंसग आणवणी पण्णवणीण एसाभासा, णएसा मासा मोसा ॥ २१ ॥ अह भंते ! पुढवित्ति इत्थी पण्णवणी, आउत्ति पुमपण्णवणी, वण्णेत्ति णपुंसग पण्णवणी आराहणीण, एसा भासा, णएसा मासा मोसा ? हंता गोयमा ! पुढवित्ति इत्थी पण्णवणी, आउत्ति पुम पण्णवणी, वण्णेत्ति णपुंसग

है क्या यह मृषा भाषा नहीं है ? अहो गौतम ! पृथ्वी स्त्री वचन अप् पुरुष वचन और वन नपुंसक वचन यह भाषा मृषा नहीं है ॥२०॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीका स्त्री कहना, अप्को पुरुष कहना, और वनको नपुंसक कहना यह भाषा क्या मृषा है? अहो गौतम ! पृथ्वीका स्त्री कहना अप्को पुरुष कहना वनको नपुंसक कहना यह भाषा मृषा नहीं है ! अहो भगवन् ! पृथ्वी को स्त्री प्ररूपना, अप्को पुरुष प्ररूपना, व वनको नपुंसक प्ररूपना यह क्या मृषा भाषा नहीं है ? अहो गौतम! पृथ्वी को स्त्री प्ररूपना, अप्को पुरुष प्ररूपना व वनको नपुंसक

पण्णवणी आराहणीण एसा भासा,णएसा भासा मोसा॥२२॥इथेव भंते!इत्थीवयणवा, पुमवयणंवा,णपुंसगवयणवा वयमाणे पण्णवणीण,एसाभासा, णएसा भासा मोसा ? हंता गोयमा! इत्थिवयणवा पुमवयणवा,णपुंसगवयणवा वयमाणे पण्णवणीण एसभासा, णएसा भासा मोसा॥२३॥भासाणं भंते! किमादिया किं पहुवा,किं संठिया,किं पज्जवसिया? गोयमा! भासाण जीवादिया, सरीरप्पभवा वज्जसंठिया, लोगंतपज्जवसिया पण्णत्ता ॥ भासा कओयपभवति, कतिहिं समएहिं भासंती भासं, भासा कतिप्पगारा, कतिवा भासा,

प्रज्ञापना यह मृषा भाषा नहीं है॥२२॥ अहो भगवन् ! इसतरह स्त्री वचन, पुरुष वचन व नपुंसकवचन बोलते प्रज्ञापनी यह भाषा है क्या यह भाषा मृषा नहीं है ? अहो गौतम ! स्त्री वचन, पुरुष वचन व नपुंसक वचन कहते प्रज्ञापनी यह भाषा है परंतु मृषा भाषा नहीं है ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! भाषा की आदि क्या है, कहां से उत्पत्ति स्थान है, भाषा का संस्थान क्या है, और पर्यंत स्थान कहां है ? अहो गौतम ! भाषा की आदि जीव से है, शरीर से उत्पन्न हुई है, वज्र का संस्थान है, और लोकांत में पर्यवसान है॥ भाषा कहां से उत्पन्न होती है, कितने समय में भाषा बोली जाती है, कितने प्रकार की भाषा है, और कितनी भाषा अनुमत है ? अहो गौतम ! भाषा शरीर से प्रगट होती है, दो समय में भाषा के पुद्गल ग्रहण किये हुए भाषा रूप परिणमते हैं, चार प्रकार की भाषा कही है जिन के नाम—सत्य भाषा, मृषा

अणुमयाओ॥१॥ सरीरप्पभवा भासा, दोहिय समएहिं भासइमासं भासा चउ पगारा, दोण्णिय भासा अणुमयाओ॥२॥२४॥ कतिविहाणं भंते! भासा पण्णत्ता?गोयमा! दुविहा भासा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्तियाय अपज्जत्तियाय ॥ पज्जत्तियाणं भंते! भासा कतिविहा पण्णत्ता ?गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तंजहा सच्चाय, मोसाय॥२५॥ सच्चाण भंते! भासा पज्जत्तिया कतिविहा पण्णत्ता?गोयमा!दसविहा पण्णत्ता तंजहा १ जणवयसच्चा, २ सम्मय

भाषा, सत्यमृषा भाषा और असत्यमृषा, भाषा इन चार प्रकार की भाषा में से पात्र सत्य भाषा व व्यवहार भाषा ऐसी दो भाषा की अनुमति दी है ॥२४॥ अहो भगवन्! भाषा के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम!भाषा के दो भेद कहे हैं, पर्याप्तिक सो पूर्ण और अपर्याप्तिक सो अपूर्ण, अहो भगवन्!पर्याप्तिक भाषा के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! पर्याप्तिक भाषा के दो भेद कहे हैं १ सत्य और २ मृषा॥२५॥ अहो भगवन्! पर्याप्तिक सत्य भाषा के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! दश भेद कहे हैं—१ जन पद सत्य, जो भाषा जिस देश में जिस प्रकार बोलाती होवे जैसे पिता, माता, भाई वगैरह, २ सम्मत सत्य बहुत मनुष्यों जो बोलते होवे सो जैसे पंक से उत्पन्न हुआ सो पंकज, अन्य मेंडकादि पंक से उत्पन्न होवे हैं परंतु उसे पंकज नहीं कहते हैं और कमल को ही पंकज कहते हैं, ३ स्थापना सत्य सदृश जन भिन्न किसी वस्तु की स्थापना करे जैसे घोड़ा, शेर, पायली आदि ४ नाम सत्य जिसका जो नाम

सच्चा ३ ठवणासच्चा, ४ नामसच्चा, ५ रूवसच्चा, ६ पडुच्चसच्चा ७ ववहारसच्चा, ८ भावसच्चा, ९ जोगसच्चा, १० ओवमासच्चा ॥ गाहा ॥ जणवय सम्मुट्ठियवणा णामेरूवे पडुच्चसच्चेय ॥ ववहार भावजोगे, दसमे ओवम्म सच्चेय ॥ १ ॥ २५ ॥ मोसाण भंते ! भासा पज्जत्तिया कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता

रखे उस नामके वाले गुनों उसमें होवे या न होवे, जैसे अंधे को नैनसुख ५ रूपसत्य-जिस प्रकार जिसका व्यवहार देखने में आवे और उस में वे गुन नहीं भी पावे तो भी वह कहना सत्य है जैसे ब्रह्मचारी को साधु, स्त्री रूप में पुरुष, ६ प्रत्यय सत्य-एक की अपेक्षा अन्य को छोटा बडा करे जैसे पिता पुत्र कनिष्ठा अनामिका से छोटी है वगैरा ७ व्यवहार सत्य लोक पाले वैसा बोले जैसे वैसे ईंधन जलने को चूला जलना कहना ८ भाव सत्य जो प्रत्यक्ष में जैसा देखने में आवे वैसा बोले जैसे तोता हरा, हंस श्वेत, यद्यपि इन में पांच ही रंग पाते हैं परंतु प्रत्यक्ष में मात्र हरा रंग दीखता है ९ योग सत्य जैसा जिस की योग्यता होवे वैसा बोले जैसे अमुक राजा के लाख घोडे हैं कभी ज्यादा होवे अथवा मनुष्य सहित होवे तो भी लाख घोडे ही कहाते हैं और १० उपमा सत्य-किसी को किसी की उपमादेवे उस के स्वरूपका कथन करे जैसे चन्द्रानती, मृगलोचनी वगैरह स्त्री को उपमादेवे यों दश प्रकार की पर्याप्त सत्य भाषा कही ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! पर्याप्त मृषा भाषा के कितने भेद कहे हैं ? अहो

तजहा—१ कोहणिस्सिया, २ माणणिस्सिया, ३ मायाणिस्सिया, ४ लोभणिस्सिया, ५ पेज्जणिस्सिया, ६ दोसणिस्सिया, ७ हासणिस्सिया, ८ भयणिस्सिया, ९ अक्खाइयाणिस्सिया, १० उवघायणिस्सिया ॥ गाहा ॥ कोहेमाणे माया लोभे, पेज्ज तहेव दोसेय ॥ हास भए अक्खाइय, उवघाइय णिस्सिया दसमा ॥ २ ॥ २१ ॥ अपज्जत्तियाण भंते ! भासा कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा सच्चामोसाय, असच्चामोसाय ॥ सच्चामोसाणं भंते ! भासा अपज्जत्तिया कतिविहा

गौतम ! मृषा भाषा के दश भेद कहे हैं १ क्रोध की नेश्राय से मृषा बोले, २ मान की नेश्राय से मृषा बोले, ३ माया की नेश्राय से मृषा बोले, ४ लोभ की नेश्राय से मृषा बोले, ५ राग की नेश्राय से मृषा बोले, ६ द्वेष की नेश्राय से मृषा बोले, ७ हास्य की नेश्राय से मृषा बोले, ८ भय की नेश्राय से मृषा बोले, ९ आख्याय—कथित ग्रन्थादि की नेश्राय से मृषा बोले और १० उपघात की नेश्राय से अर्थात् किसी का घात होवे वैसी भाषा बोले ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! अपर्याप्त भाषा के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! अपर्याप्त भाषा के दो भेद कहे हैं १ सत्य मृषा सो मीश्र और २ असत्य मृषा सो व्यवहार इस में से सत्य मृषा भाषा के दश भेद कहे हैं १ उत्पन्न मीश्र—जैसे आज गांव में दश का जन्म हुआ है इस में कमी ज्यादा भी होवे, २ विगत मीश्र इस नगर में दश मृत्यु हुआ, ३ उत्पन्न विगत

पण्णत्ता ? गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता तंजहा १ उप्पण्णमिस्सिया, २ विगतामिस्सिया, ३ उप्पण्णविगतामिस्सिया, ४ जीव मिस्सिया, ५ अजीव मिस्सिया, ६ जीवाजीव मिस्सिया, ७ अणंत मिस्सिया, ८ परित्तमिस्सिया, ९ अद्धामिस्सिया १० अद्धद्धामिस्सिया ॥ ॥ २७ ॥ असच्चामोसाणं भंते ! भासा अपज्जत्तिया कइविहा पण्णत्ता? गोयमा! दुवालसविहा पण्णत्ता तंजहा(गाहा) १ आमंतणी २ आणमणी, ३ जायणी, ४ तह पुच्छणी, ५ पण्णवणी ॥ ६ पच्चक्खाणीभासा, ७ भासा इच्छाणु-

मीश्र उक्त दोनों भाषा सम्मिल बोले, ४ जीव मीश्र-बहुत जीवों का ढग देखकर कहे, यह सब जीवों हैं उस में कई मरे भी होवे ५ अजीव मीश्र-कचरेका ढगला देखकर यह सब अजीव है ऐसा कहे, ६ जीवाजीव मीश्र उक्त दोनों सामिल बोले, ७ अनंत मीश्र प्रत्येक को अनंत कहे ८ परित मीश्र अनंत को प्रत्येक कहे, ९ अद्धा मीश्र थोड़ दिन हुवे होवे उस बहुत कहे, और १० अद्धद्धा मीश्र जैसे अर्ध प्रहर रात्रि आई उस थोड़ी रही कहे, ॥२७॥ अहो भगवन्! असत्य मृषा के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! असत्य मृषा (व्यवहार) के बारह भेद कहे हैं १ आमंत्रणी किसी को बोलाना जैसे हे देवदत्त, २ आज्ञापनी किस को आदेश करना जैसे-अमुक करो, ३ याचनी याचना करना जैसे अमुक देवो, ४ पुच्छनी—जो किसी को पूछना, यह कैसे है ! ५ प्रज्ञापनी—जीव भाव की प्ररूपणा करनी, ६ प्रत्याख्यानी—किसी कार्य का नियम अंगीकार करना, ७ इच्छानुलोम—अन्य कहे वैसा आप भी कहे, ८ अनाभिग्रही—अर्थ नहीं

लोमाय ॥१॥ ८ अणभिग्गहिया भासा, ९ भासाय अभिगहमि बोधव्वा, १० ससय कारणीभासा ११ वागडा १२ अव्वेगडाचेव ॥२॥ ॥२८॥ जीवाण भंते! किं भासगा अभासगा? गोयमा! जीवा भासगावि अभासगावि ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ जीवा भासगावि, अभासगावि? गोयमा! जीवा दुविहा पण्णत्ता तंजहा संसारसमावण्णगाय असंसारसमावण्णगाय तत्थण जे ते असंसार समावण्णगा तेण सिद्धा, सिद्धाण अभासगा ॥ तत्थण जेते संसार समावण्णगा ते दुविहा पण्णत्ता तंजहा-सेलसीपडिवण्णगाय असेलेसीपडिवण्णगाय, तत्थण जे ते सेलसी पडिवण्णगा तेण अभासगा, तत्थण

समझने पर भी शंके, ९ अभिग्रही अर्थ समझता हुवा बोले १० संशय कारनी अनेक अर्थवाली भाषा बोले, ११ व्यक्त भाषा प्रगट विस्तार सहित भाषा बोले और १२ अव्यक्त गंभीर अर्थवाली समझमें न आवे ऐसी भाषा बोले ॥२८॥ अहो भगवन्! जीव क्या भाषक है या अभाषक है? अहो गौतम! जीव भाषक भी है और अभाषक भी है अहो भगवन्! किस तरह जीव भाषक भी है और अभाषक भी है? अहो गौतम! जीव के दो भेद कहे हैं १ संसार समापन्न और २ असंसार समापन्न उस में से असंसार समापन्न जीव है वे सिद्ध हैं और सिद्ध अभाषक होते हैं संसार समापन्न जीव हैं उन के दो भेद शैलेशी प्रतिपन्न और अशैलेशी प्रतिपन्न उन में से जो शैलेशी प्रतिपन्न हैं वे अभाषक हैं, और जो अशैलेशी प्रतिपन्न हैं

जेते असेलेसीपडिवण्णगा ते दुविहा पण्णत्ता तंजहा एगिंदियाय, अणगेंदियाय।तत्थणं जेते एगिंदिया तेणं अभासगा, तत्थणं जेते अणगेंदिया ते दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थण जेते अपज्जत्तगा तेण अभासगा, तत्थण जेते पज्जत्तगा तेण भासगा॥से तेणट्ठेण गोयमा! एवं वुच्चइ जीवा भासगावि अभासगावि ॥२१॥ णेरइयाणं भंते! किं भासगा अभासगा? गोयमा! नेरइया भासगावि अभासगावि॥ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ णेरइया भासगावि अभासगावि ? गोयमा! णेरइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय ॥ तत्थणं जेते अपज्जत्तगा तेण अभासगा, तत्थण जेते पज्जत्तगा

उन के दो भेद एकेन्द्रिय और अनेक इन्द्रिय वाले उस में जो एकेन्द्रिय है वह अभाषक हैं और अनेक इन्द्रिय वाले हैं उन के दो भेद १ पर्याप्त और २ अपर्याप्त उस में से जो अपर्याप्त हैं वे अभाषक हैं और पर्याप्त हैं वे भाषक हैं अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा कि जीव भाषक भी हैं और अभाषक भी हैं ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! नेरिये क्या भाषक हैं या अभाषक हैं ? अहो गौतम ! नेरिये भाषक भी हैं और अभाषक भी हैं अहो भगवन् ! किस कारन से नेरिये भाषक भी हैं और अभाषक भी हैं ? अहो गौतम ! नारिये के दो भेद कहे हैं १ पर्याप्त और २ अपर्याप्त उस में जो अपर्याप्त हैं वे अभाषक

तेण भासगा, सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एव एव जुच्चइ णेरइया भासगावि अभासावि एव एगिंदिय वज्जाण निरतरं भाणियव्व ॥ ३० ॥ कतिण भते ! भास जाया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि भासजाया पण्णत्ता तंजहा सच्चमग भासजाय, वितियंमोस, तइय सच्चामोसं, चउत्थं असच्चामास ॥ ३१ ॥ जीवाण भंते ! किं सच्चमास भासति, मोसभास भासंति, सच्चामास भास भासति असच्चा मोस भास भासति ? गोयमा ! जीवा सच्चंपि भास भासति, मोसवि भास भासति, सच्चामोसवि भासं भासाति, असच्चामोसपिभास भासति ॥ ३२ ॥

है १ और पर्याप्त हैं वे भापक हैं अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा है कि नारकी भापक और अभापक दोनों हैं ऐसे ही एकेन्द्रिय छोडकर सब दण्डक में कहना ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! भाषाकी जात कितनी कही है ! अहो गौतम ! भाषा की चार जाति कही है १ सत्य भाषा जाति २ मृषा भाषा जाति ३ सत्य मृषा भाषा जाति और ४ असत्य मृषा भाषा जाति ॥ ३१ ॥ अहो भगवन् ! जीव क्या सत्य भाषा बोलते हैं, असत्य भाषा बोलते हैं, सत्य मृषा भाषा बोलते हैं या असत्य मृषा भाषा बोलते हैं ? अहो गौतम ! जीव सत्य भाषा भी बोलते हैं, मृषा भाषा भी बोलते हैं, सत्य मृषा भाषा बोलते हैं और असत्य मृषा भाषा बोलते हैं ॥ ३२ ॥ अहो भगवन् ! नारकी क्या सत्य भाषा

॥२२॥ णेरइयाणं भंते! किं सच्चं भास भासति जाव किं असच्चामोस भास भासति? गोयमा! सच्चपि भास भासति जाव असच्चामोसपि भास भासति ॥ एवं असुरकुमारा जाव थणियकुमारा ॥ बइंदिया तइंदिया चउरिंदिया णासच्च,णो मास, णासच्चामोसं भास भासति असच्चामोस भास भासति ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं भंते! किं सच्च भास भासति जाव किं असच्चामोस भास भासति? गोयमा! पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया णो सच्च भास भासति णो मोस भास भासति णो सच्चामोसं भास भासति एग असच्चामोस भास भासति ॥ णण्णत्थ सिक्खापुव्वग उत्तरगुण

बोलते यावत् एक असत्य मृषा भाषा बोलते हैं? अहो गौतम! नारकी सत्य भाषा भी बोलते हैं यावत् असत्य मृषा भाषा भी बोलते हैं ऐसे ही असुर कुमार यावत् स्थनित कुमार पर्यंत जानना बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय सत्य, मृषा व सत्य मृषा ऐसी तीन भाषा नहीं बोलते हैं परंतु एक असत्य मृषा (व्यवहार) बोलते हैं अहो भगवन्! तिर्यंच पंचेन्द्रिय क्या सत्य भाषा बोलते हैं यावत् क्या असत्य मृषा भाषा बोलते हैं? अहो गौतम! असत्य मृषा भाषा बोलते हैं शेष तीन भाषा नहीं बोलते हैं, परंतु विशेषता इतनी कि इस भव में शिक्षा लेकर शुक पक्षी आदि और पर भव के स्मृति

लद्धिया पडुच्च सच्चंपि भासं भासंति, मोसंपि भासं भासंति, सच्चामोसंपि भासं भासंति, असच्चामोसंपि भासं भासंति ॥ मणुस्सा जाव वेमाणिया एते जहा जीवा तहा भाणियव्वा ॥ ३३ ॥ जीवाणं भंते! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गेण्हति किं ठियाइं गिण्हति, अठियाइं गिण्हति? गोयमा! ठियाइं गिण्हंति णो अठियाइं गिण्हति ॥ जाइं भंते! ठियाइं गिण्हति ताइं किं दव्वओ गिण्हति, खेत्तओ गिण्हति, कालओ गिण्हंति, भावओ गिण्हति? गोयमा! दव्वतोवि गिण्हति खेत्तओवि गिण्हति कालओवि गिण्हति भावओवि गिण्हति ॥ जाइं भंते! दव्वओ गिण्हति ताइं किं एगपएसियाइं

स्मरणादि ज्ञान से समग्र होने से मत्स्यादि (तदुलमच्छ का जीव मेंढक की तरह) चारों प्रकार की भाषा बोलते हैं मनुष्य से वैमानिक पर्यंत समुच्चय जीव जैसे चारों प्रकार की भाषा बोलते हैं ॥ ३३ ॥ अहो भगवन्! जीव जो द्रव्य भाषापने ग्रहण करते हैं वह क्या स्थिर ग्रहण करते हैं या अस्थिर ग्रहण करते हैं? अहो गौतम! स्थिर ग्रहण करते हैं परंतु अस्थिर नहीं ग्रहण करते हैं जो स्थिर ग्रहण करते हैं तब क्या द्रव्य से ग्रहण करते हैं, क्षेत्र से ग्रहण करते हैं, काल से ग्रहण करते हैं या भाव से ग्रहण करते हैं? अहो गौतम! द्रव्य से भी ग्रहण करते हैं, क्षेत्र से भी ग्रहण करते हैं, काल से भी ग्रहण

गिण्हाते, दुपएसियाइं गिण्हति, जाव अणतपएसियाइं गिण्हति ? गोयमा ! णो एग पएसीयाइं गिण्हइ णो दुपएसियाइं गिण्हइ जाव णो असंखेज्ज पएसियाइं गिण्हइ अणंत पएसियाइं गिण्हइ ॥ जाइं खेत्तओ गिण्हइ ताइं किं एगपएसोगाढाइं गिण्हइ दुपएसोगाढाइं गिण्हइ, जाव असंखेज्जपएसोगाढाइं गिण्हइ ? गोयमा ! णो एगपएसोगाढाइं गिण्हइ जाव णो संखिज्ज पएसोगाढाइं गिण्हइ, असंखिज्जपएसोगाढाइं गिण्हइ ॥ कालओ गिण्हइ ताइं किं एगसमय ठितियाइं गिण्हति, दुसमय ठितियाइं वि गिण्हइ जाव असंखेज्ज समय ठितियाइं गिण्हइ ? गोयमा एगसमय ठितियाइं वि गिण्हइ

करते हैं और भाव से भी ग्रहण करते हैं जब द्रव्य से ग्रहण करते हैं तब क्या एक प्रदेशी द्रव्य ग्रहण करते हैं कि द्विप्रदेशिक ग्रहण करते हैं यावत् अनंत प्रदेशिक द्रव्य ग्रहण करते हैं? अहो गौतम ! एक प्रदेशिक ग्रहण नहीं करते हैं, द्विप्रदेशिक ग्रहण नहीं करते हैं यावत् असंख्यात प्रदेशिक ग्रहण नहीं करते हैं परंतु अनंत प्रदेशिक ग्रहण करते हैं जब क्षेत्र से ग्रहण करे तब क्या एक प्रदेशावगाढ ग्रहण करते हैं कि-यावत् असंख्यात प्रदेशावगाढ ग्रहण करते हैं? अहो गौतम ! एक प्रदेशावगाढ यावत् संख्यात प्रदेशावगाढ ग्रहण करते नहीं हैं परंतु असंख्यात प्रदेशावगाढ ग्रहण करते हैं, जब काल से ग्रहण करे तब क्या एक समय की स्थितिवाला

दुसमय ठिइयाइंवि गिण्हइ जाव असंखेज्जसमय ठिइयाइं गिण्हइ ॥ जाइं भावओ गिण्हइ ताइं किं वण्णमंताइं गिण्हइ, गंधमंताइं गिण्हइ, रसमंताइं गिण्हइ, फासमंताइं गिण्हइ ? गोयमा! वण्णमंताइंवि गिण्हइ जाव फासमंताइंवि गिण्हइ॥ ३४॥ जाइं भावओ वण्णमंताइं गिण्हइ ताइं किं एगवण्णमंताइं गिण्हइ जाव पंचवण्णमंताइं गिण्हइ ? गोयमा ! गहणदव्वाइं पडुच्च एगवण्णाइंवि गिण्हइ जाव पंचवण्णाइंवि गिण्हति सव्वग्गहणं पडुच्च णियमा पंचवण्णाइं गिण्हति तंजहा-कालाइं, णीलाइं, लोहियाइं, हालिद्दाइं, सुक्किलाइं ॥ जाइंण तेवण्णओ कालवण्णाइं गिण्हति किं एग

ग्रहण करे यावत् असंख्यात समय की स्थिति वाला ग्रहण करते हैं, ! अहो गौतम ! एक समय की स्थिति वाला यावत् असंख्यात समयकी स्थितिवाला ग्रहण करते हैं भाव से ग्रहण करे तो क्या वर्ण वाले, गंधवाले रसवाले या स्पर्श वाले ग्रहण करते हैं ! अहो गौतम ! वर्ण गंध, रस व स्पर्श वाले ग्रहण करते हैं ॥ ३४ ॥ अहो भगवन्! जब भाव से वर्ण वाले पुद्गल ग्रहण करे तब क्या एक वर्ण वाले ग्रहण करे या पांच वर्ण वाले द्रव्य ग्रहण करे ? अहो गौतम ! ग्रहण द्रव्य आश्रित अर्थात् जिस द्रव्य को ग्रहण करने में योग्यता है उस आश्रित एक वर्ण वाले भी ग्रहण करते हैं यावत् पांचों वर्ण वाले भी ग्रहण करते हैं और सर्व ग्रहण आश्रित-निश्चय से काला, नीला, रक्त, पीत व शुक्ल ऐसे पांचों वर्ण वाले ग्रहण करते हैं जो काला वर्ण वाले ग्रहण करते हैं वे क्या एक गुण काला ग्रहण करते हैं यावत् अनंत गुन

गुण कालाइं गिण्हंति जाव अणंतगुण कालाइं गिण्हंति ? गोयमा ! एगगुणकालाइं गिण्हति जाव अणंतगुण कालाइंवि गिण्हति ॥ एवं जाव सुक्किलाइं ॥ २५ ॥ जाइं भंते ! भावओ गंधमंताइं गिण्हति किं एगगंधाइं गिण्हति, दोगंधाइं गिण्हंति, ? गोयमा ! गहणदव्वाइं पडुच्च एगगंधाइंपि गिण्हति, दोगंधाइंवि गिण्हति ॥ सव्वगहणं पडुच्च णियमा दोगंधाइं गिण्हति ॥ जइणं भंते ! गंधतो सुब्भिगंधाइं गिण्हंति ताइं किं एगगुण सुब्भिगंधाइं गिण्हति जाव अणंतगुण सुब्भिगंधाइं गिण्हति ? गोयमा ! एगगुण सुब्भिगंधाइंवि गिण्हंति जाव अणंतगुण सुब्भिगंधाइंवि गिण्हति ॥ एवं दुब्भि-

काला ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! एक गुन काला वर्ण वाला भी ग्रहण करते हैं यावत् अनंत गुन काला भी ग्रहण करते हैं ऐसे ही शुक्ल वर्ण पर्यंत कहना ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! जब भाव से गंधवाले ग्रहण करते हैं तो क्या एक गंधवाले ग्रहण करते हैं या दो गंधवाले ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! ग्रहण द्रव्य आश्रिय एक गंधवाले ग्रहण करते हैं व दो गंधवाले भी ग्रहण करते हैं और सब ग्रहण आश्रिय सुरभिगंध व दुरभिगंध ऐसे दोनों गंधवाले ग्रहण करते हैं अहो भगवन् ! जब गंध से सुरभिगंधवाले ग्रहण करे तब क्या एकगुण सुरभिगंधवाले ग्रहण करे यावत् अनंतगुण सुरभिगंधवाले ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! एक गुण सुरभिगंधवाले ग्रहण करते हैं यावत् अनंतगुन सुरभिगंधवाले भी ग्रहण

गधाइवि गिण्हति ॥ ३६ ॥ जाइं भावाओ रसमताइं गिण्हति ताइं किं एगरसाइ गिण्हति जाव किं पचरसाइ गिण्हति? गोयमा! गहणदव्वाइंपडुच्च एगरसाइवि गिण्हति जाव पचरसाइवि गिण्हति, सव्वगहण पडुच्च णियमा पचरसाइ गिण्हति ॥ जाइ रसतो तित्तरसाइ गिण्हति, ताइ किं एगगुणतित्तरसाइ गिण्हति जाव अणतगुणतित्तरसाइं गिण्हति ? गोयमा ! एगगुणतित्ताइवि गिण्हति जाव अणतगुण तित्ताइवि गिण्हति ॥ एव जाव महुरोरसो ॥ ३७ ॥ जाइं भावतो फास मताइ गिण्हति ताइ किं एगफासाइ गिण्हति जाव अट्ठफासाइ गिण्हति ? गोयमा!

करे. एसे ही दुरभिगंध का जानना ॥ ३६ ॥ अहो भगवन् ! भाव भाव से रसवाले ग्रहण करते हैं वो क्या एक रसवाले ग्रहण करते हैं या पांच रसवाले ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम! ग्रहण द्रव्य आश्रिय एक रसवाले ग्रहण करे यावत् पांच रसवालेभी ग्रहण करे और सब ग्रहण आश्रिय नियमा पांच रसवाले ग्रहण करे अहो भगवन् ! जारे रससे तिक्त रसवाले ग्रहण करे वो क्या एकगुण तिक्त रसवाले ग्रहण करे कि यावत् अनंतगुन तिक्त रसवाले ग्रहण करे? अहो गौतम! एक गुन तिक्त रसवालेभी ग्रहण करे यावत् अनंत गुन तिक्त रसवाले भी ग्रहण करे ऐसे ही मधुर रस पर्यन्त कहना ॥ ३७ ॥ अहो भगवन् ! भाव भाव से, स्पर्शवाले, पुद्गल ग्रहण करते वह क्या एक स्पर्शवाले ग्रहण करे यावत् आठ स्पर्शवाले ग्रहण करे ! अहो गौतम ! ग्रहण द्रव्य आश्रिय एक

गहणदव्वाइं पडुच्च णो एगफासाइं गिण्हाति दुफासाइं गिण्हंति जाव चउफासाइंवि गिण्हंति, नोपचफासाइं गिण्हति जाव णोअट्ठफासाइंपि गिण्हंति॥ सव्वगहणं पडुच्च णियमा चउफासाइं गिण्हाति तंजहा सीतफासाइं गिण्हति, उसिणफासाइं गिण्हति, णिद्धफासाइं गिण्हति, लुक्खफासाइं गिण्हति॥ जाइं फासओ सीतफासाइं गिण्हति ताइं किं एगगुण सीत फासाइं गिण्हंति जाव अणतगुण सीत फासाइं गिण्हाति? गोयमा! एगगुण सीत फासाइपिगिण्हति जाव अणतगुण सीतफासाइंपि गिण्हति॥ एव उसिण, णिद्ध, लुक्खाइं जाव अणतगुणाइंपि गिण्हति॥ २८॥ जाइं भंते! एगगुण कालाइं जाव

स्पर्शवाले यावत् चार स्पर्शवाले ग्रहण करे परंतु पांच यावत् आठ स्पर्शवाले ग्रहण करे नहीं सर्व ग्रहण आश्रिय नियमा चार स्पर्शवाले ग्रहण करे क्योंकि भाषा के पुद्गल चार स्पर्शवाले हैं जिन के नाम शीत स्पर्शवाले उष्ण स्पर्शवाले, स्निग्ध स्पर्शवाले और रूक्ष स्पर्शवाले अहो भगवन्! जब शीत स्पर्शवाले ग्रहण करते हैं तो क्या एक गुन शीत स्पर्शवाले ग्रहण करते हैं यावत् अनंत गुन शीत स्पर्शवाले ग्रहण करते हैं? अहो गौतम! एक गुन शीत स्पर्शवाले भी ग्रहण करते हैं यावत् अनंत गुन शीत स्पर्शवाले भी ग्रहण करते हैं ऐसे ही उष्ण, स्निग्ध व रूक्ष पुद्गलों अनंत गुणवाले ग्रहण करते हैं॥ २८॥ अहो भगवन्! जब एक गुन काले

अणतगुण लुक्खाइं दव्वाइं गिण्हति ताइंकिं पुट्ठाइं गिण्हति अपुट्ठाइं गिण्हति ? गोयमा ! पुट्ठाइं गिण्हति णो अपुट्ठाइं गिण्हति ॥ जाइं भंते! पुट्ठाइं गिण्हति ताइंकिं ओगाढाइं गिण्हति अणोगाढाइं गिण्हति ? गोयमा ! ओगाढाइं गिण्हति णो अणो-गाढाइं गिण्हति ॥ जाइं भंते ! ओगाढाइं गिण्हति ताइं किं अणंतरोगाढाइं गिण्हति परंपरोगाढाइं गिण्हति ? गोयमा ! अणंतरोगाढाइं गिण्हति, णो परंपरोगाढाइं गिण्हति ? जाइं भंते ! अणंतरोगाढाइं गिण्हति, ताइं किं अणूइं गिण्हति, बायराइं गिण्हति ? गोयमा ! अणूइंपि गिण्हति बादराइंपि गिण्हति ॥

यावत् अनंत गुन रूक्ष द्रव्य ग्रहण करते हैं वे क्या स्पर्शे हुवे ग्रहण करते हैं या विना स्पर्शे हुवे ग्रहण करते हैं ! अहो गौतम ! स्पर्शे हुवे ग्रहण करते हैं परंतु विना स्पर्शे हुवे नहीं ग्रहण करते हैं अहो भगवन्! जब स्पर्शे हुवे ग्रहणकरते हैं तब क्या अवगाहकर ग्रहण करते हैं विना अवगाहकर ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम! अवगाहकर ग्रहण करते हैं परंतु विना अवगाह नहीं ग्रहण करते हैं अहो भगवन्! जब अवगाहकर ग्रहण करते हैं तो क्या अंतर रहित पुद्गल ग्रहणकरते हैं या परंपरा अवगाहित ग्रहणकरते हैं? अहो गौतम! अनंतर अवगाहित ग्रहण करते हैं परंतु परंपरा अवगाहित नहीं ग्रहण करते हैं जब अनंतर अवगाहित ग्रहण करते हैं तब क्या सूक्ष्म ग्रहण करते हैं या बादर ग्रहण करते हैं? अहो गौतम! सूक्ष्म ग्रहण करते हैं और बादर भी

आइ भंते! अणूइपि गिण्हति बादराइपि गिण्हति ताइं किं उड्ढं गिण्हंति अहे गिण्हंति तिरियं गिण्हति ? गोयमा ! उड्ढंपि गिण्हति अहेविगिण्हंति, तिरियंपि गिण्हति ॥ जाइ भंते ! उड्ढंपि गिण्हंति अहेविगिण्हति तिरियंपि गिण्हति ताइंकिं आदिं गिण्हति मज्झे गिण्हति पज्जवसाणे गिण्हति ? गोयमा ! आदिंपि गिण्हति, मज्झेपि गिण्हति, पज्जवसाणेवि गिण्हति ॥ जाइ भंते ! आदिंगिण्हति मज्झविगिण्हंति पज्जवसाणेवि गिण्हति, ताइंकिं सविसए गिण्हंति, अविसए गिण्हति ? गोयमा ! सविसए गिण्हति णो अविसए गिण्हति ॥ जाइ भंते ! सविसए गिण्हति

ग्रहण करते हैं अहो भगवन् ! जब सूक्ष्म व बादर ग्रहण करते हैं तब क्या ऊर्ध्व, व अधो दिशा के ग्रहण करते हैं या तिर्यक् दिशा के ग्रहण करते हैं ! अहो गौतम ! ऊर्ध्व, अधो व तिर्यक् यों तीनों दिशा के ग्रहण करते हैं जब ऊर्ध्व, अधो व तिर्यक् दिशा के ग्रहण करते हैं, तब क्या आदि में ग्रहण करते हैं, मध्य में ग्रहण करते हैं या पर्यवसान (अंत) में ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! आदि मध्य व पर्यवसान में (अंत) में यों तीनों दिशा के ग्रहण करते हैं अहो भगवन् ! जब आदि मध्य व पर्यवसान में ग्रहण करते हैं तब विषय सहित ग्रहण करते हैं या विषय रहित ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! विषय सहित ग्रहण करते हैं परंतु विषय रहित नहीं ग्रहण करते हैं जब विषय सहित ग्रहण करते हैं तब अनुपूर्व से ग्रहण करते हैं या अननुपूर्वी से ग्रहण करते हैं ! अहो गौतम !

ताइंकि आणुपुव्विं गिण्हंति अणाणुपुव्विं गिण्हति ? गोयमा ! आणुपुव्विं गिण्हति णो अणाणुपुव्विं गिण्हंति ॥ जाइं भंते ! आणुपुव्विं गिण्हति ताइं किं तिदिसिं गिण्हंति जाव छदिसिं गिण्हति? गोयमा! णियमा छदिसिं गिण्हति,॥(गाहा) पुट्ठो, गाढ, अणंतर, अणू य तह, बायरेय उड्ढमहे, आदि विसयाणुपुव्विं, णियमातह छदिसिंचेव ॥ १ ॥ ३८ ॥ जीवेणं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गिण्हति ताइं किं संतरं गिण्हति णिरंतरं गिण्हंति ? गोयमा ! संतरंपि गिण्हति निरंतरंपि गिण्हंति ॥ संतरं गिण्हमाणे जहण्णेणं एगसमयं उक्कोसेणं असंखेज्जसमयं, अंतरं कट्टु गिण्हति ॥

अनुपूर्वी से ग्रहण करते हैं परंतु अनानुपूर्वी से नहीं ग्रहण करते हैं अहो भगवन् ! जब अनानुपूर्वी से ग्रहण करते हैं तब क्या तीन दिशि से ग्रहण करते हैं या छ दिशि से ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! नियमा छ दिशि के पुद्गल ग्रहण करते हैं क्यों कि भाषक जीवों लोक की मध्य में हैं इस तरह स्पर्शाते हुवे, अवगाहित, अनंतर, सूक्ष्म व बादर, ऊर्ध्व, अधो, आदि, विषय, पूर्व और नियमा छ दिशा के पुद्गलों भाषक जीव ग्रहण करते हैं ॥३८॥ अहो भगवन् ! जीव जो द्रव्य भाषापने ग्रहण करते हैं वे क्या अंतर सहित ग्रहण करते हैं या निरंतर ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी ग्रहण करते हैं और निरंतर भी ग्रहण करते हैं अंतर सहित ग्रहण करते जघन्य एक समय उत्कृष्ट असंख्यात समय

णिरंतर गिण्हमाणे जहण्णेणं दोसमए उक्कोसेणं असंखेज्जसमए अणुसमय अविरहियं णिरंतर गिण्हति ॥ ३९ ॥ जीवेण भंते ! जाइ दव्वाइ भासत्ताए गहियाइ, णिसिरति ताइ किं संतर णिसरति णिरंतर णिसरंति? गोयमा ! संतरंणिसराति णो णिरंतरं णिसरति ॥ संतरणिसिरमाणे एगेण समएण गिण्हति एगण समएण, तेण गहण-णिसिरणो वाएणं जहण्णेण दुसमय उक्कोसेणं असंखेज्ज समइय, अंतोमुहुत्तगगहण णिसरण उवयाय करेंति ॥ ४० ॥ जीवेण भंते ! जाइ दव्वाइं भासत्ताइ गहियाइ निसरंति ताइ किं भिण्णाइ णिसरति अभिण्णाइ णिसरति ? गोयमा ! भिण्णाइवि

अंतर रहित ग्रहण करते जघन्य दो समय उत्कृष्ट असंख्यात समय अनुपूर्वि समय विरह रहित निरंतर ग्रहण करते हैं ॥ ३९ ॥ अहो भगवन् ! भाषापने ग्रहण कीये हुवे पुद्गल को जो जीव नीकालते हैं वे क्या अंतर सहित नीकालते हैं या निरंतर नीकालते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी नीकालते हैं और निरंतर भी नीकालते हैं अंतर सहित नीकालते एक समय म ग्रहण करते एक समय यों जघन्य दो समय उत्कृष्ट असंख्यात समय तथा अन्तर्मुहूर्त में भी ग्रहण करना नीकालने का भी उपाय करते हैं ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! जीव जो भाषापने ग्रहण कीये पुद्गलों नीकालते हैं वे क्या भेदाये हुए नीकालते या अभिन्न नहीं भेदाये हुवे नीकालते हैं ? अहो गौतम ! भेदाये हुवे भी नीकालते

णिस्सरंति, अभिण्णाइवि णिस्सरति ॥ तत्थण जाइं दव्वाइं भिण्णाइं णिसिरति, ताइं अणंतगुण परिवुड्ढीए परिवुड्ढमाणाइं लोयतफुसति ॥ जाइं अभिण्णाइं णिसिरंति ताइं असंखेज्जाओ ओगाणहण, वग्गणाओ गता भेदमावज्जति, संखेज्जाइं जोयणाइंगता विद्धंस मागच्छति ॥ ४१ ॥ एतेसिण भते! दव्वाण कतिविहे भेदे पण्णत्ते? गोयमा! पंचविहे भेदे पण्णत्ते? तंजहा खण्डा भेदे, पयराभेदे, चुण्णियाभेदे अणुतडियाभेदे, उक्कारियाभेदे ॥ सेकिंत खण्डाभेद? खण्डाभेदे! जण्णं अयखंडाणवा, तउखंडाणवा, तबखंडाणवा, सीसाखंडाणवा, रयणखंडाणवा, जायरूवखंडाणवा, खंडएणे भेदे भवंति सेत खंडा

है और नहीं भेदाये हुवे भी नीकालते हैं, रोगी तथा जरावन्त की भाषा उस में जो भिन्न नीकालते हैं वे अनंतगुन की वृद्धि पाते लोक के अंत में स्पर्शते हैं और अभिन्न नीकलते हैं वे असंख्यात अवगाहना वर्गणा में जाकर भेद को प्राप्त होते हैं और संख्यात योजन जाकर नाश को प्राप्त होते हैं ॥ ४१ ॥ अहो भगवन्! उन द्रव्यों का भेद कितने प्रकार का कहा? अहो गौतम! पांच प्रकार का भेद कहा तद्यथा १ खण्ड भेद २ प्रतर भेद ३ चूर्णिका भेद ४ अनुतरिक भेद और ५ उत्कारिका भेद उसमें खण्ड भेद किसे कहते हैं? अहो गौतम! जैसे लोहे का खण्ड, तरुआका खण्ड, ताम्बे का खण्ड, सीसे का खण्ड,

भेदे ॥ सेकिंतं पयराभेदे ? पयराभेदे जण्णं वसाणवा वेत्ताणवा, पेलाणवा मंदलीथमाणया अब्भपडलाणवा, पयरएण भेदे भवति सेतं पयाभेदे ॥ सेकिंतं चूण्णिया भेदे ? चूण्णियाभेदे! जण्ण तिल चूण्णियाणवा मुग्गचुण्णाणवा, मास चुण्णाणवा, पिप्पली चुण्णाणवा, मरिय चुण्णाणवा, सिंगबेर चुण्णाणवा, चुण्णयाए भेदे भवति सेतं चुण्णियाभेदे ॥ सेकिंतं अणुतडियाभेदे? अणुतडियाभेदे जण्णं अगडाणवा, तलागाणवा, नदीणवा, दहाणवा, वावीणवा, पुक्खरणीणवा, दीहियाणवा, गुंजालियाणवा, सराणवा, सरपंतियाणवा, सरसरपंतियाणवा, अणुतडियाभेदे भवति ॥

रत्न का प्रथर पत्थर का खण्ड, यों खण्ड के भेद हुए प्रतर भेद के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! बांस के प्रतर, लता के प्रतर, फली के प्रतर, अभ्रक [भोडल] के प्रतर, यों प्रतर के भेद हुवे, चूर्ण का भेदके कितने भेद हैं? अहो गौतम! तिलका चूर्ण, मुंगका चूर्ण, उडदका चूर्ण, पिपलका चूर्ण मिरचीका चूर्ण, अदरकका चूर्ण, यों चूर्णके भेद हुए अनुतडित के कितने भेद हैं अहो! गौतम! अनुतडित कि जो कुवा, तलाव, नदी, द्रह, बावडी, पुष्करणी, दीर्घिका, गुंजालिका, सरोवर, सरोवर की पंक्ति, यों अनुतडित के भेद कहे हैं उत्कारिका के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! मुंगकी फली, मंडुककी फली, तिलकी फली, अरहर की

सेत अणुतडियाभेद ॥ सेकिंत उक्कारियाभेदे ? उक्कारियाभेदे जण्ण मूसगाणवा, मडूगाणवा, तिलसिंगिलीयाणवा, मुग्गसिंगिलियाणवा, माससिंगिलियाणवा, एरडबीयाणवा फुडिता उक्कारियाते भद भवति ॥ सेतं उक्कारिया भेद ॥४२॥ एएसिण भते ! दव्वाणं खडा भेदेण, पयराभेदण, चुण्णिया भेदण, अणुतडिया भेदण, उक्कारिया भेदणय, भिज्ज माणाण कयर २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्व-त्थोवाइ दव्वाइ उक्कारिया भेदण भिज्जमाणाइ, अणुतडिया भेदेण भिज्जमाणाइ अणतगुणाइ, चुण्णिया भेदेण भिज्जमाणाइं अणतगुणाइं पयराभेदण भिज्जमाणाइ अणत गुणाइ, खंडा भेदण भिज्जमाणाइ अणतगुणाइ ॥४३॥ णरइएण भते ! जाइ दव्वाइ भासत्ताए गिण्हति

फली, व एरंड के बीज यह सब उत्कारिक के भेद हुवे यह सूक जाने पर उस में से दाने उछलकर बाहिर नीकलते हैं ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! खण्डा भेद, प्रतर भेद, चूर्णिका भेद, अनुतडित भेद व उत्कारिका भेद से द्रव्यों में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! १ सब से थोडे द्रव्य उत्कारिका भेद से भेदाये हुवे, २ उस से अनुतडित भेद से भेदाये हुवे अनंत गुने, ३ उन से चूर्णिका भेद से भेदाये हुवे द्रव्य अनंतगुने ४ उन से प्रतर भेद से भेदाये हुवे द्रव्य अनंतगुने और ५ उन से खण्डा भेद से भेदाये हुवे अनंतगुने ॥ ४१ ॥ अहो भगवन् ! नारकी जो पुद्गल भाषापने ग्रहण करते हैं

ताइकिं ठियाइं गिण्हति, अठियाइं गिण्हति ? गोयमा ! एव चेव जहा जीवे वत्तव्वया भाणिया तहा णेरइयस्सवि जाव अप्पाबहुय ॥ एवं एगिंदियवज्जं दंडगा जाव वेमाणिए ॥ ४४ ॥ जीवाणं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गिण्हंति ताइंकिं ठियाइं गिण्हंति अठियाइं गिण्हंति ? गोयमा ! एवं चेव पुहुत्तेणवि णेयव्वं जाव वेमाणियाणं ॥ ४५ ॥ जीवेणं भंते ! जाइं दव्वाइं सच्च भासत्ताए गिण्हति ताइंकिं ठियाइं गिण्हति अठियाइं गिण्हति ? गोयमा ! जहा ओहिय दंडओ तहा एसोवि, णवरं विगलिंदिया णपुच्छिज्जंति ॥ एवं मोसाभासाएवि, सच्चामोसाभासाएवि ॥ अस

वे क्या स्थित ग्रहण करते हैं या अस्थित ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! जैसे जीव की वक्तव्यता कही वैसे ही नारकी की अल्पाबहुत्व पर्यंत जानना इसी तरह एकेन्द्रिय छोडकर वैमानिक पर्यंत दंडक में जानना ॥ ४४ ॥ अब अनेक आश्रिय कहते हैं अहो भगवन् ! बहुत जीव जो द्रव्य भाषापने ग्रहण करते हैं वे क्या स्थित ग्रहण करते हैं या अस्थित ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! जैसे एक जीव आश्रिय कहा वैसे ही अनेक जीव आश्रिय का जानना यों वैमानिक पर्यन्त कहना ॥ ४५ ॥ अहो भगवन् ! जीव जो द्रव्य सत्य भाषापने ग्रहण करे वे क्या स्थित ग्रहण करे या अस्थित ग्रहण करे ? अहो गौतम ! स्थित ग्रहण करे परंतु अस्थित ग्रहण करे नहीं यों जैसे औधिक दंडक का कहा वैसे ही कहना इस में

सच्चामोसाभासाएवि एवचेव णवरं असच्चामोसाभासाए विगलिंदिया पुच्छिज्जति ॥ इमेण अभिलावेण विगलिंदिएणं भते ! जाइ दव्वाइ असच्चामोसाभासत्ताए गिण्हति, ताई किं ठियाइ गिण्हति, अठियाइ गिण्हति ? गोयमा ! जहा ओहियदंडतो एव एतेएगत्त पुहुत्तेण दसदडगा भाणियव्वा॥४९॥जीवेण भते! जाइ दव्वाई सच्चभासत्ताए गिण्हति ताइ किं सच्चभासत्ताए णिसरति,मोस भासत्ताए णिसिरति,सच्चामोस भासत्ताए निसरइ, असच्चामोस भासत्ताए णिसरति? गोयमा ! सच्चभासत्ताए निसरति, णो मोसभासत्ताए

विकलेन्द्रिय की पृच्छा नहीं करना क्यों कि वे मात्र व्यवहार भाषा बोलते हैं जैसे सत्य भाषा का कहा वैसे ही मृषा, व सत्य मृषा का मानना असत्य मृषा का वैसे ही कहना परतु विकलेन्द्रिय भी यहां पर ग्रहण करना इस आभिलाप से विकलेन्द्रिय छोडकर जो द्रव्य असत्य मृषा भाषापने ग्रहण करते हैं वे क्या स्थित ग्रहण करते हैं या अस्थित ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! जैसे औधिक दंडक का कहा वैसेही एक जीव आश्रिय अनेक जीव आश्रिय के दशदंडक जानना॥४९॥ अहो भगवन्! जीव जो द्रव्य सत्य भाषापने ग्रहण करते हैं व क्या सत्य भाषापने नीकालते हैं, या मृषा भाषापने नीकालते हैं, या सत्य मृषा भाषा पने नीकालते हैं या असत्यमृषा भाषा पने नीकालते हैं ? अहो गौतम ! जीव जो द्रव्य सत्य भाषा पने ग्रहण करते हैं वे सत्य भाषा पनेही नीकालते हैं परंतु मृषा सत्यमृषा, व असत्य मृषा भाषा पने

णिसरति णो सच्चामोस भासत्ताए णिसरति णो असच्चामोस भासत्ताए णिसरंति ॥ एवं एगिंदिय विगलिंदिय वज्जो दंडओ जाव वेमाणिया ॥ एवं पुहुत्तणवि ॥ ४७ ॥ जीवेण भंते ! जाइं दव्वाइं मोसभासत्ताए गिण्हति ताइं किं सच्चाभासत्ताए णिसरति मोसभासत्ताए णिसरति, सच्चामोसभासत्ताए णिसरति, असच्चा मोस भासत्ताए णिसरति ? गोयमा ! नो सच्चाभासत्ताए णिसरति मोसभासत्ताएं णिसरति, णो सच्चामोसभासत्ताए णिसरति, णो असच्चा मोसभासत्ताए णिसरंति ॥ एवं सच्चा मोसभासत्ताएवि, असच्चामोसभासत्ताएवि, एवं चेव णवर असच्चामोस भासत्ताए विगलिंदिया तहेव पुच्छिज्जति जाएचेव गिण्हति ताए चेव णिसरति ॥ एवं एतेणगमेण एगत्त

नहीं नीकालते हैं, यों एकेन्द्रिय व विकलेन्द्रिय वर्जकर सब दंडक कहना जैसे एकआश्रिय कहा वैसेही अनेक आश्रिय जानना ॥४७॥ अहो भगवन्! जीव जो द्रव्य मृषा भाषापने ग्रहणकरे वे क्या सत्य भाषापने नीकाले, मृषा भाषापने नीकाले, सत्य मृषा भाषापने नीकाले याअसत्य मृषा भाषापने नीकाले ? अहो गौतम ! सत्य भाषापने नीकाले नहीं परंतु मृषा भाषापने नीकाले सत्य मृषा व असत्य मृषा भाषापने भी नीकाले नहीं ऐसे ही सत्य मृषा व असत्य मृषा भाषा का जानना परंतु असत्य मृषा भाषा में विकलेन्द्रिय की पृच्छा कहना

पुहत्तिय अट्ठ दंडया भाणियव्वा ॥ ४८ ॥ कतिविहेणं भंते ! वयणे पण्णत्ते ? गोयमा ! सोलसविहे वयणे पण्णत्ते तंजहा एगवयणे, दुवयणे, बहुवयणे, इत्थीवयणे, पुमवयणे, णपुंसग वयणे, अज्झत्थवयणे, उवणीयवयणे, अवणीय वयणे, उवणीयअवणीयवयणे, अवणीयउवणीयवयणे, तीयवयणे, पडुपण्ण

यावत् जिस लिये ग्रहण कीये होवे उस लिये नीकाले यों एक अनेक के आठ दंडक कहना ॥ ४८ ॥ अहो भगवन् ! वचन के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! सोलह प्रकार के वचन कहे हैं १ एक वचन-वृक्ष, घट, पट वगैरह, २ द्वि वचन-दो वृक्ष, दो घट, दो हाथ, ३ बहु वचन सो बहुत घट, बहुत वृक्ष ४ स्त्री वचन-कन्या, शाला, ५ पुरुष वचन-साधु, श्रावक, घट, पट, ६ नपुंसक वचन-ग्राम, चैत्य, देवकुल, ७ अध्यात्म वचन-मन में रही हुई बात कदापि प्रगट करना चाहे नहीं परंतु बोलते सहज नीकल आवे जैसे रूई का व्यापारी पानी मांगने के बदले रूई दो ऐसा बोले, ८ उपनीत वचन-गुनयुक्त वस्तु का कथन करे जैसे यह धर्मात्मा पुरुष है, विद्यावन्त है ९ अपनीत वचन-निंदा युक्त वस्तु का कथन करे जैसे यह पुरुष कुलक्षणी मूर्ख पापी है १० उपनीत अपनीत वचन-प्रथम गुन करके फीर अवगुन कहे जैसे यह स्त्री रूपवती है परंतु व्यभिचारिणी है, ११ अपनीत उपनीत वचन-पहिले दुर्गुन कहकर फीर गुन कहे जैसे यह पुरुष कुरूप है परंतु सुशील है, १२ अतीत वचन भूतकाल का जैसे तीर्थंकर हुए, १३ प्रत्युत्पन्न

अणागयवणे, पच्चक्खवयणे, परोक्खवयणे॥ ४९॥ इच्चेयं भंते! एगवयणंवा जाव परोक्खवयणंवा वदमाणे पण्णवणीण एसाभासा णएसा भासा मोसा? हंता गोयमा! इच्चेय एगवयणंवा जाव परोक्खवयणंवा वयमाणे पण्णवणीण, एसाभासा, णएसा भासा मोसा॥ ५०॥ कतिणं भंते! भासज्जाया पण्णत्ता? गोयमा! चत्तारिभासज्जाया पण्णत्ता तंजहा सच्चमेगं भासज्जायं, बीयंमोसं भासज्जायं, तइयं सच्चामोसं भासज्जायं, चउत्थं असच्चामोसं भासज्जायं॥ ५१॥ इच्चेयाइं भंते! चत्तारिभास ज्जायाइं भासमाणे किं आराहए विराहए? गोयमा!

(वर्तमान काल का) वचन जैसे श्री सीमंधर स्वामी हैं, १४ अनागत (भविष्य काल) का वचन-जैसे पद्मनाभ स्वामी तीर्थंकर होंगे, १५प्रत्यक्ष वचन-जो दृष्टि सामने होवे, और १६परोक्ष वचन बिना देखाती वस्तुका कहना ॥ ४९ ॥ अहो भगवन्! इसतरह एक वचन बोलता हुवा यावत् परोक्ष वचन बोलता हुवा प्रज्ञापनी भाषा होवे क्या यह भाषा मृषा नहीं है? अहो गौतम! एक वचन यावत् परोक्ष वचन बोलता हुवा यह प्रज्ञापनी भाषा है परंतु मृषा भाषा नहीं है॥५०॥ अहो भगवन्! भाषाकी कितनी जाति कही है? अहो गौतम! भाषाकी चार जाति कही है १सत्य भाषा, २मृषा भाषा ३सत्य मृषा (मिश्र) और ४ असत्य मृषा व्यवहार, भाषा ॥५१॥ अहो भगवन्! इनचार प्रकार की भाषा बोलनेवाला क्या आराधक होता है या विराधक होता है? अहो

इच्चेयाइ चत्तारि भासज्जायाइ आउत्तभासमाणे आराहए णो विराहए तेणपर असजय अविरय अपडिहय अपचक्खायपावकम्मे सच्चंवा भास भासओ, मोसवा, सच्चा-मोसवा, असच्चामोसवा भास भासओ नो आराहए विराहए॥५२॥ एतेसिण भते! जीवाण सच्चभासगाण, मोसभासगाण, सच्चामोसभासगाण, असच्चामोस भासगाण अभासगाणय कयर २ हिंतो अप्पावा बहुआवा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा सच्च भासगा सच्चमोस भासगा असखेज्जगुणा, मोस भासगा असखेज्जगुणा, असच्चामोस भासगा असखेज्जगुणा, अभासगा अणतगुणा॥ इति पण्णवणाए भगवईए

गौतम! इन चार प्रकार की भाषा में से उपयोग रखकर यथोक्त बोलनेवाला आराधक होता है; परंतु विराधक नहीं होता है उस से अन्यथा प्रकार से बोलता हुवा असंयति अविरति व प्रत्याख्यान से पाप कर्म का नाश नहीं करनेवाला है वह फीर चाहे सत्य भाषा बोले, मृषा बोले, सत्य मृषा बोले या असत्य मृषा बोले वह आराधक नहीं परंतु विराधक है॥५२॥अहो भगवन्! सत्य भाषक, मृषा भाषक, सत्य मृषा भाषक व असत्य मृषा भाषक व अभाषकमें से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं? अहो गौतम! सब से थोडे जीव सत्य भाषक, सत्य मृषा भ षक जीव असंख्यातगुने, मृषा भाषक जीव असंख्यातगुने, इससे असत्य मृषा भाषक असंख्यातगुने

अणागयवयणे,पच्चक्खवयणे,परोक्खवयणे॥४९॥एव्वेय भंते!एगवयणंवा जाव परोक्खवयणंवा वदमाणे पण्णवणीण एसाभासा णएसा भासा मोसा? हंता गोयमा! इच्चेय एगवयणंवा जाव परोक्खवयणंवा वयमाणे पण्णवणीण,एसाभासा, णएसा भासा मोसा॥५०॥कतिण भंते!भासजाया पण्णत्ता? गोयमा! चत्तारिभासजाया पण्णत्ता तंजहा सच्चमेगं भासज्जाय, बीयमोसं भासज्जाय, तइय सच्चामोस भासज्जाय,चउत्थ असच्चामोसं भासज्जाय॥५१॥ इच्चेयाइं भंते! चत्तारिभास ज्जायाइं भासमाणे किं आराहए विराहए? गोयमा!

(वर्तमान काल का) वचन जैसे श्री सीमंधर स्वामी है, १४ अनागत (भविष्य काल) का वचन जैसे पद्मनाभ स्वामी तीर्थंकर होंगे,१५प्रत्यक्ष वचन-जो दृष्टि सामने होवे, और१६परोक्ष वचन बिना देखाती वस्तुका कहना॥४९॥ अहो भगवन्! इसतरह एक वचन यावत् परोक्ष वचन बोलता हुवा प्रज्ञापनी भाषा होवे क्या यह भाषा मृषा नहीं है? अहो गौतम! एक वचन यावत् परोक्ष वचन बोलता हुवा यह प्रज्ञापनी भाषा है परंतु मृषा भाषा नहीं है॥५०॥ अहो भगवन्!भाषाकी कितनी जाति कही है? अहो गौतम!भाषाकी चार जाति कही है १सत्य भाषा, २ मृषा भाषा ३सत्य मृषा (मिश्र) और ४ असत्य मृषा व्यवहार, भाषा॥५१॥ अहो भगवन्! इनचार प्रकार की भाषा बोलनेवाला क्या आराधक होता है या विराधक होता है? अहो

इच्चेयाइं चत्तारि भासज्जायाइं आउत्तभासमाणे आराहए णो विराहए तेणपरं असजय अविरय अपडिहय अपच्चक्खायपावकम्मे, सच्चंवा भास भासओ, मोसवा, सच्चा मोसवा, असच्चामोसवा भास भासओ नो आराहए विराहए॥५२॥ एतेसिण भंते ! जीवाणं सच्चभासगाणं,मोसभासगाण, सच्चामोसभासगाण, असच्चामोस भासगाण अभासगाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुआवा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सच्च भासगा सच्चमोस भासगा असंखेज्जगुणा, मोस भासगा असंखेज्जगुणा, असच्चामोस भासगा असंखेज्जगुणा, अभासगा अणंतगुणा ॥ इति पण्णवणाए भगवईए

गौतम ! इन चार प्रकार की भाषा में से उपयोग रखकर यथोक्त बोलनेवाला आराधक होता है; परंतु विराधक नहीं होता है उस से अन्यथा प्रकार से बोलता हुवा असंयति अविरति व प्रत्याख्यान से पाप कर्म का नाश नहीं करनेवाला है वह फीर चाहे सत्य भाषा बोले, मृषा बोले, सत्य मृषा बोले या असत्य मृषा बोले वह आराधक नहीं परंतु विराधक है॥५२॥अहो भगवन्! सत्य भाषक,मृषा भाषक, सत्य मृषा भाषक व असत्य मृषा भाषक व अभाषकमें से कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे जीव सत्य भाषक, सत्य मृषा भाषक जीव असंख्यातगुने, मृषा भाषक जीव असंख्यातगुने, इससे असत्य मृषा भाषक असंख्यातगुने

इग्यारवे भाषा पद के १७ द्वार पांच स्थावर वर्जकर १९ दंडक और समुच्चय जीवपर

१	स्पर्श द्वार	जीव के प्रदेशों भाषा के पुद्गल स्पर्श कर ग्रहे बिना स्पर्श नहीं
२	अवगाढ द्वार	जिस आकाश प्रदेशको जीव के प्रदेश अवगाह ये ही भाषा के पुद्गल अवगाहे
३	अनंतर परम्पर अवगाढ	अन्तर रहित जीव प्रदेश से लग रहे भाषा के पुद्गलों है
४	सूक्ष्म बादर द्वार	जीव भाषापने सूक्ष्म बादर दोनों प्रकार के पुद्गलों ग्रहण करे
५	ऊर्ध्वदिशा द्वार	ऊर्ध्वदिशा में रहे भाषक आत्मा तीनों दिशा के पुद्गल ग्रहण करे
६	अधोदिशा द्वार	नीची दिशा में रहे भाषक आत्मा तीनों दिशा के पुद्गल ग्रहण करे
७	तिर्च्छीदिशा द्वार	तिर्च्छी दिशा में भाषा बोलता तीनों दिशा के पुद्गल ग्रहण करे
८	आदि द्वार	जीव भाषा बोलता शरीर के आदि पुद्गल ग्रहण करे
९	मध्य द्वार	जीव भाषा बोलता शरीर के मध्य के पुद्गल ग्रहण करे
१०	अंतिम द्वार	जीव भाषा बोलता शरीर के अन्त के पुद्गल ग्रहण करे
११	स्वपरविषय द्वार	भाषा बोलता अपनी शक्ति से पुद्गल ग्रहण करे अशक्ति से नहीं
१२	अनुपूर्वी अनानुपूर्वी द्वार	शरीर लगत पुद्गल अनुक्रम से ग्रहण करे बीच में छोडकर नहीं
१३	दिशा द्वार	भाषा बोलता हुवा नियमा छ ही दिशा के पुद्गल ग्रहण करे

१४ सेदभग्नचूर्णी द्वार	सेदभेद ३ और चूर्णिका ५ यों दोनों के ११ पुद्गल भाषापने ग्रहण होते हैं
१५ अन्तर द्वार	अन्तर द्वार के १ भेद कर पुद्गल भाषापन परिण में
१६ अनुतटिकभेद	अनुतटिक ११ के भेद कर पुद्गल भाषापने परिणमें
१७ उत्कारिकाभेद द्वार	उत्कारिक ३ भेदकर पुद्गल भाषापन परिणमें

भासापए इक्कारसम सम्मत्तं ॥ ११ ॥

और इस से अभापक अनन्तगुने सिद्ध व स्थावर आश्रित यों भगवति प्रज्ञापना का इग्यारहवा भाषा पद संपूर्ण हुवा ॥ ११ ॥



* द्वादश शरीर पदम् *

कतिण भते ! सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! पच सरीरा पण्णत्ता तजहा ओरालिए, वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए ॥ १ ॥ णेरइयाण भते! कइ सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा! तओ सरीरगा पण्णत्ता तजहा-वेउव्विए, तेयए, कम्मए॥ एव असुरकुमारणवि जाव थणियकुमाराणवि ॥ पुढविकाइयाण भते ! कति सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा !

अब बारह वा शरीर पद कहते हैं अहो भगवन् ! शरीर कितने कहे हैं ! अहो गौतम ! शरीर पांच कहे हैं जिन के नाम—१ उदारिक-उदार प्रधान तीर्थंकर चक्रवर्ती बलदेव, वासुदेव, केवली, साधु, श्रावक सेवरों आदि उदार पुरुषों को धारन करने योग्य मुक्ति प्राप्ति के हेतुभूत उसे उदारिक शरीर कहते हैं २ वैक्रेय—एक रूप के दो तीन ऐसे अनेक अच्छे बूरे रूप होवे अथवा विशिष्ट क्रिया वाला सो वैक्रय शरीर ३ आहारक शरीर साधु का होवे चउदह पूर्व के पाठक, जीवादि सूक्ष्म विचारोंका निर्णय करने के लिये केवली पास भेजे वह आहारक शरीर ४ तमस अभिभूत है तथा प्रकार के ग्रहण कीये आहार के पुद्गलों को पाचन करने वाला तथा तेजो लेश्या प्रगट करने के कारनभूत तेजस शरीर है और ५ कार्माण शरीर आठ कर्म के समुदय रूप सब शरीरोंकी उत्पत्ति के कारणभूत वह कार्माण शरीर है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को कितने शरीर कहे हैं ? अहो गौतम ! नारकी को तीन शरीर कहे

तओ सरीरगा पण्णत्ता तंजहा ओरालिए, तेअए कम्मए, एवं वाउकाइय वज्जं जाव चउरिंदियाणं ॥ वाउकाइयाणं भंते ! कति सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि सरीरा पण्णत्ता तंजहा ओरालिए, वेउव्विए, तेयए, कम्मए एवं पंचेंदिय तिरिक्ख जोणियाणवि ॥ मणुस्साणं भंते ! कति सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच सरीरगा पण्णत्ता तंजहा ओरालिए, वेउव्विए, आहारए, तेयए, कम्मए ॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणियाणं जहा नरगाणं ॥ २ ॥ केवइयाणं भंते ! ओरालिय सरीरा पण्णत्ता ?

हैं १ वैक्रय २ तेजस और ३ कार्माण ऐसे ही असुरकुमार यावत् स्थनित कुमार पर्यंत दशों ही भवन पति देवों का वैक्रेय, तेजस व कार्माण एसे तीनों शरीर कहे हैं अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया का कितने शरीर कहे हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वी काया को तीन शरीर कहे हैं जिन के नाम १ उदारिक, २ तेजस और ३ कार्माण ऐसे ही अपूकाय, तेउकाय, वनस्पतिकाय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, और चतुरेंद्रिय का जानना वायुकाया में उदारिक, वैक्रेय, तेजस और कार्माण एसे चार शरीर पाते हैं तिर्यच पंचेन्द्रिय में भी उक्त चार शरीर पाते हैं मनुष्य में पांचों शरीर हैं वाणव्यंतर ज्योतिषी व वैमानिक में नरक जैसे वैक्रेय, तेजस व कार्माण एसे तीन शरीर पाते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! उदारिक शरीर के कितने

गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा बद्धेलगाय मुक्केलगाय ॥ तत्थण जे ते बद्धेलगा तेण असंखेज्जा असखज्जाहि उसप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरति कालओ खेत्तओ असखेज्ज लोगा ॥ तत्थणं जे ते मुक्केलगा तेण अणता, अणताहि उसप्पिणि ओसप्पिणीहि अवहीरति कालओ, खेत्तओ अणतलोगा, दव्वओ अभवसिद्धिएहिंतो अणत गुणा सिद्धाण अणत भागो॥ केवतियाण भंते ! वेउव्वियसरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा!

भद कह हैं ? अहो गौतम ! उदारिक शरीर के दो भेद कहे हैं—बद्धेलग सो धारन किया हुवा और मुक्केलग सो धारन कर छोड दीया हुवा उस में बद्धेलग शरीर द्रव्य से असंख्यात हैं क्यों कि मनुष्य तिर्यंच को ही उदारिक बद्धेलक शरीर है वे असंख्यात हैं यद्यपि निगोद में जीवों अनन्त हैं तथापि शरीर अनन्त नहीं है परंतु असंख्यात हैं; एक २ शरीर में अनन्त जीवों होते हैं काल से-असंख्यात अव सर्पिणी उत्सर्पिणी के जितने समय होते हैं उस के एकेक समय में एकेक उदारिक शरीरका अपहरन करते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी काल व्यतीत हो जावे इतने हैं क्षेत्र से—असंख्यात लोक भरा जावे इतने हैं मुक्केलक शरीर द्रव्य से अनंत हैं काल से समय २ में एकेक अपहरन करते अनंत अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत होजावे इतने हैं, क्षेत्र से अनंत लोक प्रमाण हैं अनंत लोक के आकाश प्रदेशपर एकेक मुक्केलक उदारिक शरीर रखते अनंत लोक के जितने आकाश प्रदेश हैं उतने आकाश प्रदेश की राशि जितने शरीर होजाते हैं

दुविहा पण्णत्ता तंजहा—बद्धेल्लगाय, मुक्केल्लगाय, तत्थण जेते बद्धेल्लगा तेण असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उसप्पिणि अवसप्पिणीहिं अवहीरंते,कालओ खेत्तओ असंखज्जाओ सेढीओ, पयरस्स असंखेज्जइ भागो, तत्थण जेते मुक्केल्लगा तेण अणंता अणंताहिं

और भी द्रव्य से मान कहते हैं—अभव्य से अनंतगुने और सिद्ध के अनंत वे भाग में हैं * अब वैक्रेय शरीर का कहते हैं अहो भगवन् ! वैक्रय शरीर के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! वैक्रेय शरीर के दो भेद कहे हैं १ बद्धेलक और २ मुक्केलक उस में बद्धेलक द्रव्य से असंख्यात हैं काल से एकेक समय में एक शरीर का अपहरन करते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत होवे, क्षेत्र से असंख्यात श्रेणि प्रमान हैं उस श्रेणि के जितने आकाश प्रदेश हैं उतने प्रमान में वैक्रेय शरीर के बद्धेलक हैं अब

* यहां शिष्य प्रश्न करता है कि पडवाइ सम्यक दृष्टि भी अभव्य से अनंतगुने हैं और सिद्ध के अनंत वे भाग में हैं तो क्या पडवाइ सम्यक् दृष्टि की राशि से स्यात् अल्प, स्यात तुल्य या स्यात् अधिक भी होवे ? और भी मुक्त शरीर अनंत हैं तो अनंत शरीर दीखने में नहीं आते हैं तो क्या अनंत खण्ड होकर परमाणु के भाव से परिणमे हैं ? प्रथम पक्ष में शरीर का अनंत काल रहना नहीं है और दूसरा पक्ष ग्रहण करे तो खण्ड २ ग्रहण करने से कोई भाव ने उदारिक शरीर के पुद्गल ही अनंत वक्त परिणमाकर छोडे नहीं हैं इसलिये यहां सब पुद्गलास्ति काय में जो पुद्गल हैं वे तो सब जीवों से अनंत गुने हैं. यह वचन किस तरह समझना ? उत्तर-भगवंतने जो कहा है वह निर्दोष है, उक्त दोनों पक्ष को हम अंगीकार नहीं करसकते हैं; हम ऐसा कहते हैं कि जीव रहित औदारिक शरीर

अवसप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरति, कालओ जहा ओरालियस्स मुक्केल्लयाय तहेव वेउव्वियस्सवि भाणियव्वा ॥ केवतियाण भते! आहारग सरीरगा पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तंजहा बद्धेल्लगाय मुक्केल्लगाय तत्थण जेत बद्धेल्लगा तेण सिय

मुक्केलक वैक्रय शरीर द्रव्य से अनंत हैं, काल से अनंत अवसर्पिणी के समय जितने हैं वगैरह सब उदारिक शरीर जैसे ही इस का कथन करना अहो भगवन्! आहारक शरीर कितने कहे हैं? अहो गौतम! आहारक शरीर के दो भेद कहे हैं—बद्धेलक और मुक्केलक उस में बद्धेलक किसी काल में पाता है और किसी काल में नहीं पाता है क्यों कि आहारक शरीर की लब्धि मात्र चउदह पूर्व के धारि यों को होती है और आहारक शरीर का विरह भी छ मास का होता है इस से विरह काल में

के अनंत खण्ड होवे व जहां तक उस जीव का निष्पन्न कीया औदारिक शरीर का परिणाम छोडकर पुनः अन्य परिणाम को प्राप्त न होवे वहां तक औदारिक शरीर के अवयवपने से अलग औदारिक शरीर कहना, जैसे गाम का एक विभाग जलने से गाम भस्म कहा जाता है, पट का थोडा विभाग जलने से पट जला कहा जाता है, ऐसे ही अवयव में सर्व समुदाय का उपचार करने से उदारिक शरीर कहना इसलिये एकेक जीव के छोडे हुवे उदारिक शरीर के अनंत भेद होते हैं वे अनंत भेद अथवा २ उस के अवयव में उपचार करने से एक जीव के मुक्त कीये उदारिक शरीर के भी अनंत उदारिक शरीर छोडे हुवे होते हैं, इसलिये यहां समुच्चय उदारिक शरीर कहा है, विभाग से अथवा ? भाग कहते

अत्थि सियपत्थि, जइ अत्थि जहण्णेण एकोवा दोवा, तिण्णिवा, उक्कोसेण सहस्स पुहुत्तं तत्थणं जे ते मुक्केल्लगाय तेणं अणता जहा ओरालिय सरीर मुक्कल्लगा तहेव भाणियव्वा ॥ केवइयाणं भंते ! तेयग सरीरया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—बद्धेल्लगाय मुक्केल्लगाय ॥ तत्थणं जेते बद्धेल्लगाय तेणं अणता, अणताहिं उसप्पिणिअवसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ अणतालोगा दव्वओ सिद्धेहिंतो अणतगुणा, सव्व जीवाणंत

पदेशक आहारिक शरीर नहीं पाता है जब पाता है तब जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट प्रत्येक हजार से अधिक नहीं होते हैं मुक्तक आहारिक शरीर का उदारिक जैसा ही कहना अहो भगवन् ! तेजस शरीर के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! तेजस शरीर के दो भेद कहे हैं बद्धक और २ मुक्तक उस में से बद्धक अनंत हैं क्यों कि निगोद के प्रत्येक जीवों को अलग २ तेजस कार्माण शरीर होते हैं काल से एक २ समय में एकेक अपहरन करते अनंत अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हो जावे और क्षेत्र से अनंत लोक प्रमाण हैं ऐसे ही द्रव्य से निक्षेप करते हैं द्रव्य से सिद्ध से अनंतगुने हैं और सब जीवोंसे अनंत वे भाग कम हैं क्योंकि सिद्ध के जीवोंको तेजस कार्माण शरीर नहीं

भागूणा ॥ तत्थण जेते मुक्कल्लगा तेणं अणता अणताहिं ओसप्पिणी उसप्पिणीहिं अवहीरति, कालतो खेत्तओ अणंता लोगा, दव्वओ सव्वजीवे हिंतो अणतगुणा, सव्व जीव वग्गस्स अणतभागो ॥ केइविहाणेण भंते! कम्मग सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तजहा बद्धेलगाय मुक्किल्लगाय, एवं जहा तेयग सरीरा तहा कम्मग सरीराणि भाणियव्वा ॥ २ ॥ णेरइयाणं भंते! केवतिया ओरालिय सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तजहा-बद्धेलगाय मुक्किलगाय, तत्थणं जेते बद्धेलगा तेण

है इस से सिद्ध राशि जितने तेजस शरीर सब जीवों से कम हो गये और मुक्केलक द्रव्य से अनंत हैं काल से एक समय में एक२ अपहरन करते अनंत अवसार्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हो जावे उतने हैं, क्षेत्र से अनंत लोक प्रमाण है, सब जीवों से अनंतगुने हैं और सब जीवों के वर्गसे अनंतवे भाग में हैं अहो भगवन्' कार्माण शरीर के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम' कार्माण शरीर के दो भेद कहे हैं—१ बद्धलक और २मुक्केलक यों जैसे तेजस शरीरका कथन कीया वैसाही सब कार्माणका कहना यह पांचों शरीर की समुच्चय वक्तव्यता हुई ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को कितने उदारिक शरीर कहे हैं ? अहो गौतम ! दो प्रकार के उदारिक शरीर कहे हैं १ बद्धेलक और २ मुक्केलक, उस में से बद्धेलक शरीर नरक में नहीं है

ओरालिया णत्थि, तत्थण जेते मुक्किलगा तेण अणंता, जहा ओरालिय मुक्केलया तहा भाणियव्वा ॥ ४ ॥ णेरइयाण भंते ! केवतिया वेउव्विय सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तजहा बद्धेल्लगाय मुक्किल्लगाय ॥ तत्थण जे ते बद्धेल्लगा

क्यों कि वे वैक्रय शरीर धारन करनेवाले हैं, और मुक्केलक अनंत हैं क्यों कि नेरियोंने गतकाल में अनंत संसार का परिभ्रमण कर अनंत उदारिक शरीर धारन कर छोड दीये हैं इस का कथन समुच्चय जीव आश्रिय उदारिक का कहा वैसे ही कहना ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को वैक्रेय शरीर कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! नारकी को वैक्रय शरीर दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा-१ बद्धेलक और २ मुक्केलक उस में बद्धेलक असंख्यात हैं क्यों कि प्रत्येक नरक में असंख्यात नेरियों हैं काल से-एक २ समय में एक का अपहरन करते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हो जावे, क्षेत्र से असंख्यात श्रेणि के जितने आकाश प्रदेश हैं उतने बद्धेलक वैक्रेय शरीरवाले नेरिये हैं [अब यहां पर विवरण करते हैं प्रतर के असंख्यातवे भाग में असंख्यात श्रेणियों हैं, उस के जितने आकाश प्रदेश हैं उतने नारकी के बद्धेलक वैक्रय शरीर हैं यहां पर प्रतर के असंख्यातवे भाग में असंख्यात योजन की कोडी भी होवे तो यहां असंख्यात योजन की कोडी में जितने आकाश प्रदेश होवे वह अंगुल प्रमाण असंख्यात प्रदेश की श्रेणि है उस का क्षेत्र घनकृत लोक सात राजु प्रमाण लम्बा, चौडा व जाडा होता है वह यहां असंख्यात

तेण असंखेज्जा असंखिज्जाहिं, उसप्पिणीहिं उस्सप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ। असंखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखज्ज भागो, तासिण सेढीण विक्खंभसूई अगुल पढमवग्गमूल बितीय वग्गमूल पडुप्पण्ण अहव्वण, अगुल वितीय वग्गमूल घणप्प

प्रदेश की जाती श्रेणि के जितने आकाश प्रदेश की राशि यह प्रथम वर्ग मूल, उस को दूसरे वर्ग मूल की साथ गिनने से जितनी श्रेणी होवे उतनी श्रेणी की विषम शुचि होवे इतनी श्रेणी अंगुल प्रमान सूत्रमें मानना यहां एसा भी कोई कहते हैं कि अंगुल प्रमाण सब नारकपने मानना यह असत्य कल्पना से २५६ प्रदेश की श्रेणी, इस का प्रथम वर्ग मूल १६ का हुवा दूसरा वर्ग मूल ४ का यों दोनों का गुनाकार ६४ होवे अर्थात ६४ प्रदेश का एक घन और एक नरक का एक बद्धेलक शरीर, यों दूसरा शरीर यों जितने विष्कम्भ शुचि अंगुल आकाश प्रदेश के ६४ प्रदेश के घन इतने सातों नरक के बद्धेलक वैक्रेय शरीर हैं अथवा दूसरा प्रकार अंगुलप्रमान जो प्रतर क्षेत्रमें असंख्यात श्रेणिका दूसरा वर्ग मूल पूर्वोक्त चार की संख्या, वे चार रूप उस के घन ६४ रूप उतनी श्रेणी यहां ग्रहण करना यों रूप करके दूसरा भेद होता है यहां परंपरा से दो प्रकार के भेद हैं परंतु परमार्थ से एक ही होता है यों स्वकल्पनासे ६४ प्रदेश रूप एक श्रेणि का सद्भाव होवे, यों असंख्यात चौसठ २ प्रदेशों की श्रेणि होवे. यों प्रदेश श्रेणि की जो राशि होवे उतने नारकी को बद्धलक वैक्रेय शरीर होवे हैं अर्थात् अंगुल प्रमान मात्र

माण मेत्ताओ सेढीतो तत्थण जेते मुक्केल्लगा तेणं जहा उरालियस्स मुक्केल्लगा तेहा भाणियव्वा ॥ ५ ॥ णेरइयाण भंते ! केवतिया आहारग सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तंजहा बद्धेल्लगाय मुक्केल्लगाय एव जहा ओरालिय बद्धेल्लगा, मुक्केल्लगाय भाणिया तहेव आहारगाविभाणियव्वा ॥ तेयाकम्माइ जहा एतेसिंचेव वेउव्वियाइ दोवियाइ ॥६॥ असुरकुमाराण भंते! केवतिया ओरालिय सरीरा पण्णत्ता? गोयमा! जहा णेरइयाण ओरालियसरीरा भणिया तहेव एतसिंपि भाणियव्व ॥ असुर॰

आकाश के प्रदेश हैं उस की दश कल्पना से ९८ प्रदेश की श्रेणि गिनना यों गिनते २ असंख्यात श्रेणि की राशि होवे मुक्केलक शरीर का नारकी के उदारिक शरीर जैसे कहना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को कितने आहारक शरीर कहे हैं ? अहो गौतम ! नारकी का दो प्रकार के आहारक शरीर कहे हैं तद्यथा १ बद्धेलक और २ मुक्केलक यों जिस प्रकार औदारिक शरीर का कहा वैसही कहना क्योंकि पचदह पूर्वधारी पडवाइ होकर नरक में जाते हैं और तेजस कार्माण का वैक्रेय शरीर जैसे कहना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार को कितने औदारिक शरीर कहे हैं ? अहो गौतम ! जैसे नेरिये के उदारिक शरीर की व्याख्या करी वैसे ही असुर कुमार के उदारिक शरीर की व्याख्या कहना अहो भगवन् ! असुर कुमार को कितने वैक्रेय शरीर कहे हैं ? अहो गौतम ! असुर कुमार को

कुमाराण भते ! केवइया वेउव्विय सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा दुविहा पण्णत्ता तंजहा बद्धेल्लगाय, मुक्केल्लगाय, तत्थण जे ते बद्धेलगा तेण असखेज्जा असखेज्जाहिं उसप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरति,कालता खेत्तता असखेज्जाओ सेढीआ पयरस्स असखेज्जति भागो तासिण सेढीण विक्खमसूई अगुलपढमवग्गमूलस्स असखेज्जई भागो ॥ तत्थण जे ते मुक्केलगा तेण जहा ओरालियस्स मुक्केलगा तहा भाणियव्वा ॥ आहारग सरीरा जहा

दो वैक्रेय शरीर कहे हैं जिन के नाम—१ बद्धेलक और २ मुक्केलक उस में जो बद्धेलक हैं वे असंख्यात हैं क्यों कि असुर कुमार इन असंख्यात हैं काल आश्रिय समय २ में एकेक हरन करते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हो। जाय और क्षेत्र से असंख्यात श्रेणि प्रतर के जितने आकाश प्रदेश होवे उस प्रमाण में हैं नरक से इस में इतनी विशेषता है कि उस श्रेणि के प्रमाण में जितने विष्कम्भपने सूचि उस विस्तारपने अंगुल मात्र क्षेत्र के प्रदेश की राशि सर्व से प्रथम वर्ग मूल असंख्यातवे भाग मात्र है अर्थात् जो अंगुल मात्र प्रदेश की राशि में असद् कल्पना से २५६ प्रमाण हैं उसे प्रथम वर्ग मूल १६ की संख्या लक्षण उस का असंख्यातवा भाग के जितने आकाश प्रदेश की श्रेणि है उस श्रेणि के जितने आकाश की सूचि असंख्यात भाग कम है इस लिये नरक से असंख्यातवे भाग असुर कुमार हैं रत्नप्रभा के नेरिये से असुर कुमार अधिक है परंतु सातों नरक के नेरिये से असंख्यातवे भाग ही हैं

एतोसिंपेव आरालिया तहेव दुविहा भाणियव्वा ॥ तेया कम्मग सरीरगा दुविहावि जहा एतसिंचेव यउव्विय ॥ एव जाव थणियकुमारा ॥ ७ ॥ पुढवि काइयाणं भत! केवतिया ओरालिया सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तजहा बद्धेल्लगाय मुक्केल्लगाय, तत्थण जते बद्धेल्लगा, तेण असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उसप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरंति,कालतो खेत्तो असंखेज्जालोगा, तत्थणं जेते मुक्केल्लगा तेण अणता, अणंताहि उसप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरंति, कालओ, खेत्तोअणतालोगा,

अर्थात १२८ प्रदेश की एक श्रेणि और असुर कुमार का एक बद्धलक शरीर यों करते २ सुचि अंगुल प्रमाण क्षेत्र खाली होवे इतने हैं जो मुक्कलक हैं उस की व्याख्या उदारिक मुक्कलक जैसे कहना दोनों प्रकार के आहारक शरीर का उदारिक जैसे कहना तेजस कार्माण का वैक्रय जैसे कहना जैसे असुर कुमार का कथन किया वैसे ही स्थनित कुमार पर्यंत दशों भवनपति का कथन करना ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया के कितने उदारिक शरीर कहे हैं? अहो गौतम! दो प्रकारके उदारिक शरीर कहे हैं १ बद्धलक और २ मुक्कलक उस में जो बद्धलक है वे असंख्यात हैं, समय २ में एक अपहरन करते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत होजावे, क्षेत्र से असंख्यात लोक प्रमाण हैं, जो मुक्कलक हैं वे अनंत हैं अनंत अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हो जावे,क्षेत्रसे अनंत लोक के आकाश प्रदेशकी राशि प्रमाण हैं

कुमाराणं भंते ! केवइया वेउव्विय सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा दुविहा पण्णत्ता तंजहा बद्धेल्लगाय, मुक्केल्लगाय, तत्थणं जे ते बद्धेल्लगा तेणं असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उसप्पिणी ओसप्पिणीहिं अवहीरंति, कालओ खेत्तओ असंखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखेज्जति भागो तासिणं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुल पढमवग्गमूलस्स असंखेज्जई भागो ॥ तत्थणं जे ते मुक्केल्लगा तेणं जहा ओरालियस्स मुक्केल्लगा तहा भाणियव्वा ॥ आहारग सरीरा जहा

दो वैक्रेय शरीर कहे हैं जिन के नाम—१ बद्धेलक और २ मुक्तक उस में जो बद्धेलक हैं वे असंख्यात हैं क्यों कि असुर कुमार द्रव्य असंख्यात हैं काल आश्रिय समय २ में एकेक हरन करते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हो जावे और क्षेत्र से असंख्यात श्रेणि प्रतर के जितने आकाश प्रदेश होवे उस प्रमाण में हैं नरक से इस में इतनी विशेषता है कि उस श्रेणि के प्रमाण में जितने विष्कम्भपने शुचि उस विस्तारपने अंगुल मात्र क्षेत्र के प्रदेश की राशि सर्व के प्रथम वर्ग मूल असंख्यातवे भाग मात्र है अर्थात् जो अंगुल मात्र प्रदेश की राशि में असत् कल्पना से २५६ प्रमाण हैं उसे प्रथम वर्ग मूल १६ की संख्या लक्षण उस का असंख्यातवा भाग के जितने आकाश प्रदेश की श्रेणि है उस श्रेणि के जितने आकाश की शुचि असंख्यात भाग कम है इस लिये नरक से असंख्यातवे भाग असुर कुमार हैं रत्नप्रभा के नेरिये से असुर कुमार अधिक है परंतु सातों नरक के नेरिये से असंख्यातवे भाग ही हैं

अभवसिद्धिएहिंतो अणतगुणा, सिद्धाण अणत भागो ॥ पुढविकाइयाणं भंते ! केवतिया वेउव्विय सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा बद्धेलगाय मुक्केल्लगाय, तत्थण जेते बद्धेल्लगा तेण णत्थी तत्थण जेते मुक्केल्लगा तेण जहा एतेसिंचव उरालिया भाणिया तहेव भाणियव्व ॥ एव आहारग सरीरावि, तेया कम्मगा जहा एतेसिं चेव ओरालिया ॥ एव आउकाइया, तेउकाइयावि ॥ वाउ काइयाण भंते ! केवतिया ओरालिय सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा, पण्णत्ता बद्धेलगाय मुक्केल्लगाय दुविहावि जहा पुढविकाइयाण ओरालिया॥वेउव्वियाण पुच्छा?

अभवसिद्धिक जीवों से अनंतगुने हैं और सिद्ध भगवन्त से अनंतवे भाग में हैं अहो भगवन् ! पृथ्वी काया में वैक्रय शरीर कितने हैं? अहो गौतम! दो प्रकार के हैं जिन के नाम-बद्धेलक और मुक्केलक उस में बद्धेलक नहीं है और मुक्केलक का उदारिक शरीर जैसा जानना ऐसे ही आहारिक का भी कहना तेजस कार्माण का उदारिक शरीर जैसे कहना जैसे पृथ्वीकाया का कहा वैसेही अपकाय व तेउकाय में कहना अहो भगवन्! वायुकाया के कितने उदारिक शरीर कहे हैं ? अहो गौतम ! दो प्रकार के शरीर कहे हैं जिन के नाम—१ बद्धेलक और २ मुक्केलक इन दोनों की वक्तव्यता जैसी पृथ्वीकाय के उदारिक शरीर की कही वैसे ही कहना, वैक्रेय शरीर का प्रश्न अहो गौतम ! दो प्रकार के कहे हैं १ बद्धेलक और मुक्केलक

गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा बद्धेल्लगाय मुक्केल्लगाय तत्थणं जेते बद्धेल्लगा तेण असंखेज्जा समए समएण अवहीरमाणे २ पलिओवमस्स असंखेज्जइ भागमेत्तेण कालेण अवहीरति नो चेवण अवहारिया सिया, मुक्केल्लगा जहा पुढविकाइयाण ॥ आहारयतया कम्मगा जहा पुढविकाइयाण तहा भाणियव्वा ॥ वणस्सइ काइयाणं जहा पुढविकाइयाण णवर तेयाकम्मगा जहा ओहिया, तेया कम्मगा ॥ ८ ॥ बेइंदियाण भंते ! केवइया ओरालिय सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा बद्धेल्लगाय मुक्केल्लगाय, तत्थणं जे ते बद्धेल्लगा तेण अस

हम में जो बद्धेलक हैं व असंख्यात हैं, समय २ में एक २ अपहरन करते पल्योम के असंख्यातवे भाग जितने काल यद्यपि वायुकाया असंख्यात लोकाकाश प्रमान हैं तथापि सूक्ष्म बादर, पर्याप्त और अपर्याप्त इन चार भेद में से मात्र पर्याप्त बादर वायुकाया में ही वैक्रेय शरीर पाता है अन्य में नहीं पाता है और मुक्तलक का पृथ्वीकाया का कहा वैसे ही कहना. वनस्पतिकाया के बद्धेलक मुक्तलक ऐसे दोनों शरीरों का पृथ्वीकाया का कहा वैसे कहना परंतु तेजस व कार्माण का जैसा औधिक सूत्र में कहा वैसा कहना अर्थात् जितने जीव हैं उतनेही बद्धेलक शरीर हैं और मुक्तलक अनंतगुने हैं ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय के कितने उदारिक शरीर कहे हैं ? अहो गौतम ! दो प्रकार के उदारिक शरीर कहे हैं जिनके

सज्जा असखज्जाहिं उसप्पिणि उस्सप्पिणीहिं अवहीरति कालतो, खेत्तओ असखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असखेज्जइ भागो, तासिण सेढीण विक्खभसूयी असखेज्जाओ जोयण कोडाकोडीओ असखेज्जाइ सेढीवग्गमूलाइं, बेंदियाण ओरालिय सरीरहिं बद्धेल्लु गेहिय पयरे अवहीरती असखेज्जाहिं उसप्पिणीउस्सप्पिणीहि, कालतो खेत्तओ अगुलपयरस्स आवलियाते असखज्जतिभाग पलिभागेण, तत्थण जते मुक्कल्लगा ते जहा

नाम १ बद्धेलक और २ मुक्केलक, उस में बद्धेलक असंख्यात हैं काल से एकेक समय में एकेक अपहरण करते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हो जावे, क्षेत्र से असंख्यात श्रेणि के प्रदेश के तुल्य हैं अर्थात् प्रतर के असंख्यात वे भाग वर्ती जो असंख्यात श्रेणि के जो प्रदेश राशि होवे उतने हैं इतनी नरक के भी थे परन्तु इस में विशेषता यह है कि-प्रदेश के असंख्यातवे भाग वर्ती श्रेणिकी विष्कम्भसूचि असंख्यात कोडा कोड योजन प्रमान है अर्थात एक आकाश श्रेणिके प्रदेश की राशि सद्भाव से असंख्यात प्रदेश रूप है उस के असंख्यात वर्ग मूल है इतने प्रदेश की विष्कम्भ सूचि है बेइन्द्रिय का उदारिक शरीर बद्धेलक उस के प्रदेश से प्रतर के सब प्रदेश का अपहरन होवे, काल से असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी समय प्रमान होवे, क्षेत्र से अंगुल प्रतर रूप क्षेत्र का और आवलिका रूप जो काल उस के असंख्यातवा भागरूप प्रतिभाग इस से युक्त है अर्थात् एक द्वीन्द्रिय का शरीर और प्रतर

ओहिय ॥ ओरालिय मुक्केलगा वेउव्विगा आहारगाय बद्धेल्लगा नत्थि मुक्केलगा जहा ओहिया, ओरालिया, तेया कम्मगा जहा एतेसिंचेव उहिया, उरालिया, एव जाव चउरिंदिया ॥ १ ॥ पंचिंदिया तिरिक्ख जोणियाण एवं चेव, णवर वेउव्विये सरीरसु इमो विसेसो — पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण भंते ! केवइया वेउव्विय सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—बद्धेलगाय मुक्केल्लगाय, तत्थण जेते बद्धेलगा तेण असंखज्जा, जहा असुरकुमाराण, णवर तासिण सेढीण विक्खंभसूयी

का एक अंगुलका असंख्यातवे भागका ऊंच एक२आकाशप्रदेशके असंख्यातवेभाग अनुक्रमसे अपहरन करते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत होजावे, मुक्केलक उदारिक शरीरकी व्याख्या औधिक जैसे कहना वैक्रेय का बद्धेलक इस में नहीं है मुक्केलक का औधिक जैसे कहना तेजस कार्माण का इस केही औधिक जैसे कहना जैसे बेइन्द्रिय का कहा वैसे ही तेइन्द्रिय व चउरिन्द्रिय का कहना ॥ १ ॥ तिर्यंच पंचेन्द्रिय का भी उपर्युक्त जैसे कहना परंतु वैक्रेय शरीरमें विशेषता इतनी है कि अहो भगवन् ! तिर्यंच पंचेन्द्रिय को कितने वैक्रेय शरीर कहे हैं? अहो गौतम! दो प्रकारके वैक्रेय शरीर कहे हैं तद्यथा १ बद्धेलक और २मुक्केलक उस में जो बद्धेलक है वे असंख्यात हैं वैसे ही जैसे असुरकुमार का कहा वैसे ही कहना परंतु विशेषता यह है कि प्रतर के असंख्यातवे भाग जितनी प्रदेश श्रेणी की राशि होती है उस के तुल्य हैं, यों द्रव्य से

अंगुल पढमवग्गमूलस्स असंखेज्जइ भागो मुक्केल्लगा तहेव ॥१०॥ मणुस्साण भंते ! केवइया ओरालिय सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा बद्धेल्लगाय मुक्केल्लगाय, तत्थणं जते बद्धेल्लगा तेणं सिय संखेज्जा, सिय असंखेज्जा जहण्णपए संखेज्जा, संखिज्जाओ कोडाकोडीओ, एगूणतीसाइट्ठाणाइंति जमलपयस्स उवरिं चउजमल पयस्सहेट्ठा, अहवणं छट्ठोवग्गो पचमवग्ग पडुप्पणो अहवणं छण्णो ट्ठाणगदयिरासी,

असंख्यात हैं काल से असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी के समय प्रमान है, क्षेत्र से प्रतर के असंख्यात भाग मा असंख्यात श्रेणी हैं उन की राशि तुल्य है मुक्केल्लक वैस ही कहना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य का कितने उदारिक शरीर कहे हैं ? अहो गौतम ! दो प्रकार के उदारिक शरीर कहे हैं जिनके नाम बद्धेलक और मुक्केलक. उस में जो बद्धेलक हैं व स्यात् संख्यात हैं स्यात् असंख्यात हैं क्योंकि गर्भज मनुष्य के उच्चार प्रस्त्रवणादि चवदह स्थान में सम्मूर्च्छिम जीवों की उत्पत्ति होती है उस आश्रिय असंख्यात कहे हैं वे कदाचित होते हैं और कदाचित नहीं भी होते हैं क्यों कि उन की अंतर्मुहूर्त की स्थिति कही है और उन का विरह काल चौविस मुहूर्त का है इस से स्यात शब्द का प्रयोग कीया है और भी गर्भज मनुष्य सदैव असंख्यात नहीं रहते हैं इस से उदारिक शरीर के बद्धेलक भी स्यात संख्यात है, संख्यात कहा जावे मनुष्य हैं सब भी गुनतीस स्थानक जिस में आठ २ स्थान को जमल पद कहते हैं ऐसे

उक्कोसपदे असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उसप्पिणिओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालओ, खेत्तओ रूप पक्खित्तेहिं, मणुस्सेहिं सेढीहिं अवहीरंतिती से सेढीहि अवहारो असंखेज्जाहि उसप्पिणी-उस्सप्पिणीहिं अवहीरंति, कालओ खेत्तओ अंगुलपढमवग्गमूलतइयवग्गमूलपडुप्पण्ण, तत्थण जते मुक्केलगा ते जहा ओरालिया ओहिया मुक्केलगा॥ मणुस्साण भंते! केवइया

तीन यमल पद का समाहार २४ होवे, अर्थात् जघन्यपद में २५ अंक जितने गर्भज मनुष्य, और चार यमल पद का समाहार बत्तीस होवे परंतु यहांपर गुनतीस ही अंक है इस से चौथा यमल पद पूरा न होवे इतने उत्कृष्ट मनुष्य हैं अथवा वर्ग को भी यमलपद की संख्या कही है तीन यमल अर्थात् ७ वर्ग के उपर और चौथा यमल अर्थात् चार युगल वर्ग के अंदर मनुष्य की संख्या होती है इस में गुनतीस अंक होवे हैं सो बताते हैं एक का वर्ग एक ही होने से संख्या आगे नहीं बढ सकती है दो का वर्ग चार, चार को चारगुने करने से चार का वर्ग १६ हुवा अब तीसरा वर्ग १६ को सोलहगुने करने से २५६ हुवे, चौथा वर्ग २५६ को २५६ गुने करने से ६५५३६ हुवे, पांचवा वर्ग ६५५३६ को ६५५३६ से गुना करने से ४२९४९६७२९६ हुए छठा वर्ग १८४४६७४४०७३७०९५५१६१६ इस वर्ग को पूर्वोक्त पांचवे वर्ग की साथ गुने तब ७९२२८१६२५१४२६४३३७५९३५४३९५०३३६ इतने जघन्य पद में मनुष्य होवे और भी प्रकारान्तर कहते हैं. किसी भी बडी राशि को अनु क्रम छेदन से

वेउव्विय सरीरा पण्णत्ता गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा बद्धेल्लगाय मुक्केल्लगाय, तत्थण जेते बद्धेल्लगा तेण असंखेज्जा समए २ अवहीरमाणाई असंखिज्जेणं कालेण अवहीरति नो चवण अवहिआसिया, तत्थण जे ते मुक्केल्लगा तेणं जहा ओरालिया ओहिया

अर्थात् अर्थ करने से अब उस राशि क अंत में प्रतिपूर्ण एक रूप बचे संहित होवे नहीं वह राशि गुनतास अंक की है जैसे प्रथम वर्ग चार का उस क दो छद होवे जैसे चार के आधे दो और दो का आधा एक ऐसे ही उक्त प्रकार भाग भी कर दूवे रूपों में भी भावना करना ऐसे ही दूसरे वर्ग में आठ छेदांक होवे, छठ वर्ग में चौसठ छेदांक होवे और पांचवा वर्ग छठे वर्ग साथ गुना है इसलिये पांचवा वर्ग का छेदांक छठे वर्ग में समावेश हुवा, इस से छठा वर्ग का छेदांक नहीं है पांचवे वर्ग के ३२ छेदांक और छठ वर्ग क ६४ छेदांक मीलकर ९६ छेदांक होवे इतने गर्भज मनुष्य के बद्धेलक शरीर हैं अब क्षेत्र पर करते हैं मनुष्य क वहारिक शरीर बद्धेलक असंख्यात हैं काल से एक २ समय में एक नीकालते असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत होजावे, क्षेत्र से अंगुल प्रमाण क्षेत्र की श्रेणि में जितने आकाश प्रदेश होवे उस का प्रथम वर्ग मूल २५६ और तीसरा वर्ग मूल प्रथम वर्ग की राशि साथ गुन तब १०२४ प्रदेश की राशि होवे उतने प्रमान का जो क्षेत्र का खण्ड (१०२४ प्रदेश का खण्ड) है उस में एक मनुष्य का शरीर एक समुच्चय इस प्रकार अपहरन करते २ उस श्रेणि में से बद्धेलक प्रमान

मुक्केलया ॥ आहारग सरीरा जहा ओहिया ॥ तेया कम्मगा जहा एएसिंचेव ओरा
लिया ॥ ११ ॥ वाणमंतराणं जहा नेरइयाणं, ओरालिया आहारगाय वेउव्विय
सरीरगाणि जहा नेरइयाणं णवर तासिणं सेढीणं विक्खंभसूई संखेज्ज जोयणसतवग्गा

१०२५ प्रदेश का खण्ड खाली रह जावे जो एक एक मनुष्य का शरीर होवे तो उस श्रेणि का खण्ड पूरा होवे परंतु यह एक शरीर नहीं है क्यों कि सर्वोत्कृष्ट एक स्थान गर्भज मनुष्य सम्मूर्च्छिम मनुष्य इतनी है, अधिक नहीं है मुक्तक शरीर का औधिक उदारिक शरीर जैसे जानना अहो भगवन् ! मनुष्य के वैक्रेय शरीर कितने कहे हैं ? अहो गौतम ! दो कहे हैं १ बद्धेलक और २ मुक्तलक इस में जो बद्धलक हैं वे संख्याते हैं क्यों की सम्मूर्च्छिम मनुष्य को वैक्रेय शरीर नहीं है उन का एकेक समय में एकेक अपहरन करे तो संख्यात काल में अपहरण होवे, वैक्रेय शरीर का मुक्तलक उदारिक जैसे कहना आहारिक के बद्धेलक व मुक्तेलक शरीर समुच्चय जैसे जानना तेजस कार्माण का बद्धलक मुक्तलक मनुष्य के उदारिक शरीर का कहा वैसे ही कहना ॥ ११ ॥ वाणव्यंतर को नारकी जैसे कहना उदारिक व आहारिक के बद्धेलक नहीं है परंतु नरक से व्यंतर के शरीर असंख्यातगुने अधिक हैं, इस में विषय सूचि से विष्कम्भ कहते हैं असंख्यात श्रेणिवाला सात राजु का जो प्रतर है उस का असंख्यातवा भाग उस श्रेणिका विस्तार संख्यात योजन के खण्ड का

पलिभागो पयरस्स मुक्कल्लगा जहा आहिया ॥ आहारिया तेया कम्मगा जहा एएसिं पंचेव वेउव्विया ॥ १२ ॥ जोइसियाण एवं चेव, णवर तासिंण सेढीणं विक्खं भसूईओ छप्पण्णंगुलसयवग्ग पलिभागो पयरस्स ॥ १३ ॥ वेमाणियाण पुच्छा ?

वर्ग करे वहां एकेक व्यंतर का शरीर रखे यों करते सात राजु का प्रतर पूरा होवे, इतने संख्यात योजन में सेकडो का जो वर्ग उस रूप भाग अंश रूप सम विभाग से एक २ व्यंतर का अपहरन करते संपूर्ण प्रतर खाली होजाय; इस प्रकार नारकी से व्यंतर असंख्यातगुने हैं और तिर्यंच पंचेन्द्रिय से व्यंतर असंख्यातगुने कमी हैं क्यों कि पूर्वोक्त तिर्यंच की विष्कम्भ सूचि असंख्यात गुने हीन मानना मुक्केलक का उदारिक शरीर जैसे कहना आहारक शरीर का कथन असुरकुमार जैसे कहना तेजस व कार्माण शरीर का जैसे वैक्रेय शरीर का कहा वैसे ही कहना ॥ १२ ॥ ज्योतिषी का भी वैसे ही कहना, परंतु इतना विशेष कि असंख्यात योजन की विष्कम्भ सूचि पूर्वोक्त विस्तार प्रमाने जानना व्यंतर की विष्कम्भ सूचि से ज्योतिषी की विष्कम्भ सूचि संख्यातगुनी अधिक है और यहां २५६ के वर्ग रूप भाविभाग अर्थात् सात राजु प्रतर का एकेक अंश मानना यथोक्त २५६ अंगुल प्रमान एक अंश और एक ज्योतिषी यों अपहरते सात राजु का एक प्रतर पूरा होवे अथवा २५६ अंगुल के एकेक अंश में एकेक ज्योतिषी की स्थापना करते पूरा प्रतर सात राजु का पूरा होवे. जितने सात राजु मान

गोयमा ! एव चेव तासीण २ सेढीणं विक्खमसूई, अगुल वितीय वग्गमूल, तईय वग्गमूल पडुपण्ण, अहवण अगुल तइय वग्गमूल घणप्पमाण मेत्ताओ सेढीओ सेस तचेव ॥ इति पण्णवणाए भगवईए सरीरपय बारसमं सम्मत्त ॥ १२ ॥

प्रतरवाले २८६ अगुल के अंश होते हैं उतने ज्योतिषी के वैक्रय शरीर बंधुक्क हैं अर्थात् व्यंतर से ज्योतिषी असंख्यात गुने अधिक हैं ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! वैमानिक के शरीर कितने प्रकार के कहे हैं! अहो गौतम ! ज्योतिषी जैसा वैमानिक का जानना परंतु इतनी विशेषता कि क्षत्र से असंख्यात श्रेणि का जो प्रतर है उस प्रतर के असंख्यातवे भाग भात इतने हैं भुवनपति, व्यंतर व ज्योतिषी से वैमानिक असंख्यात गुने कम हैं इस से विष्कम्भ शुचि में विशेष कहते हैं उस श्रेणि के विष्कम्भरूप अंगुल का जो दुसरा वर्ग मूल ४ तीसरा वर्ग मूल दो उस से इस तरह दूसरे वर्ग मूल को तीसरे वर्ग मूल से गुनने से ८ होवे, यों यहां सद्भाव से असंख्यात श्रेणि की भी कल्पना आठ श्रेणि २२५ विस्तार की शुचि यहां ग्रहण करना अथवा प्रकारान्तर से तीसरा वर्ग मूल द्वीती गुना अर्थात् एक आठ रूप का और एक दूसरा एक बद्धेलक वैक्रय शरीर यों करते विषय शुचि जो अगुल प्रमान क्षेत्र के जितने घन होवे इतने प्रदेशक का वैक्रिय शरीर वैमानिक के कहे हैं यों यहां सब विधि जानना अन्य सब शरीर नाभि पूर्वोक्त जैसे जानना यह बारवा शरीर पद समाप्त हुवा

॥ त्रयोदश परिणाम पदम् ॥

कतिविहेणं भंते ! परिणामे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे परिणामे पण्णत्ते तंजहा जीव परिणामेय, अजीव परिणामेय ॥ १ ॥ जीव परिणामेण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दसविहे पण्णत्ते तंजहा १ गति परिणामे, २ इंदिय परिणामे ३ कसाय परिणामे, ४ लेस्सापरिणामे, जोग परिणामे, ६ उवओग परिणामे, ७ णाण परिणामे, ८ दंसण परिणामे, ९ चरित्त परिणामे, १० वेदपरिणामे ॥ २ ॥ गति-

अब तेरहवा परिणाम पद कहते हैं. जो गत काल में परिणम, वर्तमान काल में परिणमते हैं और आगामिक काल में परिणमेंगे उस परिणाम कहते हैं अहो भगवन् ! परिणाम कितने प्रकार के कहे हैं ! अहो गौतम ! परिणाम दो प्रकार के कहे हैं जिन के नाम—१ जीव परिणाम और २ अजीव परिणाम ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जीव परिणाम के कितने भेद कहे हैं ! अहो गौतम ! जीव परिणाम के दश भेद कहे हैं उन के नाम—१ गति परिणाम, २ इन्द्रिय परिणाम, ३ कषाय परिणाम, ४ लेश्या परिणाम, ५ योग परिणाम, ६ उपयोग परिणाम, ७ ज्ञान परिणाम, ८ दर्शन परिणाम, ९ चारित्र परिणाम और १० वेद परिणाम ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! गति परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! गति

परिणामेण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते—तंजहा नरइय-गति परिणामे तिरिक्ख जोणिय गति परिणामे, मणुयगति परिणामे, देवगति परिणामे ॥ ३ ॥ इन्दिय परिणामेण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा सोतिंदिय परिणामे चक्खिंदिय परिणामे, घाणिंदिय परिणामे जिब्भिंदिय परिणामे, फासिंदिय परिणामे, ॥ ४ ॥ कसाय परिणामेण, भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा कोह कसाय परिणामे जाव लोभ कसाय परिणामे ॥ ५ ॥ लेस्सा परिणामेण भंते ! कतिविहे

परिणाम के चार भेद कहे हैं उन के नाम—१ नरक गति परिणाम २ तिर्यंच गति परिणाम ३ मनुष्य गति परिणाम और ४ देव गति परिणाम ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! इन्द्रिय परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! इन्द्रिय परिणाम के पांच भेद कहे हैं—१ श्रोत्रेन्द्रिय परिणाम २ चक्षुइन्द्रिय परिणाम ३ घ्राणेन्द्रिय परिणाम ४ जिव्हेन्द्रिय परिणाम और ५ स्पर्शेन्द्रिय परिणाम ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! कषाय परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! कषाय परिणाम के चार भेद कहे हैं—१ क्रोध कषाय परिणाम, २ मान कषाय परिणाम ३ माया कषाय परिणाम और ४ लोभ कषाय परिणाम ॥ ५ ॥ अहो

पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे पण्णत्त तजहा किण्हलेसा परिणामे, नीललेसा परिणामे काउलेसा परिणामे, तेउलेसा परिणामे, पम्हलेसा परिणाम, सुक्कलेसा परिणाम ॥ ६ ॥ जोग परिणामेण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्त तजहा मणजोग परिणाम, वइजोग परिणामे, कायजोग परिणाम, ॥ ७ ॥ उवओग परिणामेण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तजहा सागारोवओग परिणामे, अणागारोवओग परिणामय ॥ ८ ॥ णाण परिणामेण भंते ! कतिविहे पण्णत्त ? गोयमा! पचविहे पण्णत्त तजहा आभिणिबोहियणाण परिणामे

भगवन् ! लेश्या परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! लेश्या परिणाम के ६ भेद कहे हैं जिन के नाम—१ कृष्ण लेश्या परिणाम, २ नील लेश्या परिणाम, ३ कापुत लेश्या परिणाम, ४ तेजो लेश्या परिणाम, ५ पद्म लेश्या परिणाम और ६ शुक्ल लेश्या परिणाम ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! जोग परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! जोग परिणाम के तीन भेद कहे हैं—१ मन योग परिणाम २ वचन योग परिणाम और ३ काया योग परिणाम ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! उपयोग परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! उपयोग परिणाम के दो भेद कहे हैं—साकारोपयोग परिणाम और अनाकारोपयोग परिणाम ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! ज्ञान परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! ज्ञान परिणाम

सुयणाण परिणामे ओहिणाण परिणामे, मणपज्जवणाण परिणामे, केवलणाण परिणामे॥ अण्णाण परिणामेण भंते! कतिविहे पण्णत्ते? गोयमा! तिविहे पण्णत्ते तंजहा मइअण्णाण परिणामे सुय अण्णाण परिणामे, विभंगणाण परिणामे ॥ ९ ॥ दसण परिणामेण भंते! कतिविहे पण्णत्ते? गोयमा! तिविहे पण्णत्ते तंजहा सम्मद्दसण परिणामे मिच्छा दसण परिणामे, सम्मामिच्छादसण परिणामे ॥ १० ॥ चरित्त परिणामेण भंते कतिविहे पण्णत्ते? गोयमा! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा सामाइय चरित्त परिणामे, छेदोवट्ठावणिय चरित्त परिणामे, परिहारविसुद्धि चरित्त परिणामे,

के पांच भेद कहे हैं—१ आभिनिबोधिक ज्ञान परिणाम २ श्रुत ज्ञान परिणाम ३ अवधि ज्ञान परिणाम ४ मन पर्यव ज्ञान परिणाम और ५ केवल ज्ञान परिणाम अहो भगवन्! अज्ञान परिणाम के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! अज्ञान परिणाम के तीन भेद कहे हैं—१ मति अज्ञान परिणाम २ श्रुत अज्ञान परिणाम और विभंग ज्ञान परिणाम ॥ ९ ॥ अहो भगवन्! दर्शन परिणाम के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! दर्शन परिणाम के तीन भेद कहे हैं—१ सम्यक् दर्शन परिणाम २ मिथ्या दर्शन परिणाम और ३ मीश्र दर्शन परिणाम ॥ १० ॥ अहो भगवन्! चारित्र परिणाम के कितने भेद? अहो गौतम! चारित्र परिणाम के पांच भेद कहे हैं—१ सामायिक चारित्र २ छेदोपस्थापनीय चारित्र ३ परिहार विशुद्ध

सुहुम सपराइय चरित्त परिणामे, अहक्खाय चरित्त परिणामे ॥ ११ ॥ वेदपरिणामेण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते तजहा-इत्थीवेद परिणामे पुरिसवेद परिणामे, णपुसगवेद परिणामे॥ १२॥ णेरइया गति परिणामेण निरय गतिया, इंदिय परिणामेण पंचिंदिया, कसाय परिणामेण-कोह कसाईवि जाव लोभ कसाईवि; लेस्सा परिणामेण कण्ह लेसावि नीललेसावि काउलेसावि ॥ जोगपरिणामेण-मणजोग परिणामवि, वइजोग परिणामवि कायजोग परिणामेवि, । उवओगपरिणामेण सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि । णाणपरिणामेण आभिणिबोहियणाणीवि, सुयणाणीवि, ओहिणा-

चारित्र, सूक्ष्म संपराय चारित्र और ५ यथाख्यात चारित्र ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! वेद परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! वेद परिणाम के तीन भेद कहे हैं—१ स्त्री वेद परिणाम २ पुरुषवेद परिणाम और ३ नपुंसक वेद परिणाम ॥ १२ ॥ अब चौवीस दंडक पर परिणामों के भेद बताते हैं नारकी के जीवों—गति परिणाम से नरक गतिवाले इन्द्रिय परिणाम से पांचों इन्द्रियवाले, कषाय परिणाम से क्रोध कषाय यावत् लोभ कषाय यों चारों कषायवाले, लेश्या परिणाम से कृष्ण लेश्यावाले, नील लेश्यावाले व कापोत लेश्यावाले, योग परिणाम से मन योग परिणाम, वचन योग परिणाम व काया योग परिणाम यों तीनों योगवाले, उपयोग परिणाम से साकार व अनाकार यों दोनों उपयोगवाले, ज्ञान परिणाम से आभिनिबोधिक ज्ञान,

मीवि १ अण्णाण परिणामेण मइअण्णाणिवि, सुय अण्णाणीवि, विभगणाणीवि, दंसण परिणामेण सम्मदिट्ठीवि मिच्छादिट्ठिवि सम्मामिच्छा दिट्ठीवि । चरित्त परिणामेण नो चरित्ता नो चारित्ताचरित्त, अचरित्ता ॥ वेदपरिणामेण नो इत्थीवेदगा नो पुरिस वेदगा, णपुसग वेदगा ॥ १३ ॥ असुरकुमारा एवचव, णवरं देवगतिया, कण्हलेस्सावि जाव तेउलेसावि । वेदपरिणामेण इत्थिवेदगावि, पुरिस वेदगावि णो नपुसगवेदगा ॥ सेस तंचेव ॥ एव जाव थणियकुमारा ॥ १४ ॥ पुढवि काइया गति परिणामेण तिरिय गतिया, इंदिय परिणामेण एगिंदिया सेसं जहा णेरइया ॥

श्रुत ज्ञान व अवधि ज्ञानवाले, और अज्ञान स मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान व विभंगज्ञानपरिणामवाले, दर्शन परिणाम स सम्यक् दृष्टि भी मिथ्यादृष्टि भी, मिश्रदृष्टि भी, यो तीनों दर्शनवाले, चारित्र परिणाम से पाँचों चारित्र रहित अचारित्री हैं, और वेद परिणाम से मात्र एक नपुंसक वेदवाले हैं ॥ १३ ॥ असुर कुमार का नारकी जैसे ही कहना परंतु विशेषता यह है कि इस में गति स देव गतिवाले, लेश्या से कृष्ण लेशी यावत् तेजो लेशी, और वेद परिणाम से स्त्री वेद व पुरुष वेद है परंतु नपुंसक वेद नहीं है जैसे असुर कुमार का कहा वैसे ही स्तनित कुमार पर्यंत दशों जाति के भवनपति देवों का जानना ॥ १४ ॥ पृथ्वी काया गति परिणाम से तिर्यंच गति, इन्द्रिय परिणाम से एकेंद्रिय एक स्पर्शेन्द्रिय, लेश्या परिणाम स कृष्ण लेशी यावत् तेजो लेशी योग परिणाम स

णवर लेसा परिणामेणं तेउलेसावि, जोग परिणामेणं कायजोगी णाणपरिणामो णत्थि, अण्णाण परिणामेणं मतिअण्णाणी सुयअण्णाणी, दंसण परिणामेणं मिच्छा दिट्ठी, सेस तंचेव ॥ एवं आउ वणप्फइ काइयावि ॥ तेउ वाउवि एवं चेव णवर लेसापरिणामेणं जहा णेरइयाणं ॥ १५ ॥ बेइंदिया—गतिपरिणामेण तिरियगतिया, इंदियपरिणामेण बेइंदिया, सेस जहा णेरइयाण, णवर जोग परिणामेण—वइजोगी काय जोगी, णाण परिणामेण आभिणिबोहिय णाणीवि सुयणाणीवि । अण्णाण परिणामेणं मइअण्णाणीवि सुय अण्णाणीवि, णो विभंगणाणी ॥ दंसण परिणामेण—सम्मदिट्ठी,

काय योगी, ज्ञान नहीं है अज्ञान परिणाम से मति अज्ञान व श्रुत अज्ञान परिणाम, और दर्शन परिणाम से एक मिथ्यादृष्टि शेष सब नारकी जैसे जानना. अपूकाया व वनस्पति कायाका पृथ्वी काया जैसे कहना. ऐसे ही तेउ, वायु का जानना परन्तु लेश्या परिणाम से नारकी जैसे तीन लेश्याओं कहना ॥१५॥ बेइन्द्रिय-यावत् परिणाम से तिर्यंच गतिवाले, इन्द्रिय परिणाम से बेइन्द्रिय, योग परिणाम से वचन योगी व काया योगी, ज्ञान परिणाम से आभिनिबोधिक ज्ञानी व श्रुत ज्ञानी, अज्ञान परिणाम से मति अज्ञानी व श्रुत अज्ञानी, दर्शन परिणाम से समदृष्टि और मिथ्यादृष्टि, शेष सब नारकी जैसे कहना जैसे बेइन्द्रिय का

मिच्छादिट्ठीवि, णो सम्मामिच्छादिट्ठीवि, सेसं तं चेव ॥ एवं जाव चउरिंदिया णवरं इंदिय परिवुड्ढी कायव्वा ॥ १६ ॥ पंचेंदिय तिरिक्खजोणिया गति परिणामेण तिरिय गातिया, सेसं जहा णेरइया, णवर लेस्सा परिणामेणं जाव सुक्कलेस्सावि, चरित्त परिणामेण णो चरित्ती अचरित्तीवि चरित्ताचरित्तीवि ॥ वेदपरिणामेणं इत्थीवेदगावि, पुरिस वेदगावि, णपुंसग वेदगावि ॥ १७ ॥ मणुस्सा गतिपरिणामेणं मणुयगतिया, इंदिय परिणामेण पंचिंदिया, अणिंदियावि, कसाय परिणामेणं कोह कसाईवि जाव अकसाइवि, लेस्सा परिणामेणं कण्हलेस्सावि, जाव अलेस्सावि, जोग परिणामेण

कहा वैसे ही तेइन्द्रिय व चौरेन्द्रिय का कहना परंतु तेइन्द्रिय के तीन इन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय में चार इन्द्रिय मानना ॥ १६ ॥ तिर्यंच पंचेन्द्रिय गति परिणाम से तिर्यंच गतिवाले, वगैरह शेष सब नरक जैसे कहना परन्तु लेश्या परिणाम से छ ही लेश्यावाले, चारित्र परिणाम से अचारित्री और चारित्राचारित्री, और वेद परिणाम से स्त्री वेदी, पुरुष वेदी और नपुंसक वेदी जानना ॥ १७ ॥ मनुष्य-गति परिणाम से मनुष्य गतिवाले, इन्द्रिय परिणाम से पांचों इन्द्रियवाले व अनेन्द्रियकी, कषाय परिणाम से चारो कषायी व अकषायी, लेश्या परिणाम से छही लेश्यावाले तथा अलेशी भी, योग परिणाम से तीनो योगी व अयोगी, उपयोग

मणजोगीवि जाव अजोगीवि, उवओग परिणामेणं जहा णेरइया, णाणपरिणामेण आभिणिबोहिय णाणीवि सुयणाणीवि जाव केवलणाणीवि, अण्णाण परिणामेणं तिण्णिवि अण्णाणा॥ दसण परिणामण तिण्णिवि दसणा, चरित्त परिणामेण चारित्तावि अचरित्तावि, चरित्ता चारित्तावि । वेद परिणामेण इत्थीवेदगावि, पुरिस वेदगावि, नपुंसगवेदगावि अवेदगावि ॥ १८ ॥ वाणमंतरा गतिपरिणामेण देवगतिया, जहा असुरकुमारा ॥ एव जोइसियावि णवर लेस्सा परिणामेण तेउलेस्सा ॥ वेमाणियावि एव सव्व णवरं लेस्सा परिणामेण तेउलेस्सावि पम्ह लेस्सावि, सुक्कलेस्सावि ॥ सेत्तं जीव परिणामे ॥ १९ ॥ अजीव परिणामण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा !

परिणाम से दोनो उपयोगवाले, ज्ञान परिणाम से पांचो ज्ञानवाले, अज्ञान परिणाम से तीनों अज्ञानवाले, दर्शन परिणाम से तीनों दर्शनवाले, चारित्र परिणाम से पांचो चारित्रवाले, अचारित्री भी और चारित्राचारित्री भी है; वेद परिणाम से तीनों वेदवाले हैं और अवेदी भी हैं ॥ १८ ॥ वाणव्यंतर को असुर कुमार जैसे कहना एसे ही ज्योतिषी का जानना परंतु लेश्या परिणाम से तेजो लेश्यावाले, वैमानिक का भी एसे ही कहना परंतु लेश्या परिणाम से तेजो, पद्म व शुक्ल लेश्यावाले जानना यह जीव परिणाम हुआ ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! अजीव परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! अजीव

दसविहे पण्णत्ते तंजहा १ बंधपरिणामे, २ गइपरिणामे, ३ संठाण परिणामे, ४ भेदपरिणामे, ५ वण्णपरिणामे, ६ गंधपरिणामे, ७ रसपरिणामे, ८ फास परिणामे ९ अगुरुलहु परिणामे, १० सद्दपरिणामे ॥ २० ॥ बंधपरिणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा णिद्धबंधण परिणामेय, लुक्खबंधण परिणामेय, ॥समणिद्धयाए बंधो ण होइ, समलुक्खयाएवि ण होइ, वेमायणिद्ध लुक्ख त्तणेण बंधोसखंधाण (णिद्धस्सणिद्धेण दुयाहिएण, लुक्खस्स लुक्खेण दुयाहिएण,

परिणाम के दस भेद कहे हैं—१ बंध परिणाम २ गति परिणाम ३ संस्थान परिणाम ४ भेद परिणाम ५ वर्ण परिणाम ६ गंध परिणाम ७ रस परिणाम ८ स्पर्श परिणाम ९ अगुरुलघु परिणाम और १० शब्द परिणाम ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! बंध परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! दो भेद कहे हैं—१ स्निग्ध बंध और २ रूक्ष बंध इन में किस तरह स्निग्ध बंध होता है और किस तरह रूक्ष बंध होता है ? सरीखे स्निग्ध पुद्गल मीलजानसे बंध नहीं होता है जैसे घृत व तेल इनका बंध नहीं होता, वैसे ही सरीखे २ रूक्ष पुद्गलों का भी बंध होवे नहीं जैसे राख व धूल, वैसे द्विगुन स्निग्ध में स्निग्ध का बंध होवे नहीं, वैसे ही द्विगुन रूक्ष से रूक्ष का बंध होवे नहीं परंतु स्निग्ध व रूक्ष दोनों का ६,५

णिद्धस्स लुक्खेण उवेइबंधो, जहन्न वज्जो विसमो समो वा,॥२॥गतिपरिणामेणं भंते! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा फुसमाण गति परिणामेय अफुसमाण गति परिणामेय॥ अहवा दीहगइ परिणामेय रहस्सगइ परिणामेय॥ संठाण परिणामेणं भंते! कतिविहे पण्णत्ते? गोयमा! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा परिमंडल संठाण परिणामेय, जाव आयत संठाण परिणामेय ॥ भेदपरिणामेणं भंते! कतिविहे पण्णत्ते? गोयमा! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा खंडाभेद परिणामे जाव उक्कारिया भेद परिणामे॥वण्ण

होने से बंध होता है तथा विषम मात्रा पर गुण होने से बंध होता है अर्थात् एक परमाणु द्विगुन स्निग्ध होवे और दूसरा तीन गुन स्निग्ध होवे तब बंध होवे, वैसे ही रूक्ष में भी विषम मात्रा होवे तो बंध होता है स्निग्ध व रूक्ष का भी जघन्य गुनवाले का बंध नहीं होता है परंतु एक द्विगुन स्निग्ध और त्रिगुन रूक्ष तथा तीन गुन स्निग्ध एक दो गुन रूक्ष वैसे ही एक तीन गुन दूसरा द्विगुन यों समविषम साथ भी बंध पडे यह बंध परिणाम कहा। अहो भगवन् ! गति परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! गति परिणाम के दो भेद कहे हैं—स्पर्श गति परिणाम जैसे नावा पानी को स्पर्श कर चलती है और २ अस्पर्श गति परिणाम जैसे पक्षी पक्षीका हाथ कीये बिना आकाश में रहे अहो भगवन् ! संस्थान के

वरिणामेण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते, तंजहा—कालवण्ण परिणामे जाव सुक्किलवण्ण परिणामे ॥ गंध परिणामेण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा—सुब्भिगंध परिणामे, दुब्भिगंध परिणामेय ॥ रसपरिणामेण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा तित्तरस परिणामे, जाव महुररसपरिणामे ॥ फासपरिणामेण भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा! अट्ठविहे पण्णत्ते तंजहा कक्खड फास परिणामे जाव लुक्ख फास परिणामे

कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! संस्थान के पांच भेद कहे हैं—१ परिमंडल संस्थान, २ वृत्त संस्थान ३ त्र्यंस संस्थान, ४ चौरंस संस्थान और ५ आयत संस्थान अहो भगवन् ! भेद परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! भेद परिणाम के पांच भेद कहे हैं—१ खण्डा भेद, २ प्रतर भेद ३ चूर्णिका भेद ४ अनुतडित भेद और ५ उत्कारिका भेद इस का स्वरूप ग्यारहवे पद में कहा है अहो भगवन् ! वर्ण परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! वर्ण परिणाम के पांच भेद कहे हैं कृष्ण वर्ण परिणाम यावत् शुक्ल वर्ण परिणाम अहो भगवन् ! गंध परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! गंध परिणाम के दो भेद कहे हैं १ सुरभिगंध परिणाम व दुरभिगंध परिणाम अहो भगवन् ! रस परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! पांच भेद कहे हैं—तिक्त रस परिणाम यावत् मधुर रस परिणाम अहो भगवन् ! स्पर्श

जीवपरिणाम के ५० बोल चौवीस दंडक पर उतारने का यंत्र

२४ दंडक	नर	१०भु	पृथ्वी	पाणी	तेऊ	वाऊ	वनस्प	बेंद्रि	तेंद्रि	चौरिं	पंचे	मनु	वाण	ज्यो	वैमा
४ गति	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
५ इन्द्रिय	५	५	१	१	१	१	१	२	३	४	५	५	५	५	५
४ कषाय	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
६ लेश्या	३	४	४	४	३	३	४	३	३	३	६	६	४	१	३
३ योग	३	३	१	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	३
२ उपयोग	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
८ ज्ञान	६	६	२	२	२	२	२	४	४	४	६	८	६	६	६
४ दर्शन	३	३	१	१	१	१	१	१	१	२	३	४	३	३	३
७ चारित्र	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	७	१	१	१
३ वेद	१	२	१	१	१	१	१	१	१	१	३	३	२	२	२
सर्व ५०	२९	३१	१८	१८	१७	१७	१८	२१	२२	२४	३५	४७	३१	२८	३०

अगुरु लघुपरिणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते ॥ सद्द-परिणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा सुब्भिसद्द परिणामेय दुब्भिसद्द परिणामेय ॥ सेत्त अजीव परिणामे ॥ इति पण्णवणाए भगवइए परिणामपय तेरसम सम्मत्त ॥ १२ ॥ * * *

परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! स्पर्श परिणाम के आठ भेद कहे हैं कर्कश स्पर्श परिणाम यावत् रूक्ष स्पर्श परिणाम अहो भगवन् ! अगुरु लघु परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! एक ही भेद कहा है अर्थात् उदारिकादि शरीर के पुद्गल भाषा के पुद्गल तथा अमूर्तिक द्रव्य आकाशादि अगुरुलघु परिणामी है अहो भगवन् ! शब्द परिणाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! शब्द परिणाम के दो भेद कहे हैं शुभ शब्द परिणाम और अशुभ शब्द परिणाम यों अजीव परिणाम के भेद संपूर्ण हुए यह पन्नवणा पद का तेरहवा परिणाम पद संपूर्ण हुआ ॥ १३ ॥

॥ चतुर्दश कषाय पदम् ॥

कतिण भंते ! कसाया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कसाया पण्णत्ता तंजहा कोह कसाय माण कसाय, माया कसाय, लोभ कसाय ॥ १ ॥ नेरइयाणं भंते ! कइ कसाया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कसाया पण्णत्ता तंजहा कोह कसाय जाव लोभ कसाय ॥ एवं जाव वेमाणियाणं ॥ कतिपतिट्ठिएण भंते ! कोहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउपइट्ठिए कोहे पण्णत्ते तंजहा आयपतिट्ठिए, परपतिट्ठिए, तदुभय-पतिट्ठिए, अपइट्ठिए ॥ एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं दंडओ ॥ एवं माणेण दंडओ॥

अब चउदहवा कषाय पद कहते हैं अहो भगवन् ! कषायों कितनी कही है ? अहो गौतम ! कषायों चार कही है १ क्रोध कषाय, २ मान कषाय, ३ माया कषाय, और ४ लोभ कषाय ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को कितनी कषायों कही है ? अहो गौतम ! नारकी को चार कषायों कही है-क्रोध कषाय यावत् लोभ कषाय ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जानना अहो भगवन् ! क्रोध कितने स्थान प्रतिष्ठित है? अहो गौतम ! क्रोध चार स्थान प्रतिष्ठित है १ आत्म प्रतिष्ठित, २ पर प्रतिष्ठित, ३ उभय (दोनों) में प्रतिष्ठित और ४ अप्रतिष्ठित एस ही नारकी यावत् वैमानिक पर्यंत क्रोध चारों स्थानों में प्रतिष्ठित जानना जैसे क्रोध का कहा वैसे ही

एव मायाए दडओ ॥ एव लोभेण दडओ ॥२॥ कतिविहेण भते! ठाणेहिं कोहुप्पत्ती भवति ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं कोहुप्पत्ती भवति तजहा खेत्त पडुच्च, वत्थु पडुच्च सरीर पडुच्च उवहि पडुच्च ॥ एव णेरइयाण जाव वेमाणियाण ॥ एव माणेणवि ॥ एव मायाएवि ॥ एव लोभेणवि॥एव एतेवि चतारि दडगा ॥३॥ कतिविहेण भते ! कोह पण्णत्ते? गोयमा! चउव्विहे कोहे पण्णत्ते तजहा अणताणु बधीकोहे,अपच्चक्खाणवरण कोहे, पच्चक्खाणवरणे कोहे, सजलणे कोहे ॥ एव णेरइयाण जाव वेमाणियाण ॥

मान, माया व लाभ का कहना॥२॥अहो भगवन्! कितने स्थान से क्रोध की उत्पत्ति होती है ! अहो गौतम! चार स्थान से क्रोध की उत्पत्ति होती है—१ क्षेत्र प्रत्ययिक अर्थात् खुल्ली भूमि क्षेत्रादि से, २ वस्तु प्रत्ययिक अर्थात् ढकी भूमि घरादिक के प्रयोग से, ३ शरीर प्रत्ययिक अर्थात् शरीर के प्रयोग से और ४ उपधि प्रत्ययिक भडोपकरन वस्त्र भूषणादिक के प्रयोग से, यों चारों प्रकार के क्रोध की उत्पत्ति नारकी आदि चौवीस ही दंडक में होती है ऐसे ही चारों प्रकार से मान की उत्पत्ति चौवीस ही दंडक में होती है ऐसे ही चारों प्रकार की माया की उत्पत्ति चौवीस ही दंडक में होती है, और ऐसे ही चारों प्रकार के लोभ की उत्पत्ति चौवीस ही दंडक में होती है ॥ ३ ॥ अहो भगवन्! क्रोध के कितने भेद कहे हैं ! अहो गौतम! क्रोध के चार भेद कहे हैं १ अनन्तानुबंधी, २ अप्रत्याख्यानी, ३ प्रत्याख्यानी

एवं माणेण ॥ मायाए ॥ लोभेणवि ॥ चत्तारि दंडगा ॥ ४ ॥ कतिविहेणं भंते ! कोहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा आभोगणिव्वत्तिए, अणाभोग निव्वत्तिए, उवसंते अणुवसंते एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ॥ एवं माणेणवि मायाणवि लोभेणवि चत्तारि दंडगा ॥ ५ ॥ जीवाणं भंते ! कतिहिं ठाणेहिं अट्ठकम्म पगडीओ चिणिंसु ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं अट्ठकम्मपगडीओ चिणिंसु तंजहा कोहेणं, माणेणं मायाए लोभेणं ॥ एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ॥ जीवाणं भंते '

और ४ अवस्था ऐसे ही नारकी यावत् वैमानिक पर्यंत चौबीसही दंडक में चारों प्रकार का क्रोध मानना जैसे क्रोध का कहा वैसे ही मान, माया व लोभ का मानना ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! क्रोध कितने प्रकार का कहा ? अ । गौतम ! क्रोध चार प्रकार का कहा १ आभोग प्रत्ययिक, २ अनाभोग प्रत्ययिक ३ उपशांत प्रत्ययिक और ४ अनुपशांत प्रत्ययिक ऐसे ही नारकी यावत् वैमानिक पर्यंत जानना ऐसे ही मान माया, व लोभ में मानना ऐसे ही सोलह प्रकार का क्रोध चौवीस दंडक और एक समुच्चय जीव में पाता है; सब मील ४०० भांगे क्रोध के होवे ऐसे ही चार सो मान के, चारसो माया के व चारसो लोभ के होवे यों सब मीलकर चारों कषायों के १६०० भांग हुए ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! जीवने कितने प्रकार से आठों कर्म की प्रकृतियों को चीनी है (संचय) कीया ? अहो गौतम !

कतिहिं ठाणेहिं अट्ठकम्मपगडीओ चिणंति ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं उवचिणंति तंजहा। कोहेणं, माणेणं मायाए लोभेणं॥एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं॥जीवाणं भंते ! कतिहिं ठाणेहिं अट्ठकम्मपगडीओ चिणिस्संति ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं अट्ठ कम्मपगडीओ चिणिस्संति, तंजहा—कोहेणं माणेणं मायाए लोभेणं ॥ एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ॥ ५ ॥ जीवाणं भंते ! कतिहिं ठाणेहिं अट्ठकम्मपगडीओ उव चिणिंसु ? गोयमा ! चउहिंठाणेहिं अट्ठकम्मपगडीओ उवचिणिंसु, तंजहा।

क्रोध, मान माया, व लोभ यों चार प्रकार से जीवने आठों कर्म प्रकृतियों का संचय कीया अहो भगवन् ! और कितने प्रकार से आठों कर्म प्रकृतियों का संचय करता है ? अहो गौतम ! क्रोध, मान माया व लोभ यों चार प्रकार से आठों कर्म प्रकृति का संचय करता है अहो भगवन् ! जीव कितने प्रकार से आठों कर्म प्रकृतियों का संचय करेगा ? अहो गौतम ! क्रोध, मान, माया व लोभ यों चारों प्रकार से आठों कर्म प्रकृतियों का संचय करेगा यह तीनों काल आश्रित १२ बोल कर्म संचय करने के समुच्चय जीव व चौवीस दंडक में पाते हैं यों १२+२८८=३०० बोल हुए ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! जीवने कितने स्थान से आठों कर्म प्रकृतियों को चय कीने हैं ? अर्थात् एकत्रित कीये हैं ? अहो गौतम ! चार कारन से जिन के नाम—क्रोध, मान, माया व लोभ. यों

कोहेण, माणेण, मायाए लोभेण ॥ एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ॥ जीवाणं भंते ! कतिहिं ठाणेहिं अठकम्मप्पगडीओ उवचिणंति? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं उवचिणंति तंजहा—कोहेण जाव लोभेण ॥ एवं णेरइया जाव वेमाणिया ॥ एवं उवचिणिस्संति ॥ ७ ॥ जीवाणं भंते! कइठाणेहिं अठकम्मप्पगडिओ बंधिसु ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं अठकम्मप्पगडीओ बंधिसु, तंजहा—कोहेण जाव लोभेण ॥ एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ॥ बंधिसु ॥ बंधंति ॥ बंधिस्संति ॥ उदिरसु ॥ उदीरंति॥

नरकादि चौवीस दण्डक के जीवोंने कर्म पुद्गल उपचीने हैं अहो भगवन् ! जीव कितने प्रकार से आठों ही कर्म प्रकृतियों उपचिनता है ? अहो गौतम! क्रोध, मान, माया व लोभ ऐसे चार कारन से उपचिनता है यों नरकादि चौवीस ही दण्डक के जीवों चारों प्रकार से आठों कर्मों उपचिनते हैं अहो भगवन् ! जीव कितने कारन से आठों कर्मों उपचिनेगा ? अहो गौतम ! चार कारन से उपचिनेगा १ क्रोध, २ मान, ३ माया और ४ लोभ ऐसे ही नरकादि चौवीस ही दण्डक के जीवों कर्म उपचिनेंगे यहां पर भी उक्त प्रकार से ३०० बोल हुए ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! जीवने कितने कारन से आठ कर्म प्रकृतियों का बंध कीया ? अहो गौतम क्रोध मान, माया व लोभ एसे चार कारन से आठों कर्म प्रकृतियों का बंध कीया अहो भगवन् ! जीव कितने कारन से आठों कर्म प्रकृतियों का बंध करता है ? अहो गौतम ! उक्त आठों कारन से अहो भगवन् ! जीव कितने कारन से आठों कर्म प्रकृतियों का बंध करेगा ? अहो गौतम ! उक्त चारों कारन से आठों कर्म प्रकृतियों का बंध करेगा इन तरह यहां पर भी ३००

उदिरिस्सति ॥ वेदेसु ॥ वेदेंति ॥ वेदिस्सति ॥ णिज्जरेसु ॥ णिज्जरेति॥ णिज्जरिस्सति॥ एव एते जीवादिया वेमाणिय पज्जवसाणा अट्ठारस दंडगा, जाव वेमाणिया णिज्जरेसु, णिज्जरति ॥ णिजरिस्सन्ति ॥ ८ ॥ आयपइट्ठिया, खत्त पडुच्च अणंताणुबंधि, आभोगे,॥ चिण उवचिण, बंध, उदीरण, वेद, तह णिज्जरा चेव ॥ १ ॥ इति पण्णवणाए भगवतीए कसाय पद सम्मत्त ॥ १४ ॥

बोल जानना एसे ही २०० बोल उदीरणा के २०० बोल वेदने के, २०० बोल निर्जरन के सब मील कर १८०० बोल जानना यह १८०० एक जीव आश्रिय और अठारा सो अनेक जीव आश्रिय, मील कर ३६०० हुवे, इस में १२०० प्रथम के मीलान से २०० भांगे चारों कपाय के होते हैं ॥ ८ ॥ अब समुच्चय कहते हैं आत्मप्रतिष्ठादि चार बोल के चौवीस दंडक और समुच्चय जीव मीलकर पचीसगुने करने स १०० हुवे, ऐसे ही क्षेत्र मत्यचादिक के १००, अनंतानुबंधादि के १००, और आभोगादिक के भी १०० यों ४०० हुए चिनन के एक जीव आश्रिय तीनों काल, बहुत जीव आश्रिय तीनों काल यों ६ हुए य चोवीस दंडक और समुच्चय जीव यों २५ स्थान करते १५० हुए एसे ही उपचिन के १५० बंधने के १५०, उदीरने के १५०, वेदने के १५, और निर्जरने के १५० सब मीलकर ९०० हुए और प्रथम के ४०० मीलकर १३०० क्रोध के हुए, एसे ही १३०० मान के, १३०० माया के और १३०० लोभ के हुए यों मलिकर ५२०० हुए यह पन्नवणा सूत्र का चौदहवा कषाय पद संपूर्ण

❋ पंचदश इंद्रिय पदम् ❋

संठाण, बाहल्लं पोहत्त, कतिपदसओगाढे ॥ अप्पाबहु, पुट्ठ, पविट्ठविसय, परिमाण अणगार आहारा ॥ १ ॥ अद्दाय, असीयमणी पुट्ठ पाणे, तेल्ल, फाणिय वसाय ॥ कंबल थूणा, थिग्गल, दीवो, उदहि, लोग, अलोगय ॥ २ ॥ १ ॥ कतिण भंते ! इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचिंदिया पण्णत्ता तंजहा—सोतिंदिए, चक्खिंदिए, घाणिंदिए, जिब्भिंदिए फासिंदिए ॥ २ ॥ सोतिंदिएण भंते ! किंसठिए पण्णत्ते ?

अब पन्दरहवा इन्द्रिय पद कहते हैं प्रथम इसके द्वारोंके नाम कहते हैं १ संस्थान द्वार, २ जाडपन द्वार ३ चाडापना द्वार, ४ प्रदेश द्वार, ५ अवगाहना द्वार, ६ पदर्थोंकी संख्या बहुत्व, ७ प्रदेश स्पर्शद्वार ८ प्रविष्टद्वार ९ विषयद्वार, १० साधु आश्रिय प्रश्नोत्तर द्वार ११ आहार द्वार, १२ आरीसा [काच] आश्रि प्रश्नोत्तर,द्वार १३ खड्ग आश्रिय प्रश्नोत्तर १४ मणि आश्री प्रश्नोत्तर १५ दुग्ध आश्री प्रश्नोत्तर १६ पानी आश्री प्रश्न द्वार १७ तैल का प्रश्न १८ गुड़का प्रश्न १९ चरबीका प्रश्न २० कंबल का प्रश्न २१ स्तंभका प्रश्न २२ थगलका प्रश्नोत्तर २३ दीपकके प्रश्नोत्तर २४ समुद्रके प्रश्नोत्तर २५ लोकके प्रश्नोत्तर और २६ अलोकके प्रश्नोत्तर ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! इन्द्रियों कितनी कही है ? अहो गौतम ! इन्द्रियों पांच कही हैं—१ श्रोतेन्द्रिय २ चक्षुरिन्द्रिय ३ घ्राणेन्द्रिय ४ जिव्हेन्द्रिय और ५ स्पर्शेन्द्रिय + ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! श्रोतेन्द्रिय का क्या

+ यहां इन्द्रियों दो प्रकार की कही द्रव्येन्द्रिय और भावेन्द्रिय, इस में से द्रव्येन्द्रिय के दो प्रकार भेद निवृति

गोयमा! कलंबुया पुप्फ संठाण संठिए पण्णत्ते॥ चक्खिंदिएण भंते! किं संठिए पण्णत्ते? गोयमा! मसूरा चंद संठाण संठिए पण्णत्ते। घाणिंदिएण पुच्छा? गोयमा! अइमु त्तगचंद संठाण संठिए पण्णत्ते, जिब्भिंदिएण पुच्छा? गोयमा! खुरप्प संठाण संठिए पण्णत्ते, फासिंदिएण पुच्छा? गोयमा! णाणा संठाण संठिए पण्णत्ते॥ २॥

संस्थान कहा है? अहो गौतम! श्रोत्रेन्द्रिय का संस्थान कदम्ब वृक्ष के पुष्प समान है। अहो भगवन्! चक्षुइन्द्रिय का क्या संस्थान है? अहो गौतम! मसूर की दाल अथवा अर्ध चंद्रमा के संस्थान है। अहो भगवन्! घ्राणेन्द्रिय का क्या संस्थान है? अहो गौतम! घ्राणेन्द्रिय का अतिमुक्तक पुष्प वाला है। अहो भगवन्! जिव्हेन्द्रिय का क्या संस्थान है? अहो गौतम! जिव्हेन्द्रिय का छुरप का संस्थान है। अहो भगवन्! स्पर्शेन्द्रिय का क्या संस्थान है? अहो गौतम! स्पर्शेन्द्रिय के संस्थान अनेक प्रकार के हैं॥ २॥ अब आकाश का द्वार अहो भगवन्! श्रोत्रेन्द्रिय कितनी जाडी

और उपकरण निवृत्ति के दो भेद आभ्यन्तर निवृत्ति सो उत्सेध अंगुल के असंख्यातवे भाग प्रमाण शुद्ध आत्मप्रदेश नेत्रादि इन्द्रियके आकाररूप होकर रहे सो बाह्य निवृत्ति, और आत्म प्रदेशमें नाम कर्मोदय इन्द्रिय के परिणमे पुद्गल यह आभ्यन्तर निवृत्ति उपकारिक उपकरण के दो भेद आभ्यन्तर उपकरण सो आंखोंमें कृष्णशुक्लादि मंडल और बाह्य उपकरण सो भोपन भ्रमरादि, भावइन्द्रिय के दो भेद लब्धि- सो ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से इन्द्रियों में प्रगट हुई शक्ति और उपयोग लब्धि के सामर्थ्य से इन्द्रिय उसके विषय में काम में आवे सो

सोतिंदिएण भंते ! केवतिय बाहल्लेण पण्णत्ते ? गोयमा ! अंगुलस्स असंखेज्जति भागे बाहल्लेण पण्णत्ते, एवं जाव फासिंदिए ॥४॥ सोतिंदिएणं भंते ! केवतिय पोहत्तेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! अंगुलस्स असंखेज्जइ भागे पोहत्तेण पण्णत्ते ॥ एवं चक्खिंदिएवि ॥ घाणिंदिएवि ॥ जिब्भिंदिएण पुच्छा ? गोयमा! अंगुल पुहत्तेण पण्णत्ते ॥ फासिंदिएणं पुच्छा ? गोयमा ! सरीरप्पमाणमेत्तेण पण्णत्ते ॥ ५ ॥ सोतिंदिएणं भंते ! कइपदे सिए पण्णत्ते, गोयमा ! अणंत पदेसिए पण्णत्ते, एवं जाव फासिंदिए ॥ ६ ॥ सोतिंदिएण भंते ! कतिपदेसोगाढे पण्णत्ते? गोयमा ! असंखेज्ज पदेसोगाढे पण्णत्ते ॥ एवं जाव

है ? अहो गौतम ! अंगुल के असंख्यातवे भाग ऐसे ही पांचों इन्द्रियों का जाडपना मानना यह जाडपना इन्द्रियों के अंदर विषय ग्रहने की शक्तिरूप प्रदेशों का है ॥ ४ ॥ अब चौडापना का द्वार कहते हैं अहो भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय कितनी चौडी कही है ? अहो गौतम ! अंगुल के असंख्यातवे भाग श्रोत्रेन्द्रिय चौडी है, ऐसे ही चक्षुइन्द्रिय व घ्राणेन्द्रिय का मानना जिव्हेन्द्रिय प्रत्येक अंगुलकी चौडी मानना और स्पर्शेन्द्रिय की चौडाई अपने २ शरीर प्रमान मानना ॥ ५ ॥ चौथा प्रदेश द्वार—अहो भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय के कितने प्रदेश कहे हैं ? अहो गौतम ! श्रोत्रेन्द्रिय के अनंत प्रदेश कहे हैं ऐसे ही स्पर्शेन्द्रिय पर्यंत कहना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय कितने प्रदेश अवगाहकर रही है ? अहो गौतम !

फासिंदिए ॥ ७॥ एतेसिण भंते ! सोइंदिए चक्खूइंदिए घाणेंदिए जिब्भिदिए फासिंदि याण ओगाहणट्ठयाए पदेसट्ठयाए ओगाहण पदेसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे चक्खिंदिए उगाहणट्ठयाए, सोइंदिय ओगाहणट्ठयाए संखेज्जगुण घाणिंदिय ओगाहणट्ठयाए संखेज्जगुणे, जिब्भिंदिय ओगाह-णट्ठयाए संखेज्जगुणे, फासिंदिए ओगाहणट्ठयाए असंखेज्जगुणे ॥ पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा चक्खिंदिए पदेसट्ठयाए, सोइंदिए, पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणे, घाणिंदिए

श्रोत्रेन्द्रिय असंख्यात प्रदेश अवगाहकर रही है ऐसे ही स्पर्शेन्द्रिय पर्यंत कहना ॥ ७ ॥ अहो अल्पा बहुत्व द्वार कहते हैं अहो भगवन् ! इन श्रोत्रेन्द्रिय चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, जिव्हेन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय की अवगाहना से और प्रदेशों की अवगाहना में कौन किस से अल्प, बहुत, तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से छोटी १ चक्षुइन्द्रिय की अवगाहना, २ इस से श्रोत्रेन्द्रिय की अवगाहना संख्यात गुनी, ३ इस से घ्राणेन्द्रिय की अवगाहना संख्यात गुनी, ४ उस से जिव्हेन्द्रिय की अवगाहना संख्यात गुनी और ५ उस से स्पर्शेन्द्रिय की अवगाहना असंख्यात गुनी अब प्रदेश आश्रि कहते हैं—सब से थोडी चक्षुइन्द्रिय की अवगाहना प्रदेश आश्रिय २ उस से श्रोत्रेन्द्रिय की अवगाहना प्रदेश आश्रिय

पदेसट्ठयाए असंखेज्ज गुणे, जिब्भिंदिए पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणे, फासिंदिए पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणे ॥ ओगाहण पदेसट्ठयाए—सव्वत्थोवे चक्खिंदिए ओगाहणपदेसट्ठयाए, सोइंदिए ओगाहणट्ठयाए संखेज्जगुणे, घाणिंदिए ओगाहणट्ठयाए संखेज्जगुणे, जिब्भिंदिए ओगाहणट्ठयाए संखेज्जगुणे, फासिंदिए ओगाहणट्ठयाए असंखेज्जगुणे पण्णत्ते ॥ फासिंदियस्स ओगाहणट्ठयाएहिंतो चक्खिंदिए पदेसट्ठयाए अणंतगुणे, सोइंदिए पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणे, घाणिंदिए पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणे, जिब्भिंदिए पदेसट्ठयाए

असंख्यात गुनी, ३ उससे घ्राणेन्द्रिय की अवगाहना प्रदेश आश्रिय असंख्यात गुनी, ४ उससे जिव्हेन्द्रिय की अवगाहना प्रदेश आश्रिय असंख्यात गुनी, और ५ उस से स्पर्शेन्द्रिय की अवगाहना प्रदेश आश्रिय असंख्यात गुनी अब अवगाहना व प्रदेश की साथ अल्पा बहुत्व कहते हैं १ सब से थोडी चक्षुइन्द्रिय की अवगाहना, २ उस से श्रोत्रेन्द्रिय की अवगाहना द्रव्य से संख्यात गुनी ३ उस से घ्राणेन्द्रिय की अवगाहना द्रव्य से संख्यात गुनी, ४ उस से जिव्हेन्द्रिय की अवगाहना द्रव्य से संख्यात गुनी और ५ उस से स्पर्शेन्द्रिय की अवगाहना द्रव्य से असंख्यात गुनी, ६ उस से चक्षुइन्द्रिय की अवगाहना प्रदेश से अनंतगुनी, ७ उस से श्रोत्रेन्द्रिय की अवगाहना प्रदेश से असंख्यात गुनी, ८ उस से घ्राणेन्द्रिय की अवगाहना प्रदेश से असंख्यात गुनी, ९ उस से जिव्हेन्द्रिय की अवगाहना प्रदेश से असंख्यात

असखज्जगुणे फासिदिए पदेसट्टयाए असखेज्जगुणे ॥८॥ सोइदियस्सण भंते ! केवइया कक्खडगुरुयगुणा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता कक्खड गुरुयगुणा पण्णत्ता, एवं जाव फासिंदियस्स ॥ ९ ॥ सोइदियस्सण भंते ! केवइया मउय लहुयगुणा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता मउय लहुयगुणा पण्णत्ता, एव जाव फासिंदियस्स ॥ १० ॥ एतेसिण भते ! सोइदिय चक्खिदिय घाणिंदिय, जिब्भिदिय, फासिंदियाण, कक्खड गुरुय गुणाण मउय लहुय गुणाण, कक्खडगरुयगुण मउयलहुयगुणाणय कयर २ हितो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चक्खिदियस्स

गुनी और १० उस मे स्पर्शेन्द्रिय की अवगाहना प्रदेश मे असख्यात गुनी ॥ ८ ॥ अब सातवा कर्कश गुरु द्वार कहते हैं अहो भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय का कितने कर्कश गुरु द्रव्य कहे हैं ? अहो गौतम ! अनत कर्कश गुरु द्रव्य कहे हैं ऐसे ही स्पर्शेन्द्रिय पर्यंत कहना ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय को कितने कोमल लघुद्रव्य कहे हैं ? अहो गौतम ! अनत कोमल लघुद्रव्य कहे हैं यों यावत् स्पर्शेन्द्रिय पर्यंत कहना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! इन श्रोत्रेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय जिव्हेन्द्रिय, व स्पर्शेन्द्रिय, के कर्कश गुरु गुण, व मृदु लघुगुण और कर्कश गुरु व मृदु लघु गुण में कौन किस से

कक्खडगरुयगुणा, सोइंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणंतगुणा, घाणिंदियस्स कक्खडगरुय गुणा अणंतगुणा, जिब्भिंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणंतगुणा, फासिंदियस्स कक्खड गरुयगुणा अणंतगुणा ॥ मउयलहुय गुणाणं सव्वत्थोवा फासिंदियस्स मउयलहुयगुणा, जिब्भिंदियस्स मउयलहुयगुणा अणंतगुणा, घाणिंदियस्स मउयलहु यगुणा अणंतगुणा, सोइंदियस्स मउयलहुयगुणा अणंतगुणा, चक्खिंदियस्स मउय लहुय गुणा अणंत गुणा ॥ कक्खड गरुयगुणाणं मउयलहुयगुणाणय सव्वत्थोवा चक्खिंदियस्स कक्खड गरुयगुणा, सोइंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणंतगुणा,

अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे चक्षु इन्द्रिय के कर्कश गुरु गुन, २ इस से श्रोतेन्द्रिय के कर्कश गुरु गुन अनंतगुने, ३ इस से घ्राणेन्द्रिय के कर्कश गुरु गुन अनंतगुने उस से जिव्हेन्द्रिय के कर्कश गुरु गुन अनंतगुने और ५ उस से स्पर्शेन्द्रिय के कर्कश गुरु गुन अनंतगुने मृदु लघु गुन की अल्पाबहुत्व—१ सब से थोडे स्पर्शेन्द्रिय के मृदु लघु गुन, २ उस से जिव्हेन्द्रिय के मृदु लघु गुन अनंतगुने ३ उस से घ्राणेन्द्रिय के मृदु लघु गुन अनंत गुने ४ उस से श्रोतेन्द्रिय के मृदु लघु गुन अनंतगुने और ५ उस से चक्षु इन्द्रिय के मृदु लघु गुन अनंतगुने कर्कश गुरु और मृदु लघु की साथ

घाणिंदियस्स कक्खडगरुय गुणा अणंतगुणा, जिब्भिंदियस्स कक्खडगरुयगुणा अणतगुणा, फासिंदियस्स कक्खडगरुय गुणा अणतगुणा फासिंदियस्स कक्खड गरुयगुणेहिंतो तस्सचेव मउयलहुयगुणा अणतगुणा जिब्भिंदियस्स मउय लहुयगुणा अणतगुणा घाणिंदियस्स मउय लहुय गुणा अणतगुणा सोइंदियस्स मउय लहुय गुणा अणतगुणा, चक्खिंदियस्स मउय लहुयगुणा अणतगुणा, ॥ ११ ॥ णेरइयाण भंते ! कइ इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचिंदिया पण्णत्ता ? तजहा सोइंदिए जाव फासिंदिए ॥ णेरइयाण भंते ! सोइंदिए किं संठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! कलंबुया

अनुवादक १ सब से थोडे चक्षु इन्द्रिय के कर्कश गुरु २ उस से श्रोत्रेन्द्रिय के कर्कश गुरु अनंतगुने ३ घ्राणेन्द्रिय के कर्कश गुरु अनंतगुने, ४ उस से जिव्हेन्द्रिय के कर्कश गुरु अनंतगुने ५ उस से स्पर्शेन्द्रिय के कर्कश गुरु अनंतगुने ६ उस से स्पर्शेन्द्रिय के मृदु लघु अनंतगुने ७ उस से जिव्हेन्द्रिय के मृदु लघु अनंतगुने ८ उस से घ्राणेन्द्रिय के मृदु लघु अनंतगुने उस से श्रोत्रेन्द्रिय के मृदु लघु अनंतगुने और १० उस से चक्षु इन्द्रिय के मृदु लघु अनंतगुने ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को कितनी इन्द्रियों कही है ? अहो गौतम ! नारकी को पांच इन्द्रियों कही है १ श्रोत्रेन्द्रिय, २ चक्षु इन्द्रिय, ३ घ्राणेन्द्रिय, ४ जिव्हेन्द्रिय, और ५ स्पर्शेन्द्रिय अहो भगवन् ! नारकी के श्रोत्रेंद्रिय का क्या संस्थान है ?

पुप्फसंठाण संठिए पण्णत्ते, एवं जहा ओहियाणं वत्तव्वया भाणिया तहेव णेरइयाणवि जाव अप्पाबहुयाणि दोण्णिवि णवरं णेरइयाणं भंते! फासिंदियस्स किं संठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा भवधारणिज्जेय उत्तरवेउव्विएय तत्थणं जं ते भवधारणिज्जे सेणं हुंडग संठाण संठिए पण्णत्ते तत्थणं जे त उत्तर वेउव्विए सेवि तहेव सेसं तचेव ॥ १२ ॥ असुरकुमाराणं भंते ! कइ इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचिंदिया पण्णत्ता, एवं जहा ओहियाणं जाव अप्पाबहुयाणि दोण्णिवि णवरं फासिंदिए दुविहे पण्णत्ते तंजहा भवधारणिज्जेय, उत्तर वेउव्विएय, तत्थणं जेसे भवधार-

अहो गौतम! कदम्ब पुष्प के पुष्प का वगैरह जैसे औधिक का कहा वैसे ही कहना, यावत् दोनों की अल्पा बहुत्व तक कहना परंतु विशेषता यह है कि अहो भगवन्! नारकी को स्पर्शेन्द्रिय का क्या संस्थान कहा है? अहो गौतम! नारकी का स्पर्शेन्द्रिय के संस्थान के दो भेद कहे हैं? भवधारणीय शरीर का और २ उत्तर वैक्रेय शरीर का, उस में जो भवधारणीय शरीर है सो हुंडक संस्थानवाला है और उत्तर वैक्रेय भी वैसा ही बनाते अर्थात् अशुभ नाम कर्मोदय से वे अच्छे रूप बनाना चाहते हैं तो भी खराबरूप ही बनाता है ॥१२॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार को कितनी इन्द्रियों कही ? अहो गौतम! असुरकुमार को पांच इन्द्रियों कही यों जैसे औधिक का कहा त्यों यावत् दोनों अल्पाबहुत्व कहना परंतु विशेषता यह है कि असुर

णिज्जे सेण समचउरस संठाण संठिए पण्णत्ते, जे ते उत्तर वेउव्विए सेणं णाणा संठाण संठिए, सेस तचेव ॥ एवं जाव थणिय कुमाराणं ॥ १२ ॥ पुढवि काइयाणं भंते ! कइ इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! एगे फासिंदिए पण्णत्ते, पुढवि काइयाणं भंते ! फासिंदिए किं संठाण संठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! मसूरचंद संठाण संठिए पण्णत्ते ॥ पुढवी काइयाणं भंते ! फासिंदिए केवइयं बाहल्लेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! अंगुलस्स असंखेज्जइ भाग बाहल्लेणं पण्णत्ते ॥ पुढवि काइयाणं भंते ! फासिंदिए केवतियं पोहत्तेणं पण्णत्ते ? गोयमा ! सरीरप्पमाणमत्तेणं पण्णत्ते ॥ पुढवि काइयाणं भंते ! फासिंदिए कतिपदेसिए पण्णत्ते ?

कुमार की स्पर्शेन्द्रिय के दो भेद कहे हैं १ भवधारणीय शरीरका और २ उत्तर वैक्रेय शरीरका उन में जो भवधारणीय है उसका समचतुस्र संस्थान है और जो उत्तर वैक्रेय बनाते हैं उसका अनेक प्रकारका संस्थान है शेष सब कहना यों स्थनित कुमार पर्यंत कहना ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वी काया को कितनी इन्द्रियों कही हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वी काया को एक स्पर्शेन्द्रिय कही है अहो भगवन् ! पृथ्वी काया की स्पर्शेन्द्रिय का क्या संस्थान है ? अहो गौतम ! मसूर की दाल अथवा अर्ध चंद्र का संस्थान है अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया का जाडपना कितना कहा ? अहो गौतम ! अंगुलका असंख्यातवा भागका पृथ्वीकाया के शरीरका जाडपना कहा है अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया की चौडाई कितनी कही ? अहो

गोयमा ! अणंते पदेसिए पण्णत्ते ॥ पुढविकाइयाणं भंते ! फासिंदिए कतिपदे सोगाढे पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्जपदेसोगाढे पण्णत्ते ॥ एतेसिणं भंते ! पुढविकाइयाणं फासिंदियस्स ओगाहणट्ठयाए पदेसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्व त्थोवा पुढविकाइयाणं फासिंदिए ओगाहणट्ठयाए तहचेव, पदेसट्ठयाए अणंतगुणे ॥ पुढविकाइयाणं भंते ! फासिंदियस्स केवइया कक्खड गुरुयगुणा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता एवं मउय लहुय गुणावि एतेसिणं भंते ! पुढवीकाइयाणं फासिंदियस्स कक्खड गुरुय गुणाणं मउय लहुय गुणाण कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा

गौतम ! शरीर प्रमाण जाडी चौडाइ १ पृथ्वीकाया की कही अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया की स्पर्शेन्द्रिय को कितने प्रदेश कहे हैं ! अहो गौतम ! अनंत प्रदेश कहे अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया की स्पर्शेन्द्रिय कितने प्रदेश अवगाह है ? अहो गौतम ! असंख्यात प्रदेश अवगाहकर रही है अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया की अवगाहना व प्रदेश में कौन किस से अल्पबहुत्व यावत् विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे पृथ्वीकाया का स्पर्शेन्द्रिय अवगाहना आश्रिय उन से प्रदेश आश्रिय कही अनंत गुने अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया के कितने कर्कश गुरु गुन कहे हैं ! अहो गौतम ! अनंत कर्कश गुरु गुन कहे हैं अहो भगवन् ! कितने मृदु लघु गुन कहे हैं ? अहो गौतम ! अनंत मृदु लघु गुन कहे हैं

पुढविकाइयाण फासिंदियस्स कक्खडगरुयगुणा, तस्सचेव मउय लहुय गुणा अणत गुणा ॥ एवं आउकाइयाणवि जाव वणप्फइ काइयाण, णवरं संठाणे इमो विसेसो पट्टवो, आउकाइयाणं थिबुगबिंदु संठाण सठिए, तेउकाइयाण सूईकलाव संठाण सठिए, वाउकाइयाण पडागा सठाण सठिए, वणस्सइ काइयाण णाणा सठाण संठिए ॥ १४ ॥ बेइंदियाण भंते ! कइ इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दोइंदिया पण्णत्ता तजहा जिब्भिदिएय, फासिंदिएय, दोण्हवि इंदियाणं संठाणं बाहुल्ल पोहत्त पदेसओगा हणाय जहा ओहियाण भणिया तहा भाणियव्वा णवरं फासिंदिए हुंड सठाण संठिए

अहो भगवन् इन पृथ्वी काया की स्पर्शेन्द्रिय के कर्कश गुरु गुन मृदु लघु गुन में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से थोडे पृथ्वी काया की स्पर्शेन्द्रिय के कर्कश गुरु गुन उस से मृदु लघु गुन अनंत गुने एसे ही अप्काया यावत् वनस्पतिकाया का मानना परंतु अप्काया का संस्थान पानी के बुदबुद का, तेउकाया का संस्थान सूचिकलाप (सूई की भारी) वायु का संस्थान ध्वजा पताका और वनस्पति काया का संस्थान विविध प्रकार का ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय को कितनी इन्द्रियों कही ? अहो गौतम ! बेइन्द्रिय को दो इन्द्रियों कही है ? जिव्हेन्द्रिय और २ स्पर्शेन्द्रिय, दोनों इन्द्रियों का संस्थान, जाडपन, चौडापना, प्रदेश व अवगाहना औधिक जैसे मानना

पण्णत्ते इमो त्तिसत्तो एतेसिणं भंते ! बेइंदियाण जिब्भिंदिय फासिंदियाणं ओगाहणट्ठयाए पएसट्ठयाए ओगाहणपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवे बेइंदियाण जिब्भिंदिए ओगाहणट्ठयाए फासिंदिए ओगाहणट्ठयाए असंखेज्जगुणे पएसट्ठयाए सव्वत्थोवे बेइंदियाण जिब्भिंदिए पएसट्ठयाए, फासिंदिए पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ओगाहणा पएसट्ठयाए सव्वत्थोवे बेइंदियस्स जिब्भिंदिए ओगाहणट्ठयाए फासिंदिए ओगाहणट्ठयाए असंखेज्जगुणे, फासिंदियस्स ओगाहणट्ठयाए हिंतो जिब्भिंदिए पएसट्ठयाए अणंतगुणे, फासिंदिएयस्स पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणे॥ बेइंदियाण

परंतु स्पर्शेन्द्रिय का पृथु संस्थान जानना अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय की इस जिव्हेन्द्रिय व स्पर्शेन्द्रिय की अवगाहना, प्रदेश और अवगाहना प्रदेश में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! सब से छोटी बेइन्द्रिय की जिव्हेन्द्रिय की अवगाहना, इस से स्पर्शेन्द्रिय की अवगाहना असंख्यात गुनी प्रदेश आश्रिय सब से छोटी जिव्हेन्द्रिय की अवगाहना इस से स्पर्शेन्द्रिय की अवगाहना असंख्यात गुनी अवगाहना प्रदेश आश्रिय सब से छोटी जिव्हेन्द्रिय की अवगाहना इस से स्पर्शेन्द्रिय की अवगाहना असंख्यात गुनी उस से जिव्हेन्द्रिय की अवगाहना प्रदेश आश्रिय अनंत गुनी और उस से स्पर्शेन्द्रिय की अवगाहना प्रदेश आश्रिय असंख्यात गुनी अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय की जिव्हेन्द्रिय को

भंते ! जिब्भिंदियस्स केवइया कक्खड गरुयगुणा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता, एवं फासिंदियस्सवि एवं मउयलहुयगुणावि ॥ एएसिणं भंते ! बेइंदियाणं जिब्भिंदिय फासिंदियाणं कक्खडगरुयगुणाण, मउयलहुयगुणाणं, कक्खड गरुयगुण मउयलहुयगुणाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बेइंदियाणं जिब्भिंदियस्स कक्खड गरुयगुणा, फासिंदियस्स कक्खड गरुयगुणा अणंतगुणा ॥ फासिंदियस्स कक्खड गरुयगुणेहिंतो तस्सचेव मउयलहुयगुणा अणंतगुणा, जिब्भिंदियस्स मउयलहुयगुणा अणंतगुणा ॥ एवं जाव चउरिंदियाणं, णवर

कितने कर्कश गुरु कहे ? अहो गौतम ! अनंत कहे ऐसे ही स्पर्शेन्द्रिय का मानना और ऐसे ही मृदु लघु का भी कहना अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय की जिव्हेन्द्रिय, स्पर्शेन्द्रिय के कर्कशगुरु, मृदुलघु व कर्कश गुरु मृदु लघु में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ?-अहो गौतम ! सब से थोडे बेइन्द्रिय की जिव्हेन्द्रिय के कर्कश गुरु गुन, इस से स्पर्शेन्द्रिय के कर्कश गुरु गुन अनंतगुने इस से जिव्हेन्द्रिय के मृदु लघु गुन अनंतगुने और उस से स्पर्शेन्द्रिय के मृदु लघु गुन अनंतगुने. ऐसे ही चतुरेन्द्रिय पर्यन्त कहना परंतु एकेक इन्द्रिय बढाना, तेइन्द्रिय में सब से थोडे घ्राणेन्द्रिय और चतुरेन्द्रिय में चक्षु

इंदिय परिवुड्डीकायव्वा । तेइंदियाण घाणिंदिए थोवे, चउरिंदियाणं चक्खिंदिए थोवे, सेसं तंचेव ॥ १५ ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं मणूसाणय जहा णेरइयाणं, णवर फासिंदिए छव्विह संठाण संठिए पण्णत्ते तजहा समचउरसे, णिग्गोह परिमंडले, सादि, खुज्जे, वामणे, हुंडे ॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराण ॥ १६ ॥ पुट्ठाइं भंते ! सद्दाइं सुणेइ अपुट्ठाइं सद्दाइं सुणेइ ? गोयमा ! पुट्ठाइं सद्दाइं सुणेति णो अपुट्ठाइं सद्दाइं सुणेति ॥ पुट्ठाइं भंते ! रूवाइं पासइ, अपुट्ठाइं रूवाइं पासइ ? गोयमा ! णो पुट्ठाइं रूवाइं पासइ अपुट्ठाइं रूवाइं पासइ ॥ पुट्ठाइं भंते ! गंधाइं अग्घाति

इन्द्रिय शेष सब वैसे ही ॥ १५ ॥ तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य का नारकी जैसे कहना परंतु संस्थान छ प्रकार के कहना जिन के नाम-समचतुस्र, न्यग्रोध परिमंडल, सादि, वामन, कुब्ज और हुंडक वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक का असुर कुमार जैसे कहना ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! जीव क्या स्पर्शे हुवे शब्द सुनते हैं या विना स्पर्शे हुए शब्द सुनते हैं ? अहो गौतम ! स्पर्शे हुए शब्द सुनते हैं परंतु विना स्पर्शे हुए शब्द नहीं सुनते हैं अहो भगवन् ! जीव क्या स्पर्शा हुवा रूप देखते है या विना स्पर्शा हुवे रूप देखते हैं ? अहो गौतम ! स्पर्शा हुवा रूप नहीं देखता है परंतु विना स्पर्शा हुवा रूप देखता है

अपुट्ठाइं गंधाइं अग्घाति ? गोयमा ! पुट्ठाइं गंधाइं अग्घाति णो अपुट्ठाइं गंधाइं अग्घाति ॥ एवं रसाणवि, फासाणवि, णवरं रसाइं आसाएति, फासाइं संवेदेति अभिलावो कायव्वो ॥ १७ ॥ पविट्ठाइं भंते ! सद्दाइं सुणेइ अपविट्ठाइं सद्दाइं सुणेइ ? गोयमा ! पविट्ठाइं सद्दाइं सुणेइ णो अपविट्ठाइं सद्दाइं सुणेइ, एवं जहा पुट्ठाणि तहा पविट्ठाणिवि ॥ १८ ॥ सोइंदियस्सणं भंते ! केवइए विसए पण्णत्ते ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागे उक्कोसेणं बारसहिं जोयणेहिंतो

अहो भगवन् ! क्या स्पर्शाये हुवे गंध के पुद्गल सूंघाते हैं या बिना स्पर्शाये हुवे सुंघाते हैं ? अहो गौतम ! स्पर्शाये हुए सुंघाते हैं परंतु बिना स्पर्शाये हुवे सुंघाते हैं. ऐसे ही रस व स्पर्श का जानना, परंतु रस में आस्वादन और स्पर्श में वेदन का कहना ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! क्या श्रोत्रेन्द्रिय में प्रवेश कराये हुए शब्दों सुनाते हैं या बिना प्रवेश कराये हुए शब्दों सुनाते हैं ? अहो गौतम ! प्रवेश कराये हुवे शब्दों सुनाते हैं परंतु बिना प्रवेश कराये शब्दों नहीं सुनाते हैं यों जैसे स्पर्श का कहा वैसे प्रवेश का जानना ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय का कितना विषय कहा ? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट बारह योजन से आक्रिष्ट स्पर्शे हुए व प्रवेश कीये हुवे शब्द सुनाते हैं. बारह योजन तक का गर्जारव

१ यहां योजन का प्रमाण जिस समय जो मनुष्य होवे उन के आत्म अंगुल के प्रमाण से जानना

अच्छिण्णे पोग्गलपुट्ठे पविट्ठाइ सद्दाइ सुणेति ॥ चक्खिंदियस्सणं भंते ! केवतिए विसए पण्णत्ते ? गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जतिभागो, उक्कोसणं साइरेगाओ जोयणसयसहस्साओ अच्छिण्णे पोग्गले अपुट्ठे अपविट्ठाइ रूवाइ पासइ ॥ घाणिंदियस्स पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइ भागो, उक्कोसेण नवहिं जोयणेहिं अच्छिण्णे पुग्गले पुट्ठे पविट्ठाइ गंधाइ अग्घाइ ॥ एवं जिब्भिंदियस्सवि फासिंदियस्सवि, ॥ ११ ॥ अणगारस्सणं भंते ! भावियप्पणो, मारणंतिय समुग्घाएणं

सुना जाता है अहो भगवन्! चक्षुइन्द्रिय का कितना विषय कहा? अहो गौतम! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट कुछ अधिक एक लाख योजन का परंतु मार्ग में किसी प्रकार की व्याघात नहीं होना चाहिये जब मनुष्य या देवता एक लाख योजन का वैक्रेय करते हैं तब खडे रहे हुवे पांव को तथा नीचे खडे आदि को देखते हैं, वैसे ही पुष्करार्ध द्वीप के मनुष्यों २११४ ०१७ योजन दूर रहे हुवे सूर्य को देखते हैं अहो भगवन्! घ्राणेन्द्रिय का कितना विषय कहा है? अहो गौतम! जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट नव योजन तक के गंध के अविच्छिन्न स्पर्शे हुवे व प्रविष्ट किये हुए पुद्गलों सूंघ सकते हैं ऐसे ही जिव्हेन्द्रिय व स्पर्शेन्द्रिय का नव ९ योजन का विषय मानना ॥ १२ ॥ साधु भावित मन

समोहयस्स जे चरिमा णिज्जरा पोग्गला सुहुमाणं ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्वलोगंपियणं तेउग्गाहित्ताणं चिट्ठति ? हंता गोयमा ! अणगारस्सणं भावियप्पणो मारणंतिय समुग्घाएणं समोहयस्स जे चरिमा णिज्जरा पोग्गला, पण्णत्ता समणाउसो ! सव्वलोगंपियणं ते ओगाहित्ताणं चिट्ठति ॥ छउमत्थेणं भंते ! मणुस्से तेसिं णिज्जरा पोग्गलाणं किंचि आणत्तं वा णाणत्तं वा, ओमत्तं वा, तुच्छत्तं वा, गरुयत्तं वा लहुयत्तं वा जाणति पासति ? गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ छउमत्थेणं मणुस्से तेसिं णिज्जरा पोग्गलाणं णो किंचि आणत्तं वा णाणत्तं वा ओमत्तं वा तुच्छत्तं वा

अहो भगवन् ! भावितात्मा साधु मारणांतिक समुद्घात करने से अंतिम शैलेशी काल के जो निर्जरा के पुद्गल हैं वे सूक्ष्म हैं अहो आयुष्मन् श्रमण ! क्या वे सब लोक को स्पर्श कर रहते हैं ? अहो गौतम ! भावितात्मा अनगार के मारणांतिक समुद्घात के अंतिम जो निर्जरा के पुद्गल हैं वे सब लोक को स्पर्श कर रहते हैं अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य उन निर्जरा के पुद्गलों को किंचिन्मात्र अलग २ भाव से परस्पर वर्ण रस की पर्याय से, हीनपन, गुरुत्वपने व लघुत्वपने क्या जानते हैं देखते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा कहा कि उक्त निर्जरा के पुद्गलों को छद्मस्थ मनुष्य किंचिन्मात्र भेदों से वर्णादि से पृथकता कर, हीनता से, गुरुता से, लघुता से नहीं जान सकते हैं व

गुरुयत्तंवा लहुयत्तंवा जाणति पासति ? गोयमा ! देवेवियणं अत्थेगतिए जेणं तेसिं णिज्जरा पोग्गलाणं णोकिंचि आणत्तंवा णाणत्तंवा ऊमत्तंवा तुच्छत्तंवा गरुयत्तंवा लहुयत्तंवा जाणति पासति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति, छउमत्थेणं मणुस्से तेसिं णिज्जरा पोग्गलाणं णोकिंचि आणत्तंवा णाणत्तंवा ऊमत्तंवा तुच्छत्तंवा गरुयत्तंवा लहुयत्तंवा जाणति पासति, एवं सुहुमाणं ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्वलोगंपियणं ते ओगाहित्ताणं चिट्ठति ॥ णेरइयाणं भंते ! ते णिज्जरा पोग्गला जाणति पासति आहारति उदाहु णजाणति णपासति णआहारेति ? गोयमा ! णेरइयाणं

नहीं देख सकते हैं। अहो गौतम! ऐसे कितनेक देवता भी हैं वे भी उक्त निर्जरा के पुद्गलों को किंचिन्मात्र अन्यत्व भेद से, वर्णादि से, हीनता से, गुरुता से, व लघुता से नहीं जान सकते हैं व देख सकते हैं अहो आयुष्मन् श्रमणों ! वैसे सूक्ष्म पुद्गलों हैं तथापि सब लोक को स्पर्श कर रहे हैं अहो भगवन् ! नारकी क्या उन निर्जरा पुद्गलों को जानते हैं देखते हैं या आहार करते हैं अथवा नहीं जानते हैं, नहीं देखते हैं या नहीं आहार करते हैं ? अहो गौतम ! नेरिये उक्त निर्जरा पुद्गलों को नहीं जानते हैं, नहीं देखते हैं परंतु आहार करते हैं + जैसे नारकी का कथन किया वैसे ही तिर्यंच पंचेन्द्रिय पर्यंत कहना अहो भग-

+ सब ये निर्जरा पुद्गलों लोक व्यापी होते हैं तब वहाँ आहार की साथ परिणमते हैं

ते णिज्जरा पोग्गला णजाणाति ण पासाति आहारति, एव जाव पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं॥ मणूस्साणं भते ! तेनिज्जरा पोग्गले किं जाणति पासति आहारति, उदाहु णजाणंति णपासतिण आहारेति? गोयमा ! अत्थेगतियाण जाणंति पासत्ति आहरेति, अत्थेगतिया णजाणंति णपासति आहारेति, से कणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ अत्थगतिया जाणति पासति आहारेति, अत्थगतिया णजाणति णपासति आहारेति ? गोयमा ! मणूस्सा दुविहा पण्णत्ता तंजहा—सण्णिभूयाय असण्णिभूयाय, तत्थणं जे ते असण्णिभूयाय तेणजाणंति णपासंति आहारेंति, तत्थण जे ते सण्णिभूया ते दुविहा पण्णत्ता तंजहा-

वन ! मनुष्यों क्या निर्जरा पुद्गलों को क्या जानते हैं देखते हैं व आहार करते हैं अथवा नहीं जानते हैं, नहीं देखते हैं वा नहीं आहार करते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक जानते हैं, देखते हैं व आहार करते हैं और कितनेक नहीं जानते हैं, नहीं देखते हैं व आहार करते हैं अहो भगवन् ! किस कारन से एसा कहा गया कि कितने जानते हैं, देखते हैं व आहार करते हैं और कितनेक नहीं जानते हैं, नहीं देखते हैं व आहार करते हैं ? अहो गौतम ! मनुष्य दो प्रकार के कहे हैं ? सज्ञी भूत और असंज्ञी भूत उस में असंज्ञी भूत नहीं जानते हैं, नहीं देखते हैं परंतु आहार करते हैं जो संज्ञीभूत हैं उस के दो भेद ? उपभोग युक्त, पर्याप्त अपर्याप्त ज्ञान के धारक और उपयोग रहित मत्यादि आदि ज्ञान के धारक

उववउत्ताय अणुवउत्ताया, तत्थणं जे ते अणुवउत्ताय तेणं णजाणति णपासति आहारेंति, तत्थणं जे ते उवउत्ता तेणं जाणति पासति आहारेंति से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति अत्थेगतिया णजाणंति णपासति आहारेति, अत्थेगतिया जाणति पासति आहारेंति ॥ वाणमंतरा जोइसिया जहा णेरइया ॥ वेमाणियाणं भंते ! णिज्जरा पोग्गल किं जाणति पासति आहारेंति उदाहु पुच्छा? गोयमा ! जहा मणुस्सा णवर वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा-माईमिच्छादिट्ठी उववण्णगाय, अमाइ सम्मदिट्ठी उववण्णगाय, तत्थणं जे ते माईमिच्छादिट्ठी उववण्णगाय तेणं णजाणति णपासति आहारेति, तत्थणं

इस में उपयोग रहित हैं वे उन पुद्गलों को नहीं जानते हैं, नहीं देखते हैं परंतु आहार करते हैं और जो उपयोगवंत हैं वे जानते हैं, देखते हैं व आहार करते हैं इस लिये अहो भगवन् ! अहो गौतम ! एसा कहा कि कितनेक नहीं जानते हैं, नहीं देखते हैं परंतु आहार करते हैं और कितनेक जानते हैं, देखते हैं व आहार करते हैं वाणव्यंतर ज्योतिषी का नारकी जैसे कहना अहो भगवन् ! वैमानिक उन निर्जरा पुद्गलों का क्या जानते हैं, देखते हैं आहार करते हैं अथवा नहीं जानते हैं, नहीं देखते हैं व नहीं आहार करते हैं ? अहो गौतम ! जैसे मनुष्य का कहा वैसेही कहना परंतु वैमानिक के दो भेद १ मायी मिथ्या दृष्टि उत्पन्न और अमायी समदृष्टि उत्पन्न, इन में जो मायी मिथ्या दृष्टि उत्पन्न हैं वे

जे ते अमाई सम्मदिट्ठि उववण्णगा ते दुविहा पण्णत्ता तंजहा—अणंतरोववण्णगाय परंपरोववण्णगाय ॥ तत्थणं जे ते अणंतरोववण्णगा तेणं णजाणंति णपासंति आहारेंति तत्थणं जे ते परंपरोववण्णगा, ते दुविहा पण्णत्ता तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थणं जे ते अपज्जत्तगा ते णजाणंति णपासंति आहारेंति ॥ तत्थणं जे ते पज्जत्तगा ते दुविहा पण्णत्ता तंजहा-उवउत्ताय अणुवउत्ताय, तत्थणं जे ते अणुवउत्ता ते ण जाणंति, ण पासंति आहारेंति, तत्थणं जे ते उवउत्ता ते जाणंति पासंति आहारेंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति अत्थेगतिया जाणंति जाव अत्थेगतिया

नहीं जानते हैं नहीं देखते हैं परंतु आहार करते हैं और अमायी सम्यक् दृष्टि के दो भेद अनंतरोत्पन्न और परंपरा उत्पन्न उसमें जो अनंतर उत्पन्न हैं वे जानते देखते नहीं है और जो परंपरा उत्पन्न हैं उन के दो भेद पर्याप्त और अपर्याप्त उस में जो अपर्याप्त हैं वे जानते देखते नहीं हैं परंतु आहार करते हैं और जो पर्याप्त हैं उनके दो भेद उपयोगयुक्त और उपयोग रहित जो उपयोग रहित है वे जानते देखते नहीं है परंतु आहार करते हैं और जो उपयोग वाले हैं वे जानते देखते हैं और आहार करते हैं अहो गौतम ! इस लीये ऐसा कहा गया है कि कितनेक वैमानिकदेव जानते हैं यावत् कितनेक वैमानिकदेव आहार

आहारेति ॥ २० ॥ अदाय पेहमाणे मणुस्से किं अदायं पेहति अत्ताणं पेहति पलि-
भागं पेहति ? गोयमा ! णो अदायं पेहति णो अत्ताणं पेहति पलिभागं पेहति, एवं
एतेणं अभिलावेणं असिं मणिं, दुद्धं पाणं, तेल्लं, फाणियं, रसं, वसं, ॥ २१ ॥
कंबल साडएणं भंते ! आवेढिय परिवेढिए समाणे जावतियं उवासंतरं फुसित्ताणं चिट्ठति
विरल्लएवियणं समाणे तावइयंचेव उवासंतरं फुसित्ताणं चिट्ठइ ? हंता गोयमा !
कंबल साडएणं आवेढिय परिवेढिए समाणे जावतियं तंचेव चिट्ठति॥२२॥थूणाणं भंते!

करते हैं ॥ २० ॥ आरिसा का प्रश्नोत्तर—अहो भगवन् ! आरिसा-कांच को देखता हुवा क्या
आरिसा देखता है, आत्मा देखता है या शरीर विभाग देखता है ? अहो गौतम ! मनुष्य आरिसे में देखता
हुवा आरिसा नहीं देखता है वैसे ही आत्मा भी नहीं देखता है परन्तु शरीर विभाग देखता है ऐसे कांच
में देखने का प्रश्नोत्तर कहा वैसेही मणपर में, दूधमें, पानी, में तेल में, पतला गुड में, किसी प्रकार के रस में
व चरबी में अपने शरीर का प्रतिबिम्ब देखता है उसका भी प्रश्नोत्तर कहना ॥ २१ ॥ अहो भगवन्! वींटा
हुवा कम्बलरत्न जितने आकाश प्रदेश अवगाहता है उतने आकाश प्रदेश विस्तृत कीया हुवा
फैलाया हुवा कम्बलपट क्या अवगाहता है ? अहो गौतम ! जितने आकाश प्रदेश वींटा हुवा कम्बल
पट अवगाहता है उतने ही आकाश प्रदेश विस्तृत कीया हुवा कम्बलपट अवगाहता है ॥ २२ ॥ अहो

उड्ढं उसिया समाणी जावइय खेत्तं उग्गाहित्ताणं चिट्ठंति तिरियं वियया आयता समाणी तावइयमेव खेत्तं उग्गाहित्ताणं चिट्ठंति? हंता गोयमा! धूमाण उड्ढंउसिया तंचेव चिट्ठंति ॥ २३ ॥ आगासथिग्गलेणं भंते ! किण्णा फुडे, कइहिं वा काएहिं फुडे किं धम्मत्थिकाएणं फुडे, धम्मत्थिकायस्स देसेणं फुडे धम्मत्थिकायस्स पदेसेहिं फुडे, एवं अधम्मत्थिकाएणं, आगासत्थिकाएणं एएणं भेदेणं जाव किं पुढविकाएणं फुडे,

भगवन् ! खड़ा कीया स्थंभ जितने आकाश प्रदेश अवगाहता है उतने आकाश प्रदेश लम्बा तीर्च्छा कीया हुवा स्थंभ क्या अवगाहता है ? अहो गौतम ! खड़ा कीया हुवा स्थंभ जितने आकाश प्रदेश अवगाहता है उतने ही आकाशप्रदेश लम्बा तीर्च्छा कीया हुवा स्थंभ अवगाहता है ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! आकाश का थिगला (लोकाकाश) किस का स्पर्श कर रहा है ? कितनी काया से स्पर्शाया हुआ है ? क्या धर्मास्तिकाया को स्पर्शा हुवा है, धर्मास्तिकाया के देश को स्पर्शा हुवा है कि धर्मास्तिकाया के प्रदेश को स्पर्शा हुवा है, एसे ही अधर्मास्ति काया अधर्मास्ति काया के देश व प्रदेश को स्पर्श कर रहा है, एसे ही आकाशास्तिकाया यावत् पृथ्वी काया यावत् त्रसकाय से स्पर्श कर रहा है या अद्धा समय (काल) को स्पर्शकर रहा है ? अहो गौतम ! आकाश का थेगला धर्मास्तिकाया को स्पर्शकर रहा है, परंतु धर्मास्ति काया के देश को नहीं स्पर्शा है क्यों कि धर्मास्ति काय का पृथक विभाग होता है और

जाव तसकाएणं फुडे, अद्धासमएण फुडे ? हंता गोयमा ! धम्मत्थिकाएण फुडे णो धम्मत्थिकायस्स देसेण फुडे, धम्मत्थिकायस्स पदेसेहिं फुडे, एवं अधम्मत्थि काएणवि, नो आगासत्थिकाएण फुडे, आगासत्थि कायस्स देसेण फुडे, आगासत्थि कायस्स पएसेहिं फुडे, जाव वणस्सइ काएण फुडे, एवं तसकाएणं सियफुडे सियणोफुडे, अद्धासमएण देसफुडे देसेणोफुडे ॥ २४ ॥ जंबुद्दीवेणं भंते ! दीवे

धर्मास्ति काया के प्रदेश को भी स्पर्श कर नहीं रहा है क्यों कि सब धर्मास्तिकाया के प्रदेशों में व्यापक होकर रहा है जैसे धर्मास्तिकाया का कहा वैसे ही अधर्मास्तिकाया का जानना आकाशास्तिकाया से नहीं स्पर्श हुवा है क्यों की लोका लोक का आकाश संपूर्ण कहा जाता है आकाशास्ति काय के देशको व प्रदेश को स्पर्श कर रहा है एसे ही यावत् वनस्पति काया से स्पर्श कर रहा है त्रसकाया को स्यात् स्पर्शा है, और स्यात् नहीं स्पर्शा है क्यों की त्रसकाया संपूर्ण लोक को क्वचित् स्पर्श कर रहती है और क्वचित् स्पर्श कर नहीं भी रहती है केवली समुद्घात करते केवली के आत्म प्रदेश संपूर्ण लोक में व्याप्त होजाते हैं इस आश्रिय काल को लोकाकाश एक देश से स्पर्श कर रहा है और एक देश से स्पर्श कर नहीं रहा है क्यों की व्यवहार काल मात्र अढाई द्वीप में ही होता है ॥ २४ ॥ अहो भगवन् !

किण्णाफुडे कइहिं वा काएहिं फुडे किं धम्मत्थिकाएणं जाव आगासत्थिकाएण फुडे ? गोयमा! णो धम्मत्थिकाएणं फुडे, धम्मत्थिकायस्स देसेण फुडे, धम्मत्थिकायस्स पदेसेहिं फुडे एवं अधम्मत्थिकायस्सवि, आगासत्थि कायस्सवि, पुढविकाएण फुडे जाव वणस्सइ काएण फुडे, तसकाएण सियफुडे, सिय णो फुडे अद्धासमएण फुडे ॥ एवं लवण समुद्दे, धायति खंडदीवे, कालोदए समुद्दे, अब्भिंतर पुक्खरद्धे, बाहिरं पुक्खरद्धे एवं चेव णवरं अद्धासमएण णोफुडे, एवं जाव सयंभूरमणसमुद्दे

जम्बूद्वीप किस को स्पर्श कर रहा है कितनी काया को स्पर्श कर रहा है ? क्या धर्मास्तिकाया को स्पर्श कर रहा है यावत् क्या आकाशास्तिकाया को स्पर्श कर रहा है ? अहो गौतम! धर्मास्तिकाया को स्पर्श कर नहीं रहा है परंतु धर्मास्तिकाया के देश व प्रदेश का स्पर्श कर रहा है ऐसे ही अधर्मास्तिकाया व आकाशास्तिकाया का जानना पृथ्वीकाया यावत् वनस्पतिकाया को स्पर्श कर रहा है त्रसकाया को क्वचित् स्पर्श कर रहा है और क्वचित् स्पर्श कर नहीं रहा है और काल से स्पर्श कर रहा है ऐसे ही लवण समुद्र, धातकी खण्ड द्वीप कालोदधि समुद्र और आभ्यंतर पुष्करार्ध द्वीपका जानना बाह्य पुष्करार्ध द्वीपका भी वैसे ही कहना परंतु इस में काल नहीं है इस ही प्रकार जैसे आगे गाथा में कहा वैसे जानना १ जम्बूद्वीप-२ लवण समुद्र

१	जम्बूद्वीप १००००० पो०	१९ अरुणद्वीप २३०७१६८०००००	
२	लवण समुद्र २००० ० पो०	२० अरुणोदधी ५२४२८८००० ०	
३	धातकी खण्डद्वीप ४००००	२१ अरुणद्वीप १०४८५७६००३००	
४	कालोदधी समुद्र ८००००	२२ अरुणोदधी २०९७१५२००००	
५	पुष्कर द्वीप १६०००००	२३ कुण्डलद्वीप ४१९४३०४०००००	
६	पुष्कर समुद्र ३२०००००	२४ कुण्डलोदधी ८३८८६०८०००००	
७	वारुणी द्वीप ६४०००००	२५ शंखद्वीप १६७७७२१६०००००	
८	वारुणोदधी १२८०००००	२६ शंखोदधी ३३५५४४३२०००००	
९	क्षीरद्वीप २५६०० ००	२७ रुचकद्वीप ६७१०८८६४०००००	
१०	क्षीर समुद्र ५१२०००००	२८ रुचक स १३४२१७७२८०००००	
११	घृत द्वीप १०२४००००००	२९ भुजंगद्वीप २६८४३५४५६०००००	
१२	घृतोदधी २०४८० ०००	३० भुजगस ५३६८७०९१२०००००	
१३	क्षौद्रद्वीप ४०९६००००	३१ कुशद्वीप १०७३७४१८२४०००००	
१४	इक्षोदधी ८१९२० ०००	३२ कुशोदधी २१४७४८३६४८०००००	
१५	नंदीश्वरद्वीप १६३८४०००००	३३ क्रौंचद्वीप ४२९ ४९६७२९६०००००	
१६	नंदी समुद्र ३२७६८०० ००	३४ क्रौंचोदधी ८५८९९३४५९२०००००	
१७	अरुणद्वीप ६५५३६ ० ००	३५ हारद्वीप १७१७९८६९१८४०००००	
१८	अरुणोदधी १३१०७२०००००	३६ हारोदधी ३४३५९७३८३६८०००००	

द्वीपसमुद्रों का प्रमान

३७ सागर द्वीप ६८७१९४७६७३६००००००

३८ सागरो दधी १३७४३८९५३४७२००००००

३९ सागर माल द्वीप २७४८७७९०६९४४०००००

४० सागर मालोदधी ५४९७५५८१३८८८००००००

बाकी ८० द्वीप समुद्रों के नाम कहे ऐसे असंख्यात हैं ५ समुद्र

एक को घर दूने और विस्तार में एकेक ८ गुना है

एसा परिवाडी इमाहिं गाहाहिं अणुगंतव्वा तंजहा जंबुद्दीवे लवणे, धायइ, कालोदए, पुक्खरे, वरुणे ॥ खीर, घय इक्खोय, णंदिय, अरुण, रुणवर, वाउ, कुंडले, संख, रूयग॥१॥कुस, कुंच, आभरण, वत्थ गंधे उप्पल तिलपय पउम, पुढवि, णिहि, रयणे, वासहर, दह, णदीओ, विजया वक्खार, कप्पिंदा॥२॥कुरु मंदिर, आवासा, कूडा, णक्खत्त, चंद, सूराय, देवे, नागे जक्खे भूएय, सयंभूरमणेय॥३॥एवं जहा

१ धातकी खण्ड ४ कालोदधि समुद्र, ५ पुष्कर द्वीप ६ पुष्कर समुद्र ७ वरुण द्वीप ८ वरुण समुद्र ९ क्षीर द्वीप १० क्षीर समुद्र ११ घृत द्वीप १२ घृत समुद्र १३ इक्षुद्वीप १४ इक्षु समुद्र १५ नंदीश्वर द्वीप नंदीश्वर समुद्र १७ अरुणवर द्वीप १८ अरुणवर समुद्र १९ रुण द्वीप २० रुण समुद्र २१ वायु द्वीप २२ वायु समुद्र २३ कुंडल द्वीप २४ कुंडल समुद्र २५ शंख द्वीप २६ शंख समुद्र २७ रुचक द्वीप २८ रुचक समुद्र २९ भुजंग द्वीप ३० भुजंग समुद्र ३१ कुश द्वीप ३२ कुश समुद्र ३३ ऐसे ही आगे आभरण के नाम के हैम-कनकावली, रत्नावली, मुक्तावली केयुरादि ऐसे ही आगे हार द्वीप हार समुद्र, हारवरद्वीप, हारवर समुद्र, हारवरभास द्वीप, हारवरभास समुद्र ऐसे ही अर्ध हार के नाम के तीन, रत्नावली के तीन, कनकावली के तीन, ऐसे ही वस्त्र के नाम के तीन, गंध के नाम के तीन, कस्तूरी, उत्पलादि कमल, तिलक, पद्म, पृथ्वी, नव निधान, चौदह रत्न, चूलहिमवन्तादि छ वर्षधर के नाम के, पद्मादि द्रह के नाम से, गंगादि नदी के नाम के, माल्यवंत वक्षस्कार के, सौधर्मादि देवलोक के, शक्रादि इन्द्र के, मेरुपर्वत के भद्रशालादि वन के नाम से कूट के नाम से, नक्षत्र के नाम से चंद्र के नाम से, सूर्य के नाम से, देव के नाम से, नाग के नाम से, भूत के

पाहिर पुक्खरद्ध भाणिए तहा जाव सयभूरमण समुद्द जाव अद्धासमएण ना फुड ॥ २५ ॥ लोगेण भते ! किण्णाफुडे कतिहिंवा काएहिंवा जहा आगासत्थिग्गिले ॥ २६ ॥ अलाएण भत ! किण्णाफुड क तहिंवा काएहि पुच्छा ? गोयमा ! णो धम्मत्थिकाएण फुडे जाव णो अगासत्थिकाएण फुडे जाव आगासत्थिकायस्स दसेण फुडे अगासत्थि कायस्स पदसेहिं फुड णो पुढवि काएण फुडे जाव णो अद्धासमएण फुड,एगे अजीव दव्वदेसेण अगुरुलहुए अणतहिं अगुरुलघुगुणेहिं सजुत्ते,सव्वागासे अणत

नामसे असंख्यात द्वीप समुद्रों हैं यो यावत् अंतिम स्वयंभू रमण समुद्र है इनका सब अधिकार बाहिर के पुष्करार्ध द्वीप का कहा वैसे ही कहना यावत् सब धर्मास्तिकाया अधर्मास्तिकाय व आकाशास्ति काया के देश व प्रदेश से स्पर्शित है परंतु काल स्पर्शित नहीं है ॥२५॥ अहो भगवन् ! लोक किस को स्पर्श कर रहा है व कितनी काय को स्पर्श कर रहा है ? अहो गौतम ! जैसे आकाशास्ति काया का कहा वैसे ही कहना ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! अलोक किस को स्पर्श कर रहा ! और कितनी काया की साथ स्पर्श हुवा है ? अहो गौतम ! धर्मास्तिकाय से यावत् आकाशास्ति काया से स्पर्शा हुवा नहीं है फक्त एक आकाशास्तिकाया के देश व प्रदेश से स्पर्शाया हुवा है वैसे ही पृथ्वी काया से यावत् काल से भी स्पर्शाया हुवा नहीं है मात्र एक अजीव के देश से स्पर्शित है यह अगुरु लघु अनंत द्रव्यात्मक है अगुरुलघु गुण संयुक्त है एक २

भगवे ॥ पण्णवणाए भगवईए इंदियपयस्स पढमो उद्देसओ सम्मत्तो ॥ १५ ॥ १ ॥

(गाहा) इंदिय उवचय, णिव्वत्तणाय, समयाभेवे, असंखेज्जा, लद्धी, उवओगद्धा, अप्पाबहुए विसेसाहिया ॥ १ ॥ उग्गाहणा अवाए ईहा तह वंजणोग्गहेचेव, दव्विंदिय, भाविंदिय तीया बद्धा पुरे क्खडियाय ॥ २ ॥ १ ॥ कइविहेणं भंते ! इंदिय उवचए पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे इंदिय उवचए पण्णत्ते तंजहा सोइंदिय उवचए चक्खिंदिय उवचए घाणिंदिय उवचए जिब्भिंदिय उवचए फासिंदिय उवचए ॥ णेरइयाणं भंते ! कतिविहे इंदिय उवचए पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे इंदिय उवचए

आकाशप्रदेश पर अनंत अगुरु लघु पर्याय हैं सब आकाश में अनंत भाग कम है (आकाश का) यह भगवतीपन्नवणाके इन्द्रियपद पन्नरहवा का पहिला उद्देशा संपूर्ण हुवा ॥ १५ ॥ १ ॥

अब दूसरा उद्देशा कहते हैं उन के द्वार के नाम—१ इन्द्रिय उपचय द्वार, २ निवृति द्वार, ३ इन्द्रिय निवर्तन के समयके असंख्यात भेद ४ इन्द्रियोंकी लब्धि, ५ इन्द्रियोंका उपयोग, ६ अल्प बहुत्व द्वार, ७ अवग्रहना द्वार, ८ अवग्रह द्वार, ९ ईहाद्वार, १० अवायद्वार, ११ द्रव्येन्द्रिय द्वार, १२ भावेन्द्रिय द्वार, १३ गत १४ वर्तमान काल व अनागत काल द्वार यह १५ द्वार कहते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! इन्द्रिय का उपचय कितना कहा है ? अहो गौतम ! पांच प्रकारका इन्द्रियका उपचय कहा है जिनके नाम १ श्रोत्रेन्द्रिय

पण्णत्ता तंजहा सोइंदिए उवचए जाव फासिंदिए उवचए एवं जाव वेमाणियाणं जस्स जइ इंदिया तस्स तइविहोचए इंदिय उवचओ भाणियव्वो॥ २॥ कतिविहेण भंते! इंदिया णिव्वत्तणा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा इंदिय णिव्वत्तणा पण्णत्ता तंजहा सोइंदिय णिव्वत्तणा जाव फासिंदिय णिव्वत्तणा॥ एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, णवर जस्स जइ इंदिया अत्थि तस्स तयविहा णिव्वत्तणा भाणियव्वा ॥ ३॥ सोइंदिय णिव्वत्त-णाणं कइसमया पण्णत्ता ? गोयमा! असंखेज्जा समया अंतोमुहुत्तिया पण्णत्ता ॥ एवं जाव फासिंदिय णिव्वत्तणा ॥ एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ॥ ४ ॥ कतिविहाणं

अहो भगवन् नारकी को कितने इन्द्रिय उपचय कहे हैं? अहो गौतम! नारकी को पांच इन्द्रिय उपचय कहे हैं श्रोत्रेन्द्रिय उपचय यावत् स्पर्शेन्द्रिय उपचय ऐसे ही वैमानिक पर्यंत जिनकी जितनी इन्द्रियों होवे उनको उतने इन्द्रिय उपचय कहना ॥२॥ अहो भगवन्! इन्द्रिय निर्वर्तना कितने प्रकार कही ? अहो गौतम ! पांच प्रकार की इन्द्रिय निर्वर्तना कही श्रोत्रेन्द्रिय निर्वर्तना यावत् स्पर्शेन्द्रिय निर्वर्तना नारकी से वैमानिक पर्यंत ऐसे ही कहना परंतु जिनको जितनी इन्द्रियों होवे उनको उतनी कहना ॥३॥ काल द्वार-अहो भगवन् ! श्रोत्रेन्द्रिय निर्वर्तना के कितने समय कहे हैं ? अहो गौतम ! असंख्यात समय वाला अंतर्मुहूर्त कहा है ऐसे ही स्पर्शेन्द्रिय पर्यंत कहना ऐसे ही नारकी यावत् वैमानिक पर्यंत जानना ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! कितनी

जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, घाणिंदियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, जिब्भिंदियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, फासिंदियस्स, जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, फासिंदियस्स जहण्णियाउ उवओगद्धाहितो चक्खिंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, सोइंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, घाणिंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, जिब्भिंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, फासिंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, ॥ ७ ॥ कइविहेणं भंते ! इंदिय उग्गहे पण्णत्ते ? पंचविहे इंदिय उग्गहे पण्णत्ते तंजहा

से थोडा चक्षुइन्द्रिय का जघन्य उपयोग काल २ उस से श्रोत्रेन्द्रिय का जघन्य उपयोगकाल विशेषाधिक ३ उस से घ्राणेन्द्रिय का जघन्य उपयोग काल विशेषाधिक, ४ इस से जिव्हेन्द्रिय का जघन्य उपयोग का विशेषाधिक ५ उस से स्पर्शेन्द्रिय का जघन्य उपयोग काल असंख्यात गुना ६ उस से चक्षुइन्द्रिय का उत्कृष्ट उपयोगकाल विशेषाधिक इससे ७ श्रोत्रेन्द्रियका उत्कृष्ट उपयोगकाल विशेषाधिक ८ इससे घ्राणेन्द्रिय का उत्कृष्ट उपयोगकाल विशेषाधिक ९ इससे जिव्हेन्द्रियका उत्कृष्ट उपयोगकाल विशेषाधिक और १० इससे स्पर्शेन्द्रिय का उत्कृष्ट उपयोग काल विशेषाधिक ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! इन्द्रिय अवग्रह कितने प्रकार का कहा

सियाए उवओगद्धाए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४? गोयमा ! सव्वत्थोवा चक्खिंदियस्स जहण्णिया उवओगद्धा सोइंदियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया घाणिंदियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, जिब्भिंदियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया फासिंदियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहियाए, उक्कोसियाए उवओगद्धाए सव्वत्थोवा चक्खिंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा, सोइंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया घाणिंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, जिब्भिंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, फासिंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया ॥ जहण्णुक्कोसियाए उवओगद्धा सव्वत्थोवा चक्खिंदियस्स जहण्णिया उवओगद्धा सोइंदियस्स

कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक है ? अहो गौतम ! १ सब से थोडा चक्षुइन्द्रिय का जघन्य उपयोग काल २ उस से श्रोत्रेन्द्रिय का जघन्य उपयोग काल विशेषाधिक ३ इससे घ्राणेन्द्रिय का जघन्य उपयोग काल विशेषाधिक ४ उस से जिव्हेन्द्रिय का जघन्य उपयोग का काल विशेषाधिक और ५ उस से स्पर्शेन्द्रिय का जघन्य उपयोग काल विशेषाधिक अब उत्कृष्ट उपयोग का कहते हैं १ सब से थोडा चक्षुइन्द्रिय का उत्कृष्ट उपयोग काल, २ श्रोत्रेन्द्रिय का उत्कृष्ट उपयोग काल विशेषाधिक ३ इस से घ्राणेन्द्रिय का उत्कृष्ट उपयोग काल विशेषाधिक ४ इस से जिव्हेन्द्रिय का उत्कृष्ट उपयोग काल विशेषाधिक और इस से स्पर्शेन्द्रिय का उत्कृष्ट उपयोग काल विशेषाधिक अब जघन्य उत्कृष्ट उपयोग आश्री कहते हैं १ सब

जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, घाणेंदियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, जिब्भिंदियस्स जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, फासिंदियस्स, जहण्णिया उवओगद्धा विसेसाहिया, फासिंदियस्स जहण्णिया उवओगद्धाहितो चक्खिंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विससाहिया, सोइंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विससाहिया, घाणिंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विससाहिया, जिब्भिंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विससाहिया, फासिंदियस्स उक्कोसिया उवओगद्धा विसेसाहिया, ॥ ७ ॥ कइविहेणं भंते ! इंदिय उग्गहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे इंदिय उग्गहे पण्णत्ते तंजहा

स थोड़ा चक्षुइन्द्रिय का जघन्य उपयोग काल २ उस से श्रोत्रेन्द्रिय का जघन्य उपयोगकाल विशेषाधिक ३ उस से घ्राणेन्द्रिय का जघन्य उपयोग काल विशेषाधिक, ४ इस से जिव्हेन्द्रिय का जघन्य उपयोग का विशेषाधिक ५ उस से स्पर्शेन्द्रिय का जघन्य उपयोग काल असंख्यात गुना ६ उस से चक्षुइन्द्रिय का उत्कृष्ट उपयोगकाल विशेषाधिक इससे ७ श्रोत्रेन्द्रिय का उत्कृष्ट उपयोगकाल विशेषाधिक ८ इससे घ्राणेन्द्रिय का उत्कृष्ट उपयोगकाल विशेषाधिक ९ उससे जिव्हेन्द्रिय का उत्कृष्ट उपयोग काल विशेषाधिक और १० इससे स्पर्शेन्द्रिय का उत्कृष्ट उपयोग काल विशेषाधिक ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! इन्द्रिय अवग्रह कितने प्रकार का कहा

सोइंदिय उग्गहे, जाव फासिंदिय उग्गहे एव णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, णवरं जस्स जइ इंदिया अस्थि ॥ ८ ॥ कइविहेणं भंते ! इंदिय अवाए पण्णत्ते गोयमा ! पंचविहे इंदिय अवाए पण्णत्ते तंजहा सोइंदिय अवाए जाव फासिंदिय अवाए ॥ एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, णवरं जस्स जतिया इंदिया अस्थि ॥ ९ ॥ कइविहाणं भंते ! ईहा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंचविहा ईहा पण्णत्ता तंजहा सोइंदियईहा जाव

हैं ? अहो गौतम ! पांच प्रकार के अवग्रह कहे हैं श्रोत्रेन्द्रिय का अवग्रह यावत् स्पर्शेन्द्रिय का अवग्रह यों नारकी से वैमानिक पर्यंत कहना परन्तु इतना विशेष कि जिस स्थान जितनी इन्द्रियों होवे उतनी ग्रहण करना ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! कितने प्रकार का इन्द्रिय का अवाय कहा ? अहो गौतम ! पांच प्रकार का इन्द्रिय अवाय कहा ? श्रोत्रेन्द्रिय अवाय यावत् स्पर्शेन्द्रिय अवाय यों नारकी से लगाकर वैमानिक पर्यंत चौवीसही दण्डक में जिन को जितनी इन्द्रियों होवे उतनी इन्द्रियों कहना ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! कितने प्रकार की इन्द्रिया की ईहा कही ? अहो गौतम ! पांच प्रकार की

१ जैसे कोई निद्रस्थ मनुष्य है उस को किसीने पुकारा उस को शब्द यह सामान्य पना से ग्रहण करे कि मुझे कोइ पुकारता है यह अवग्रह, कौन मुझे पुकारता है ऐसा विचार करे यह ईहा, अमुक मुझे पुकारता है ऐसा निश्चय करना सो अवाय, और बहुत काल व्यतीतहुए पीछे याद करना कि अमुक मुझे पुकारा था यह धारना यहां योग्य भेद सहिएपाले.

फासिंदियइहा एव जाव वेमाणियाणं णवर जस्स जइ इंदिया अत्थि ॥ १० ॥ कइविहेणं भंते ! उग्गहे पण्णत्ते गोयमा ! दुविहे उग्गहे पण्णत्ते, तंजहा अत्थोग्गहेय, वंजणोग्गहे ॥ वंजणोग्गहेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउविहे पण्णत्ते तंजहा सोइंदिय वंजणोग्गहे, घाणिंदिय वंजणोग्गहे, जिब्भिंदिय वंजणोग्गहे फासिंदिय वंजणोग्गहे ॥ अत्थोग्गहेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? छव्विहे पण्णत्ते तंजहा सोइंदिय अत्थोग्गहे, चक्खिंदिय अत्थोग्गहे, घाणिंदिय अत्थोग्गहे जिब्भिंदिय-अत्थोग्गहे, फासिंदिय अत्थोग्गहे, णो इंदिय अत्थोग्गहे ॥ णेरइयाणं भंते ! कइविहे

इन्द्रिय की ईहा कही ऐसे ही श्रोत्रेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रिय की ईहा यों नारकी से वैमानिक पर्यन्त चौवीस ही दंडक में जिन को जितनी इन्द्रियों होवे उन को उतनी इन्द्रिय की ईहा कहना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! अवग्रह कितने प्रकार का कहा ? अहो गौतम ! दो प्रकार का अवग्रह कहा—१ अर्थावग्रह सो दूर रही वस्तु ग्रहण करे, और २ व्यंजनावग्रह सो वस्तु का स्पर्श कर ग्रहण करे अहो भगवन् ! व्यंजनावग्रह के कितने भेद कहे ? अहो गौतम ! व्यंजनावग्रह के चार भेद कहे—१ श्रोत्रेन्द्रिय व्यंजनावग्रह, २ घ्राणेन्द्रिय व्यंजनावग्रह, ३ जिव्हेन्द्रिय व्यंजनावग्रह, और ४ स्पर्शेन्द्रिय व्यंजनावग्रह अर्थावग्रह के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! अर्थावग्रह के छ भेद कहे हैं—१ श्रोत्रेन्द्रिय का

उग्गाहे ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा अत्थोग्गहे, वंजणोग्गहे एवं असुरकुमाराणं जाव थणिय कुमाराणं ॥ पुढविकाइयाणं भंते ! कइविहे उग्गहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे उग्गहे पण्णत्ते तंजहा अत्थोग्गहेय वंजणोग्गहेय ॥ पुढविकाइयाण भंते! कइविहे वंजणोग्गहे पण्णत्ते? गोयमा! एगे फासिंदिय वंजणोग्गहे पण्णत्ते॥ पुढवि काइयाण भंते! कइविहे अत्थोग्गहे पण्णत्ते ? गोयमा! एगे फासिंदिय अत्थोग्गहे पण्णत्ते ॥ एवं जाव वणस्सइ कायाणं ॥ एवं बेइंदियाणवि, णवरं बेइंदियाण वंजणो

मर्थावग्रह २ चक्षुइन्द्रिय का अर्थावग्रह, ३ घ्राणेन्द्रिय का अर्थावग्रह ४ जिव्हेन्द्रिय का अर्थावग्रह ५ स्पर्शेन्द्रिय का अर्थावग्रह और ६ नो इन्द्रिय मन का अर्थावग्रह अहो भगवन् ! नारकी को कितना अवग्रह कहा है ? अहो गौतम ! नारकी का दो अवग्रह कहा है १ अर्थावग्रह और २ व्यंजनावग्रह ऐसे ही असुर कुमार यावत् स्तनित कुमार पर्यंत कहना अहो भगवन् ! पृथ्वी काया को कितने अवग्रह ? अहो गौतम ! पृथ्वी काया को एक स्पर्शेन्द्रिय का व्यंजनावग्रह कहा अहो भगवन् ! पृथ्वी काया को कितने अर्थावग्रह कहे ? अहो गौतम ! एक स्पर्शेन्द्रिय अर्थावग्रह कहा। ऐसे ही वनस्पति काया पर्यंत जानना वैसे ही बेइन्द्रिय का कहना परंतु अर्थावग्रह व व्यंजनावग्रह

गाह दुविह पण्णत्ते ॥ एवं जाव तेइंदिय चउरिंदियाणवि, णवर इंदिय परिवुड्ढी कायव्वा, चउरिंदियाण वजणोग्गह तिविहे पण्णत्ते अत्थोग्गहे चउव्विहे पण्णत्त सेसाणं जहा णेरइयाणं जाव वमाणियाण ॥ १५ ॥ कइविहाणं भंते ! इंदिया पण्णत्ता ? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तंजहा दव्विंदियाय भाविंदियाय ॥ कइण भंते ! दव्विंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठ दव्विंदिया पण्णत्ता तंजहा दोसोत्ता, दोणेत्ता, दोघाणा, जीहा, फासे ॥ णेरइयाण भंते! कइ दव्विंदिया पण्णत्ता? गोयमा ! अट्ठ, एते चेव, एव असुरकुमाराण जाव थणियकुमाराणवि ॥ पुढविकाइयाण

दोनों प्रकार के जानना ऐसे ही तेइन्द्रिय व चतुरिन्द्रिय का जानना परंतु एकेक इन्द्रिय की वृद्धि करना चतुरिन्द्रिय का व्यंजनावग्रह तीन प्रकारका कहा और अर्थावग्रह चार प्रकारका कहा, शेष वैमानिक पर्यंत का नारकी जैसे कहना ॥१५॥ अहो भगवन् ! इन्द्रियों कितने प्रकारकी कही ? अहो गौतम ! इन्द्रियों दो प्रकारकी कही तद्यथा-१ द्रव्येन्द्रिय व २ भावेन्द्रिय अहो भगवन् ! द्रव्येन्द्रियों कितनी कही ? अहो गौतम ! आठ द्रव्य इन्द्रियों कही जिनके नाम-दो श्रोत्र [कान] दो चक्षु (आंख) दो घ्राण (नासिका) जीव्हा और स्पर्श अहो भगवन् ! नारकी को कितनी द्रव्य इन्द्रियों कही ? अहो गौतम ! नारकी को आठ द्रव्य इन्द्रियों कही।

भंते ! कइ दव्विंदिया पण्णत्ता? गोयमा! एगे फासिंदिए पण्णत्ते, एव जाव वणस्सइ काईयाण ॥ बेइंदियाणं भंते ! कइदव्विंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दो दव्विंदिया पण्णत्ता तजहा फासिंदियए जिब्भिंदिएय, तइंदियाण पुच्छा ? गोयमा ! चत्तारि दव्विंदिया पण्णत्ता तजहा दोघाणा, जिब्हा, फासे ॥ चउरिंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! छ दव्विंदिया पण्णत्ता तजहा दाणत्ता, दोघाणा, जिब्हा फासे ॥ सेसाण जहा णेरइयाण जाव वेमाणियाण ॥ १२ ॥ एगमेगस्सण भंते ! णेरइयस्स केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता, केवइया बद्धेलगा ? गोयमा ! अट्ठ, केवइया

वैसेही असुरकुमार यावत् स्थनितकुमार पर्यंत कहना अहो भगवन्! पृथ्वीकायाको कितनी इन्द्रियों कही ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाया को एक स्पर्शेन्द्रिय है ऐसे ही वनस्पति काया पर्यंत कहना अहो भगवन्! बेइन्द्रिय को कितनी द्रव्य इन्द्रियों कही ? अहो गौतम ! दो द्रव्य इन्द्रियों कही—१ जिव्हा और २ स्पर्श तेइन्द्रिय को चार, दो घ्राण, १ एक जिव्हा और एक स्पर्श चतुरेन्द्रिय को छ-दो नेत्र, दो घ्राण एक जिव्हा और एक स्पर्श शेष सब वैमानिक पर्यन्त नारकी जैसे कहना ॥१२॥ अहो भगवन् ! एक २ नारकीने द्रव्य इन्द्रियों अतीत काल में कितनी की ? अहो गौतम ! एक २ नारकीने गत काल में अनंत द्रव्य इन्द्रियों की, क्यों कि नेरिये के जीवने गत काल में अनंत संसार परि

पुरक्खडा ?गोयमा ! अट्ठा सोलसवा, सतरसवा संखेज्जावा असंखेज्जावा अणतावा ॥ एगमेगस्सण भंते! असुरकुमारस्स केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता?गोयमा! अणता, केवइया बद्धेल्लगा पण्णत्ता?गोयमा ! अट्ठ,केवइया पुरक्खडा पण्णत्ता ?गोयमा!अट्ठवा, नवाव, संखिज्जावा, असंखज्जावा अणतावा एवं जाव थणियकुमाराण ताव भाणियव्वा॥एव पुढविकाइया आउक्काइया वणस्सइकाइयस्सवि,णवर केवइया बद्धेल्लगत्ति पुच्छा?एव उत्तर

भगवन् कीया है अहो भगवन् ! एक नारकी वर्तमान काल में कितनी द्रव्य इन्द्रियों का बंध कर रहा है ? अहो गौतम ! आठ द्रव्य इंद्रियों अहो भगवन् ! नारकी अनागत काल में कितनी द्रव्य इंद्रियों करेगा ? अहो गौतम ! आठ, सोलह, सतरह, अथवा संख्यात असंख्यात व अनंत करेगा क्यों कि नारकी नीकल कर मनुष्य होकर मोक्ष जानेवाला जीव आठ ही मनुष्य संबंधी द्रव्येंद्रिय करेगा तिर्यंच का भव बीच में करके मनुष्य होकर मोक्ष जावेगा वह सोलह द्रव्य इन्द्रियों का बंध करेगा, नरक से नीकल कर तिर्यंच पंचेन्द्रिय होकर पृथ्वी काया में उत्पन्न होकर मनुष्य में से मोक्ष जावे वह सतरह इन्द्रियों का बंध करेगा संख्यात काल संसार परिभ्रमण करेगा तो संख्यात द्रव्य इन्द्रियों का बंध करेगा असंख्यात काल तक परिभ्रमण करेगा तो असंख्यात द्रव्य इन्द्रियों का बंध करेगा और अनंत काल तक परिभ्रमण करेगा तो अनंत द्रव्य इन्द्रियों का बंध करेगा अहो भगवन् ! असुरकुमारने

पग फासिंदिए दव्विंदिए ॥ एव तउकाइय वाउकाइयस्सवि णवरं पुरक्खडा, णवा दसवा। एवं वणस्सइकाइयस्सवि णवरं बद्धेल्लगा पुच्छा ? गोयमा ! दोण्णि, एवं तेइंदियस्सवि णवरं बद्धेल्लगा चत्तारि, एवं चउरिंदियस्सवि, णवरं बद्धेल्लगा ? गोयमा ! छ्त्ता॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय मणुस्सा वाणमंतरा जोतिसिया सोहम्मीसाणग देवस्स जहा असुर कुमारस्स णवरं मणूसस्स पुरक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ णात्थि, जस्सअत्थि अट्ठवा

कितनी द्रव्य इन्द्रियों अतीत काल में की ? अहो गौतम ! अनंत द्रव्य इन्द्रियों की वर्तमान काल में कितनी द्रव्य इन्द्रियों का बंध कर बैठे हैं ? अहो गौतम ! आठ द्रव्य इन्द्रियों का बंध कर बैठे हैं अनागत काल में कितनी करेंगे ? अहो गौतम ! आठ, नव, संख्यात असंख्यात व अनंत द्रव्येन्द्रियों का बंध करेंगे असुरकुमार का जीव पृथ्वी काया में रहता हुआ मनुष्य होकर मोक्ष में जावे उस की अपेक्षा आठ ऐसे ही स्थनित कुमार पर्यंत कहना ऐसे ही पृथ्वीकाया, अप्काया व वनस्पतिकाया का कहना परंतु इन में वर्तमान काल आश्रिय एक स्पर्शेन्द्रिय का बंध करते हैं ऐसे ही तेउकाया व वाउकाया का कहना, परंतु पुरस्कृत नव तथा दस कहना; क्योंकि तेउ, वायु का निकला मनुष्य नहीं होता है तिर्यंच ही होता है, इसलिये एक भव पृथ्वीकाया का करके मनुष्य में आकर मोक्ष में जावे ऐसे ही नौ द्रव्य का मानना परंतु इन में वर्तमान काल आश्रिय दो इन्द्रियों का बंध करते हैं बेइन्द्रिय का भी ऐसे ही कहना

नवया गखज्जा असखज्जावा अणतावा सणकुमार माहिंद बंभ लतग सुक्क सहस्सार आणय पाणय आरण अच्चुय गविज्ज्ग देवस्सय जहा नरइयस्स ॥ एगमेगस्सण भत ! विजय वेजयत जयत अपराजिय देवस्स केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता? गोयमा ! अणता केवइया बद्धेलगा ? अट्ठ केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अट्ठ्वा सोलसवा चउवीसवा संखेज्जावा ॥ सव्वट्ठसिद्धग देवाण भंते ! केवइया दव्वि

परंतु चार इन्द्रियों का बंध वर्तमान आश्री करते हैं चतुरिन्द्रिय में वर्तमान आश्री ७ इन्द्रियों का बंध करते हैं तिर्यंच पंचेन्द्रिय मनुष्य वाणव्यंतर ज्योतिषि सौधर्म व ईशान देवलोक का असुर कुमार जैसे कहना। एक मनुष्य को भविष्यकाल आश्रित कितनेक को नहीं होता है और कितनेक को होता है जो मोक्ष प्राप्त होते हैं उनको भविष्यकाल आश्रित द्रव्येन्द्रियों नहीं होती है जिनको होती हैं वो आठ, नव संख्यात, असंख्यात अथवा अनंत होती हैं सनत्कुमार, माहेन्द्र ब्रह्मलोक लांतक, महाशुक्र सहस्रार, आणत प्राणत, आरण अच्युत व ग्रैवेयक का नारकी जैसे कहना अहो भगवन्! एक विजय, वैजयंत जयंत व अपराजित देव का अतीत काल में कितनी द्रव्य इन्द्रियों कहीं? अहो गौतम! अनंत द्रव्य इन्द्रियों कहीं अहो भगवन्! कितनी का बंध करते हैं? अहो गौतम! आठ और कितनी का बंध करेंगे? अहो गौतम! आठ, सोलह चउवीस अथवा संख्यात क्योंकि ये देवता संख्यात भव करके सिद्ध होते हैं परंतु असंख्यात भव

विया अतीता ? गोयमा ! अणता कवइया बद्धेल्लगा ? अट्ठ कवइया पुरक्खडा ? गोयमा ! अट्ठ ॥ १२ ॥ णरइयाण भंते ! कवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता, केवइया बद्धेल्लगा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा, केवइया पुरेक्खडा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता ॥ एवं जाव गेवेज्जग देवाण णवरं मणुस्साण बद्धेल्लगा सिय संखेज्ज, सिय असंखेज्जा ॥ विजय वेजयत जयत अपराजित देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! अतीता अणता, केवइया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! असंखेज्जा,

नहीं करते हैं अहो भगवन् ! सर्वार्थ सिद्ध के देवता को कितनी द्रव्य इन्द्रियों अतीत काल में हुई ? अहो गौतम ! अनंत वर्तमान में कितनी है ? अहो गौतम ! आठ, और अनागत में कितनी होगी ? अहो गौतम! आठ क्यों की फक्त एक मनुष्य का ही भव करके मोक्ष जाते हैं ॥१३॥ अब अहो भगवन् बहुत नारकी को कितनी द्रव्य इन्द्रियों अतीत काल में की ? अहो गौतम ! अनंत की बहुत जीवों आश्रिय कहते हैं वर्तमान में कितनी करते हैं ? अहो गौतम! असंख्यात करते हैं, क्यों की असंख्यात नारकी हैं और अनागत में कितनी करेंगे अहो गौतम! अनंत करेंगे ऐसे ही ग्रैवेयकदेव तक कहना परंतु मनुष्य में वर्तमान काल आश्रिय द्रव्य इन्द्रियों स्यात् संख्यात व स्यात् असंख्यात कहना, क्यों की गर्भज मनुष्य संख्याते हैं और संमूर्च्छिम

केवइया पुरकडा ? गोयमा ! असंखेज्जा ॥ सव्वट्ठग सिद्धाण पुच्छा ? गोयमा ! अतीता अणता, केवइया बद्धल्लगा पण्णत्ता ? गोयमा ! संखेज्जा केवइया पुरकडा? गोयमा ! संखेज्जा ॥ १४ ॥ एगमेगस्सण भते ! णेरइयस्स णरइयत्ताए केवइया दव्विंदिया अतीता ? पण्णत्ता गोयमा ! अणता, केवइया बद्धल्लगा पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठ केवइया पुरेकडा पण्णत्ता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्सअत्थि अट्ठवा सोलसवा, चउवीसवा संखेज्जावा असंखेज्जावा अणतावा ॥ एगमेगस्सण भते ! णरइयस्स असुरकुमारत्ताए केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता?

मनुष्य असंख्याते हैं विजय विजयंत, जयंत व अपराजित के देवोंने अतीत काल में अनंत की, वर्तमान में असंख्यात हैं, और अनागत में असंख्यात करेंगे सर्वार्थ सिद्ध की पृच्छा ? अहो गौतम ! अतीत काल में अनंत की, वर्तमान में संख्यात है और अनागत में भी संख्यात करेंगे॥१४॥ अब एक जीव आश्री परस्पर चौवीस दण्डक पर उतारते हैं अहो भगवन् ! एक २ नारकीने नारकी पने अतीत काल में कितनी द्रव्य इन्द्रियों की ? अहो गौतम ! अनंत द्रव्य इन्द्रियों की कितनी बन्धी हुई है ? अहो गौतम ! आठ और कितनी का बंध करेगा ? अहो गौतम ! कोई करेगा और कोई नहीं करेगा अर्थात् जो नरक में से नीकलकर पुनः नरकमें नहीं जावेगा और मोक्ष में जावेगा उस आश्रिय और जो करेगा वो

गोयमा ! अणंता केवइया बद्धेल्लगा पण्णत्ता ? गोयमा ! णत्थि केवइया पुरेक्खडा पण्णत्ता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सअत्थि अट्ठवा सोलसवा चउवीसवा संखेज्जावा असंखेज्जावा अणंतावा एवं जाव थणियकुमाराणं ॥ एगमेगस्स णं भंते ! णेरइयस्स पुढविकाइयत्ताए केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता केवइया बद्धेल्लगा पण्णत्ता ? गोयमा ! णत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइअत्थि कस्सइणत्थि जस्सअत्थि, एक्कोवा दोवा तिण्णिवा संखेज्जावा असंखेज्जा । अणंतावा ॥ एवं जाव वणप्फइकाइयत्ते ॥ एगमेगस्स णं भंते ! णेरइयस्स

आठ सोलह चौबीस, संख्यात, असंख्यात व अनंत करेगा अहो भगवन् ! एक २ नारकीने असुर कुमारपने अतीत काल में कितनी द्रव्य इन्द्रियों की ? अहो गौतम ! अनंत की बद्धेलक नहीं है और पुरस्कृत कोई करेगा कोई नहीं करेगा यदि करेगा तो आठ, सोलह, चौबीस संख्यात असंख्यात व अनंत करेगा ऐसे ही स्थनित कुमार पर्यन्त कहना अहो भगवन् ! एक २ नारकीने अतीत काल आश्रित कितनी द्रव्य इन्द्रियों पृथ्वीकाया में की ? अहो गौतम ! अनंती की बद्धेलक नहीं है और पुरस्कृत कोई करेगा कोई नहीं भी करेगा यदि करेगा तो एक, दो, तीन, संख्यात, असंख्यात व अनंत करेगा एवं ही वनस्पतिकाया पर्यंत जानना अहो भगवन् ! एक २ नारकीने बेइन्द्रियपने अतीत

येइंदियत्ताए केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा गोयमा ! णत्थि, केवइया पुरेक्खडा पण्णत्ता? गोयमा! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्सअत्थि तस्स चत्तारि वा छ वा संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा, एवं तेइंदियत्ताएवि णवरं पुरेक्खडा चत्तारि वा, अट्ठ वा, बारस वा, संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा अणंता वा ॥ एवं चउरिंदियत्ताएवि णवरं पुरेक्खडा छ वा बारस वा अट्ठारस वा, संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा पंचिंदिय तिरिक्खजोणियत्ताएवि जहा असुरकुमारत्ताए, मणुस्सत्ताएवि एवं चेव णवरं केवइया पुरेक्खडा ? अट्ठ वा सोलस वा चउवीसं वा

काल में कितनी द्रव्य इन्द्रियों की ? अहो गौतम ! अनंत द्रव्य इन्द्रियों की बद्धक नहीं है और पुरस्कृत किसी को है और किसी को नहीं है जिस को है उन को दो, चार छ संख्यात, असंख्यात व अनंत होगी ऐसे ही तेइन्द्रिय का जानना परंतु पुरस्कृत चार, आठ, बारह, संख्यात, असंख्यात व अनंत जानना चतुरिन्द्रिय का भी वैसे ही जानना परंतु पुरस्कृत छ, बारह, अठारह, संख्यात असंख्यात व अनंत जानना तिर्यंच पंचेन्द्रिय का असुर कुमार जैसे कहना मनुष्य का भी वैसे ही कहना परंतु इसमें पुरस्कृत आठ सोलह, चौबीस संख्यात असंख्यात व अनंत करेगा ऐसा कहना मनुष्य वर्जकर सब नरकों के जीवों का मनुष्यपने कोई करेगा कोई नहीं करेगा वैसा नहीं कहना वाणव्यंतर ज्योतिषी, सौधर्म

संखेज्जा वा असंखेज्जा वा अणंता वा, सव्वोसिं मणुस्सवज्जाणं पुरेक्खडा मणुस्सत्ताए कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि एवं नवुच्चइ ॥ वाणमंतर जोइसिया सोहम्मग जाव गेवेज्जगा देवत्ताए अतीता अणंता, बद्धेल्लगा णत्थि, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सअत्थि अट्ठवा सोलसवा चउवीसवा संखेज्जा वा, असंखेज्जा वा, अणंता वा ॥ एग मेगस्सणं भंते! णेरइयस्स विजय वेजयंत जयंत अपराजिय देवत्ताए केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा! णत्थि, केवइया बद्धेल्लगा पण्णत्ता ? गोयमा! णत्थि केवइया पुरेक्खडा पण्णत्ता ? गोयमा! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्सअत्थि अट्ठवा सोलसवा ॥ सव्वट्ठग सिद्धग देवत्ताए अतीता णत्थि, बद्धेल्लगा

यावत् ग्रैवेयक पर्यंत में अतीत काल में अनंत द्रव्य इन्द्रियों की, बद्धेलक नहीं है और पुरस्कृत किसी को नहीं है और किसी का है जिस को है वह आठ, सोलह, चौवीस, संख्यात, असंख्यात व अनंत करेगा. अहो भगवन्! एक २ नारकीने विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित में कितनी द्रव्य इन्द्रियों अतीत काल में की? अहो गौतम! नहीं की, बद्धेलक नहीं है, और पुरस्कृत किसी को है किसी का नहीं है यदि किसी का है तो वह आठ तथा सोलह करेगा क्यों की चार अनुत्तर विमान के दो भव करते हैं सर्वार्थसिद्ध देवतापने अतीत काल में नहीं की बद्धेलक भी नहीं है और पुरस्कृत किसी को है किसी को

णत्थि, पुरेकडा कस्सइअत्थि कस्सइणत्थि जस्सअत्थि अट्ठवा ॥ एवं जहा णेरइय दंडओनीतो तहा असुरकुमारेणवि नयव्वो, जाव पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाण णवरं जस्ससट्ठाणे जति बद्धेल्लगा तस्स तइभाणियव्वा॥एगमेगस्सण भंते! मणुसस्स णेरइयत्ताए केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता? गोयमा ! अणता, केवइया बद्धेल्लगा पण्णत्ता? गोयमा! णत्थि केवइया पुरेकडा कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सअत्थि अट्ठवा सोलसवा चउवीसवा संखेज्जावा असंखेज्जावा अणंतावा एवं जाव पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियत्ताए, णवर एगिंदिय विगलिंदिएसु जस्सजइ, पुरेकडा तस्स तत्तिया भाणि-यव्वा, एगमेगस्सण भंते ! मणुसस्स मणुस्सत्ताए केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता

नहीं है जिसको है वह आठ करेगा जैसे नारकी का दंडक कहा वैसे ही असुरकुमारादि दश भवनपति, पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय व तिर्यंच पंचेन्द्रिय पर्यंत कहना परन्तु जहां जितनी इन्द्रियों होवे वहां उतनी इन्द्रियों कहना अहो भगवन् ! एक २ मनुष्यने नारकीमें अतीत काल में कितनी द्रव्य इन्द्रियों की? अहो गौतम! अनंत द्रव्य इन्द्रियोंकी बद्धक नहीं है और पुरस्कृत किसी का है किसी को नहीं है यदि जिसको है वे आठ, सोलह चोवीस, संख्यात असंख्यात व अनंत करेगा ऐसे ही तिर्यंच पंचेन्द्रिय पर्यंत में इन्द्रियों आश्रित कहना परंतु एकेन्द्रिय में

गोयमा ! अणता केवइया बद्धेल्लगा पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठ केवइया पुरेक्खडा पण्णत्ता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्सअत्थि अट्ठवा सोलसवा चउवीसवा संखेज्जावा असंखेज्जावा अणतावा ॥ वाणमंतर जोइसिया जाव गेवेज्जग देवत्ताए जहा णेरइयत्ताए ॥ एगमेगस्सण भंते ! मणुस्सस्स विजय वेजयंत जयंत अपराजित देवत्ताए केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्सत्थि अट्ठवा सोलसवा, केवइया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठवा सोलसवा ॥ एगमेगस्सण भंते ! मणुस्स सव्वट्ठ सिद्धगदेवत्ताए केवतिता दव्विंदिया

जिनन पुरस्कृत होवे उनको कहनी करना अहो भगवन् ! एक२ मनुष्यने मनुष्यपने कितनी द्रव्य इन्द्रियों अतीत कालमें की ? अहो गौतम ! अनंत बद्धेलक आठ, पुरस्कृत किसी को है किसी को नहीं है, जिनको है उस को आठ, सोलह चौबीस, संख्यात, असंख्यात व अनंत है वाणव्यंतर, ज्योतिषी, यावत् ग्रैवेयक तक में नारकी जैसे कहना अहो भगवन् एक २ मनुष्यने अतीत काल में विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित में कितनी द्रव्य इन्द्रियों की ? अहो गौतम ! किसीने की और किसीने नहीं भी की जिनने की उनने आठ व सोलह की. बद्धेलक नहीं है पुरस्कृत किसी का है और किसी को नहीं है. यदि है

अतीता पण्णत्ता ? गोयमा! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ, केवइया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ ॥ वाणमतरा जोइसिया जहा णेरइया, सोहम्मग देवेवि जहा णेरइते, णवर सोहम्मग देवस्स ॥ विजय वेजयत जयत अपराजियदवे केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता? गोयमा! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठवा, सोलसवा केवइया बद्धेल्लगा? गोयमा! णत्थि, केवइया पुरेक्खडा? गोयमा! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्सत्थि अट्ठवा सोलसवा, सव्वट्ठसिद्धग देवत्ताए जहा नेरइयस्स, एव जाव गेवेज्जगदेवस्सवि सव्वट्ठसिद्धय देवत्ताए ताव णेयव्व ॥ एगमे

वो आठ व सोलह हैं एक २ मनुष्यने सर्वार्थ सिद्धाने अतीतकाल आश्रिय कितनी द्रव्य इन्द्रियों की ? अहो गौतम ! किसीने की और किसीने नहीं की, यदि की तो आठ की, क्यों की सर्वार्थ सिद्ध का एकही भव करते हैं बद्धेलक नहीं हैं पुरस्कृत किसी को है, किसी को नहीं है, यदि होवे तो आठ है वाणव्यंतर ज्योतिषी का नारकी जैसे कहना सौधर्म देवलोक का भी नरक मैसे कहना, परंतु सौधर्म देवलोक के किसी देवताने अतीत काल में विजय वैजयंत, जयंत व अपराजित देवपने द्रव्य इन्द्रियों की है और किसीने नहीं भी की है जब की है तब आठ की है बद्धेलग नहीं है, और पुरस्कृत किसीको है किसी

गस्सण भंते! विजय वेजयंत जयंत अपराजित देवस्स नेरइयत्ते केवइया दव्विंदिया
अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा? णत्थि, केवइया पुरेक्खडा ?
णत्थि एवं जाव पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियत्ते मणुस्सत्ते अणंता अतीता बद्धेल्लगा
णत्थि, पुरक्खडा अट्ठवा सोलसवा चउवीसवा संखेज्जावा ॥ वाणमंतर जोइसियत्ते
जहा णेरइयत्ते, सोहम्मग देवत्ते अतीता अणंता, बद्धेल्लगा णत्थि, पुरेक्खडा
कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्स अत्थि अट्ठवा सोलसवा चोवीसवा संखेज्जावा
एवं जाव गेवेज्जग देवत्तेवि, विजय वेजयंत जयंत अपराजितत्ते अतीता कस्सइ
अत्थि कस्सइ णत्थि जस्सत्थि अट्ठ, केवतिया बद्धेल्लगा? अट्ठ, केवतिया पुरक्खडा?

को नहीं है, जब है तब आठ व सोलह है सर्वार्थसिद्ध देवता में नारकी जैसे कहना जैसे सौधर्म देवलोक का कहा वैसे ही ग्रैवेयक पर्यंत सब देवताओं का जानना सर्वार्थसिद्धि में वैसे ही इन्द्रियों का कहना अहो भगवन् ! एक २ विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित देवोंने अतीत कालमें नारकी में कितनी द्रव्य इन्द्रियों की ? अहो गौतम! अनंत द्रव्य इन्द्रियों की बद्धेलक नहीं है और पुरस्कृत भी नहीं है ऐसे ही तिर्यंच पंचेन्द्रिय पर्यंत कहना मनुष्य में अतीत अनंत, बद्धेलक नहीं है और पुरस्कृत आठ, सोलह संख्यात हैं वाणव्यंतर ज्योतिषी का नारकी जैसे कहना सौधर्म देवपने अतीत काल में अनंत, बद्धेलक नहीं है

केस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्स अत्थि अट्ठ ॥ एगमेगस्सण भंते ! विजय विजयंत जयंत अपराजिय देवस्स सव्वट्ठसिद्ध देवत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता ? गोयमा ! णत्थि केवइया बद्धेल्लगा पण्णत्ता ? गोयमा ! णत्थि केवइया पुरेक्खडा पण्णत्ता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्सत्थि अट्ठ एगमेग॰ स्सण भंते ! सव्वट्ठसिद्धग देवस्स णेरइयत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता, केवतिया बद्धेल्लगा, पण्णत्ता ? गोयमा ! णत्थि, केवइया पुरेक्खडा गोयमा ! णत्थि ॥ एवं मणुस्सवज्ज जाव गेवेज्जग देवत्ते ॥ णवर मणुस्सत्ते अतीता अणंता, केवइया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि, केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा !

और पुराकृत किसी को है किस को नहीं है, जिस को है उन को आठ, सोलह चौवीस व संख्यात है ऐसे ही ग्रैवेयक देव पर्यंत कहना विजय वैजयंत जयंत व अपराजित में अतीत किसी का है और किसी को नहीं है जिस को है उस को आठ बद्धत्व आठ है, पुराकृत किसी का है किसी को नहीं है, जिस को है उस को आठ है एक २ विजय वैजयंत, जयंत व अपराजित को सर्वार्थ सिद्धपने अतीत काल में द्रव्य इन्द्रियों नहीं है, बद्धत्व नहीं है और पुराकृत किसी को है, किसी को नहीं है जिस को है उसको आठ है अहो भगवन् ! एक २ सर्वार्थ सिद्ध देव को नारकीपने कितनी द्रव्य इन्द्रियों अतीत काल में

अट्ठ ॥ विजय विजयंत जयंत, अपराजित देवत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि अट्ठ, केवतिया बद्धेल्लगा पण्णत्ता ? गोयमा ! णत्थि केवइगा पुरक्खडा पण्णत्ता ? गोयमा ! णत्थि ॥ एग मेगस्सणं भंते ! सव्वट्ठसिद्धगदेवस्स सव्वट्ठसिद्धगदेवत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! णत्थि, केवतिया बद्धेल्लगा पण्णत्ता ? गोयमा ! अट्ठ, केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! णत्थि ॥१५॥ णेरइयाणं भंते ! णेरइयत्ते केवतीया दव्विं-दिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पण्णत्ता, केवइया बद्धेल्लगा पण्णत्ता ?

की ? अहो गौतम! अनंत द्रव्य इन्द्रियोंकी बद्धेलक नहीं है और पुराकृत नहीं है ऐसे ही मनुष्य छोडकर ग्रैवेयक देव पर्यंत कहना मनुष्य में अतीत काल में अनंत, बद्धेलक नहीं है और पुराकृत आठ, विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजितमें अतीतमें किसीका और किसीका नहीं है जिनको है उनको आठ, बद्धेलक नहीं है पुराकृत नहीं है सर्वार्थ सिद्ध का देव सर्वार्थसिद्ध के देवपने अतीत कालमें द्रव्येन्द्रिय नहीं की बद्धेलक आठ और पुराकृत नहीं होगा॥१५॥अब बहुत जीवों आश्रिय प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! बहुत नारकीका नारकी पने अतीत काल में कितनी द्रव्य इन्द्रियों करी ? अहो गौतम ! अनंत करी अहो गौतम ! कितनी

गोयमा ! असंखेज्जा केवतिया पुरेक्खडा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता ॥ णेरइयाणं भंते ! असुरकुमारत्ते केवतिया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता, ...बद्धेल्लगा,? गोयमा ! णत्थि, केवतिया पुरक्खडा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता एवं जाव गेवेज्जगत्ते ॥ णेरइयाणं भंते ! विजयवेजयंतजयंत अपराजित देवत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! णत्थि, केवतिया बद्धेल्लगा पण्णत्ता ? गोयमा णत्थि, केवइया पुरक्खडा ? गोयमा ! असंखेज्जा एवं सव्वट्ठसिद्धगदेवत्तेवि ॥ एवं जाव पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं सव्वट्ठसिद्धदेवत्ते भाणियव्वं, णवर

बद्धेलक है ? अहो गौतम ! असंख्यात अहो भगवन् ! कितने पुरस्कृत कहे ? अहो गौतम ! अनंत अहो भगवन् ! बहुत नारकी की का असुर कुमार पने अतीत कालमें कितनी द्रव्य इन्द्रियों कही ? अहो गौतम ! अनंत, बद्धेलक नहीं है, और पुरस्कृत अनंत ऐसे ही ग्रैवेयक देवता पने तक जानना अहो भगवन् ! नारकी का विजयादि चार अनुत्तर विमान पने अतीत काल में कितनी द्रव्य इन्द्रियों की ? अहो गौतम ! नहीं है बद्धेलक नहीं है, और पुरस्कृत असंख्यात ऐसे ही सर्वार्थ सिद्ध का जानना जैसे नारकी का कहा वैसे ही तिर्यंच पंचेन्द्रिय पर्यंत सर्वार्थ सिद्ध पने का जानना जिस में इतनी विशेषता कि वनस्पति काया

वणप्फइकाइयाणं विजय वेजयंत जयंत अपराजित देवत्ते सव्वट्ठसिद्धदेवत्ते पुरेकडा अणंता सव्वसि मणुस्ससव्वट्ठसिद्धग वज्जाण सट्ठाणे बद्धेल्लगा असंखेज्जा, परट्ठाणे बद्धे ल्लगा णत्थि वणस्सइ काइयाणं सट्ठाणे बद्धेल्लगा अणंता, मणुस्साणं णेरइयत्ते अतीता अणंता, बद्धेल्लगा णत्थि, पुरेकडा अणंता ॥ एवं जाव गेवेज्जग देवत्ते णवरं सट्ठाणे अतीता अणंता, बद्धेल्लगा सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा, पुरेकडा अणंता ॥ मणुस्साणं भंते ! विजय विजयंत जयंत अपराजिय देवत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! संखेज्जा, केवइया बद्धेल्लगा ? गोयमा !

का विजय, वैजयंत, जयंत, अपराजित व सर्वार्थ सिद्ध देवपने अतीत अनंत लेना मनुष्य व सर्वार्थ सिद्ध वर्जकर सब में बद्धलक स्वस्थान आश्रिय असंख्यात पर स्थान आश्रिय नहीं है वनस्पति काया आश्रिय बद्धलक स्वस्थान आश्रिय अनंत लेना मनुष्य नारकी पने अतीत अनंत, बद्धलक नहीं है पुराकृत अनंत ऐसे ही ग्रैवेयक देव पर्यंत कहना परंतु अतीत अनंत, बद्धलक स्यात् संख्यात स्यात असंख्यात और पुराकृत अनंत मनुष्य का विजयादि चार अनुत्तर विमानपने अतीत द्रव्य इन्द्रिय संख्यात, बद्धलक नहीं है और पुराकृत स्यात संख्यात व

णत्थि कवइया पुरेकडा ? गोयमा ! सिय सखेज्जा सिय असखेज्जा, एवं सव्वट्ठ सिद्धग देववज्जेयि, वाणमंतर जोइसिय देवाण जहा णेरइयाण, सोहम्मग देवाणं एव चेव णवर विजय वेजयत जयत अपराजित देवस्स अतीता असखेज्जा, बद्धेल्लगा णत्थि पुरेकडा असंखिज्जा सव्वट्ठसिद्धदवस्से अतीता णत्थि बद्धेल्लगा णत्थि पुरकडा असखिज्जा एव जाव गेवेज्जग देवाण, विजय वेजयत जयत अपराजित देवाण भंते ! णेरइयत्ते केवतिया दविंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता, केवइया बद्धेल्लगा ? णत्थि, कवइया पुरेकडा ? णत्थि, एव जाव जोइसियत्ते, णवर मणूसत्ते अतीता अणता, केवतिया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! णत्थि, पुरकडा असखेज्जा, एव

स्यात् असख्यात ऐसे ही सर्वार्थ सिद्ध देवता का भी मानना वाणव्यंतर ज्योतिषी का नारकी जैसे सौधर्म देवलोक का भी वैसे ही परंतु विजयादि चार में अतीत असंख्यात ऐसे ही ग्रैवेयक तक पर्यन्त कहना अहो भगवन् ! विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित देव को अतीत काल में नारकीपने कितनी द्रव्य इन्द्रियों की ? अहो गौतम ! अनंत बद्धेलक नहीं है और पुराकृत असंख्यात ऐसे ही ज्योतिषी पर्यन्त कहना मनुष्य में अतीत अनंत बद्धेलक नहीं है पुराकृत असंख्यात ऐसे ही ग्रैवेयक देव तक कहना स्वस्थान आश्रिय अतीत असंख्यात, बद्धेलक असंख्यात, और पुराकृत असंख्यात सर्वार्थ सिद्ध

जाव गेवज्जग देवत्ते, सट्ठाणे अतीता असंखेज्जा, केवइया बद्धेल्लगा ? गोयमा ! असंखेज्जा, केवइया पुरेकडा ? गोयमा ! असंखेज्जा, सव्वट्ठसिद्धग देवत्ते अतीता णत्थि, बद्धेल्लगा णत्थि पुरेकडा असंखेज्जा, सव्वट्ठ सिद्धग देवाण भंते ! णेरइयत्ते केवतिया दव्विंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता, केवइया बद्धेल्लगा पण्णत्ता ? गोयमा ! णत्थि केवइया पुरेकडा ? गोयमा ! णत्थि एवं मणुस्स वज्जं जाव गेवेज्जग देवत्ते, मणुस्सत्ते अतीता अणंता बद्धेल्लगा णत्थि, पुरेकडा असंखेज्जा, विजय विजयंत जयंत अपराजित देवत्ते केवइया दव्विंदिया अतीता

देव में अतीत काल में नहीं है, बद्धेलक नहीं है व पुराकृत असंख्यात है अहो भगवन् ! सर्वार्थ सिद्ध देव को नारकी में अतीत काल आश्रिय कितनी द्रव्य इन्द्रियों कही ? अहो गौतम ! अनंत, बद्धेलक नहीं है, पुराकृत नहीं है ऐसे ही मनुष्य वर्जकर ग्रैवेयक देव पर्यन्त कहना मनुष्य में अतीत काल आश्रिय अनंत, बद्धेलक नहीं है व पुराकृत संख्यात विजय विजयंत जयंत अपराजित में द्रव्येन्द्रिय अतीत काल में संख्यात है, बद्धेलक नहीं और पुराकृत नहीं अहो भगवन् ! सर्वार्थ सिद्ध देव को सर्वार्थ सिद्ध देवपने अतीत काल में कितनी द्रव्येन्द्रियों कही ? अहो गौतम ! अतीत आश्रिय द्रव्येन्द्रिय नहीं

पण्णत्ता ? गोयमा ! सखज्जा, केवइया बद्धेल्लगा पण्णत्ता ? गोयमा! णात्थि केवइया पुरकडा पण्णत्ता ? गोयमा णत्थि ॥ सव्वट्ठ सिद्धग देवाण भंत ! सव्वट्ठसिद्धग देवत्ते केवइया दविंदिया अतीता ? णत्थि, केवइया बद्धेल्लगा ? संखेज्जा, केवइया पुरकडा ? णत्थि ॥ १६ ॥ कइण भंते ! भाविंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच भाविंदिया पण्णत्ता ? तजहा सोइंदिए जाव फासिंदिए ॥ णेरइयाण भंते ! कति भाविंदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच भाविंदिया पण्णत्ता तजहा सोइंदिए जाव फासिंदिए, एवं जस्स जइंदिया तस्स ततिया भाणियव्वा जाव वेमाणियाणं ॥ १७ ॥ एगमगस्सण भंते ! नरइयस्स केवतिया भाविंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा !

है, बद्धलक संख्यात और पुराकृत नहीं है ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! भावेन्द्रिय कितनी कही ? अहो गौतम ! भावेन्द्रिय पांच कही जिन के नाम—श्रोतेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रिय अहो भगवन् ! नारकी को कितनी भावेन्द्रिय कही ? अहो गौतम ! नारकी को श्रोतेन्द्रिय यावत् स्पर्शेन्द्रिय यों पांच भावेन्द्रिय कही एस ही वैमानिक पर्यंत कहना ॥ १७ ॥ अब एक जीव आश्रिय समुच्चय चौबीस दंडक पर प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! एकेक नरियेन अतीत काल में कितनी भावेन्द्रिय की है ? अहो गौतम ! अनंत की है बद्धेलक कितनी है ? पांच है, और पुराकृत कितनी करेंगे ? अहो गौतम ! पांच, दश,

अणता पण्णत्ता, केवइया धद्धेल्लगा पण्णत्ता? गोयमा! पंच इवइया पुरेकडा पण्णत्ता? गोयमा! पंचवा दसवा, एक्कारसवा संखेज्जावा असंखेज्जावा अणतवा एवं असुरस्सवि णवरं पुरकडा पचवा छवा संखेज्जावा असंखेज्जावा अणता, एवं जाव थणिय कुमारस्सवि ॥ एवं पुढविकाइया, आउकाइया वणस्सइकाइयस्सवि, वेइंदियतेइंदियचउरिंदियस्सवि तेऊकाइय वाऊकाइयस्सवि एवं चेव णवरं पुरकडा छवा सतवा संखेज्जावा असंखेज्जावा, अणतावा ॥ पंचिंदिया तिरिक्खजोणियस्स जाव ईसाणस्स जहा असुरकुमा, रस्स, णवरं मणुसस्स पुरेक्खडा कस्सइअत्थि कस्सइणत्थि भाणियव्वं ॥ सणकुमारस्स जाव गेवेज्जगस्स जहा णेरइयस्स ॥ विजय विजयंत जयंत अपराजिय देवस्स अतीता

ग्यारह, संख्यात असंख्यात व अनंत करेंगे असुर कुमार का ऐसे ही जानना; परंतु वे पांच, छ, संख्यात असंख्यात व अनंत करेंगे ऐसे ही स्थनित कुमार का जानना पृथ्वीकाया, अप्काया, वनस्पतिकाया, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, व चतुरिन्द्रिय का ऐसे ही कहना तेउ वायु का ऐसे ही जानना परंतु पुराकृत छ, सात, संख्यात असंख्यात व अनंत जानना तिर्यंच पंचेन्द्रिय मनुष्य, वाणव्यंतर, ज्योतिषी, सौधर्म व ईशान देवलोक का असुर कुमार जैसे जानना विशेषता इन में यह है कि मनुष्य में पुराकृत किसी को है और किसी को नहीं भी है सनत्कुमार देव से ग्रैवेयक देव पर्यंत का नारकी जैसे कहना विजय,

अणता, बद्धेलगा पच, पुरेकडा पचवा दसवा पण्णसवा सखेज्जवा, सव्वट्ठसिद्धग देवस्स अतीता अणता, बद्धेलगा पच, केवइया पुरेक्खडा पच ॥ १८ ॥ णेरइयाण भते ! केवतिया भाविंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता केवइया बद्धेलगा पण्णत्ता? गोयमा ! असखेज्जा पण्णत्ता, केवइया पुरेक्खडा अणता एव जहा दव्विंदिएसु पोहत्तेण दंडओ भाणिओ तहा भाविंदिएसुयावि पोहत्तेण दंडओ भाणियव्वो, णवर वणस्सइ काइयाण बद्धेलगावि अणता ॥ १९ ॥ एगमेगस्सण भते ! णेरइयस्स णेरइयत्ते केवइया भाविंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा अणता पण्णत्ता, केवइया बद्धेलगा

वैजयंत, जयंत व अपराजित में अतीत अनत, बद्धेलक पांच, व पुराकृत पांच, दस, पन्नरह व संख्यात जानना सर्वार्थ सिद्ध में अतीत अनत, बद्धेलक, पांच, व पुराकृत पांच ॥ १८ ॥ अब बहुत जीव आश्रिय प्रश्न करते हैं अहो भगवन् ! बहुत नारकीने कितनी भावेन्द्रिय अतीत काल में की ? अहो गौतम ! बहुत नारकीने अनंत भावेन्द्रिय अतीत काल की है हा भगवन् ! कितने बद्धेलक ? अहो गौतम ! असंख्यात, कितनक पुराकृत ? अहो गौतम ! अनंत यों द्रव्येन्द्रिय का बहुवचन आश्रिय दंडक कहा या वैस ही भावेन्द्रिय में सब कहना परंतु वनस्पति काया में अनंत बद्धेलक जानना ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! एक २ नारकीने नारकी पने कितनी भावेन्द्रिय अतीत काल में की ? अहो गौतम ! अनंत भावेन्द्रिय की

पण्णत्ता ? गोयमा ! पंच, केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइअत्थि कस्सइणत्थि, जस्सअत्थि पंचवा, दसवा, पण्णरसवा, संखज्जावा, असंखेज्जावा, अणतावा ॥ एवं असुरकुमाराणं जाव थणियकुमाराणं, णवर बद्धेल्लगा णत्थि, पुढवीकाइयस्स जाव बेइंदियत्ते जहा दव्विंदिया ॥ तेइंदियत्ते- तहेव णवरं पुरेक्खडा तिण्णिवा छवा, णवसवा संखज्जावा असंखेज्जावा, अणंतावा, एवं चउरिंदियत्तएवि, णवर पुरक्खडा चत्तारिवा अट्ठवा बारसवा संखेज्जावा असंखेज्जावा, अणतावा, एवंचेवगमा चत्तारि णेयव्वा जेचेव दव्विंदिएसु णवर ततियगमो जाणियव्वो,जस्स जस्स जइइंदिया

भग भगवन् ! कितने बद्धमक कहते हैं अहो गौतम ! पांच, कितने पुराकृत होंगे अहो गौतम ! कोई करेंगे और कोई नहीं भी करेंगे यदि कोई करेंगे तो पांच, दश, पन्नरह, संख्यात असंख्यात व अनंत करेंगे ऐसे ही असुर कुमार यावत् स्थनित कुमार तक मानना इस में बद्धमक कहना नहीं पृथ्वी काया यावत् बेइन्द्रिय का द्रव्येन्द्रिय जैसे कहना तेइन्द्रिय में भी वैसे ही कहना परंतु पुराकृत तीन, छ, नव, संख्यात, असंख्यात व अनंत जानना चतुरिन्द्रिय का भी वैसे ही कहना परंतु पुराकृत चार, आठ बारह संख्यात असंख्यात व अनंत जानना यों चारों गमा जैसे द्रव्येन्द्रिय का कहे वैसे ही कहना भिन्न में इतना विशेष तीसरे गमा में जानना, कि जिस को जितनी इन्द्रियों हैं उतनी इन्द्रियों पुराकृत में जानना चौथे गमे में

सपुरक्खडा णं भंते! केवइया ? गोयमा ! णत्थि ॥ ...

सेपुरक्खडानु णतव्वा, चउरथगमा जहय दव्विंदियाजाव सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं, सव्वट्ठसि-
द्धगदेवाणं केवतिया भाविंदिया अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! णत्थि, केवइया
बद्धेल्लगा पण्णत्ता ? गोयमा ! संखेज्जा, केवइया पुरेक्खडा पण्णत्ता ? गोयमा ! णत्थि
इति पण्णवणाए भगवईए पण्णरसमं इंदियपयं सम्मत्तं ॥ १५ ॥ *

इन्द्रिय जैसे सर्वार्थसिद्ध देव पर्यंत कहना अहो भगवन् ! बहुत सर्वार्थ सिद्ध देवोंने सर्वार्थ सिद्धपने
अतीत काल में कितनी भावेन्द्रिय की? अहो गौतम! नहीं की, बद्धलक संख्यात है और पुरस्कृत नहीं
करेंगे यह भगवती पन्नवणा का पन्दरवा इन्द्रिय पद संपूर्ण हुवा ॥ १५ ॥ *







* षोडश प्रयोग पदम् *

कतिविहेणं भंते ! पओगे पण्णत्ते ? गोयमा ! पण्णरसविह पण्णत्ते तंजहा-सच्चमण प्पओगे, मोसमणप्पओगे, सच्चामोस मणप्पओग, असच्चामोस मणप्पओगेवि एवं वइप्पओगे चउहा ॥ ओरालियसरीरकायप्पओगे, ओरालियमीसगसरीरकायप्पयोगे,

अब सोलवा प्रयोग पद कहते हैं जिस कर अन्य के साथ सम्बन्ध होवे उसे प्रयोग कहते हैं अहो भगवन् ! प्रयोग कितने प्रकार के कहे हैं ? अहो गौतम ! पन्दरे प्रकार के प्रयोग कहे हैं वे भिन्न प्रकार हैं उस प्रकार कहते हैं—१ सत्य मन प्रयोग होवे पदार्थ का स्वभाव उसे यथावस्थित वस्तु के स्वरूप की चिंतवना करे वह सत्य मन प्रयाग, २ असत्य मन प्रयाग सत्य से विपरीत मानना, ३ सत्य मृषा [मिश्र] मन प्रयाग उक्त दोनों प्रकार को मिलाकर कर चिंतवे और ४ असत्य मृषा (व्यवहार) मन प्रयाग जो सत्य भी नहीं तैसे असत्य भी नहीं ऐसा जिससे जैसे मलना तेल व दही है और जिनके की दीक्षा अमेला है इत्यादि व्यवहार मन प्रयोग, ऐसेही चार वचन के प्रयोग मानना यथा ५ सत्य वचन प्रयोग, ६ असत्य वचन प्रयोग, ७ मिश्र वचन प्रयोग, ८ व्यवहार वचन प्रयोग, सात काया के ९ औदारिक शरीरकाया का प्रयोग वह पर्याप्त मनुष्य तथा तिर्यंचका शरीर मानना, १० औदारिक मिश्र शरीर काया प्रयोग वह अपर्याप्त होते तो कार्मन के साथ मिश्र मानना और वैक्रय करते वक्त मनुष्य तथा तिर्यंच

वेउव्वियसरीरकायप्पओगे, वेउव्विय मीसग सरीर कायप्पओगे, आहारग सरीर कायप्पओगे आहारगमीसग सरीर कायप्पओगे कम्मासरीर कायप्पओगे ॥ १ ॥ जीवाण भंते ! कतिविहेप्पओग पण्णत्ते ? गोयमा ! पण्णरसविहेप्पओगे पण्णत्ते

पंचेन्द्रिय और वायुकाय वैक्रय शरीर करे तथा पीछा समावे तब, केवल समुद्घात के चौथे पांचवे समय मे औदारिक वैक्रय की मिश्रता मानना. ११ वैक्रय शरीरकाया प्रयोगपर्याप्त देवता नारकीका शरीर तथा लब्धिधर मनुष्य तिर्यंच वैक्रय किया शरीर १२ वैक्रय मिश्र शरीर काया प्रयोग सो देवता नारकी के अपर्याप्त अवस्था म देव उत्तर वैक्रय करे तब वैक्रय का मिश्र होवे, तथा मनुष्य तिर्यंच वायु वैक्रय करे तब भी वैक्रय औदारिक के साथ मिश्र होवे, १३ आहारक शरीर प्रयोग—चौदहपूर्वधर मुनि संशय की निवृत्ति के लिये आहरक शरीर पूतला बनावे सो, १४ आहारक मिश्रकाया प्रयोग आहारक शरीर करते तथा पुनःपीछे औदारिक के साथ आहारक की मिश्रता रहे और १५ कार्माण शरीर काया प्रयोग भव पर्यु विग्रहगति (रास्ते चलते अर्थात् एक शरीर छोड अन्य शरीर में जावे) गमन करता तथा केवल समुद्घात के चौथे पांचवे समय में पाता है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जीव के कितने प्रकार के प्रयोग कहे हैं ? अहो गौतम ! पन्द्र ही प्रकार के प्रयोग कहे हैं तद्यथा— १ सत्य मन प्रयोग यावत् १५ कार्माण शरीर काया प्रयोग ऐसे अहो भगवन् ! नेरिये के कितने

तंजहा सच्चमणप्पओगे जाव कम्मासरीरकायप्पओगे ॥ णेरइयाणं भंते ! कतिविहे पओगे पण्णत्ते ? गोयमा ! एक्कारसविहे पओगे पण्णत्ते तंजहा सच्चमणप्पओगे जाव असच्चामोसवइप्पओगे, वेउव्विय सरीर कायप्पओगे, वेउव्वियमीससरीर कायप्पओगे, कम्मासरीरकायप्पओगे ॥ एवं असुरकुमाराणवि जाव थणियकुमाराणं ॥ पुढविकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! तिविहे पओगे पण्णत्ते ? तंजहा ओरालिय सरीर कायप्पओगे, ओरालिय मीससरीर कायप्पओगे, कम्मा सरीर

प्रकार का प्रयोग कहा है ? अहो गौतम ! इग्यारे प्रकार के प्रयोग कहे हैं तद्यथा—१ सत्य मन प्रयोग, २ असत्य मन प्रयोग, ३ मिश्र मन प्रयोग, ४ व्यवहार मन प्रयोग, ५ सत्य वचन, ६ असत्य वचन ७ मिश्र वचन ८ व्यवहार वचन, ९ वैक्रेय शरीर काया प्रयोग, १० वैक्रेय मिश्र काया प्रयोग और ११ कार्मण शरीर प्रयोग यों ग्यारह प्रकार नरक के इग्यार प्रयोग कहे ऐसे ही प्रकार असुरकुमारादि दशों ही भुवनपति देव के भी इग्यार ही प्रकार के प्रयोग कहना पृथ्वीकाया का प्रश्न ? अहो गौतम ! तीन प्रकार के प्रयोग कहे हैं तद्यथा—१ औदारिक शरीर काया प्रयोग बन्ध, २ औदारिक मिश्र शरीर काया प्रयोग बन्ध, और कार्मण शरीर काया प्रयोग बन्ध ऐसे ही यावत् वनस्पति काया

कायप्पओग ॥ एवं जाव वणस्सइ काइयाणं; णवरं वाउकाइयाण पंचविहे पओगे पण्णत्ते तंजहा ओरालिय सरीर कायप्पओगे, ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगे, वेउव्विएवि दुविहे, कम्मासरीरकायप्पओगे ॥ बेइंदियाण पुच्छा ? गोयमा ! चउव्विहे पओगे पण्णत्ते तंजहा—असच्चामोस वइप्पओगे, ओरालिय सरीर कायप्पओगे ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगे, कम्म सरीर कायप्पओगे ॥ एवं जाव चउरिंदियाण ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा !

पर्यंत ही तीनों प्रयोग कहे हैं, जिस में इतना विशेष कि—वायु काया के पांच प्रकार के प्रयोग कहे हैं १... तीन उक्त और ४ वैक्रय शरीर काया प्रयोग कहे तथा ५ वैक्रय मिश्र शरीर काया प्रयोग कहे। बेइन्द्रिय का प्रश्न ? अहो गौतम ! चार प्रकार का प्रयोग कहा है तद्यथा—१ असत्या मृषा (व्यवहार) वचन प्रयोग, २ औदारिक शरीर काया प्रयोग, ३ औदारिक मिश्र शरीर काया प्रयोग, और ४ कार्माण शरीर काया प्रयोग ऐसे ही तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय का भी जानना पंचेन्द्रिय तिर्यंच पालक का प्रश्न ? अहो गौतम ! तेरह प्रकार के प्रयोग कहे हैं तद्यथा—१ सत्य मन प्रयोग, २ असत्य मन प्रयोग, ३ मिश्र मन प्रयोग, ४ व्यवहार मन प्रयोग, ५ सत्य वचन, ६ असत्य वचन, ७ मिश्र वचन,

तेरसविहेपओगे पण्णत्ते तंजहा सच्चमणप्पओगे, मोसमणप्पओगे, सच्चामोसमणप्पओगे, असच्चामोसमणप्पओगे, एवं वइप्पओगेवि, ओरालियसरीरकायप्पओगे, ओरालियमीस सरीर कायप्पओगे, वेउव्वियसरीर कायप्पओगे, वेउव्विय मीस सरीर कायप्पओगे, कम्मा सरीर कायप्पओगे ॥ मणुसाणं पुच्छा ? गोयमा ! पन्नरसविहे पण्णत्ते तंजहा सच्चा, मणप्पओगे जाव कम्मासरीर कायप्पओगे ॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणियाणं जहा णेरइयाणं ॥ २ ॥ जीवाणं भंते ! किं सच्चमणप्पओगी, जाव किं कम्मासरीर

८ व्यवहार वचन, ९ औदारिक शरीर प्रयोग, १० औदारिक मिश्र शरीर काया प्रयोग, ११ वैक्रेय शरीर काया प्रयोग, १२ वैक्रय मिश्र शरीर काया प्रयोग और १३ कार्माण शरीर काया प्रयोग मनुष्य का प्रश्न ? अहो गौतम ! पन्द्रह ही प्रकार के प्रयोग कहे हैं तद्यथा—१ सत्य मन प्रयोग, २ असत्य मन प्रयोग, ३ मिश्र मन प्रयोग, ४ व्यवहार मन प्रयोग, ५ सत्य वचन, ६ असत्य वचन, ७ मिश्र वचन, ८ व्यवहार वचन, ९ औदारिक शरीर प्रयोग, १० औदारिक मिश्र शरीर काया प्रयोग, ११ वैक्रय शरीर प्रयोग, १२ वैक्रय मिश्र काया प्रयोग, १३ आहारक शरीर प्रयोग, १४ आहारक मिश्र शरीर काया प्रयोग और १५ कार्माण शरीर काया प्रयोग वाणव्यंतर ज्योतिषी और वैमानिक के जैसा नेरिया का कहा वैसा कहना सब में इग्यार प्रयोग हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! सब जीवों क्या सत्य मन

द्विसयोगी ४ भांगे

आहारक	मिश्र
१	१
१	३
३	१
३	३

कायप्पओगी ? गोयमा ! जीवा सव्वेवि ताव होज्जा, सत्तम पप्पओगीवि जाव वेउव्विय मिस्स सरीर कायप्पओगीवि कम्मा सरीर कायप्पओगीवि॥अहवेगेय आहारग सरीर कायप्पओगी, अहवेगय आहारगा सरीरकायप्पओगिणोय॥ अहवेगय आहारग मिस सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय आहारग मीसगा सरीर कायप्पओगिणोय ॥ चउभंगो ॥ अहवेगय आहारग सरीर कायप्पओगीय आहारगा मीस सरीर कायप्पओगीय, अहव मेगय आहारगा सरीर कायप्पयोगीय, आहारगा मीस सरीर

प्रयोग हैं कि यावत् क्या सब जीवों कार्माण शरीर काया प्रयोगी हैं ? अहो गौतम ! जीव सब का भी, ऐसा ही कहना सत्य मन प्रयोगी भी हैं यावत् वैक्रय मिश्र शरीर काया प्रयोगी भी हैं और कार्माण शरीर प्रयोगी भी हैं क्यों कि स्थावरों में विग्रहगतिवाले बहुत पाते हैं इस लिये इन का भी सदैव सद्भाव है इन भागों का विरह नहीं है परंतु आहारक शरीर प्रयोगी किसी वक्त मिलते हैं किसी वक्त नहीं भी मिलते हैं क्यों कि उत्कृष्ट छ महीना का अन्तर पडता है, और मिलते हैं तब जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट पृथक् हजार मिलते हैं इस लिये आहारक शरीर के ७३ भांगे होते हैं जिन में से एक

एक संयोगी ८ भंग	
१ औदारिक	मिश्र एक
२ औदारिक	मिश्र बहुत
३ आहारक	एक
४ आहारक	बहुत
५ आहारक	मिश्र एक
६ आहारक	मिश्र बहुत
७ कार्माण	एक
८ कार्माण	बहुत

कायप्पओगिणोय अहवेगेय आहारग सरीर कायप्पओगीणोय; आहारग मीस सरीरकायप्पओगीय; अहवेग आहारग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीस सरीर कायप्पओगिणोय; एए जीवाण अट्ठ भंगा ॥ १॥ णेरइयाण भंते ! किं सच्चमणप्पओगी जाव किं कम्मा सरीर कायप्पओगी? गोयमा! णेरइया सव्वेवि ताव होज्जा, सच्चमणप्पओगीवि जाव वेउव्विय मीसा सरीर कायप्पओगीवि; अहवेगेय कम्मा सरीर कायप्पओगीय; अहवेगय कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय ॥ एवं अ, र

संयोगी ८, १ आहारक शरीरवाला एक, २ आहारक शरीरवाले बहुत, ३ आहारक मिश्रवाला एक, और ४ आहारक मिश्रवाले बहुत द्विसंयोगी भी ४ भंग १ आहारक एक, आहारक मिश्र एक, २ आहारक एक आहारक मिश्र बहुत, ३ आहारक बहुत, आहारक मिश्र एक, और ४ आहारक शरीर काया प्रयोगी भी बहुत और आहारक मिश्र शरीर काया प्रयोगी भी बहुत यों सब आहारक शरीर के आठ भांग हुवे ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नारिये क्या सत्य मन प्रयोगी हैं कि यावत् क्या कार्माण मन प्रयोगी हैं ? अहो गौतम ! नारिये सब कैसे ही हैं अर्थात् नरक में कार्माण छोडकर दश योग सदैव पाते हैं

कुमारावि जाव थणियकुमारा। पुढवि काइयाणं भंते ! किं ओरालिय सरीर कायप्प- ओगी, ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगी, कम्मासरीर कायप्पओगी ? गोयमा ! पुढवि काइयाणं ओरालिय सरीर कायप्पओगीवि ओरालिय मीस सरीर कायप्प

भावार्थ—नरकमें उत्पन्न होने का बारह मुहूर्त का विरह है तथापि—उधर विक्षेप करते वैक्रिय मिश्र योगी पाते हैं इस लिये बहुत से भेद वैक्रिय मिश्रयोगी बहुत पाते हैं इस लिये इस योग का भांगा नहीं होता है फक्त कार्माण शरीर किस वक्त मिलता है और किस वक्त नहीं मिलता है किस वक्त शरीर काल में मिलता है तब जघन्य एक, दो, तीन उत्कृष्ट असंख्यात मिलते हैं, इस लिये दो भांगे भी पाते हैं वैक्रियवाले बहुत, कार्माणवाला एक, २ वैक्रियवाले भी बहुत, कार्माणवाले भी बहुत इस प्रकार दो असुरकुमार से यावत् स्तनित कुमार तक का जानना सब में दो दो भांगे पाते हैं अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया क्या औदारिक शरीर काया प्रयोगी है, २ औदारिक मिश्र शरीर काया प्रयोगी हैं, ३ कार्माण शरीर काया प्रयोगी हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वी काया औदारिक शरीर काया प्रयोगी भी है, औदारिक मिश्र शरीरकाया प्रयोगी भी है और कार्माण शरीरकाया प्रयोगी भी है यह तीन योगवाले हैं यों यावत् वनस्पति काया पर्यन्त कहना जिस में इतना विशेष वायुकाया ४ वैक्रिय शरीर काया प्रयोग, वैक्रिय मिश्र शरीर

आगीवि, कम्मा सरीर कायप्पओगीवि, एवं जाव वणप्फइकाइयाणं, पञ्चरे वाउकाइया वेउब्विय सरीर कायप्पआगीवि, वेउब्विय मिस सरीर कायप्पओगीवि बेइंदियाण भंत ! किं ओरालिय सरीर कायप्पओगी जाव कम्मासरीरकायप्प ओगी ? गोयमा ! बेइंदिया सव्वेवि ताव होज्जा, असच्चामासवइप्पओगीवि,

काया प्रयोग यहां ज्यादापाने से पांच योगवाले हैं अहो भगवन्! बेइन्द्रिय औदारिक शरीरकाया प्रयोगी हैं, औदारिक मिश्र शरीर काया प्रयोगी हैं यावत् कार्माण शरीरकाया प्रयोगी हैं ? अहो गौतम ! बेइन्द्रिय भी सब पूर्वोक्त प्रकार से हैं अर्थात् असत्य मृषा [व्यवहार] वचन प्रयोगी भी हैं, औदारिक शरीर काया प्रयोगी भी हैं, औदारिक मिश्र शरीर काया प्रयोगी भी हैं, और कार्माण शरीर काया प्रयोगी भी हैं, यह चारों में तीन योगवाले सदैव बहुत मिलते हैं यद्यपि बेइन्द्रिय के उत्पन्न होने का अन्तर मुहूर्त का विरह है तथापि वह अन्तर मुहूर्त छोटा है और औदारिक का मिश्र का अन्तर मुहूर्त बड़ा है, इसलिये सदैव पाते हैं और कार्माण योगी कदाचित् पाते हैं, कदाचित् नहीं भी पाते हैं जब पाते हैं तब जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट असंख्यात पाते हैं इसलिये इन में भी दो भांगे पाते हैं औदारिक वाले बहुत कार्माण वाला एक, २ औदारिक वाले भी बहुत और कार्माण वाले भी बहुत ऐसे दो

ओरालियसरीरकायप्पओगीवि, ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगीवि, अहवेगेय कम्मा सरीर कायप्पओगीवि, अहवेगेय कम्मा सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय एवं जाव चउरिंदियं ॥ पंचिंदिया तिरिक्ख जोणिया जहा णेरइया, णवरं ओरालिय सरीर कायप्पओगीवि, ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगीवि अहवेगेय कम्मा सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय ॥ ७ ॥ मणुस्साणं भंते ! किं सच्चमणप्पओगी जाव किं कम्मासरीर कायप्पओगी ? गोयमा ! मणुस्सा सव्वेवि ताव होज्जा

न्द्रिय तक मानना पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक का जैसा नेरीय का कहा वैसे कहना परंतु इतना विशेष की ४ मन के ४ वचन के १ औदारिक, २ औदारिक मिश्र, ३ वैक्रेय, और ४ वैक्रय मिश्र इन १२ योगवाले सदैव बहुत मिलते हैं और कार्मन शरीर काय प्रयोगी कभी मिलते हैं कभी नहीं मिलते हैं, जब मिलते हैं तब जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट असंख्याते मिलते हैं इसलिये इसके भी उपक्रमकारके तीनों भांगे पावें हैं १ औदारिक बहुत कार्मन का एक, और २ औदारिक के भी बहुत और कार्मन का भी बहुत ॥ ७ ॥ अहो भगवन् मनुष्य क्या सत्य मन प्रयोगी है कि यावत् क्या कार्माण शरीर काया प्रयोगी हैं ? अहो गौतम ! सब मनुष्यों का पूर्वोक्त

सम्मामिच्छप्पओगीवि, जाव ओरालिय सरीर कायप्पओगीवि, वेउव्विय सरीर कायप्पओगीवि, वेउव्विय मीस सरीर कायप्पओगीवि,' अहवेगेय' ओरालिय मीस' सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय' उरालिय मीस' सरीर कायप्पओगिणोय,' अहवेगे आहारग सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय' आहारग सरीर कायप्पओगिणोय, अहवेगे आहारग मीस सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय आहारग मीस सरीर कायप्पओगिणोय, अहवेगेय कम्मा सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय कम्मा सरीर कायप्पओगि

प्रकार ही कर्मो अर्थात् मनुष्य में मनके ४ वचनके ४ यों ८ और १ औदारिक, १० वैक्रेय और ११ वैक्रेय का मिश्र यह ११ योग को शाश्वते हैं, क्यों कि विद्याधर तथा चक्रवर्ती आदि ऋद्धि धारक वैक्रेय शरीर करते हैं इस आश्रिय वर्तेपु, वैक्रेय के मिश्रवाले भी सदैव विशेष पाते हैं, अब औदारिक का मिश्र कदाचित मिलता है और कदाचित नहीं भी मिलता है क्यों कि इन में बारह मुहूर्त का विरह उत्पत्ति का है, इसलिये औदारिक मिश्र आहारक मिश्र और कार्मन यह कदाचित मिलने से और कदाचित नहीं मिलने से इस में ८ भांगे पाते हैं व कहते हैं, जिस में एक संयोगी भांगे ८ होते हैं, तथा १ औदारिक शरीर कोयी प्रयोगी एक, २ औदारिक शरीर कोयी प्रयोगी बहुत, ३ औदारिक शरीर प्रयोगी एक २ आहारिक शरीर काया प्रयोगी बहुत, ५ आहारक मिश्र शरीर काया प्रयोगी, एक १

भसय गी ८
१ उदारिक मिश्र १
२ उदारिक मिश्र ३
३ आहारक १
४ आहारक ३
५ आ० मि० १
६ आ० मि० ३
७ कार्माण १
८ कार्माण ३

उदारिक मिश्र आहारक के ४ भांगे

उ० मी०	आहा०
१	१
१	३
३	१
३	३

णोयाा०ते अट्ठ भगा पत्तेय ॥ अहवेगेय उरालिय मीससरीर कायप्पओगीय, आहारग सरीर कायप्पओगीय अहवेगय ओरालिय मीस सरीर कायप्पयोगीय अहारगसरीर कायप्पयोगिणोय अहवेगय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगिणाय, आहारग सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय ओरालिय मीससरीर कायप्पओगिणोय, आहारग सरीर कायप्पओगिणोय,

आहारक मिश्र काय प्रयोगी बहुत ७ कार्माण शरीरकाया प्रयोगी एक, और ८ कार्माण शरीरकायाप्रयोगी बहुत अब द्विसंयोगी २४ भांगे कहते हैं जिस में उदारिक के मिश्र से और आहारक से द्विसंयोगी भांगे ४ होते हैं यथा—१ औदारिक मिश्र काया प्रयोगी एक, आहारक काया प्रयोगी एक, २ अथवा औदारिक मिश्र काया प्रयोगी एक, आहारक बहुत, ३ औदारिक काया प्रयोगी बहुत, आहारक एक और ४ औदारिक मिश्र काया प्रयोगी भी बहुत आहारक भी बहुत अब औदारिक मिश्र और आहारक मिश्र क साथ चार भांगे औदारिक मिश्र एक, आहारक मिश्र एक, १ औदारिक मिश्र एक आहारक

रक्खमयप्पओगीवि, जाव ओरालिय सरीर कायप्पओगीवि, वेउव्विय सरीर कायप्पओगीवि; वेउव्विय मीस सरीर कायप्पओगीवि, अहवेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय उरालिय मीस सरीर कायप्पओगिणोय, अहवेगे आहारग सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय आहारग सरीर कायप्पओगिणोय, अहवेगे आहारग मीस सरीर कायप्पओगीय अहवेगेय आहारग मीस सरीर कायप्पओगिणोय, अहवेगेय कम्मा सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय कम्मा सरीर कायप्पओगि

मनुष्य की कामों भयन् मनुष्यों में पनरह में से पांच ८ योग जैसे औदारिक, १ वैक्रेय और ११ वैक्रेय का मिश्र यह १२ योग की पावें हैं क्यों कि विद्याधर तथा चक्रवर्ती आदि ऋद्धि धारक वैक्रेय शरीर करते हैं इस अपेक्षा वैक्रेय, वैक्रेय के मिश्रपने भी सदैव विशेष पाते हैं, अब औदारिक का मिश्र कदाचित मिलता है और कदाचित नहीं भी मिलता है क्यों कि इन में बारह मुहूर्त का विरह उत्पात का है, इसलिये औदारिक मिश्र आहारक मिश्र और कार्मन यह कदाचित मिलने से और कदाचित नहीं मिलने से इस के ८० भांगे होते हैं सो कहते हैं जिस में एक संयोगी भांगे ८ होते हैं, तथा १ औदारिक शरीर कायाका प्रयोगी एक, २ औदारिक शरीर काया प्रयोगी बहुत, ३ औदारिक शरीर प्रयोगी एक ४ आहारक शरीर काया प्रयोगी बहुत, ५ आहारक मिश्र शरीर काया प्रयोगी, एक १

सरीर कायप्पओगिणोय, अहवेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगिणोय, कम्मा सरीर कायप्पआगीय, अहवेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगिणोय, कम्मा सरीर कायप्पओगिणाय ॥ एवं चत्तारि भगा ॥ अहयगेय आहारग सरीर कायप्प ओगीय आहारग मीस सरीर कायप्पओगीय अहवेगेय आहारग सरीर कायप्पओ

आहारक आहारक मीश्र मे ४ भांगे

आ०	आ० मि०
१	१
१	३
३	१
३	३

गीय, आहारग मीस सरीर कायप्पओगिणोय अहवगय आहारग सरीर कायप्पआगिणोय, आहारग मीस सरीरकायप्पओगीय, अहवेग आहारग सरीर कायप्पओगिणोय आहारग मिस्स सरीर कायप्पओगिणोय एते चत्तारिभगा ॥ अहवेगय आहारग सरीर कायप्पओगीय, कम्मासरीर कायप्पआगीय, अहवेगय आहारग सरीर कायप्पओगीयकम्मासरीर कायप्पओगिणोय,अहवेगय आहारग

चौभगी कहते आहारक और आहारक के मिश्र के चार भांगे कहते हैं—१ आहारक शरीर काया प्रयोगी एक, आहारक मिश्र शरीर काया प्रयोगी एक, २ आहारक शरीर काया प्रयोगी एक, आहारक मिश्र शरीर काया प्रयोगी बहुत, ३ आहारक शरीर काया प्रयोगी बहुत, आहारक मिश्र काया प्रयोगी एक और ४ आहा

औदारिक मिश्र आहारक मिश्र के ४ भांगे

उ० मि०	आ० मि०
२	१
१	३
३	२
३	३

औदारिक मिश्र कार्माण की साथ ४ भांग

उ० मि०	का०
१	१
१	३
३	१
३	३

अहवेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगीय आहारग मीससरीर कायप्पओगीय, अहवेगय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगीय, आहारग मीस सरीर कायप्पओगिणोय, अहवेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीस सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीस सरीर कायप्पओगिणोय, चत्तारि भगा ॥ अहवेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगीय, कम्मासरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगीय, कम्मा

मिश्र बहुत, ३ औदारिक मिश्र बहुत आहारक मिश्र एक, और ४ औदारिक मिश्र भी बहुत आहारक मिश्र भी बहुत यह दूसरी चौभंगी हुइ अब औदारिक मिश्र और कार्माण के साथ चार भांग कहते हैं– १ औदारिक मिश्र शरीर काया प्रयोगी एक कार्माण शरीर काया प्रयोगी एक, २ औदारिक मिश्र शरीर काया प्रयोगी एक कार्माण शरीर काया प्रयोगी बहुत, ३ औदारिक मिश्र काया प्रयोगी बहुत, कार्माण शरीर काया प्रयोग एक और ४ औदारिक मिश्र काया प्रयोगी भी बहुत, कार्माण काया प्रयोगी भी बहुत यह तीसरी

सरीर कायप्पओगिणोय, अहवेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगिणोय, कम्मा सरीर कायप्पआगीय, अहवगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगिणोय, कम्मा सरीर कायप्पओगिणाय ॥ एवं चचारि भगा ॥ अहवगेय आहारग सरीर कायप्प ओगीय आहारग मीस सरीर कायप्पओगीय अहवेगेय आहारग सरीर कायप्पओगीय, आहारग मीस सरीर कायप्पओगिणोय अहवेगेय आहारग सरीर कायप्पआगिणोय, आहारग मीस सरीरकायप्पओगीय, अहवेग आहारग सरीर कायप्पओगिणोय आहारग मिस्स सरीर कायप्पओगिणोय एते चत्तारिभगा ॥ अहवेगेय आहारग सरीर कायप्पओगीय, कम्मासरीर कायप्पआगीय, अहवेगेय आहारग सरीर कायप्पओगीयकम्मासरीर कायप्पओगिणाय,अहवेगेय आहारग

आहारक आहारक मीश मे ४ भांगे

आ०	आ० मि०
१	१
१	३
३	१
३	३

चौभगी अब आहारक और आहारक के मिश्र के चार भांगे कहते हैं—१ आहारक शरीर काया प्रयोगी एक, आहारक मिश्र शरीर काया प्रयोगी एक, २ आहारक शरीर काया प्रयोगी एक, आहारक मिश्र शरीर काया प्रयोगी बहुत, ३ आहारक शरीर काया प्रयोगी बहुत, आहारक मिश्र काया प्रयोगी एक और ४ आहा

आहारक कार्मण से ४ भांग

आ० मि०	का०
१	१
१	२
२	१
२	२

आहारक मिश्र कार्मण के ४ भांग

आ० मि०	का०
१	१
१	२
२	१
२	२

सरीर कायप्पयोगिणीय, कम्मासरीर कायप्पयोगीय, अहवेगेय आहारग सरीरकायप्पओगिणीय कम्मासरीर कायप्पओगिणीय चउरोभगा अहवेगेय आहारग मसि सरीर कायप्पओगमि, कम्मा सरीर कायप्पओगीय अहवगेय आहारग मीस सरीर कायप्पओगीय, कम्मा सरीर कायप्पओगिणीय, अहवेगय आहारग सरीर कायप्पओगिणोय 'कम्मासरीर कायप्पओगीय अहवेगेय आहारग मीस सरीर कायप्पओगिणोय कम्मा सरीर कायप्पओगिणीय 'चत्तारिभगा'॥ एव

क शरीर भी बहुत आहारक मिश्र शरीर काया प्रयोगी भी बहुत यह चौथी चौभंगी अब आहारक और कार्मण के साथ चार भांगे कहते हैं—१ आहारक शरीर काया प्रयोगी एक कार्मण शरीर काया प्रयोगी एक, २ आहारक शरीर काया प्रयोगी एक कार्मण शरीर काया प्रयोगी बहुत, ३ आहारक शरीर काया प्रयोगी बहुत और कार्मण शरीर काया प्रयोगी एक, और ४ आहारक शरीर काया प्रयोगी भी बहुत और कार्मण शरीर काया प्रयोगी भी बहुत यह पांचवी चौभंगी अब आहारक मिश्र और कार्मण के साथ छट्ठी चौभंगी कहते हैं—१ आहारक मिश्र एक कार्मण एक, २ आहारक मिश्र एक

उदारिक मादारिक मादारक मीश्रक ८ भांग

उ दि	मा०	मा० मि
१	१	१
१	१	२
१	२	१
१	२	२
२	१	१
२	१	२
२	२	१
२	२	२

चउवास मगा ॥ अहवगय आरालिय मसिग सरीर कायप्पआगीय आहारग सरिर कायप्पओगीय आहारग मीसग सरीर कायप्पओगीय, अहवगय आरालिय मीसग सरीर कायप्पआगीय, आहारग सरीर कायप्पआगीय आहारग मीसग सरीर कायप्पओगिणोव, अहवेगय आरालिय मीसग सरीर कायप्पयागीय आहारग सरीर कायप्पओगि णाय आहारग मीस सरीर कायप्पआगीय अहवगय आरालिय मिसग सरीर कायप्पआगीय, आहारग सरीर कायप्पआमिणाय आहारग, मीस सरीर कायप्पआगिणाय अहवेगय आरालिय मीसग सरीर कायप्पयागिणाय आहारग सरीर कायप्पओगीय, आहारग मीसग सरीर कायप्पआगीय अहवगय आरालिय मीसग सरीर कायप्पयो

कायाण बहुत, १ आहारक मिश्र बहुत कार्माण एक और ४ आहारक मिश्र भी बहुत कार्माण भी बहुत यह ७ भांगा से द्विसंयोगी २८ भांगे हुवे अब त्रिसंयोगी १२ भांग कहते हैं जिस में औदारिक मिश्र आहारक और आहारक मिश्र इन तीनों के संयोग के ८ भांग—यथा—१ औदारिक मिश्र एक आहारक एक, आहारक मिश्र एक २ औदारिक मिश्र एक आहारक एक आहारक मिश्र बहुत

गिणीय, आहारग सरीर कायप्पओगीय, आहारग मीसगसरीर कायप्पओगिणोय, अहवेगय ओरालिय मीसगसरीर कायप्पओगिणोय आहारग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीस सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीसग सरीर कायप्पओगिणोय एते अट्ठ भंगा ॥ अहवेगय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगीय आहारग सरीर कायप्पओगीय, कम्मासरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगीय, आहारग सरीर कायप्पओगीय, कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय अहवेगय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगीय आहारग सरीर कायप्पओगिणोय, कम्मा सरीर कायप्पओगीय अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगीय, आहारग सरीर कायप्पओगिणोय कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय,

३ ओदारिक मिश्र एक, आहारक बहुत, आहारक मिश्र एक, ४ ओदारिक मिश्र एक, आहारक बहुत, आहारक मिश्र भी बहुत ५ ओदारिक मिश्र बहुत, ६ आहारक एक, आहारक मिश्र भी एक, ६ औदारिक मिश्र बहुत, आहारक एक आहारक मिश्र बहुत, ७ ओदारिक मिश्र बहुत आहारक बहुत, आहारक मिश्र एक और ८ ओदारिक मिश्र बहुत, आहारक बहुत और आहारक मिश्र भी बहुत यह प्रथम

उदारिक मीश्र के आहारिक कार्मण की तीन सयागी साथ आठ भाग

उ० मि	आ	का०
१	१	१
१	१	३
१	३	१
१	३	३
३	१	१
३	१	३
३	३	१
३	३	३

अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग सरीर कायप्पओगीय, कम्मा सरीर कायप्पओगीय अहवेगय आरालिय मीसग सरीर कायप्पओगिणोय आहारग सरीर कायप्पओगीय, कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगिणोय आहारग सरीर कायप्पआगिणोय, कम्मा सरीर कायप्पओगीय, अहवगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारय सरीर कायप्पओगिणोय कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय। अहवेगेय आरालिय मीसग सरीर कायप्पआगीय आहारय मीस सरीर कायप्पआगीय, कम्मा सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्प आगीय, आहारय मीसग सरीर कायप्पआगीय, कम्मा सरीर कायप्पआ गिणोय, अहवेगय आरालिय मीसग सरीर कायप्पओगीय आहारग

अष्टभगी अब औदारिक मिश्र आहारक और कमाण क साथ ८ भागे कहत है—१ उदारिक मिश्र एक, आहारक एक, कार्माण एक, २ उदारिक मिश्र एक, आहारक एक कार्माण बहुत, ३ उदारिक मिश्र एक आहारक बहुत, कार्माण एक, ४ उदारिक मिश्र एक, आहारक बहुत, कार्माण बहुत, ५ उ

यहाँ ८ भंग * आहारिक मिश्र व कार्माण की साथ भांग भांग

२० आ मि	आ	१
	मा	
	१	१
	१	३
	३	१
१	३	३
३	१	१
३	१	३
	३	१
	३	३

मास सरीर कायप्पओगिणाय कम्मा सरीर कायप्पओगीय, अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगीय, आहारग मीसग सरीर कायप्प ओगिणाय कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय, अहवेगय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगिणोय आहारग मीसग सरीर कायप्पओगीय कम्मा सरीर कायप्पओगीय अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओ गिणाए आहारग मीसग सरीर कायप्पओगीय, कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय, अहवेगय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीसग सरीर कायप्पओगिणाय, कम्मा सरीर कायप्पओगीय, अहवेगय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगिणाय, आहारग मीसग सरीर कायप्पओगिणीय, कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय । अहवेगय आहारग सरीर कायप्पओगीय आहारग मीसग सरीर कायप्पओगीय,

६ मिश्र बहुत, आहारक एक, कार्माण एक ५ औदारिक मिश्र बहुत आहारक एक, कार्माण बहुत ७ औदारिक मिश्र बहुत, आहारक बहुत कार्माण बहुत, और ८ औदारिक मिश्र बहुत आहारक बहुत और कार्माण भी बहुत यह दूसरी चौभंगी हुइ. अब तीसरी औदारिक मिश्र और कार्माण साथ भाव

आहारक आहारक मीश्र व कार्माण के भांग

आ०	आ० मी	का०
१	१	१
१	१	३
१	३	१
१	३	३
३	१	१
३	१	३
३	३	१
३	३	३

कम्मा सरीर कायप्पआगीय, अहवेगेय आहारग सरीर कायप्पओगीय, आहारग मीसग सरीर कायप्पआगीय, कम्मा सरीर कायप्पओगिणीय अहवेगेय आहारग सरीर कायप्पआगीय, आहारग मीसग सरीर

भांग करते हैं यथा—१ औदारिक मिश्र एक आहारक मिश्र एक कार्माण एक २ औदारिक मिश्र एक आहारक मिश्र एक, कार्माण बहुत ३ औदारिक मिश्र एक, आहारक मिश्र बहुत कार्माण एक ४ औदारिक मिश्र एक आहारक मिश्र बहुत और कार्माण बहुत, ५ औदारिक मिश्र बहुत, आहारक मिश्र एक कार्माण एक, ६ औदारिक मिश्र बहुत आहारक मिश्र एक कार्माण एक, ६ औदारिक मिश्र बहुत, आहारक मिश्र एक कार्माण बहुत, ७ औदारिक मिश्र बहुत, आहारक मिश्र बहुत कार्माण बहुत और ८ औदारिक मिश्र भी बहुत, आहारक मिश्र भी बहुत और कार्माण भी बहुत यह तीसरी आठ भंगी हुई अब चौथी अठभंगा आहारक, आहारक मिश्र और कार्माण के साथ करते हैं १ आहारक एक, आहारक मिश्र एक कार्माण एक, २ आहारक एक, आहारक मिश्र एक कार्माण बहुत, ३ आहारक एक आहारक मिश्र बहुत कार्माण बहुत, ४ आहारक एक आहारक मिश्र बहुत, कार्माण, बहुत ५ आहारक बहुत आहारक मिश्र एक, कार्माण एक, ६ आहारक बहुत, आहारक मिश्र एक कार्माण बहुत, ७ आहारक बहुत, आहारक मिश्र बहुत कार्माण एक, और

काम्मणओगिणोय, कम्मा सरीर कायप्पओगीय अहवेगय आहारग सरीर काय-प्पयोगीय आहारग मीसग सरीर कायप्पओगिणोय, कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय, अहवेगेय आहारग सरीर कायप्पओगिणोय आहारग मीसग सरीर कायप्पओगीय कम्मा सरीर कायप्पओगीय, अहवेगय आहारग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीसग सरीर कायप्पओगीय, कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय अहवेगय आहारग सरीर कायप्प-ओगिणोय, आहारग मीसग सरीर कायप्पओगिणोय, कम्मा सरीर कायप्पओगीय अहवेगेय आहारग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीस सरीर कायप्पओगिणोय

८ आहारक शरीर प्रयोगी बहुत आहारक मिश्र शरीर प्रयोगी भी बहुत और कार्मण शरीरकाय प्रयोगी भी बहुत यों चार आठ भंगों के ३२ भांग भी प्रयोगी हुवे अब औदारिक मिश्र, आहारक, आहारकमिश्र, और कार्मण इन चार प्रयोग से १६ भांग होते हैं यथा—१ औदारिक मिश्र एक, आहारक एक, आहारक मिश्र एक कार्मण एक, २ औदारिक मिश्र एक, आहारक एक, आहारक मिश्र एक, कार्मण बहुत, ३ औदारिक मिश्र एक आहारक एक आहारक मिश्र बहुत, कार्मणएक, ४ औदारिक मिश्र एक, आहारक एक आहारक मीश्र बहुत कार्मण बहुत, ५ औदारिक मिश्र एक, आहारक बहुत आहारक मिश्र एक कार्मण एक, ६ औदारिक मिश्र एक, आहारक बहुत, आहारक मिश्र एक कार्मण बहुत ७ औदारिक

चतुसंयोगी १६ भांगा																
औ० ०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
आ० ब	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
आ० ०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
का० ब	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१

कम्मा सरीर कायप्पओगिणाय एत्र एत तिम सओगेण चत्तारि अट्ठ भगा ॥सव्वेविमिलिया। बत्तीस भगाभाणियव्वा

१ अहवेगय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगीय, आहारग सरीर कायप्पओगीय, आहारग मीसग सरीर कायप्पओगीय, कम्मा सरीर कायप्पओगीय २ अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगीय आहारग सरीर कायप्पओगीय, आहारग मीसग सरीर कायप्पओगीय कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय, ३ अहवेगे ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगीय आहारग सरीर

मिश्र एक आहारक बहुत, आहारक मिश्र बहुत, कार्माण एक ८ औदारिक एक आहारक बहुत, आहारक मिश्र बहुत, कार्माण बहुत, ९ औदारिक मिश्र बहुत, आहारक एक, आहारक मिश्र एक, कार्माण एक, १० औदारिक मिश्र बहुत, आहारक एक, आहारक मिश्र एक, कार्माण बहुत, ११ औदारिक बहुत आहारक एक आहारक मिश्र बहुत कार्माण एक १२ औदारिक बहुत, आहारक एक, आहारक मिश्र

कायप्पओगीय आहारग मीसग सरीर कायप्पओगिणोय, कम्मा सरीर कायप्पओगीय ४ अहवगे आरालिय मीसग सरीर कायप्पओगीय, आहारग सरीर कायप्पओगीय, आहारग मीसग सरीर कायप्पओगिणोय, कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय ५ अहवगय आरालिय मीसग सरीर कायप्पआगीय, आहारग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीसग सरीर कायप्पओगीय, कम्मा सरीर कायप्पओगीय, ६ अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगीय, आहारग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीसग सरीर कायप्पआगीय, कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय ७ अहवगय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगीय आहारग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीसग सरीर कायप्पओगिणोय, कम्मा सरीर कायप्पओगीय ८ अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पयोगीय, अहारग सरीर कायप्पयोगिणोय, आहारग मीसग सरीर कायप्पयोगिणोय, कम्मग सरीर कायप्पओगिणोय ९ अहवेगेय ओरालिय मीसगसरीर कायप्प-

बहुत, कार्माण बहुत, १२ औदारिक बहुत, आहारक बहुत आहारकमिश्र एक, कार्माण एक १३ औदारिक बहुत, आहारक बहुत आहारक मिश्र एक, कार्माण बहुत, १४ औदारिक मिश्र बहुत आहारक बहुत, आहारक

ओगिणोय, आहारग सरीर कायप्पओगीय, आहारग मीसग सरीर कायप्पओगीय, कम्मग सरीर कायप्पओगीय ॥१० अहवेगे ओरालिमीसग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग सरीर कायप्पओगीय, आहारग मीसग सरीर कायप्पओगीय, कम्मा सरीर कायप्प-ओगिणोय, ११ अहवेगेय ओरालियसरीर कायप्पओगिणोय आहारगसरीरकायप्पयोगीय आहारग मीसग सरीर कायप्पओगिणोय, कम्मासरीर कायप्पओगीय, १२ अहवेगेय ओरालिय मीसगसरीर कायप्पओगिणोय आहारग सरीर कायप्पओगीय, आहारग मीसगसरीर कायप्पओगिणोय कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय, १३ अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगिणोय आहारग सरीर कायप्पओगिणोय आहारग मीसग सरीर कायप्प-ओगीय, कम्मा सरीर कायप्पओगीय, १४ अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगिणोय आहारग सरीर कायप्पओगिणोय आहारग मीसग सरीर कायप्पओगीय, कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय, १५ अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्पओगिणोय आहारग सरीर

मिश्र बहुत कार्माण एक और १६ औदारिक मिश्र शरीर काया प्रयोग बहुत, आहारक शरीरकाया प्रयोगी भी बहुत, आहारक मिश्र शरीर काया प्रयोगी भी बहुत, और कार्माण शरीर काय,

कायप्पओगिणोय,आहारग मीसग सरीर कायप्पओगिणोय कम्मा सरीर कायप्पओगीय, १६ अहवाते ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीसग सरीर कायप्पओगिणोय कम्मा सरीर कायप्पओगिणोय ॥ एवएते चउसंजोएणं सोलस भंगा भवंति॥सव्वेविए संपिंडिया असीईभंगा भवंति॥५॥वाणमंतर जोइसिया वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥६॥ कइविहेणं भंते! गइप्पवाए पण्णत्ते?गोयमा! पंचविहे गइप्पवाए पण्णत्ते तंजहा-पओगगती, ततगती, बंधणछेयणगती, उववायगती विहायगती॥ सेकिंतं

अयोगी भी बहुत यह चतुःसंयोगी १६ भांगे होते हैं यों असंयोगी भांगे ८, द्विसंयोगी २४, त्रिसंयोगी ३२, और चतुःसंयोगी १६, सब मिलकर ८० भांगे चार प्रयोग के मनुष्य में पाते हैं ॥ ५ ॥ और वाणव्यंतर ज्योतिषी तथा वैमानिक का जैसा असुर कुमारदेव के इग्यारे प्रयोग में से एक कार्माण के साथ दो भांगे कहे, वैसा ही इन सब में दो भांगे ही कहना ॥ ६ ॥ प्रयोगकर जीव अजीवकी गति होती है इसलिये आगे गति प्रयोग का प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन् ! कितने प्रकार के गति प्रयाग कहे हैं ? अहो गौतम ! पांच प्रकार के गति प्रयाग कहे हैं तद्यथा—१ प्रयोग गति सो जीव १५ योगों के पुद्गलों का ग्रहण कर जीव के व्यवहारपने प्रवर्ते वह, २ ततगति प्रयोग सो ग्रामादि गमन करना ३ बंध छेदनगति सो जीव शरीर रूप बन्ध को छोडकर

पओगगती? पओगती पण्णरसविहा पण्णत्ता, तंजहा-सच्चमणप्पओग गति एवं जहा पओगो भणितो तहा एसोवि भाणियव्वो, जाव कम्मा सरीर कायप्पओगगती ॥७॥ जीवाण भंते! कतिविहा प्पओगगती पण्णत्ता ? गोयमा ! पण्णरसविहा पण्णत्ता तंजहा सच्चमणप्पओगगति, जाव कम्मा सरीरकाय प्पओगगति ॥८॥ णेरइयाण भंते ! कइविहा पओगगती ? गोयमा ! एक्कारसविहा पण्णत्ता तंजहा-सच्चमणप्पओगगती एवं उवउंजिऊण जस्स जतिविहा तस्स ततिविहा भाणियव्वा, जाव वेमाणियाण ॥ ९ ॥ जीवाण भंते ! किं सच्चमणप्प

जन एसी, ८ मनुष्यादि गति से जीव अन्य गति में उत्पन्न होने जाय और ९ विहायगति आकाश में गमन करे अहो भगवन् ! प्रयोग गति के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! पन्दरे भेद कहे हैं, तद्यथा १ सत्य मन प्रयोग गति यों पूर्वोक्त योगोंका सब कथन यहां भी कहना यावत् जीव कार्माण शरीर काय प्रयोग गति ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! जीव को कितने प्रकार की प्रयोग गति कही है ? अहो गौतम ! पन्दर प्रकार कही है तद्यथा सत्यमन प्रयोग गति यावत् कार्माण शरीर काय प्रयोग गति ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! नेरीयको कितने प्रकारकी प्रयोग गति कही है ? अहो गौतम ! इग्यारे प्रकारकी प्रयोग गति कही है, तद्यथा सत्यमन प्रयोग यावत् कार्माण शरीर काय प्रयोग यों इस प्रकार जिन के जितने योग हैं उनके उतने प्रकार वैमानिक पर्यंत कहना ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! जीव को क्या सत्यमन प्रयोग गति होवे कि यावत्

कायप्पयोगिणाय, आहारग मीसग सरीर कायप्पयोगिणोय कम्मा सरीर कायप्पयोगीय, १६ अहवाणे ओरालिय मीस सरीर कायप्पयोगिणोय, आहारग सरीर कायप्पयोगिणोय, आहारग मीसग सरीर कायप्पयोगिणोय कम्मा सरीर कायप्पयोगिणोय ॥ एवउसजोएणं सोलस भगा भवंति॥सव्वेविण संपिडिया असीईभगा भवंति॥५॥वाणमंतर जोइसिया वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥६॥ कइविहेण भंते! गइप्पवाए पण्णत्ते? गोयमा! पंचविहे गइप्पवाए पण्णत्ते तंजहा-पयोगगती, ततगती, बंधणछेदनगती, उववायगती, विहायगती॥ सेकिंतं

मयोगी मी बहुत वर चतुर्योगी १६ भांगे होते हैं यों असंयोगी भांगे ८, द्विसंयोगी २८, त्रिसंयोगी ३२, और चतुसंयोगी १६, सर्व मिलकर ८० भांग चार प्रयोग के मनुष्य में पाते हैं ॥ ५ ॥ और वाणव्यंतर ज्योतिषी तथा वैमानिक का जैसा असुर कुमारदेव के इग्यारे प्रयोग में से एक कार्माण के साथ दो भांगे कहे, वैसा ही इन सब में दो भांग ही कहना ॥ ६ ॥ प्रयोगकर जीव अजीवकी गति होती है इसलिये आगे गति प्रयोग का प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन् ! कितने प्रकार के गति प्रपात कहे हैं ? अहो गौतम ! पांच प्रकार के गति प्रपात कहे हैं तद्यथा—१ प्रयोग गति सो जो जीव १५ योगों के पुद्गलों का ग्रहण कर जीव के व्यवहारपने प्रवर्ते सो, २ ततगति प्रयोग सो ग्रामादि गमन करना ३ बंध छेदनगति सो जीव शरीर रूप बन्ध को छोडकर

पओगगती? पओगेती पण्णरसविहा पण्णत्ता, तंजहा सच्चमणप्पओग गति एवं जहा पओगो भणितो तहा एसोवि भाणियव्वो, जाव कम्मा सरीर कायप्पओगगती ॥७॥ जीवाण भंते! कतिविहा प्पओगगती पण्णत्ता? गोयमा! पण्णरसविहा पण्णत्ता तंजहा सच्चमणप्पओगगति, जाव कम्मा सरीरकाय प्पओगगति ॥८॥ णेरइयाण भंते! कइविहा पओगगती? गोयमा! एक्कारसविहा पण्णत्ता तंजहा—सच्चमणप्पओगगती एवं उवउंजिऊण जस्स जतिविहा तस्स ततिविहा भाणियव्वा, जाव वेमाणियाण ॥ ९ ॥ जीवाण भंते! किं सच्चमणप्प-

जन एसी, ४ मनुपात गति सो जीव अन्य गति में उत्पन्न होने जाव और ५ विहायगति आकाश में गमन करे अहो भगवन्! प्रयोग गति के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! पन्दर भेद कहे हैं, तथथा १ सत्य मन प्रयोग गति यों पूर्वोक्त योगोंका सब कथन यहां भी कहना यावत् जीव कार्माण शरीर काय प्रयोग गति ॥ ७ ॥ अहो भगवन्! जीव का कितने प्रकार की प्रयोग गति कही है? अहो गौतम! पन्दर प्रकार की है तद्यथा सत्यमन प्रयोग गति यावत् कार्माण शरीर काय प्रयोग गति ॥ ८ ॥ अहो भगवन्! नेरीयको कितने प्रकारकी प्रयोग गति कही है? अहो गौतम! इग्यारे प्रकारकी प्रयोग गति कही है तद्यथा सत्यमन प्रयोग यावत् कार्माण शरीर काय प्रयोग यों इस प्रकार जिन के जितने योग हैं उनके उतने प्रकार वैमानिक पर्यंत कहना ॥ ९ ॥ अहो भगवन्! जीव की क्या सत्यमन प्रयोग गति होवे कि यावत्

ओगगती जाव कम्मग सरीर कायप्पओगगती ? गोयमा ! जीवा सव्वेवि ताव होज्जा, सच्चमणप्पओगगतीवि एव तचेव पुव्वभाणियं भणितव्व, भग तहेव जाव वेमाणियाणं॥ सेतं पओगगती ॥ १० ॥ सेकिंत ततगती? ततगति ! जेण जं गाम वा जाव सण्णि वेसवा संपट्ठिते असपत्ते अतराहेय वट्टति सेत ततगति ॥ ११ ॥ सेकिंत बंधण छेदनगति ? जीवोवा सरीराओ सरीरंवा जीवाओ, सेतं बंधण छेदणगती ॥ १२ ॥ सेकिंत उववायगति ? उववायगति ! तिविहा पण्णत्ता तजहा—खेत्तोव वायगती भवोववायगती, णोभवोववायगती, सेकिंत खत्तोववायगति ?

कार्माण शरीर प्रयोग गति होवे ? अहो गौतम ! समुच्चय जीव में ऐसे ही होता है सत्यमन प्रयोग गति पगैरह पहिले कहा वैसा कहना और भांग भी पूर्वोक्त प्रकार कहना यावत् वैमानिक पर्यंत यह प्रयोगगति के भेद कहे॥१०॥अहो भगवन् ! ततगति के कितने भेद कहे हैं ! अहो गौतम ! ततगति के जो जिस ग्रामको यावत् सन्निवेशको जानेके लिए मार्ग में गमनकरे उस ग्रामादिको प्राप्त नहीं अन्तरके मार्गमें वर्तरहा है उसे ततगति कहना॥११॥अहो भगवन् ! बंधनछेदनगति के कितने भेद कहे हैं ! अहो गौतम बंधनछेदनगति सो जीव बंधन के शरीरको छोडे और शरीर जीव को छोडे यह बंध छेदन गति॥१२॥उपपातगति के कितने भेद कहे हैं ? उपपातगति के तीन भेद तद्यथा १ क्षेत्रोत्पातगति, २भवोत्पातगति और ३ नो भवोत्पात गति क्षेत्रोत्पातगतिके कितने भेद?

खत्तोववायगति ? पंचविहा पण्णत्ता तंजहा णेरइया खेत्तोववायगती तिरिक्खजोणिय खत्तोववायगति, मणुस्स खेत्तोववायगती, देवखत्तोववायगती, सिद्ध खेत्तोववायगती॥ सेकिंत णेरइय खेत्तोववायगती ? णेरइय खत्तोववायगती सत्तविहा पण्णत्ता तंजहा रयणप्पभा पुढवी णेरइय खत्तोववायगती जाव अहेसत्तमा पुढवी णेरइय खेत्तोववायगती सत्त णेरइय खत्तोववायगती ॥ सेकिंत तिरिक्ख जोणिय खेत्तोववायगति ? तिरिक्ख जोणिय खत्तोववायगती पंचविहा पण्णत्ता तंजहा एगिंदिय तिरिक्ख जोणिय खत्तोववायगति जाव पचिंदिय तिरिक्ख जोणिय खेत्तोववायगती सेत्त तिरिक्ख

क्षेत्र उपपात गति के पांच भेद कहे हैं यथा-नरीये के क्षेत्रमें उत्पन्न होने की गति, २ तिर्यंच योनिक के क्षेत्र में उत्पन्न होने की गति, ३ मनुष्य के क्षेत्र में उत्पन्न होने की गति, ४ देवता के क्षेत्र में उत्पन्न होने की गति और ५ सिद्धक्षेत्रमें उत्पन्न होने की गति नेरीये क्षेत्रोपपातगति के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! सात भेद कहे यथा—१ रत्नप्रभा पृथ्वी में नरीये पने उत्पन्न होने की क्षेत्रोपपातगति यावत् नीचे सातवी पृथ्वी में नरीय पने उत्पन्न होने की क्षेत्रोपपातगति यह नरक क्षेत्रोपपातगति के भेद कहे हैं तिर्यंच योनिक क्षेत्रोपपातगति के कितने भेद कहे हैं ? तिर्यंच योनिक क्षेत्रोपपातगति के पांच भेद हैं तद्यथा—१ एकेन्द्रिय तिर्यंच योनिक क्षेत्र में उत्पन्न होने की गति यावत् पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक क्षेत्र में उत्पन्न होने की गति,

त्त गय खेत्तोववायगति ॥ सेकिंत मणुस्स खेत्तोववायगती ? मणुस्स खेत्तोववायगती दुविहा पण्णत्ता तंजहा समुच्छिममणुस्स खेत्तोववायगती, गब्भवक्कंतिय मणुस्स खेत्तोववायगती सेत मणुस्स खेत्तोववायगती ॥ सेकिंत देवखेत्तोववायगति ? देवखेत्तोववायगति चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा भवणवइ खेत्तोववायगति जाव वेमाणिय खेत्तोववायगति सेत्त देवखेत्तोववायगती ॥ सेकिंत सिद्ध खेत्तोववायगती ? सिद्ध खेत्तोववायगती अणेगविहा पण्णत्ता तंजहा जंबुद्दीवे दीवे भरहेरवय वासस्स सपक्खि सपडिदिसि सिद्ध खेत्तोववायगती जंबुद्दीवद्दीवे चुल्लहिमवंत सिहरीवासहर पव्वय सपक्खि सपडिदिसि सिद्ध खेत्तोववायगति, जंबुद्दीवद्दीवे हेमवय एरण्णवयवास सपक्खि

यह निर्यच गति की क्षेत्रोत्पात गति कही मनुष्य क्षेत्रोत्पात गति के कितने भेद कहे हैं ? मनुष्य क्षेत्रोत्पात गति के दो भेद कहे हैं तद्यथा—१ समूर्छिम मनुष्य क स्थान में उत्पन्न होने की गति और गर्भज मनुष्य क्षेत्र में उत्पन्न होने की गति यह मनुष्य क्षेत्रमें उत्पन्न होने की गति का कथन देव क्षेत्र में उत्पन्न होने की गति के कितने भेद हैं ? देव क्षेत्रोत्पात गति के चार भेद कहे हैं तद्यथा—१ भवन वासी देवता क्षेत्र में उत्पन्न होने की गति यावत् वैमानिक देवता क क्षेत्र में उत्पन्न होने की गति यह देव गति में उत्पन्न होने के क्षेत्रोत्पात गति के भेद हुवे सिद्ध क्षेत्र में उत्पन्न होने की गति के कितने भेद कहे हैं ? सिद्ध क्षेत्र में उत्पन्न होने की क्षेत्रोत्पात गति के अनेक भेद कहे हैं तद्यथा—जम्बूद्वीप

सपडिदिस सिद्धखेचोवबायगति, जमुद्दीवेदीवे सद्दावइ वियडावइ वट्टवेयड्ड सपक्खि सपडिदिसं सिद्धखेचाववायगती, जम्बुदीवेदीवे महाहिमवत रूप्पिमाम्हर पव्वय सपक्खि सपडिदिसं सिद्ध खेचाववायगती जबूदीवदीवेहरिवास रम्मगवास सपक्खि सपडिदिसि सिद्ध खचोववायगती जंबूद्दीवेदीवे गधावइ मालवत वट्टवेयड्ड सपक्खि सपडिदिस सिद्ध खेचोववायगती, जम्बूदीवेदीवे णिसढणीलवंत वासहरपव्वय सपक्खि सपडिदिस सिद्ध खेचोववायगती, जम्बूदीव २ पुव्वविदेहा अवरविदेहा सपक्खि सपडिदिस सिद्धखेचोववायगती, जम्बुदीवे २ देवकुरु उत्तरकुरु सपक्खि सपडिदिस सिद्धखेचोववायगती,

नापक द्वीप के भरत तथा ऐरवत क्षेत्र के ऊपर सम श्रेणि से दिशा और विदिशा में बराबर सब दिशा ओं में सिद्ध क्षेत्र बराबर, जम्बूद्वीप के चुल हिमवंत और शिखरी पर्वत पर सम श्रेणि दिशा विदिशा में बराबर सर्व दिशा में सिद्ध क्षेत्र बराबर, × जम्बूद्वीप के हेमवय हिरण्णवय क्षेत्र में से, जम्बूद्वीप के शब्दापाती और विकटापाती वैताढ्य पर्वत पर से, जम्बूद्वीप के हरीवास रम्यकवास क्षेत्र से, जम्बूद्वीप के गंधपाती माल्यवन्त वैताढ्य पर्वत से जम्बूद्वीप महा हिमवंत रूप्पी पर्वत से, जम्बूद्वीप के

× चूल हिमवंतादि पर्वत पर से जो सिद्ध होते हैं वे मनुष्य मात्रित मानना किसी पाखण्ड साधु को कोई देवतादि यहां उठाकर रखदे और वे वहां केवल ज्ञान प्राप्त कर सिद्ध होवे, इस अपेक्षा से कहा है

जम्बूद्दीवदीव मदरस्स पव्वयस्स सपक्खि सपडिदिस सिद्धखत्तोववायगती लवणसमुद्दस्स सपक्खि सपडिदिस सिद्धखत्तोववायगती, धायतिखडदीवे पुरत्थिम पच्छिमद्ध जाव मदर पव्वयस्स सपक्खि सपडिदिस सिद्धखत्तोववायगती, कालायसमुद्द सपक्खि सपडिदिस सिद्ध खत्तोववायगती पुक्खरवरदीवड्ढ पुरच्छिमद्ध भरहेरवय वास सपक्खि सपडिदिस सिद्ध खत्तोववायगती, एव जाव पुक्खरवरदीवड्ढे पच्छिमद्ध पुरिमद्ध मदरपव्वय सपक्खि सपडिदिसं सिद्धखत्तोववायगती, सेत सिद्धखत्तोववायगती ॥ सेत खत्तोववायगई ॥ सेकिंतं भवोववायगती ? भवोववायगती चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा णेरइय जाव

निषध और नीलवन्त पर्वत पर से, जम्बूद्वीप के पूर्व महा विदेह और पश्चिम महा विदेह क्षेत्र से जम्बूद्वीप के मेरु पर्वत पर से सम श्रेणि यावत् सिद्ध का उपपात क्षेत्र है ऐसे ही लवण समुद्र में से समश्रेणि यावत् सिद्ध का उपपात क्षेत्र, धातकी खण्डद्वीप के पूर्व पश्चिम के विभाग से जम्बूद्वीप के जैसे ही क्षेत्र पर्वतों से यावत् दोनों मेरु पर्वत से समश्रेणि यावत् सिद्ध का उपपात क्षेत्र है, कालोदधि समुद्र से समश्रेणि यावत् सिद्ध का उपपात क्षेत्र है, पुष्करार्ध द्वीप के पूर्व पश्चिम के विभाग से जम्बूद्वीप के जैसे ही क्षेत्र पर्वत से यावत् दोनों मेरुपर्वत से समश्रेणि दिशा विदिशा में बराबर सिद्ध का उपपात क्षेत्र है, यहां से भी सिद्ध होते हैं सिद्ध क्षेत्रोपपात गति यह सिद्ध के उपपात क्षेत्र की गति कही भवोपपात गति के कितने भेद कहे हैं ? भवोपपात गति के

देवमवोववायगती॥सेकिंते नेरइय मवोववायगती? नेरइयमवोववायगती सत्तविहा पण्णत्ता, एव सिद्धवज्जो भेदो भाणियव्वो, जो चेव खत्तोववायगतीए सोचेव भवोववायगती,सेतं भवोववायगती॥से किं त णो भवोववायगती? णोभवोव ।ायगति दुविहा पण्णत्ता तंजहा पोग्गलणो भवोववायगतिय,सिद्ध णो भवोववायगतीय॥सेकिंतं पोग्गल भवोववायगती? पोग्गल णो भवोववायगगती ! जण्णं परमाणु पोग्गल लोगस्स पुरच्छिमिल्लाओ चरिमं ताओ पच्चत्थिमिल्लं चरिमंत एगसमएणं गच्छति, पच्चच्छिमिल्लाओ चरिमंताओ उत्तरिल्लं चरिमंत एगसमएणं गच्छति, दाहिणिल्लाओ चरिमंताओ उत्तरिल्ल

चार भेद कहे हैं तद्यथा नरकगतिमें भवे रात्र गति यावत् देवगति में भवोत्पातगति नरकगति में भवोत्पात गति के कितने भेद कहे ? नरकगति में भवोत्पातगति के सात भेद कहे हैं एसे ही सिद्ध गति का छोड कर यावत् चारों गति के भेद जो क्षेत्रोत्पातगति के कहे वे ही सब यहां भी कहना यावत् देवोत्पात की गतिमें उत्पन्न होना वह पर्यंत कहना यह भवोत्पातगति मद कहे नोभवोत्पातगति के कितने भेद कहे हैं? नो भवोत्पात गति के २ भेद कहे हैं तद्यथा १ पुद्गलकी नो भवोत्पात गति और २ सिद्धकी नो भवउत्पातगति पुद्गल की नो भवउत्पात गति के कितने भेद कहे हैं ? पुद्गल की नो भवोत्पात गति जो परमाणु पुद्गल लोक के पूर्व के चरमान्तसे पश्चिम के चरिमान्त पर्यंत और पश्चिम के चरमान्त से पूर्व के चरमान्त पर्यंत एक समय

चरिमंत एगसमएण गच्छइ, एव उवरिल्लाओ हाहिणिल्ल, उवरिल्लाओ हेट्ठिल्लं हेट्ठिल्लाओ उवरिल्ल, सेस पोग्गल णो भवोववायगती॥ सेकिंत सिद्ध णो भवोववायगती? सिद्ध णो भवोववायगति दुविहा पण्णत्ता तंजहा अणंतरसिद्ध णो भवोववायगतीय परंपर सिद्धणोभवोववायगती ॥ सेकिंत अणंतर सिद्ध णो भवोवायगती? अणंतर सिद्ध णो भवोववायगती पण्णरसविहा पण्णत्ता तंजहा तित्थ सिद्ध अणंतर णो भवोववायगतीय जाव अणेगसिद्ध णो भवोववायगती ? सेकिंत परपर सिद्ध णो भवोववायगती ? परंपर सिद्ध नो भवोववायगती अणगविहा पण्णत्ता तंजहा अपढम समय सिद्ध नो भवोववायगती दुसमय सिद्ध नो भवोववायगती जाव

में जावे वैसे ही दक्षिण के चरमान्त से उत्तर के चरमान्त तक और उत्तर के चरमान्त से दक्षिण के चरमान्त तक एक समय में जावे वैसे ही ऊपर के चरमान्त से नीचे के चरमान्त तक और नीचे के चरमान्त से ऊपर के चरमान्त तक एक समय में जावे यह पुद्गलस्पर्शनागति यह पुद्गलस्पर्शनागति के भेद हुवे सिद्धकी भवोपपातगति के कितने भेद कहे हैं? सिद्ध की नो भव उपपातगति के दो भेद कहे हैं तद्यथा १ अनंतर सिद्ध की नो भव उपपातगति, और २ परम्परा सिद्ध की भव उपपातगति अनंतर सिद्ध की नो भव उपपातगति के कितने भेद कहे हैं? अनंतर सिद्ध की भवोपपातगति के पन्नर भेद कहे हैं ? तद्यथा—तीर्थ सिद्ध अनंतरसिद्ध की भवोपपातगति, यावत् अनेक सिद्ध की भवोपपातगति परम्पर सिद्ध की भवोपपातगति के कितने भेद कहे हैं? परम्पर सिद्ध की नो भवोपपातगति के अनेक भेद कहे हैं, तद्यथा—अप्रथम समय सिद्ध [द्विसम

समय सिद्धाणोभवोवायगती, सेघ सिद्धणो भवोयवायगती, ॥ सेघं णोभवोव वायगती ॥ सेत उववायगती ॥ १३ ॥ सेकिंत विहायगती विहायगति सतरस विहा पण्णत्ता तंजहा—१ फुसमाणगती, २ अफुसमाणगती, ३ उवसपज्जमाणगति, ४ अणुवसपज्जमाणगती, ५ पोग्गलगती ६ मंडूयगती, ७ णावगती, ८ णयगती, ९ छायागई, १० छायाणुवातगई, ११ लेस्सागती, १२ लेस्साणुवातगती, १३ उद्देसीय पविभत्तगती, १४ चउपुरिस पविभत्तगती, १५

को प्राप्त हुवे दो समय आदि अधिक काल हुवा एसे) की नो भवोत्पातगति, ऐसे दो समय के सिद्ध की नो भवोत्पातगति, यावत् अनंत समय के सिद्धकी नो भवोत्पातगति यह सिद्धकी नो भवोत्पात के भेद हुवे ॥ १३ ॥ विहाय (आकाशगमन करने की) गति के कितने भेद कहे हैं ? विहायगति के १७ सतरह भेद कहे हैं तद्यथा—१ स्पर्श कर चले वह गति और २ अस्पर्शे चले वह गति, ३ अंगीकार करके चले वह गति, ४ बिना अंगीकार किये चले वह गति, ५ पुद्गल की गति, ६ मेंडक की गति, ७ नाव की गति ८ ताप धूप की गति, ९ छाया की गति, १० छाया अनुपात की गति, ११ लेश्या की गति, १२ लेश्यानुपात की गति, १३ उद्देशकर मस्तनीयगति, १४ चार पुरुष की परिभ्रमगति, १५ वक्रगति, १६ कर्दम की गति, और १७ बंधन विमोचन गति. अब इन १७ गति का अर्थ कहते हैं फुसमानगति किस कहते

थकगती, १६ पकगती, १७ बंधण विमोयणगती ॥ सेकिंत फुसमाणगई ? फुसमाणगइ जण्णं परमाणु पोग्गले दुप्पएसिए जाव अणंतपएसियाणं खंधाणं अण्णमण्णं फुसित्ताणं गती पवित्तइ सेतं फुसमाणगती, ॥ सेकिंत अफुसमाणगती ! जेणं एते सिचेव अफुसित्ताणगतीए पवित्तइ सेतं अफुसमाणगई ॥ सेकिंत उवसपज्जमाणगती ? उवसपज्जमाणगती जण्णं रायंवा जुवरायंवा ईसरंवा तलवरंवा माडंबियंवा कोडुंबियंवा इब्भंवा सेट्ठिंवा सेणावइंवा सत्थवाहंवा, उवसंपज्जित्ताणं गच्छइ, सेतं उवसपज्ज

है ? स्पर्शमानगति ! जो परमाणु पुद्गल, द्विप्रदेशिक स्कंध यावत् अनंत प्रदेशिक स्कंध परस्पर एकेक को एकक स्पर्शकर चलकर चले वह स्पर्शमानगति, २ अस्पर्शमानगति किसको कहते हैं ? अस्पर्शमानगति जो परमाणु पुद्गल यावत् अनंत प्रदेशिक स्कन्ध परस्पर बिना स्पर्श गति करे वह अस्पर्शमान गति ३ उपसंपमान गति किस को कहते हैं ? उपसंपमान गति जो राजा युवराजा ईश्वर—मांडलिकराजा, तलवर-पटबंध, मांडबिक ग्रामी, कौटुम्बिक कुटुम्बाधिपति, इभ्य धन—गजादि धनपति, श्रेष्ठि—नगर सेठ, सेनापति, सार्थवाही, इत्यादि को का आश्रय अंगीकार कर इनके पीछे चले वह उपसंपज्जमान गति ॥ ४ अनुपसंपमानगति किस को कहते हैं ? अहो गौतम ! उक्त राजा आदि किसी को भी अंगीकार किये बिना स्वेच्छा से विचरे वह अनुपसंपमानगति, ५ पुद्गलगति किस को कहते हैं ? पुद्गलगति जो परमाणु पुद्गल यावत्

माणगती ॥ सेकिंतं अणुत्तसपज्जमाणगती ? अणुत्तसपज्जमाणगती ! जण्ण एतेसिंचेव अण्णमण्णं अणुत्तसपज्जित्ताणं गच्छति, सेत्तं अणुत्तसपज्जमाणगती ॥ सेकिंतं पोग्गलगती ? पोग्गलगती जण्णं परमाणु पोग्गलाणं जाव अणंत पदेसियाणं खंधाणगती पवत्तति, सेत्तं पोग्गलगती ॥ सेकिंतं मंडूयगती ? मंडूयगती जण्णं मंडूए उप्पिडिया२ गच्छति, सेत्तं मंडूयगती ॥सेकिंतं णावागती? णावागती जण्णं णावा पुव्ववे तालीउवा दाहिणवेतालिं जलपहेणं गच्छति, दाहिणवेतालिउवा अवरवेतालिं

मनंत प्रदेशिक स्कन्ध गति को प्रवर्तते हैं यह पुद्गलगति ॥६ मंडूक गति किसे कहते हैं ? मंडूक गति जिस प्रकार मेंडक उछल कर चलता है वैसे चले यह मंडूक गति ॥७॥ नावागति किसे कहते हैं? जैसे नाव नदी आदि के पूर्व के किनारे से दक्षिण के किनारे को जावे, दक्षिण के किनारे से पश्चिम के किनारे को जावे यों किसी भी दिशा से किसी भी दिशा में नावा पानी के ऊपर जलपथ में गमन करे यह नावा गति ॥ ८ नयगति किस को कहते हैं ? नयगति के सात भेद—१ नैगमनय समुचय अर्थ का कहने वाला, २ संग्रह नय-विस्तृत अर्थ का कहने वाला, ३ व्यवहारनय प्रत्यक्ष रूप का बताने वाला, ४ ऋजु सूत्र नय सरल सूत्र का कहनेवाला ५ शब्दनय लिंग वचनमें भेद नहीं रखने वाला, ६ समभिरूढ नय लिंग वचनके व्यभिचार

उलघहेण गच्छति, सेत णायागती ॥ सेकिंतं णयगती? णयगती ! जण्णं णेगमसंगह ववहारउज्जुसुयसद्दसमभिरूढएवंभूयाणंणयाणं जा गती, अहवा सव्वणयाणवि ज इच्छति सेतंणयगती ॥ सेकिंत छायागती ? छायागति जंणं हयच्छायवा गयच्छायवा णरच्छायवा किण्णरच्छायवा, महोरग च्छायवा, गंधव्व च्छायवा, उसभ च्छायंवा, रहच्छायवा छत्तच्छायवा उवसपज्जिताणं गच्छति सेतं छायागती॥सेकिंत छायाणुवायगती?छायाणुवाय गति जेण पुरिसच्छाया अणुगच्छति,णो पुरिसच्छायं अणुगच्छति सेत छायाणुवायगती॥

का दूरकरने वाला, और एवंभूतनय सार्थकका करने वाला इन सातों नयको जो स्वारनेकी रीत है वह नयगती तथा एकनय ग्रहणकर वमके विशेष मद करें अन्यका विपक्ष भेद नहीं करें वह नयगति छाया गति किसे कहते हैं ? छाया गति सो घोडेकी छाया, हाथीकी छाया, मनुष्य की छाया, किन्नर की छाया, महोरग की छाया, गंधर्व की छाया, बैल की छाया, रथकी छाया, छत्रकी छाया, इन का अंगीकार कर चलने वाला सो छायागति छायानुपातगति किसे कहते हैं। छायानुपातगति जो पुरुष छाया धारनकर चले वह छायानुपात गति स्वयानुगति किसे कहते हैं ? जो कृष्णलेश्या के द्रव्य नीललेश्याके द्रव्यपने परिणमें, उसवर्ण पने, रस वर्णपन, रसगन्धपने स्पर्शपने उस सार्थकने वारम्वार परिणमें, ऐसेही नीललेश्या के द्रव्य कापुत लेश्यापने,

सेकिंते लेस्साणुगती ? लेस्सागती जण्णं कण्हलेस्सा णीललेस्सपण्ण तारूवत्ताए तावे-ण्णत्ताए तागंधत्ताए तारसत्ताए ताफासत्ताए भुज्जो २ परिणमति, एवं नीललेस्सा काउलेस्सपण्ण तारूवत्ताए जाव फासत्ताए परिणमति एवं काउलेस्सा तेउलेस्स तेउलेस्साति पम्हलेस्सं पम्हलेस्सावि सुक्कलेस्सपण्ण तारूवत्ताए जाव परिणमति सेतं लेस्सागेति ॥ सेकिंत लेस्साणुवातगती ? लेस्साणुवातगति जे लेस्साइं दव्वाइं परियाइत्ता कालंकरेइ तरस्सेसु उववज्जाति तंजहा-कण्हलेस्सेसुवा जाव सुक्कलेस्सेसुवा ॥ सेतं लेस्साणुवातगती ॥ सेकिंतं उद्दिस्स पविभत्तगती ? उद्दिस्स पविभत्तगती जण्णं

कापोत लेश्या को तेजो लेश्या से कहना, तेजो लेश्या पद्मलेश्या से कहना, पद्मलेश्या से शुक्ल लेश्या का कहना, वर्णपने यावत् स्पर्श पने परिणमता है यह लेश्यागति कही ॥ लेश्यानुपातगति किस को कहते हैं ? लेश्यानुपातगति जो लेश्या के द्रव्य हैं उन ग्रहन कर के आयुष्य पूर्ण करे पुनः उसही लेश्या के स्थान में जाकर उत्पन्न होवे, जैसा कृष्ण लेश्या के द्रव्य आयुष्य के अन्त में ग्रहण कर कृष्ण लेश्या के स्थान में उत्पन्न होवे यावत् शुक्ल लेश्या के द्रव्य ग्रहण करके शुक्ल लेश्या के स्थान में उत्पन्न होवे, यह लेश्यानुपात गति कहना ॥ उद्दिश प्रविभक्त गति किसको कहते हैं ? उद्दिश प्रविभक्त गति जो आचार्य के, उपाध्याय के, स्थविर के, प्रवर्तक के, साधु के पास वंध में प्रवर्तनवाले, के गणधर प्रमुख के पालिक गणधर,

उक्कित पक्कगती। से जहा नामए फइ पुरिसे सेयसिया उद्धपासित्ता कायउद्धिहित्ता गच्छंति, सेत्तं पकगती ॥ से किंत बंधण विमोयणगती? बंधन विमोयणगती ! जन्न अनागता, अम्बाड गाणवा सीआगाणवा लुगाणवा, मातुलुंगाणवा, बिल्लागवा, कविट्ठाणवा, भल्लाणवा, फणसाणवा, दालिमाणवा, पारेवताणेवा अक्खोलाणवा चाराणवा बराणवा, तिंदुयाणवा पक्काणं परियागयाण बंधणाता विमुक्काण निव्वाघातेण अहेवीससाएगती पवत्तइ, सेत्तं बंधण विमोयणगती॥इति पण्णवणाए पयोगपय सालसम सम्मत्त ॥१६॥

शरीर का अङ्ग सुमाता हुवा गमन कर यह एक गति बंधन विमोचन गति किसे कहते हैं ? बंधन विमोचन गति आम्र के फल, अम्बाड के फल, बीजाफल, मंगफल, पीजोरा के फल, नीब के फल, कवीठ के फल द्राक्ष के फल, फणस के फल, दाडिम (अनार) के फल, अक्षोलन फल, पारेवी (पिंजी) के फल, बेर के फल, टिम्बरू के फल, इत्यादि जाति के फल पक्व होकर स्वस्थान से बन्धन से छूटकर बीच में किसी प्रकार की घात को नहीं प्राप्त होते हुवे नीचे पड़ने के स्वभाव से जाते हैं सो वह बन्धन विमोचन गति कहते हैं यह विहाय गति के सतरह भेद हुवे इति पन्नवणा भगवती का प्रयोग नामक सोलहवा पद संपूर्ण हुवा ॥ १६ ॥

आयरियत्ता उवज्झायत्ता थरत्ता पविञ्चित्ता गणित्ता गणहरत्ता गणावच्छेयत्ता उद्दि सिय २ गच्छति सेतं उद्दिसिय पविभत्तगती ॥ सेकिंत चउपुरिस पविभत्तगती ? चउपुरिसपविभत्तगति सजहा णामए चत्तारि पुरिसा समग पज्जवट्ठिया समग पट्ठिता समगं पज्जवट्ठिया विसम पट्ठिया विसम पज्जवट्ठिया समग पट्ठिया विसम पज्जवट्ठिया विसम पट्ठिया सेत चत्तारि पुरिसा पविभत्तगती ॥ सेकिंत वंकगती ? वंकगती ! चउव्विहा पण्णत्ता तजहा घट्टणया थंभणया, लेसणया, पवडणया सेत वंकगती ॥

गणावच्छेदक गच्छके वस्त्र पात्रादिक विभाग के करन वाले, इन नेष्ट पुरुषोंमेंसे किसी को भी भाग मद्य में मर्यादा कर उद्देशिक अविभक्तगति ॥ चार पुरुष अविभक्तगति कौनसी कही है ? चार पुरुष अविभक्तगति यथा दृष्टान्त—१ चार पुरुष साथ ही जाते हुवे आगे के ग्राम को साथ ही प्राप्त हुवे, २ चारों साथ ही रास्ते में गमन किया, और चारों आगे पीछे ग्राम को प्राप्त हुवे, ३ चारों आगे पीछे चल और साथ ही ग्राम को प्राप्त हुवे, और चारों ही आगे पीछे चले और आगे पीछे ही ग्राम को प्राप्त हुवे यह चार पुरुष की अविभक्त गति कहना वक्रगति किसी को कहते हैं ! वक्रगति के चार भद— १ लंगराता हुवा चले, २ गुडने से चले, ३ कुब्ज के ज्यों पोका चले, और ४ पडता २ चले यह वक्रगति कहना पंकगति किसे कहते हैं ? पंक गति यथा दृष्टान्त कोई पुरुष कदम में, कादव में पानी में पांवादि

बहुतराए पोग्गले आहारेंइ बहुतराए पोग्गले परिणमंति, बहुतराए पोग्गले उस्सासंति बहुतराए पोग्गल णीससंति अभिक्खणं २ आहारेंति, अभिक्खणं २ परिणमंति अभिक्खणं २ उससंति अभिक्खणं २ णीससंति तत्थणं जेते अप्पसरीरा तेणं अप्पतराए पोग्गले आहारंति अप्पतराए पोग्गले परिणमंति अप्पतराए पोग्गल उस्ससंति, अप्पतराए पोग्गल णिस्ससंति आहच्च आहारइ, आहच्च परिणमंति, आहच्च ऊससंति, आहच्च णीससंति, सेएणट्ठेणं गोयमा ! एवं

नहीं हैं, सचित्त शरीर वाले भी नहीं हैं और सरीखे श्वासोश्वास वाले भी नहीं हैं ? अहो गौतम ! नारिये दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ एक छोटा (छोटे) शरीर वाले अंगुल के असंख्यातवें भाग की अवगाहना वाले और २ महाशरीरवाले-पांचसो धनुष्य की अवगाहना वाले, इस में जो महाशरीर वाले हैं वे अपने शरीर की अपेक्षा बहुत पुद्गलों का के शरीर में परिणते हुए हाल है और इन का परिमाण से लेते हैं बारम्बार आहार करते हैं, बारम्बार पुद्गलों परिणमाते हैं बारम्बार उश्वास व निश्वास लेते हैं और जो अल्प शरीर वाले हैं वे अल्प पुद्गलों का आहार करते हैं, अल्प पुद्गलों परिणमाते हैं अल्प पुद्गलों उश्वासमें ग्रहण करते हैं, अल्पपुद्गलों निश्वासमें ग्रहण करते हैं कदाचित आहार करते हैं [उस्सवाल] कदाचित परिणमते हैं, कदाचित उश्वास निश्वास लेते हैं इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहा है

॥ सप्तदश-लेश्या पदम् ॥

आहार, समसरीरा, उस्सासे, कम्म, वण्ण, लेस्सासु समवेदन, समकिरिया, समा-उवाघय चाघव्वा ॥ १ ॥ १ ॥ णेरइयाणं भंते सव्वे समाहारा सव्वे समसरीरा, सव्वे समुस्सासनिस्सासा, ? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ णेरइया णो सव्वे समाहारा जाव णो सव्वे समुस्सासनिस्सासा ? गोयमा ! णेरइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा महासरीराय अप्पसरीराय, तत्थणं जे ते महासरीरा तेणं

अब सतरवा लेश्या पद कहते हैं—कर्म पुद्गलों के परमाणुओं जिन से कृष्णादि रूपमय आत्म प्रदेश के क्लिष्टकर परिणमन हैं उस लेश्या कहते हैं इस लेश्या पद के छ उद्देश हैं जिस में से पहिले उद्देश में कहते हैं. पहिले उद्देश के ९ द्वारों के नाम—१ आहार द्वार, २ समशरीर द्वार, ३ श्वासोश्वास द्वार, ४ कर्म द्वार, ५ वर्णद्वार, ६ लेश्या भेद द्वार, ७ समवेदना द्वार, ८ समक्रियाद्वार, और ९ समउपपात द्वार ॥ १ ॥ प्रथम आहार शरीर और श्वासोश्वास तीनों द्वार सामिल कहते हैं अहो भगवन् ! नारकी के सब जीवों क्या सरीखा आहार करते हैं, सब सरीखे शरीर वाले हैं क्या सब सरीखे श्वासोश्वास वाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अहो भगवन्! ऐसा किस कारन कहा कि नेरीये सब सरीखे आहार वाले

भंते! सव्वे समवण्णा? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे॥ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ णेरइया णो सव्वे समवण्णा? गोयमा! णेरइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा पुव्वोववण्णगाय पच्छो ववण्णगाय तत्थणजेते पुव्वोववण्णगा तेणं विसुद्धवण्णतरागा, तत्थणजेते पच्छोववण्ण गाय तेणं अविसुद्धवण्णतरागा॥ से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चति णेरइया णो सव्वेसमवण्णा एवं जहेव वण्णेण भणिया तहेव लेस्सासुवि-विसुद्धलेस्सतरागा अविसुद्धलेस्सतरागाय भाणियव्वा॥ ४ ॥ णेरइयाणं भंते! सव्वे समवेयणा ? गोयमा! णोइणट्ठे समट्ठे,

वाले हैं ? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं है ! अहो भगवन्! किस कारन ऐसा फरमाते हो कि सब नेरीये ... नहीं है अहो गौतम! नरिये दो प्रकार के कहे हैं, तद्यथा—१ पहिले उत्पन्न हुवे और पश्चात् उत्पन्न हुवे इस में जो प्रथम उत्पन्न हुए हैं वे विशुद्ध वर्णवाले हैं क्यों कि उनने कर्म भोगव कर बहुत अशुभ वर्ण के पुद्गलों की निर्जरा ... की है, और जो पीछे उत्पन्न हुए वे अविशुद्ध (खराब) वर्णवाले ... क्यों कि ... पुद्गल भोग न पाये रहे हैं यह लेश्या द्वार-जैसा वर्ण का कहा वैसा ही ... भी कहना अर्थात् जो प्रथम उत्पन्न हुवे वे विशुद्ध लेश्यावाले हैं क्यों कि बहुत दुःख भोगने से परिणाम की धारा शुद्ध होगइ है और जो पीछे उत्पन्न हुए वे अविशुद्ध लेश्यावाले हैं क्यों कि परिणाम की धारा महा क्लेशित है ॥४॥ सातवा वेदना द्वार—अहो भगवन्! क्या

वुच्चइ णेरइया णो सव्वे समाहारा णो सव्वे समसरीरा, नो सव्वे समुस्सासणि स्सासगा ॥ २ ॥ णेरइयाणं भंते ! सव्वे समकम्मा ? गोयमा ! णो इणट्ठसमट्ठे ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ णेरइया णो सव्वे समकम्मा ? गोयमा ! णेरइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा पुव्वोववण्णगाय पच्छोववण्णगाय, तत्थणं जेते पुव्वोववण्णगा तेणं अप्पकम्मतरागा तत्थणं जेते पच्छोववण्णगाय तेणं महाकम्मतरागा, सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ णेरइया णो सव्वे समकम्मा ॥ ३ ॥ णेरइयाणं

नेरीये सब समान आहारवाले नहीं है, शरीर शरीरवाले नहीं है, सब सरीखे श्वासोश्वासवाले नहीं हैं॥२॥ चौथा प्रश्न—अहो भगवन् ! क्या सब नेरीये सरीखे कर्मवाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है, किस कारन ? अहो भगवन् ! ऐसा कहा कि सब नेरीये सरीखे कर्मवाले नहीं हैं ? अहो गौतम ! नेरीये दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ प्रथम उत्पन्न हुवे और २ पीछे से उत्पन्न हुवे, इस में जो प्रथम उत्पन्न हुवे वे अल्प कर्मवाले हैं क्यों कि उन्होंने बहुत कर्म भोगव लिया है और जो पीछे से उत्पन्न हुवे वे महा कर्मवाले हैं क्यों कि उन के बहुत कर्म भोगवने बाकी रहे हैं, [यह उत्तर सम स्थिति वाले आश्रिय है परंतु विषम स्थितिवाले आश्रिय नहीं है] इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहा कि सब नेरीये सरीखे कर्मवाले नहीं है ॥ ३ ॥ पांचवा प्रश्न—अहो भगवन् ! क्या सब नेरीये सरीखे वर्ण

गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ णेरइया णो सव्वेसमकि-
रिया ? गोयमा ! णेरइया तिविहा पण्णत्ता तंजहा सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छ
दिट्ठी ॥ तत्थणं जेते सम्मदिट्ठी तेसिणं चत्तारि किरियाओ कज्जंति तंजहा आरंभिया,
परिग्गहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया, तत्थणं जे ते मिच्छादिट्ठी जे सम्म-
मिच्छादिट्ठी तेसिं णियमा ताओ पंचकिरियाओ कज्जंति. तंजहा आरंभिया, परिग्ग-
हिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणिया, मिच्छादंसणवत्तिया ॥ से तेणट्ठेणं गोयमा !
एवं वुच्चति णेरइयाणं णो सव्वे समकिरिया ॥ ६ ॥ णेरइयाणं भंते ! सव्वे समाउया

अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है। किस कारन अहो भगवन् ! सब नारकी सरीखी क्रियावाले नहीं हैं ? अहो गौतम ! नेरिये तीन प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ सम्यक्दृष्टी मिथ्यादृष्टी २ और ३ समामिथ्यादृष्टी. इस में जो सम्यक् दृष्टी हैं उन को चार क्रिया लगती है तद्यथा—१ आरंभिकी, २ परिग्रहिकी ३ मायाप्रत्यायि-की ४ अप्रत्याख्यानीकी और जो मिथ्या दृष्टी तथा समामिथ्या दृष्टी हैं उने पांच क्रिया लगती हैं चारतो उक्त और पांचवी मिथ्यात्व दर्शन प्रत्ययिकी इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा कि सब नेरीये समक्रिया वाले नहीं हैं ॥ ६ ॥ अथवा स्थितिद्वार अहो भगवन् ! सब नेरिये सरीखे आयुष्य वाले हैं क्या ? अहो गौतम !

से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ णेरइया णो सव्वेसमवेयणा ? गोयमा! णेरइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा सण्णिभूताय असण्णिभूताय ॥ तत्थणं जे ते सण्णिभूताय तेणं महा वेयणतरागा तत्थणं जे ते असण्णिभूताय तेणं अप्पवेयणतरागा ॥ से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चति णेरइया णो सव्वे समवेयणा ॥ ५ ॥ णेरइयाणं भंते ! सव्वेसमकिरिया ?

सब नेरीये सरीखी वेदनावाले हैं ? अहो गौतम ! नेरीये दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ संज्ञीभूत और २ असंज्ञीभूत इन में जो संज्ञीभूत हैं वे महा वेदना भोगवते हैं और असंज्ञीभूत हैं वे अल्प वेदना वेदते हैं, क्यों कि असंज्ञी तिर्यंच मर कर प्रथम नरक में ही आते हैं व पल्योपम के असंख्यातवे भाग की आयुष्य पाते हैं इस से वे अल्प वेदनावाले हैं और संज्ञी सातवी नरक तक जाते हैं व तेत्तीस सागरोपम तक का आयुष्य पाते हैं, इस से वे महा वेदनावाले हैं तथा असंज्ञीभूत अपर्याप्त नेरीये को कहते हैं वे अल्प वेदनावाले हैं और संज्ञीभूत पर्याप्त नेरीये को कहते हैं वे महा वेदनावाले हैं तथा असंज्ञीभूत अनेक अवस्थावाला है व ज्ञान का आवरण होने से पूरी वेदना वेद सकते नहीं हैं और संज्ञीभूत सचेत न अवस्था में वेदना का पूरा अनुभवी होने से अधिक वेदना वेदते हैं अथवा असंज्ञीभूत मिथ्यात्वी नेरीये को कहते हैं व रूप कर्म का अज्ञात हो अल्प वेदना वेदते हैं और संज्ञीभूत सम्यक् दृष्टी को कहते हैं वे कर्म फल के ज्ञाता हो पश्चात्तापयुक्त महा वेदना वेदते हैं इस कारन अहो गौतम! ऐसा कहा कि सब नेरीयों सरीखी वेदना नहीं वेदते हैं॥५॥अब आठवा क्रिया द्वार—अहो भगवन् ! सब नेरीये सरीखी क्रियावाले हैं क्या?

रकुमारा दुविहा पण्णत्ता तंजहा पुव्वोववण्णगाय, पच्छोववण्णगाय, तत्थणं जे ते
ववण्णगा तेणं महाकम्मतरागा, तत्थणं जे ते पच्छोववण्णगा तेणं अप्पकम्म
गा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ असुरकुमारा णो सव्वे समकम्मा ॥ एवं
वण्णा,लेस्साए पुच्छा? तत्थणं जे ते पुव्वोववण्णगा तेणं अविसुद्ध वण्णतरागा,तत्थणं जे

ते है इस का उत्तर नेरीये का दिया वैसा ही यहां भी देना, यहां भरीर अवगाहना भवधारनीय शरीर की अपेक्षा जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट सात हाथ की मानना उत्तर वैक्रयकी अपेक्षा जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट लक्षयोजन मर्याद मानना इसलिये महा शरीर वाले बहुत पुद्गल का आहार करे और छोटे शरीर वाले थोडे पुद्गल का आहार करे, यह देवसम्बन्धी मनोभक्षी लक्षण आहार जानना उत्कृष्ट हजार वर्षान्तर आहार की इच्छा होवे, वैसे ही श्वासोश्वास भी मानना अहो भगवन् ! असुरकुमार देवता सब सरीखे कर्म वाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अहो भगवन ! किस कारन यह अर्थ योग्य नहीं है अहो गौतम ! असुर कुमार देवता दो प्रकार के कहे हैं ? पूर्वोत्पन्न और पश्चात् उत्पन्न, इस में पूर्वोत्पन्न हैं वे महाकर्म वाले हैं और पीछे उत्पन्न हुए व अल्प कर्म वाले हैं, क्यों कि प्रथम उत्पन्न हुवे उनोंने शुभकर्म भोगन लिये इस से अशुभ कर्म बहुत रहगये

समाववण्णगा? गोयमा! णोइणट्ठे समट्ठे से केणट्ठेण भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! णेरइया चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा अत्थेगतिया समाउया समोववण्णगा, अत्थेगइया समाउया विसमोववण्णगा, अत्थेगइया विसमाउया समोववण्णगा, अत्थेगइया विसमाउया विसमोववण्णगा ॥ से एणट्ठेण गोयमा! एवं वुच्चति णेरइया णोसव्वे समाउया णो सव्वेसमोववण्णगा ॥ ७ ॥ असुरकुमाराण भंते! सव्वेसमाहारा सोचेव पुच्छा? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे जहा णेरइया ॥ असुरकुमाराण भंते! सव्वे

यह अर्थ योग्य नहीं है- अहो भगवन्! किस कारन, सब नेरीये सरीखे आयुष्य वाले नहीं हैं? अहो गौतम! नेरीये चार प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ कितनेक सम आयुष्यी और समोत्पन्न हैं, २ कितनेक सम आयुष्यी और विषमोत्पन्न हैं, अर्थात् आयुष्यको बराबर है परन्तु उत्पन्न आगे पीछे हुवे हैं, ३ कितनेक विषम आयुष्यी और समोत्पन्न हैं अर्थात् आयुष्यतो ज्यादा कमी है परंतु उत्पन्न साथ ही हुवे हैं और कितनेक विषम आयुष्यी और विषमोत्पन्न हैं इसलिये अहो गौतम! ऐसा कहा कि सब नेरीये सम आयुष्यी और समोत्पन्न नहीं हैं यह नरकद्वार अधिकार संपूर्ण हुवे ॥ ७ ॥ अहो भगवन्! असुर कुमार क्या सब सरीखे आहार वाले हैं इत्यादि सब प्रश्न पूछना? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ

पुढविकाइया सव्वे असण्णी असण्णीभूते, अणिदायवेदणं वेदेति से तेणट्ठेणं गोयमा॥ एवं वुच्चइ पुढविकाइया सव्वे समवेदणा ॥ पुढविकाइयाणं भंते ! सव्वे समकिरिया ? हंता गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे समकिरिया॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ? गोयमा! ...या सव्वे माई मिच्छादिट्ठी, ताणं णियतीओ पंचकिरियाओ कज्जंति तंजहा आरं...भिया परिग्गहिया मायावत्तिया, अपच्चक्खाणकिरिया, मिच्छादंसणवत्तिया एवं जाव चउ...॥ ९ ॥ पंचिंदिया तिरिक्खजोणिया जहा णेरइया णवरं किरियाहिं सम्मदिट्ठी

...व्यक्त वेदना वेदते हैं इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहा है कि पृथ्वीकाया सब समवेदनावाले हैं ...हो भगवन् ! क्या पृथ्वीकाया सब सरीखी क्रियावाले हैं ? हां गौतम ! पृथ्वीकाया सब सरीखी ...क्रियावाले हैं अहो भगवन् ! किस कारन ऐसा कहा ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाया सब एक मायी ...मिथ्यादृष्टी हैं इस लिये उन का सदैव नियमा पांचों प्रकार की क्रिया करती है तथया—१ आरंभिकी, ...२ परिग्रहीकी, ३ माया प्रत्ययी, ४ अप्रत्याख्यानी, और ५ मिथ्यात्व दर्शन प्रत्ययी जैसा पृथ्वीकाया का ...कहा वैसा ही पांचों स्थावर तीनों विकलेंद्रिय का कहना, (विकलेंद्रिय अपर्याप्त अवस्था में किंचित्‌काल ...पर्यंत सम्यक्त्वी रहते हैं परन्तु वह यहां ग्रहण नहीं किया) ॥ ९ ॥ पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक का जैसे ...नारकी का कहा वैसे ही कहना परन्तु उस में इतना विशेष कि उस में सम्यक् दृष्टि मिथ्यादृष्टि सम

ति पच्छाववण्णगा तेण विसुद्ध वण्णतरागा, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति असुर कुमारा णो सव्वे समवण्णा, एवं लेस्साए वेदणाए, जहा णेरइया अवसेस जहा णेरइयाण, एवं जाव थणियकुमारा ॥ ८ ॥ पुढविकाइया आहार कम्म वण्ण लेस्साहिं जहा णेरइया ॥ पुढविकाइयाण भंते ! सव्वे समवेदणा ? हंता गोयमा ! सव्वे सम वेदणा ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ पुढविकाइया सव्वे समवेदणा ? गोयमा !

जिन से व पाछे काल में आयुष्य पूर्णकर पूर्वभ्यादि गति में उत्पन्न होते वाले हैं और जो पीछे उत्पन्न हुवे वे मरण अप्रम करते हैं, अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा कि सब असुर कुमार सरीखे वर्ण वाले नहीं हैं इस प्रकार ही वर्ण का प्रश्नोत्तर कहना, अर्थात् जो पूर्वोत्पन्न हैं वे अविशुद्धवर्ण वाले हैं और पश्चात उत्पन्न हुवे हैं विशुद्धवर्ण वाले हैं, अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा कि सब असुर कुमार इनका सरीखे वर्ण वाले नहीं है इस प्रकार ही लश्या का, वेदना आदि सब बातों का जैसा नरीय का कहा वैसा कहना, और जैसे असुर कुमार का कहा वैसे ही यावत् स्थनित कुमार पर्यन्त कहना ॥८॥ पृथ्वीकायका भी आहार कर्म वर्ण लेश्या जिनप्रकार नेरइये का कहे उसी प्रकार कहना अहो भगवन् ! क्या पृथ्वीकाया सब सरीखी वेदनावाले हैं ? हां गौतम ! सब पृथ्वीकाया सरीखी वेदनावाले हैं क्या भगवन् ! किस कारन ऐसा कहा ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाया सब असंज्ञी हैं असंज्ञीभूत हैं

पुढविकाइया सव्वे असण्णी असण्णीभते, अणिदायवेदण वेदेंति? से तेणट्ठेण गोयमा! एव वुच्चइ पुढविकाइया सव्वेसमवेदणा ॥ पुढविकाइयाण भंते ! सव्वेसमाकिरिया? हंता गोयमा ! पुढविकाइया सव्वे समकिरिया॥से केणट्ठेण भते ! एव वुच्चइ? गोयमा! पुढविकाइया सव्वमाई मिच्छादिट्ठी,तसिणियताओ पचकिरियाओ कज्जति तंजहा आर भिया परिग्गहिया मायावत्तिया,अपच्चक्खाणकिरिया मिच्छादसणवत्तिया एवं जाव चउ रिंदिया ॥ १ ॥ पंचिंदिया तिरिक्खजोणिया जहा णरइया णवरं किरियाहिं सम्मदिट्ठी

सम्यक्त वेदना वेदते हैं इस लिए अहो गौतम ! एसा कहा है कि पृथ्वीकाया सब समवेदनावाले हैं अहो भगवन् ! क्या पृथ्वीकाया सब सरीखी क्रियावाले हैं ? हां गौतम ! पृथ्वीकाया सब सरीखी क्रियावाले हैं अहो भगवन् ! किस कारन एसा कहा ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाया सब एक मायी मिथ्यादृष्टी हैं इस लिये इन का सदैव नियमा पांचों प्रकार की क्रिया लगती है तद्यथा—१ आरंभिकी, २ परिग्रहीकी, ३ माया प्रत्ययी, ४ अप्रत्याख्यानी, और ५ मिथ्यात्व दर्शन प्रत्ययी जैसा पृथ्वीकाया का कहा तैसाही पांचों स्थावर तीनों विकलेन्द्रिय का कहना, (विकलेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था में किंचित्काल मात्र ही सम्यक्त्वी रहते हैं परन्तु वह यहां ग्रहण नहीं किया) ॥ १ ॥ पचेंद्रिय तिर्यंच योनिक का जैसे नारकी का कहा वैसे ही कहना परन्तु उस में इतना विशेष कि वह में सम्यक् दृष्टि मिथ्यादृष्टी सम-

मिच्छाद्दिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी, तत्थण जेते सम्मदिट्ठी ते दुविहा पण्णत्ता तंजहा असजताय, सजयासजयाय तत्थणं जेत सजयासजया तेसिणं तिण्णि किरियाओ कज्जति तजहा आरंभिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया तत्थण जेते असज्जता तेसिण चत्तारि किरिया कज्जति तज्जहा आरंभिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणि किरिया, तत्थण जेते मिच्छादिट्ठि जेय सम्मामिच्छादिट्ठी तेसिण णियमाओ पच कि रियाओ कज्जति तजहा आरंभिया परिग्गहिया मायावत्तिया अपच्चक्खाणिया, मिच्छादस णवत्तिया, सेसं तंचेव ॥ १० ॥ मणुस्साण भते ! सव्वे समाहारा पुच्छा ? गोयमा

मिथ्यादृष्टी तीनों दृष्टीवाले हैं उस में जो सम्यक् दृष्टी हैं वे दो प्रकार के हैं तद्यथा—१ असंयति और २ संयतासंयति इस में जो संयतासंयती हैं उन को तीन क्रिया लगती हैं तद्यथा—१ आरंभिकी, २ परिग्रही की और ३ मायाप्रत्ययी, और जो असंयति हैं उन को चार क्रिया लगती है तद्यथा—१ आरंभिकी, २ परिग्रहिकी, ३ माया प्रत्ययी और ४ अप्रत्याख्यानी और मिथ्यादृष्टी तथा समामिथ्या दृष्टी हैं उन को नियमा पांचों क्रिया लगती हैं तद्यथा—१ आरंभिकी, २ परिग्रहीकी ३ मायाप्रत्ययी ४ अप्रत्याख्यानी और ५ मिथ्यादर्शन प्रत्ययी शेष वैसाही कहना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! क्या

णो इणट्ठे समट्ठे ॥ सेकेणट्ठेण भते ! एव वुच्चति ? गोयमा ! मणुस्सा दुविहा पण्णत्ता तजहा महासरीराय अप्पासरीराय तत्थणं जेते महासरीरा तेणं बहुतराए पोग्गले आहारेंति जाव बहुतराए पोग्गलेणीससति, आहच्च आहारेंति जाव आहच्चणीससति, तत्थणं जेते अप्पसरीरा तेण अप्पतराए पोग्गले आहारेंति जाव अप्पतराए, पोग्गले णीससति, अभिक्खण २ आहारेंति जाव अभिक्खण २ णीससति, सेतेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चति मणुस्सासव्वे णो समाहारा सेस जहा णेरइयाण, णवर

सब मनुष्य सरीखे आहारवाले हैं ? इत्यादि पूर्वोक्त प्रकार प्रश्न मानना ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है अहो भगवन् ! किस कारन एसा कहा ? अहो गौतम ! मनुष्य दो प्रकार के कहे हैं, तद्यथा— महा शरीरवाले और अल्प शरीरवाले, उस में जो महा शरीरवाले हैं व बहुत पुद्गलों का आहार करते हैं यावत् बहुत पुद्गलों का श्वासोश्वास लेते हैं कदाचित आहार करते हैं कदाचित श्वासोश्वास लेते हैं यह पाठ देवकुरु उत्तरकुरु के महा शरीरी मनुष्य आश्रिय है, क्यों कि उन की तीन कोश की अवगाहना है और व अष्टमभक्त में (तीन दिनों में) आहार ग्रहण करते हैं, और २ उस में जो अल्प शरीरवाले मनुष्य तथा सम्मूर्च्छिम मनुष्य हैं व अल्प पुद्गलों का आहार करते हैं यावत् अल्प ही पुद्गलोंका श्वासो

किरियाहिं मणूसा तिविहा पण्णत्ता तंजहा सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी, तत्थण जेते सम्मदिट्ठी ते तिविहा पण्णत्ता तंजहा संजया, असंजया, संजयासंजया, तत्थण जेते संजता ते दुविहा पण्णत्ता तंजहा-सराग संजयाय, वीयराग संजयाय, तत्थण जेते वीयराग संजता तेणं अकिरिया, तत्थण जेते सरागसंजया ते दुविहा पण्णत्ता तंजहा पमत्त संजयाय अपमत्त संजयाय, तत्थण जेते अपमत्त संजया तेसिं एगा मायावत्तिया किरिया कज्जति, तत्थण जेते पमत्त संजया तेसिं दो किरियाओ कज्जति तंजहा आरंभिया मायावत्तिया तत्थण जेते संजयासंजया तेसिं तिण्णि किरिया

भाग सब हैं, वारम्वार आहार करते हैं वारम्वार श्वासोश्वास लेते हैं, इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहा मनुष्य सब सरिखे आहारवाले नहीं हैं शेष कथन नारकी जैसे कहना, जिस में इतना विशेष कि मनुष्य तीन प्रकार के कहे हैं, तद्यथा—सम्यक् दृष्टी, मिथ्यादृष्टी, व सममिथ्यादृष्टी इस में जो सम्यक् दृष्टी हैं वे तीन प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ संयति, २ असंयति और ३ संयतासंयति इन में जो संयति हैं वे दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा सराग संयति छठे गुणस्थान से दशवे गुणस्थान पर्यंत और वीतराग संयति ऊपर के गुणस्थान के इस में जो वीतराग संयति हैं वे तो अक्रिय हैं और जो सराग संयति हैं वे दो प्रकार के हैं तद्यथा—प्रमत्त संयति छठे गुण स्थान के और अप्रमत्त संयति सातवे से दशवे गुणस्थान

कज्जति तंजहा-आरंभिया परिग्गहिया, मायावत्तिया तत्थण जेते असंजया तेसिं चउकिरियाओ कज्जति तंजहा-आरंभिया परिग्गहिया, मायावत्तिया अपच्चक्खाणी किरिया, तत्थण जेते मिच्छादिट्ठी जे सम्मामिच्छादिट्ठी तेसिं णियमाओ पंचकिरियाओ कज्जति तंजहा आरंभिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाणिया मिच्छादंसणवत्तिया, सेसं जहा णेरइयाणं ॥ ११ ॥ वाणमंतराणं जहा असुरकुमाराणं, एवं जोइसिया वेमाणियाणवि, णवरं तेवयणाए, दुविहा पण्णत्ता तंजहा-माई-

तक क, इस में ममपत संयति हैं उन को एक मायामत्ययी क्रिया लगती है और जो ममत्त संयति है उनको दो क्रिया लगती है तद्यथा—१ आरंभिकी और २ मायामत्ययि की और जो संयतासंयती (श्रावक) हैं उन को तीन क्रिया लगती है तद्यथा—१ आरंभि का, २ परिग्रहि का, और ३ मायामत्ययि की और जो असंयति है उनको चार क्रिया लगती है तद्यथा—१ आरंभिका २ परिग्रहि का, ३ मायामत्ययि का और ४ अमत्याख्यानी और जो मीथ्यादृष्टी तथा समीथ्यादृष्टी है उन को पांचों क्रिया लगती है तद्यथा—१ आरंभिका, २ परिग्रहि का ३ माया मत्ययी ४ अमत्याख्यानी और ५ मिथ्या दर्शन मत्ययी, शेष अधिकार नारकी जैसे कहना ॥ १२ ॥ वाणव्यन्तर देव का असुर कुमार जैसे कहना एसा ही ज्योतिषी वैमानिक का भी कहना परंतु इस में इतना विशेष उन में वेदना दो प्रकार की •

मिच्छादिट्ठी उववण्णगाय, अमाई सम्मदिट्ठी उववण्णगाय; तत्थणं जेते माईमिच्छदिट्ठी उववण्णगा तेणं अप्पवेदणतरागा, तत्थणं जेते अमाई सम्मादिट्ठी उववण्णगा तेण महावेदणतरागा, सेतेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चति सेस तहेव ॥ १२ ॥ सलेस्साणं भते ! णेरइया सव्वेसमाहारा सव्वेसमसरीरा, सव्वेसमुस्सास नीस्सासगा सव्वेव पुच्छा ? गोयमा ! एवं जहा ओहिओगमओ तहासलेस्स गमओवि निरविसेस भाणियव्वो, जाव वेमाणिया॥ कण्हलेस्साण भते! णेरइया सव्वेसमाहारा समसरीरा

तथथा—१ मायी मिथ्या दृष्टि उत्पन्न और अमायी सम्यक् दृष्टी उत्पन्न इस में, जो मायी मिथ्यादृष्टि हैं वे अल्प वेदना वाले हैं और जो अमायी सम्यक्दृष्टी हैं वे महावेदना वाले हैं यहां सातावेदनी की अपेक्षा ग्रहण करना इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा, सब वैसा ही कहना यह चौवीस ही दंडक का ओधिक अधिकार कहा ॥ १२ ॥ अब इन ९ द्वारों का कथन चौवीस दंडक पर लेश्या आश्रिय कहते हैं अहो भगवन् ! क्या सलेशी नारकी सब समान आहार वाले, समान शरीर वाले व समान उश्वास निश्वास वाले हैं ? अहो गौतम ! जैसे ओघिक गमा कहा वैसे लेश्या का गमा निर्विशेष वैमानिक पर्यंत कहना अहो भगवन्! कृष्णलेशिक नेरीया सब सरीखे आहारवाले हैं क्या इत्यादि प्रश्न ? जैसा ओघिक का कहा वैसे ही कहना, जिस में इतना विशेष, नारकी में वेदना आश्रिय मायी मिथ्यात्व

सन्वेव पुच्छा? गोयमा! जहा ओहिया, णवरं णेरइया वेदणाए माईमिच्छादिट्ठी उववण्ण गाए अमाइसम्मादिट्ठी उववण्णगाय भाणियव्वा, सेस तहेव जहा ओहिताण असुरकुमारा जाव वाणमतरा एत जहा ओहिया णवर मणूसाण, किरियाहिंविसेसो, जाव तत्थण जत सम्मद्दिट्ठी त तिविहा पण्णत्ता तजहा सजया, असजया संजया सजया जहा आहियाण जोतिसिय वेमाणियाण आदिल्लियासु तिसुलेसासु णपुच्छिज्जति एव जहा किण्हलेस्सा उच्चारिया तहा णीललेस्साविं उच्चारयव्वा, काउलेस्सा णरइए हिंता आरंभ जाव वाणमतरा णवर काउलेस्साए णेरइया वेदणाए जहा आहिया ॥

दृष्टी और अपायी सम्यक् दृष्टी उत्पन्न होनेका कहना, शेष तैसे ही कहना ऐसा औधिक-समुच्चय का कहा तैसे असुरकुमारादि दशों ही भवनपतिदेव पांच स्थावर तीनों विकलेन्द्रिय तिर्यंच पंचेन्द्रिय मनुष्य और वाणव्यन्तर का भी कहना, जिस में इतना विशेष मनुष्य में क्रिया का विशेषत्व जानना यावत् उस में जो सम्यक् दृष्टी हैं वे तीन प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ संयति, २ असंयति और ३ संयतासंयति इन का भी औधिक में कहा तैसा ही कहना और ज्योतिषी वैमानिक में पहिले की (कृष्णनील कापुत) तीन लेश्या नहीं है उस का प्रश्न नहीं पूछना यों जिस प्रकार कृष्ण लेश्या का अधिकार कहा तैसा ही नील लेश्या का भी कहना, कापुतलेशीका नेरीये से यावत् वाणव्यन्तर देवता तक

तेउलेस्साणं भंते ! असुरकुमाराण ताओचेव पुच्छा ? गोयमा ! तहेव ओहिया तहेव णवरं वेदणाए जहा जोइसिया ॥ पुढविआउवणस्सइ पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा जहा ओहिया, तहेव भाणियव्वा, णवरं मणुस्सा किरियाहिं जेसंजया ते पमत्ताय अपमत्ताय भाणियव्वा, सरागा वीतरागा णत्थि ॥ वाणमंतरा तेउलेस्साए जहा असुरकुमारा एवं जोइसिया वेमाणियावि, सेस तचेव ॥ एवं पम्हलेसावि भाणियव्वा, णवरं जेसिं अत्थि सुक्कलेस्सावि तहेव जेसिं अत्थि सव्व तहेव जहा

कहना जिस में इतना विशेष कापूत लेशी नेरइया में जैसा औधिक का कहा तैसे ही कहना अहो भगवन् ! तेजोलेश्या असुरकुमार की उक्त प्रकार की ही पृच्छा ? अहो गौतम ! जैसा औधिक का कहा तैसा ही कहना परंतु इतना विशेष वेदना मायिय जैसा ज्योतिषी का कहा वैसा कहना अर्थात् संज्ञी ही कहना परंतु असंज्ञी नहीं कहना पृथ्वी, पानी, वनस्पति, पंचेन्द्रिय तिर्यंच व मनुष्यका जैसा औधिक का कहा तैसा कहना जिस में इतना विशेष मनुष्य का क्रिया के अधिकार में संयति के कथन प्रमत्त अप्रमत्त कहना परंतु सरागी वीतरागी नहीं कहना क्यों कि वीतरागी में तेजो लेश्या नहीं है वाणव्यन्तर का तेजोलेश्या का जैसा असुर कुमार का कहा तैसा कहना ऐसे ही ज्योतिषी का भी कहना वैमानिक का भी कहना, सब तैसा ही जानना ऐसे ही पद्मलेश्या का भी कहना जिस में जिस

ओहियाण गणओ, जनर पम्हलस्स, सुक्कलेस्साओं ॥ पांचिंदिय तिरिक्ख जाणिय मणुस्स वेमाणियाण चउन पसाणति ॥ पण्णवणा लस्सा पदे पढमो उद्देसा सम्मत्तो ॥ १७ ॥ १ ॥

कतिण भंते' लेस्साओ पण्णत्ताओ?गोयमा!छलेस्साओ पण्णत्ताओ तंजहा कण्हलेस्सा णीललेस्सा, काउलेस्सा, तेउलस्सा पम्हलस्सा, सुक्कलेस्सा ॥ णेरइयाण भंते! कइलस्साओ पण्णत्ताओ? गोयमा! तिण्णि तंजहा किण्ह नील काउलेस्सा ॥

लेश्या होवे उस का कहना और शुक्ल लेश्या का भी ऐसा ही कहना परन्तु जिस में होवे उस में कहना मानिक का कहा, सब ऐसा ही जानना जैसा जिस में इतना विशेष पद्म लेश्या शुक्ल लेश्या पंचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्य और वैमानिक में ही होती है इति लेश्या पद का प्रथमोद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ १७ ॥ १ ॥

अहो भगवन्! कितनी लेश्या कही है? अहो गौतम! छ लेश्या कही है तद्यथा—१ कृष्ण लेश्या, २ नील लेश्या, ३ कापोत लेश्या, ४ तेजो लेश्या ५ पद्म लेश्या और ६ शुक्ललेश्या अहो भगवन्! नरक में कितनी लेश्या कही है? अहो गौतम! तीन लेश्या कही है तद्यथा—१ कृष्ण लेश्या, २ नील लेश्या, और ३ कापोत लेश्या, इस में पहिली दूसरी नरक में एक कापोत लेश्या, तीसरी, में कापोत लेश्या वाले

तिरिक्ख जोणियाणं भंते! कइलेस्साओ पण्णत्ताओ? गोयमा! छल्लेस्साओ पण्णत्ताओ तंजहा कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ॥ एगिंदियाणं भंते! कइ लेस्साओ पण्णत्ताओ? गोयमा! चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ तंजहा-कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा ॥ पुढवि काइयाणं भंते! कइलेस्साओ पण्णत्ताओ? गोयमा! एवं चेव, आउ वणस्सइ काइयाणवि एवं तेउवाऊ बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदियाणं जहा णेरइयाणं ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं पुच्छा? गोयमा! छल्लेस्सा कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ॥

बहुत नील लेश्या वाले चार चौथी में एक नील लेश्या, पांचवी में नील लेश्या वाले बहुत और कृष्ण लेश्या वाले छठी में कृष्ण लेश्या और सातवी में परम कृष्ण लेश्या जानना अहो भगवन्! तिर्यंचयोनिक में कितनी लेश्या कही है? अहो गौतम! छ लेश्या कही है तद्यथा? कृष्ण लेश्या यावत् शुक्ल लेश्या अहो भगवन्! एकेन्द्रिय में कितनी लेश्या कही है? अहो गौतम! चार लेश्या कही है कृष्णलेश्या यावत् तेजोलेश्या अहो भगवन्! पृथ्वीकाया में कितनी लेश्या कही है? अहो गौतम! ऐसे ही चार लेश्या कही है, ऐसे ही अप्काय में और वनस्पतिकाय में भी चार ही लेश्या कही है तेउकाय वायुकाय बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय में नरक के जैसे तीन लेश्या कही है तिर्यंच पंचेन्द्रिय की पृच्छा? अहो गौतम! छ लेश्या कही है कृष्ण लेश्या यावत् शुक्ल लेश्या, सम्मूर्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की पृच्छा? अहो गौतम! ऐसे

संमुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा? जहा नेरइयाणं, गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा! छलेस्सा कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ॥ तिरिक्ख जोणिणीणं पुच्छा ? गोयमा ! छलेस्साओ, एवं चेव ॥ मणुस्साणं पुच्छा ? गोयमा! छलेस्सा कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा समुच्छिम मणुस्साणं पुच्छा ? गोयमा ! जहाणेरइयाणं ॥ गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं पुच्छा ? गोयमा ! छलेस्साओ पण्णत्ताओ तंजहा कण्हा जाव सुक्कलेस्सा ॥ मणुस्सीणं पुच्छा ? गोयमा ! एवं चेव ॥ देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! छएयाओ एवं चेव । देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! चत्तारि

नेरिये की तीन लेश्या कही वैसे ही तीन लेश्या कहना गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की पृच्छा ? अहो गौतम ! छ लेश्या कही है कृष्ण यावत् शुक्ल मनुष्य की पृच्छा ? अहो गौतम ! छ लेश्या कही है समूर्छिम मनुष्य की पृच्छा ? अहो गौतम ! नरिये जैसी तीन लेश्या कही है गर्भज मनुष्य की पृच्छा ? अहो गौतम ! छ लेश्या कही है कृष्ण लेश्या यावत् शुक्ल लेश्या मनुष्यनी की पृच्छा ? ऐसे ही छही लेश्या देवता की पृच्छा ? ऐसे ही छ लेश्या, देवीकी पृच्छा ? अहो गौतम ! चार लेश्या कृष्ण लेश्या यावत् तेजो लेश्या भवनपति देवता की पृच्छा ? अहो गौतम ! ऐसे ही चार लेश्या भवनपति की देवी की पृच्छा ? ऐसे ही चार लेश्या, वाणव्यन्तर देवता की पृच्छा ? ऐसे ही चार लेश्या वाणव्यन्तर देवी के भी ऐसे ही चार लेश्या, ज्योतिषी की पृच्छा ? अहो गौतम ! एक तेजो लेश्या, ऐसे ही ज्योतिषी की

तजहा कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा ॥ भवणवासीण भते ! देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! एवं चेव ॥ एव भवणवासीणीणवि ॥ वाणमतर देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! एवंचेव ॥ एव वाणमतरीणवि ॥ जोइसियाण पुच्छा ? गोयमा ! एगातेउलेस्सा ॥ एव जोइसिणीणवि ॥ वेमाणियाण पुच्छा?गोयमा!तिण्णि तजहा तेउलेस्सा पम्हलेस्सा सुक्कलेस्सा वेमाणिणीण पुच्छा ? गोयमा ! एगा तेउलेस्सा ॥ १ ॥ एतेसिणं भते ! जीवाण सलेस्साण कण्ह लेस्साण जाव सुक्कलेस्साण अलेस्साणय

देवीमें भी एक तेजो लेश्या, वैमानिक की पृच्छा ? अहो गौतम ! तीन लेश्या कही है तद्यथा १ तेजो, २ पद्म और ३ शुक्ल पहिले दूसरे देवलोक में एक तेजो, तीसरे, चौथे, पांचवे, देवलोक में एक पद्म लेश्या और ऊपरके देवलोक में एक शुक्ल लेश्या वैमानिक की देवीकी पृच्छा ?अहो गौतम! एक तेजो लेश्या क्योंकि-देवीयों की उत्पत्ति फक्त पहिले दूसरे देवलोक में ही है यह चौवीस ही दंडक में लेश्या का कथन हुवा ॥ १ ॥ अब चौवीस ही दंडक की लेश्या की अलग २ अल्पाबहुत्व कहते हैं अहो भगवन् ! इन १ सलेशी कृष्ण लेशी यावत् शुक्ललेशी और अलेशी जीवों में कौन २ ज्यादा कम है ? अहो गौतम! सब से थोडे शुक्ल लेश्या वाले क्यों कि मनुष्य तिर्यंच में तथा लांतक ऊपर के देवलोक देवों में ही पाते हैं २ उन से पद्म लेश्या वाले संख्यात गुने क्योंकि मनुष्य तिर्यंच और सनत्कुमारादि तीन देवलोक में पाते हैं उन से तेजो लेश्या वाले असंख्यातगुने क्योंकि पृथ्वी पानी वनस्पति के अपर्याप्त में मनुष्य तिर्यंच

कयरे २ हिंतो अप्पावा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा सखेज्जगुणा, तेउलेस्सा सखेज्जगुणा, अलेस्सा अणत गुणा, काउलेस्सा अणत गुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया सलेस्सा विसेसाहिया ॥ २ ॥ एतेसिणं भते ! णेरइयाण कण्हलेस्साणं णीललेस्साणं काउलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४? गोयमा ! सव्वत्थोवा णेरइया कण्हलेस्सा, णीललेस्सा असखेज्जगुणा, काउलेस्सा

और चारों गति के दंडों में पाती है, ४ उस मे अलेशी अनंतगुने सिद्ध भगवंत आश्रिय, ५ उस से कापुत लेशी अनंतगुने क्योंकि वनस्पति में पाती है ६ उस से नील लेशी वाले विशेषाधिक क्यों कि पांचवी नरक तक पाती है, ७ उस से कृष्ण लेशी विशेषाधिक क्यों कि सातवी नरक तक पाती है तथा संक्लिष्ट परिणामी जीव बहुत हैं और ८ उससे सलेशी विशेषाधिक क्यों कि इस में छही लेश्या वाले का समावेश होता है यह समुच्चय जीवाश्रिय अल्पाबहुत्व कही ॥ २ ॥ अब चोवीस दंडक आश्रिय कहते हैं प्रथम नरक की पृच्छा अहो भगवन् ! १ कृष्ण लेशी, २ नील लेशी, और ३ कापुत लेशी नेरीये में कौनसे किसी ज्यादा तुल्य विशेष हैं? अहो गौतम! सब से थोडे नेरीये कृष्ण लेश्यावाले क्योंकि छठी सातवी नरक में ही यह होती है, और वहां का क्षेत्र थोडा होने से नेरीये थोडे हैं, उससे नील लेश्यावाले असंख्यातगुने क्योंकि पांचवी नरक में पाती है, और क्षेत्र भी बडा है, उस से कापोत लेश्यावाले नेरीये असंख्यातगुने क्योंकि

अणंतगुणा, ॥ ३ ॥ एतेसिणं भंते ! तिरिक्खजोणियाणं कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४? गोयमा ! सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिया सुक्कलेस्सा एवं जहा ओहिया, णवरं अलेस्सावज्जा भाणियव्वा ॥ एतेसिणं भंते ! एगिंदियाणं कण्हलेस्साणं जाव तेऊलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगिंदिया तेउलेस्सा काउलेस्सा अणंतगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया ॥ एतेसिणं भंते ! पुढविकाइयाणं कण्हलेस्साणं

यह भी दूसरी नरक में पाती है उस का क्षेत्र भी बड़ा है ॥ ३ ॥ अब तिर्यंच पंचेन्द्रिय की अल्पाबहुत्व कहते हैं ? अहो भगवन् ! कृष्ण लेशी यावत् शुक्ल लेश्यावाले तिर्यंच में कौन किस से थोड़े ज्यादा हैं ? अहो गौतम ! सब से थोड़े तिर्यंच पंचेन्द्रिय शुक्ल लेश्यावाले यों जिस प्रकार औधिक अल्पाबहुत्व कही वैसे ही यहां भी कहना परंतु यहां इतना विशेष कि इस में अलेशी नहीं कहना क्यों कि अलेशी चउदवे गुणस्थानवाले होते हैं और तिर्यंच पांच गुणस्थान तक ही जाते हैं अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या यावत् तेजो लेश्यावाले एकेन्द्रिय में कौन २ थोड़े ज्यादा हैं ? अहो गौतम ! सब से थोड़े एकेन्द्रिय तेजोलेश्या वाले, क्यों कि फक्त बादर प्रत्येक पृथ्वी पानी वनस्पति के अपर्याप्त में ही पाती है, उस से कापोत लेश्यावाले अनंतगुने, क्यों कि पगाम अवस्था में तथा सूक्ष्म साधारण प्रत्येक सब में पाती है, उस से

जाव तेउलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! जहा ओहिया, एगिंदिया णवरं काउलेस्सा असंखेज्जगुणा ॥ एवं आउकाइयाणवि, ॥ एतेसिणं भंते ! तेउक्काइयाणं कण्हलेस्साणं णीललेस्साणं काउलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तेउक्काइया काउलेस्सा, णीललेस्सा विसेसाहिया कण्हलेस्सा विसेसाहिया एवं वाउकाइयाणवि ॥ एतेसिणं भंते ! वणप्फइकाइयाणं कण्हलेस्साणं जाव तेउलेस्साणय जहा एगिंदियओहियाणं ॥ बेइंदिय

नील लेश्यावाले विशेषाधिक क्योंकि अनंत अध्यवसायवाले अधिक हैं, और उस से कृष्ण लेश्यावाले विशेषाधिक कारण उक्त ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया के कृष्ण लेश्या यावत् तेजो लेश्या में कौन २ थोड़े ज्यादा हैं ? अहो गौतम ! जैसे एकेन्द्रिय की औधिक अल्पाबहुत्व कही वैसे ही इस की भी कहना पृथ्वीकाया की तरह ही अप्कायाकी भी अल्प बहुत्व कहना अहो भगवन् ! कृष्ण नील, कापोत लेश्यावाले तेउकाया में कौन २ कमी ज्यादा है ? अहो गौतम ! सब से थोड़े कापोत लेश्यावाले, उस से नील लेश्यावाले विशेषाधिक, उस से कृष्ण लेश्यावाले विशेषाधिक, तेउकाया के जैसे वायुकाया की भी अल्पाबहुत्व कहना अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या यावत् तेजो लेश्या वाली वनस्पति काया में कमी ज्यादा कौन २ है ? अहो गौतम ! जैसी एकेन्द्रिय की अल्पा बहुत्व कही वैसी ही वनस्पति की कहना बेन्द्रिय तेन्द्रिय चौरिन्द्रिय

तेइंदिय चउरिंदियाणं जहा तेउकाइयाण ॥ १ ॥ एतेसिण भंते ! पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण कण्हलेस्साण जाव सुक्कलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! जहा ओहियाण,तिरिक्ख जोणियाणं णवर काउलेस्सा असंखेज्जगुणा ॥२॥ समुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण जहा तेउकाइयाण ॥३॥ गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण, जहा ओहियाण तिरिक्ख जोणियाण णवर काउलेस्सा असंखेज्जगुणा, ॥४॥ एवं तिरिक्ख जोणिणीणवि ॥५॥ एतेसिण भंते ! समुच्छिम पंचिंदिय

की भरा बहुत तेऊकाय जैसी कहना अब पचेन्द्रिय तिर्यंच की कहते हैं अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या यावत् तेजो लेश्यावाले तिर्यंच पंचेंद्रिय में कौन २ ज्यादा कमी हैं ? अहो गौतम ! जिस प्रकार औधिक तिर्यंच की कही उस ही प्रकार कहना परंतु इतना विशेष कि यहां कापोत लेश्यावाले असंख्यातगुने कहना ॥ १ ॥ समूर्च्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक की अल्पाबहुत्व तेउकाया जैसी कहना ॥ २ ॥ गर्भज तिर्यंच पंचेंद्रिय की अल्पाबहुत्व औधिक तिर्यंच के जैसी ही कहना परंतु इतना विशेष कापोत लेश्यावाले असंख्यात गुना कहना ॥ ३ ॥ ऐसे ही तिर्यंचनी की भी अल्प बहुत कहना ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! इन कृष्णलेश्या वाले संमूर्च्छिम तिर्यंच व गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय यावत् शुक्ल लेश्या वाले में कौन २ कमी ज्यादा हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे गर्भज तिर्यंच शुक्ल लेश्या वाले उस से पद्म लेश्या वाले

तिरिक्ख जोणियाण गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिय कण्हलेस्साण जाव सुक्कलेस्साणय कयरे२हिंतो अप्पावा बहुया? गोयमा! सव्वत्थोवा गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा संखेज्जगुणा, तेउलेस्सा संखेज्जगुणा, काउलेस्सा संखेज्जगुणा णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया काउ लेस्सा समुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया असंखेज्जगुणा नीललेस्सा विसेसाहिया कण्हलेस्सा विसेसाहिया ॥ ९ ॥ एतेसिणं भंते! समुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्ख

संख्यातगुने, उस से तेजो लेश्या वाले संख्यातगुने, उस से कापोत लेश्या वाले संख्यातगुने, उस से नील लेश्या वाले, विशेषाधिक, उस से कृष्ण लेश्यावाले संख्यातगुने ॥ ८ ॥ अहो भगवन्! समूर्च्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक और तिर्यंचनी इन में कृष्ण लेश्या वाले यावत् शुक्ल लेश्या वाले में कौन २ ज्यादा कमी हैं? अहो गौतम! जैसी पहली अल्पा बहुत्व कही वैसी छठी भी कहना ॥ ९ ॥ अहो भगवन्! गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय और तिर्यंचनी इन में कृष्ण लेश्या वाले यावत् शुक्ल लेश्या वाले कौन २ कमी ज्यादा विशेषाधिक हैं? अहो गौतम! सब से थोडे शुक्ल लेश्या वाले गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय २ उससे शुक्ल लेश्या वाली तिर्यंचनी संख्यात गुनी, ३ उस से पद्म लेश्या वाले गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय संख्यातगुने, ४ उस से पद्म लेश्या वाली तिर्यंचनी संख्यातगुनी, ५ उस से तेजो लेश्या वाले तिर्यंच संख्यातगुने, ६ उस से

जोणियाण तिरिक्ख जोणिणीणय कण्हलेस्साण जाव सुक्कलेस्साण कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! जहेव पंचम तहा इमपि छट्ठं भाणियव्वं ॥ ७ ॥ एतेसिणं भंते ! गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाण तिरिक्खजोणिणीणय कण्हलेस्साण जाव सुक्कलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया सुक्कलेस्सा सुक्कलेस्साओ तिरिक्खजोणिणीओ संखेज्जगुणाओ, पम्हलेसा गब्भवक्कंतियपंचिंदिय तिरिक्खजोणिया संखेज्जगुणा, पम्हलेस्साओ तिरिक्खजोणिणीओ संखेज्जगुणाओ तेउलेस्सा संखेज्जगुणा, तेउलेस्साओ संखेज्ज-गुणाओ, काउलेस्सा संखेज्जगुणा णीललेस्सा विसेसाहिया कण्हलेस्सा विसेसाहिया,

तभो लेश्या वाले तिर्यंच संख्यातगुने, ७ उस से कापुत लेश्या वाले तिर्यंच संख्यातगुने, ८ उस से नील लेश्या वाले तिर्यंच विशेषाधिक, ९ उस से कृष्ण लेश्या वाले तिर्यंच विशेषाधिक, १० उस से कापुत लेश्या वाली तिर्यंचनी संख्यात गुनी, ११ उस से नील लेश्या वाली तिर्यंचनी विशेषाधिक, १२ उस से कृष्ण लेश्या वाली तिर्यंचनी विशेषाधिक॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! समूर्च्छिम पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक गर्भज पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक, गर्भज पचेन्द्रिय तिर्यंचनी कृष्ण लेश्या वाले यावत् शुक्ललेश्या वाले में कौन २ किसी अल्पादि तुल्य हैं ? अहो गौतम ! १-सब से थोडे गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक शुक्ल लेश्या वाले,

काउलेस्साओ संखेज्जगुणाओ, णीललेस्साओ विसेसाहियाओ, कण्हलेस्साओ विसेसा हियाओ ॥ ८ ॥ एतसिणं भंते ! समुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण, गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण, गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणिणीणय कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया सुक्कलेस्सा सुक्कलेस्साओ संखेज्जगुणाओ, पम्हलेस्सा गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया संखेज्जगुणा, पम्हलेस्साओ तिरिक्ख जोणिणीओ संखेज्जगुणाओ तेउलेस्सा गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय संखेज्जगुणा तेउलेस्साओ तिरिक्ख जोणिणीओ संखेज्जगुणाओ काउलेस्सा गब्भत्ति तिरिक्ख जोणिया संखेज्जगुणा णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया, काउ

१ उस से शुक्ल लेश्या वाली तिर्यंचनी संख्यातगुनी २ उस से पद्म लेश्या वाले गर्भज तिर्यंच संख्यातगुने, ४ उस से पद्म लेश्या वाली तिर्यंचनी संख्यातगुनी, ५ उस से तेजो लेश्यावाले गर्भज तिर्यंच संख्यातगुने, ६ उस से तेजो लेश्या वाली तिर्यंचनी संख्यातगुनी, ७ उस से कापुत लेश्या वाले गर्भज तिर्यंच संख्यातगुने, ८ उस से नील लेश्या वाले गर्भज तिर्यंच विशेषाधिक, ९ उस से कृष्ण लेश्यावाले गर्भज तिर्यंच विशेषाधिक, १० उस से कापुत लेश्यावाली तिर्यंचनी संख्यातगुनी ११ उससे नील लेश्यावाली

स्साओ सखेज्जगणीओ, णीललेस्साओ विसेसाहियाओ, कण्हलेस्साओ विसेसाहियाओ, काउलेस्सा समुच्छिम पचिंदिय तिरिक्ख जोणिया असखेज्जगुणा, णीललेस्सा विसे साहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया ॥ ९ ॥ एतेसिण भते ! पचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण तिरिक्ख जोणिणीणय कण्हलेसाण जाव सुक्कलेस्साणय कयर २ हिंतो अप्पावा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया सुक्कलेस्सा, सुक्कलस्साओ सखेज्जगुणाओ पम्हलेस्सा सखेज्जगुणा, पम्हलेस्साओ सखेज्जगुणाओ तेउलेस्सा सखेज्जगुणा तेउलेस्साओ सखेज्जगुणाओ, काउलेस्सा सखेज्जगुणा णीललेस्सा विसे-साहिया कण्हलेसा विसेसाहिया काउलस्साओ सखेज्जगुणाओ, नीललस्साओ विसे-

तिर्यचनी विशेषाधिक १३ उस से कापूत लेश्यावाले समूर्च्छिम तिर्यंच पचेंद्रिय असंख्यातगुने, १४ उस से नील लेश्यावाले समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय विशेषाधिक, १५ उस स कृष्ण लेश्या वाले संमूर्च्छिम तिर्यच पचेन्द्रिय विशेषाधिक ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनीक और तिर्यचनी कृष्ण लेश्या वाले शुक्ल लेश्या वाले इनमें कौन२ कमी ज्यादा है? अहो गौतम! सब स थोडे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक शुक्लेश्या वाले २ शुक्ललेश्यावाली तिर्यचनी संख्यातगुनी, ३ पद्मलेश्यावाले तिर्यंच असंख्यातगुनी ४ पद्मलेश्या वाली तिर्यचनी असंख्यातगुनी, ५ तेजो लेश्यावाले तिर्यंच संख्यातगुने, ६ तेजो लेश्यावाली तिर्यचनी संख्यात-

साहियाओ कण्हलेस्साओ विसेसाहियाओ ॥ १० ॥ एतेसिण भंते ! तिरिक्ख जोणि याणं तिरिक्ख जोणिणिय कण्हलेस्साण जाव सुक्कलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुआवा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! जहेव णवम अप्पाबहुग तहा इमपि, णवरं काउलेस्सा तिरिक्ख जोणिया अणंतगुणा ॥ एव एते दस अप्पाबहुगा तिरिक्ख जोणियाण ॥ एव मणुस्साणवि अप्पबहुगा भाणियव्वा, णवर पच्छिमगं अप्पाबहुग णत्थि ॥ ४ ॥ एतेसिण भंते ! देवाण कण्हलेस्साण जाव सुक्कलेस्साणय

गुनी, ७ कापूत लेश्यावाले तिर्यंच संख्यातगुने, ८ नीललेश्या वाले तिर्यंच विशेषाधिक, ९ कृष्णलेश्या वाली तिर्यंच विशेषाधिक १० उस से कापूत लेश्यावाली तिर्यंचनी संख्यातगुनी, ११ उस से नीललेश्या वाली तिर्यंचनी विशेषाधिक और उस से कृष्णलेश्या वाली तिर्यंचनी विशेषाधिक ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! तिर्यंच पंचेन्द्रिय और तिर्यंचनी में कृष्णलेश्या वाले यावत् शुक्ललेश्या वाले इन में कमी ज्यादा कौन ? हैं ? अहो गौतम! जिसप्रकार नवमी अल्पाबहुत्व कही उसीप्रकार दशवी भी कहना जिसमें इतना विशेष कापूत लेशी तिर्यंच योनिक अनंतगुने कहना यों इस प्रकार दश अल्पा बहुत्व तिर्यंच योनिक की हुइ जिस प्रकार दश अल्पा बहुत्व तिर्यंच योनिक की कही उस ही प्रकार मनुष्यों की भी अल्पा बहुत्व कहना जिस में इतना विशेष पीछे की अल्पा बहुत्व नहीं कहाना क्यों कि मनुष्य अनंत नहीं हैं ॥ १० ॥ अब

स्साओ सखेज्जगणीओ णीललेस्साओ विसेसाहियाओ,कण्हलेस्साओ विसेसाहियाओ, काउलेस्सा समुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया असखेज्जगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया ॥ ९ ॥ एतेसिण भंते ! पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण तिरिक्ख जोणिणीणय कण्हलेसाण जाव सुक्कलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया सुक्कलेस्सा, सुक्कलेस्साओ सखेज्जगुणाओ पम्हलेस्सा सखेज्जगुणा, पम्हलेस्साओ सखेज्जगुणाओ तेउलेस्सा सखेज्जगुणा तेउलेस्साओ सखेज्जगुणाओ, काउलेस्सा सखेज्जगुणा णीललेस्सा विसेसाहिया कण्हलेसा विसेसाहिया काउलेस्साओ सखेज्जगुणाओ, नीललेस्साओ विसे-

तियंचनी विशेषाधिक १३ उस से कापूत लेश्यावाले समूर्च्छिम तिर्यंच पंचेंद्रिय असंख्यातगुने, १४ उस से नील लेश्यावाले संमूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय विशेषाधिक, १५ उस से कृष्ण लेश्या वाले संमूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय विशेषाधिक ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनीक और तिर्यंचनी कृष्ण लेश्या वाले शुक्ल लेश्या वाले इनमें कौन २ कमी ज्यादा हैं? अहो गौतम! सब से थोडे पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक शुक्ललेश्या वाले २ शुक्ललेश्यावाली तिर्यंचनी संख्यातगुनी, ३ पद्मलेश्यावाले तिर्यंच असंख्यातगुनी, ४ पद्मलेश्यावाली तिर्यंचनी संख्यातगुनी, ५ तेजो लेश्यावाले तिर्यंच संख्यातगुने, ६ तेजो लेश्यावाली तिर्यंचनी संख्यात-

साहियाआ कण्हलेस्साओ विसेसाहियाओ ॥ १० ॥ एतेसिण्ं भंते ! तिरिक्ख जोणि याणं तिरिक्ख जोणिणीणय कण्हलेस्साण जाव सुक्कलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुआवा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! जहेव णवम अप्पाबहुग तहा इमपि, णवरं काउलेस्सा तिरिक्ख जोणिया अणतगुणा ॥ एव एते दस अप्पाबहुगा तिरिक्ख जोणियाण ॥ एव मणुस्साणवि अप्पबहुगा भाणियव्वा, णवर पच्छिमग अप्पाबहुग णत्थि ॥ ४ ॥ एतेसिण भंते ! देवाण कण्हलेस्साण जाव सुक्कलेस्साणय

गुनी, ७ कापूत लेश्यावाले तिर्यंच संख्यातगुने, ८ नीललेश्या वाले तिर्यंच विशेषाधिक, ९ कृष्णलेश्या वाली तिर्यंच विशेषाधिक १ उस से कापूत लेश्यावाली तिर्यंचनी संख्यातगुनी, ११ उस से नीललेश्या वाली तिर्यंचनी विशेषाधिक और उस से कृष्णलेश्या वाली तिर्यंचनी विशेषाधिक ॥ ० ॥ अहो भगवन् ! तिर्यंच पचेन्द्रिय और तिर्यंचनी में कृष्णलेश्या वाले यावत् शुक्ललेश्या वाले इन में कमी ज्यादा कौन ? है ? अहो गौतम ! जिसप्रकार नवमी अल्पाबहुत्व कही उसीप्रकार दशवी भी कहना जिसमें इतना विशेष कापूत लेशी तिर्यंच योनिक अनंतगुने कहना यों इस प्रकार दस अल्पा बहुत्व तिर्यंच योनिक की हुई जिस प्रकार दश अल्पा बहुत्व तिर्यंच योनिक की कही उस ही प्रकार मनुष्यों की भी अल्पा बहुत्व कहना जिस में इतना विशेष पीछे की अल्पा बहुत्व नहीं कहना क्यों कि मनुष्य अनंत नहीं है ॥ १० ॥ अब

रसाओ सखेज्जगणीओ णीललेस्साओ विसेसाहियाओ,कण्हलेस्साओ विसेसाहियाओ, काउलेस्सा समुच्छिम पंचिदिय तिरिक्ख जोणिया असखेज्जगुणा, णीललेस्सा विसे साहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया ॥ ९ ॥ एतेसिण भंते ! पंचिदिय तिरिक्ख जोणियाण तिरिक्ख जोणिणीणय कण्हलेसाण जाव सुक्कलेस्साणय कयर २ हिंतो अप्पावा४?गोयमा! सव्वत्थोवा पंचिदिय तिरिक्ख जोणिया सुक्कलेस्सा, सुक्कलेस्साओ सखेज्जगुणाओ पम्हलेस्सा सखेज्जगुणा, पम्हलेस्साओ सखेज्जगुणाओ तेउलेस्सा संखेज्जगुणा तेजोलेस्साओ सखेज्जगुणाओ, काउलेस्सा सखेज्जगुणा णीललेस्सा विसे-साहिया कण्हलेसा विसेसाहिया काउलेस्साओ सखेज्जगुणाओ, नीललेस्साओ विसे-

तिर्यचनी विशेषाधिक ११ उस से कापूत लेश्यावाले समूर्च्छिम तिर्यंच पचेंद्रिय असंख्यातगुने, १४ उस से नील लेश्यावाले समूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय विशेषाधिक, १५ उस से कृष्ण लेश्या वाले संमूर्च्छिम तिर्यंच पचेन्द्रिय विशेषाधिक ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! पचेन्द्रिय तिर्यंच योनीक और तिर्यचनी कृष्ण लेश्या वाले शुक्ल लेश्या वाले इनमें कौन२कमी ज्यादा है?अहो गौतम! सब से थोडे पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक शुक्ललेश्या वाले २शुक्ललेश्यावाली तिर्यचनी संख्यातगुनी, ३१पद्मलेश्यावाले तिर्यंच सख्यातगुनी ४ पद्मलेश्या वाली तिर्यचनी संख्यातगुनी, ५ तेजो लेश्यावाले तिर्यंच संख्यातने, ६ तेजो लेश्यावाली तिर्यचनी संख्यात-

साहियाओ तेउलेस्साओ संखज्जगुणाओ ॥ २ ॥ एव एतासिणं भते ! देवाणं देवीणय कण्हलेस्साण जाव सुक्कलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा देवा सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा असंखज्जगुणा, काउलेस्सा असंखेज्जगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया, काउलेस्साओ देवीओ संखेज्जगुणाओ, णीललेस्साओ देवीओ विसेसाहियाओ, कण्हलेस्साओ विसेसाहियाओ, तेउलेस्सा देवा

१ उस से कृष्ण लेश्या वाली विशेषाधिक है क्यों कि उक्त कारन, से ४ उस से तेजो लेश्यावाली देवी विशेषाधिक है क्यों कि भवनपति वाणव्यन्तर ज्योतिष वैमानिक में पाती है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! कृष्ण लेशी यावत् शुक्ल लेशी देवता देवी में कौन २ कमी ज्यादा है ? अहो गौतम ! सब से थोडे देवता शुक्ललेशी, २ उस से पद्मलेशी असंख्यातगुने, ३ उस से कापुत लेशी देवता असंख्यातगुने, ४ उस से नील लेशी देव विशेषाधिक, ५ उस से कृष्णलेशी देव विशेषाधिक, ६ उस से कापुतलेशी देवीयों संख्यातगुनी, ७ उस से नील लेश्यावाली देवीयों विशेषाधिक, ८ उस से कृष्ण लेश्यावाली देवीयों विशेषाधिक, ९ उस से तेजो लेश्या वाले देवता संख्यात गुने और १० उस से तेजो लेश्यावाली देवीयां

कयेर २ हिंतो अप्पाया ४ ? गोयमा ! 'सव्वत्थोवा देवा सुक्कलेस्सा पम्हलेस्सा असंखेज्जगुणा, काउलेस्सा असंखेज्जगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया, तेउलेस्सा संखेज्जगुणा ॥ १ ॥ एतेसिण

देवता की अल्पा बहुत्व कहते हैं अहो भगवन् ! देवता में कृष्णलेश्या वाले यावत् शुक्ललेश्या वाले में कौन २ कमी ज्यादा है ? अहो गौतम ! सब से थोडे देवता शुक्ल लेश्या वाले हैं क्यों कि पांच देवलोक के ऊपर के देवों में ही पाती है, २ उस से पद्मलेश्या वाले देवता असंख्यातगुने क्यों कि सनत्कुमार महेन्द्र और ब्रह्म देवलोक में पाती है ३ उस से कापोत लेश्या वाले देवता असंख्यातगुने, क्यों कि भवनपति वाणव्यन्तर देव में पाई पाती है ४ उस से नील लेश्या वाले देव विशेषाधिक, भवनपति वाणव्यन्तर देव में ही अशुभ परिणाम वाले अधिक हैं, ५ उस से कृष्ण लेशी देवता विशेषाधिक हैं, और उस से तेजो लेशी देव असंख्यातगुने हैं क्यों कि भवनपति वाणव्यन्तर ज्योतिषी और सौधर्म ईशान देवलोक में पाती है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! देवी में कृष्ण लेश्यावाली यावत् तेजो लेश्यावाली में कौन २ कमी ज्यादा है ? अहो गौतम ! सब से थोडी देवी कापोत लेश्यावाली है क्यों कि भवनपति व्यन्तर की देवी में ही कापोत लेश्या पाती है, २ उस से नील लेश्या वाली विशेषाधिक है क्यों कि अशुभ परिणाम वाली विशेष है

भंते ! देवीणं कण्हलेस्साणं जाव तेउलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवाओ देवीओ काउलेस्साओ, नीललेस्साओ विसेसाहियाओ कण्हलेस्साओ विसेसाहियाओ, तेउलेस्साओ संखेज्जगुणाओ ॥ २ ॥ एएसिणं भंते ! देवाणं देवीणय कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा देवा सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा असंखेज्जगुणा, काउलेस्सा असंखेज्जगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया, काउलेस्साओ देवीओ संखेज्जगुणाओ, नीललेस्साओ देवीओ विसेसाहियाओ, कण्हलेस्साओ विसेसाहियाओ, तेउलेस्सा देवा

१ उस से कृष्ण लेश्या वाली विशेषाधिक है क्यों कि उक्त कारन, से ४ उस से तेजो लेश्यावाली देवी विशेषाधिक हैं क्यों कि भवनपति वाणव्यन्तर ज्योतिष वैमानिक में पाती है ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! कृष्ण लेशी यावत् शुक्ल लेशी देवता देवी में कौन २ कमी ज्यादा है ? अहो गौतम ! सब से थोडे देवता शुक्ललेशी, २ उस से पद्मलेशी असंख्यातगुने, ३ उस से कापुत लेशी देवता असंख्यातगुने, ४ उस से नील लेशी देव विशेषाधिक, ५ उस से कृष्णलेशी देव विशेषाधिक, ६ उस से कापुतलेशी देवीयों संख्यातगुनी, ७ उस से नील लेश्यावाली देवीयों विशेषाधिक, ८ उस से कृष्ण लेश्यावाली देवीयों विशेषाधिक, ९ उस से तेजो लेश्या वाले देवता संख्यात गुने और १० उस से तेजो लेश्यावाली देवीयों

सखेज्जगुणा, तेउलेस्साओ देवीओ सखेज्जगुणाओ ॥५॥ एतेसिण भंते ! भवणवासीण देवाणय कण्हलेस्साणं जाव तेउलेस्साणय कयर २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा भवणवासीदेवा तेउलेस्सा, काउलेस्सा असंखेज्जगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया कण्हलेस्सा विसेसाहिया ४ ॥ एतेसिण भंते ! भवणवासिणीण देवीणं कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! एवं चेव ॥ ५ ॥ एतेसिणं भंते ! भवणवासीणं देवाण देवीणय कण्हलेस्साण जाव तेउलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा भवणवासी देवा तेउ

संख्यातगुनी ॥ ३ ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! इन भवनपति देवता में कृष्ण लेश्यावाले यावत् तेजो लेश्यावाले में कमी ज्यादा कौन २ हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे भवनपति देवता तेजो लेशी, उस से कापुतलेशी देव असंख्यात गुने, ३ उन से नीललेशी देव विशेषाधिक, ४ उन से कृष्ण लेशी देव विशेषाधिक ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! भवनपति देवीकी कृष्ण लेश्या वाली यावत् तेजो लेश्या वाली इन में कमी ज्यादा कौन२ है? अहो गौतम ! जिस प्रकार देवता की अल्पा बहुत्व कही वैसी ही देवी की भी कहना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! भवनपति देवता भवनपति की देवी इनमें कृष्ण लेश्या वाले यावत् शुक्ल लेश्या वाले में कौन २ कमी ज्यादा हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे भवनपति देवता तेजो लेश्या वाले, १ उन से भवनपति

लेस्सा, भवणवासिणीओ तेउलेस्साओ संखेज्जगुणाओ, काउलेस्सा भवणवासीदेवा असंखेज्जगुणा, नीललेस्सा विसेसाहिया कण्हलेस्सा विसेसाहिया, काउलेस्साओ भवणवासिणीओ संखेज्जगुणाओ, नीललेस्साओ विसेसाहियाओ, कण्हलेस्साओ विसेसाहियाओ ॥ ६ ॥ एवं वाणमंतराणवि तिण्णव अप्पाबहुगा जहेव भवणवा- सीण तहेव भाणियव्वा ॥ ७ ॥ एतेसिणं भंते ! जोइसियाणं देवाणं देवीणय तेउ- लेस्साणं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जोइसिया देवा तेउ-

की देवीयों तेजो लेश्यावाली विशेषाधिक, २ उन से कापुत लेश्या वाले भवनपति देवता असंख्यातगुने, ४ उन से नील लेश्या वाले भुवनपति देवता विशेषाधिक, ५ उन से कृष्णलेशी देवता विशेषाधिक, ६ उस से कापुत लेश्या वाली भुवनपतिकी देवी संख्यातगुनी, ७ उनसे नील लेश्यावाली देवी विशेषाधिक और ८ उन से कृष्णलेश्या वाली देवी विशेषाधिक ॥ ६ ॥ जिस प्रकार भवनपति की तीन अल्पाबहुत कही वैसे ही वाणव्यन्तर देवता की भी तीनों अल्पाबहुत कहना (देवता देवीकी भेली गिनने से तीन अल्पा बहुत होती है) ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! ज्योतिषी देवता देवी में तेजो लेश्या वाले में कौन २ किसी ज्यादा हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे ज्योतिषी देवता तेजो लेश्या वाले, उनसे

सखेज्जगुणा, तेउलेस्साओ देवीओ सखेज्जगुणाओ ॥५॥ एतेसिण भंते ! भवणवासीण देवाणय कण्हलेस्साणं जाव तेउलेस्साणय कयर २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा भवणवासीदेवा तेउलेस्सा, काउलेस्सा असखेज्जगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया कण्हलेस्सा विसेसाहिया ४ ॥ एतेसिण भंते ! भवणवासिणीण देवीण कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! एवं चेव ॥ ५ ॥ एतेसिण भंते ! भवणवासीणं देवाण देवीणय कण्हलेस्साण जाव तेउलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा भवणवासी देवा तेउ

संख्यातगुनी ॥ ३ ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! इन भवनपति देवता में कृष्ण लेश्यावाले यावत् तेजो लेश्यावाले में कमी ज्यादा कौन २ हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे भवनपति देवता तेजो लेशी, उस से कापुतलेशी देव असंख्यात गुने, ३ उन से नीललेशी देव विशेषाधिक, ४ उन से कृष्ण लेशी देव विशेषाधिक ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! भवनपति देवीकी कृष्ण लेश्या वाली यावत् तेजो लेश्या वाली इन में कमी ज्यादा कौन२ हैं? अहो गौतम ! जिस प्रकार देवता की अल्पा बहुत्व कही वैसी ही देवी की भी कहना ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! भवनपति देवता भवनपति की देवी इनमें कृष्ण लेश्या वाले यावत् शुक्ल लेश्या वाले में कौन २ कमी ज्यादा हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे भवनपति देवता तेजो लेश्या वाले, १ उन से असुरपति

सखेज्जगुणाओ ॥ ३ ॥ एतेसिण भंते।भवणवासीणं देवाणं, वाणमंतराण, जोइसियाण वेमाणियाणय देवाणय कण्हलेस्साण जाव सुक्कलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४? गोयमा ! सव्वत्थोवा वेमाणिया देवा सुक्कलेस्सा, पम्हलेस्सा असंखेज्जगुणा, तेउ-लेस्सा असंखेज्जगुणा, तेउलेस्सा भवणवासीदेवा असंखेज्जगुणा, काउलेस्सा असंखे ज्जगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया तेउलेस्सा वाणमंतरादेवा असंखेज्जगुणा काउलेस्सा असंखेज्जगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया ॥ कण्हलेस्सा विसेसाहिया तेउलेस्सा जोइसिया देवा संखेज्जगुणा ॥ एतेसिणं भंते! भवणवासीणं

रा शुक्ललेश्या वाले में कौन २ से थोडे ज्यादा हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे वैमानिक देव शुक्ल ...या वाले २ उन से पद्मलेशी असंख्यातगुने, ३ उन से तेजो लेश्या वाले वैमानिक असंख्यातगुने, ४ ...र से तेजो लेश्या वाले भवनपति देवता असंख्यातगुने, ५ उनसे कापोत लेश्यावाले भवनपति असंख्यात ६ उन से नील लेश्या वाले भवनपति विशेषाधिक, ७ कृष्ण लेशी विशेषाधिक, ८ उन से तेजो ...शी वाणव्यन्तर देव असंख्यात गुने, ९ उन से कापुत लेशी वाणव्यन्तर असंख्यात गुने १० उन से नील ...शी वाणव्यन्तर देव विशेषाधिक, ११ उन से कृष्ण लेशी वाणव्यन्तर देव विशेषाधिक, १२ उन से ...ा लेश्या वाले ज्योतिषी देवता संख्यातगुने ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! इन भवनपति वाणव्यन्तर ज्योतिषीय

वाणमंतरीण जोइसिणीणं वेमाणिणीणय कण्हलेस्साण जाव तेउलेस्साणय कयरे २

हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवाओ देवीओ वेमाणिणीओ तेउलेस्साओ

भवणवासिणीओ तेउलेस्साओ असंखेज्जगुणाओ काउलेस्साओ असंखेज्जगुणाओ,

णीललेस्साओ विसेसाहियाओ कण्हलेस्साओ विसेसाहियाओ, तेउलेस्साओ वाणमंतरीओ

देवीओ असंखेज्जगुणाओ काउलेस्साओ असंखेज्जगुणाओ,णीललेस्साओ विसेसाहियाओ,

कण्हलेस्साओ,विसेसाहियाओ तेउलेस्साओजोइसिणीओ देवीओ संखेज्जगुणाओ॥एतेसिण

वैमानिक देव की देवीयों कृष्ण लेश्या वाली यावत् तेजो लेश्या वाली में कौन २ ज्यादा कमी है? अहो गौतम ! सब से थोडी वैमानिक देवी तेजो लेश्या वाली,२ उन से भवनपति की देवी तेजो लेश्या वाली असंख्यात गुनी, ३ उन से कापुत लेश्या वाली भुवनपति की देवी असंख्यात गुनी,४ उन से नील लेश्या वाली देवी विशेषाधिक,५उन से कृष्ण लेश्या वाली देवी विशेषाधिक,६उन से तेजो लेश्या वाली वाण व्यन्तरी देवी असंख्यातगुनी, ७ उन से कापुत लेश्या वाली व्यंतरी देवी असंख्यातगुनी, ८ नील लेश्या वाली व्यंतरी देवी विशेषाधिक, ९ कृष्ण लेश्या वाली व्यंतरी देवी विशेषाधिक, १० उन से तेजोलेश्या वाली ज्योतिषीकी देवी संख्यातगुनी ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! भवनपति देवता यावत् वैमानिक देवता देवी कृष्ण लेश्या वाले यावत् शुक्ल लेश्या वाले इन में कौन २ थोडे ज्यादा है ? अहो गौतम ! १ सब से थोडे

भवणवासीण जाव वैमाणियाण देवाणय देवीणय कण्हलेस्साण जाव सुक्कले-
साण कयर २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वेमाणिया देवा सुक्कलेस्सा
पम्हलेस्सा असंखेज्जगुणा तेउलेस्सा असंखज्जगुणा, तेउलेस्साओ देवीओ वेमाणिणीओ
संखज्जगुणाओ, तेउलेस्सा भवणवासी देवा असंखेज्जगुणा, तेउलेस्साओ भवणवा
सिणीओ संखेज्जगुणाओ, काउलेस्सा भवणवासी असंखिज्जगुणा नीललेस्सा विसेसाहिआ
कण्हलेस्सा विसेसाहिआ काउलेस्साओ भवणवासीणीओ संखेज्जगुणाओ, नीललेस्साओ
विसेसाहियाओ, कण्हलेस्साओ विसेसाहियाओ, तेउलेस्सा वाणमंतरा देवा असंखेज्ज
गुणा, तेउलेस्साओ वाणमंतरीओ देवीओ संखज्जगुणाओ काउलेस्सा वाणमंतरा

वैमानिक देवता शुक्ल लेश्यावाले, २ उनसे पद्म लेश्यावाले वैमानिक असंख्यातगुन, ३ उनसे तेजोलेश्यावाले वैमानिक असंख्यातगुने, ४ उनसे तेजोलेश्यावाली वैमानिककी देवीयों संख्यातगुनी ५ उनसे तेजोलेश्यावाले भवनपति देवता असंख्यातगुने, ६ उन से तेजो लेश्यावाली भवनपति देवी संख्यातगुनी, ७ उनसे कापुतलेशी भवनपति देवता असंख्यातगुन ८ उन से नील लेश्या वाले भवनपति देव विशेषाधिक, ९ उन से कृष्ण लेश्यावाले भुवनपति देव विशेषाधिक, १० कापोत लेशी भवनपति देवी संख्यातगुन, ११ उन से नील लेश्या भवनपति की देवी विशेषाधिक १२ उन से कृष्णलेशी भुवनपति की देवी विशेषाधिक, १३ उन से तेजो लेशी वाणव्यन्तर देवता असंख्यातगुन, १४ उन से तेजो लेश्या वाली वाणव्यन्तर की देवी संख्यातगुनी, १५

असंखेज्जगुणा, णीललेस्सा विसेसाहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया, काउलेस्साओ वाणमंतरीओ देवीओ संखेज्जगुणाओ, णीललेस्साओ विसेसाहियाओ, कण्हलेस्साओ विसेसाहियाओ तेउलेस्सा जोइसियादेवा संखेज्जगुणा तेउलेस्साओ जोइसिणीओ देवीओ संखेज्जगुणाओ ॥ १ ॥ एतेसिणं भंते ! जीवाणं कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पड्डियावा महिड्डियावा ? गोयमा ! कण्हलेस्सेहिंतो नीललेस्सा महिड्डिया, णीललेस्सेहिंतो काउलेस्सा महिड्डिया एवं काउलेस्सेहिंतो तेउलेस्सा महिड्डिया, तेउलेस्सेहिंतो पम्हलेस्सा महिड्डिया, पम्हलेस्सेहिंतो सुक्कलेस्सा

कापुत लेशी वाणव्यन्तरदेव असंख्यातगुने, १६ नील लेशी वाणव्यन्तरदेव विशेषाधिक, १७ कृष्णलेशी वाणव्यन्तर विशेषाधिक, १८ उन से कापुत लेश्या वाली वाणव्यन्तर की देवी संख्यातगुनी, १९ उन से नील लेशी व्यन्तर देवी विशेषाधिक, २० उन से कृष्णलेशी व्यन्तरदेवी विशेषाधिक, २१ उन से तेजो लेशी ज्योतिषी देवता संख्यात गुने, और २ उन से तेजो लेश्या वाली ज्योतिषी की देवी संख्यातगुनी, ॥ १ ॥ अब छ लेश्या की अल्पाबहुत्व ऋद्धि आश्रिय कहते हैं ॥ अहो भगवन् ! इन जीवों में कृष्ण लेश्या वाले में यावत् शुक्ल लेश्या वाले में कौन २ किसी अल्प ऋद्धि वाले व ज्यादा ऋद्धि वाले हैं ? अहो गौतम ! कृष्ण लेशी वाले से नील लेश्या वाला महर्द्धिक है, नील लेश्या वाले से कापुत लेशी महामहर्द्धिक है,

महिड्डिया॥ सव्वप्पिड्डिया जीवा किण्हलेस्सा, सव्वमहिड्डिया जीवा सुक्कलेस्सा ॥ एते सिण भंते ! णेरइयाणं कण्हलेस्साण णीललेस्साणं काउलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पिड्डियावा महिड्डियावा ? गोयमा ! कण्हलेस्सेहिंतो णीललेस्सा महिड्डिया, णीललेस्सहिंतो काउलेस्सा महिड्डिया, ॥ सव्वअप्पड्डिया णेरइया कण्हलेस्सा सव्वमहिड्डिया णेरइया काउलेस्सा॥ एतसिण भंते! तिरिक्ख जोणियाण कण्हलेस्साणं जाव सुक्कलेस्साणय कयरे २ हिंता अप्पिड्डियावा महड्डियावा ? गोयमा जहा जीवा ॥

कापूत लेशी स तेजो लेशी महाऋद्धिक है तेजो लेशी स पद्म लेशी महाऋद्धिक है और पद्मलेशी स शुक्ललेशी महाऋद्धिक है अर्थात् सब स अल्पऋद्धिक वाले कृष्णलेश्या वाले है और सब से अधिक ऋद्धि वाले शुक्ललेश्या वाले हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नरीये में कृष्णलेशी वाले में यावत् कापात लेशी वाले में ज्यादा कमी ऋद्धिवाला कौन २ है ? अहो गौतम ! कृष्ण लेशी नेरीये स नीललेशी नेरीया महाऋद्धिक हैं, नीललेशी नेरीय स कापात लेशी नेरीया महाऋद्धिक है, सब स अल्प ऋद्धिवाले कृष्ण लेशी नेरीय और सब से महाऋद्धिक कापुत लेशी नरीये ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! तिर्यंच पंचेन्द्रिय में कृष्ण लेशी में यावत् शुक्ल लेशी में कौन २ अल्पऋद्धिक व महाऋद्धिक है? अहो गौतम ! जिस

एतेसिणं भंते ! एगिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं कण्हलेस्साणं जाव तेउलेस्साणय कयरे २ हिंतो अप्पिड्डियावा महिड्डियावा ? गोयमा ! कण्हलेस्सेहिंतो एगिंदिय तिरिक्ख जोणिए हिंता णीललेस्सा महिड्डिया, णीललेस्से हिंतो काऊ लेस्सा महिड्डिया, काऊलेस्साहिंतो तेऊलेस्सा महिड्डिया ॥ सव्व अप्पिड्डिया एगिंदिया तिरिक्खजोणिया कण्हलेस्सा, सव्वमहिड्डिया एगिंदिया तेऊलेस्सा ॥ एवं पुढविकाइयाणवि ॥ एवं एतेणं अभिलावेणं जहेव लेस्साओ भावियाओ तहेव नेयव्वं जाव चउरिंदिया ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं, तिरिक्ख जोणिणीणं समुच्छिमाणं गब्भवक्कतियाणय

प्रकार समुच्चय जीव का कहा उस ही प्रकार तिर्यंच का कहना ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय तिर्यंच योनि कृष्ण लेशी यावत् तेजो लेशी में कौन २ कमी ज्यादा ऋद्धि पाते हैं ! अहो गौतम ! कृष्ण लेशी एकेन्द्रिय से नील लेशी एकेन्द्रिय महाऋद्धिक हैं, नील लेशी से कापुत लेशी महाऋद्धिक हैं और कापुत लेशी से तेजो लेशी महाऋद्धिक हैं, सब अल्पऋद्धि वाला कृष्ण लेशी एकेन्द्रिय और सब से महाऋद्धिक तेजो लेश्या एकेन्द्रिय इस प्रकार ही पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय, तिर्यंचनी संमूर्च्छिम गर्भज सब का कहना जिस में जितनी लेश्या हो उसकी अल्पाबहुत्व करनी प्रथम लेश्याका कथन

सव्वेसिं भाणियव्वा जाव अप्पिड्ढिया वेमाणियादेवा तेउलेस्सा, सव्वमहिड्ढिया वेमाणियादेवा सुक्कलेस्सा ॥ केइ भणंति चउवीसं दंडएणं इड्ढी भाणियव्वा ॥ लेस्सापए बीओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ २ ॥

णेरइएणं भंते ! णेरइएसु उववज्जति अनेरइए नेरइएसु उववज्जति ? गोयमा ! णेरइए णेरइएसु उववज्जंति, नो अनेरइए णेरइएसु उववज्जति, एवं जाव वेमाणियाणं ॥१॥ णेरइएणं भंते ! णेरइएहिंतो उव्वट्टंति अणेरइए नेरइएहिंतो उव्वट्टंति ? गोयमा !

ऋद्धिक कहना और अन्तिम लवयावाला महाऋद्धिक कहना जैसे वैमानिक देवोमें तेजो लेश्यावाला सर्व से अल्पऋद्धिक और शुक्ल लेश्या वाला सब से महाऋद्धिक है ॥ यों चोवीस ही दंडक की ऋद्धि का कहना ॥ इति लेश्या पद का दूसरा उद्देशा ॥ १७ ॥ २ ॥

अहो भगवन् ! जो नेरीये हैं वे नरक में उत्पन्न होते हैं कि जो नेरीये नहीं हैं वे नरकमें उत्पन्न होते हैं ? अहो गौतम ! नेरीये ही नरक में उत्पन्न होते हैं परंतु जो नेरीये नहीं हैं वे नरक में उत्पन्न नहीं होते हैं यहां जिस में नरकायु का बन्धन किया है उन मनुष्य तिर्यंच पंचेन्द्रिय को ही नेरीया ग्रहण किया है ॥ ऐसे ही यावत् चोवीस ही दंडक कहना ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नेरीये नरक से निकलते हैं

अणेरइए णेरइए हिंतो उव्वट्टति णो णेरइए णेरइएहिंतो उव्वट्टति॥ एवं जाव वेमाणिए, णवरं जोइसिय वेमाणिएसु चयति अभिलावो कायव्वो ॥ २ ॥ से णूण भंते ! कण्हलेस्से णेरइए कण्हलेस्सेसु णेरइएसु उववज्जइ कण्हलेसेसु उव्वट्टति जल्लेस्से उववज्जति तल्लेस्से उव्वट्टति? हंता गोयमा ! कण्हलेस्से णेरइए कण्हलेस्सेसु णेरइएसु उववज्जंति कण्हलेस्सेसु उव्वट्टति, जल्लेस्सेसु उववज्जति तल्लेसेसु उव्वट्टति, ॥ एवं णिललेस्साविं एवं काउलेस्साविं, एवं असुर कुमाराणवि जाव थणियकुमारा, णवरं तेउलस्सा

कि अनेरीय नरक मे निकलते है ? अहो गौतम ! जो नेरीया नहीं है वही नरक से निकलता है परंतु जो नेरीया है वह नरक से नही निकलता है अर्थात् नरकायु पूरा भोगवकर क्षय किया है वही नरक से मृत्यु पाकर मनुष्य तिर्यंच में आकर उत्पन्न होता है ॥ इस प्रकार ही यावत् वैमानिक पर्यंत कहना जिस में इतना विशेष ज्योतिषी और वैमानिक का चवन कहना, क्योंकि वे ऊपर लोक से आयुष्य पूर्ण कर नीचे लोक में आकर उत्पन्न होते हैं ॥ २ ॥ अहो निश्चय से भगवान् ! कृष्ण लेशिक नेरीये कृष्ण लेशी नेरीये पने उत्पन्न होता है, वैसे ही वह कृष्ण लेश्या में उत्पन्न हुआ नेरीया पुनः कृष्ण लेश्या में चवन करता है क्या ? हां गौतम ! कृष्ण लेशी नरीये कृष्ण लेशी-नेरीये पने ही उत्पन्न होता है और फिर कृष्ण लेश्या में ही निकलता है जिस लेश्या से उत्पन्न होता है वही लेश्या पन

अब्भहिया ॥ सेणूणं भंते ! कण्हलेस्से पुढविकाइए कण्हलेस्सेसु पुढविकाइएसु उववज्जंति कण्हलेस्से उव्वट्टंति जल्लेसेसु उववज्जंति तल्लेसेसु उव्वट्टंति ? हंता गोयमा ! कण्हलेस्से पुढविकाइए किण्हलेस्सेसु पुढविकाइएसु उववज्जंति, सिय कण्हलेस्से उव्वट्टंति, सिय नीललेस्से उव्वट्टंति, सिय काउलेस्से उव्वट्टंति सिय जल्लेस्सेसु उववज्जंति सिय तल्लेसेसु उव्वट्टंति ॥ एवं नीलकाउलेस्सासुवि ॥ सेणूणं भंते ! तेउलेस्से पुढविकाइए तेउलेस्सेसु पुढविकाइएसु उववज्जंति ? पुच्छा ?

उत्पन्न होती है और उस ही लेश्या में मरता है. ऐसे ही जो नील लेश्या में उत्पन्न होता है वह नील लेश्या सहित ही मरता है और कापोत लेश्या में उत्पन्न होता है वह कापोत लेश्या सहित ही मरता है ऐसे ही असुर कुमारादि दश ही भवनपति देव का कहना परंतु जिस में इतना विशेष भुवनपति देव में तेजोलेश्यापने भी उत्पन्न होता है और तेजो लेश्यापने ही मरता है यह चौथी लेश्या यहां अधिक पाती है अहो भगवन् ! निश्चय से कृष्ण लेशी पृथ्वीकाया कृष्ण लेशी पृथ्वीकायापने ही उत्पन्न होती है और कृष्ण लेशीपने ही पीछी निकलती (मरती) है और जिस लेश्यापने उत्पन्न होती है उस ही लेश्यापने पीछे निकलती है क्या ? अहो गौतम ! कृष्ण लेशी पृथ्वीकाया कृष्ण लेशी पृथ्वीकायापने भी उत्पन्न होती है स्यात् कृष्ण लेशी पृथ्वीकायापने निकलती है लेश्या का पलटा होने से, नील लेश्यापने भी निकलती है स्यात्

हंता गोयमा ! तेउलेस्से पुढविकाइए तेउलेस्सासु पुढवि काइएसु उववज्जति सिय कण्हलस्सेसु उवट्टति, सिय नीलेस्सेसु उवट्टंति, सिय काउलस्सेसु उवट्टति णो चेवणं तेउलस्सेसु उवट्टंति ॥ एवं आउकाइय वणस्सईकाइयावि, तेउवाउवि, एवं चेव णवर एतासिं तेउलस्सा णत्थि, वि तिय चउरिंदिया एवं चेव, तिसुलेस्सासु पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया मणुस्सा जहा पुढविकाइया, आदिल्लियासु तिसुलेसासु भणिया,तहा छसुवि लस्सासु भाणियव्व ।, णवरं छप्पिलस्साओ उच्चारेयव्वाओ,वाणमंतरा

कापोत लेशी होकर भी निकलती है अर्थात् कदाचित तो जिस लेश्यापने उत्पन्न होती है उस ही लेश्यापने निकलती है और कदाचित अन्य नील कापोत लेश्या होकर भी निकलती है अहो भगवन् ! निश्चय पृथ्वीकाया तेजो लेश्यापने उत्पन्न हो पुनः तेजो लेश्यापने ही निकलती है क्या ? अहो गौतम ! तेजो लेशी पृथ्वीकाया तेजो लेश्यापने उत्पन्न होवे कदाचित् कृष्ण लेशीपने निकलती है कदाचित् नील लेश्यापने निकलती है स्यात् कापोत लेश्यापने भी निकलती है परंतु तेजो लेश्यापने पीछी नहीं निकलती है क्यों कि पृथ्वीकाया की अपर्याप्त अवस्था में ही थोड़े काल ही तेजोलेश्या पाती है इस प्रकार ही अपूकाया वनस्पतिकाया का कहना ऐसे ही तेउकाया वायुकाया का भी कहना परंतु इतना विशेष कि यहां तेजोलेश्या नहीं कहना ऐसे ही बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चोरिंद्रिय के भी तीनों लेश्या कहना तिर्यंच

जहा असुरकुमारा ॥ सेणूण भंते ! तेउलेस्से जोइसिए तेउलेस्सेसु जोइसिएसु उववज्जति, जहेव असुरकुमाराण, एव वेमाणियाणवि, णवरं दोण्हवि चयति अभिलावो ॥ २ ॥ सेणूण भंत ! कण्हलेस्से नीललेस्से काउलेस्से नेरइए कण्हलेस्सेसु नीललेस्सेसु काउलेस्सेसु णेरइएसु उववज्जति, कण्हलेस्से नीललेस्से काउलेस्से उव्वट्टति जल्लेस्सेसु उववज्जति तल्लेसेसु उव्वट्टति ? हंता गोयमा ! कण्हलेस्से नीललेस्से काउलेस्से उववज्जति, जल्लेसेसु उववज्जति तल्लेसेसु उव्वट्टति ॥

पंचेन्द्रिय और मनुष्य का पृथ्वीकाया जैसा ही पहिले की तीन लेश्या सम्बन्धी कहना परन्तु इतना विशेष कि तिर्यंच पंचेन्द्रिय व मनुष्य में छ ही लेश्यापने आकर उत्पन्न होते हैं और छ ही लेश्यापने अलग २ निकलते भी हैं वाणव्यन्तर देवताका असुरकुमार जैसा कहना अहो भगवन् ! तेजो लेश्यावाला ज्योतिषी तेजोलेश्यावाले ज्योतिषीपने उत्पन्न होता है यावत् तेजो लेश्यापने ही निकलता है ? अहो गौतम ! जैसा असुर कुमार देव का कहा वैसा ही कहना ऐसे ही वैमानिक देव का भी कहना परन्तु ज्योतिषी वैमानिक का चवन का कहना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! निश्चय से कृष्ण लेशी नील लेशी कापोत लेशी नेरीये कृष्ण लेशी नील लेशी कापोत लेशी नरीय में उत्पन्न होकर पुनः कृष्णलेशी नील लेशी कापोत लेशीपने ही निकलता है क्या ! अर्थात् जिस लेश्या में उत्पन्न होता है उस ही लेश्या से निकलता है क्या ? अहो गौतम !

सेणूणं भंते! कण्हलेस्से जाव तेउलेस्से असुरकुमारे कण्हलेस्से जाव तेउलेस्सेसु असुर कुमारेसु उववज्जंति, ? एवं जहेव णेरइए तहा असुरकुमारेवि जाव थणीय कुमारेवि ॥ सेणूणं भंते! कण्हलेस्से जाव तेउलस्से पुढविकाइए कण्हलेसेसु जाव तेउलेस्सेसु पुढवि काइएसु उववज्जति, एवं पुच्छा जहा असुरकुमाराण ? हंता गोयमा ! कण्हलेस्से जाव तेउलेस्से पुढविकाइए कण्हलेसेसु जाव तेउलेस्सेसु पुढवीकाइएसु उववज्जति, सिय कण्हलेस्से उववट्टति सिय णीललेस्से उववट्टंति, सिय काउलेस्से उववट्टति, सिय जल्लेसे उववज्जति तल्लेस्सेसु उववट्टंति तेउलेस्से उववज्जति णो चेवण तेउलेस्से उववट्टंति ।

कृष्णलेशी नीललेशी कापोत लेशी नारकी जिस लेश्यापने उत्पन्न होते हैं उस ही लेश्यापने निकलते हैं। अहो भगवन् ! निश्चय कृष्ण लेशी यावत् तेजोलेशी असुर कुमार कृष्ण लेश्यापने यावत् तेजोलेश्यापने असुर कुमारपने उत्पन्न होवे हैं ? अहो गौतम ! जैसा नेरियों का कहा वैसा ही असुर कुमार का भी कहना यावत् स्तनितकुमारतक इसी प्रकार कहना अहो भगवन् ! निश्चय कृष्णलेशी यावत् तेजोलेशी पृथ्वीकाया कृष्णलेशी यावत् तेजोलेशी पृथ्वीकायापने उत्पन्न होवे हैं इत्यादि प्रश्न ? जैसा असुर कुमार का, कहा वैसाही कहना अहो गौतम ! कृष्ण लेशी यावत् तेजोलेशी पृथ्वीकायापने उत्पन्न होवे हैं उत्पन्न होकर स्यात् कृष्ण लेश्यापने निकलते हैं स्यात् नील लेश्यापने निकलते हैं स्यात् कापोत लेश्यापने निकलते हैं

एवं आउकाइय वणप्फइकाइयाणवि भाणियव्वं॥सेणूणं भंते!कण्हलेस्से नीललेस्से काउ लेस्से तेउकाइए कण्हलेस्सेसु नीललेस्सेसु काउलेस्सेसु तेउकाइएसु उववज्जति कण्हलेस्से णीललेस्से काउलेस्से उव्वट्टंति, जल्लेस्से उववज्जति तल्लेस्से उव्वट्टति? हंता गोयमा! कण्हलेस्सा नीललेस्सा काउलेस्सा तेउकाइए कण्हलेस्सेसु णीलकाउलेस्सेसु तेउकाइएसु उववज्जंति सिय कण्हलेस्से उव्वट्टति सिय नीललेस्से उव्वट्टति, सिय काउलेस्से उव्वट्टति सिय जल्लेस्सेसु उववज्जति तल्लेस्से उव्वट्टति॥एवं वाउकाइए बेइंदिय तेइंदिय,चउरिंदियाणवि भाणियव्वा॥सेणूण भंते!कण्हलेस्से जाव सुक्कलेस्से पंचेंदिय,तिरिक्ख

इन तीनों लेश्या में से जिस लेश्यापने उत्पन्न होते हैं कदाचित् उसी लेश्यापने भी निकलते हैं, परंतु तेजो लेश्यापने उत्पन्न हो जाते हैं परंतु तेजोलेश्यापने निकलते नहीं हैं ऐसे ही अप्काया वनस्पतिकाया का कहना अहो भगवन्! कृष्ण लेशी नील लेशी कापोत लेशी तेउकाया तेजस्कायपने उत्पन्न होते हैं कृष्ण नील कापोत लेशीपने निकलते हैं! अहो गौतम!कृष्ण लेशी नील लेशी कापोतलेशी तेजस्कायपने उत्पन्न होते हैं वे स्यात् कृष्ण लेशीपने निकलते हैं, स्यात् नील लेशीपने निकलते हैं, स्यात् कापोत लेशीपने निकलते हैं, स्यात् जिस लेश्या में उत्पन्न होते हैं उस ही लेश्यापने निकलते हैं ऐसे ही वायुकाया बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय का कहना अहो भगवन्! कृष्ण लेशी यावत् शुक्ल लेशी तिर्यंच पंचेन्द्रिय कृष्ण लेशी यावत्

आणिए कण्हलेसेसु जाव सुक्कलेस्सेसु पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएसु उववज्जइ पुच्छा ? हंता गोयमा ! कण्हलेस्से जाव सुक्कलेस्से पंचिंदियतिरिक्खजोणिए कण्हलेसेसु जाव सुक्कलेस्सेसु पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएसु उववज्जंति सिय कण्हलेस्से उव्वट्टंति जाव सिय सुक्कलेस्से उव्वट्टंति सिय जल्लेस्से उववज्जंति तल्लेस्से उव्वट्टंति॥ एवं मणूसेवि ॥ वाणमंतरे जहा असुरकुमार, जोइसिय वेमाणिएवि एवं चेव णवरं जस्स जल्लेस्सा । दोण्हवि चयंति भाणियव्वं ॥ ४ ॥ कण्हलेस्सेणं भंते ! णेरइए कण्हलेस्सं णरइयं पणिहाय ओहिणा सव्वओ समंता समभिलोयमाणे २ केवतियं

शुक्ल लेश्यी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिकपने उत्पन्न होवे इत्यादि पृच्छा ? अहो गौतम ! कृष्ण लेश्यी यावत् शुक्ल लेश्यी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक कृष्ण लेश्यी यावत् शुक्ल लेश्यी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिकपने उत्पन्न होकर स्यात् कृष्ण लेश्यी हो निकले स्यात् नील लेश्यी हो निकले यावत् स्यात् शुक्ल लेश्यी हो निकले, स्यात् जिस लेश्या में उत्पन्न होवे उस ही लेश्यापने निकले ऐसे ही मनुष्य का भी कहना वाणव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक का जैसा असुरकुमार का कहा वैसा ही कहना परंतु इतना विशेष जिनमें जो लेश्या हो वह कहना और चवने का आलापक कहना ॥ ४ ॥ अब अवधि ज्ञान की लेश्या (विषय) कहते हैं अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या वाला नैरीया कृष्ण लेश्या वाले नरीये को प्रधान अवधिज्ञानकर सर्व चारों तरफ सम्यक् प्रकार देखता

खेत्त जाणति केवइयं खेत्तं पासति ? गोयमा ! णो बहुयं खेत्त जाणइ णो बहुयं खेत्त पासति णो दूरं खेत्त जाणति णो दूरखेत्तं पासति, इत्तिरिय मेव खेत्तं जाणइ इत्तिरिय मेव खेत्तं पासइ ॥ सेकेणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चति कण्हलेसेण णेरइए तत्तेणं जाव इत्तरिये मेव खेत्त पासति? गोयमा! सेजहा णामए केइपुरिस बहुसमरमणिज्ज भूमिभागंसिट्ठिच्चा सव्वओ समंता समभिलोएज्जा तएणं स पुरिस धरणितलगए पुरिसे पणिहाए सव्वओ समंता समभिलोएमाणे २ णो बहुयं खेत्त जाण पासति

हुवा कितना जानता है कितना देखता है ? अहो गौतम ! बहुत क्षेत्र जानता नहीं है बहुत क्षेत्र देखता भी नहीं है, वैसे ही बहुत दूर क्षेत्र जानता नहीं है बहुत दूर देखता नहीं है थोडा क्षेत्र जानता है थोडा क्षेत्र देखता है यहां विशुद्ध लेश्या की अपेक्षा से अविशुद्ध थोडा थोडा क्षेत्र जानता देखता है अविशुद्ध लेश्याकी अपेक्षा विशुद्ध लेश्यावाला किंचित अधिक क्षेत्र देखता है परंतु ज्यादा दूर जानता देखता नहीं है [सातवी नरक वाले जघन्य आधा कोश उत्कृष्ट एक कोश, छठी वाले जघन्य एक कोश, उत्कृष्ट देढ कोश पांचवी वाले जघन्य देढ कोश उत्कृष्ट दो कोश, चौथी वाले जघन्य दो कोश उत्कृष्ट अढाइ कोश तीसरी वाले जघन्य अढाइ कोश उत्कृष्ट तीन कोश, दूसरी वाले जघन्य तीन कोश उत्कृष्ट साढे तीन कोश, और पहिलीवाले जघन्य साढे तीनकोश उत्कृष्ट चारकोश क्षेत्र अवधीज्ञान में जानते देखते हैं। अहो

[illegible] जाव सुक्कलेस्सेसु पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएसु उववज्जइ पुच्छा? हंता गोयमा! कण्हलेस्से जाव सुक्कलेस्से पंचिंदियतिरिक्खजोणिए कण्हलेससु जाव सुक्कलेस्सेसु पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिएसु उववज्जति सिय कण्हलेस्से [illegible]

[illegible] जाणइ विसुद्धतरागं खेत्तं पासति। [illegible] नीललेसेणं नरइए कण्हलेस नरइयं पणिहाय जाव विसुद्ध तरागं खेत्तं पासइ? गोयमा! से जहा नामए केइ पुरिसे बहुसमरमणिज्जाओ

भन्! किस कारनकर कृष्णलेश्या वाला नेरीये थोडा क्षेत्र जानते देखते हैं? अहो गौतम! यथा दृष्टांत कोई पुरुष बहुत समभूमी के विभाग में खडा रहकर अपने निर्मल चक्षु से चारों तरफ अवलोकन करता [illegible] पुरुष नीची भूमिका में खडा रह कर देखे उन दोनों पुरुषों में से जो समभूमि भाग में खडा रहा उस पुरुष की अपेक्षा नीची भूमि में खडा रहा वह पुरुष निर्मल नेत्र होने पर भी चारों तरफ देखता हुवा ज्यादा क्षेत्र नहीं देख सकता है तथा दो पुरुषों की आंखों में से एक की आंखों निर्मल है और एक की आंखों धूंधली है, इन दोनों में से निर्मल आंखोंवाले से धूंधली आंखोंवाला थोडा क्षेत्र देख सकता है ऐसा ही [illegible] में फरक जानना पांचवी छठी और सातवी नरक में कृष्ण [illegible] ज्यादा क्षेत्र देखते हैं. अहो भगवन्! नील लेश्यावाला नेरीया कृष्ण लेश्यावाले नेरीये की

भूमिभागाओ पव्वयं दुरूहित्ता २ सव्वतोसमंता समभिलोएज्जा, तएणं से पुरिसे धरणितलगयं पुरिसं पणिहाय सव्वतो समंता समभिलोएमाणे २ बहुतरागं खेत्तं जाणति जाव विसुद्धतरागं खेत्तं पासति सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ णीललेस्से णेरइए कण्हलेस्सं जाव विसुद्धतरागं खेत्तं पासइ ॥ काउलेस्सेणं भंते ! णेरइए णीललेस्सं णेरइयं पणिहाय ओहिणा सव्वतो समंता समभिलोएमाणे २ केवइयं खेत्तं जाणइ ? केवइयं खेत्तं पासइ गोयमा ! बहुतरागं खेत्तं जाणइ जाव विसुद्धतरागं खेत्तं पासइ ॥ से केणट्ठेणं

अपेक्षा करके अधान अवधिज्ञान से चारों तरफ अवलोकन करता हुवा कितना क्षेत्र जाने कितना क्षेत्र देखे ? अहो गौतम ! बहुत क्षेत्र जाने, बहुत क्षेत्र देखे दूर का क्षेत्र का जाने, दूर का क्षेत्र देखे, वितिमिर निर्मल क्षेत्र जाने वितिमिर-निर्मल क्षेत्र देखे, विशुद्ध क्षेत्र जाने विशुद्ध क्षेत्र देखे अहो भगवन् ! किस कारन ऐसा कहा नील लेश्यावाला नेरीये कृष्ण लेश्यावाले नेरीये से अधान ज्ञान का धारक यावत् विशुद्ध क्षेत्र देखे ? अहो गौतम ! यथा दृष्टान्त कोई पुरुष बहुत समरमणीय भूमि भाग के ऊपर पर्वतपर चढकर चारों तरफ सम्यक् प्रकार अवलोकन करे, तब वह पुरुष धरती पर रहे पुरुष की अपेक्षा अधान सर्व चारों तरफ सम्यक् प्रकार अवलोकन करता हुवा बहुत क्षेत्र को जाने यावत् विशुद्ध क्षेत्र को देखे इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहा नील लेश्यावाले नेरीये कृष्ण लेश्यावाले नेरीये से बहुत क्षेत्र जाने यावत्

भगवन् जाव विसुद्धतराग खेव पासति ? गोयमा !
भूमिभागाओ पव्वय दुरूहित्ता २
मव्वता समता समभिलोएज्जा, तएणं
समता समभिलोएमाण २
बहुतरागं खेत्तं पासति, जाव विसुद्धतरागं खेत्तं पासति, से एणट्ठेणं
वति काउलस्सेणं णेरइए णीलठाणं

अहो भगवन् ! कापूत लेश्यी नेरीया नील लेश्यी नेरिये से प्रधान अवधिज्ञानकर
अवलोकन करता हुवा कितना क्षेत्र जाने, कितना क्षेत्र देखे ? अहो गौतम ! बहुत क्षेत्र
क्षेत्र जान देखे अहो भगवन् ! किसकारन ऐसा कहा कापूत लेश्यी नेरीया यावत्
गौतम ! यथा दृष्टान्त कोइ पुरुष बहुत मानरमणीय भूमी के विभाग से ऊपर पर्वतपर
चढकर कर सब चारों तरफ सम्यक् प्रकार अवलोकन करता हुवा तब वह पुरुष
पुरुष रहा उन दोनों पुरुषों से प्रधान चारों तरफ सम्यक् प्रकार बहुत क्षेत्र जाने
क्षेत्र देखे इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा की कापूत लेश्यी नेरीया

विशुद्धतरागं खेत्त पासति ॥ ५ ॥ कण्हलेस्सेणं भंते ! जीवे कइसुणाणेसु होज्जा ? गोयमा ! दोसुवा तिसुवा चउसुवा णाणेसु होज्जा, दोसु होज्जमाणे आभिणिबोहिय णाणे सुतणाणेसु होज्जा, तिसु होज्जमाणे आभिणिबोहियणाण सुयणाणे ओहिय. णाणेसु होज्जा अहवा तीसु होज्जमाणे आभिणिबोहियसुयणाणेमणपज्जवणाणेसु होज्जा, चउसुहोज्जमाणे आभिणिबोहियणाणे सुयणाणे ओहिणाणे मणपज्जवणाणेसु होज्जा ॥ एवं जाव पम्हलस्से ॥ सुक्कलेसेणं भंते ! कइसु णाणेसु होज्जा ? गोयमा !

नेरीये से अधान यावत् विशिष्ट क्षेत्र देखे ॥ ५ ॥ अब ज्ञान आश्रिया पूछते हैं—अहो भगवन् ! कृष्ण लेशी जीव कितने ज्ञान का धारक होता है ? अहो गौतम ! दो ज्ञान वाला भी होता है, तीन ज्ञानवाला भी, चार ज्ञान वाला भी होता है, दो ज्ञानवाला होता है वह मति और श्रुति ज्ञान वाला होता है तीन ज्ञान वाला होता है वह मति श्रुति और अवधि ज्ञानवाला होता है तथा मति श्रुति और मन पर्यव ज्ञान वाला होता है, चार ज्ञानी होता हुवा मति श्रुति अवधि और मनःपर्यव ज्ञानी होता है [मनःपर्यव ज्ञान विशुद्ध लेश्या वाले को ही होता है कृष्ण लेश्या के संख्यात स्थानकें जिस में ऊपर के स्थान विशुद्ध अध्यवसाय वालों को मनःपर्यव ज्ञान होता है तथा उत्पन्न होते विशुद्ध लक्ष्या होती है] जिस प्रकार कृष्ण लेशी जीव में चार ज्ञान पाते हैं उस ही प्रकार नील

दोसुवा तिसुवा चउसुवा एगंमिवा होज्जा, दोसु होज्जमाणे आभिणिबोहियणाणे एवं जहेव कण्हलेस्साए तहेव भाणियव्वं जाव चउहिं, एगम्मि होज्जमाणे एगम्मि केवल णाणेसु होज्जा ॥ पण्णवणा भगवईए लेस्सापद तइओ उद्देसो सम्मत्तो॥ १७ ॥३॥ परिणाम वण्ण रसगंध सुद्ध अप्पसत्थ संकिलिट्ठण्हा गति परिणाम पदेसोयगाढ अप्पाबहु ठाणाए मप्पाबहु ॥ १ ॥ कइणं भंते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! छल्लेस्साओ पण्णत्ताओ तंजहा कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा, सेणूणं भंते! कण्हलेस्सा

कापोत लेश्या पद्म लेश्या में भी चार ज्ञान पावे हैं अहो भगवन् ! शुक्ललेश्यी जीव में कितने ज्ञान पावे हैं ? अहो गौतम ! दो भी पावे हैं, तीन भी पावे है, चार भी पावे हैं और एक भी ज्ञान पाता है दो होवे तो मति और श्रुति यों कृष्ण लेश्या जैसा कहना और विशेष में जो एक ज्ञान होवे तो एक केवल ज्ञान होवे क्योंकि सलेशी केवलज्ञानी को एक शुक्ललेश्या ही होती है इति लेश्या पद का तीसरा उद्देशा ॥ ३ ॥

चौथे पद के द्वारों के नाम १ परिणाम द्वार, २ वर्णद्वार, ३ रसद्वार, ४ गंधद्वार, ५ शुद्धद्वार, ६ अप्रशस्त द्वार, ७ संक्लिष्ट द्वार, ८ उष्णद्वार, ९ गतिद्वार, १० परिणामद्वार, ११ प्रदेशावगाहद्वार, १२ वर्गणाद्वार, १३ स्थानद्वार, और १४ अल्पा बहुत्व द्वार ॥ १ ॥ अहो भगवन्! कितने प्रकार की लेश्या कही है? अहो गौतम! छ प्रकार की लेश्या कही है तद्यथा १ कृष्णलेश्या

णीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए तावण्णत्ताए तागंधत्ताए तारसत्ताए ताफासत्ताए भुज्जो २ परिण भंति ? हंता गोयमा ! कण्हलेस्सा नीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए वण्णत्ताए गंधत्ताए फासत्ताए भुज्जो २ परिणमति ? से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ किण्हलेस्सा णीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमइ ? गोयमा ! से जहा णामए खीरे दूसिं पप्प सुद्धेवा वत्थे रागं पप्प तारूवत्ताए वण्णत्ताए गंधत्ताए रसत्ताए फासत्ताए

२ नील लेश्या, ३ कापोत लेश्या, ४ तेजो लेश्या, ५ पद्म लेश्या, और ६ शुक्ल लेश्या अहो भगवन्! निश्चय कृष्ण लेश्या के जो द्रव्य हैं वे नील लेश्या के द्रव्यपने परिणमे क्या ? अर्थात् कृष्ण लेश्या के द्रव्य नील लेश्या के रूपपने, वर्णपने, गंधपने, रसपने, स्पर्शपने वारम्वार परिणमते हैं क्या ? अहो गौतम ! कृष्ण लेश्या के द्रव्य नील लेश्या के रूपपने, वर्णपने, गंधपने, रसपने, स्पर्शपने वारम्वार परिणमते हैं अहो भगवन् ! किस कारन ऐसा कहा कि कृष्ण लेश्या के द्रव्य नील लेश्यापने वारम्वार परिणमते हैं ? अहो गौतम ! यथा दृष्टान्त-जैसे गवादि के दूध में तक्र (छाछ) का संयोग मिलाने से वह अपने मिष्ट स्वाद का त्याग कर खट्टा बन जाता है, तथा श्वेत रंग वस्त्र मजीठादि के रंग में डाला हुवा वह अपने श्वेत रंग का त्याग कर उस ही रंगमय बन जाता है, ऐसे ही सुरभीगंधादि गंधपने भी परिणमता है, मधुरतादि रसपने भी परिणमता

भुज्जो २ परिणमति, से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चति किण्हलेस्सा नीललेस्सं पप्प तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमति, एवं एएणं अभिलावेणं नीललेस्साणं काउलेस्सं पप्प, काउलेस्सा तेउलेस्सं पप्प, तेउलेस्सा पम्हलेस्सं पप्प, पम्हलेस्सा सुक्कलेस्सं पप्प जाव भुज्जो २ परिणमति ॥ २ ॥ सेणूणं भंते ! कण्हलेस्सा नीललेस्सं काउलेस्सं तेउलेस्सं पम्हलेस्सं सुक्कलेस्सं पप्प तारूवत्ताए तावण्णत्ताए तागंधत्ताए तारसत्ताए ताफासत्ताए भुज्जो २ परिणमंति ? हंता गोयमा ! कण्हलेस्सा नीललेस्सं पप्प जाव सुक्कलेस्सं

है, कर्कशादि स्पर्शपने भी परिणमता है, वैसे ही मनुष्य और तिर्यंच के लेश्या के परिणाम जानते हैं इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहा कि कृष्ण लेश्या के द्रव्य नील लेश्या के रूपपने वर्णपने यावत् स्पर्शपने वारम्वार परिणमते हैं यों इस ही आलापक से क्रमसे कर नील लेश्या के द्रव्य कापोत लेश्यापने परिणमते हैं, कापोत लेश्या के द्रव्य तेजो लेश्यापने परिणमते हैं, तेजो लेश्या के द्रव्य पद्म लेश्यापने परिणमते हैं, पद्म लेश्या के द्रव्य शुक्ल लेश्यापने परिणमते हैं यह एकेक लेश्या के परिणमने का कहा ॥ २ ॥ अब सब लेश्या परिणमने का कहते हैं अहो भगवन् ! निश्चय से कृष्ण लेश्या के द्रव्य नील लेश्या कापोत लेश्या तेजो लेश्या पद्म लेश्या और शुक्ल लेश्या रूप भाव द्रव्य उस रूपपने उस वर्णपने उस गंधपने उस रसपने उस स्पर्शपने वारम्वार परिणमते हैं क्या ? हां गौतम ! कृष्ण लेश्या के द्रव्य नील लेश्या को यावत्

पए२ तारूत्र तावण्ण तागंध तारस ताफासत्ताए भुज्जो २ परिणमंति ॥ से केण ट्ठेणं भते ! एव वुच्चइ कण्हलेस्सा णीललेस्सं जाव सुक्कलेस्स पप्प तारूत्र जाव भुज्जो २ परिणमंति ? गोयमा ! से जहा नामए वेरुलियमणी सिया कण्हसुत्तएवा नीलसूत्तएवा लोहिय सुत्तएवा हालिद्द सुत्तएवा सुक्किल सुत्तएवा आइय समाण तारूत्रत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति कण्हलेस्सा नीललेस्सं पप्प तारूत्रत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमति ॥ सेणूणं भते !

यावत् शुक्लेश्या को प्राप्त होवे द्रव्य वस रूपपने वस वर्णपने वस गंधपने वस स्पर्श पने वारम्वार परिणमते हैं किस कारन अहो भगवन्! एसा कहा कृष्ण लेश्या के द्रव्य नीललेश्या यावत् शुक्लेश्या को प्राप्त हो यावत् वारम्वार परिणमते हैं ! अहो गौतम ! जिस प्रकार वैडूर्य मणि (काच) के पनीये में कालारंग का डोराडालने से वह कृष्ण वर्ण देखाता है, हारंगका डोराडालने से वह हरा देखता है, लालरंग का डोराडालने से लालदेखाता है, पीलेरंग के डोरेसे पीला देखाता है और श्वेतरंग के डोरे से श्वेत देखाता है, जिस रंगकी वस्तु में उसे स्थापन करते हैं उस ही रंगमय वह बन जाता है, उस वस्तु से दूर करने से वह अपने रंग में आजाता है जैसाथा वैसा बन जाता है, इस ही प्रकार अहो गौतम ! ऐसा कहा है कि कृष्ण लेश्या के नील लेश्या के यावत् शुक्ल लेश्या के प्राप्त ऋश वस रूपपने वर्ण गंध रस स्पर्शपने

नीललेस्सा किण्हलेस्स जाव सुक्कलेस्स पप्प तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमति ? हंता गोयमा ! एवं चेव ॥ एवं काउलेस्सा, किण्हलेस्स नील तेउ पम्ह सुक्कलेस्सं एवं तेउलेस्सा किण्हलेस्सा नील काउ पम्ह सुक्कलेस्स, एवं पम्हलेस्सा कण्ह नील काउ तेउ पम्ह सुक्कलेस्सं पप्प जाव भुज्जो २ परिणमइ ? हंता गोयमा ! तंचेव ॥ सेणूणं भंते ! सुक्कलेस्सा किण्ह नील काउ तेउ पम्हलेस्स पप्प जाव भुज्जो २ परिणमति ? हंता गोयमा ! तंचेव ॥ ३ ॥ कण्हलेस्साणं भंते ! वण्णेणं केरिसिया पण्णत्ता ?

वारम्वार परिणमते हैं ॥ अहो भगवन् ! नीललेश्या के कृष्ण लेश्या पने यावत् कापोत लेश्या पने यावत् शुक्ललेश्या मात्र द्रव्य पने रस रूपपने यावत् स्पर्श पने वारम्वार परिणमते हैं क्या ? अहो गौतम ! परिणमते हैं उस प्रकार ही परिणमते हैं ॥ एस ही कापोत लेश्या के भी द्रव्य नीललेश्यापने तेजोलेश्यापने यावत् शुक्ललेश्या पन परिणम ते हैं, ऐसे ही तेजो लेश्या भी कृष्ण, नील, कापोत, पद्म, शुक्लपने परिणमे, ऐसे ही पद्म लेश्या भी कृष्ण नील कापोत तेजो शुक्ल पने परिणमे अहो भगवन् ! शुक्ल लेश्या के द्रव्य कृष्ण लेश्यापने, नीललेश्यापने, कापोतलेश्यापने, तेजो लेश्यापने, पद्म लेश्यापने वारम्वार परिणमते हैं क्या ? हां गौतम ! उस प्रकार ही कहना ॥ ३ ॥ अब दूसरा वर्ण द्वार कहते हैं ॥ अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या का वर्ण किस प्रकार का है ? अहो गौतम ! जैसा पानी का भरा हुवा अंजन खंजन

गोयमा ! सेजहा णामए जीमूतेतिवा अजणेतिवा खजणेतिवा कज्जलेतिवा गवलेतिवा गवलवलइएवा जम्बूफलतिवा अद्दाअरिट्ठएतिवा, परपुट्ठतिवा, भमरेतिवा, भमरावली तिवा, गयकलभेतिवा, किण्ह केसरेतिवा, आगासथिग्गलेतिवा, किण्हासोगतिवा किण्ह कणवीरतिवा किण्ह बधु जीवाइवा भवेतारूवे ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, कण्हलेस्साणं एत्तो अणिट्ठ तरिया चेव अकंततरिया चेव अप्पियतरियाचेव अमणुण्णय तरियाचेव, अमणामतरिया चेव वण्णेणं पण्णत्ता ॥ नीललेस्साणं भंते ! केरिसिया वण्णेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहा नामए भिंगेतिवा भिंगपत्तेतिवा

(गाढोक नामक अंगन) भ्रमर पक्षी, भ्रमरकीपंक्ति, हाथी का बच्चा, कालकास, आकाश, कृष्ण माशाक कृष्ण कनर, कृष्ण बन्धू जीवका वर्ण होता है इस प्रकारका है क्या ? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं परंतु कृष्ण लेश्या का इस से भी अधिक अनिष्टकारी, अकंतकारी, अप्रियकारी, अमनोज्ञ, अम नाम अमनाम वर्ण कहा है अहो भगवन् ! नील लेश्या का किस प्रकार का वर्ण है ? अहो गौतम ! जैसे भृंग—भांग, भांगपत्र, चास पक्षी, चास पक्षी की पांख, तोता, तोते की पांख, सामाघान्य, वन राजी हरितकाया, हरी शालीकासत, परेवा कबूतर की ग्रीवा, मयूर की ग्रीवा, हलधर (बलभद्र) के वस्त्र,

घासेतिवा, घासपिच्छे तिवा, सुयीतिवा, सुयपीच्छेतिवा, सामातिवा, वण्णराईतिवा, उच्चतापतिवा, परिवयगीवातिवा, मोरगीवातिवा, हलहरवसणेतिवा, अयसिकुसुमतिवा, बाणकुसुमेतिवा, अञ्जनकोसिया कुसुमेतिवा, णीलुप्पलेतिवा, णीलासोएतिवा, णीलकणवीरएतिवा, णीलबधुजीयए भवेतारूवे ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, एत्तो जाव अमणामतरियाचेव वण्णेणं पण्णत्ता ॥ काउलेस्साण भंते ! केरिसिया वण्णेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! सेजहा णामए खइरेतिवा, खइरसारएतिवा, कइरएतिवा, कइरसारएतिवा, धमासस्सारएतिवा तबेतिवा तंवकरोडेतिवा, तपच्छिवा

भलसी फूल, बाणवृक्ष के फूल, अंजन केशीकावृक्ष के फूल, नीलोत्पल कमल, नीलाशोक, नीली कनेर, नीलबन्धू जीव, इस प्रकार का वर्ण है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं इस से भी अधिक अनिष्टकारी यावत् अमणाम वर्ण कहा है अहो भगवन् ! कापोत लेश्या का किस प्रकार का वर्ण कहा है ? अहो गौतम ! यथादृष्टान्त ? खैर, खैरसार, कैर, कैरसार, धूंसासार [बैंगनीरंग का रेशमी वस्त्र] ताम्बा, ताम्बे का बरतन, बैंगन के फूल, कोकिला का नेत्र, जपाशा के फूल, बकुल के फूल इस प्रकार वर्ण है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं कापोत लेश्या का वर्ण इस से भी अधिक अनिष्ट यावत्

धिडाइतिवा, माधुगाणि फुसुमेतिवा, कोइलत्था कुसुमेतिवा, जवासाकुसुमेतिवा, कल्ह कुसुमतिवा, भवतारूवे ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, काउलेस्साणं एतो अणिट्ठ तरिया जाव अमणाम तरिया चेव वण्णेणं पण्णत्ता ॥ तेउलेस्साणं भंते ! केरिसिया वण्णेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहा णामए ससरुहिरेतिवा, उरब्भरुहिरेतिवा, वराहरुहिरेतिवा, संबररुहिरेतिवा, मणुस्सरुहिरेतिवा, बालिंदगोवेतिवा, बालदिवा-यरेतिवा, सज्झरागेतिवा, गुंजद्धरागेतिवा, जातिहिंगुलुएतिवा, पवालकुरुएतिवा, लक्खारसेतिवा, लोहियक्खमणीतिवा, किमिराग कंबलेतिवा, गयतालुएतिवा,

अमणाम वर्ण कहा है अहो भगवन् ! तेजो लेश्या का वर्ण किस प्रकार का कहा है ? अहो गौतम ! यथादृष्टान्त भेंस का रुधिर, बकरे का रुधिर, सुव्वर का रुधिर, सांबर का रुधिर, मनुष्य का रुधिर, इन्द्र गोप जीव बालमरस्याशाला, उदय होता सूर्य, सन्ध्याराग, चिरमी का आधा विभाग, जातिवंत हिंगुल, प्रवाल का अंकुर, लाख का रस, लोहिताक्ष मनी, क्रिमी रंग की कम्बल, हाथी का तालुवा, चिनोठी का दगला, पारीजात के फूल, जासु वृक्ष के फूल, केसुडे (खाखरे) के फूल, रक्तोत्पल कमल, रक्ताशोकवृक्ष, रक्तकनर, रक्तबन्धु जीव, इस प्रकार का वर्ण है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं तेजो लेश्याका

चीणपिट्ठरासीतिवा, परिजाय कुसुमेतिवा जासुमण कुसुमेतिवा, किंसुयपुप्फरासीतिवा, रत्तुप्पलेतिवा, रत्तासोगेतिवा, रत्तकणवीरएतिवा, रत्तबंधुयजीवएतिवा, भवेतारूवे ? गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे, तेउलेस्साण एत्तो इट्ठतरियाचेव जाव मणामयरिया चेव वण्णेण पण्णत्ता ॥ पम्हलेस्साण भंते ! केरिसया वण्णेण पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहा णामए चंपेतिवा चंपकछल्लिएतिवा चंपभेदेतिवा हालिद्दातिवा हालिद्दगुलियातिवा, हालिद्दाभेदियातिवा, हरियालेतिवा, हरियालगुलियातिवा, हरियालभेदेतिवा, चिउरतेवा, चिउररागेतिवा, सुवण्ण सिप्पातिवा, वरकणगणिहसेतिवा, वरपुरिसव-

वर्ण इन से भी अधिक इष्टकारी मिष्टकारी यावत् मनोज्ञ है अहो भगवन् ! पद्म लेश्या का किस प्रकार का वर्ण है ? अहो गौतम ! यथादृष्टान्त चम्पक वृक्ष, चम्पा की छाल, चम्पा का अन्दर का, काष्ट हल्दी, हल्दी की गोली, हल्दी का अन्दर का गर्भ, हरीताल, हरीताल की गोली, हरीताल का अन्दर का गर्भ, चिहूर, चिहूरी चिहूर की गोली, सान की चीप उत्तम सुवर्ण घसा हुवा, उत्तम पुरुष (वासुदेव) के वस्त्र मल्लिकाका फूल, चम्पा के फूल, कणर के फूल कोरण्टा के फूल, सुवण जही सुवर्ण जूहीका कोरंट वृक्ष के फूल की माला, पीला अशोक वृक्ष, पीला कणर पीला बंधुजीव इस प्रकारका वर्ण है क्या ? अहो

सणेतिवा, असइ कुसुमेतिवा, चपयकुसुमेतिवा, कणियरकुसुमोतिवा कुहंडि कुसुमेतिवा सुवण्णजूहियातिवा, सूहिरणिया कुसुमेतिवा कोरटमल्लदामेतिवा, पीतासागेतिवा, पीत कणवीरएतिवा, पीतबंधूजीवएतीवा, भवेतारूवे ? गोयमा ! णा इणट्ठे समट्ठे, पम्हल रसाणं एत्ता इट्ठतरिया चेव जाव मणामयरिया चेव वण्णेण पण्णत्ता सुक्कलेस्साणं भंते! केरिसिया वण्णेणं पण्णत्ता ? गोयमा! से जहा णामए अंकेतिवा संखेतिवा चंदेतिवा कुंद तिवा दगेतिवा दगरएतिवा, दधितिवा दधिघणतिवा, खीरेतिवा, खीरपूरएतिवा सूकछिय वाडियातिवा पिहुणामिंजियातिवा, धंताधोयरूप्पपट्टेतिवा, सारयबलाहएतिवा, कुमुयदलेति वा, पोंडरीयदलतिवा, सालिपिट्ठरासीतिवा, कुडगपुप्फरासीतिवा सिंदुवारवरमल्लदामतिवा

गौतम ! इस से भी अधिक इष्टकारी यावत् मनोज्ञ पद्म लेश्या का वर्ण है अहो भगवन् ! शुक्ल लेश्या का किस प्रकार का वर्ण है ? अहो गौतम ! यथादृष्टान्त अंक रत्न, शंख, चन्द्रमा, मचकुंद के फूल पानी, पानी के कणिये, दही, दही का गोला, क्षीर-दूध, दूध पूरित थाल, शिखादि की सूकी छाल, पीपल की मींजी आग में तपाकर स्वच्छ से धोया रूपा के पाट, शरद ऋतु के बादल अथवा पगला, कुमु दनीदल, पोंडरीक कमल का दल, चावल का आटा, कुडग के फूल का ढेगला, सिंदूवार वनस्पति के फूल की माला, श्वेतअशोक वृक्ष, श्वेत कणेर, श्वेत बन्धुजीव, इस प्रकार का श्वेत वर्ण है! अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य

सेयासोगेतिवा, सेतकणवीरएतिवा, सेत बंधुजीवएतिवा,' भवेतारूवे ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे सुक्कलेस्साण इत्तोइट्ठतरियाचेव कंततरिया मणुण्णतरियाचेव मणामतरिया चेव वण्णेणं पण्णत्ता ॥ एयाओण भंते! छलेस्साओ कइसुवण्णेसु साहिज्जंति ? गोयमा ! पंचसुवण्णेसु साहिज्जंति तंजहा कण्हलेस्सा कालएणं साहिज्जंति, णीललेस्सा नीलएणं वण्णेणं साहिज्जंति, काउलेस्सा काललोहिएणं वण्णेणं साहिज्जंति, तेउलेस्सा लोहिएणं वण्णेणं साहिज्जंति, पम्हलेस्सा हालिद्दएणं वण्णेणं साहिज्जंति, सुक्कलेस्सा सुक्किल्लएणं वण्णेणं साहिज्जंति ॥ ४ ॥ कण्हलेस्साणं भंते ! केरिसिया आसाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहा णामए णिंबेतिवा णिंबसारेतिवा णिंबछल्लीतिवा

नहीं है इस से भी अधिक इष्टकारी कंतकारी प्रियकारी मनोज्ञ मणाम सुहावना, शुक्ल लेश्या का वर्ण कहा है अहो भगवन् ! छही लेश्या किसे २ वर्णमय है ? अहो गौतम ! पांचो ही वर्ण मय हैं, तद्यथा १ कृष्ण लेश्या, कृष्ण वर्ण मयी है, २ नील लेश्या नीलवर्ण मय ही है, ३ कापोतलेश्या काले और हरे दोनों वर्णमें है, ४ तेजो लेश्या रक्त वर्ण मे है, ५ पद्म लेश्या पीतवर्ण में और ६ शुक्ल लेश्या श्वेतवर्णमय है ॥ ४ ॥ अब चौथा रस द्वार कहते हैं ॥ अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या का किस प्रकार का आस्वादन रस कहा है ? अहो गौतम ! यथा दृष्टान्त नींब, नींबसार नींबछाल, नींबका क्वाथ कुटज, कुटजछाल कुटज

णियफाणिएतिवा कुडएतिवा, कुडगछल्लितिवा, कुडगफाणिएतिवा, कुडग तुम्बीतिवा, कुडगतुम्बीफलतिवा, खारतोसीतिवा, खारतोसीफलेतिवा, देवदालि- तिया, देवदालिपुप्फातिवा, मिगवालुकीतिवा, मिगवालुकीफलेतिवा, घोसाडि- एतिवा, घोसाडई फलेतिवा, कण्हकंदएतिवा, वज्जकंदएतिवा, भवेतारूवे ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, कण्हलेस्साणं एत्तो अणिट्ठतरियाचेव जाव अमणाम- परियाचेव आसाएण पण्णत्ता ॥ णीललेस्साए पुच्छा ? गोयमा ! से जहा णामए भंगतिवा भंगीरएतिवा, पाढातिवा, चवियातिवा, चित्तामूलएतिवा, पिप्पलीमूलए- तिवा पिप्पलीतिवा, पिप्पलिचुण्णियातिवा, हारियपिप्पलीतिवा, हात्थिपिप्पलि

का काढा (कषाय) कटुतुम्बी, कटुकतुम्बीकाफल, कटुक घोसकीबेल, कटुकघोसकाफल, देवराली (रोहि) देवदालीके फूल, मृगवालुकी, कटधीतोरू, कडवा तोरईकाफल, कणदका कंद, वज्र कंद, इस प्रकार का रस है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ! कृष्ण लेश्या के द्रव्य का रस इससे भी अधिक बहुत अनिष्टकारी यावत् अमणाम है ॥ नीललेश्या के रस का प्रश्न ! अहो गौतम ! भंगीगा, भंगीरा, भंगीराकारस, पाढा वनस्पति चविकावनस्पति, चित्रवेलकामूल, पिपलीकामूल, पिपल, पिपलीकाचूर्ण, हास्तिपीपल, हास्तिपिपली काचूर्ण, मिरच, मिरचीकाचूर्ण, भदरस, भदरसकाचूर्ण, इस प्रकार का रस है ! अहो गौतम !

सेयासोगेतिवा, सेतकणवीरएतिवा, सेत बंधुजीवएतिवा,' भवेतारूवे ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे सुक्कलेस्साण इत्तोइट्ठतरियाचेव कंतयरिया मणुण्णतरियाचेव मणामतरिया चेव वण्णेणं पण्णत्ता ॥ एयाओणं भंते! छलेस्साओ कइसुवण्णेसु साहिज्जंति ? गोयमा ! पंचसुवण्णेसु साहिज्जंति तंजहा कण्हलेस्सा कालएणं साहिज्जति, णीललेस्सा नीलिएणं वण्णेणं साहिज्जंति, काउलेस्सा काललोहिएण वण्णेण साहिज्जंति, तेउलेस्सा लोहिएणं वण्णेण साहिज्जंति, पम्हलेस्सा हालिद्दएण वण्णेणं साहिज्जंति, सुक्कलेस्सा सुक्किलएणं वण्णेणं साहिज्जंति ॥ ४ ॥ कण्हलेस्साणं भंते ! केरिसिया आसाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहा णामए णिंबेतिवा णिंबसारेतिवा णिंबछल्लीतिवा

नहीं है इस से भी अधिक इष्टकारी कंतकारी प्रियकारी मनोज्ञ मणाम सुहावना, शुक्ल लेश्या का वर्ण कहा है अहो भगवन् ! यहीं लेश्या कितने २ वर्णमय है ? अहो गौतम ! पांचो ही वर्ण मय हैं, तद्यथा १ कृष्ण लेश्या, कृष्ण वर्ण मयी है, २ नील लेश्या नीलवर्ण मय ही है ३ कापोतलेश्या काले और हरे दोनों वर्णमें है, ४ तेजो लेश्या रक्त वर्ण मे है, ५ पद्म लेश्या पीलेवर्ण में और ६ शुक्ल लेश्या श्वेतवर्णमय है ॥ ४ ॥ अब तीसरा रस द्वार कहते हैं ॥ अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या का किस प्रकार का आस्वादन रस कहा है ? अहो गौतम ! यथा दृष्टान्त नींब नींबसार नींबकी छाल, नींबका क्वाथ कुटज, कुटजकी छाल कुटज

मिचफाणिइतिवा कुडएतिवा, कुडगछल्लितिवा, कुडगफाणिएतिवा, कुडग तुबीतिवा, कुडगतुबीफलतिवा, खारतोसीतिवा, खारतोसीफलेतिवा, देवदालि तिवा, देवदालिपुप्फतिवा, मिगवालुकीतिवा, मिगवालुकीफलेतिवा, घोसाडि-एतिवा, घोसाडई फलतिवा, कण्हकंदएतिवा, वज्जकंदएतिवा, भवेतारूवे ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, कण्हलेस्साणं एत्तो अणिट्ठतरियाचेव जाव अमणाम-परियाचेव आसाएणं पण्णत्ता ॥ णीललेस्साए पुच्छा ? गोयमा ! से जहा णामए भंगीतिवा भंगीरएतिवा, पाढातिवा, चवियातिवा, चित्तामूलएतिवा, पिप्पलीमूलए-तिवा पिप्पलीतिवा, पिप्पलिचूण्णियातिवा, हत्थिपिप्पलीतिवा, हत्थिपिप्पलि

का काढा (कषाय) कडुतुम्बी, कडुतुम्बीकाफल, कडुक घोसकीवेल, कडुकघोसकाफल, देवदाली (रोहि) देवदालीके फुल, मृगवालुकी, ककडीतोरू, करवा तोरईकाफल, कण्दका कद, वज्र कंद, इस प्रकार का रस है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ! कृष्ण लेश्या के द्रव्य का रस इस से भी अधिक बहुत अनिष्टकारी यावत् अमणाम है ॥ नीललेश्या के रस का प्रश्न ? अहो गौतम ! भंगीरा, भंगीरज, भंगीराकारस, पाठा वनस्पति चविकावनस्पति, चित्रमेलकामूल, पिंपलीकामूल, पिपल, पिपलीकाचूर्ण, हस्तिपिंपल, हस्तिपिपली काचूर्ण, मिरच, मिरचीकाचूर्ण, अदरख, अदरखकाचूर्ण, इस प्रकार का रस है ? अहो गौतम !

चुण्णेइवा, मिरियचुण्णेइवा, सिंगबेरेतिवा, सिंगबेरचुण्णेइवा, भवेतारूवे ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे णीललेस्साण एत्तो अणिट्ठ तरियाचेव जाव अमणाम तरियाचेव आसाएण पण्णत्ता ॥ काउलेस्साए पुच्छा ? गोयमा ! से जहा णामए अंबाणवा, अंबाडगाणवा माउलिंगाणवा बिल्लाणवा कविट्ठाणवा, भट्ठाणवा, फणसाणवा, दालिमाणवा पारेवताणवा, अक्खोडयाणवा बोराणवा, पाराणवा, तिंदुयाणवा अपिक्काण अपरियागाण वण्णेण अणुववेताण, गंधेण अणुववेताण, फासेण अणुववेताण भवेतारूवे ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे जाव एत्तो अमणा मतरियाचेव काउलस्सा आसाएण पण्णत्ता ॥ तेउलेस्साण पुच्छा ? गोयमा ! से

यह अर्थ योग्य नहीं है इससे भी अधिक अनिष्ट यावत् अमनोज्ञ रस कहा है ॥ कापोत लेश्या के रस की पृच्छा ? अहो गौतम ! यथा दृष्टान्त कच्चा आम्र, कच्चा अम्बाडा, कच्चा बिजोरा, कच्चा बीलफल, कच्चा कवीठ, कच्चा भस, कच्चा फणस, कच्चा दाडिम, पारेवा फल, कच्चा अखोट फल, कच्चा बोर, कच्चा तिंदुक, यह सब अपक्व जिस में रस नहीं परिणाया हो वर्ण कर विहिए, गंध कर विहिए, स्पर्श कर विहिए इस प्रकार रस है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है इस से भी अधिक अनिष्ट यावत् अमनोज्ञ कापोत लेश्या का रस कहा है तेजो लेश्या के रस की पृच्छा ? अहो गौतम ! यथादृष्टान्त-जैसे

जहा णामए अयाणवा तेंदुयाणवा कवाण परियावण्णाणं वण्णेण उववेताणं पसत्येणं जाव फासेणं जाव एत्तो मणामतरिया चेव तेउलेस्सा आसाएणं पण्णत्ता ॥ पम्हलेस्साए पुच्छा ? गोयमा ! से जहा णामए चंदप्पभातिवा, मणिसिलातिवा, वरसिधुतिवा, वरवारुणातिवा पत्तासवेतिवा, पुप्फासवेतिवा, फलासवेतिवा, चोयासवेतिवा, आसवतिवा, मधुतिवा मेरएतिवा, काविसायणएतिवा, खज्जूरसारएतिवा, मुद्दियासारएतिवा, सुपक्कखोयरसेतिवा, अट्ठपिट्ठणिट्ठयातिवा, जंबूफलकालियातिवा, वरसप्पातिवा, आसला मासला पेसला ईसिउट्ठावलंविणी ईसिवोच्छेदकडुया ईसितंबच्छिकरणी उक्कोसमदप्पत्ता वण्णेणं उववेता जाव फासेणं आसायणिज्जा वीसायणिज्जा

आम्र, यावत् उक्त प्रकार पके तिम्बरू के फल पके, रस कर भरे हुवे, वर्ण कर शोभित, गंध कर शाभित, यावत् स्पर्श कर शोभित इस प्रकार का है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है इस से भी अधिक इष्टकारी यावत् मनोज्ञ रस है पद्म लेश्या के स्वाद की पृच्छा ? अहो गौतम ! यथादृष्टान्त-चन्द्र प्रभा मदिरा, मणिशिला मदिरा, प्रधान सिधु मदिरा, प्रधान वारुणी, पत्राश्रव मदिरा, पुष्पाश्रव, फलाश्रव, चोयाश्रव, मधु-सेरव, मेरक मदिरा, कपिसाल मदिरा, खजूरकारस, द्राक्षकारस, पक्वइक्षुरस अष्टपीष्ट निष्पन्न मदिरा, पुष्टकरता, ... करता, मदन को दीपाने वाली, कंदर्प बढाने वाली, सर्व इंद्रिय और

गीयमिज्जा, विहाणिज्जा दीवाणिज्जा, दप्पणिज्जा मदणिज्जा, सव्विंदियगाय पल्हायणिज्जा भवेतारूवे ? गोयमा ! णो तिणट्ठे समट्ठे, पम्हलेस्साण एत्तो इट्ठतरिया चेव जाव मणामयरिया चेव, आसाएण पण्णत्ता ॥ सुक्कलेस्साण भंते ! केरिसिया आसाएण पण्णत्ता? गोयमा! सेजहा णामए गुलेतिवा खंडेतिवा सक्करातिवा मच्छंडियाइवा पप्पड मोदएतिवा, भिसकंदगतिवा पुप्फात्तरातिवा, पउमुत्तरातिवा, अदंसियातिवा, सिद्ध रिथयातिवा, आगासफालि उवमातिवा अणोवमातिवा भवेतारूवे ? णो तिणट्ठे समट्ठे, सुक्कलेस्साण एत्तो इट्ठतरिया चेव कंततरिया चेव मणामयरिया चेव आस्साएण

गात्र को मल्हादकी करने वाली, इस प्रकार का रस है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है इस सेभी इष्टकारी यावत् मनोज्ञ पद्म लेश्या का रस कहा है ॥ अहो भगवन् ! शुक्ल लेश्या का किस प्रकार का आस्वाद कहा है ? अहो गौतम ! यथा दृष्टान्त गुड़, शक्कर, बूरा, मिश्री, पापड़ की पापड़ी, भिसकंद पुष्पपाक, पद्मोत्तर मिष्टान्न, आदर्श मिठाइ, सिद्धार्थ मिठाइ, आकाश के समान उज्ज्वल वर्ण वाली जिस के स्वाद की अन्य ओपमा नहीं ऐसी अनुपम इस प्रकार शुक्ल लेश्या के द्रव्य का स्वाद है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है; इस से भी अधिक इष्टकारी, कान्तकारी, प्रियकारी, मनोज्ञ मणाम

पण्णत्ता ॥ ५ ॥ कइण भंते ! लेस्साओ सुब्भिगंधाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! तओलेस्साओ दुब्भिगंधाओ पण्णत्ताओ तंजहा कण्हलेस्सा, नीललेस्सा काउलेस्सा ॥ कतिण भंते ! लेस्साओ सुब्भिगंधाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! तओलेस्साओ सुब्भिगंधाओ पण्णत्ताओ तंजहा-तेउलेस्सा पम्हलेस्सा सुक्कलेस्सा ॥ एवं तओ अविसुद्धातो तओ विसुद्धातो ॥ तओ अप्पसत्थाओ तओ पसत्थातो ॥ तओ संकिलिट्ठातो तओ असंकिलिट्ठातो

अस्वाद कहा है ॥ ५ ॥ अब तीसरा गंध द्वार कहते हैं अहो भगवन् ! कितनी लेश्या दुर्भिगंध की है ? अहो गौतम ! कृष्ण, नील, कापोत यह तीन लेश्या की अशुभ गंध कही है अहो भगवन् ! कितनी लेश्या सुभिगंधी कही है ? अहो गौतम ! तीन लेश्या सुभिगंधवाली कही है तद्यथा—१ तेजो लेश्या, पद्म लेश्या और शुक्ल लेश्या इस ही प्रकार तीन लेश्या अविशुद्ध है और तीन लेश्या विशुद्ध कही है ऐसे ही तीन लेश्या अप्रशस्त कही है और तीन लेश्या प्रशस्त कही है यही तीन लेश्या संक्लिष्ट कही है और तीन लेश्या असंक्लिष्ट कही है यही तीनों लेश्या शीत रूक्ष स्पर्शवाली कही है और तीन शुभ लेश्या स्निग्ध उष्ण स्पर्शवाली कही है यही तीनों अशुभ लेश्या दुर्गतिदाता कही है और तीनों शुभ लेश्या सद्गतिदाता कही है अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या के कितने प्रकार के परिणाम कहे हैं ? अहो गौतम ! तीन प्रकार के परिणाम कहे हैं जघन्य मध्यम उत्कृष्ट इन तीनों के तीन २ भेद,

तओ सीतलुक्खातो, तओ निद्धउण्हातो ॥ तओ दुग्गइगामियातो, तओ सुगइ गामियातो ॥ कण्हलेस्साणं भंते ! कतिविहं परिणामं परिणमति ? गोयमा ! तिविहं वा, नवविहं वा, सत्तावीसतिविहं वा एक्कासीतिविहं वा, बेयालीसातिविहं वा बहुं वा बहुविहं वा परिणामं परिणमति ॥ एवं जाव सुक्कलेस्सा ॥ २ ॥ कण्हलेस्साणं भंते ! कतिपदेसिया पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंतपदेसिया पण्णत्ता ॥ एवं जाव सुक्कलेस्सा ॥ ७ ॥ कण्हलेस्साणं भंते ! कतिपदेसोगाढा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्ज पएसोगाढा

करने से ९ होते हैं जघन्य का जघन्य, जघन्य का मध्यम, जघन्य का उत्कृष्ट ऐसे ही मध्यम के तीन भेद, ऐसे ही उत्कृष्ट के तीन भेद यों ९ भेद हुवे, ऐसे ही नव को तीनगुने करने से सत्तावीस भेद होते हैं सत्तावीस को तीनगुने करने से एक्यासी होते हैं और एक्यासी को तीनगुन करने से दो सो चियालीस भेद होते हैं इस ही प्रकार बहुत तरह के परिणाम कहे हैं जैसे कृष्ण लेश्या के परिणाम तीन प्रकार के कहे उस ही प्रकार नील के कापोत के तेजो के पद्म के यावत् शुक्ल लेश्या के परिणाम जानना ॥ ६ ॥ प्रदेश द्वार अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या कितने प्रदेशवाली कही है ? अहो गौतम ! अनंत प्रदेशवाली कही है कृष्ण लेश्या का अनंत प्रदेशिक स्कन्ध होता है ऐसे ही यावत् शुक्ल लेश्या का भी अनंत प्रदेशिक स्कन्ध होता है ॥ ७ ॥ अवगाह द्वार-अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या

पण्णत्ता एवं जाव सुक्कलेस्सा ॥ ८ ॥ कण्हलेस्साणं भंते ! केवइयाओ वग्गणाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अणंताओ वग्गणाओ पण्णत्ताओ ॥ एवं जाव सुक्कलेस्साणं ॥ ९ ॥ केवइयाणं भंते ! कण्हलेस्साणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा कण्हलेस्सा ठाणा पण्णत्ता ॥ एवं जाव सुक्कलेस्सा ॥ १० ॥ एतेसिणं भंते !

कितने आकाश के प्रदेश अवगाह कर रही है ? अहो गौतम ! असंख्यात लोकाकाश प्रदेश अवगाह कर रही है ऐसे ही यावत् शुक्ल लेश्या का कहना ॥ ८ ॥ वर्गणाद्वार अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या की कितनी पुद्गल की वर्गणा कही है ? अहो गौतम ! अनंत वर्गणा कही है ऐसे ही यावत् शुक्ल लेश्या की वर्गणा कहना ॥ ९ ॥ स्थानद्वार अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या के कितने स्थान कहे हैं ? अहो गौतम ! कृष्ण लेश्या के असंख्यात स्थान कहे हैं व काल से असंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी के जितने समय हैं उतने स्थान हैं क्षेत्र से असंख्यात लोकाकाश के जितने प्रदेश होते हैं उतने स्थान हैं, अशुभ लेश्या के संक्लेश रूप स्थान हैं, शुभ लेश्या के असंक्लेश रूप स्थान हैं जिस प्रकार स्फटिक मणि को अलक्ता के रंग में रंगने से थोडासा लाल पडे फिर दूसरी वक्त रंगने से अधिक रंग चढे ऐसे स्थान जानना परिणामों की धारा ज्यों ज्यों चढे त्यों त्यों स्थान का पलटा होता है जैसे यह कृष्ण लेश्या के स्थान कहे हैं वैसे ही यावत् शुक्ल लेश्या के स्थान जानना ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या के स्थान में

कण्हलेस्साण ठाणा जाव सुक्कलेस्साठाणाणय जहण्णगाण दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए दव्वट्ठपदसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा जहण्णगा काउलेस्सा ठाणा दव्वट्ठयाए, जहण्णगा नीललेस्सा ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहण्णगा कण्हलेस्सा ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहण्णगा तेऊलेस्सा ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहण्णगा पम्हलेसा ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहण्णगा सुक्कलेस्सा ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा। पदेसट्ठयाए-सव्वत्थोवा जहण्णगा काउलेस्सा ठाणा पदेसट्ठयाए, जहण्णगा नीललेस्सा ठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहण्णगा कण्हलेस्सा ठाणा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहण्णगा

पावत् शुक्ल लेश्या के स्थान में जघन्य स्थान में द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ व द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ कौन २ थोडे ज्यादा तुल्य व विशेष कहे हैं? अहो गौतम! १ सब से थोडे जघन्य कापोत लेश्या के स्थान द्रव्यार्थपने, २ उस से जघन्य नील लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, ३ उस से जघन्य कृष्ण लेश्या के स्थान द्रव्यार्थपने असंख्यातगुने, ४ उस से जघन्य तेजो लेश्या के स्थान द्रव्यार्थपने असंख्यातगुने, ५ उस से जघन्य पद्म लेश्या के स्थान द्रव्यार्थपने असंख्यातगुने, ६ उस से जघन्य शुक्ल लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने अब प्रदेशार्थ कहते हैं—१ प्रदेशार्थ सब से थोडे जघन्य कापोत लेश्या के स्थान, २ जघन्य नील लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, ३ उस से जघन्य कृष्ण लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असं

तेउलेस्सा ठाणा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहण्णगा पम्हलेस्सा ठाणा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहण्णगा सुक्कलेस्सा ठाणा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ॥ दव्वट्ठपदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा जहण्णगा काउलेस्सा ठाणा दव्वट्ठयाए, जहण्णगा नीललेस्सा ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा एवं कण्हलेस्स तेउलेस्स, पम्हलेस्स जहण्णगा सुक्कलेस्सा ठाणा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा जहण्णएहिंतो सुक्कलेस्स ठाणे हिंतो दव्वट्ठयाएहिंतो जहण्णगा काउलेस्सा ठाणा पदेसट्ठयाए अणंतगुणा,

ख्यातगुने, ४ जघन्य तेजो लेश्या के स्थान प्रदेशार्थपने असंख्यातगुने, ५ जघन्य पद्म लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, ६ जघन्य शुक्ल लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने अब द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ १ सब से जघन्य कापोत लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ, २ जघन्य नील लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, ३ जघन्य कृष्ण लेश्या के द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, ४ जघन्य तेजो लेश्या के द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, ५ जघन्य पद्म लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, ६ जघन्य शुक्ल लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने जघन्य शुक्ल लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान से, जघन्य कापोत लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ अनंतगुने (क्यों कि द्रव्य के अनंत परमाणु होते हैं) ८ जघन्य नील लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, ९ जघन्य कृष्ण लेश्या के

जहण्णगा णीललेस्सा पदेसट्टयाए असंखेज्जगुणा, एवं जाव सुक्कलेस्सा ठाणा ॥ ११ ॥ एतेसिणं भंते ! कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ठाणाणं उक्कोसगाणं दव्वट्टयाए पदेसट्टयाए दव्वट्टपदेसट्टयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा उक्कोसगा काउलेस्सा ठाणा दव्वट्टयाए, उक्कोसगा णीललेस्सा ठाणा दव्वट्टयाए असंखेज्जगुणा एवं जहेव जहण्णगा तहेव उक्कोसगावि णवरं उक्कोसत्ति अभिलावो ॥ १२ ॥ एतेसिणं भंते ! कण्हलेस्सा ठाणाणं जाव सुक्कलेस्सा ठाणाणं जहण्णउक्कोसगाणं दव्वट्टयाए पदेसट्टयाए

स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, १० जघन्य तेजो लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, ११ जघन्य पद्म लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने और १२ जघन्य शुक्ल लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ, असंख्यातगुने ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! इन कृष्ण लेश्या के य शुक्ल लेश्या के उत्कृष्ट स्थान द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ, द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ में कौन किसी ज्यादा तुल्य विशेष हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे कापोत लेश्या के उत्कृष्ट स्थान द्रव्यार्थ, उत्कृष्ट नील लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, यों जिस प्रकार जघन्य की अल्पाबहुत्व कही वैसे ही उत्कृष्ट की भी कहना विशेष इतना ही की सर्व स्थान उत्कृष्ट आलापक कहना ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्या के यावत् शुक्ल लेश्या के जघन्य उत्कृष्ट द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ कौन २ से, थोडे

दव्वट्ठपदेसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जहण्णगा काउलेस्सा ठाणा दव्वट्ठयाए, जहण्णगा णीललेस्सा ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा एवं कण्हलेस्सा, तेउलेस्सा पम्हलेस्सा जाव जहण्णगा सुक्कलेस्सा ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा॥ जहण्णए सुक्कलेस्स ठाणे हिंतो दव्वट्ठयाएहिंतो उक्कोसा काउलेस्स ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, उक्कोसा नीललेस्सठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, एवं कण्ह तेउ पम्ह, उक्कोसा सुक्कलेस्स ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा जहण्णगा काउलेस्सठाणा

स्याद है ? अहो गौतम ! सब से थोडे कापोत लेश्या के जघन्य स्थान द्रव्यार्थपने, २ जघन्य नील लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, ३ जघन्य कृष्ण लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, ४ जघन्य तेजो लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, ५ जघन्य पद्म लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, ६ जघन्य शुक्ल लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, ७ जघन्य शुक्ल लेश्या के द्रव्यार्थ स्थान से उत्कृष्ट कापोत लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, ८ उत्कृष्ट नील लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, ९ उत्कृष्ट कृष्ण लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, १० उत्कृष्ट तेजो लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, ११ उत्कृष्ट पद्म लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, १२ उत्कृष्ट शुक्ल लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असं-

पदेसट्ठयाए, जहण्णगा णीललेसठाणा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा एवं जहेव दव्वट्ठयाए तहेव पदेसट्ठयाएवि भाणियव्वं, णवर पदेसट्ठयाएति अभिलावो विसेसो॥ दव्वट्ठपदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा जहण्णगा काउलेस्सट्ठाणा, दव्वट्ठयाए जहण्णगा णीललेस्सट्ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, एवं कण्ह तेऊ पम्ह जहण्णगा सुक्कलेस्सठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जहण्णएहिंतो सुक्कलेस्सठाणेहिंतो दव्वट्ठयाए हिंतो उक्कोसगा काउलेस्स ठाणा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, उक्कोसा नीललेस्स

स्यातगुने प्रदेशार्थ-सब से थोडे जघन्य कापोत लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ, २ जघन्य नील लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुन, ३ जघन्य कृष्ण लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, ४ जघन्य तेजो लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुन, ५ जघन्य पद्म लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, ६ जघन्य शुक्ल लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, जघन्य शुक्ल लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ से, उत्कृष्ट कापोत लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, उत्कृष्ट नील लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, उत्कृष्ट कृष्ण लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, उत्कृष्ट तेजो लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, ११ उत्कृष्ट पद्म लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, १२ उत्कृष्ट शुक्ल लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुन द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ सब से थोडे जघन्य कापोत लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ, जघन्य नील लेश्या के

दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, एवं कण्ह-तेउ पम्ह उक्कोसगा सुक्कलेस्स ठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, उक्कोसएहिंतो सुक्कलेस्सठाणेहिंतो दव्वट्ठयाएहिंतो जहण्णगा काउलेस्स ठाणा पएसट्ठयाए अणंतगुणा, जहण्णगा णीललेस्स ठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, एवं कण्ह तेउ पम्ह जहण्णगा सुक्कलेस्सा ठाणा पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा जहण्णएहिंतो सुक्कलेस्सा ठाणेहिंतो

स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, ३ जघन्य कृष्ण लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, ४ जघन्य तेजो लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, ५ जघन्य पद्म लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने ६ जघन्य शुक्ल लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने जघन्य शुक्ल लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ से उत्कृष्ट कापोत लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, उत्कृष्ट नील लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, उत्कृष्ट कृष्ण लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, उत्कृष्ट तेजो लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, उत्कृष्ट पद्म लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, उत्कृष्ट शुक्ल लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने उत्कृष्ट शुक्ल लेश्या के स्थान द्रव्यार्थ से, जघन्य कापोत लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ अनंतगुने, जघन्य नील लेश्याके स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, जघन्य कृष्ण लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, जघन्य तेजो लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, जघन्य पद्म लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, जघन्य शुक्ल लेश्या

खलु सा णीललेस्सा तत्थ गयाउस्सक्कति, से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चति कण्हलेस्सा नीललेस पप्प नो तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमति ॥ ॥ सेणूण भंते ! नीललेस्सा काउलेस्सं पप्प नो तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमति ? हंता गोयमा ! नीललेस्सा काउलेस्सं पप्प नो तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमति ? से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ नीललेस्सा काउलेस्सं पप्प नो तारूवत्ताए जाव भुज्जो

वह स्यात् पलिभाग (आकार) मात्र है परंतु कृष्ण लेश्यापने परिणमे नहीं वह नील लेश्या वहां आकार संक्रमे नहीं अर्थात् जिस प्रकार कांच में मनुष्यका प्रतिबिम्ब देखता है, उस का आकार भाव मात्र उस में देखाता है यह सत्य है यद्यपि वह प्रतिबिम्ब पलिभाग मात्र है तथापि आकार भाव से भिन्न नहीं है इस प्रकार ही द्रव्य कृष्ण लेश्या ही पलिभाग मात्र नील लेश्या होती है परंतु वह आकारभाव मात्र ही आरीसे के प्रति बिम्ब मात्र जानना इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहा कृष्ण लेश्या नील लेश्या के द्रव्य को प्राप्त हो उस रूपने वर्णपने यावत् स्पर्शपने वारम्वार परिणमती नहीं है अहो भगवन् ! नील लेश्या कापोत लेश्या के द्रव्य को प्राप्त हो उस रूपने यावत् वारम्वार परिणमती है क्या ? अहो गौतम ! नील लेश्या कापोत लेश्या के द्रव्य को

२ परिणमंति ? गोयमा ! आगारभाव मातापुवा सिया पलियभागे भावमायापुवा सिया नीललेस्साण सा णो खलु सा काउलेस्सा, तत्थगता उसक्कइ उसप्पइवा सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ णीललेस्सा काउलेस्स पप्प णो तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमति ॥ एवं काउलेस्सा तेउलेस्स पप्प, तेउलेस्सा पम्हलेस्स पप्प, पम्हलेस्सा सुक्कलेस्सं पप्प ॥ ३ ॥ सेणूण भंते ! सुक्कलेस्सा पम्हलेस्स पप्प णो तारूवत्ताए जाव परिणमति ? हंता गोयमा ! सुक्कलेस्सा तचेव ? से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ

प्राप्त हो उस रूपपने यावत् वारम्वार नहीं परिणमती है किसकारन अहो भगवन् ! ऐसा कहा नीललेश्या कापोत लेश्या के द्रव्य पने प्राप्त हो उस रूपपने यावत् नहीं वारम्वार परिणमाती है ? अहो गौतमा ! आकार भावमात्र है स्यात्, पलित भागमात्र स्यात् नीललेश्या होती है परंतु निश्चय नहीं आकार कापोत लेश्या पने नहीं परिणमती है इस लिये अहो गौतमा ! ऐसा कहा नीललेश्या कापोत लेश्या को प्राप्त हो उस रूपपने यावत् वारम्वार नहीं परिणमती है ऐसे कापोत लेश्या तेजो लेश्यामें परिणमनेका कहना, तेजो लेश्या पद्म लेश्या में परिणमने का कहना, पद्म लेश्या शुक्ल लेश्या में परिणमने का कहना ॥३॥ अब उलटा कहते हैं अहो भगवन् ! शुक्ल लेश्या पद्म लेश्या के द्रव्य को प्राप्त हो उस रूपपने यावत् नहीं परिणमती है क्या ? अहो गौतम ! शुक्ल लेश्या पद्म लेश्या के द्रव्यपने नहीं परिणमाती है किस कारन अहो भगवन् ! नहीं

पदेसट्ठयाए उक्कोस्सा काउलेस्सा ठाणा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा उक्कोसा णीललेस्सा ठाणा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा एव कण्ह तेउ पम्ह उक्कोस्सा सुक्कलेस्सा ठाणा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ॥ लेस्सा पदस्सचउत्थो उद्देसो ॥ १७ ॥ ॥ ४ ॥

कतिण भंते लेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! छलेस्साओ पण्णत्ताओ तंजहा कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ॥ १ ॥ से णूण भंते ! कण्ह लेस्सा नीललेसे पप्प तारूवत्ताए तागंधत्ताए तारसत्ताए ताफासत्ताए भुज्जो २ परिणमति ? हंता इचो आव

के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुन, जघन्य शुक्ल लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ से उत्कृष्ट कापोत लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, उत्कृष्ट नील लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, उत्कृष्ट कृष्ण लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, उत्कृष्ट तेजो लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, उत्कृष्ट पद्म लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, और उत्कृष्ट शुक्ल लेश्या के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने इति लेश्या पद का चौथा उद्देशा संपूर्ण हुआ ॥ १७ ॥ ४ ॥ ० ०

अहो भगवान् ! कितने प्रकार की लेश्या कही है? गौतम ! छ प्रकार की लेश्या कही है तद्यथा-कृष्ण लेश्या यावत् शुक्ल लेश्या ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! निश्चयसे कृष्ण लेश्या के द्रव्य नील लेश्या के द्रव्य को प्राप्त हुए पीछे तद्रूपपने यावत् स्पर्शपने वारम्वार परिणमते हैं, क्या ? हां यावत् यहां से लगाकर जैसे चौथे

जहा चउरंसुसए तहा माणियव्वं आव वेरुलिय मणिदिट्ठंतोत्ति ॥ २ ॥ से णूणं भंते ! कण्हलेस्सा नीललेस्सं पप्प नो तारूवत्ताए ना तावण्णत्ताए, णो तागंधत्ताए णो तारसत्ताए णो ताफासत्ताए भुज्जो २ परिणमंति ? हंता गोयमा ! कण्हलेस्सा नीललेस्सं पप्प णो तारूवत्ताए णो वण्णत्ताए णो गंधत्ताए णो तारसत्ताए णो ताफासत्ताए भुज्जो २ परिणमंति ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! आगारभावमाताएवा से सिया पलिभागभावमायाएवा से सिया कण्हलेस्साणं से णो

उसमें भी कहा वैसा कहना यावत् वैडूर्य मणि का दृष्टान्त से सिद्ध करना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! निश्चय कृष्ण लेश्या के द्रव्य नील लेश्या को प्राप्त हो उस रूपपने वर्णपने गंधपने रसपने स्पर्शपने वार म्वार नहीं परिणमते हैं ! अहो गौतम ! कृष्ण लेश्या के द्रव्य नील लेश्यापने वर्णपने गंधपने रसपने स्पर्शपने नहीं परिणमते हैं + अहो भगवन् ! ऐसा किस कारन से कहते हो ! अहो गौतम !

+ जो पलटना कहा वह तो तिर्यंच और मनुष्य की गति आश्रिय मानना और नहीं पलटना कहा वह नरक और देवगति आश्रिय मानना, मनुष्य तिर्यंच में द्रव्य लेश्या तथा भाव लेश्या दोनों का पलटा होता है, और नरक देव में द्रव्य लेश्या का पलटा तो नहीं होता है परंतु भाव लेश्या का पलटा होने का संभव है, क्यों कि नारकी नरक में मिथ्यात्वी जाता है और वहां गये बाद सम्यक्त्व प्राप्त करता है, इस से भाव लेश्या का पलटा होने का संभव है

सलु सा णीललेस्सा तत्थ गयाउस्सक्कति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति कण्हलेस्सा नीललेस्सं पप्प नो तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमति ॥ ॥ सेणूण भंते ! नीललेस्सा काउलेस्सं पप्प नो तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमति ? हंता गोयमा ! नीललेस्सा काउलेस्सं पप्प नो तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमति, ? से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ नीललेस्सा काउलेस्सं पप्प नो तारूवत्ताए जाव भुज्जो

वह स्यात् पलित भाग (आकार) मात्र है परंतु कृष्ण लेश्यापने परिणमे नहीं वह नील लेश्या वहां आकार सकमे नहीं अर्थात् जिस प्रकार कांच में मनुष्यका प्रतिबिम्ब देखता है, उस का आकार मात्र मात्र उस में देखाता है यह सत्य है यद्यपि वह प्रतिबिम्ब पलित भाग मात्र है तथापि आकार मात्र से भिन्न नहीं है इस प्रकार ही द्रव्य कृष्ण लेश्या ही पलित भाग मात्र नील लेश्या होती है परंतु यह आकारमात्र मात्र ही आरीसे के प्रति बिम्ब मात्र जानना इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहा कृष्ण लेश्या नील लेश्या के द्रव्य को प्राप्त हो उस रूपपने वर्णपने यावत् स्पर्शपने वारम्वार परिणमती नहीं है अहो भगवन् ! नील लेश्या कापोत लेश्या के द्रव्य को प्राप्त हो उस रूपपने यावत् वारम्वार परिणमती है क्या ? अहो गौतम ! नीललेश्या कापोतलेश्या के द्रव्य को

२ परिणमंति ? गोयमा ! आगारे भाव मातोएवा सिया पलियभागे भावमायाएवा सिया नीललेस्साण सा णो खलु सा काउलेस्सा, तत्थगता उसक्कइ उसप्पइवा सेतेणट्ठेणं गोयमा! एव वुच्चइ णीललेस्सा काउलेस्स पप्प णो तारूवत्ताए जाव भुज्जो २ परिणमति ॥ एव काउलेस्सा तेउलेस्स पप्प, तेउलेस्सा पम्हलेस्स पप्प, पम्हलेस्सा सुक्कलेस्सं पप्प ॥ ३ ॥ सेणूण भंते ! सुक्कलेस्सा पम्हलेस्स पप्प णो तारूवत्ताए जाव परिणमति ? हंता गोयमा ! सुक्कलेस्सा तचेव ? से केणट्ठेणं भंते ! एव वुच्चइ

प्राप्त हो उस रूपपन यावत् वारम्वार नहीं परिणमती है किसकारन अहो भगवन् ! ऐसा कहा नीललेश्या कापोत लेश्या के द्रव्य पने प्राप्त हो उस रूपपने यावत् नहीं वारम्वार परिणमति है ? अहो गौतम ! आकार मात्र है स्यात्, पलित भागमात्र स्यात् नीललेश्या होती है परंतु निश्चय नहीं आकार कापोत लेश्या पने नहीं परिणमती है इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहा नीललेश्या कापोत लेश्या को प्राप्त हो उस रूपपने यावत् वारम्वार नहीं परिणमती है एसे कापोत लेश्या तेजो लेश्यामें परिणमनेका कहना, तेजो लेश्या पद्म लेश्या में परिणमने का कहना पद्म लेश्या शुक्ल लेश्या में परिणमने का कहना ॥१॥ अब उलटा कहते हैं अहो भगवन्! शुक्ल लेश्या पद्म लेश्या के द्रव्य को प्राप्त हो उस रूपपने यावत् नहीं परिणमती है क्या ? हां गौतम ! शुक्ल लेश्या पद्म लेश्या के द्रव्यपने नहीं परिणमति है किस कारन अहो भगवन् ! नहीं

सुक्कलेस्सा जाव णो परिणमति ? गोयमा ! आगारभावमायाएवा जाव सुक्कलेस्साए साणोखलुसा पम्हलेस्सा तत्थगया उसक्कति सएणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चति जाव नो परिणमति ॥ लेस्सापए पंचमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ १७ ॥ ५ ॥

कतिण भंते ! लेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! छ लेस्साओ पण्णत्ताओ तंजहा कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ॥ मणुस्साण भंते ! कतिलेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! छ लेस्साओ पण्णत्ताओ तंजहा कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ॥ मणुस्सीणि भंते ! कतिलेस्साओ ? गोयमा ! छ लेस्साओ पण्णत्ताओ तंजहा-कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ॥

परिणमती है ? अहो गौतम ! आकारभावमात्र है प्रतिबिम्ब रूप शुक्ल लेश्या के पुद्गल कुछमलिन कर यावत् पर्यन्त शुक्ल लेश्या का कहना, किन्तु पद्म लेश्या का नहीं कहना पद्म लेश्या के परिणामपने परिणमे नहीं किन्तु वही ही शुक्ल लेश्या के पुद्गल का कुछ मलीन कर इस प्रकार ही सब लेश्या का कथन मानना इस कारन अहो गौतम ! ऐसा कहा यावत् नहीं परिणमे इति लेश्या पद का पांचवा उद्देशा समाप्तम् ॥१७॥५॥

अहो भगवन् ! कितने प्रकार की लेश्या कही है ? अहो गौतम ! छ लेश्या कही है कृष्ण लेश्या यावत् शुक्ल लेश्या अहो भगवन् ! मनुष्य को कितनी लेश्या कही है ? अहो गौतम ! छ ही लेश्या कही है तद्यथा कृष्ण लेश्या यावत् शुक्ल लेश्या मनुष्यनी की पृच्छा ? अहो गौतम ! छ ही लेश्या कही अहो भगवन् !

कम्मभूमिय मणुस्साण भंते ! कइलेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! छ लेस्साओ पण्णत्ताओ तंजहा कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा एवं कम्मभूमिय मणुस्सीणवि ॥ भरहएरवय मणुस्साण भंते ! कइ लेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! छ लेस्साओ पण्णत्ताओ तंजहा कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ॥ पुव्वविदेह अवरविदेह कम्म भूमिय मणुस्साण भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! छ लेस्साओ पण्णत्ताओ तंजहा कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ॥ एवं मणुस्सीणवि ॥ अकम्मभूमिय मणुस्साण पुच्छा ? गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ तंजहा कण्हलेस्सा जाव तेऊलेस्सा ॥ एवं अकम्मभूमियमणुस्सीणवि ॥

कर्मभूमि मनुष्य में कितनी लेश्या कही है ? अहो गौतम ! छ लेश्या कही है तद्यथा—कृष्ण यावत् शुक्ल, इस प्रकार ही कर्मभूमिकी मनुष्यनी को भी छ ही लेश्या जानना भरत ऐरवत के मनुष्यों के कितनी लेश्या कही है ? अहो गौतम ! छ लेश्या कही है तद्यथा कृष्ण यावत् शुक्ल इस प्रकार कर्मभूमिकी मनुष्यनी को भी छ ही लेश्या जानना पूर्व महा विदेह पश्चिम महा विदेह मनुष्य को कितनी लेश्या कही है ? अहो गौतम ! छ लेश्या कही है ऐसे ही पूर्वापर महा विदेह की मनुष्यनी के भी छ ही लेश्या जानना अकर्म भूमी मनुष्य के कितनी लेश्या कही है ? अहो गौतम ! चार लेश्या कही है तद्यथा—कृष्ण लेश्या यावत् तेजो लेश्या यों अकर्मभूमी की मनुष्यनी के भी चार ही लेश्या जानना और

एव अंतरदीवगमणुस्साण, मणुस्सीणवि ॥ हेमवयएरण्णवय अकम्मभूमिय मणुस्साण मणुस्सीणय कइ लेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चत्तारि लेस्साओ पण्णत्ताओ तंजहा कण्हलेस्सा जाव तेऊलेस्सा हरिवास रम्मयवास अकम्मभूमिय मणुस्साण मणुस्सीणय पुच्छा ? गोयमा ! चत्तारि लेस्सा पण्णत्ता तंजहा कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्सा देवकुरु उत्तरकुरु अकम्मभूमिग मणुस्साण एव चेव ॥ एतेसिंचेव मणुस्सीण एवचेव ॥ धायतिसंडे पुरत्थिमद्धे, एव चेव पच्चत्थिमद्धेवि, एव पुक्खरदीवे भाणियव्वं ॥ कण्हलेस्सेण भंते ! मणुस्से कण्हलेस्स गब्भ जाणेज्जा ? हंता गोयमा ! जाणेज्जा

अंतर द्वीप के मनुष्य मनुष्यनी के भी यही चारों लेश्या जानना हेमवय एरणवय क्षेत्र के मनुष्य के कितनी लेश्या कही है ? अहो गौतम ! चार लेश्या कही तद्यथा-कृष्ण लेश्या यावत् तेजो लेश्या ऐसे ही मनुष्यनी के भी चार लेश्या, ऐसे ही हरिवास रम्यकवास की मनुष्य मनुष्यनी और देव कुरु उत्तर कुरु क्षेत्र की मनुष्य मनुष्यनी के भी चार ही लेश्या जानना जिस प्रकार यह जम्बूद्वीप के कर्म भूमी के और अकर्मभूमी के क्षेत्र के मनुष्य की लेश्या कही ऐसे ही धातकी खंड के पूर्व विभाग में रहे ९ क्षेत्रों में और पश्चिम विभाग में रहे ९ क्षेत्रों में तथा पुष्करार्ध के पूर्व और पश्चिम विभाग के सब २ क्षेत्रों में लेश्या का कथन करना अहो भगवन् ! कृष्ण लेश्यावाला मनुष्य कृष्ण लेश्यावाले

कण्हलेस्सेण भंते ! मणुस्से नीललेस्स गब्भ जाणेज्जा ? हंता गोयमा ! जाणेज्जा जाव कण्हलस्से मणुस्से सुक्कलेस्स गब्भ जाणेज्जा ॥ नीललेस्सेणं भंते ! मणुस्से कण्हलेस्स गब्भ जाणेज्जा? हंता गोयमा! जाणेज्जा, एवं जाव नीललेस्से सुक्कलेस्स गब्भ जाणेज्जा एवं काउलेस्सेण छप्पि आलावगा भाणियव्वा, तेउलेस्सेणवि, पम्ह लेस्सेणवि, सुक्कलेस्सेणवि एवं एते छत्तीस आलावगा ॥ कण्हलेस्साणं भंते ! इत्थिया कण्हलेस्स गब्भ जाणेज्जा? हंता गोयमा! जाणेज्जा॥ एवं एतेवि छत्तीस आलावगा। कण्हलेस्साण भंते ! मणुस्स कण्हलेस्साए इत्थियाए कण्हलेस्स गब्भ जाणेज्जा ? हंता गोयमा ! जाणेज्जा एवं एते छत्तीस आलावगा ॥ कम्मभूमियए कण्हलेस्सेण भंते ! मणुस्से कण्हलेसाए

गर्भ को मानता है क्या ? अहो गौतम ! मानता है ऐसे ही कृष्ण लेश्यावाला मनुष्य नील लेश्यावाले गर्भ को कापोत लेश्यावाले गर्भ को, तेजो लेश्यावाले पद्म लेश्यावाले और शुक्ल लेश्यावाले गर्भ को भी मानता है जिस प्रकार कृष्ण लेश्यावाला मनुष्य छ ही लेश्या के गर्भ को जानता है ऐसे ही नील लेश्यावाला मनुष्य भी छ ही लेश्या के गर्भ को मानता है ऐसे ही कापोत लेश्यावाला, तेजो लेश्यावाला, पद्म लेश्यावाला, शुक्ल लेश्यावाला सब के छ छ आलापक करने से ३६ आलापक होते हैं अहो भग वन् ! कृष्ण लेश्यावाली स्त्री कृष्ण लेश्यावाले गर्भ को क्या मान सकती है ? अहो गौतम ! जिस प्रकार

इत्थियाए कण्हलेस्स गब्भं जणेज्जा? एवं एतेवि छत्तीस आलावगा ॥ अकम्मभूमिग कण्हलेस्सेणं भंते! मणुस्से अकम्मभूमिग कण्हलेस्साए इत्थियाए अकम्मभूमिय कण्हलेस्स गब्भं जणेज्जा? हंता गोयमा! जणेज्जा, णवरं चउसुलेसासु सोलस आलावगा ॥ एवं अंतरदीवगावि॥ लेस्सापए छट्ठो उद्देसो सम्मत्तो ॥१७॥६॥ पण्णवणाए भगवतीए लेस्सा पद सतरसम सम्मत्त ॥ १७ ॥

* *

पुरुष के ३६ आलापक कहे वैसे स्त्री के भी ३६ आलापक कहना ऐसे ही कृष्ण लेश्यावाले मनुष्य कृष्ण लेश्यावाली स्त्री के गर्भ को मानने के ३६ आलापक कहना कर्मभूमी के मनुष्य कृष्ण लेश्यावाली स्त्री के गर्भ को मानने के ३६ आलापक कहना ऐसे ही कृष्ण लेश्यावाले अकर्मभूमी मनुष्य कृष्ण लेश्यावाली स्त्री के गर्भ को मानते हैं जिस के चार लेश्या के १६ आलापक कहना, ऐसे ही अन्तर्द्वीप के भी १६ आलापक कहना इति छठा उद्देशा संपूर्ण हुआ इति पन्नवणा भगवतीका सतरहवा लेश्या पद समाप्त हुआ ॥१७॥



॥ अष्टादश कायस्थितिपदम् ॥

जीव गई इंदिय काए, जोगे वए कसाय लेस्साय ॥ सम्मत्त णाण दंसण, संजय उवओग आहारे ॥१॥ भासग परित्त पज्जत्त, सुहुम सण्णी भवत्थि चरिमेय ॥ एतेसि

अब अठारमा काया स्थिति पद कहते हैं इन के २२ द्वार के नाम १ समुच्चय जीव द्वार, २ गति द्वार, ३ इन्द्रिय द्वार, ४ काया द्वार ५ जोग द्वार, ६ वेद द्वार, ७ कषाय द्वार, ८ लेश्या द्वार, ९ सम्यक्त्व द्वार, १० ज्ञान द्वार ११ दर्शन द्वार, १२ संयति द्वार, १३ उपयोग द्वार १४ आहारक द्वार, १५ भाषक द्वार, १६ परित द्वार, १७ पर्याप्त द्वार, १८ सूक्ष्म द्वार, १९ सन्नी द्वार, २० भव्य सिद्धिक द्वार, २१ अस्तिकाया द्वार, और २२ चरिम द्वार इतनी द्वारों की जो काया स्थिति होगी सो कहेंगे +प्रथम समुच्चय जीव द्वार—जो द्रव्य से पांच इन्द्रिय तीन जोग श्वासोश्वास और आयुष्य इन १० द्रव्य प्राणों का धारक होवे और भाव से ज्ञान दर्शन सुख और शक्ति इन चार प्राणोंका धारक होवे वह प्राणी जीव कहा जाता है इस में द्रव्य प्राण में तो न्यूनाधिकता होती है और भाव प्राण तो संसारी अवस्था में तथा सिद्ध अवस्था में बने रहते हैं सिद्ध में चार प्राण पूर्ण रूप से प्रगट हो जाते हैं १ अनंत ज्ञान, २ अनंत

+कायास्थिति उसे कहते हैं कि जो जीव इन२२ बावीस पर्याय में से जिस पर्याय को धारन करे उस ही पर्याय में जितने काल तक बना रहे, अन्य पर्याय को धारन नहीं करे उसे काया स्थिति कहते हैं

तुपदाण, कायठिती होइ णायव्वा ॥ २ ॥ १ ॥ जीवेण भंते ! जीवत्ति कालतो केवच्चिर होति ? गोयमा ! सव्वद्ध ॥ णेरइएण भंते ! णेरइएति कालतो केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीस सागरोवमाइं ॥ तिरिक्खजोणिएण भंते ! तिरिक्खजोणिएत्ति कालतो केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण अणंतकाल, अणंताओ उसप्पिणीओओसप्पिणीओ खेत्तओ अणंतालोगा असंखेज्जा पोग्गल परियट्टा तेण पोग्गल परियट्टा आवलियाए

दर्शन, ३ अनंत सुख और ४ अनंत शक्ति इस प्रकार जीव आश्रिय प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन् ! जीव जीव की अवस्था में बना रहे तो कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! सर्व काल अर्थात् जीव गत अनादि काल से जीव ही है वर्तमान काल में जीव ही है और आगे अनंत काल तक जीव ही रहेगा जीव का अजीव कदापि नहीं होगा ॥ १ ॥ दूसरा गति द्वार अहो भगवन् ! नेरीय का नेरीयेपने रहे तो काल से कितने काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेतीस सागर अहो भगवन् ! तिर्यंच योनिक तिर्यंचपने रहे तो कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल अनंत अवसर्पनी उत्सर्पिनी, यह काल से क्षेत्र से अनंत लोकाकाश प्रमाण अर्थात अनंत लोक के जितने प्रदेश हैं उन का एकेक समय में एकेक प्रदेश का हरण करते अनंत अवसर्पनी उत्सर्पनी

असंखेज्जति भाग ॥ तिरिक्खजोणिणीण भंते ! तिरिक्खजोणिणीत्ति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिपलिओवमाइं पुव्वकोडी पुहुत्त मब्भहियाइं ॥ एवं मणुस्सवि मणुस्सीवि एवं चेव ॥ देवेणं भंते ! देवेत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहेव णेरइए ॥ देवीण भंते ! देवित्ति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेण दस वास सहस्साइं उक्कोसेण पणपण्ण पलिओवमाइं ॥ सिद्धेण भंते ! सिद्धत्ति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! सादिए

व्यतीत हो जावे उतने कालतक तिर्यंच गति में जीव रहे, अथवा असंख्यात पुद्गल परावर्तन अर्थात् आवलिका के असंख्यातवे भाग में जितने समय होवे उतने पुद्गल परावर्तन तिर्यंचपने रहे यह अथान वनस्पति की अपेक्षा से जानना अहो भगवन् ! तिर्यंचनी का तिर्यंचनीपन जीव रहे तो कितने कालतक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट तीनपल्योपम और प्रत्येक पूर्वकोटि अधिक अर्थात् स्त्री पर्याय सन्नीपने में ही होती है यह सात भवतो पूर्व कोटी आयुष्य के कर्मभूमी में करे और आठवा भव युगल तिर्यंचनी का करे जिस प्रकार तिर्यंचनीकी कायास्थिति कही उसही प्रकार मनुष्य की और मनुष्यनीकी भी कायास्थिति जानना अर्थात् जघन्य अन्तरमुहूर्त और उत्कृष्ट तीन पल्योपम और प्रत्येक क्रोड पूर्व अधिक सात भव महाविदेह कर्मभूमी का मनुष्य मनुष्यनी के करे आठवे भव में युगल मनुष्य हो फिर देवता हो जावे

अपज्जवसिए ॥ णेरइएणं भंते! णेरइय अपज्जत्तएत्ति कालतो केवच्चिरं होइ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अतोमुहुत्त ॥ एवं जाव देवी अपज्जत्तिया ॥ णेरइएणं भंते ! णेरइयपज्जत्तएत्ति कालतो केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण दस वास सहस्साइं, अतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेण तेत्तीसं सागरोवमाइं अतोमुहुत्तूणाइं तिरिक्ख जोणिय पज्जत्तएणं भंते ! तिरिक्खजोणिय पज्जत्तएत्ति कालतो केवच्चिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तिण्णि पलिओवमाइं अतोमुहुत्तूणाइं ।

अहो भगवन् ! देवता का देवता पने रहता काल से कितने कालतक रहे? अहो गौतम! जिस प्रकार नेरीयेका कहा उस प्रकार ही देवता का कहना अर्थात् दश हजार वर्ष उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम अहो भगवन् ! देवी का देवीपने रहे तो काल से कितना काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट पचावन पल्योपम यह दूसरे देवलोक की अपरिग्रही देवी की अपेक्षा से जानना अहो भगवन् ! सिद्ध का सिद्ध पने रहे तो कितने काल तक रहे ! अहो गौतम ! सादि अपर्यवसित अर्थात् सिद्ध की आदि तो है किन्तु अन्त नहीं है अब इन चारों गति की पर्याप्त अपर्याप्त अवस्था की कायास्थिति कहते हैं अहो भगवन् ! नेरीए अपर्याप्त कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य भी उत्कृष्ट भी अन्तमुहूर्त इतने ही काल तिर्यच तिर्यचनी मनुष्य मनुष्यनी देवता और देवांगना अपर्याप्त रहते हैं

एव तिरिक्ख जोणिणी पज्जत्तियावि, मणूसे मणुस्सीवि एव चेव देव पज्जत्तए जहाणेरइय पज्जत्तए॥देवी पज्जत्तियाण भंते! देवी पज्जत्तएति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण दसवाससहस्साइ अतोमुहुत्तूणाइ उक्कोसेण पणपण्ण पलिओवमाइ, अतोमुहुत्तूणाइं ॥ २ ॥ सइंदियाण भंते ! सइंदिएति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! सइंदिए दुविहे पण्णत्ते तंजहा अणाइए अपज्जवसिए अणाइएवा सपज्जवसिए ॥ एगिंदिएण भंते ! एगिंदिएति कालतो

भावार्थ सर्व जीवों की अपर्याप्त अवस्था अन्तरमुहूर्त की ही होती है अहो भगवन्! नरिया पर्याप्तपने रहे तो कितने काल तक रहे? अहो गौतम! जघन्य दशहजार वर्ष में अन्तरमुहूर्त कम (यह अन्तरमुहूर्त अपर्याप्तावस्था का कम किया है) उत्कृष्ट तेंतीस सागरोपम में अन्तरमुहूर्त कम अहो भगवन् ! तिर्यंच पर्याप्त पने रहे तो कितने काल तक रहे? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त, उत्कृष्ट तीनपल्योपम में अन्तरमुहूर्त कम इतना ही तिर्यंचनी का पर्याप्तका जघन्य उत्कृष्ट काल जानना देवता पर्याप्तका नारकी जैसा कहना और पर्याप्त देवी जघन्य दशहजार वर्ष अन्तरमुहूर्त कम उत्कृष्ट ५५ पल्योपम अन्तरमुहूर्त कम ॥२॥ तीसरा इन्द्रिय द्वार अहो भगवन्! सइन्द्रिय जीव सइन्द्रियपने रहे तो काल से कितने काल तक रहे? अहो गौतम! सइन्द्रिय दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा १ अनादी अनन्त सो अभव्य जीव की अपेक्षा और २ अनादी सान्त सो भव्य जीव की अपेक्षा

केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण अणंतकाल, वणप्फइकालो ॥ बेइंदिएणं भंते ! बेइंदिएति कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अंतो मुहुत्त उक्कोसेण संखेज्ज काल ॥ एवं तेइंदिय ॥ एवं चउरिंदिएवि ॥ पंचिंदिए कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण सागरोवमसहस्सं सातिरेगं अणिंदिएणं पुच्छा ? गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए ॥ सइंदिय अपज्जत्तएणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त, एवं जाव पंचिंदिय अपज्जत्तएवि ॥ सइंदिए पज्जत्तएणं

अहो भगवन्! एकेन्द्रिय एकेन्द्रियपने काल से कितने काल तक रहे? अहो गौतम! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल वनस्पति के काल जितना जानना अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय का बेइन्द्रिय रहे तो काल से कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट संख्यात काल, ऐसे ही तेइन्द्रियका भी, और ऐसे ही चौरिन्द्रियका भी जानना * अहो भगवन्! पंचेन्द्रिय पंचेन्द्रियपने रहे तो काल से कितने कालतक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट एक हजार सागरोपम कुछ अधिक इतने काल तक चारों गति में पंचेन्द्रियपने उत्पन्न होवे परन्तु चतुरिन्द्रिय आदि स्थान में उत्पन्न नहीं होवे अनिन्द्रिय का प्रश्न ? अहो गौतम ! अनिन्द्रिय (सिद्ध) आदि अनंत हैं अब इन्द्रिय आश्रिय पर्याप्त अपर्याप्त का कहते हैं अहो

* बर्तिय ८० नाईन्द्रिय ९० और चौरिन्द्रिय ४ भव उत्कृष्ट करते हैं.

भंते! सइंदियपज्जत्तएणंति कालओ कवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण सागरोवम सतपुहुत्तं सातिरेगं ॥ एगिंदिय पज्जत्तएण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं संखज्जाइं वाससहस्साइं ॥ बइंदिय पज्जत्तएण भंते ! बइंदिय पज्जत्तएति पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण संखेज्जाइंवासाइं ॥ तेइंदिय पज्जत्तएण भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण संखेज्जाइ राइंदियाइं॥ चउरिंदिय पज्जत्तएण भंते! पुच्छा? गोयमा!

भगवन् ' सइंद्रिय अपर्याप्त सइंद्रिय अपर्याप्त अवस्थामें कालसे कितने काल रहे ? अहो गौतम ' जघन्य भी और उत्कृष्ट भी अन्तरमुहूर्त ऐसे ही पंचेंद्रिय पर्यन्त कहना, सब अपर्याप्त अवस्था में अन्तरमुहूर्त ही रहते हैं अहो भगवन् ! सइंद्रिय पर्याप्त अवस्था में काल से कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट साधिक प्रत्येक सो सागरोपम से सागरतक पर्याप्तका ऐसा खुलास करते हैं कि जिस भवमें जीव मरकर उत्पन्न होवे, पर्याप्त होवे परंतु अपर्याप्त अवस्था में मरे नहीं एकेन्द्रिय पर्याप्त की पृच्छा ! अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट संख्यात हजार वर्ष अर्थात् पृथ्वीकाय बावीसहजार वर्ष, अपकाय सात हजार वर्ष, इत्यादी आश्रिय संख्यात हजार वर्ष ही कहे हैं अहो भगवन् ! बेन्द्रिय पर्याप्त पने कितने काल तक रहे ? अहो गौतम! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट संख्यात वर्ष क्योंकि बेइन्द्रियकी बारह वर्ष

जहण्णण अतोमुहुत्त उक्कोसेण सखज्जामासा ॥ पाचिंदिय पज्जत्तएण भते ! पाचिंदिए पज्जत्तएति कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णण अतोमुहुत्त उक्कोसेण सागरोवमसतपुहुत्त ॥ ३ ॥ सकाइएण भते ! सकाइएति कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! सकाइए दुविह पण्णत्त तजहा अणादिए अपज्जवसिय, अणादिए सपज्जवसिए ॥ पुढविकाइएण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण

की ही स्थिती है तेन्द्रिय पर्याप्त की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट संख्यात रात्रिदिन क्यों कि तेइन्द्रिय की उत्कृष्ट ४९ दिन की ही स्थिति है चौरिन्द्रिय की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट संख्यात महिने, क्यों कि चौरिन्द्रिय की छ महिने की ही स्थिति है पचेन्द्रिय पर्याप्त की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट सो सागरोपम पृथक्त्व ॥ ३ ॥ चौथा कायाद्वार अहो भगवन् ! सकाया सकायपने कालसे कितने काल रहे? अहो गौतम! सकाइये दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा- अनादि अनंत यह अभव्य आश्रिय तैजस कार्मान शरीर सदैव काल होता है इस अपेक्षा और अनादिसान्त भव्य आश्रिय मोक्ष जावे तब अकायी होवे पृथ्वीकाय आश्रिय पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल असंख्यात सर्पनी उत्सर्पनी यह काल से और क्षेत्र से असंख्यात लोकाकाश के जितने प्रदेश जितने काल रहे वहां तक एस ही अपकाय तेउकाय वायुकाय का

असखज्जकाल असखज्जाओ ओसप्पिणीओ उसप्पिणीओ कालतो, खेत्ततो असखेज्जाओ लोगाओ ॥ एव आउ तेऊ-वाऊकाइयाति ॥ वणप्फइकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णण अतोमुहुत्त उक्कासेण अणतकाल अणताओ उसप्पिणीओ, आसप्पिणीओ, काउओ खेत्तओ अणतालोगा असखज्जा पोग्गल परियट्टा तण पोग्गलपरियट्टा आवलियाए असखज्जति भाग ॥ तसकाइएण भत ! तसकाइएति पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कासण दोसागरोवमसहस्साइ, सखज्जवास मब्भहियाइ ॥ अकाईएण भत ! पुच्छा ? गोयमा ! अकाइए सादिए अपज्जवसिए ॥ सकाइय

कहना, व वनस्पतिकाय की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनतकाल अनतसर्पिणी उत्सर्पिणी पर काल स, और क्षेत्र स अनत लोकाकाश असख्यात पुद्गल परावर्तन वे पुद्गल परावर्तन एक आवलिका के असख्यातवे भाग के जितने समय होवे उतने पुद्गल परावर्तन अहो भगवन् ! त्रसकाया त्रस काय पने रहे तो काल से कितने काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट दो हजार सागरोपम संख्यात वर्ष अधिक अकायिक सिद्ध भगवत की पृच्छा? अहो गौतम! सिद्ध अनादि अपर्यवसित हैं अब अपर्याप्त पर्याप्त आश्रित कहते हैं—अहो भगवन् ! सकायिक अपर्याप्तपने रहे तो कितने कालतक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्त एसे ही यावत् त्रसकाया तक कहना एव अपर्याप्त अन्तरमुहूर्त

अपज्जत्तए पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण उक्कोसणवि अंतोमुहुत्त, एव जाव तस काइय अपज्जत्तए ॥ सकाइय पज्जत्तए पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण सागरोवम सतपुहुत्त सातिरेग ॥ पुढविकाइय पज्जत्तए पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण संखेज्जाइं वास सहस्साइं, एव आउवि ॥ तेउकाइय पज्जत्तए पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण संखेज्जाइं राइंदियाइं, वाउकाइय पज्जत्तए पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण संखेज्जाइं वाससहस्साइं ॥ वणप्फतिकाइय पज्जत्तए पुच्छा ? गोयमा !

ही रहते हैं सकायिक पर्याप्त रहे तो कितने काल तक रहे? अहो गौतम! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट साधिक प्रत्येक सो सागरोपम इतने काल तक अपर्याप्त अवस्था में मृत्यु नहीं पावे पर्याप्त होकर ही मरे पृथ्वीकायिक पर्याप्त कितने काल तक रहे? अहो गौतम! उत्कृष्ट संख्यात हजार वर्ष क्योंकि बावीस हजार वर्षायु है ऐसे ही अप्कायिकका भी कहना, क्योंकि सात हजार वर्षायु है, तेउकाया पर्याप्त अवस्थामें रहे तो? अहो गौतम! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट संख्यात रात्रिदिन क्योंकि तीन अहोरात्रिका आयु है वायुकाया पर्याप्त की पृच्छा? अहो गौतम! संख्यात हजार वर्ष क्योंकि तीन हजार वर्ष का आयुष्य है वनस्पतिकाय पर्याप्त की पृच्छा? अहो गौतम! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट संख्यात हजार वर्ष क्यों कि दस हजार वर्ष की स्थिति है त्रसकाया पर्याप्त की पृच्छा? अहो गौतम! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट साधिक प्रत्येक सो सागरो

जहण्णण अतोमुहुत्त उक्कोसेणं सखेज्जाइ वाससहस्साइ, तसकाइय पज्जत्तएण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णण अतोमुहुत्त उक्कोसेण सखेज्जाइ वाससहस्साइ, पाठातर सखेज्जाइ वाससहस्साइ सागरोवम सय पुहुत्त सातिरेग ॥ ४ ॥ सुहुमण भते ! सुहुमेति कालतो कवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णण अतोमुहुत्त उक्कोसेण असखेज्ज काल, असंखेज्जाओ उसप्पिणी ओसप्पिणीओ खेत्तओ असखेज्जालोगा ॥ सुहुम पुढवि काइया सुहुम आउकाइया सुहुम तेऊकाइया सुहुम वाऊकाइय सुहुम वणस्सइ काइया सुहुम णिगोदे जहण्णण अतोमुहुत्त उक्कोसेण असखेज्ज काल असखेज्जाओ उसप्पिणी २ ओ कालओ असखेज्जा लोगा ॥ सुहुमण भत !

पच अथात् नव सो सागरोपम पर्यंत त्रसकाया में रह यहां जावे यहां अपर्याप्तपने में आयुष्य पूर्ण नहीं करे फिर स्थावरपना पावे या मुक्ति जावे ॥ ४ ॥ अब सूक्ष्म बादरकायाका पूछते हैं अहो भगवन् ! सूक्ष्म सूक्ष्मपने कितना काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल असंख्यात उत्सर्पिनी अवसर्पिणी कालसे और क्षेत्र से असंख्यात लोकके आकाश प्रदेश जितना काल सूक्ष्मही रहे + सूक्ष्म पृथ्वीकाया सूक्ष्म अप्काया सूक्ष्म तेजस्काय सूक्ष्म वायुकाया, सूक्ष्म वनस्पतिकाया, सूक्ष्म निगोद इन आश्रिय पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी

+ यह कथन व्यवहार राशि में आने भीष आश्रय है, अव्यवहार राशिवाले सूक्ष्म नीगोदमें तो अनंत काल पर्यंत रहते हैं

अपज्जत्तएणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ॥ पुढवीकाइए आउकाइय तेउकाइय वाउकाइय वणस्सइकाइयाणय एवं चेव ॥ पज्जत्तियाणं जहा ओहियाणं ॥ बायरेणं भंते ! बायरेत्ति कालतो केवचिरहोइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं असंखेज्जाओ उसप्पिणी उसप्पिणीओ कालओ खेत्तओ अंगुलस्स असंखेज्जति भागं ॥ बायर पुढवि काइएणं भंते पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सत्तरिसागरोवम कोडाकोडीओ, एवं बायर आउकाइएवि जाव बायर वाउकाइएवि ॥ बायर वणस्सइ काइएणं भंते ! बायरे पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं जाव खेत्तओ अंगुलस्स

काल से, क्षेत्र से असंख्यात लोक प्रमाण सूक्ष्म अपर्याप्त आश्रिय पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्त सूक्ष्म पृथ्वीकाया, अपकाया, तेउकाया, वायुकाया और वनस्पतिकाया के अपर्याप्तका ऐसा ही कहना, सब अपर्याप्त अन्तरमुहूर्त ही रहते हैं अहो भगवन् ! बादर को बादरपने रहे तो कितने काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात काल असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी यह काल से, और क्षेत्र से अंगुल के असंख्यातवे भाग रहे अर्थात् एकेक समय में एकेक आकाश प्रदेश का हरन करते असंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी बीत जाय इतने काल तक रहे अहो भगवन् ! बादर पृथ्वी काया बादरपन कितने कालतक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट सित्तर कोडाकोड सागरो

असखेज्जइ भाग॥पत्तेय सरीर बादर वणस्सतिकाइएण भते!पुच्छा? गोयमा ! जहण्णेण
अतोमुहुत्त उक्कोसेण सत्तरि सागरोवम कोडाकोडीओ॥ निगोदेण भते! निगोदत्ति पुच्छा?
गोयमा!जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण अणतकाल, अणताओ उसप्पिणि ओसप्पिणीओ
कालओ खेत्तओ अड्ढाइज्जा पोग्गलपरियट्टा ॥ बादर निगोदेण भते! बादरे पुच्छा? गोयमा!
जहण्णेण् अंतोमुहुत्त उक्कोसेण सत्तरि सागरोवम कोडाकोडीओ ॥ बादर तस
काइएण भते ! बादर तसकाइएत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेण
अतोमुहुत्त उक्कोसेण दोसागरोवम सहस्साइ सखेज्जवास मब्भहियाइ ॥ एतेसि

पन पस भी बादर अपकाया भी बादर तेजस्काया भी और बादर वायुकाया भी जानना अहो भगवन् !
बादर वनस्पतिकाया बादर वनस्पतिकायापने कितने काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट
असंख्यात काल यावत् क्षेत्र से अंगुल के असंख्यातवा भाग जितना क्षेत्र के जितने आकाश प्रदेश उतनी
उत्सर्पिणी अवसर्पिणी जितना काल जानना प्रत्येक शरीर बादर वनस्पतिकाया की पृच्छा ? अहो
गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट सित्तर कोडाकोड सागर अहो भगवन् ! निगोद निगोदपने रहे
तो काल से कितना काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल अनंत अवसर्पिणी
उत्सर्पिणी काल से और क्षेत्र से अनंत लोक प्रमाण तथा अढाइ पुद्गल परावर्तन प्रमाण बादर निगोद

अपज्जतगा सव्वेवि जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त॥ बादर पज्जत्तएण भंते! बायर पज्जत्तए पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेणं सागरोवम सत पुहुत्त सातिरेग ॥ बादर पुढविकाइय पज्जत्तएण भंते ! बादर पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्त उक्कोसेण संखेज्जाइं वाससहस्साइं ॥ एवं आऊ काइयवि ॥ तेउकाइय पज्जत्तएण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण संखेज्जाइं राइंदियाइं ॥ वाउकाइय वणस्सइ काइय, पत्तेय सरीर बादर वणस्सइ काइए पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण संखेज्जाइं वास सहस्साइं

बादर निगोदपने कितना काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट सित्तर क्रोडाक्रोड सागरोपम अहो भगवन् ! बादर त्रसकाया बादर त्रसकायापने रहे तो कितने काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट दो हजार सागरोपम संख्यात वर्ष अधिक इन के अपर्याप्त सब ही जघन्य तथा उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्त बादर पर्याप्त कितने काल रहे? अहो गौतम! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट साधिक प्रत्येक सो सागरोपम बादर पृथ्वीकाया पर्याप्त कितने काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट संख्यात हजार वर्ष एम ही अप्काया का भी कहना, बादर तेजस्काया पर्याप्त की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट संख्यात अहोरात्रि, वायुकाया, वनस्पतिकाया और प्रत्येक शरीर बादर वन

णिगोद पज्जत्तए बादर णिगोद पज्जत्तए पुच्छा? गोयमा! दोण्हवि जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अन्तोमुहुत्तं॥ बादर तसकाइय पज्जत्तएणं भंते! बादर तसकाइय पज्जत्तएति कालओ केव चिरं? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवम सय पुहुत्तं साति रेगं॥ ४॥ सजोगीणं भंते! सजोगिति कालतो केवचिरं होइ? गोयमा! सजोगी दुविहे पण्णत्ते तंजहा अणादिए वा अपज्जवसिए अणादिएवा सपज्जवसिए

स्पतिकाया की पृच्छा? अहो गौतम! जघन्य अंतरमुहूर्त उत्कृष्ट संख्यात हजार वर्ष निगोद के पर्याप्त और बादर निगोद के पर्याप्त की पृच्छा? अहो गौतम! दोनों ही जघन्य उत्कृष्ट अंतरमुहूर्त अहो भगवन्! बादर त्रस काया बादर त्रस के पर्याप्तपने रहे तो कितने काल रहे? अहो गौतम! जघन्य अन्तर मुहूर्त उत्कृष्ट सो सागरोपम पृथक्त्व कुछ अधिक॥ ४॥ पांचवा जोग द्वार-अहो भगवन्! सजोगी का सजोगी पने कितने काल तक रहे? अहो गौतम! सजोगी दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा अनादी अपर्यवसित अभव्य आश्रिय और अनादी सपर्यवसित भव्य आश्रिय अहो भगवन्! मनजोगी मनजोगीपने रहे तो कितने काल रहे? अहो भगवन्! जघन्य एक समय क्यों कि काया योग करके मनोयोग के पुद्गल ग्रहण करे उस परिणमा कर दूसर समय छोडदे और तीसरे समय मर जावे इस अपेक्षा एक समय मनोयोगकी कायस्थिति होती है उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्त निरंतर मनोयोग के पुद्गल ग्रहण विसर्ग करे कि स्वभाव से निश्चय योग का

मणजोगीण भंते ! मणजोगीति कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय उक्कोसेण अंतोमुहुत्त ॥ एवं वयजोगीवि ॥ कायजोगीण भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण वणस्सइ कालो ॥ अजोगीणं भंते ! अजोगीति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए ॥ ५ ॥ सवेदएण भंते ! सवेदएत्ति कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! सवेदए तिविहे पण्णत्ते तंजहा अणादिएवा अपज्जवसिते, अणादिए वा सपज्जवसिए, सादिए वा सपज्जवसिए ॥ तत्थण जेते सादिए सपज्जवसिए

पृच्छा। जैसे जिस प्रकार मनयोग की काया स्थिति कही वैसे वचन योग की भी काया स्थिति जानना अहो भगवन् ! काया जोगी का काया जोगी पने रहे तो कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर मुहुर्त सो आश्रिय मनयोग वचन योग में परिणमकर काया योग में परिणमे फिर अन्तर मुहुर्त रह कर पीछा काया योग में परिणमे, उत्कृष्ट वनस्पति का काल अहो भगवन् ! अजोगी अजोगी पने (सिद्धपने) रह तो कितने काल रहे ? अहो गौतम ! सादी अपर्य वसित ॥ ५ ॥ छठा वेद द्वार अहो भगवन् ! सवेदी सवेदीपने रहे तो कालथ कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! सवेदी तीन प्रकार कहे हैं तद्यथा १ अनादी अनंत, २ अनादी सान्त और ३ सादी सान्त इस में जो सादी सान्त है वे सवेदी जघन्य अन्तर मुहुर्त रहे क्यों कि उपशमश्रेणि प्रतिपन्न सवेदी गुणस्थान में वेद का उपशम कर पुनःपश्चात् हो सवेदी बन अन्तरमुहुर्त रहकर पुनः

स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं अणंतकालं, अणंताओ उस्सप्पिणी ओसप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अवड्ढं पोग्गलपरियट्टं देसूणं ॥ इत्थिवेदेणं भंते ! इत्थिवेदेत्ति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! एगेणं आदेसेणं जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं दसुत्तरं पलिओवमसतं पुव्वकोडीपुहुत्तं मब्भहियं, एगेणं आदेसेणं जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं अट्ठारसपलिओवमाइं पुव्वकोडीपुहुत्तं मब्भहियाइं ॥ एगेणं

श्रेणि चढकर वेद का क्षय करे इस अपेक्षा और उत्कृष्ट अनंत काल अनंत उत्सर्पिनी अवसर्पिनी काल से, और क्षेत्र से अर्ध पुद्गल परावर्तन में कुछ कम सवेदी रह कर पुनः अवेदी होवे अहो भगवन्! स्त्रीवेद पने रहे तो कितने काल रहे ? अहो गौतम ! (एक आदेश कर तो) जघन्य एक समय क्यों कि कोइ स्त्री उपशम श्रेणिप्रतिपन्न हो वेद का क्षय कर पुनः स्त्रीवेद हो स्त्री वेद बन्ध कर एक समय रहे पूर्व आयुष्य पूर्ण कर पुरुष पने उत्पन्न होवे उत्कृष्ट एक सो दश पल्योपम पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक, क्यों कि दूसरे देवलोक में अपरिग्रही देवीपने ५५ पल्योपम की स्थिति भोगव कर मनुष्यनी हो छ भव लगो लग पूर्व क्रोड़ आयुष्य के करे पुनः दूसरे देवलोक में अपरिग्रही देवी में ५५ पल्योपम की स्थितिपने उत्पन्न होवे फिर वेद का बन्ध होवे, इस अपेक्षा (दुसरे आदेशकर) जघन्य एक समय उत्कृष्ट अठारे पल्योपम पूर्वक्रोड़ पृथक्त्व अधिक, क्यों की दुसरे देवलोक में परिग्रही देवी की उत्कृष्ट स्थिति नव पल्योपम

आदेसेणं जहण्णेण एगसमयं, उक्कोसेणं चउदस पलिओवमाइं पुव्वकोडिपुहुत्त मब्भहियाइं ॥ एगेण आदेसेण जहण्णेण एग समयं उक्कोसेण पलिओवमसत- पुव्वकोडिपुहुत्त मब्भहियं ॥ एगेणं आदेसेण जहण्णेण एगसमयं उक्कोसेणं पलिओवम पुहुत्त पुव्वकोडी पुहुत्त मब्भहियं ॥ पुरिसवेएणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण सागरोवम सतपुहुत्तं सातिरेगं ॥ णपुंसगवेदेणं

की भोगव कर १ भव मनुष्यनी के लगालग कर पुनः दूसरे देवलोक में परिग्रही देवी में ९ पल्योपम की स्थिती पने उत्पन्न हो आयुष्य पूर्ण कर वेद का पलटा करे, इस अपेक्षा (तीसरे आदेश कर) जघन्य एक समय की उत्कृष्ट अन्तर पल्योपम पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक, क्यों की प्रथम देवलोक में परिग्रही देवी का सात पल्योपम का आयुष्य भोगव ७ भव कर्मभूमि मनुष्यनी के कर पुन प्रथम देवलोक में उत्कृष्ट सात पल्योपम के आयुष्य वाली परिग्रही देवी होय इस अपेक्षा (चौथे आदेश कर) जघन्य एक समय उत्कृष्ट सो पल्योपम पूर्वकोटी पृथक्त्व अधिक पहिले देवलोक में अपरिग्रही देवी का पचास पल्योपम का आयुष्य भोगव ७ भव मनुष्य के कोटीपूर्व के आयुष्य के कर पुन-पहिले देवलोक में अपरिग्रही देवी पचास पल्योपम के आयुष्य वाली होवे इस अपेक्षा (और पांचवे आदेश कर) जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम पृथक्त्व और पूर्वकोटी पृथक्त्व पद तिर्यचनी के तथा मनुष्यनी के पूर्वकोटी आयुष्य के सात

भंते ! णपुंसगं वेदत्ति पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एगं समयं उक्कोसेणं वणस्सई काले ॥ अवेदएणं भंते ! अवेदत्ति पुच्छा ? गोयमा ! अवेदे दुविहे पण्णत्ते तंजहा साइए अपज्जवसिए वा साइए सपज्जवसिएवा, तत्थणं जे ते सादिए सपज्जवसिए से जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥ ६ ॥ सकसाईणं भंते ! सकसाइएत्ति

मर कर आठवे भव में देवकुरु में तीन पल्योपम का भव कर प्रथम देवलोक में जघन्य स्थिति वाली देवी होवे, तथा दो भव भवनपति असुरकुमार की जाति की देवी के चार पल्योपम के आयुष्य के कर और छ भव मनुष्यनी तिर्यंचनी के करे यों पांच प्रकार से स्त्री की काया स्थिति का कथन किया पुरुष वेदका प्रश्न ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक सो सागरोपम कुछ अधिक, इतने काल तक देवता में रहे कुछ अधिक मनुष्य तिर्यंच के भव आश्रिय जानना नपुंसक वेद का प्रश्न ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट वनस्पति के काल जितना अनंत काल अहो भगवन् ! अवेदी अवेदीपने रहे तो कितना रहे ? अहो गौतम ! अवेदी दो प्रकार के कहे १ सादिक अनंत और २ सादिक सान्त इन में जो सादि सान्त है वे जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्त दशवे गुणस्थान में अवेदी हो इग्यारवे गुणस्थान से पडवाई होय तब आश्रिय जानना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! सकषाइ सकषाइपने रहे तो कितने काल रहे ? अहो गौतम ! सकषाइ तीन प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ अनादि अनन्त, २ अनादि

कालतो केवच्चिर होइ ? गोयमा ! सकसाइ तिविहे पण्णत्ते तजहा अणादिएवा अपज्जवसिए अणादिएवा सपज्जवसिए सादिएवा सपज्जवसिए ॥ तत्थण जेसे सादिएवा सपज्जवसिएवा से जहण्णेणं एग समय, उक्कोसेण अणतंकाल जाव अवड्ढ पुग्गल परियट्ट देसूण ॥ कोहकसाईणं भंते ! पुच्छा ? जहण्णेणवि उक्कोसणवि अंतोमुहुत्त एव जाव माण माया कसाईणं लोभकसाईण भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एकसमय उक्कोसेण अंतोमुहुत्तं ॥ अकसाईण भंते ! अकसाइत्ति कालओ केवच्चिर

सान्त और ३ सादि सान्त इस में जो सादी सान्त है वह जघन्य एक समय उपशम श्रेणिगत पड़वाइ आश्रिय, उत्कृष्ट अनंत काल की यावत् आधा पुद्गल परावर्तन कुछ कम अहो भगवन् ! क्रोध कषायी क्रोध कषायी पने रहे तो कितने काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्त ऐसे ही मान कषाइ माया कषायीकी भी जघन्य उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्त की स्थिति है लोभ कषाइ की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्त क्योंकी जब कोइ जीव उपशम श्रेणी प्रतिपन्न होता है तब पीछा पड़ कर एक समय लोभ कषायका स्पर्श न कर आयुष्य पूर्ण कर देवलोकमें जावे वहां क्रोध मान माया कषाय का उदय होवे इस आश्रिय एक समय जानना क्रोधादिक की एक समय की स्थिति न कही इस का कारन यह है कि तीनों कषाय से पड़ा हुआ जीव पुनः उसही कषाय में आकर उत्पन्न होता है और

होइ ? गोयमा ! अकसाई दुविहे पण्णत्ते तंजहा सादिएवा अपज्जवसिए, सादिएवा सपज्जवसिए ॥ तत्थणं जे से सादिए सपज्जवसिए से जहण्णेणं एकसमयं, उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं ॥ ७ ॥ सलेसेणं भंते ! सलेसेति पुच्छा ? गोयमा ! सलेसे दुविहे पण्णत्ते तंजहा अणादिएवा अपज्जवसिए, अणादिएवा सपज्जवसिए ॥ कण्हलेसेणं भंते ! कण्हलेसेत्ति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्त मब्भहियाइं ॥ णीललेसेणं

सकषाय लोभ से मृत्युपाया जीव तीनों कषायवन्त होते हैं, लोभ कषाय का उदयी होता है अहो भगवन् ! अकषाई अकषाईपन रहे तो काल से कितना काल तक रहे ? अहो गौतम ! अकषाई दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ सादी अनंत और २ सादी सान्त इसमें जो सादी सान्त है वह जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्त, क्यों की उपशम श्रेणिगत इग्यारवे गुणस्थान की अन्तरमुहूर्त की ही स्थिति है ॥ ७ ॥ आठवा लेश्या द्वार अहो भगवन् ! जीव सलेशी का सलेशीपन रहे तो कितना काल तक रहे ? अहो गौतम ! सलेशी दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ अनादि अनन्त अभव्य आश्रिय और अनादि सान्त भव्य आश्रिय अहो भगवन् ! कृष्ण लेशी कृष्ण लेशी पने कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर

भंते ! णीललेसाति पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतो मुहुत्तं उक्कोसेण दससागरो वमाइं पलिओवमा संखेज्जति भाग मब्भहियाइं ॥ काउलेसेण भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण तिण्णि सागरोवमाइं पलिओवमा संखेज्जइ भाग मब्भहियाइं ॥ तेउलेसेण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण दो सागरोवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइ भाग मब्भहियाइं ॥ पम्हलेसेण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्त मब्भहियाइं ॥ सुक्कलेस्सेण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं

मुहूर्त उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम सातवी नरककी अपेक्षा, अन्तर्मुहूर्त अधिक मनुष्य तिर्यंच के भवकी अपेक्षा नीललेश्या की पृच्छा ? अहो गौतम ? जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट दश सागरोपम चौथी नरक की अपेक्षा पल्योपमका असंख्यातवा भाग अधिक पांचवी नरक आश्रिय कापोत लेश्या की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीन सागरोपम दूसरी नरक की अपेक्षा पल्योपम का असंख्यातवा भाग तीसरी नरक के प्रथम पाथड़े आश्रिय तेजोलेश्याकी पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट दो सागरोपम दूसरे देवलोक आश्रिय, पल्योपमका असंख्यातवा भाग अधिक पांचवे देवलोक आश्रिय पद्मलेश्या आश्रिय पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट दश सागरोपम अन्तर्मुहूर्त अधिक मनुष्य तिर्यंच के भव

उक्कोसेण तेवीस सागरोवमाइं अतोमुहुत्त मब्भहियाइं ॥ अलेसण पुच्छा ? गोयमा! सादिए अपज्जवसिए॥ ८ ॥सम्मदिट्ठीएण भते! सम्मदिट्ठीत्ति कालओ केवच्चिर होइ? गोयमा ! सम्मदिट्ठी दुविहे पण्णत्त तंजहा सादिएवा अपज्जवसिए, सादिएवा सपज्ज वसिएवा । तत्थणं जेस सादिए सपज्जवसिए से जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाति सातिरेगाइं ॥ मिच्छादिट्ठीण भते! पुच्छा ? गोयमा ! मिच्छादिट्ठी ति विहे पण्णत्त तंजहा अणादिएवा अपज्जवसिए, अणादिएवा सपज्जवसिए, सादिएवा

आश्रिय, शुक्ल लेश्या की पृच्छा ! अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम अन्तरमुहूर्त अधिक अलेशी (सिद्ध) की पृच्छा ! अहो गौतम ! सादि अनन्त हैं ॥ ८ ॥ नववा दृष्टी द्वार—अहो भगवन् ! सम्यक्दृष्टी का सम्यक् द्रष्टी रहे तो कितने कालतक रहे ! अहो गौतम ! सम्यक् द्रष्टी दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ सादिक अनन्त क्षायिक सम्यक्त्वी आश्रीय और सादी सान्त इस में जो सादी सान्त है वे जघन्य अन्तरमुहूर्त सम्यक्त्व एक स्पर्शक पतवाई होवे उत्कृष्ट छासठ सागरोपम कुछ अधिक विजय विमान के दो भव आश्रिय तथा अच्युत देवलोक के तीन भव आश्रिय और अधिक वह मनुष्य के भव आश्रिय मानना मिथ्यादृष्टी की पृच्छा ! अहो गौतम ! मिथ्यादृष्टी तीन प्रकारके

सपज्जवसिए । तत्थण जे से सादिए सपज्जवसिए से जहण्णेण अंतामुहुत्त उक्कासेणं अणतकाल अणताओ उसप्पिणी उस्सप्पिणीओ कालओ, खेत्तओ अवड्ढ पोग्गलपरियट्ट देसूण ॥ सम्मामिच्छ दिट्ठीण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कासेणवि अंतोमुहुत्त ॥ १ ॥ णाणीण भंत ! णाणीत्ति कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! णाणी दुविहे पण्णत्ते तंजहा सादिएवा अपज्जवसिए, सादिएवा सपज्जवसिए ॥ तत्थण जेसे सादिए सपज्जवसिए से जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसणं छावट्ठि सागरोवमाइ साइरेगाई

कहे हैं तद्यथा—१ अनादी अनंत, अभव्य आश्रिय, २ अनादी सांत, भव्य आश्रिय, और ३ सादी सान्त पडवाइ आश्रिय इस में सादी सान्त मिथ्यात्व की स्थिति जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल अनंत सर्पनी उत्सर्पनी यह काल से और क्षेत्र से कुछ कम आधा पुद्गल परावर्तन सममिथ्यात्व(मिश्र)दृष्टीकी पृच्छा ! अहो गौतम ! जघन्य उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्त की स्थिति है ॥ १ ॥ द्वितीय ज्ञान द्वार—अहो भगवन् ! ज्ञानी ज्ञानीपने रहे सो कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! ज्ञानी दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ सादी अनन्त क्षायिकसम्यक्त्वी व केवल ज्ञानी की अपेक्षा, और २ सादी सान्त पडवाइ आश्रिय इस में सादी सान्त की स्थिति जघन्य अन्तरमुहूर्त की उत्कृष्ट छासठ सागरोपम कुछ अधिक

अभिणिबोहियणाणीण पुच्छा ? गोयमा ! एवचेव ॥ एव सुतणाणीवि, ओहि णाणीवि जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण छावट्ठि सागरोवमाइ साइरेगाइ ॥ मणपज्जवणाणीण भते ! कालतो केवचिर होई ? गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय उक्कोसेण देसूणं पुव्वकोडी ॥ केवलणाणीण भते ! पुच्छा ? गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए॥अण्णाणीण मति अण्णाणी सुत अण्णाणीण पुच्छा?गोयमा! अण्णाणीण मति अण्णाणी सुत अण्णाणी तिविहे पण्णत्ते तजहा अणादिएवा अपज्जवसिएवा, अणादिए वा सपज्जवसिए वा, सादिएवा सपज्जवसिएवा॥तत्थण जेसे सादिएवा सपज्जवसिए स जहण्णेण

सम्यक्त्व दृष्टी के जैसे ही सज्ञानी जैसे ही मति श्रुति ज्ञानी की काया स्थिति जानना अवधिज्ञानी की जघन्य एक समय क्यों कि विभग ज्ञानी सम्यक्त्वी बन अवधिज्ञान प्राप्त कर तुरत मरे इस अपेक्षा उत्कृष्ट छासठ सागरोपम झाझेरा उक्त प्रकार मन पर्यव ज्ञानी की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय प्रमत्त संयति मनःपर्यव ज्ञान प्राप्त कर दूसरे समय आयुष्य पूर्ण कर इस अपेक्षा, उत्कृष्ट कुछ (आठ वर्ष) कम क्रोड पूर्व की केवल ज्ञानी पृच्छा ? अहो गौतम ! सादी अनन्त है अज्ञानी मति अज्ञानी श्रुत अज्ञानी की पृच्छा ? अहो गौतम ! अज्ञानी मति अज्ञानी और श्रुति अज्ञानी तीन प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ अनादी अनत अभव्य आश्रिय, २ अनादी सान्त भव्य

अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण अणतकालं अणताओ उस्सप्पिणी ओसप्पिणीओ कालोतो, खेत्ताओ अवड्ढ पोग्गल परियट्ट देसूण । विभंगणाणीण भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एक्कं समय उक्कोसेण तेतीस सागरोवमाई देसूणाइ पुव्वकोडीए अब्भहियाई ॥ १० ॥ चक्खुदसणीण भंते ! पुच्छा गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण सागरोवमसहस्सं सातिरेग ॥ अचक्खुदसणीणं भंते ! अचक्खुदसणीति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! अचक्खुदसणी दुविहे पण्णत्ते तजहा अणादि

आश्रिय और सादी सान्त पर्याय आश्रिय, इन में जो सादी सान्त है वे जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल अनंत सर्पनी उत्सर्पिनी [काल से क्षेत्र से कुछ कम आधा पुद्गल परावर्तन विभंग ज्ञानी की पृच्छा ! अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट तैतीस सागरोपम कुछ कम पूर्व कोटी अधिक सातवी नरक और मनुष्य तिर्यंच के भव आश्रिय ॥ १० ॥ इग्यारह ॥ दर्शनद्वार अहो भगवन् ! चक्षु दर्शनी चक्षु दर्शनीपने रह तो कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त चौरिंद्रियादि में अन्तरमुहूर्त आयुष्य भोग मृत्यु पावे उत्कृष्ट एक हजार सागरोपम कुछ अधिक इतने काल तक चौरिन्द्रिय पंचेन्द्रिय के ही भव करे. अचक्षु दर्शनी की पृच्छा ? अहो गौतम ! अचक्षु दर्शनी दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा—अनादी अपर्यवसित अभव्य आश्रिय अनादी

एआ अपज्जवसिए, अणादिआ सपज्जवसिएआ ॥ ओहिदसणीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेणं दो छावट्ठी सागरोवमाण सातिरेगाणं ॥ केवल दसणीण पुच्छा ? गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए ॥ ११ ॥ सजतेणं भंते ! संजते त्ति पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण देसूणं पुव्वकोडी॥ असजतेणं भते ! असजएति पुच्छा ? गोयमा ! असजए तिविहे पण्णत्ते तंजहा अणादिएआ

सा त अवधि दर्शन की पृच्छा ! अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट दो छासट सागरोपम कुछ अधिक यह इस प्रकार कोइतिर्यच विभंग ज्ञान युक्त सातवी नरक में जाय तेंतीस सागरोपम का आयु भोगव पुनःतिर्यच हो अविग्रह गति सातमी नरक में जावे यह ६६ सागर नरक आश्रिय हुवे फिर सातवी नरक से निकल मनुष्य हो सम्यक्त्व प्राप्त कर अवधि ज्ञानी बने आयुष्य पूर्ण कर विजयादि विमानमें जावे फिर मनुष्य हो फिर विजयादि विमानमें जावे यों६६सागरोपम होवे,यह दो छासट सागरोपमें और मनुष्य तिर्यच के बीच में भव किये वे अधिक मानना केवल दर्शनी का पृच्छा ! अहो गौतम ! सादी अनन्त है ॥ ११ ॥ बारहवा संयति द्वार अहो भगवन् ! संयति का संयति रह सो कितने कालतक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुछ (आठ वर्ष) कम क्रोड पूर्व असंजति का असंजति रहे सो ? अहो गौतम ! तीन प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ अनादी अनंत अभव्य जैसे, अनादी सान्त

अपज्जवसिए अणादिएवा सपज्जवसिए, सादिएवा सपज्जवसिए ॥ तत्थण जे से सादि ए सपज्जवसिए ते जहण्णेणं अतोमुहुत्त उक्कोसेण अणंतकाल अणताओ उस्सप्पिणी २ओ कालओ खेत्तओ अवड्ढपोग्गलपरियट्ट देसूण ॥ सजतासजतेण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेणं देसूण पुव्वकोडी, णोसजएणोअसजए णो सजयासजएण पुच्छा ? गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए ॥ १२ ॥ सागारोवउत्तेण भते ! पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त ॥ अणागारोवउत्तेणं - वि एव चेव ॥ १३ ॥ आहारएणं भते ! पुच्छा ? गोयमा ! आहारे दुविहे पण्णत्ते

भव्य आश्रिय, और सादी सान्त, इस में जो सादी सान्त है वे जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल अनन्त सर्पनी उत्सर्पिनी काल से और क्षेत्र से कुछ कम आधा पुद्गल परावर्तन संयतासयति की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम क्रोड पूर्व, नो संयति नो असंयति नो सयतासयतिकी पृच्छा? अहो गौतम! सादी अपर्यवसित है॥१२॥उपयोग द्वार-साकार उपयोगी साकार उपयोगी रहे तो जघन्य उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्त, इसी अनगार उपयोग की भी जानना परं चारों ज्ञान आश्रिय जानना केवली का उपयोग एक समय का होता है ॥ १३ ॥ आहारक अनाहारक द्वार—अहो भगवन् !

तजहा छउमत्थ आहारएय, केवलि आहारएय ॥ छउमत्थ आहारएणं भंते ! छउमत्थ आहारएति कालओ केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं खुड्डाग भवग्गहणं दुसमयऊणं, उक्कोसेणं असंखेज्जंकालं असंखेज्जाओ उसप्पिणी उस्सप्पिणीतो कालतो खेत्तओ अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं ॥ केवलि आहारएणं भंते ! केवलि आहारते त्ति कालतो केवचिरं होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं देसूणं पुव्वकोडिं ॥ अणाहारएणं भंते अणाहारएत्ति पुच्छा ? गोयमा ! अणाहारए दुविहे पण्णत्ते

आहारक का आहारक रहे तो कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! आहारक दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ छद्मस्थ आहारक और २ केवली आहारक अहो भगवन् ! छद्मस्थ आहारक छद्मस्थ आहारक पने रहे तो काल से कितने काल रहे ? अहो गौतम ! जघन्य क्षुल्लक (छोटा) भव (२५६ आवलिका) उस में दो समय (विग्रह गति के) कम उत्कृष्ट असंख्यात काल असंख्यात उत्सर्पिनी अवसर्पिनी पर्यंत कालसे और क्षेत्र से अंगुल के असंख्यातवे भाग, उसमें एक अंगुल क्षेत्र के प्रदेश समय २ हरन करने जितना काल लगे उतना जानना अहो भगवन् ! केवली आहारक आहारकपने रहे तो कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम पूर्व क्रोडी अनाहारक की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनाहारक दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ छद्मस्थ अनाहारक और केवली अनाहारक अहो भगवन् ! छद्मस्थ

तंजहा छउमत्थ अणाहारए केवली अणाहारए ॥ छउमत्थ अणाहारएण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एक्क समय उक्कासेण दो समया, केवलि अणाहारएणं भंते ! केवलिअणाहारएति कालतो कवचिर होइ ? गोयमा ! केवलि अणाहारएय दुविहे पण्णत्ते तंजहा सिद्धकेवलि अणाहारएय, भवत्थ केवलि अणाहारएय ॥ सिद्धकेवलि अणाहारएण पुच्छा ? गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए भवत्थकेवलि अणाहारएण

अनाहारक कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट दो समय अहो भगवन् ! केवली अनाहारक कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! केवली अनाहारक के दो भेद कहे हैं तद्यथा १ सिद्ध केवली अनाहारक और भवस्थ केवली अनाहारक सिद्ध केवली अनाहारक की पृच्छा ? अहो गौतम ! सादि अनन्त है, भवस्थ केवली अनाहारक की पृच्छा ? अहो गौतम ! भवस्थ केवली अनाहारक दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ सजोगी भवस्थ केवली अनाहारक और २ अजोगी भवस्थ केवली अनाहारक सजोगी भवस्थ केवली अनाहारक की पृच्छा ? अहो गौतम ! अजघन्य उत्कृष्ट तीन समय

उत्कृष्ट तीन चार समय अनाहारक रहते हैं जिस में का प्रथम अन्तिम समय यहां ग्रहन नहीं किया है, क्यों कि प्रथम आहार छोडने का और अन्तिम आहार ग्रहण करने का समय है इस अपेक्षा शास्त्र में दो समय ही अनाहारक ग्रहण किए हैं.

पुच्छा? गोयमा! भवत्थ केवलि अणाहारए दुविहे पण्णत्ते तंजहा सजोगी भवत्थ केवलि अणाहारए अजोगी भवत्थ केवलि अणाहारए॥ सजोगी भवत्थ केवलि अणाहारएणं पुच्छा? गोयमा! अजहण्णमणुक्कोसेण तिण्णिसमया॥ अजोगी भवत्थ केवलि अणाहारएण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त ॥ १४ ॥ भासएण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एक्कसमय उक्कोसेण अंतोमुहुत्त ॥ अभासएण पुच्छा ? गोयमा ! अभासए दुविहे पण्णत्ते तंजहा सादिए अपज्जवसिए, सादिए सपज्जवसिए ॥ तत्थणं

केवली समुद्घात आश्रिय अजोगी भवस्थ केवली अनाहारक की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्त, क्योंकि चउदव गुणस्थानकी पांच लघु अक्षर जितनी स्थिति है ॥१४॥ भाषककी पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय भाषायोग पुद्गल ग्रहण करके मरेसुपासे इस अपेक्षा और उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्त वचन योग इतने ही काल रहता है अभाषककी पृच्छा ? अहो गौतम ! अभाषक दो प्रकार के कहे

केवली समुद्घातमें प्रथम समय देह दुसरे समय कपाट, तीसरे समय मथन, चौथे समय लोकान्तर पूर्ण, पांचवे लोकान्तर सहारन, छठ समय मथन साहारन, सातवे समय कपाट साहारन और आठवे समय में देह साहारन होता है इस में पहिले और आठवे समयमें उदारिक योग होता है, दुसरे छठ और सातवे समय में ओदारिक मिश्र योग होता है, और तीसरे चौथे पांचवे समय में कार्मान योग होता है तब अनाहारक होता है

ज से सादिए सपज्जवसिए से जहण्णेण अतोमुहुत्तं उक्कोसेण वणप्फति कालो ॥ १५ ॥ परित्तेणं भंते ! पुच्छा? गोयमा! परित्त दुविहे पण्णत्ते तंजहा-काय परित्तेय, संसार परित्तेय ॥ काय परित्तेण भंते! पुच्छा ? गोयमा ! पुढवि कालो असंखेज्जा उसप्पिणि ओस प्पिणीओ संसार परित्तेण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण अणंत कालं जाव अवड्ढ पोग्गल परियट्ट देसूण ॥ अपरित्तेण पुच्छा ? गोयमा ! अपरित्त दुविहे पण्णत्ते तंजहा-काय अपरित्तेय संसार अपरित्तेय ॥ काय अपरित्तेण पुच्छा ?

है तद्यथा—१ सादि अनन्त, (सिद्ध) और सादि सान्त, इस में जो आदि सहित और अन्तसहित है व जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति काल ॥ १५ ॥ सोलहवा परित द्वार अहो भगवन् ! परित का परित कितने काल रहे ? अहो गौतम ! परित दो प्रकार के कहे हैं, तद्यथा—काया परित शरीर आश्रिय और २ संसार परित सम्यक्त्व मात्र आश्रिय कायपरित की पृच्छा ? अहो गौतम ! पृथ्वी काया का काल असंख्यात अवसर्पनी उत्सर्पनी संसार परित की पृच्छा ? जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट अनंत काल यावत् कुछ कम आधा पुद्गल परावर्तन अपरित की पृच्छा ? अहो गौतम ! अपरित दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ काया अपरित अनंत काया के जीव और संसार अपरित सम्यक्त्वी हो भी संसार परित नहीं किया काया अपरित की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट

जहण्णण अतोमुहुत्त उक्कोसेणं अणतमति कालो॥ ससार अपरितेण पुच्छा ? गोयमा! ससार अपरित दुविहे पण्णत्ते तजहा अणादिए अपज्जवसिए अणादिए सपज्जवसिए।णोपरित्ते णोअपरित्तेण पुच्छा? गोयमा! सादिए अपज्जवसिए॥१६॥पज्जत्तएण पुच्छा ? गोयमा! जहण्णण अतोमुहुत्त उक्कोसेण सागरोवम सतपुहुत्त सातिरेग अपज्जत्तएण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अतोमुहुत्त ॥ णोपज्जत्त णोअपज्जत्तएण पुच्छा ? गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए ॥१७॥ सुहुमण भते ! सुहुमति पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णण अतोमुहुत्त उक्कोसण पुढवि कालो ॥ बादरेण पुच्छा ? गोयमा! जहण्णेण

वनस्पति का काल संसार अपरित की पृच्छा ? अहो गौतम ! ससार अपरित दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा-१ अनादि अनत अभव्य अनादि सान्त भव्य, नोपरित नोअपरित नोपरितापरित की पृच्छा ? अहो गौतम ! सादी अपर्यवसित ॥ १६ ॥ सताइसवा पर्याप्त द्वार-अहो भगवन् ! पर्याप्त का पर्याप्त रहे तो कितने काल तक रहे? अहो गौतम! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक सो(१००)कुछ अधिक सागरोपम इतने काल तक अपर्याप्त अवस्था में रहे नहीं अपर्याप्त की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य उत्कृष्ट अन्तरमुहूर्त नो पर्याप्त नो अपर्याप्त की पृच्छा ? सादि अनन्त है ॥ १७ ॥ सूक्ष्म की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट पृथ्वीकाया जितना काल, बादर की पृच्छा ? जघन्य अन्तरमुहूर्त

अंतोमुहुत्त, उक्कोसेण असंखेज्ज कालं जाव खेत्तओ अंगुलस्स असंखेज्जति भागो ॥ णो सुहुमे णो बायरेणं पुच्छा ? सादिए अपज्जवसिए ॥ १८ ॥ सण्णीणं पुच्छा ? गोयमा! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सागरोवम सतपुहुत्तं सातिरेगं ॥ असण्णीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं वणस्सइ कालो ॥ णोसण्णी णोअसण्णीणं पुच्छा ? गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए ॥ १९ ॥ भवसिद्धिएणं पुच्छा? गोयमा ! अणादिए सपज्जवसिए ॥ अभवसिद्धिएणं पुच्छा ? गोयमा ! अणादिए अपज्जवसिए ॥ णोभवसिद्धियणोअभवसिद्धिएणं पुच्छा ? गोयमा ! सादिए

उत्कृष्ट असंख्यात काल, क्षेत्र से अंगुल के असंख्यातवे भाग क्षेत्र में आकाश प्रदेश जितना काल नो सूक्ष्म नो बादर की पृच्छा ? अहो गौतम ! सादि अपर्यवसित है ॥ १८ ॥ संज्ञीकी पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट प्रत्येक सो सागर असंज्ञी की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट वनस्पति का काल, नो संज्ञी नो असंज्ञी की पृच्छा ? अहो गौतम ! सादि अपर्यवसित है ॥ १९ ॥ चौपवा भव्य द्वार-भव्य सिद्धिक की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनादि सान्त है क्यों कि मुक्ति जावेगा अभव्य की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनादि अनन्त है नो भव्य सिद्धिक नो अभव्य सिद्धिक की

अपज्जवसिए ॥ २० ॥ धम्मत्थिकाएण पुच्छा ? गोयमा ! सव्वद्धं, एव जाव अद्धासमए ॥ २१ ॥ चरिमेण पुच्छा ? गोयमा ! अणादिए सपज्जवसिए ॥ अचरिमेण भंते ! कालओ केवच्चिर होइ ? गोयमा ! अचरिमे दुविहे पण्णत्ते तंजहा अणादिएवा अपज्जवसिए सादिएवा अपज्जवसिए ॥ ॥ २२ ॥ इति पन्नवणा भगवइए कायठ्ठिती अट्ठारसँम पद सम्मत्त ॥ १८ ॥ * *

पृच्छा? अहो गौतम! सादि अनन्त है॥२०॥अस्तिकाय द्वार-धर्मास्तिकाया धर्मास्तिकायापने रह सो कितने काल रहे ? अहो गौतम ! गत काल में भी, वर्तमान में और अनागत में अनंत काल रहेगी एस ही अधर्मास्तिकाया, आकाशास्तिकाया और अद्धासमय का कहना ॥ २१ ॥ बावीसवा चरिम द्वार—अहो भगवन् ! चरिम का चरिम रह सो कितने काल रहे ? अहो गौतम ! चरिम अनादि सान्त है मोक्ष जावेंगे अचरिम की पृच्छा ? अहो गौतम ! अचरिम दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ अनादि अनंत अभव्य और सादि सहित और अंत रहित सो सिद्ध भगवंत इति पन्नवणा भगवती का कायस्थिति नामक अठारह — — — . . . .

॥ एकोनविंशतितमम् दृष्टि पदम् ॥

जीवाण भंते ! किं सम्मदिट्ठी, मिच्छादिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी ? गोयमा ! जीवा सम्मादिट्ठीवि, मिच्छादिट्ठीवि सम्मामिच्छादिट्ठीवि ॥ एवं णेरइयावि असुरकुमारावि एवं चेव जाव थणियकुमारा । पुढवि काइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! पुढविकाइया णो सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, णो सम्मामिच्छादिट्ठी एवं जाव वणप्फइ काइया ॥ बेंदिया सम्मदिट्ठीवि मिच्छादिट्ठीवि नो सम्मामिच्छदिट्ठी ॥ एवं जाव चउरिंदिया ॥ पचिंदिय तिरिक्खजोणिया, मणुस्सा वाणमंतर, जोइसिय वेमाणिया सम्मदिट्ठीवि मिच्छादिट्ठीवि सम्मामिच्छादिट्ठीवि ॥

दृष्टिद्वार कहते हैं—अहो भगवन् ! जीव सम्यक् दृष्टि है कि मिथ्या दृष्टि है कि सममिथ्या दृष्टि है ? अहो गौतम ! समुच्चय जीव समदृष्टि भी है मिथ्यात्व दृष्टि भी है और सममिथ्या दृष्टि भी है अब चौवीस दण्डक का कहते हैं सब प्रश्नोत्तर जानना नरक में और दशों भवनपति में तीनों ही दृष्टि है पृथ्व्यादि पांचो स्थावर समदृष्टि नहीं है, तैसे ही मिश्र दृष्टि भी नहीं है फक्त एक मिथ्यात्व दृष्टि है तीनों विकलेन्द्रियमें समदृष्टि भी है अपर्याप्त अवस्था आश्रिय मिथ्यात्व दृष्टि भी है परन्तु सममिथ्या दृष्टि नहीं है तिर्यंच पंचेन्द्रिय मनुष्य वाणव्यन्तर ज्योतिषी और वैमानीक दश १२ देवलोक तक समदृष्टी भी है मिथ्यात्व दृष्टि भी है और सममिथ्या दृष्टि भी है नवग्रीवेग में समदृष्टि

गेविज्जविमाणिया पुच्छा? गोयमा! सम्माद्दिट्ठीवि, मिच्छादिट्ठीवि नोसम्मामिच्छदिट्ठी ॥ अणुत्तरोववाईयाण पुच्छा ? गोयमा ! सम्मदिट्ठी, नो मिच्छादिट्ठी णो सम्मामिच्छदिट्ठी ॥ सिद्धाण पुच्छा ? गोयमा ! सम्मदिट्ठी णो मिच्छदिट्ठी, णो सम्मामिच्छदिट्ठी ॥ ॥ इती पण्णवणा भगवईए एगुणवीसमं पद सम्मत्त ॥ १९ ॥

और मिथ्यात्व दृष्टी या दृष्टी पाती है पांचों अनुत्तर विमान के देवता एक सम दृष्टी ही हैं मिथ्यात्व दृष्टी मिश्र दृष्टी नहीं हैं और सिद्ध भगवन्त ! एक सम्यक् दृष्टी हैं, मिथ्यात्व दृष्टी मिश्र दृष्टी नहीं है इति पन्नवणा भगवती का उन्नीसवा पद समाप्तम् ॥ १० ॥

* विंशतितम क्रिया पदम् *

णेरइय अतकिरिया अणतर एगसमय ठव्वट्टा ॥ तित्थगर चक्की बलदेव, वासुदेव मडलिय रयणाय ॥ १ ॥ जीवेण भंते ! अतकिरिया करेजा ? गोयमा ! अत्थेगइए करेजा अत्थेगइए णो करेजा ॥ एव णेरइए जाव वेमाणिए ॥ णेरइएण भंते ! णेरइएसु अतकिरिय करेजा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ णेरइएण भंते ! असुरकुमारेसु अतकिरियं करेजा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ एव जाव वेमाणिएसु णेवर मणूसेसु अत किरिय करेजति पुच्छा ? गोयमा ! अत्थेगइए करेजा अत्थेगइए णो करेजा ॥ एव असुर कुमारे जाव वेमाणिए ॥ एव मेते चेउवीसं दंडका भवति ॥ १ ॥ णेरइयाण भंते ! किं

अब बीसवा अन्तक्रिया नामक पद कहते हैं द्वार के नाम—१ चौवीस दंडक की अंत क्रिया का २ अनन्तर परम्परा अंतक्रिया का, ३ एक समयमें कितने अंतक्रिया करे, ४ तिर्थंकर होने का, ५ चक्रवर्ती होने का, ६ बलदेव होने का, ७ वासुदेव होने का, ८ मंडलिक राजा का, ९ और चक्रवर्ती के १४ रत्न का ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जीव अन्तक्रिया करते हैं क्या ? हां गौतम ! कितनेक जीव अंतक्रिया करते हैं कितनेक जीव नहीं भी करते हैं ऐसे ही नरक से लगाकर यावत् चौवीस दंडक तक का

अणतरागया अतकिरिय करेति, परंपरगया अतकिरिय करेति ? गोयमा ! अणतरगयावि अतकिरिया करेंति परपरगयावि अतकिरिय करेंति॥एव रयणप्पमापुढविणेरइयावि जाव पकप्पभापुढवि नेरइया ॥ धूमप्पमा पुढवि णेरइयाण पुच्छा ? गोयमा ! णो अणंत रागया अतकिरिया करेंति, परपरगया अतकिरिय करेंति ॥ एव जाव अहे सत्तमा पुढवि णेरइया॥ असुरकुमारा जाव थणिय कुमारा, पढवि आऊ वणस्सति अणतरग

कहना अहो भगवन् ! नरीया नरक में अंतक्रिया करता है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं अथात् नरक में नेरीया अन्तक्रिया नहीं करता है अहो भगवन् ! नेरीया असुरकुमार में अन्तक्रिया करता है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं, यों यावत् वैमानिक पर्यंत कहना, जिस में इतना विशेष नरीये मनुष्य में उत्पन्न होकर कितनेक अंतक्रिया करते हैं ऐसे ही असुरकुमार का भी चौवीस दंडक पर कहना और ऐसेही यावत् वैमानिक का भी कहना अहो भगवन् ! नरीये अन्तर रहित मनुष्यके भव का प्राप्त हो अन्तक्रिया कर कि परम्परा से मनुष्य के भव का प्राप्त हो अन्तक्रिया करते हैं ! अहो गौतम ! अन्तर (अन्तर रहित नरक में निकल मनुष्य भव में आकर भी) अन्तक्रिया करते हैं और परम्परा (बीच में दूसरे भवकर फिर मनुष्य हो कर भी) अन्तक्रिया करते हैं इस प्रकार रत्न प्रभा नारकी के नरीये भी अन्तर और परम्परा मनुष्य में उत्पन्न हो अन्तक्रिया करते हैं ऐसे ही यावत् चौथी पंकप्रभा पृथ्वी पर्यन्त कहना धूम्रप्रभा पृथ्वी की पृच्छा ? अहो गौतम !

तात्रि अंतकिरिय करेंति परपरगयात्रि अंतकिरिय करेंति ॥ तेऊ वाऊ बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय णो अणतरागया अतकिरिया पकरेंति परपरागया अतकिरिय पकरेंति ॥ सेसा अणंतरागयावि अतकिरिय करेंति, परपरागयात्रि अतकिरिय पकरेंति ॥ २ ॥ अणतरागयाण भते ! णरइया एगसमएण केवतिया अतकिरिय पकरेंति ? गोयमा ! जहण्णेण एगोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण दस ॥ रयणप्पभा पुढवि

धूम्रप्रभा के नेरिये अनन्तर मनुष्य में उत्पन्न होकर अन्तक्रिया नहीं करते हैं परन्तु परम्परा से उत्पन्न हुवे कितनेक अंतक्रिया करते हैं इस ही प्रकार नीचे सातवी पृथ्वी पर्यंत कहना असुर कुमार यावत् स्तनित कुमार, पृथ्वी, पानी, वनस्पति काया, अनन्तर मनुष्य में उत्पन्न होकर भी अन्तक्रिया करते हैं और परम्परा उत्पन्न होकर भी अन्तक्रिया करते हैं तेउ, वायु बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय यह अनन्तर मनुष्य में उत्पन्न हुए अन्तक्रिया नहीं करते हैं परन्तु परम्परागत अन्तक्रिया करते हैं इन सिवाय और सब दंडक के जीव अनन्तरगत और परम्परागत मनुष्य में उत्पन्न हो अन्तक्रिया कर सकते हैं ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! नारकी से अनंतर उत्पन्न हुए मनुष्य में एक समय में कितने जीव अन्तक्रिया करते हैं (मोक्ष जाते हैं) अहो गौतम ! जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट दश जीव अन्तक्रिया करते हैं ऐसे ही दश जीव एक समय में धूम्रप्रभा के निकले मोक्ष जाते हैं यावत तीसरी वालुक प्रभा तक इस ही प्रकार कहना पंक

णेरइयावि एवं चेव जाव वालुयप्पमापुढविणेरइया ॥ अणतरागयाण भंते ! पकप्प मापुढविणेरइया एगसमएण केवतिया अतकिरियकरेंति ? गोयमा ! जहण्णेण एक्कोवा दोवा तिन्निवा उक्कासेणं चत्तारि॥ अणतरागयाण भंते ! असुरकुमारा एगसमएण कवइया अतकिरिय पकरेंति? गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दोवा तिण्णि वा उक्कोसेण दस॥ अणतरागयाओण भंते ! असुरकुमारीओ एकसमएण केवतियाओ अतकिरिय पकरति ? गोयमा ! जहण्णेण एक्कोवा दोवा तिन्निवा उक्कोसेणं पच ॥ एव जहा असुरकुमारा सदेविया तहा जाव थणियकुमारावि ॥ अणतरागयाणं भंते ! पुढविकाइयाणं एगसमएण केवइय अतकिरिय पकरेंति? गोयमा ! जहण्णेण एगोवा

प्रभा की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट चार अन्तक्रिया करते हैं असुरकुमार की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट दश असुरकुमारिका देवी जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट पांच अन्तक्रिया करे, वैसे ही यावत् स्थनित कुमार पर्यंत कहना अहो भगवन् ! अनन्तरगत पृथ्वी काया एक समय में कितने अन्तक्रिया करे ? अहो गौतम ! जघन्य एक दो तीन, उत्कृष्ट चार, एसे ही अपकाय के भी चार, वनस्पति काय के निकले छ सिद्ध होवे, पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच के निकले दश

देवा तिण्णिवा उक्कोसेणं चत्तारि ॥ एवं आउकाइयावि चत्तारि, वणप्फतिकाइया पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियादस, तिरिक्ख जोणिणीओदस, मणुस्साएस, मणुस्सीओ वीसं,वाणमतरा दस,वाणमतरीओ पंच, जोइसियादस, जोतिसिणीओ वीस, वेमाणिया अठसय, वेमाणिणीओ वीस ॥ २ ॥ णेरइयाणं भंते ! णेरइएहिंतो

सिद्ध होवे, वनस्पती के निकले भी दश सिद्ध होवे, मनुष्य मर पीछा मनुष्य हो अन्तक्रिया करेतो एक समयमें दश जीव अंतक्रिया करे,वाणव्यन्तरके निकले दश जीव अन्तक्रिया कर,वाणव्यन्तर दवीके निकले पांच जीव अन्तक्रिया कर, ज्योतिषी के निकले दश जीव, ज्योतिषी की देवी के निकले वीस सिद्ध होवे, वैमानिकदेव के निकले एक सो आठ सिद्ध होवे, और वैमानिक की देवी के निकले वीस जीव सिद्ध होवे ॥ ३ ॥ (सिद्ध स्वरूपका भली प्रकार खुलासा करने के लिये अर्थकार विस्तारसे वर्णन करते हैं—जिनोंने अपना अर्थ सिद्ध किया, अथवा जिनोने सर्व कार्यों का समाकिया उन्हे सिद्ध कहते है, उन का स्वरूप मुख्य आठ द्वार द्वारा कहते है १ प्रथम द्वार सत्पद की प्ररूपना का सिद्ध हैं परंतु आकाश कुसूमवत सिद्धकी नास्ति नही है २ द्रव्य प्रमानद्वार-एक समय में कितने सिद्ध होवे, ३ क्षेत्र द्वार-किस २ क्षेत्र के सिद्ध होवे ४ स्पर्श द्वार-सिद्धने कितना क्षेत्र स्पर्शा है, ५ निरंतर द्वार-कितने निरंतर सिद्ध होवे, ६ अन्तर द्वार-सिद्ध होने का कितना अन्तर पडे, ७ भव द्वार—१ उदय २ उपशम, ३ क्षायिक ४ क्षयोपशम ५ पारिणामिक

और ६ मपीनाइक इन छ मावों में से किस मावमें सिद्ध होवे और ८ अस्पा बहुत्वद्वार इन ८ द्वार में से सिद्ध क दो भेद करे हैं तद्यथा—१ अनन्तर सिद्ध सो जिन सिद्ध को उत्पन्न हुए एक समय हुवा है अथवा एक ही वक्त में दश बीसादि सिद्ध हो कर फिर अन्तर पडा, और परम्परा सिद्ध सो जिन सिद्ध को उत्पन्न हुवे दो समय से अधिक काल हुआ है इस में से परम्परा सिद्ध के १५ द्वार कहते हैं—१ क्षेत्र द्वार-ऊंची नीची तिरछी दिशा में सिद्ध होवे सो, २ काल द्वार—सुषमादि छे आरे में से जिस आरे में सिद्ध होवे सो, ३ गति द्वार—नरकादि गति के निकल सिद्ध होवे सो, ४ वेद द्वार—स्त्री आदि वेद से सिद्ध होवे, ५ तीर्थ द्वार, ६ लिंग द्वार, ७ चारित्र द्वार, ८ प्रत्येक बुद्ध द्वार, ९ ज्ञान द्वार, १० अवगाहना द्वार, ११ उत्कृष्ट द्वार, १२ विरह द्वार, १३ अंतर द्वार, १४ अनुसमय द्वार, १५ सिद्ध सख्या द्वार और १६ अल्पाबहुत्व द्वार पहिले कहे आठ द्वार पर यह १६ द्वार उतरेंगे प्रथम क्षेत्र पद की प्ररूपना के मूल द्वार पर समादि १६ द्वार कहते हैं—१ क्षेत्र द्वार—अढाइ द्वीप क पन्नरे कर्म भूमी क क्षेत्र में, ऊंची दिशा में पंडकादि वन में, नीची दिशा में भवनपतिके भवनमें, लवण कालोदधी दो समुद्रों में, इन क्षेत्र में से सिद्ध होते हैं २ काल द्वार—अवसर्पिणी के उतरते तीसरे आरे में, संपूर्ण चौथे आरे में और बैठते पांचवे आरे में सिद्ध होते हैं और उत्सर्पिणी काल में उतरते दूसरे आरे में जन्म हु [illegible] तीसरे आरे में सिद्ध होवे, सम्पूर्ण तीसरे आरे में, और बैठते चौथे आरे में (तीसरे आरे में तीन [illegible] [illegible] महिन गये तीर्थंकर जन्मते हैं, उस ही आरे में मोक्ष जाते हैं इस ही आरे में २२ तीर्थं [illegible] [illegible] मोक्ष जाते हैं और

पांचवे आरे में तो एक चरम तीर्थंकर मोक्ष जाते हैं) ३ गति द्वार—सिद्ध तो फक्त एक मनुष्यगति में से होते हैं परंतु प्रथम से चौथा नरक तक के पृथ्वी पानी वनस्पति विविध पंचेन्द्रिय मनुष्य और चारों जाति के देवता के जीवों मनुष्य होकर सिद्ध होवे परंतु अन्य स्थानक नहीं ४ वेद द्वार—वर्तमान कालकी अपेक्षा० अपगतवेदी वेदका क्षय करने वाला सिद्ध होवे और अनुभव आश्रय तीनों वेद वाले सिद्ध होवे ५ तीर्थ द्वार तीर्थंकर होते तीर्थ प्रवर्तते और तीर्थंकर मोक्ष गये तीर्थव्यवच्छेद हुवे दोनों वक्त सिद्ध होते हैं। ६ लिंग द्वार—द्रव्य से तो स्वलिंगी अन्यलिंगी गृहलिंगी तीनों लिंग में सिद्ध होते हैं और भाव से तो एक स्वलिंग (जिन लिंग) में ही सिद्ध होते हैं ७ चारित्र द्वार—वर्तमान में तो एक क्षायिक यथाख्यात चारित्रसे सिद्ध होवे अनुभव आश्रिय कोइ सामायिक सूक्ष्म सम्पराय यथाख्यात इन तीन चारित्र का स्पर्श कीया, कोइ सामायिक छेदोपस्थापनीय सूक्ष्मसम्पराय, इन चार चारित्र को स्पर्श कर सिद्ध होवे तथा कोइ सामायिक परिहारविशुद्ध सूक्ष्मसम्पराय यथाख्यात इन चार चारित्र को स्पर्श कर सिद्ध होवे और कोइ सामायिक छेदोपस्थापनीय परिहारविशुद्ध सूक्ष्म सम्पराय यथाख्यात पांचों चारित्र को स्पर्शकर सिद्ध होवे ८ बुद्ध द्वार—स्वयं बुद्ध प्रत्येक बुद्ध और बुद्ध बोधित तीनों सिद्ध होवे ९ ज्ञान द्वार—वर्तमान में एक केवल ज्ञान में सिद्ध होते हैं और पूर्वानुभव आश्रिय कोइ मति श्रुति और केवल इन तीन ज्ञान को स्पर्शकर सीझे, कोइ मति श्रुति अवधि केवल ज्ञान कर सिद्ध होवे, कोइ मति श्रुति मनः पर्यव केवल ज्ञान स्पर्श कर सिद्ध होवे और कोइ मति श्रुति अवधि मनःपर्यव केवल इन पांचों ही ज्ञान स्पर्श कर सिद्ध

होवे १० अवगाहना द्वार—जघन्य दो हाथ अवगाहना वाले सिद्ध होवे उत्कृष्ट ५०० धनुष्य की अवगाहना वाले सिद्ध होवे ११ उत्कृष्ट द्वार—कितनेक सम्यक्त्व के पश्चात् अनंत काल (कुछ कम आधा पुद्गल परावर्तन) संसार परिभ्रमण कर सिद्ध होवे कितनेक पश्चात् हो असंख्यात काल बाद सिद्ध होवे, कितनेक पश्चात् ही संख्यात काल बाद सिद्ध होवे १२ विरह द्वार—सिद्ध होने का विरह जघन्य एक समय का पड़े उत्कृष्ट छ महीने का पड़े, १३ अंतर द्वार १४ अनुसमय द्वार—जघन्य दो समय तक निरंतर सिद्ध होवे उत्कृष्ट आठ समय तक निरंतर सिद्ध होवे, १५ संख्या द्वार—एक समय में जघन्य एक ही सिद्ध होवे उत्कृष्ट १०८ सिद्ध होवे १६ अल्पाबहुत्व द्वार—एक समय में एक दो सिद्ध हुए वे थोड़े उन से दो तीन आदि सिद्ध हुवे वे असंख्यातगुने इत्यादि (अल्पाबहुत्व विस्तार से आगे कहेंगे) इति सत्पद प्ररूपना का प्रथम द्वार अब दूसरा प्रमाण द्वार कहते हैं—जिस पर उक्त १५ द्वार उतारते हैं—१ क्षेत्र द्वार—ऊर्ध्व लोक पंडक आदिक पर चार सिद्ध होवे, तिरछे लोक में नदी आदि में तीन सिद्ध होवे, समुद्र में दो सिद्ध होवे, एकेक विजय में बीस २ सिद्ध होवे तो भी १०८ से अधिक सिद्ध नहीं होवे प्रत्येक ५ कर्मभूमि के क्षेत्र में १०८ सिद्ध होवे, पडगवन में दो सिद्ध होवे, तीस अकर्म भूमि के क्षेत्र में अलग १ दश २ सिद्ध होवे (यह संहरन आश्रिय मानना) २ काल द्वार—हायमान (पडत) काल में और वर्धमान (चढत) काल में तीसरे चौथे आरे में अलग २ एक समय में १०८ सिद्ध होवे, हायमान काल के पांचवे आरे में २० सिद्ध होवे, शेष सात आरे में दश २ सिद्ध होवे (संहरन

माश्रिय) अर्थात् उत्सर्पिणी काल के पहिले आरे में १० दूसरे आरे में १० छठे आरे में १०, वर्तमान काल के पहिले आरे में १०, दूसरे में १०, पांचवे में १०, और छठेमें १० ३ गति द्वार-रत्नप्रभा शर्करप्रभा वालुकप्रभा के निकले १० सिद्ध होवे, पंकप्रभा के निकले ४ सिद्ध होवे, समुच्चय तिर्यंच गति के निकले १० सिद्ध होवे संज्ञी पचेन्द्रिय के निकले १० सिद्ध होवे, तिर्यंचनी के भी १० सिद्ध होवे, पृथ्वी पानी के निकले चार ४ सिद्ध होवे, वनस्पति के निकले ६ सिद्ध होवे, मनुष्य के मनुष्य से २० सिद्ध होवें, पुरुष के आये १० सिद्ध होवे, स्त्री के आये २० सिद्ध होवे, समुच्चय देवगति के आये १०८ सिद्ध होवे भवनपति के आये १० सिद्ध होवे, भुवनपति के देवी के ५ सिद्ध होवे, व्यन्तर के आये १० सिद्ध होवे, व्यन्तरनी के ५ सिद्ध होवे, ज्योतिषी के १० सिद्ध होवे, ज्योतिषीनी के २०, वैमानिक के १०८, वैमानिक की देवी के २० ॥ ४ वेदद्वार—एक समय में स्त्री के २० सिद्ध होवे, पुरुष १०८ सिद्ध होवे, नपुंसक १० सिद्ध होवे ५ तीर्थ द्वार-तीर्थंकर एक समयमें ४ सिद्ध होवे, स्त्री तीर्थंकर एक समय में २ सिद्ध होवे, स्वयंबुद्धो ४ सिद्ध, बुद्ध बोधित १०८ सिद्ध होवे, अतीर्थंकर १०८ सिद्ध होवे ६ लिंगद्वार—गृहलिंगी ४ सिद्ध होवे, अन्यलिंगी १० सिद्ध होवे, स्वलिंगी १०८ सिद्ध होवे, ७ चारित्रद्वार—सामायिक सूक्ष्म सम्पराय यथाख्यात इन तीन चारित्र को स्पर्शनेवाले १० सिद्ध होवे, सामायिक, परिहार विशुद्ध सूक्ष्म सम्पराय व यथाख्यात इन चार चारित्र के स्पर्शक १० सिद्ध होवे, सामायिक छेदोपस्थापनीय परिहार विशुद्ध सूक्ष्म सम्पराय और यथाख्यात इन पांचों चारित्र को स्पर्शने वाले भी १० सिद्ध होवे ८ बुद्ध द्वार—बुद्ध बोधित

स्त्री २० सिद्ध होवे, पुरुष १०८ सिद्ध होवे नपुंसक १० सिद्ध होवे, साध्वी के प्रति पाये पुरुष २० सिद्ध होवे, स्त्री भी २० सिद्ध होवे नपुंसक १० सिद्ध होवे, ९ ज्ञानद्वार-पूर्व स्पर्शन की अपेक्षा मति ज्ञान श्रुति ज्ञान केवल ज्ञान के स्पर्शक ४ सिद्ध होवे, मति श्रुति मनःपर्यव ज्ञान से केवल ज्ञान के स्पर्शक १० सिद्ध होवे मति श्रुति अवधि केवल ज्ञान के स्पर्शक १०८ सिद्ध होवे, और मति श्रुति अवधि मन पर्यव केवल ज्ञान के स्पर्शक भी १०८ सिद्ध होवे १० अवगाहना द्वार—उत्कृष्ट अवगाहना के २ सिद्ध होवे, मध्यम अवगाहना के १०८ सिद्ध होवे, जघन्य अवगाहना के ४ सिद्ध होवे ११ उत्कृष्ट द्वार—सम्यक्त्व से पड़ताई हो अनंत काल संसार परिभ्रमन करने वाले एक समय में १०८ सिद्ध होवे, असंख्यात काल परिभ्रमन करने वाले १० सिद्ध होवे और सम्यक्त्व के पड़ताई नहीं हुवे ऐसे एक समय में ४ सिद्ध होवे १२ अन्तर द्वार—एक समय अनेक सिद्ध भी होवे यावत् छ महीने के अन्तर से भी एक तथा अनेक सिद्ध होवे १३ अनु समय द्वार—एक दो तीन चार पांच छ सात और आठ समय तक लगालग सिद्ध होते हैं—जिस में प्रथम समय जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट ३२ सिद्ध होवे वे आठ समय तक निरंतर सिद्ध होवे नववे समय नियमा से अन्तर पड़े, फिर ३३ से ४८ पर्यन्त सिद्ध होवे तो सात समय तक सिद्ध होवे परंतु आठमें समय में नियमा से अन्तर पड़े, फिर ४९ से ६० पर्यन्त छ समय पर्यन्त सिद्ध होवे सातवे समय अन्तर पड़े, फिर ६१ से ७२ पर्यन्त पांच समय लग सिद्ध होवे छट्ठे समय अन्तर पड़े, ७३ से ८४ पर्यन्त चार समय लग सिद्ध होवे पांच मे समय अन्तर पड़े, ८५ से ९६ पर्यन्त

तीन समय तक सिद्ध होवे चौथे समय अन्तर पड़े, ९७ से १०२ पर्यन्त दो समय तक सिद्ध होवे फिर तीसरे समय अन्तर पड़े और १०३ से १०८ तक एक समय में सिद्ध होवे फिर दूसरे समय में अन्तर पड़े यहां गह अनुसमय और अन्तर द्वार सामिल ही कहे हैं सख्या द्वार—पूर्वोक्त प्रकार, अल्पाबहुत्व आगे कहेंगे इति दूसरा प्रमाण द्वार समाप्त हुवा ॥ २ ॥ तीसरे क्षेत्र द्वार पर क्षेत्रादि १६ द्वार उतारते हैं—१ क्षेत्र द्वार—१५ कर्मभूमी के ३० अकर्म भूमी ५६ अन्तरद्वीप इन अढाइ द्वीप के १०१ क्षेत्र से तथा दो समुद्र में से मुक्त जाते हैं अन्य स्थान से नहीं जाते हैं इस पर एक ही द्वार लागू होता है, बाकी द्वार लागू नहीं होते हैं इति तीसरा द्वार समाप्त हुवा ॥ ३ ॥ चौथा स्पर्शन द्वार पर १६ द्वार—जो अनन्त सिद्ध आगे हुवे हैं वे सब जीव के प्रदेश कर स्पर्शे हैं वे असख्यातगुने एक सिद्ध की अवगाहना में अनन्त सिद्ध स्पर्श कर रहे हैं और द्वार इस में नहीं लगते हैं ॥ ४ ॥ पांचवा काल द्वार कहते हैं—उन पर क्षेत्रादि १६ द्वार उतारते हैं—क्षेत्र द्वार—१५ कर्मभूमी के क्षेत्र में उत्कृष्ट १०८ सिद्ध होवे तहां आठ समय तक निरंतर सिद्ध होवे, हरिवासादि क्षेत्र में अधोलोक में चार समय तक निरंतर सिद्ध होवे, पाण्डकादि, ऊर्ध्व लोक में चार समय तक निरंतर सिद्ध होवे, सुषमसुसम और सुसम आरे में चार समय तक निरंतर सिद्ध होवे सुसमदुसम और दुसम में दुसम सुसम में आठ समय तक निरंतर सिद्ध होवे, दुसमादुसम आरे में चार समय तक सिद्ध होवे उत्सर्पिणी के वर्धमान काल में दुसमादुसम में और दुसम में चार समय तक निरंतर सिद्ध होवे, एस ही दुसम में भी जानना, दुसमादुसम

और सुसम दुसम में आठ समय तक निरंतर सिद्ध होवे, सुसम और सुसमासुसम में चार समय पर्यंत निरंतर सिद्ध होवे हैं २ गति द्वार—देव गति के आये आठ समय तक निरंतर सिद्ध होय, अन्य तीनों गति के आये अलग २ चार २ समय पर्यंत निरंतर सिद्ध होवे ३ वेद द्वार—पश्चात् कृत वेदी पुरुष ८ समय तक निरंतर सिद्ध होवे स्त्री वेदी नपुंसक वेदी अलग २ चार २ समय तक निरंतर सिद्ध होवे, पुरुष मर के पुरुष होय वह ८ समय तक निरंतर सिद्ध होवे, बाकी स्त्री आदि के ८ भाग [१ स्त्री मर स्त्री, २ स्त्री मर पुरुष, ३ स्त्री मर नपुंसक ४ पुरुष मर स्त्री, ५ पुरुष मर नपुंसक, ६ नपुंसक मर पुरुष, ७ नपुंसक मर स्त्री और ८ नपुंसक मर नपुंसक] चार २ समय तक निरंतर सिद्ध होवे ४ तीर्थ द्वार—तीर्थंकर के तीर्थ में ८ समय तक निरंतर सिद्ध होय, तीर्थंकर दो समय तक निरंतर सिद्ध होय, ६ लिंग द्वार—स्वलिंगी ८ समय तक सिद्ध होवे, अन्य लिंगी चार समय तक सिद्ध होवे, गृह लिंगी दो समयतक निरंतर सिद्ध होवे ७ चारित्र द्वार—जिस मार्ग में परिहार विशुद्ध चारित्र आवे वे चार समय तक सिद्ध होय और जिस मार्ग में परिहार विशुद्ध चारित्र न आवे वे आठ समय तक सिद्ध होवे ८ बुद्ध द्वार आचार्यादि के प्रतिबोध आठ समय तक सिद्ध होय साध्वी के प्रतिबोध स्त्री पुरुष नपुंसक चार २ समय तक सिद्ध होय स्वयंबुद्ध दो समय तक सिद्ध होय, ८ ज्ञान द्वार—मति श्रुति से केवली हो दो समयतक निरंतर सिद्ध होय, मति श्रुति मनःपर्यव से केवली हो चार समय तक सिद्ध होय, मति श्रुति अवधि से केवली हो आठ समय तक सिद्ध होय, और मति श्रुति अवधि मन पर्यव से केवली हुवे भी आठ समय तक

निरंतर सिद्ध होवे, १० अवगाहना द्वार-उत्कृष्ट अवगाहना के दो समय तक सिद्ध होवे, मध्यम अवगाहना के आठ समय तक सिद्ध होवे, जघन्य अवगाहना के दो समय तक सिद्ध होवे, ११ उत्कृष्ट द्वार सम्यक्त्व के अपड़वाइ दो समयतक सिद्ध होवे, संख्यात काल के पड़े चार समय तक सिद्ध होवे, असंख्यात काल के पड़े भी चार समय तक सिद्ध होवे, अनंत काल पड़े आठ समय तक सिद्ध होवे, आगे के अन्तरादि चार द्वारों का यहां समव नहीं है इति पांचवा द्वार ॥ छठ सिद्धी गमन अन्तर द्वार पर १५ द्वार—१ क्षेत्र द्वार—समुचय अढाइ द्वीप आश्रिय विरह काल जघन्य एक समय उत्कृष्ट ६ महिने, समुचय जंबुद्वीप धातकी खण्ड में जंबुद्वीप की महाविदेह में सिद्ध गति गमन का उत्कृष्ट विरह पृथक्त्व वर्ष का, पुष्करार्ध द्वीप में और पुष्करार्ध के महाविदेह क्षेत्र में एक वर्ष झाझेरा का विरह, ५ भरत क्षेत्र में जन्म आश्रिय १८ कोटा कोटी सागर में कुछकम का [उत्सर्पनी का चौथा आरा दो कोटा कोट सागर कुछकम, पांचवा तीन कोटा कोट सागर का, छठा चार कोटा कोट सागर का, यह ९ कोटा कोट सागर हुवे और सर्पनी पहिला चार कोटा कोट सागर, दुसरा तीन कोटा कोट सागर, तीसरा दो कोटा कोट सागर में कुछकम बाद तीर्थंकर हो मुक्ती माग चलाते हैं यों १८कोटा कोट सागरमें कुछ कम का अन्तर होता है] साहरन आश्रिय जघन्य एक समय उत्कृष्ट संख्यात सहस्र वर्ष का अन्तर २ गति द्वार-नरक गति के आये सिद्ध होने का अन्तर पड़े तो उत्कृष्ट पृथक्त्व सहस्र वर्ष का, तिर्यंच के आये का पृथक्त्व सौ वर्ष का, तिर्यंचनी का सौधर्म ईशान देवलोक के देवता छोड़ बाकी देवता, मनुष्यका, मनुष्यनीका उत्कृष्ट एकवर्ष झाझेराका स्वय कुछका

और बुद्ध बोधित का उत्कृष्ट संख्यात हजार वर्ष का, पृथ्वी पानी वनस्पति सौधर्म ईशान देवलोक का पहिले के दो नरक का इन के निकल सिद्ध होने का अन्तर पड़े तो उत्कृष्ट संख्यात हजार वर्ष का, और सर्व स्थान जघन्य एक समय का मानना ४ वेद द्वार—पुरुष मर कर पुरुष हो सिद्ध होवे, जिसका अन्तर पड़े तो उत्कृष्ट एक वर्ष का, शेष ८ भांग का अन्तर पड़े तो संख्यात हजार वर्ष का, प्रत्येक बुद्ध का संख्यात हजार वर्ष का, पुरुष वेद का एक वर्ष का, स्त्री वेद नपुंसक वेद का अलग २ उत्कृष्ट संख्यात वर्ष का, सर्व स्थान जघन्य एक समय का मानना ५ तीर्थ द्वार—तीर्थंकर का उत्कृष्ट अन्तर प्रत्येक हजार पूर्व का, तीर्थंकर का अनंत काल का अन्तर पड़े, अतीर्थंकर का समुच्चय सब पुरुष का उत्कृष्ट अन्तर एक वर्ष झाझेरा का पड़े, [वासस पुव्वसहस्स पहुत्तं, तित्थगराण अणंत कालो, तित्थगरा नो तित्थगरा, पीसाणिंद सेसंसु समा] ६ लिंग द्वार—स्वलिंगी का १ वर्ष का झाझेरा, अन्य लिंगी का और ग्रह लिंगी का संख्यात हजार वर्ष का, ७ चारित्र द्वार—पूर्वानुपूर्व आश्रिय १ सामायिक, सूक्ष्म सम्पराय, यथाख्यात को स्पर्श सिद्ध होनेका १ वर्ष कुछ अधिक का, शेष का अर्थात् सामायिक छेदोप स्थापनीय, परीहार विशुद्ध यथाख्यात, तथा सामायिक छेदोपस्थापनीय सूक्ष्म सम्पराय, यथाख्यात, तथा सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहार विशुद्ध, सूक्ष्म सम्पराय, यथाख्यात इन तीनों भांग का पुद्गल के काल जितना अर्थात् कुछकम १८ क्रोडाकोडी सागरोपम का, जघन्य सब का एक समय का मानना ८ बुद्धद्वार बुद्धबोधित का अन्तर पड़े तो एक वर्ष झाझेरा, शेष प्रत्येक बुद्धादिक का, तथा साध्वी के प्रतिबोधित का

संख्यात हजार वर्ष का, स्वय बुद्ध का पृथक्त्व हजार पूर्व का, जघन्य सब का एक समय का ● ज्ञान द्वार—मति श्रुति ज्ञान से केवली हो सिद्ध होवे उन का उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवे भाग का, मति श्रुति अवधि ज्ञानी केवली हो सिद्ध होवे उन का १ वर्ष कुछ अधिक का, और मति श्रुति मनःपर्यव केवली हो सिद्ध होवे तथा मति श्रुति, अवधि, मनःपर्यव ज्ञानी केवलज्ञानी हो सिद्ध होवे उन का संख्याते हजार वर्ष का, जघन्य सब का एक समय का ९ अवगाहना द्वार—उत्कृष्ट जघन्य मध्यम तीनों अवगाहना का उत्कृष्ट अन्तर चउदह राजुप्रमाण लोक घनाकार से सात राजु होवे हैं उसमें एक प्रदेश की श्रेणी सात राजु की लम्बी होती है उस श्रेणि के असंख्यातवे भाग जितने आकाश प्रदेश होवे उन में से एकेक प्रदेश समय २ अपहरते जितना काल लगे उतना इन तीनों का अन्तर पडे मध्यम अवगाहना १ वर्ष का साधिक अन्तर पडे ११ उत्कृष्ट द्वार—सम्यक्त्वसे अपडवाई का अन्तर उत्कृष्ट सागरोपम के असंख्यातवे भाग का जघन्य संख्यात काल का पडे तथा असंख्यात काल के पडे का दोनोंका संख्याते हजार वर्ष का अनंत काल के पडवाईका एक वर्ष झाझेरा, १२ अन्तरद्वार जिन अन्तर सिद्ध हो सो मानना १२ अनु समय द्वार—दो समय से आठ समय तक निरंतर सिद्ध होवे १३ संख्याता द्वार एक ही,सिद्ध १४ अन्तरद्वार इन का उत्कृष्ट अन्तर संख्यात हजार वर्ष का, जघन्य एक समय का, इति छठा द्वार सातवा भाव द्वार कहते १५ द्वार कहते हैं—सब द्वार में सिद्ध क्षेत्र जानेवाले के १५ द्वार ही में एक क्षायिक भाव ही मानना इति भावका द्वार. आठवा अल्पाबहुत्व द्वार पर क्षेत्रादि सोलह द्वार उतारते हैं ऊर्ध्व लोकादिक में

चार सिद्ध होवे, दश हरिवासादिक में सिद्ध होवे, यह अन्योन्य तुल्य है, क्यों कि यहां एक ही समय बराबरा बीस २ सिद्ध होते हैं, उस से जो स्त्री आदि बीस सिद्ध होवे व कम, क्योंकि साहरन नहीं होता है मतिवाय एक समय १०८ सिद्ध होवे, वे सख्यातगुन यह सब अन्तर सिद्ध का कथन कहना अब परम्परा सिद्ध का स्वरूप कहते हैं—इन की मरूरनामें १५ कर्म भूमिक सिद्ध वे द्रव्य प्रमान की विम्क्षा से पंद्रों ही द्वार में मनन करना इन का अन्तर नहीं कहना, व काल से पूण हैं, सर्व काल से अनादि रूप है अब विशेषपने आठवा मूपका अल्पाबहुत्व द्वार है यह कहते हैं जीस पर १४ द्वार—१ क्षेत्रद्वार-सब स थोडे समुद्र के सिद्ध, उस से द्वीप के सिद्ध सख्यात गुने, तथा सब से थोडे जल में सिद्ध हुवे उस से स्थल पर सिद्ध हुवे सख्यात गुने, तथा सब के थोडे ऊर्ध्व लोक के सिद्ध, उस से अधोलोक के सिद्ध सख्यात गुने उस से तिरछे लोक के सिद्ध संख्यात गुने, तथा—१ सब से थोडे लवणसमुद्र के सिद्ध, २ उस से कालोदधी के सिद्ध सख्यातगुने, तथा सब से थोडे जम्बुद्वीप के सिद्ध उस से धातकी खंड के सिद्ध सख्यात गुने, उस से पुष्करार्धद्वीप के सख्यात गुने, तथा जम्बुद्वीप के चूल हेमवंत पवत शिखरी पर्वत पर से हुवे सिद्ध सख्यातगुन, उस स हेमवय एरणवय क्षेत्र क सिद्ध परस्पर तुल्य संख्यातगुने, उस स महा हिमवत रूपी पवत के सिद्ध सख्यातगुना, उस से देवकुरु उत्तरकुरु क्षत्र के सिद्ध परस्पर तुल्य संख्यातगुन, उस से हरीवास रम्यकवास क्षेत्रके सिद्ध परस्पर तुल्य संख्यातगुने, उससे निषध नीलवंत पर्वत पर हुवे सिद्ध परस्पर तुल्य सख्यातगुने, उस से भरत एरावत क्षत्र के सिद्ध परस्पर तुल्य सख्यातगुने, उस से पूर्व विदेह

क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुन अब धातकी खण्ड के क्षेत्र का विभाग करते हैं सब से थोडे चुल्ल हेमवत शिखरी पर्वत पर हुवे सिद्ध, उस से महा हेमवंत रूपी पर्वत पर हुवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से निषध नीलवंत पर्वत पर हुवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से हेमवय एरणवय के हुवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से देव कुरु उत्तर कुरु क्षेत्र में हुवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से हरीवास रम्यकवास क्षेत्र में हुवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से भरत ऐरावत क्षेत्र के हुवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से महा विदेह क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुन अब पुष्करार्ध क्षेत्र का कहते हैं—सबसे थोडे हमवंत शिखरी पर्वत पर हुवे सिद्ध, उस से महा हेमवंत रूपी पर्वत पर हुवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से निषध नीलवंत पर्वत पर हुवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से हेमवय एरणवय क्षेत्र में हुवे सिद्ध असंख्यातगुने, उस से देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्र हुवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से हरीवास रम्यकवास क्षेत्र में हुवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से भरत एरावत क्षेत्र के हुवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से महा विदेह क्षेत्र के हुवे संख्यातगुने, (उक्त सर्व स्थानों में भरतैरावत और महाविदेह क्षेत्र छोड कर बाकी के सर्व स्थानों में साहरन आश्रिय सिद्ध होने का समझना) अब तीन क्षेत्र के समुच्चय और सब क्षेत्र पर्वत मिलाकर अल्पाबहुत्व कहते हैं—१ सब से थोडे जंबुद्वीप के चुल्लहिमवंत शिखरी पर्वत के सिद्ध २ उस से हेमवय एरणवय क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुने, ३ उस से महाहिमवंत रूपी पर्वत पर हुवे सिद्ध संख्यात गुने, ४ उस से देवकुरु उत्तर कुरु के हुवे सिद्ध संख्यात गुने ५ उस से हरीवास रम्यकवास के हुवे सिद्ध संख्यात गुने, ६ उस से

निषध नीलवंत पर्वत पर हुवे सिद्ध सख्यातगुन, ७ उस से दूसरे धात की खण्ड के चूल्लहेमवंत शिखरी पर्वत पर हुवे विशेषाधिक, ८ उस से धात की खण्ड के महाहेमवंत रूपी पर्वत के सिद्ध सख्यातगुने, ९ तीसरे पुष्करार्ध द्वीप के हेमवन्त शिखरी पर्वत के सिद्ध सख्यातगुने, १० उस से दूसरे धात की खण्ड के नीलवंत नीषध पर्वत पर हुवे सिद्ध संख्यातगुने, ११ उस से पुष्करार्ध द्वीप में महाहेमवंत रूपी पर्वत पर हुवे सिद्ध संख्यातगुन, १२ उस से धातकी खण्ड के देवकुरु उत्तर कुरु क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुने, १३ उस से पुष्करार्ध द्वीप के नीषध नीलवंत पर्वत पर हुवे सिद्ध सख्यातगुने, १४ उस से धातकी खण्ड के देवकुरु उत्तरकुरु के सिद्ध संख्यातगुने,, १५ उस से धातकी खण्ड के हरीवास रम्यकवास क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुने, १६ उस से पुष्करार्ध द्वीप के हेमवय एरणवय क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुने, १७ उस से पुष्करार्ध द्वीप के देवकुरु उत्तर कुरु के संख्यातगुने, १८ पुष्करार्ध द्वीप के हरीवास रम्यकवास के सख्यातगुन, १९ उस से जम्बुद्वीप के भरतैरावत क्षेत्र के संख्यातगुने, २० उससे धातकी खण्ड के भरतैरावत के सख्यातगुने, २१ उस से पुष्करार्ध द्वीप के भरत ऐरावत क्षेत्र के सख्यातगुने, २२ उस से जम्बुद्वीप के महाविदेह क्षेत्र के संख्यातगुने, २३ उस से धातकी खण्ड के महा विदेह के सख्यातगुन, २४ उस से पुष्करार्ध द्वीप के महा विदेह के संख्यातगुने, जहां जो २ सम पर्वतों के नाप नाप है वहां परस्पर सर्व स्थान तुल्य जानना ॥ १ ॥ दूसरा काल द्वार—१ सब से थोडे दुखमासुखम आरे के सिद्ध, २ उस से दुःखम आरे के सिद्ध सख्यातगुने, ३ उस से

सुखमादु:खम आरे के सिद्ध असंख्यातगुने, ४ उस से सुखम आरे के सिद्ध विशेषाधिक, ५ उस से सुखमासुखम आरे के सिद्ध विशेषाधिक (विशेष काल की अपेक्षा) ६ दु:खमासुखम आरे के सिद्ध संख्यातगुने, अब उत्सर्पिणी काल आश्रिय-सब से थोडे दु:खमादु:खम आरे के, उस से दु:खम आरे के संख्यातगुने, उस से सुखमादु:खम आरे के असंख्यातगुने, उस से सुखम आरे के विशेषाधिक, उस से सुखमासुखम आरे के विशेषाधिक, उस से दु:खमासुखम आरे के संख्यातगुने अब दोनों को मिलाकर अल्पाबहुत्व कहते हैं- १ सब से थोडे दु:खमादु:खम दोनों काल के परस्पर तुल्य, २ उस से वर्धमान काल के दूसरे आरा दु:खम के विशेषाधिक, ३ उस से हायमान काल के दु:खम पांचवे आरे के संख्यातगुने, ४ उस से दोनों काल सुखम दु:खम आरे के परस्पर तुल्य असंख्यातगुने, ५ उस से दोनों सुखम आरे के सिद्ध परस्पर तुल्य विशेषाधिक, ६ उस से दोनों सुखमासुखम आरे के परस्पर तुल्य विशेषाधिक, ७ दोनों दु:खम सुखम आरे के परस्पर तुल्य संख्यातगुने, ८ उस से हायमान काल के सिद्ध संख्यातगुन, क्योंकि इस के तीनों आरे में सिद्ध होने की अधिकता है ॥ २ ॥ तीसरा गति द्वार-सब से थोडे मनुष्यनी के निकले सिद्ध, २ उस से मनुष्य के निकले पुरुष नपुंसक से सिद्ध हुवे असंख्यातगुने, ३ उस से नरक के सिद्ध संख्यातगुने, ४ उस से तिर्यंचनी के निकले सिद्ध असंख्यातगुने, ५ तिर्यंच पुरुष के नपुंसक के सिद्ध संख्यातगुने, ६ मनुष्य देवी के सिद्ध संख्यातगुने, ७ उस से देवता के सिद्ध संख्यातगुने १ सब से थोडे एकेन्द्रिय के निकले सिद्ध हुवे २ उस से बेइन्द्रिय के निकले सिद्ध हुवे

संख्यातगुने, सब से थोडे बादर वनस्पति के आये सिद्ध हुए, २ उस से बादर पृथ्वी के आये सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ३ उस से बादर अपकाय के आये सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ४ उस से त्रस काय के सिद्ध संख्यातगुने यह संक्षेप से कहा अब विस्तार से कहते हैं—१ सब से थोडे चौथी नरक के निकले मनुष्य में आकर सिद्ध हुवे (एस ही आगे मानना) २ उस से तीसरी नरक के संख्यातगुने, ३ उस से दुसरी नरक के संख्यातगुने, ४ पर्याप्त बादर वनस्पति के निकले सिद्ध हुए संख्यातगुने, ५ पर्याप्त बादर पृथ्वी काय के संख्यातगुने ६ बादर आप काय के निकले सिद्ध संख्यातगुने, + ७ भवनपति की देवी से आये सिद्ध हुए संख्यातगुने, ८ भवनपति देवता के निकले सिद्ध हुवे संख्यातगुने ९ वाणव्यन्तर की देवी के संख्यातगुने, १० वाणव्यन्तर देवता के संख्यातगुने, ११ ज्योतिषी देवता के आये संख्यातगुने, १२ ज्योतिषी देवी के निकले सिद्ध हुवे संख्यातगुने १३ मनुष्य की स्त्री के आये सिद्ध हुए संख्यातगुने, १४ मनुष्य पुरुष के आये सिद्ध हुए संख्यातगुने १५ रत्नप्रभा नरक के निकले सिद्ध हुवे संख्यातगुने, १६ तिर्यंचनी के आये सिद्ध हुवे संख्यातगुने, १७ तिर्यंच पुरुष नपुंसक के आये सिद्ध हुए संख्यातगुने, १८ अनुत्तर विमान के आये सिद्ध संख्यातगुने, १९ ग्रैवेयक के देवता के आये सिद्ध हुए संख्यातगुने, २० बारवे देवलोक के आये सिद्ध हुवे संख्यातगुने २१ इग्यारवे देवलोक के आये सिद्ध हुवे संख्यातगुने, २२ दशवे देवलोक के आये सिद्ध हुए संख्यातगुने

+ सूक्ष्म अपर्याप्त व बादर अपर्याप्त मनुष्य होते हैं; परंतु चरम शरीरी नहीं होते हैं.

२१ नवमे देवलोक के आये सिद्ध हुवे संख्यातगुने, २४ आठवे देवलोक के आये सिद्ध हुवे संख्यातगुने, २५ सातवे देवलोक के आये सिद्ध हुवे संख्यातगुने, २६ छठे देवलोक के आये सिद्ध हुवे संख्यातगुने, २७ पांचवे देवलोक के आये सिद्ध संख्यातगुने, २८ चौथे देवलोक के आये सिद्ध हुवे संख्यातगुने, २९ तीसरे देवलोक के आये सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ३० दूसरे देवलोक की देवी के आये सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ३१ दूसरे देवलोक के देवता के आये सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ३२ प्रथम देवलोक की देवी के आये सिद्ध हुवे संख्यातगुने और ३३ उस से प्रथम देवलोक के देवता के आये सिद्ध हुवे संख्यातगुने ॥ ३ ॥ वेद द्वार—१ सब से थोडे नपुंसक वेद क्षय कर सिद्ध हुवे, २ उस से स्त्री वेद क्षय कर सिद्ध हुवे संख्यातगुने, और उस से पुरुष वेद क्षय कर सिद्ध हुवे संख्यातगुने ॥ ४ ॥ लिंग द्वार १ सब से थोडे गृह लिंगी सिद्ध, २ उस से अन्य लिंगी सिद्ध संख्यातगुने, ३ उस से स्वलिंगी सिद्ध संख्यातगुने ॥ ५ ॥ तीर्थ द्वार सब से थोडे तीर्थंकर सिद्ध, २ उस से उन के तीर्थ में प्रत्येक बुद्ध सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ३ उस से तीर्थंकर के तीर्थ में साध्वी सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ४ तीर्थंकर जी के तीर्थ में सिद्ध हुवे साधु संख्यातगुने, ५ उस से तीर्थंकर जी के साधु से तीर्थंकर सिद्ध अनंतगुने, ६ उस से तीर्थंकर के तीर्थ में प्रत्येक बुद्ध सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ७ तीर्थंकर के तीर्थ में साध्वी सिद्ध हुई वे संख्यातगुने, ८ उस से तीर्थंकर के तीर्थ में साधु सिद्ध हुवे वे संख्यातगुने ॥ ६ ॥ चारित्र द्वार—१ सब से थोडे छेदोपस्थापनी परिहार विशुद्ध, सूक्ष्म सम्पराय यथाख्यात चारित्र स्पर्श कर सिद्ध हुवे * २ उस से सामायिक परिहार विशुद्ध, सूक्ष्मसम्पराय

*यहां सामायिक रहित छेदोपस्थापनीय चारित्र कहा वह सामायिक चारित्रका भंग करनेवाला जानना

यथाख्यात यह चारित्र स्पर्शकर सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ३ सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्ध, सूक्ष्मसम्पराय, और यथाख्यात इन पांचों चारित्र को स्पर्श कर सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ४ उस से छेदोपस्थापनीय सूक्ष्मसम्पराय यथाख्यात इन तीन चारित्र को स्पर्श सिद्ध हुवे संख्यातगुन, ५ सामायिक छेदोपस्थापनीय सूक्ष्मसम्पराय यथाख्यात इन चार चारित्र का स्पर्शकर सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ६ सामायिक सूक्ष्मसम्पराय यथाख्यात इन तीन चारित्र को स्पर्श सिद्ध हुव संख्यातगुने, ॥७॥ बुद्धद्वार—१ सब से थोडे स्वयंबुद्ध सिद्ध,२ उस से प्रत्येक बुद्धसिद्ध संख्यातगुने, ३ उस से साध्वी के प्रतिबोधेसिद्ध संख्यातगुन, ४ उस स साधु के प्रतिबोध सिद्ध संख्यातगुने, ॥ ८ ॥ ज्ञान द्वार—सब से थोडे मति श्रुति मनःपर्यव ज्ञान का स्पर्श कर केवली सिद्ध हुवे, २ उस मति श्रुति अवधि मनःपर्यव ज्ञान से केवली हो सिद्ध हुवे असंख्यातगुन, ३ उस से मति श्रुति अवधि ज्ञान स्पर्श सिद्ध हुवे असंख्यातगुने, ॥ ९ ॥ अनुसमय द्वार—१ सब से थोडे आठ समय तक निरंतर सिद्ध हुवे, २ उस से सात समय तक हुवे संख्यातगुन, ३ उस से छ समय तक सिद्ध हुव संख्यातगुन, ४ पांच समय तक सिद्ध हुव संख्यातगुने, ५ चार समय तक सिद्ध हुव संख्यातगुने, ६ तीन समय तक सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ७ दो समय तक सिद्ध हुप संख्यातगुने, ८ उस से एक समय में सिद्ध हुवे संख्यातगुने ॥ १० ॥ उत्कृष्ट द्वार—१ सब से थोडे सम्यक्त्व से नहीं पडे सिद्ध, २उससे संख्यात काल के पश्चात् सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ३ असंख्यात काल के पश्चात् सिद्ध हुवे

संख्यातगुने, ४ उस से अनंत काल के पश्चात् सिद्ध हुवे असंख्यातगुने ॥ १२ ॥ अन्तर द्वार—१ सब से थोडे छ महिने के अन्तर से सिद्ध हुए, २ उस से एक समय के अन्तर से सिद्ध हुवे संख्यातगुने, उस से दो समय के अन्तर मे सिद्ध हुवे असंख्यातगुने ४ यों छ महिने का मध्य आवे वहां तक कहना, फिर भाग संख्यातगुन हीन करना यों छ महिने में एक समय तक कहना, छ महिने में एक समय रूप अन्तर से सिद्ध हुवे संख्यातगुन हीन ॥ १३ ॥ अवगाहना द्वार—१ सब से थोडे दो हाथ की अवगाहना वाले सिद्ध, २ उस से पांच सो धनुष्य की अवगाहना वाले सिद्ध हुवे असंख्यातगुने, ३ उस से मध्य अवगाहनावाले सिद्ध असंख्यातगुने ॥ १४ ॥ संख्या द्वार—सब से थोडे एक समय में १०८ सिद्ध हुए उस से १०७ सिद्ध हुए अनंतगुन, उस से १०६ सिद्ध हुवे अनंतगुने, उस से १०५ सिद्ध हुवे अनंतगुने, १०४ सिद्ध अनंतगुना, १०३ सिद्ध अनंतगुना, १०२ सिद्ध अनंतगुना, १०१ सिद्ध अनंतगुना, १०० सिद्ध अनंतगुने, ९९ सिद्ध अनंतगुना, ९८ सिद्ध संख्यातगुना, ९७ अनंतगुना, ९६ अनंतगुना, ९५ अनंतगुना, ९४ अनंतगुना, ५२ अनंतगुना, ५१ अनंतगुना, ५८ अनंतगुना, ५० अनंतगुना, ५९ अनंतगुना, ४९ असंख्यातगुना, ३ असंख्यातगुना, ४८ असंख्यातगुना ४१ असंख्यातगुना, ४७ असंख्यातगुना, ४२ असंख्यातगुना, ४६ असंख्यातगुना, ४३ संख्यातगुना, ४५ असंख्यातगुना, ४४ असंख्यातगुना, ४४ असंख्यातगुना १ ३५ असंख्यातगुना, ३३ यों अनुक्रम से यावत् २७ सिद्ध असंख्यातगुना, ८२ असंख्यातगुना, २६ असंख्यातगुना, ८१ असंख्यातगुना, २५ असं-

ख्यातगुना, ८६ असख्यातगुना, २३ असंख्यातगुना, ८७ असंख्यातगुना, २२ संख्यातगुना, ८७ संख्यात गुना, २१ संख्यातगुना, ८८ संख्यातगुना, २० संख्यातगुना, ८९ यावत् उस से १ सिद्ध संख्यातगुना, १०६ से दो सिद्ध सख्यातगुना, १०७ मे एक सिद्ध संख्यातगुने, यों १०८ बोल की गिनना मानना इस ही का अन्या बहुत्व निरूप करते हैं १ सब से थोडे अधोमुखासन से सिद्ध हुवे, २+ धड्कूआसन से सिद्ध हुए संख्यातगुने, ३ वीरासन से सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ४ पर्यंकासन अधोदृष्टी से सिद्ध हुए संख्यात गुने, ५ उर्ध्वमुख खडे आसन से सिद्ध हुए संख्यातगुने, ६ पसवाडे से सूते सिद्ध हुए संख्यातगुने, ७ उत्तासन मे सिद्ध हुए संख्यातगुन अब सब द्वारों का अल्पाबहुत्व सनिरूप द्वार करते हैं—जिस २ स्थान १०८ सिद्ध हुवे वहां ऐसा कहना—एकक सिद्ध हुवे व सब से ज्यादा, २ उस से दो दो सिद्ध हुवे संख्यातगुन कमी, ३ उस से तीन २ सिद्ध हुए संख्यातगुन कमी, ४ उस से चार २ सिद्ध संख्यातगुन कमी, ५ उस से पांच २ सिद्ध संख्यातगुन कमी, ६ उस से छ छ सिद्ध संख्यातगुन कमी ७ उस से सात २ सिद्ध संख्यातगुन कमी, यावत् उस से बावीस २ सिद्ध संख्यातगुन कमी, उस से तेवीस २ सिद्ध संख्यातगुनहीन, उस से चौवीस २ सिद्ध संख्यातगुन हीन, उस से पचीस २ सिद्ध संख्यातगुन हीन, छब्बीस २ सिद्ध संख्यातगुन हीन, यों यावत् पचास सिद्ध संख्यातगुनहीन, फिर इकावन २ सिद्ध अनंत गुनहीन, बावन २ सिद्ध अनंतगुनहीन, यों यावत् १०७ सिद्ध अनंतगुनहीन, उस से १०८

+ इन के आत्म प्रदेश निकलते नीचे होकर निकलते हैं, इसे कोई निग्रह गति से सिद्ध हुवे कहते हैं.

सिद्ध अनंत गुनहीन, यों पचास के भांगे अनंत गुनहीन करना तथा जिस २ स्थान बीस २ सिद्ध होवे वहां ऐसा करना—सब से ज्यादा एकेक समय में एकेक सिद्ध, उस से दो २ सिद्ध संख्यातगुने, तीन २ सिद्ध संख्यातगुने कमी, चार २ सिद्ध संख्यातगुने कमी, पांच २ सिद्ध संख्यातगुने कमी उस से छ २ सिद्ध असंख्यातगुन कमी, सात २ असंख्यातगुने कमी, आठ २ असंख्यातगुने कमी, नव २ असंख्यातगुन कमी, दस २ असंख्यातगुने कमी, इग्यारे २ अनंतगुन हीन, यावत् बीस २ सिद्ध व अनंतगुन हीन. ऐसे ही अधो लोकादिक के भी करना क्योंकि वहां भी बीस२सिद्ध होवेहैं यों सर्व स्थान प्रथम चौथे भाग में संख्यातगुन हीन, दूसरे चौथे भाग में असंख्यातगुन हीन, और तीसरे चौथे भाग में अनंतगुन हीन करना और भी जहां दस २ सिद्ध होवे वहां एकेक सिद्ध हुवे सब से ज्यादा, उस से दो २ सिद्ध संख्यातगुने कम, उस से तीन २ सिद्ध संख्यातगुने कमी, उस से चार २ सिद्ध असंख्यातगुन कमी, उस स पांच २ सिद्ध असंख्यातगुन हीन उस से छ २ अनंतगुन हीन, यावत् दस २ सिद्ध अनंत गुनहीन ऊर्ध्व लोक में चार ही सिद्ध होवे हैं वहां एकेक सिद्ध सब से ज्यादा, दो २ सिद्ध असंख्यात गुन कमी, तीन २ और चार २ सिद्ध अनंतगुन हीन, यहां संख्यातगुन हीन नहीं करना समुद्र में एक समय में दो ही सिद्ध होवे हैं उस में सब से ज्यादा एकेक सिद्ध, उस से दो २ सिद्ध अनंतगुने कमी जहां दो यावत् आठ तक सिद्ध होते हैं वहां ऐसा करना—सब से ज्यादा एकेक सिद्ध, उस से दो २ संख्यातगुने कमी उस से तीन २ सिद्ध संख्यातगुन हीन चार२ सिद्ध असंख्यातगुने हीन उस से पांच २ सिद्ध

अणंतर उव्वट्टित्ता णेरइएसु उववज्जेज्जा? गोयमा! णोइणट्ठे समट्ठे ॥ णेरइएणं भंते! णेरइएहिंतो अणतरं उव्वट्टित्ता असुरकुमारेसु उववज्जेज्जा? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे एवं णिरंतर जाव चउरिंदिएसु पुच्छा? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ णेरइएणं भंते! णेरइएहिंतो अणंतर उव्वट्टित्ता पंचिंदिए तिरिक्खजोणिएसु उववज्जेज्जा? गोयमा! अत्थेगइए उववज्जेज्जा अत्थेगइए णो उववज्जेज्जा ॥ जेणं भंते! णेरइएहिंतो अणतर उव्वट्टित्ता पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएसु उववज्जेज्जा सेणं भंते! केवलि पण्णत्त धम्मं लभेज्जा सवणयाए? गोयमा! अत्थेगइया लभेज्जा अत्थेगइया णो

हीन उस से छ ६ सिद्ध अनंतगुनहीन, उस से सात २ सिद्ध अनंतगु हीन, और उस से आठ २ सिद्ध एक समय में हुए अनंतगुनहीन-कमी मानना यह सिद्ध भगवंत का स्वरूप विस्तृत अर्थ वाली पन्नवना में कहा अब आगे पर्याय पलटकर कहां २ उत्पन्न होते हैं उस का चौथा द्वार सूत्र से कहते हैं ॥ + ॥ अहो भगवन्! नेरीये नारकी से निरंतर निकलकर पुनःनरक में उत्पन्न होते हैं क्या? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं अर्थात् उत्पन्न नहीं होते हैं अहो भगवन्! नेरीये नरक से निकलकर निरंतर असुरकुमार में उत्पन्न होते हैं क्या? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं यों दशही भवनपति पांचों स्थावर विकलेन्द्रियतक कहना अर्थात् नेरीया आयुष्य पूर्णकर इतने स्थान में आकर उत्पन्न नहीं होते हैं अहो भगवन्!

सिद्ध अनंत गुनहीन, यों पचास के आगे अनंत गुनहीन कहना तथा जिस २ स्थान वीस २ सिद्ध होवे वहां एसा कहना—सब से ज्यादा एकेक समय में एकेक सिद्ध, उस से दो २ सिद्ध संख्यातगुने, तीन २ सिद्ध संख्यातगुने कमी, चार २ सिद्ध संख्यातगुने कमी, पांच २ सिद्ध संख्यातगुने कमी उस से छ २ सिद्ध असंख्यातगुने कमी, सात २ असंख्यातगुने कमी, आठ २ असंख्यातगुने कमी, नव २ असंख्यातगुन कमी, दश २ असंख्यातगुने कमी, इग्यारे २ अनंतगुन हीन, यावत् वीस २ सिद्ध व अनंतगुन हीन ऐसे ही अधो लोकादिक के भी कहना क्योंकि वहां भी वीस२ सिद्ध होवे हैं यों सर्व स्थान प्रथम चौथे भाग में संख्यातगुन हीन, दूसरे चौथे भाग में असंख्यातगुन हीन, और तीसरे चौथे भाग में अनंतगुन हीन कहना और भी जहां दश २ सिद्ध होवे वहां एकेक सिद्ध हुवे सब से ज्यादा, उस से दो २ सिद्ध संख्यातगुने कम, उस से तीन २ सिद्ध संख्यातगुने कमी, उस से चार २ सिद्ध असंख्यातगुन कमी, उस से पांच २ सिद्ध असंख्यातगुन हीन उस से छ २ अनंतगुन हीन, यावत् दश २ सिद्ध अनंत गुनहीन. ऊर्ध्व लोक में चार ही सिद्ध होवे हैं वहां एकेक सिद्ध सब से ज्यादा, दो २ सिद्ध असंख्यात ... कमी तीन २ और चार २ सिद्ध अनंतगुन हीन, यहां संख्यातगुन हीन नहीं कहना समुद्र में एक ... एकेक सिद्ध, उस से दो २ सिद्ध अनंतगुने कमी ... ज्यादा एकेक सिद्ध, उस से दो २ ... उस से तीन २ सिद्ध

गुणव्वा वेरमणंवा पच्चक्खाणंवा पोसहोववासंवा पडिवज्जित्तए ? गोयमा ! अत्थे गतिए संचाएज्जा अत्थेगतिए णो संचाएज्जा ॥ जेणं भंते ! संचाएज्जा सीलंवा जाव पोसहोववासंवा पडिवज्जित्तए सेणं भंते ! ओहिणाणं उप्पाडेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगतिए उप्पाडेज्जा अत्थेगतिए णो उप्पाडेज्जा ॥ जेणं भंते ! ओहिणाणं उप्पाडेज्जा सेणं भंते ! संचाएज्जा मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे ॥ णेरइएणं भंते ! णेरइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता मणुस्सेसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगतिए उववज्जेज्जा अत्थेगतिए णो उववज्जेज्जा जेणं

हां गोतम ! करते हैं अहो भगवन् ! मति श्रुति ज्ञान युक्त होते हैं वे पांच अनुव्रत, तीन गुणव्रत, चार शिक्षा व्रत, पाप से निवृत्ति रूप प्रत्याख्यान करके पौषधोपवासादि अंगीकार करने को क्या समर्थ होते हैं? अहो गौतम ! कितनेक समर्थ होते हैं कितनेक समर्थ नहीं भी होते हैं, अहो भगवन् ! शीलव्रत यावत् पौषधोपवास करने समर्थ होते हैं वे अवधिज्ञान को प्राप्त करसकते है क्या ? अहो गौतम ! कितनेक प्राप्त करसकते हैं कितनेक नहीं भी प्राप्त करसकते हैं अहो भगवन् ! जो अवधिज्ञान प्राप्त करते हैं वे मुंडित प्रव्रज्या धार साधुपना धारन करने को समर्थ होते हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं अर्थात् साधुपना नहीं ले सकते हैं अहो भगवन् ! नरक में से निरंतर निकल कर मनुष्य में उत्पन्न होवे

लभेज्जा ॥ जेण भंते ! केवलि पण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए सेणं भंते ! केवल बोहिं बुज्झेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगतिया बुज्झेज्जा, अत्थेगतिया णो बुज्झेज्जा ॥ जेणं भंते ! केवलबोहिं बुज्झेज्जा सेणं भंते ! सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा? हंता गोयमा ! सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा ॥ जेणं भंते ! सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा सेणं भंते ! आभिणिबोहियणाण सुयणाणाइं उप्पाडेज्जा ? हंता गोयमा ! उप्पाडेज्जा, जेणं भंते ! आभिणिबोहियणाण सुयणाणाइं उप्पाडेज्जा, सेणं भंते ! संचाएज्जा सीलंवा वयंवा

नेरीये नरक से निकलकर निरंतर तिर्यंच पंचेन्द्रिय में आकर उत्पन्न होते हैं क्या ? अहो गौतम ! कितने नेरीये तिर्यंच पंचेन्द्रिय में उत्पन्न होते हैं, कितनेक नहीं भी होते हैं अहो भगवन् ! जो नरीय तिर्यंच पंचेन्द्रिय में आकर उत्पन्न होते हैं वे केवली भाषित धर्म श्रवणकर लाभ प्राप्त करते हैं क्या? अहो गौतम ! कितनेक प्राप्त करते हैं कितनेक नहीं भी प्राप्त करते हैं, अहो भगवन् ! जो केवली भाषित धर्म श्रवनकर प्राप्त करते हैं व केवली भाषित धर्म से बोधित होते हैं धर्म जानते हैं क्या ? अहो गौतम ! कितनेक प्रतिबोध पाते हैं कितनेक नहीं भी पाते हैं अहो भगवन् ! जो प्रतिबोध पाते हैं वे धर्म को श्रद्धते हैं प्रतीति करते हैं, अन्तःकरण में रुचाते हैं क्या ? हां गौतम ! कितनेक श्रद्धना प्रतीति रुची करते हैं और कितने नहीं भी करते हैं अहो भगवन् ! जो श्रद्धते हैं प्रतीति करते हैं रुचाते हैं व आभिनिबोधक ज्ञान को प्राप्त करते हैं क्या ?

गुणव्वा वेरमणवा पच्चक्खाणंवा पोसहोववासंवा पडिवज्जित्तए ? गोयमा ! अत्थेगतिए संचाएज्जा अत्थेगतिए णो संचाएज्जा ॥ जेणं भंते ! संचाएज्जा सीलंवा जाव पोसहोववासंवा पडिवज्जित्तए सेणं भंते ! ओहिणाणं उप्पाडेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगतिए उप्पाडेज्जा अत्थेगतिए णो उप्पाडेज्जा ॥ जेणं भंते ! ओहिणाणं उप्पाडेज्जा सेणं भंते ! संचाएज्जा मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ? गोयमा ! णोइणट्ठे समट्ठे ॥ णेरइएणं भंते ! णेरइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता मणुस्सेसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगतिए उववज्जेज्जा अत्थेगतिए णो उववज्जेज्जा जेणं

हो गौतम ! करते हैं अहो भगवन ! जो मति श्रुति ज्ञान युक्त होते हैं वे पांच अनुव्रत, तीन गुणव्रत, चार शिक्षा व्रत, पाप से निवृत्ति रूप प्रत्याख्यान करके पौषधोपवासादि अंगीकार करने को क्या समर्थ होते हैं? अहो गौतम ! कितनेक समर्थ होते हैं कितनेक समर्थ नहीं भी होते हैं, अहो भगवन् ! शीलव्रत यावत् पौषधोपवास करने समर्थ होते हैं वे अवधिज्ञान को प्राप्त करसकते है क्या ? अहो गौतम ! कितनेक प्राप्त करसकते हैं कितनेक नहीं भी प्राप्त करसकते हैं अहो भगवन् ! जो अवधिज्ञान प्राप्त करते हैं वे मुंडित गृहस्थावास छोड साधुपना धारन करने को समर्थ होते हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं अर्थात् साधुपना नहीं ले सकते हैं अहो भगवन् ! नरक में से निरंतर निकल कर मनुष्य में उत्पन्न होते

भंते ! उववज्जेज्जा सेणं भंते ! केवली पण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए? गोयमा ! जहा पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएसु जाव जेणं भंते ! आहिणाणं उप्पाडेज्जा सेणं संचाएज्जा मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए ? गोयमा ! अत्थेगतिए संचाएज्जा अत्थेगतिए णो संचाएज्जा ॥ जेणं भंते ! संचाएज्जा अगाराओ अणगारियं पव्वइत्तए सेणं भंते ! मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगतिए उप्पाडेज्जा अत्थेगतिए णो उप्पाडेज्जा ॥ जेणं भंते ! मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा सेणं भंते ! केवलणाणं उप्पाडेज्जा

है क्या ? अहो गौतम ! कितनेक उत्पन्न होते हैं कितनेक नहीं भी होते हैं अहो भगवन् ! जो मनुष्य गति में उत्पन्न होते हैं वे केवली प्रणित धर्म को श्रवण कर अंगीकार करते हैं क्या ? अहो गौतम ! जिस प्रकार तिर्यंच पंचेन्द्रिय का कहा वैसा यहां भी सब कहना यावत् अवधिज्ञान प्राप्त करते हैं वहां तक अहो भगवन् ! जो नेरीये मनुष्य हो अवधी ज्ञान प्राप्त करते हैं वे मुंडित हो गृहस्थावास को छोड साधु बनने को समर्थ होते हैं क्या ? अहो गौतम ! कितनेक समर्थ होते हैं कितनेक नहीं भी होते हैं अहो भगवन् ! जो मुंडित होने साधु बनने समर्थ होते हैं वे मनःपर्यव ज्ञान को प्राप्त कर सकते हैं क्या ? अहो गौतम ! कितनेक प्राप्त कर सकते हैं कितनेक नहीं भी प्राप्त कर सकते हैं अहो भगवन् ! जो मनःपर्यव ज्ञान प्राप्त करसकते हैं वे केवल ज्ञान भी प्राप्त करसकते हैं क्या ?

गोयमा ! अत्थेगतिए उप्पाडेज्जा अत्थेगतिए णो उप्पाडेज्जा ॥ जेणं भंते ! केवल णाण उप्पाडेज्जा सेणं भंते! सिज्झज्जा बुज्झज्जा मुच्चेज्जा सव्वदुक्खाणं अंत करेज्जा? हंता गोयमा । सिज्झज्जा जाव सव्वदुक्खाण अंत करेज्जा ॥ णेरइएणं भंते ! णेरइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता वाणमंतरेसु जोइसिय वेमाणिएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ ४ ॥ असुरकुमारेणं भंते ! अणंतर उव्वट्टित्ता णेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! णो इणट्ठसमट्ठे ॥ असुरकुमारेणं भंते ! अणंतर उव्वट्टित्ता असुरकुमारेसु

अहो गौतम ! कितनेक प्राप्त करते हैं कितनेक नहीं भी करते हैं अहो भगवन् ! जो केवल ज्ञान प्राप्त करते हैं वे सिद्ध बुद्ध मुक्त हो सब दुःख का अन्त करते हैं क्या ? अहो गौतम ! वे सिद्ध बुद्ध मुक्त हो सब दुःख का अन्त करते हैं अहो भगवन् ! नारकी से निरंतर निकल कर वाणव्यंतर ज्योतिषी वैमानिक देव में उत्पन्न होते हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् नरक के जीव देवता में उत्पन्न नहीं होते हैं इति नरक के दंडक पर चौबीस ही दंडक की फासना कही ॥ ४ ॥ अब असुरकुमार देव की कहते हैं—अहो भगवन् ! असुरकुमार देवता निरंतर निकल कर नरक में उत्पन्न होते हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं अर्थात् उत्पन्न नहीं होते हैं अहो भगवन् ! असुरकुमार देवता निरंतर असुरकुमार से निकलकर पुनः असुरकुमार में उत्पन्न होते हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ

मा।णो इणट्ठे समट्ठे॥एवं जाव थणियकुमारेसु॥ असुरकुमारेण भंते ! असुर
तर उव्वट्टित्ता पुढविकाइएसु उववज्जेज्जा ? हंता गोयमा ! अत्थेगतिए
गातिए णो उववज्जेज्जा ॥ जेणं भंते ! उववज्जेज्जा सेणं भंते ! केवलि
मेज्जा सवणयाए?गोयमा।णो इणट्ठे समट्ठे॥एवं आउ वणस्सतिकाइएसुवि
त।असुरकुमारेहिंतो अणतरं उव्वट्टित्ता तेउवाउ बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिएसु
ोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे अवसेसेसु पंचिंदियतिरिक्खजोणियाएसु

यत् स्तनितकुमार पर्यन्त कहना अहो भगवन् ! असुरकुमार देवता निरंतर निकल
न होते हैं क्या ? अहो गौतम ! कितनेक उत्पन्न होते हैं कितनेक नहीं भी उत्पन्न
भी असुरकुमार पृथ्वी कायमें उत्पन्न होते हैं वे केवली भाषित धर्म श्रवणकर प्रतिबोध
अहो गौतम यह अर्थ समर्थ नहीं, ऐसे ही अपूकायका भी कहना और वनस्पति काय
भगवन् ! असुरकुमार देवता निरंतर निकलकर तेउकाय वायुकाय बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय
होता है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं अवशेष तिर्यंच पंचेन्द्रिय मनुष्य
की वैमानिक का जैसा नरक का कहा वैसा असुरकुमार का भी कहना और जिस

अमुरकुमारेसु जहा णेरइओ॥एवजाव थणियकुमारा॥ १॥पुढविकाइएण,भते! पुढविकाइए हिंतो अणतरउव्वट्टित्ता णेरइएसु उववज्जेज्जा?गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे, एव असुरकुमारेसुवि जाव थणियकुमारेसुवि ॥ पुढविकाइएण भते ! पुढविकाइएहिंतो अणतरं उव्वट्टित्ता पढविकाएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगतिए उववज्जेज्जा अत्थेगतिए णो उववज्जेज्जा ॥ जेण भते ! उववज्जेज्जा सेण भते ! केवलि पण्णत्त धम्म लभेज्जा सवणयाए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ एव आउकाइयादिसुवि निरतर भाणियव्व

प्रकार असुरकुमार का कथन कहा उस ही प्रकार यावत् स्तनित कुमार तक का कहना यह ११ दण्डक हुए ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकाय के जीव मर कर नरक में उत्पन्न होते हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं अर्थात् उत्पन्न नहीं होते हैं ऐसे ही असुरकुमारादि दशों ही भुवनपति देव का भी कहना अहो भगवन् ! पृथ्वीकाय पृथ्वीकाय में से निरंतर निकल कर पुनः पृथ्वीकाया में उत्पन्न होते हैं क्या ? अहो गौतम ! कितनेक उत्पन्न होते हैं कितनेक उत्पन्न नहीं भी होते हैं अहो भगवन् ! जो पृथ्वीकाय पृथ्वीकाय में उत्पन्न हुवे वह केवली प्रणीत धर्म श्रवणकर प्राप्त कर सकते हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं पृथ्वीकाय का जैसा ही अप्काय तेजस्काय वायुकाय वनस्पतिकाय, बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय तक कहना तिर्यंच पचेन्द्रिय का और मनुष्य का जैसा नेरीये का कहा तैसा कहना

जाव चउरिंदिएसु, पंचिंदियतिरिक्खजोणिए मणुस्सेसु जहाणेरइए, वाणमंतर जोइसिय वेमाणिएसु पडिसेहो ॥ एवं जहा पुढविकाइआ भणिओ तहेव आउकाइओवि वणस्सति काइओवि भाणियव्वो ॥ तेऊकाइएणं भंते ! तेऊकाइएहिंतो अणतरं उव्वट्टित्ता णेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ एवं असुर कुमारेसुवि जाव थणियकुमारसुवि ॥ पुढविकाइय आउ वाउ - वणस्सइ बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिएसु अत्थेगतिए उववज्जा अत्थेगतिए णो उववज्जेज्जा, जेणं भंते ! उववज्जा सेणं केवलि पण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे

और वाणव्यंतर ज्योतिषी वैमानिक का निषेध करना अर्थात् देवता में पृथ्वीकाया आदि के जीव उत्पन्न नहीं होते हैं यों यह जिस प्रकार पृथ्वी काया का अधिकार कहा उस ही प्रकार अप्काया का और वनस्पति काया का अधिकार भी कहना अहो भगवन् ! तेजस्काय तेजस्काय मे निरंतर निकलकर नरक में उत्पन्न होता है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है इस ही प्रकार असुरकुमार से यावत् स्तनित कुमार पर्यंत कहना पृथ्वी, अप्, तेजस वायु, वनस्पति बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरिन्द्रिय में तेजस्काय के जीव निरंतर निकलकर कितनेक उत्पन्न होते हैं और कितनेक नहीं भी होते हैं, जो उत्पन्न होते हैं व केवलि प्रज्ञप्त धर्म के श्रवण नहीं कर सकते हैं अहो भगवन् ! तेजस्काय तेजस्काय से अन्तर निकलकर

तेउकाइएणं भंते! तेउकाइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएसु उववज्जेज्जा? गोयमा! अत्थेगातिए उववज्जेज्जा अत्थेगतिए णो उववज्जेज्जा, जेणं भंते! उववज्जेज्जा सेणं भंते! केवलिपण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए? गोयमा! अत्थेगतिए लभेज्जा अत्थेगतिए नो लभेज्जा ॥ जेणं भंते! केवली पण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए सेणं भंते! केवलिबोहिं बुज्झेज्जा? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे मणुस्स वाणमंतर जोइसियवेमाणिएसु पुच्छा? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे॥ एवं जहेव तेउकाइए णिरंतरं एवं वाउकाइएवि ॥ ॥१॥ बेइंदिएणं भंते! बेइंदिएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता णेरइएसु उववज्जेज्जा? गोयमा!

पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिकपने उत्पन्न होते हैं क्या? अहो गौतम! कितनेक उत्पन्न होते हैं कितनेक नहीं उत्पन्न होते हैं, जो उत्पन्न होते हैं वे केवली भाषित धर्म प्राप्त कर सकते हैं क्या? अहो गौतम! कितनेक कर सकते हैं कितनेक नहीं भी कर सकते हैं अहो भगवन्! जो केवली भाषित धर्म श्रवण कर प्राप्त कर सकते हैं वे धर्म के जानकार होते हैं क्या? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं मनुष्य वाणव्यन्तर ज्योतिषी और वैमानिक में तेउकाय के जीव उत्पन्न नहीं होते हैं जैसे जिस प्रकार तेउकाय का कहा वैसे ही वायुकाय का कहना यह पांच स्थावर के पांच दण्डक हुवे ॥ १ ॥ अहो भगवन्! बेइन्द्रिय बेइन्द्रिय में से निरन्तर निकल कर नारकी में उत्पन्न होते हैं क्या? अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं

जहा पुढविकाइए णवरं मणूसेसु जाव मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा ॥ एवं तेइंदिय चउरिंदियावि जाव मणपज्जवणाणं उप्पाडेज्जा, जेणं मणपज्जव णाणं उप्पाडेज्जा सेणं भंते ! केवलणाणं उप्पाडेज्जा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ ७ ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएणं भंते ! पंचिंदिए तिरिक्खजोणिएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता णेरइएसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगतिए उववज्जेज्जा अत्थेगतिए णो उववज्जेज्जा जेणं भंते ! उववज्जेज्जा सेणं केवलि पण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए ? गोयमा ! अत्थेगतिए

इत्यादि जैसा पृथ्वीकायाका कथन कहा वैसा बेइन्द्रिय का भी कहना जिस में इतना विशेष यावत् मन पर्यव ज्ञान की प्राप्ति करे वहां तक कहना परंतु केवल ज्ञान की प्राप्ति नहीं करे जैसा बेइन्द्रिय का कहा वैसा ही तेइन्द्रिय का और चतुरिन्द्रियका भी कहना यावत् मनुष्य में उत्पन्न हो मन पर्यव ज्ञान तक प्राप्त कर सकते हैं परंतु केवल ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक से निरंतर निकल कर नरक में उत्पन्न होते हैं क्या ? अहो गौतम ! कितनेक उत्पन्न होते हैं कितनेक नहीं भी होते हैं अहो भगवन् ! जो तिर्यंच पंचेन्द्रिय नरक में उत्पन्न होते हैं वे केवलि भाषित धर्म श्रवणकर प्राप्त कर सकते हैं क्या ? अहो गौतम ! कितनेक प्राप्त कर सकते हैं कितनेक

लभेज्जा अत्थेगतिए णो लभेज्जा ॥ जेण भंते ! केवलि पण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए तेण भंते ! केवल बोहिं बुज्झेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगतिए बुज्झेज्जा अत्थेगतिए णो बुज्झेज्जा ॥ जेण भंते ! केवल बोहिं बुज्झेज्जा तेण भंते ! सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा ? हंता गोयमा ! जाव रोएज्जा ॥ जेण भंते ! सद्दहेज्जा जाव रोएज्जा सेण भंते ! आभिणिबोहिय णाण सुयणाण ओहिय णाणाइं उप्पाडेज्जा ? हंता गोयमा ! जाव उप्पाडेज्जा ॥ जेण भंते ! आभिणिबोहिय णाण सुयणाण ओहिय णाणाइं उप्पाडेज्जा

नहीं भी कर सकते हैं [नरक परमाधर्मी देव पूर्व भव के कृत कर्मोंका श्रवण कराते हैं जिस से नरक के जीव मिथ्यात्व का त्याग कर सम्यक् दृष्टि बन जाते हैं) अहो भगवन् ! जो धर्म प्राप्त करते हैं व धर्म के बोधसे बोधित (जानकर) होते हैं क्या ? अहो गौतम ! कितनेक होते हैं कितनेक नहीं भी होते हैं अहो भगवन् ! जो केवली भणित धर्म से बोधित होते हैं व केवली भाषित धर्म को श्रद्धते हैं प्रतीत करते हैं रुची करते हैं क्या ? हां गौतम ! श्रद्धा प्रतीति व रुची करते हैं अहो भगवन् ! जो श्रद्धा प्रतीत रुचि करते हैं व मति ज्ञान श्रुति ज्ञान, अवधि ज्ञान, प्राप्त करते हैं क्या ? अहो गौतम ! तीनों ज्ञान प्राप्त करते हैं अहो भगवन् ! जो तीनों ज्ञान प्राप्त करते हैं व अणुव्रतादि अंगीकार करनेमें समर्थ होते हैं क्या ?

सेण भंते ! सचाएज्जा सीलेत्रा जाव पडिवज्जित्तए ? गोयमा ! णो इणट्ठेसमट्ठे ॥ एव असुरकुमारेसु जाव थणियकुमारेसु ॥ एगिंदियवि गलेंदियसु जहा पुढविकाइए, पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएसु मणुस्सेसुए जहा णेरइए, वाणमंतर जोइसिय वेमाणिएसु जहा णेरइएसु उववज्जाति पुच्छा भाणियाए ॥ एव मणुस्सेसुवि ॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणिए जहा असुरकुमारे ॥८॥ रयणप्पभापुढवि णेरइएणं भंते ! रयणप्पभा पुढवि णेरइए हिंता अणंतरं उव्वट्टित्ता तित्थगरत्तं लभेज्जा ? गोयमा ! अत्थेगातिए लभेज्जा

अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं इस प्रकार असुरकुमार से यावत् स्थनित कुमार तक कहना, एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय का जैसा पृथ्वीकाया का कहा तैसा कहना पंचेन्द्रिय तिर्यंच मानिक का और मनुष्यका जैसा नेरीयेका कहा तैसा कहना, वाणव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिकका जैसा नेरीयाका कहा तैसा कहना, जिस प्रकार तिर्यंच पंचेन्द्रियका कहा तैसा मनुष्यका भी कहना और वाणव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिकका जैसा असुरकुमार दसका का कहा तैसा कहना ॥ ८ ॥ अब पांचवा तीर्थंकर पद प्राप्ति का द्वार कहते हैं—अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी के नेरीये अन्तर रहित निकल कर तीर्थंकर होते हैं क्या ? अहो गौतम ! कितनेक तीर्थंकर होते हैं कितनेक नहीं भी होते हैं अहो भगवन् ! किस कारन एसा कहा कितनेक

अत्थेगातिए णो लभेज्जा ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ अत्थेगातिए लभेज्जा अत्थे गतिए णो लभेज्जा ? गोयमा ! जस्सणं रयणप्पमापुढविणेरइयस्स तित्थगरणाम गोयाइं कम्माइं बद्धाइं पुट्ठाइं कडाइं पट्ठवियाइं णिविट्ठाइं अभिणिविट्ठाइं अभिसमण्णा गताइं उदिण्णाइं, णो उवसताइं हवंति, सेणं रयणप्पमा पुढवि णेरइए रयणप्पभा पुढवि णेरइएहिंतो अणतरं उव्वट्टित्ता तित्थगरत्तं लभेज्जा जस्सणं रयणप्पमापुढवि णेरइयस्स तित्थगर नामगोयाइं णोबद्धाइं जाव णो उदिण्णाइं उवसताइं भवति सेणं

तीर्थंकर होते हैं कितनेक नहीं भी होते हैं ? अहो गौतम ! जिस रत्नप्रभा नरक के नेरीयेने पूर्व भव में तीर्थंकर गोत्र नाम कर्म का उपार्जन किया हो, बंधा हो, स्पर्शा हो कृत्त किया हो प्रविष्ट हो तीव्रानुराग से अनुभव हो विशेष प्रकार से अनुभवा हो सन्मुख आया हो उदय आया हो उपशान्तपन नहीं रहा हो वह रत्नप्रभा नरक का नेरीया रत्नप्रभा नरक से निरन्तर निकलकर तीर्थंकर पद प्राप्त कर सकता है और जिस रत्नप्रभा नरक के नेरीये पूर्व भव में तीर्थंकर गोत्र नामकर्म का बन्ध नहीं किया वह नेरीया वहां से निरन्तर निकलकर तीर्थंकर पद को प्राप्त नहीं होता है इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहा है कि कितनेक रत्नप्रभा नरक के नेरीये निरंतर निकल कर तीर्थंकर पद प्राप्त कर सकते हैं और कितनेक नहीं कर सकते

रयणप्पभा पुढवि णेरइएहिंतो अणतर उव्वट्टित्ता तित्थगरत्त णो लभेज्जा से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चति अत्थेगतिए लभेज्जा अत्थेगतिए णो लभेज्जा ॥ एव जाव वालुयप्पभा पुढवि णेरइएहिंतो तित्थगरत्त लभेज्जा ॥ पकप्पभा पुढवि णेरइएणं भत ! पकप्पभा पुढवि णेरइए हिंतो अणतर उव्वट्टित्ता तित्थगर त्तलभज्जा? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे अतकिरिय पुण करेज्जा ॥ धूमप्पभा पुढवि णेरइएण पुच्छा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे विरतिंपुण लभेज्जा ॥ तमाए भंते ! पुच्छा ? गोयमा !

है जैसा रत्नप्रभा का कहा वैसा ही शर्करप्रभा और वालुकप्रभा का भी कहना अहो भगवन् ! पंकप्रभा पृथ्वी के नरीये पंकप्रभा पृथ्वी से निरंतर निकल कर तीर्थंकरपना प्राप्त कर सकते हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं परंतु केवल ज्ञान प्राप्त कर अन्तक्रिया (मोक्ष) प्राप्त कर सकते हैं धूम्रप्रभा नरक की पृच्छा ? अहो गौतम ! तीर्थंकरपना और केवल ज्ञान तो प्राप्त नहीं कर सकते हैं परंतु सर्व विरति (साधु) पना प्राप्त कर सकते हैं तमप्रभा नरक की पृच्छा ? अहो गौतम ! तीर्थंकर पद केवलज्ञान और साधु पना तो प्राप्त नहीं कर सकते हैं परंतु विरताविरति [श्रावक] पना प्राप्त कर सकते हैं नीचे सातवी नरक की पृच्छा ? अहो गौतम ! तीर्थंकर पद केवलज्ञान साधुपना और श्रावक पना तो नहीं प्राप्त कर

णो इणट्ठे समट्ठे विरयाविरयं पुण लभेज्जा ॥ अहे सत्तमाए पुच्छा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे सम्मत्तं पुण लभेज्जा ॥ असुरकुमारेणं पुच्छा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, अंतकिरियं पुण करेज्जा ॥ एवं णिरंतरं जाव आउकाइए ॥ तेउकाइएणं भंते ! तेउकाइएहिंतो अणंतरं उव्वट्टित्ता मणुस्सेसु उववज्जेज्जा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, केवलि पण्णत्तं धम्मं लभेज्जा सवणयाए, एवं वाउकाइएवि ॥ वणस्सतिकाइएणं पुच्छा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, अंतकिरियं पुण करेज्जा ॥ बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे मणपज्जव णाणं जाव उप्पाडेज्जा, पंचिंदिय

सकते हैं परंतु सम्यक्‌दृष्टी हो सकते हैं असुरकुमार की पृच्छा ? तीर्थंकर पना तो प्राप्त नहीं कर सकते हैं परंतु केवली हो अन्तःक्रिया कर सकते हैं ऐसे ही दशों ही भवनपति का मानना और ऐसे ही पृथ्वीकाय, अप्‌काय वनस्पतिकाय का मानना, अहो भगवन् ! तेजस्काय तेजस्काय से निकल कर मनुष्य में उत्पन्न होते हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं अर्थात् नहीं होते हैं परंतु तिर्यंच होकर केवली प्रणित धर्म श्रवण करना प्राप्त कर सकते हैं ऐसे ही वायुकाय का भी कहना बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चतुरिन्द्रिय की पृच्छा ? अहो गौतम ! तीर्थंकरपना तो प्राप्त नहीं कर सकते हैं परंतु मनःपर्यव ज्ञान तक प्राप्त कर सकते हैं, पंचेन्द्रिय तिर्यंच मनुष्य वाणव्यन्तर ज्योतिषी की पृच्छा ? अहो गौतम ! तीर्थंकर पद

पाविरयं पुण लभेज्जा ॥ अहे सत्तमाए पुच्छा ? गोयमा ! णो
तित्थगरत्ते ॥सक्करप्पमा णु लभेज्जा ॥ असुरकुमारेणं पुच्छा ? गोयमा ! णो इणट्ठे
गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे, २॥ एवं णिरंतरं जाव आउकाइए ॥ तेउकाइएणं भंते !
हिंतो पुच्छा ? गोयमा ! णो इ मणुस्सेसु उववज्जेज्जा? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे, केवलि
हिंतो पुच्छा ? गोयमा ! अत्थेगतिए वाउकाइएवि ॥ वणस्सतिकाइएणं पुच्छा ?
घरत्तं, णवरं सक्करप्पभा पुढवि से पुण करेज्जा ॥ बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदियाणं
वेमाणिएहिंतोय अणुत्तरोववातियवज्ज मणपज्जव णाणं जाव उप्पाडेज्जा, पंचिंदिय

ही चक्रवर्ति का कहना जिस नेरिये ने चक्रवर्ती की पृच्छा ! तीर्थंकर पना वो मात्र नहीं कर
होवे हैं बाकी क नहीं होवे हैं अहो भगवन् ! शर्कर पृथ्वी ही मनपर्यव का जानना और ऐसे ही
चक्रवर्ति पद को माप्त होवे हैं यथा ! अहो गौतम ! यह अर्थ तेजस्काय वायुकाय से निकल कर निकल
पयन्त कहना तिर्यंच मनुष्य की पृच्छा ! अहो गौतम ! यहाँ अर्थात् नहीं होते हैं परंतु विर्यंच होकर
ज्योतिषी वैमानिक की पृच्छा ! अहो गौतम ! कितनेक वनस्पति काय का भी कहना बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय
होते हैं जैसा यह चक्रवर्ति पद प्राप्त करने का चौवीस दंडक ही कर सकते हैं परंतु मनःपर्यव ज्ञान तक
कहना, परंतु इतना विशेष दूसरी शर्कर प्रभा पृथ्वी के भी निकले की पृच्छा ! अहो गौतम ! तीर्थंकर पद
प्राप्तेम के होने का भी कहना परंतु इतना विशेष कि वैमानिक

जहण्णेणं सोहम्मेकप्पे, उक्कोसेणं अच्चुएकप्पे ॥४॥ विराहिय संजमासंजमाणं जहण्णेणं भवणवासीसु उक्कोसेणं जोइसिएसु ॥ ५ ॥ असण्णीणं जहण्णेणं भवणवासीसु उक्कोसेणं वाणमंतरेसु ॥ ६ ॥ तावसाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं जोइसिएसु ॥ ७ ॥ कंदप्पियाणं जहण्णेणं भवणवासीसु उक्कोसेणं सोहम्मेकप्पे ॥ ८ ॥ चरगपरिव्वायगाणं जहण्णेणं भवणवासीसु उक्कोसेणं बंभलोगेकप्पे ॥ ९ ॥ किब्बिसियाणं जहण्णेणं सोहम्मे कप्पे, उक्कोसेणं लंतएकप्पे ॥ १० ॥ तिरिच्छियाणं जहण्णेणं भवणवासीसु, उक्कोसेणं सहस्सारकप्पे ॥ ११ ॥ आजीवियाणं

(श्रमण साधु की अपेक्षा) २ संयम व्रत का अविराधिक जघन्य सौधर्म देवलोक तक जावे उत्कृष्ट सर्वार्थ सिद्ध देवलोक तक जावे, ३ संयम व्रत का विराधिक जघन्य भवनपति देव में उत्कृष्ट सौधर्म देवलोक में द्रौपदी का पूर्व भव सुकुमालिकावत्, ४ संयमासंयम का अविराधिक जघन्य सौधर्म देवलोक उत्कृष्ट अच्युत देवलोक, ५ संयमासंयम का विराधिक जघन्य भवनपति में उत्कृष्ट ज्योतिषी देव में, ६ असंज्ञी तिर्यंच अकाममृत्यु से जघन्य भवनपति देव उत्कृष्ट वाणव्यन्तर देव में, ७ तापस जघन्य भवनपति देव में उत्कृष्ट ज्योतिषी में ८ कंदर्पी देव जघन्य भवनवासी में उत्कृष्ट सौधर्म देवलोक में, ९ चारवाक परिव्राजक जघन्य भवनपति उत्कृष्ट ब्रह्मदेवलोक में, [illegible] भवनवासीमें, १० किल्विषी तीर्थंकर

जहण्णणं भवणवासीसु उक्कोसेण अच्चुएकप्पे ॥ १२ ॥ एव अभिओगाणवि ॥ १३ ॥ सलिंगीण दसण वावण्णगाणं जहण्णेण भवणवासीसु उक्कोसेण उवरिमगे विज्जएसु ॥ १४ ॥ कतिविहेण भंते ! असण्णियाउए पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे असण्णियाउए पण्णत्ते तंजहा णरइयअसण्णियाउए जाव देव असण्णियाउए ॥ असण्णीण भंते ! जीवे किं नरइयाउय पकरेति जाव देवाउय पकरेति ? गोयमा ! णेरइयाउयपि करेंति जाव देवाउयपि करेंति ॥ णरइयाउयं करमाणे जहण्णेण दसवाससहस्साइं उक्कोसेण पलिओवमस्स असखेज्जइ भाग पकरेति॥तिरिक्खजोणिया

भावार्थ के भपर्पवादी भघन्य सौधर्म देवलोक उत्कृष्ट लातक छठ देवलोक तक, ११ तिर्यंच जघन्य भुवनपति में उत्कृष्ट सहस्रार आठवे देवलोक में, १२ आजीविका पंथी गोशालक मतावलम्बी जघन्य उत्कृष्ट अच्युत (बारवे) देवलोक में, १३ एस ही अभियोगिका भी जानना १४ जैन लिंगी सम्यक्त्व भ्रष्ट जघन्य भुवनपति उत्कृष्ट ऊपर का ग्रैवेयक ॥ ११ ॥ बारवा असंज्ञी का द्वार कहते हैं—अहो भगवन् ! असंज्ञी के आयुष्य कितने प्रकार के कहे हैं ? अहो गौतम ! असंज्ञी के चार प्रकार के आयुष्य कहे हैं तद्यथा—१ नेरीया असंज्ञी आयुष्य यावत् देव असंज्ञी आयुष्य असंज्ञी नरीय का आयुष्य करता हुआ जघन्य दस हजार वर्ष का आयुष्य करता है उत्कृष्ट एक पल्योपम के असंख्यातवे भाग का

गोयमा ! पञ्चविहे पण्णत्ते तजहा पुढविकाइयएगिंदिय ॥ एयस्सण भंते ! पणस्सइ काइए एगिंदिय ओरालिय सरीरे ॥ पुढविकाइय एगिंदिय ओरालिय सरीरेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तजहा सुहुम असण्णि एगिंदिय ओरालिय सरीरे बादर पुढविकाइय एगिंदिय ओरालिय सरीरेय ॥ पुढविकाइय एगिंदिय सरीरेण भंते! कतिविह पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविह पण्ण। तजहा-पज्जत्त सुहुम पुढवि काइय एगिंदिय ओरालिय सरीरे, अपज्जत्त सुहुम पुढवि

रूप बनाने वाला वैक्रयशरीर ३ आहारक शरीर आहारक जीव के ही होवे अर्थात् चवदे पूर्व धारक को संशय की निवृति का करता आहारक शरीर ४ तेजो लब्धि प्रगट करने कारनभूत अग्नि समान पुद्गल का समूह आहारे आदि ग्रहण किये पुद्गलों का पचानेवाला तेजस शरीर, और ५ कर्मों के पुद्गल का समुदाय रूप औदारिकादि शरीर निष्पति के कारणभूत यह कार्मन शरीर अहो भगवन् ! औदारिक शरीर कितने प्रकार का कहा है ? अहो गौतम ! पांच प्रकार का कहा है तद्यथा १ एकेन्द्रिय का औदारिक शरीर यावत् पंचेन्द्रिय का औदारिक शरीर. अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय का औदारिक शरीर कितने प्रकार का कहा है ? अहो गौतम ! पांच प्रकार का कहा है तद्यथा—१ पृथ्वी काय एकेन्द्रिय का औदारिक शरीर यावत् वनस्पतिकाय एकेन्द्रिय का औदारिक शरीर अहो

काइयएगिंदिय ओरालियसरीरे ॥ बायर पुढवि काइएवि एव चेव, एवं जाव वणस्सइ काइय एगिंदिए ओरालियसरीरति॥ बेइदिय ओरालिए सरीरेण भंते! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तजहा पज्जत्ता बेइंदिय ओरालिय सरीरेय, अपज्जत्त बेइंदिय ओरालियसरीरेय ॥ एवं तेइंदिय चउरिंदियावि ॥ पंचिंदिय ओरालिय सरीरेण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तजहा तिरिक्खजोणिय पंचिंदिय ओरालिय सरीरेय, मणुस्सपंचिंदियओरालियसरीरेय ॥ तिरिक्खजोणिय पंचिंदिय

भगवन् ! पृथ्वीकाय एकेन्द्रिय का औदारिक शरीर कितने प्रकार का कहा है ? अहो गौतम ! दो प्रकार का कहा है तद्यथा १ सूक्ष्मपृथ्वीकाय एकेन्द्रियका औदारिक शरीर और २ बादर पृथ्वीकाय एकेन्द्रिय का औदारिक शरीर॥ अहो भगवन्! सूक्ष्मपृथ्वीकाय एकेन्द्रियका औदारिक शरीर कितने प्रकारका कहा है? हे गौतम ! दो प्रकारका कहा है तद्यथा १ पर्याप्त सूक्ष्म पृथ्वीकाय एकेन्द्रिय का औदारिक शरीर, और २ अपर्याप्त सूक्ष्मपृथ्वीकाय एकेन्द्रियका औदारिक शरीर ॥ इस प्रकार ही बादरपृथ्वीकाय एकेन्द्रिय के भी दोभेद कहना यह चार भेद जैसे पृथ्वीकायके किये ऐसेही वनस्पति तक पांचोंस्थावरके चार २ भेद कहना॥ अहो भगवन्! बेइन्द्रियके औदारिक शरीरके कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! दोभेद कहे हैं तद्यथा-पर्याप्त बेन्द्रियका औदारिकशरीर, अपर्याप्त बेन्द्रिय का औदारिकशरीर ॥ ऐसेही तेइन्द्रिय और चौरिंद्रिय के औदारिक

ओरालियसरीरेण भंते! कतिविहे पण्णत्ते? गोयमा! तिविहे पण्णत्ते तंजहा जलयर तिरिक्ख जोणियपंचिंदियओरालियसरीरे, थलयर तिरिक्खजोणिय पंचिंदियओरालिय सरीरेय, खहयर तिरिक्खजोणियपंचिंदियओरालियसरीरेय ॥ जलयर तिरिक्खजोणिय पंचिंदिय ओरालिय सरीरेण भंते! कतिविहे पण्णत्ते? गोयमा! दुविहे पण्णत्ते तंजहा समुच्छिम जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय ओरालिय सरीरेय, गब्भवक्कंतियजलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय ओरालिय सरीरेय॥ समुच्छिमजलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय-

शरीर के भेदकहना॥ अहो भगवन्! पंचेन्द्रिय के औदारिक शरीर के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! दो भेद कहे हैं तद्यथा-तिर्यंचयोनिक पंचेन्द्रिय का औदारिक शरीर और मनुष्य पंचेन्द्रिय का औदारिक शरीर अहो भगवन्! तिर्यंच योनिक पंचेन्द्रिय के औदारिक शरीर के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! तीन भेद कहे हैं तद्यथा—१ जलचर तिर्यंच योनिक पंचेन्द्रिय का औदारिक शरीर, स्थलचर तिर्यंच योनिक पंचेन्द्रिय का औदारिक शरीर, खेचर तिर्यंच योनिक पंचेन्द्रिय का औदारिक शरीर अहो भगवन्! जलचर तिर्यंच योनिक पंचेन्द्रिय के औदारिक शरीर के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! दो भेद कहे हैं तद्यथा—समूर्छिम जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक का औदारिक शरीर, और गर्भज

पंचिंदिय ओरालिय सरीरेणं भंते! कतिविहे पण्णत्ते? गोयमा! दुविहे पण्णत्ते तंजहा पज्जत्तग समुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय ओरालिय सरीरेय, अपज्जत्तग समुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय ओरालिय सरीरेय॥ एव गब्भवक्कतिएवि॥ थलयर तिरिक्ख जोणिय पंचिंदिय ओरालिय सरीरेण भंते! कइविहे पण्णत्ते? गोयमा! दुविहे पण्णत्ते तंजहा-चउप्पयथलयर तिरिक्खजोणिय पंचिंदिय ओरालिय सरीरेय, परिसप्प थलयर तिरिक्खजोणिय पंचिंदिय ओरालिय सरीरेय॥ चउप्पयथलयर पंचिंदिय ओरालिय सरीरेणं भंते! कइविहे पण्णत्ते? गोयमा! दुविहे पण्णत्ते तंजहा-समुच्छिम चउप्पद

जलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय का औदारिक शरीर अहो भगवन्! समूर्च्छिम जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक के औदारिक शरीर के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! दो भेद कहे हैं तद्यथा—पर्याप्त समूर्च्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक का औदारिक शरीर और अपर्याप्त समूर्च्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक का औदारिक शरीर इस प्रकार ही गर्भज जलचर के पर्याप्त अपर्याप्त से दो भेद कहना यह चार भेद जलचर के कहे अहो भगवन्! स्थलचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! दो भेद कहे हैं, तद्यथा—१ चतुष्पद स्थलचर पंचेन्द्रिय का औदारिक शरीर और परि

थलयर तिरिक्खजोणिय पंचिदिय ओरालिय सरीरय, गब्भवक्कतिय चउप्पदथलयर तिरिक्खजोणिय पंचिदिय ओरालिय सरीरेय ॥ समुच्छिम चउप्पद थलयर तिरिक्ख जोणिय पंचिदिय ओरालिय सरीरेण भते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा पज्जत्तग समुच्छिम चउप्पयथलयर तिरिक्खजोणिय पंचिदिय ओरालिय सरीरेय अपज्जत्त समुच्छिम चउप्पय थलयर तिरिक्खजोणिय पंचिदिय ओरालिय सरीरेय ॥ एवं गब्भवक्कतिवि ॥ परिसप्प थलयर तिरिक्खजोणिय पंचिदिय ओरालिय सरीरेण भत ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा! दुविहे पण्णत्ते तंजहा-उरपरिसप्प थलयर

सर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय का औदारिक शरीर अहो भगवन् ! चतुष्पद स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक के औदारिक शरीर के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! दो भेद कहे हैं तद्यथा—समूर्च्छिम चतुष्पद स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक का औदारिक शरीर और गर्भज चतुष्पद स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच का औदारिक शरीर अहो भगवन्! समूर्च्छिम चतुष्पद स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच के औदारिक शरीर के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! दो भेद कहे हैं तद्यथा—पर्याप्त समूर्च्छिम चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच योनिक पंचेन्द्रिय का औदारिक शरीर और अपर्याप्त समूर्च्छिम चतुष्पद स्थलचर तिर्यंच योनिक पंचेन्द्रिय का

पंचिदिय तिरिक्खजोणिय ओरालिय सरीरेय, भुअपरिसप्प थलयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिय ओरालिय सरीरेय, उरपरिसप्प थलयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिय ओरालिय सरीरेणं भंते! कतिविहे पण्णत्ते? गोयमा! दुविहे पण्णत्ते तंजहा-समुच्छिम उरपरिसप्प थलयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिय ओरालिय सरीरेय गब्भवक्कंतिय उरपरिसप्प थलयर पंचिदिय तिरिक्खजोणिय ओरालिय सरीरेय ॥ समुच्छिम दुविहे पण्णत्ते तंजहा-अपज्जत्त समुच्छिम उरपरिसप्प थलयर तिरिक्खजोणिय पंचिदिय ओरालिय सरीरेय, पज्जत्त समुच्छिम उरपरिसप्प थलयर तिरिक्खजोणिय पंचिदिय ओरालिय सरीरेय ॥ एवं गब्भवक्कंतिणवि,

औदारिक शरीर ऐसे ही गर्भज के भी दो भेद कहना अहो भगवन्! परिसर्प स्थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक के औदारिक शरीर के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! दो भेद कहे हैं तद्यथा—उरपरिसर्प स्थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक का औदारिक शरीर और भुजपरिसर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक का औदारिक शरीर अहो भगवन्! उरपरिसर्प स्थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक के औदारिक शरीर के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! दो भेद कहे हैं तद्यथा—पर्याप्त और अपर्याप्त ऐसे ही गर्भज के भी पर्याप्त अपर्याप्त दो भेद करना यों चार भेद उरपरिसर्प स्थलचर पंचेंद्रिय के हुवे

उवपरिसप्प चउक्कभेदो॥एवं भुयपरिसप्पावि समुच्छिम गब्भवक्कंतिय पज्जत्ता अपज्जत्ताय ॥ खहयरा दुविहा पण्णत्ता तंजहा समुच्छिमाय, गब्भवक्कंतियाय ॥ समुच्छिमा दुविहा पण्णत्ता तंजहा पज्जत्ताय, अपज्जत्ताय ॥ गब्भवक्कंतियावि पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ मणुस्स पंचिंदिय ओरालियसरीरेण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा समुच्छिममणुस्स पंचिंदिय ओरालियसरीरेय, गब्भवक्कंतिय मणुस्स पंचिंदिय ओरालियसरीरेय । गब्भवक्कंतिय मणुस्स पंचिंदिय ओरालिय सरीरेण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा पज्जत्तग गब्भवक्कंतिय मणुस्स पंचिंदिय ओरालिय सरीरेय, अपज्जत्तग गब्भवक्कंतिय मणुस्स पंचिंदिय

एस ही भुजपरिसप के भी—१ संमूर्च्छिम, २ गर्भज, ३ पर्याप्त और ४ अपर्याप्त चार भेद कहना खेचर भी दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा—संमूर्च्छिम और गर्भज इन के एकेक के दो २ भेद पर्याप्त और अपर्याप्त अहो भगवन् ! मनुष्य पंचेन्द्रिय औदारिक शरीर के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! दो भेद कहे हैं तद्यथा—१ संमूर्च्छिम मनुष्य पंचेन्द्रिय का औदारिक शरीर और गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रिय का औदारिक शरीर इन में संमूर्च्छिम के भी दो भेद पर्याप्त और अपर्याप्त, ऐसे ही गर्भज के भी दो भेद

ओरालियसरीरेय।।१॥ ओरालियसरीरेणं भंते ! किं संठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! णाणासंठाण संठिए पण्णत्ते ॥ एगिंदिय ओरालियसरीरेणं भंते ! किंसंठिए ? गोयमा ! णाणासंठाणसंठिए पण्णत्ते ॥ पुढविकाइय एगिंदिय ओरालियसरीरेणं भंते ! किंसंठिए पण्णत्ते गोयमा ! मसूर चंद संठाण संठिए एवं सुहुम पुढविकाइयाणवि, बादराणवि एवंचेव, पज्जत्ता पज्जत्ताणवि एवंचेव ॥ आउकाइयएगिंदिय ओरालिय सरीरेण भंते ! किं संठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! थिबुगबिंदु संठाण संठिए पण्णत्ते, एवं सुहुम बादर पज्जत्ता

पर्याप्त और अपर्याप्त यह औदारिक शरीर के भेदानुभेद का प्रथम द्वार हुआ ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! औदारिक शरीर किस संस्थान से संस्थित होता है ? अहो गौतम ! अनेक प्रकार के संस्थान से संस्थित है अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय का औदारिक शरीर किस संस्थान से संस्थित है ? अहो गौतम ! अनेक प्रकार के संस्थान से संस्थित है अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया एकेन्द्रिय का औदारिक शरीर किस संस्थान से संस्थित है ? अहो गौतम ! मसूर का अपदल (दाल) तथा चंद्रमा के संस्थान से संस्थित पृथ्वीकाया के जीवों का शरीर है सूक्ष्म बादर पर्याप्त अपर्याप्त पृथ्वीकाय का भी ऐसा ही कहना अप्काय का स्तिबुकबिन्दु—पानी के बुदबुदे के संस्थान से संस्थित है, तेउकाय का शरीर सूई के भारे के जैसे संस्थान से संस्थित है, वायुकाय का

पज्जत्ताणवि ॥ तउकाइय एगिंदिय उरालिय मुच्छिम गब्भवक्कंतिय पज्जत्ता अपज्जत्ताय ॥ गोयमा ! सूईकलाव सठाण सठिए , गब्भवक्कंतियाय ॥ समुच्छिमा दुविहा अपज्जत्ताणवि ॥ वाउकाइयाणवि पडागासठा क्कंतियाणवि पज्जत्ताय अपज्जत्ताय ॥ मणुस्स अपज्जत्ताणवि ॥ वणप्फतिकाइयाण णाणा पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविह पण्णत्ते पज्जत्ता अपज्जत्ताणवि ॥ बेइंदिय ओरालिय सरीरेय, गब्भवक्कंतिय मणुस्स पंचिंदिय गोयमा ! हुंडसठाणसठिए पण्णत्ते, एव पणुस्स पंचिंदिए ओरालिय सरीरेणं

ध्वजा पताका के सस्थान से सस्थित है और वनस्पति दुविह पण्णत्ते तजहा-पज्जत्तग गब्भव पृथ्वीकाय के सूक्ष्म बादर पर्याप्त अपर्याप्त चार भेद कहना पज्जत्तग गब्भवक्कंतिय मणुस्स पंचिंदिय अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय का औदारिक शरीर किस सस्थ पर्याप्त और ४ अपर्याप्त चार भेद कहना ऊपर से सस्थित है, एस ही तेइन्द्रिय चौरिंद्रिय तीनों के पर्या इन का एकेक के दो २ भेद पर्याप्त और अप- कहना अहो भगवन् ! तिर्यंच पंचेन्द्रिय के औदारिक के कितने भेद कहे है ? अहो गौतम ! दो छ ही प्रकार का सस्थान कहा है तद्यथा—१ समचतुस्र औदारिक शरीर और गर्भज मनुष्य पंचेन्द्रिय का सस्थान, ४ वामन सस्थान, ५ कुब्ज सस्थान और ६ हुं और अपर्याप्त, ऐसे ही गर्भज के भी दो भेद

क्षियाणत्रि॥ पांचदिय तिरिक्खजोणिय ओरालि
गोयमा ! छव्विहे सठाणसठिए पण्णत्ते तजहा
सठाणसठिए एव पज्जत्तापज्जत्ताणवि, समुच्छि
सरीरणं भते ! किसठाणसठिए पण्णत्त ?
पज्जत्तापज्जत्ताणत्रि ॥ गब्भवक्कतिय तिरिक्ख
भते ! किं सठाणसठिए पण्णत्ते ? गोयमा !

भपयाप्त का भी कहना अहो भगवन् ! समूर्छिम
यथा सस्थान है ? अहो गौतम ! हुडक सस्थान स सस्थित
भगवन् ! गर्भज तिर्यंच योनिक पचेन्द्रिय के औदारि
ही मकार के सस्थान स सस्थित है तद्यथा—समचतु
अपर्याप्त का भी कहना इस मकार सस्थान आश्रिय
मलचर पचन्द्रिय तिर्यंच योनिक के औदारिक शरीर
मकार के सस्थान स सस्थित है, तद्यथा—समचतुस्र

क सठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! णाणासठाण
किंसठिए ? गोयमा ! णाणासठाणसठिए
ण भते ! किंसठिए पण्णत्ते गोयमा ! मसूर
णत्रि, बादराणत्रि एवचेत्र, पज्जत्ता
ओरालिय सरीरेण भते ! किं सठिए
पण्णत्ते, एव सुहुम बादर पज्जत्ता

द्रि का प्रथम द्वार हुवा ॥ १ ॥ अहो भगवन् !
हो गौतम ! अनेक प्रकार के सस्थान स सस्थित
स्थान स सस्थित है ? अहो गौतम ! अनेक प्रकार
यका औदारिक शरीर किस सस्थान से सस्थित है ?
न से सस्थित पृथ्वीकाया के जीवों का शरीर है
। अप्काय का स्तिबुकबिन्दू—पानी के बुदबुदे के
जैसे सस्थान से सस्थित है, वायुकाय का

समचउरससंठाणसंठिए जाव हुंडसंठाण संठिए, एवं पज्जत्ता अपज्जत्ताणवि, एवं मेसे तिरिक्खजोणिया ओहियाणं णव आलावगा ॥ जलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय ओरालियसरीरेणं भंते ! किं संठाणसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विह संठाणसंठिए पण्णत्ते तंजहा समचउरंस जाव हुंडे, एवं पज्जत्ताऽपज्जत्ताणवि, ॥ समुच्छिम जलयरा हुंडसंठाणसंठिए एतेसिं चेव पज्जत्तापज्जत्ताणवि एवंचेव गब्भवक्कंतिय जलयरा छव्विहे संठाणसंठिए, एवं पज्जत्तापज्जत्ताणवि, एवं जलयराणवि णवसुत्ताणि

अपर्याप्त का भी कहना यों यह तिर्यंच योनिक के औधिक नव आलापक (१ समुच्चय तिर्यंच का, २ समुच्चय तिर्यंच के पर्याप्त का और समुच्चय तिर्यंच के अपर्याप्त का यह ३ आलापक समुच्चय तिर्यंच के कहे, ऐसे ही ३ आलापक समूर्च्छिम तिर्यंच के और ३ आलापक गर्भज तिर्यंच के सब ९ हुवे) अहो भगवन्! जलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक के औदारिक शरीर किस संस्थान से संस्थित है? अहो गौतम! छ ही संस्थान से संस्थित है ऐसे ही पर्याप्त अपर्याप्त भी छ ही संस्थान से संस्थित है, समूर्च्छिम जलचर और इस के पर्याप्त अपर्याप्त एक हुंड संस्थान से संस्थित है गर्भज जलचर और इस के पर्याप्त अपर्याप्त छ ही संस्थान से संस्थित है यों ९ आलापक जलचर के भी कहना ऐसे ही नव आलापक चतुष्पद

न्न चउप्पय थलयराणवि, एव उरपरिसप्पथलयराणवि, भुयपरिसप्पथलय॰।

एवं खहयराणवि णवसूराणवि णवरं सव्वत्थ समुच्छिमा हुंडसंठाणसठिया भाणि यव्वा इयर छसुवि ॥ मणुस्स पंचिंदिय ओरालियसरीरण भत ! किं सठाणसंठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विह सठाणसठिए पण्णत्ते तजहा समचउरंसे जाव हुंड, पज्जत्तापज्जत्ताणवि एव चेव गब्भवक्कतियाणवि एव चेव पज्जत्तापज्जत्तगाणवि एव चेव ॥ समुच्छिमाण पुच्छा ? गोयमा ! हुंडसठाणसठिया ॥ २ ॥ ओरालिय सरीरस्सण भत ! कमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अगुलस्स

स्थलचर के, नव आलापक उरपरिसर्प स्थलचर के, नव आलापक भुजपरिसर्प स्थलचर के और ऐसे ही नव आलापक खेचर तिर्यंच के सर्व स्थान समूर्छिम के हुंडक संस्थान कहना और गर्भज के छ ही संस्थान कहना अहो भगवन् ! मनुष्य पंचेन्द्रिय का औदारिक शरीर किस संस्थान से संस्थित कहा है ? अहो गौतम ! छ ही प्रकार के संस्थान से संस्थित कहा है तद्यथा—१ समचतुस्र यावत् हुंडक ऐसे ही पर्याप्त अपर्याप्त के भी छ ही संस्थान कहना और गर्भज मनुष्य के तथा पर्याप्त अपर्याप्त के भी छ छ संस्थान कहना, समूर्छिम मनुष्य के और संमूर्छिम के अपर्याप्त के एक हुंडक संस्थान कहना ॥ २ ॥ अब अवगाहना द्वार कहते हैं—अहो भगवन् ! औदारिक शरीर की

असंखेज्जइभाग उक्कोसेण सातिरेग जोयणसहस्स ॥ एगिंदिय ओरालियस्सवि एव चेव जहा ओहियस्स ॥ पुढविकाइय एगिंदिय ओरालियसरीरस्स भंते ! के महालिया पुच्छा? गोयमा ! जहण्णणवि उक्कोसेणवि अगुलस्स असंखेज्जइभाग, एवं अपज्जत्तगाण वि पज्जत्तगाणवि एवं सुहुमाण पज्जत्तापज्जत्ताणवि, बायराण पज्जत्तापज्जत्ताणवि एवं एसो नव भेदो ॥ जहा पुढविकाइयाण तहा आउकाइयाण, तेउकाइयाणवि, वाउकाइयाणवि ॥ वणस्सइकाइय ओरालियसरीरस्स णं भंते ! के महालिया सरीरो गाहणा पण्णत्ता ? जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जइभाग उक्कोसेण सातिरेगं जोयणसहस्स

कितनी बडी अवगाहना कही है ? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट कुछ अधिक एक हजार योजन की एकेन्द्रिय के औदारिक शरीर की भी इतनी ही अवगाहना कहना अहो भगवन् ! पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय की कितनी बडी अवगाहना कही है ? अहो गौतम ! जघन्य उत्कृष्ट अंगुल के असंख्यातवे भाग, ऐसे ही अपर्याप्त की और पर्याप्त की भी कहना, यों तीन सूत्र हुवे ऐसे ही समुच्चय सूक्ष्म की और सूक्ष्म के पर्याप्त अपर्याप्त की भी कहना यह ६ सूत्र हुवे और ऐसे ही समुच्चय बादर की तथा बादर के पर्याप्त अपर्याप्त की भी कहना यह पृथ्वीकाया के भी ... जैसे पृथ्वीकाया के ... पर्याप्त अपर्याप्त की अवगाहना ... ऐसे ही ... के

जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जतिभाग उक्कोसेण सातिरेग जाव

पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं उक्कोसेणं जोयणसहस्स सातिरेग पज्जत्ताणवि एवं चेव, अपज्जत्ताण जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जतिभाग, सहुमाण पज्जत्ता अपज्जत्ताणय तिण्हवि जहण्णेणवि उक्कोसणवि अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं ॥ बेइंदिय ओरालिय सरीरस्सण भंते ! के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जतिभाग उक्कोसेण बारसजोयणाइं

भी ० सूत्र, तेजस्काय के भी नव भेद और वायुकाया के भी ० सूत्र कहना अहो भगवन् ! वनस्पति काया के औदारिक शरीर की कितनी अवगाहना कही है ? अहो गौतम जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट कुछ अधिक एक हजार योजन की क्यों कि समुद्र एक हजार योजन के ऊंडे हैं उन के पानी के ऊपर कमल पुष्प ठरे हुवे हैं अपर्याप्त वनस्पति की जघन्य उत्कृष्ट अंगुल के असंख्यातवे भाग पर्याप्त की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट कुछ अधिक एक हजार योजन की बादर वनस्पति की पृच्छा ! अहो गौतम ! जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन झाजेरी, बादर पर्याप्त की भी इतनी ही कहना अपर्याप्त की जघन्य उत्कृष्ट अंगुल के असंख्यातवे भाग की कहना सूक्ष्म

एवं सव्वत्थवि अपज्जत्तयाण अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं जहण्णेणवि उक्कोसेणवि, पज्जत्तगाण जहेव ओरालियस्स ओहियस्स एवं तेइंदियाणवि तिण्णिगाऊयाइं, चउरिंदियाणवि चत्तारिगाऊयाइं, पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं जोयणसहस्सं, एवं समुच्छिमाण एवं गब्भवक्कंतियाणवि एवं चेव णवभेदो भाणियव्वो ॥ एवं जलयराणवि जोयणसहस्सं णवभेदो थलयराणवि णवभेदो, उक्कोसेण छग्गाउयाइं पज्जत्ताणवि एवं चेव ॥ समुच्छिमाण पज्जत्ताणय उक्कोसेण गाउयपुहत्तं, गब्भवक्कंतियाण उक्कोसेणं छ गाउयाइं, पज्जत्तगाणय ओहिय चउप्पय थलयराण पज्जत्तय गब्भवक्कंतिय पज्जत्तयाण

वनस्पति की और सूक्ष्म के पर्याप्त अपर्याप्त की जघन्य उत्कृष्ट अंगुल के असंख्यातवे भाग की कहना अहो भगवन्! बेन्द्रिय के औदारिक शरीर की कितनी अवगाहना कही है? अहो गौतम! जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट बारा योजन की, यों सर्व स्थान अपर्याप्त की तो अंगुल के असंख्यातवे भाग अवगाहना कहना और पर्याप्त की तेन्द्रिय की तीनगाऊकी, चौरिन्द्रिय की चार गाऊकी, समुच्चय तिर्यंच पंचेन्द्रिय की उत्कृष्ट एक हजार योजन की, ऐसे ही समूर्छिम की और गर्भज की दोनों की हजार २ योजन की यह नव भद समुच्चय तिर्यंच पंचेन्द्रिय के हुवे ऐसे ही जलचर पंचेन्द्रिय की भी उत्कृष्ट एक हजार योजन की है जिस के भी नव प्रकार [illegible] (१ समुच्चय [illegible], २ पर्याप्त, ३ अपर्याप्त, ४ गर्भज, ५

प उक्कोसेग छगाउयाई, समुच्छिमाणं पज्जत्ताणय गाउयपुहुत्त उक्कोसेणं एवं, उरपरिसप्पाणवि, ओहिय गब्भवक्कंतिय पज्जत्तयाण जोयणसहस्सं समुच्छिमाण जोयणपुहत्त, भुयपरिसप्पाणं ओहिय गब्भवक्कंतिय उक्कोसेण गाउयपुहुत्त, समुच्छिमाण धणुयपुहत्त खहयराणं ओहिय गब्भवक्कंतियाण समुच्छिमाणय तिण्हवि उक्कोसेण धणुहपुहत्तं इमाओ संगहणिगाहाओ—जोयणसहस्सछगाउयाइं, ततोयजोयणसहस्स

अपर्याप्त ७ समूर्च्छिम पर्याप्त और ९ अपर्याप्त पर्याप्त] स्थलचर के भी ९ आलापक कहना जिस में गर्भज पर्याप्त की उत्कृष्ट ६ गाऊकी अवगाहना कहना, और समूर्च्छिम पर्याप्त की उत्कृष्ट गाउ पृथक्त्व की कहना गर्भज पर्याप्त की भी उत्कृष्ट ६ गाउ की कहना ओघिक चतुष्पद स्थलचर की व पर्याप्त गर्भज की ६ गाऊकी, समूर्च्छिम पर्याप्त की पृथक्त्व गाउ की, ऐसे ही उरपर्प की ओघिक तथा गर्भज पर्याप्त की हजार योजन की, समूर्च्छिम की प्रत्यक योजन की, भुजपरिसर्पकी ओघिक तथा गर्भज की उत्कृष्ट पृथक्त्व गाऊ की, समूर्च्छिम की धनुष्य पृथक्त्व की, खेचर की ओघिक तथा गर्भज की और समूर्च्छिम की उत्कृष्ट पृथक्त्व धनुष्य की सब तिर्यंच पंचेन्द्रिय की संक्षेप में अवगाहना दर्शाते हुए दूसरी गाथा कहते हैं—जलचर की हजार योजन की, चतुष्पद स्थलचर की ६ गाऊ की, उरपरि सर्प थलचर की हजार योजन की, भुजपर की पृथक्त्व गाऊ की, खेचर की पृथक्त्व धनुष्य की,

गाउपुहत्त मुयपरि, धणुहपुहत्तच पक्खीसु ॥ १ ॥ जोयणसहस्स गाउपुहत्त तत्तोय जोयण पुहत्त ॥ दोण्हतु धणुहपुहत्त, समुच्छिमहोइ उच्चत्त ॥ २ ॥ मणुस्सोरालिय सरीरस्सण भते ! क महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा! जहण्णेण अगुलस्स असखज्जति भाग, उक्कोसेण तिण्णिगाउयाइ, एव पज्जत्ताणवि, अपज्जत्ताण जहण्णेणवि

गर्भज की उत्कृष्ट अवगाहना कही अब समूर्च्छिम की कहते हैं—जलचर की हजार योजन की, चतुष्पद स्थलचर की प्रत्येक गाऊकी, उरपरिसर्प की प्रत्येक योजन की, भुजपर की और खेचर की धनुष्य प्रत्येक की अवगाहना है अब मनुष्य की अवगाहना कहते हैं अहो भगवन्! मनुष्य का उदारिक शरीर कितना बड़ा कहा है? अहो गौतम! जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट तीन गाउकी, एम ही पर्याप्त मनुष्य की भी कहना, अपर्याप्त मनुष्य की जघन्य उत्कृष्ट अंगुल के असंख्यातवे भाग की, ऐसे ही समूर्च्छिम मनुष्य की भी जघन्योत्कृष्ट अंगुल के असंख्यातवे भाग, गर्भज पर्याप्त की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग की उत्कृष्ट तीन गाउ की अब सर्व से मनुष्य की अलग २ अवगाहना कहते हैं इस में सब स्थान जघन्य अवगाहना अंगुल के असंख्यातवे भाग जानना और उत्कृष्ट देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्र के मनुष्य की ३ गाउ की, हरीवास रम्यकवास मनुष्य की २ गाउ की, हेमवय एरणवय मनुष्य की १ गाउ की, अन्तरद्वीप के मनुष्य की ८०० धनुष्य की, महाविदेह क्षेत्र के मनुष्य

उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जति भाग समुच्छिमाण जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जति भाग गब्भवक्कंतियाण पज्जत्ताणय जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जति भाग, उक्कोसेण तिण्णिगाउयाई ॥ २ ॥ वेउव्विय सरीरेण भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा एगिंदियवेउव्विय सरीरय, पंचिंदियवेउव्वियसरीरेय जति एगिंदियवेउव्वियसरीरय किं वाउकाइय एगिंदियवेउव्वियसरीरय अवाउकाइय एगिंदिय वेउव्वियसरीरेय ? गोयमा ! वाउकाइय एगिंदिय वेउव्विय

की ५०० धनुष्य की भरत एरवत क्षेत्र में पहिले बैठते आरे तीन गाउ की उतरते दो गाउ की, दूसरे बैठते आरे दो गाउ की उतरते एक गाउ की, तीसरे बैठते आरे एक गाउ की, उतरते ५०० धनुष्य की, चौथे बैठते आरे ५०० धनुष्य की उतरते ७ हाथ की पांचवे बैठते आरे ७ हाथ की उतरते १ हाथ की, छठे बैठते १ हाथ की उतरते एक हाथ में कुछ कम की उत्सर्पिणी काल में, प्रथम बैठते आरे में कुछ कम एक हाथ की उतरते एक हाथ की, दूसरे बैठते आरे एक हाथ की उतरते ७ हाथ की, तीसरे बैठते आरे ७ हाथ की, उतरते ५०० धनुष्य की, चौथे बैठते ५०० धनुष्य की उतरते एक गाउ की, पांचवे बैठते एक गाउ की उतरते दो गाउ की और छठे बैठते दो गाउ की और उतरते तीन गाउ की यह औदारिक शरीर का अधिकार समाप्त हुआ ॥ ३ ॥ अब वैक्रय शरीर का कहते हैं-अहो भगवन् ! वैक्रय शरीर कितने प्रकार के कहे हैं ? अहो गौतम ! वैक्रय शरीर दो प्रकार के कहे हैं,

सरीरय, णो अवाऊकाइय एगिंदिय वेउव्वियसरीरेय, जइ वाऊकाइय एगिंदिय वेउव्विय सरीर, किं सुहुमवाउकाइय एगिंदिय वेउव्विय सरीरे, बादर वाऊकाइय एगिंदिय वेउव्विय सरीरे ? गोयमा ! णो सुहुमवाऊकाइय एगिंदिय वेउव्वियसरीरे, बादर वाऊकाइय एगिंदिय वेउव्वियसरीरे ॥ जइ बादर वाऊकाइय एगिंदिय वेउव्विय सरीरे, किं पज्जत्तय बादर वाऊकाइय एगिंदिय वेउव्विय सरीरे, अपज्जत्तय बादर वाऊकाइय एगिंदिय वेउव्विय सरीरे ? गोयमा पज्जत्तय बादर वाऊकाइय एगिंदिय वेउव्वियसरीर, णो अपज्जत्तय बादर वाऊकाइय एगिंदिय वेउव्विय सरीरे ॥ जइ पंचिंदिय वेउव्वियसरीर किं णेरइय पंचिंदिय वेउव्वियसरीरे जाव किं देवपंचिंदिय

उपया—एकेन्द्रिय का वैक्रेय शरीर और पंचेन्द्रिय का वैक्रेय शरीर यदि एकेन्द्रिय के वैक्रय शरीर हो तो क्या वायु काया के वैक्रेय शरीर है कि वायुकाया विना अन्य एकेन्द्रिय के वैक्रय शरीर है ? अहो गौतम ! वायु काया के ही वैक्रय शरीर है अन्य एकेन्द्रिय के नहीं है यदि वायुकाया एकेन्द्रिय के वैक्रय शरीर है तो क्या सूक्ष्म वायुकाया एकेन्द्रिय के वैक्रय शरीर है की बादर वायुकाया एकेन्द्रिय के वैक्रय शरीर है ? अहो गौतम ! सूक्ष्म वायुकाया एकेन्द्रिय के वैक्रेय शरीर नहीं है परंतु बादर वायुकाया एकेन्द्रिय के वैक्रय शरीर है यदि बादर वायुकाया एकेन्द्रिय के वैक्रय शरीर है . .

वेउव्वियसरीर ? गोयमा ! णेरइय पंचिंदिय वेउव्वियसरीरेवि जाव देव पंचिंदिय वेउव्विय सरीरवि ॥ ॥ जइ णेरइयपंचिंदिय वेउव्विय सरीरे किं रयणप्पभा पुढवि णेरइय पंचिंदिय वेउव्विय सरीर जाव किं अहेसत्तमा पुढवि णेरइय पंचिंदिय वेउव्विय सरीरे ? गोयमा ! रयणप्पभा पुढवि णेरइय पंचिंदिय वेउव्वियसरीरेवि जाव अहेसत्तमा पुढवि णेरइय पंचिंदिय वेउव्विय सरीरवि ॥ जइ रयणप्पभा पुढवि णेरइय वेउव्विय सरीर किं पज्जत्तग रयणप्पभा पुढवि णेरइए पंचिदिय वेउव्विय सरीरे, अपज्जत्तग रयणप्पभा णेरइए पंचिंदिए वेउव्विय सरीरे ? गोयमा पज्जत्तग रयणप्पभा पुढवि णेरइय पंचिंदिय वेउव्विय सरीरेवि अपज्जत्तग रयणप्पभा पुढवि णेरइय पंचिंदिय

वायुकाया एकेन्द्रिय के वैक्रय शरीर है कि अपर्याप्त बादर वायुकाया एकेन्द्रिय वैक्रय शरीर है ? अहो गौतम ! पर्याप्त बादर वायुकाया एकेन्द्रिय के वैक्रेय शरीर है परंतु अपर्याप्त बादर वायुकाया एकेन्द्रिय के वैक्रय शरीर नहीं है यदि पंचेन्द्रिय के वैक्रेय शरीर है तो क्या नारकी पंचेन्द्रिय के वैक्रय शरीर है कि तिर्यंच पंचेन्द्रिय के वैक्रेय शरीर है कि मनुष्य पंचेन्द्रिय के वैक्रेय शरीर है कि देव पंचेन्द्रिय के वैक्रेय शरीर है ? अहो गौतम ! चारों ही पंचेन्द्रिय के वैक्रेय शरीर

सहस्सार संखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय वेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! जलयर संखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय वेउव्वियसरीरे- ? थलयर संखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय वेउव्वियसरीरेवि, र संखेज्जवासाउय पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय वेउव्विय सरीरेवि ॥ जइ जलयर ज्जवासाउय वेउव्वियसरीरे किं पज्जत्तग जलयर संखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतिय चिंदिय तिरिक्खजोणिय वेउव्वियसरीरे, अपज्जत्तग जलयर संखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय वेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! पज्जत्तग जलयर संखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय वेउव्वियसरीरे

[illegible] शरीर है परंतु असंख्यात वर्षायुष्य गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंच के वैक्रेय शरीर नहीं है यदि संख्यात वर्षायुष्य गर्भज पंचेन्द्रिय तिर्यंच के वैक्रेय शरीर है तो क्या चलचर संख्यात वर्षायुष्य गर्भज पंचेन्द्रिय [illegible] के वैक्रेय शरीर है कि खेचर संख्यात वर्षायुष्य गर्भज के वैक्रेय शरीर है? अहो गौतम! जलचर संख्यात वर्षायुष्य के वैक्रेय शरीर है परंतु असंख्यात वर्षायुष्य के वैक्रेय शरीर नहीं है. यदि जलचर संख्यात वर्षायुष्य के वैक्रेय शरीर है तो क्या पर्याप्त के वैक्रेय शरीर है कि अपर्याप्त के वैक्रेय शरीर है, [illegible]

णो अपज्जत्तग जलयर संखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय वेउव्विय सरीरे ॥ जइ थलयर संखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय वेउव्विय सरीरे किं चउप्पद थलयर संखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय वेउव्विय सरीरे, परिसप्प थलयर संखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय वेउव्विय सरीरे ? गोयमा ! चउप्पय थलयर संखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणिय वेउव्विय परिसप्प जाव सरीरेवि एवं सव्वेसिं णेयव्वं ॥ जाव सहस्सा-राण पज्जत्ताणं णो अपज्जत्ताण ॥ जदि मणुस्स पंचिंदिय वेउव्विय सरीरे किं समुच्छिम मणुस्स पंचिंदिय वेउव्विय सरीरे गब्भवक्कंतिय मणुस्स पंचिंदिय वेउव्विय सरीरे ?

वैक्रेय शरीर है ? अहो गौतम ! तीनों प्रकार के तिर्यंच के वैक्रेय शरीर है यदि जलचर के वैक्रेय शरीर है तो क्या पर्याप्त के है कि अपर्याप्त के है ? अहो गौतम ! पर्याप्त के है परंतु अपर्याप्त के नहीं है यदि स्थलचर के वैक्रेय शरीर है तो क्या चतुष्पद स्थलचर के वैक्रेय शरीर है कि परिसर्प स्थलचर के वैक्रेय शरीर है ? अहो गौतम ! दोनों ही के ही वैक्रेय शरीर है इस प्रकार ही सब ही के कहना यावत् खेचर पर्याप्त के वैक्रेय शरीर है परंतु अपर्याप्त के नहीं है यदि मनुष्य के वैक्रेय शरीर है तो क्या समूर्च्छिम मनुष्य के

गोयमा ! णो समुच्छिम मणुस्स पंचिंदिय वेउव्विय सरीरे गब्भवक्कंतिय मणुस्स पंचिंदिय वेउव्विय सरीर ॥ जइ गब्भवक्कंतिय मणुस्स पंचिंदिय वेउव्वियसरीरे किं कम्मभूमग गब्भवक्कंतिय मणुस्स पंचिंदिय वेउव्विय सरीर अकम्मगभूमिग गब्भवक्कंतिय मणुस्स पंचिंदिय वेउव्वियसरीरे, अंतरदीवग मणुस्स पंचिंदिय वेउव्वियसरीर ? गोयमा ! कम्मभूमिग गब्भवक्कंतिय मणुस्स पंचिंदिय वेउव्विय, ॥ णो अकम्मभूमग गब्भवक्कंतिय मणुस्सपंचिंदिय वेउव्वियसरीरे णो अंतरदीवग गब्भवक्कंतिय मणुस्स पंचिंदिय वेउव्विय सरीरे ॥ जइ कम्मभूमग गब्भवक्कंतिय मणुस्स पंचिंदिय वेउव्विय सरीरे किं संखेज्जवासाउय कम्मभूमग गब्भवक्कंतिय मणुस्स पंचिंदिय वेउ

वैक्रेय शरीर है कि गर्भज मनुष्य के वैक्रेय शरीर है ? अहो गौतम ! समुच्छिम मनुष्य के वैक्रेय शरीर नहीं है परंतु गर्भज मनुष्य के वैक्रेय शरीर है यदि गर्भज मनुष्य के वैक्रेय शरीर है तो क्या कर्मभूमि के मनुष्य के वैक्रेय शरीर है कि अकर्मभूमी मनुष्य के वैक्रेय शरीर है कि अन्तरद्वीप के मनुष्य के वैक्रेय शरीर है ? अहो गौतम ! कर्मभूमी मनुष्य के वैक्रेय शरीर है बाकी दोनों स्थान के मनुष्य के वैक्रेय शरीर नहीं है यदि कर्मभूमी के मनुष्य के वैक्रेय शरीर है तो

सरीरे ? गोयमा ! सखेज्जवासाउय कम्मभूमग गब्भवक्कतिय मणूस्स पंचिंदिय वेउव्विय सरीरे णो असखेज्जवासाउय कम्मभूमग गब्भवक्कतिय मणूस्स पंचिंदिय वेउव्विय सरीर ॥ जइ सखेज्जवासाउय कम्मभूमग गब्भवक्कतिय मणूस्स पंचिंदिय वेउव्विय सरीरे किं पज्जत्तय सखेज्जवासाउय गब्भवक्कतिय मणूस्स पंचिंदिय वेउव्वियसरीरे, अपज्जत्त सखेज्जवासाउय गब्भवक्कतिय मणूस्स पंचिंदिय वेउव्वियसरीरे ? गोयमा ! पज्जत्तग सखेज्जवासाउय कम्मभूमग घब्भवक्कंतिय मणूस्स पंचिंदिय वेउव्विय सरीरे णो अपज्जत्तग सखेज्जवासाउय कम्मभूमग गब्भवक्कतिय मणस्स पंचिंदिय वेउव्विय

के वैक्रेय शरीर है कि असंख्यात वर्षायुवाले कर्मभूमी मनुष्य के वैक्रेय शरीर है ? अहो गौतम ! संख्यात वर्षायुवाले कर्मभूमीय मनुष्य के वैक्रय शरीर है परन्तु असंख्यात वर्षायुवाले मनुष्य के वैक्रिय शरीर नहीं है. यदि संख्यात वर्षायुवाले के कर्मभूमी मनुष्य के वैक्रेय शरीर है तो क्या पर्याप्त के है कि अपर्याप्त के है ? अहो गौतम ! पर्याप्त के है परंतु अपर्याप्त के नहीं ॥ अहो भगवन् ! यदि देवता के वैक्रेय शरीर है तो क्या भुवनपति देवता के है कि वाणव्यन्तर देवता के ज्योतिषी देवता है कि वैमानिक देवता के है ? अहो गौतम ! चारों जाति के देवता के वैक्रय शरीर है

सरीरे ॥ जइ देव पंचिंदिय वेउव्विय सरीरे किं भवणवासी देव पंचिंदिय वेउव्विय सरीरे जाव वेमाणिय देव पंचिंदिय वेउव्विय सरीरे ? गोयमा ! भवणवासी देव पंचिंदिय वेउव्विय सरीरे जाव वेमाणिय देव पंचिंदिय वेउव्वियसरीरेवि ॥ जइ भवण वासी देवपंचिंदिय वेउव्विय सरीरे किं असुरकुमार भवणवासी देव पंचिंदिय वेउव्विय सरीरे जाव थणियकुमार भवणवासी देव पंचिंदिय वेउव्विय सरीरे ? गोयमा ! असुरकुमारस्सवि जाव थणियकुमारस्सवि वेउव्विय सरीरे ॥ जइ असुरकुमार देव पंचिंदिय वेउव्विय सरीरे किं पज्जत्तग असुरकुमार देव पंचिंदिय वेउव्विय सरीरे अपज्जत्तग असुरकुमार देव पंचिंदिय वेउव्विय सरीरे ? गोयमा ! पज्जत्तग असुर देव भवणवासी पंचिंदिय वेउव्विय सरीरेवि अपज्जत्तग असुरकुमार देव

चारे भवनपति देवता के वैक्रेय शरीर है तो असुरकुमार के वैक्रेय शरीर है कि यावत् स्तनित कुमार देवता के वैक्रेय शरीर है ? अहो गौतम ! दशों ही जाति के भवनपति देवता के वैक्रेय शरीर है यदि असुरकुमार देवता के वैक्रेय शरीर है तो क्या पर्याप्त असुरकुमार देवता के वैक्रेय शरीर है कि अपर्याप्त असुरकुमार देवता के वैक्रेय शरीर है ? अहो गौतम ! दोनों प्रकार के असुरकुमार देवता के वैक्रेय शरीर है, ऐसे ही यावत् स्तनित कुमार पर्यन्त कहना. ऐसे ही आठों जाति के वाणव्यन्तर देव का पांच जाति के ज्योतिषी

पंचिंदिय वेउव्वियसरीरेवि एवं जाव थणियकुमाराणं दुगतो भेदो ॥ एवं वाणमंतराण अट्ठ विहाणं ॥ जोइसियाण पंचविहाण, वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता कप्पोवगा कप्पातीताय ॥ कप्पोवगा बारसविहा तेसिंपि एवं चेव दुगतो भेदो ॥ कप्पातीया दुविहा पण्णत्ता गेवेज्जगाय अणुत्तराय गेवेज्जगा णवविहा ॥ अणुत्तरोववाइया पंचविहा ॥ एतेसिं पज्जत्ता पज्जत्ताभि- लावेणं दुगतो भेदो ॥ ४ ॥ वेउव्वियसरीरेण भंते ! किं संठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! णाणासंठाणसंठिए पण्णत्ते, वाउकाइय एगिंदिय वेउव्विय सरीरेण भंते ! किं संठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! पडागासंठाणसंठिए पण्णत्ते ॥ णेरइय पंचिंदिय

देवता का और कल्पोतीत कल्पातीत दोनों जाति के वैमानिक देवता याने बारे देवलोक के देव का नव ग्रैवेयक के देव का और पांचों अनुत्तर विमानवासी देवता का सब के अपर्याप्त पर्याप्त में वैक्रेय शरीर है एसा कहना ॥४॥ अहो भगवन् वैक्रिय शरीर किस संस्थान से संस्थित है ? अहो गौतम ! अनेक प्रकार के संस्थानसे संस्थित है ॥ अहो भगवन् ! वायुकाय एकेन्द्रिय का वैक्रिय शरीर किस संस्थान से संस्थित है ? गौतम ! पताका के संस्थान से संस्थित है ॥ अहो भगवन् ! नेरियेके वैक्रिय शरीर किस संस्थान से संस्थित है ? अहो गौतम ! नेरियेके शरीर दो प्रकारके कहे हैं, -तद्यथा भवधारणिय और उत्तर वैक्रिय, पा

वेउव्विए सण णाणा संठाणसंठिए पण्णत्ते ॥ एवं जाव थणियकुमार देवपंचिंदिय वेउव्विय सरीर, एव वाणमंतराणवि, णवर ओहिया पुच्छिज्जति ॥ एव जोईसियाणवि आहियाण ॥ एव सोहम्म जाव अच्चुयदेव सरीरे, गविज्ज कप्पातीय वेमाणियदेव पंचिंदिय वेउव्विय सरीरेण भंते! किं संठाण संठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! गविज्जग देव पंचिंदिए णं भवधारणिज्ज सरीरे सेण समचउरंस संठाण संठिए पण्णत्ते, एव अणुत्तरोववाइयाणवि ॥ ५ ॥ वेउव्विय सरीरेण भंते ! के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं, उक्कोसेण सातिरेग जोयणसतसहस्स, वाऊकाय एगिंदियवेउव्विय सरीरस्स भंते! के महालिया सरीरो

भेद कहना अहो भगवन् ! ग्रैवेयक कल्पातीत वैमानिक देव पंचेन्द्रिय का वैक्रेय शरीर किस संस्थान से संस्थित है ? अहो गौतम ! ग्रैवेयक के देवता के एक भवधारणीय ही शरीर है वह समचतुस्र संस्थान से संस्थित है, ऐसे ही अनुत्तर विमान के देवता का कहना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! वैक्रेय शरीर की अव गाहना कितनी बड़ी कही है ? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट कुछ अधिक एक लाख योजन की अहो भगवन् ! वायुकाया एकेन्द्रिय का वैक्रेय शरीर कितना बड़ा कहा है ? अहो

सातों नरक की सम्पूर्ण अवगाहना

	जघन्य अवगाहना				उत्कृष्ट अवगाहना		
नाम	धनुष्य	हाथ	अंगुल	भाग	धनुष्य	हाथ	अंगुल
१ रत्नप्रभा	०	२	८	१	७	३	६
२ शर्कराप्रभा	०	२	२०	३/११	१५	२	१२
३ वालुकाप्रभा	१	२	२२	३	३१	१	०
४ पंकप्रभा	४	१	२०	३	६२	२	०
५ धूम्रप्रभा	१२	२	०	०	१२५	०	०
६ तमप्रभा	४१	४	१३	०	२५०	०	०
७ तमस्तमप्रभा	२ ०	३	८	०	५००	०	०

गाहणा पण्णत्ता? गोयमा! जहण्णेणं अंगुलस्स असखेज्जतिभाग उक्कोसेणवि अंगुलस्स असंखेज्जइभाग, णेरइय पंचिंदिय वेउव्विय सरीरस्सणं भंते! के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा पण्णत्ता तंजहा भवधारणिज्जाय उत्तरवेउव्वियाय, तत्थणं जासा भवधारणिज्जा

गौतम! जघन्य और उत्कृष्ट अंगुल के असंख्यातवे भाग जितना अहो भगवन्! नारकी पंचेन्द्रिय का वैक्रय शरीर कितना बडा कहा है? अहो गौतम! नरीय का शरीर दो प्रकार का कहा है तद्यथा— भव धारनीय और उत्तर वैक्रय इस में भवधारनीय शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट पांच सो धनुष्य की, और उत्तर वैक्रय बनाये शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल के सं

१ रत्नप्रभा के १३ पाथड़े की अवगाहना

पा	जघन्य अवगाहना				उत्कृष्ट अवगाहना			
	मनुष्य	हाथ	अंगु	भाग	मनुष्य	हाथ	अंगुल	भाग
१	०	३ कम	०	०		३ पूर्ण		०
२	०	कुछ १ पूर्ण	०	०	१	१	८	१
३	१	१	८	१	१	३	१७	०
४	१	३	१७	०	२	२	१	१
५	२	२	१	१	३	०	१	०
६	३	०	१०		३	२	१८	१
७	३	२	१८	१	४	३	३	०
८	४	३	३	०	४	३	११	१
९	४	३	११	१	५	१	२०	०
१०	५	१	२०	०	६	०	४	१
११	६	०	४	१	६	२	१३	०
१२	६	२	१३		७	०	२१	१
१३	७	०	२१	१	७	३	६	०

२ सा जहण्णेण अंगुलस्स असखज्जतिभागं, उक्कोसेण पंच धणुसयाइं, तत्थणं जासा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेणं अंगुलस्स संखज्जतिभाग, उक्कोसेण धणुसहस्सं रयणप्पभा पुढवि णेरइयाणं भंते ! के महालिया सरीरो

संख्यातवे भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन की अहो भगवन् ! रत्नप्रभा नरक के नेरीये की अवगाहना कितनी बडी कहीहै ? अहो गौतम ! रत्नप्रभा नरक के नेरीये का शरीर दो प्रकारका कहाहै तद्यथा—भवधारनीय और उत्तर वैक्रय इस में भवधारनीय शरीर की जघन्य अंगुल के

शर्कर प्रभा के ११ पाथड की अवगाहना

	मध्य				उत्कृष्ट			
पा	धनुष्य	हाथ	अंगुल	भाग	धनुष्य	हाथ	अंगुल	भाग
१	७	३	६	०	८	२	२	३/११
२	८	२	२	३/११	९	०	२२	६/११
३	९	०	२२	६/११	९	३	१८	९/११
४	९	३	१८	९/११	१०		१४	१/११
५	१०	२	१४	१/११	११	१	१०	४/११
६	११	१	१०	४/११	१२	०	७	[illegible]
७	१२	०	७	७/११	१२	३	३	१०/११
८	१२	३	३	[illegible]	१३	१	२३	[illegible]
९	१३	१	२३	[illegible]	१४	०	१९	[illegible]
१०	१४	०	१९	[illegible]	१४	३	१५	८/११
११	१४	३	१५	८/११	१५	२	१२	०

गाहणा पण्णत्ता? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा भव धारणिज्जाय, उत्तर वेउव्वि याय तत्थण जासा भव धारणिज्जा सा जहण्णेण अगुलस्स असंखेज्जतिभाग, उक्कोसेण सत्तधणूइ तिण्णिय रयणीओ, छच्चअगुलाइ ॥ तत्थण जासा उत्तर वेउ व्विया सा जहण्णेण अगु-

असंख्यातवा भाग और उत्कृष्ट सात धनुष्य तीन हाथ छ अंगुल की और उत्तर वैक्रय शरीर की जघन्य अगुल के संख्यातवा भाग उत्कृष्ट पनरे धनुष्य और अढाइ हाथ की, इस प्रकार आगे भी प्रस्तावर मानना शर्कर प्रभा की भवधारणीय शरीरकी

[illegible]

पा	जघन्य धनुष्य	हाथ	अंगुल	भाग	अवगाहना उत्कृष्ट धनुष्य	हाथ	अंगुल	भाग
१	१०	२	१२	०	१	१	१०	२
२	१७	१	१०	२				३
				३	१९		९	१
३	११	०	९	१				३
				३	२०	३	८	०
४	२०	१	८	०	२२	२	५	२
५	४२	२	३	२				३
				३	२४	१	४	१
६	२८	५	१	१				३
				३	२२	१	४	५
७	२६	०	४	०	२७	१	१	२
८	२९	१	१	२				३
				३	२९	२	१	१
९	२९	२	१	१				३
				३	३१	१	०	०

[illegible]

पण्णरसधणूइं अढाइज्जाओरय-
णीओ ॥सक्करप्पभाएण पुच्छा?
गोयमा ! जाव तत्थणं जासा
भवधारणिज्जा सा जहण्णेणं
अंगुलस्स असंखज्जतिभाग
उक्कोसेण पण्णरस्सधणूइं
अड्ढाइज्जाओ रयणीओ,

की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट पनर धनुष्य अढाइ हाथ की और उत्तर वैक्रय की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट एकतीस धनुष्य एक हाथ की यों भाग सर्व स्थान भवधारनीय की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग की और उत्तर वैक्रय की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग की जानना अब उत्कृष्ट अवगाहना ही कहते हैं

पंकप्रभाके ७ पाथड की अवगाहना ५

जघन्य					उत्कृष्ट			
पा	ध	हा	अं	भा	ध	हा	अं	भा
१	३१	१	०	०	३५	२	२०	३
२	३६	१	२०	३	४०	०	१७	
३	४०	०	१७	३	४४	२	१३	
४	४४	२	१३		४९	०	१	
५	४९	०	१०	३	५३	२	६	
६	५३	२	६	३	५८	०	३	३
७	५८	०	३	३	६२	२	०	०

धूम्रप्रभाके ५ पाथड़ेकी ६

जघन्य			उत्कृष्ट	
पा	ध	हा	ध	हा
१	६२	२	७५	०
२	७५	०	८७	२
३	८७	२	१००	०
४	१००		११२	२
५	११२	२	१२५	०

तमप्रभाके ३ पाथड़े की ७ अवगाहना

जघन्य				उत्कृष्ट		
पा	ध	हा	अं	ध	हा	अं
१	१२५	०	०	१६६	२	१६
२	१६६	२	१६	२०८	१	८
३	२०८	१	८	२५०	०	

तमस्तमप्रभा के १ पाथड़े की ८

जघन्य		उत्कृष्ट
पा	ध	ध
१	२५०	५००

तत्थण जासा उत्तरवेउव्विया सा जहण्णेण अंगु लस्स संखज्जतिभाग उक्कोसेण एक्कतीस धणूइं एक्कारयणी ॥ वालुयप्पभाए भवधारणिज्जा एक्कतीस धणूइं एक्कारयणी उत्तर वेउव्विया छावट्ठिधणूइं दोण्णियरयणीओ ॥पंकप्पभाए भवधारणिज्जा बावट्ठि

वालुकप्रभा के भवधारनीय की एकतीस धनुष्य एक हाथ की, उत्तर वैक्रेय की बांसठ धनुष्य दो हाथ की पंक प्रभा के भवधारनीय की बांसठ धनुष्य दो हाथ की और उत्तर वैक्रय की एक सो

धणूइ दोरयणीओ, उत्तर वेउव्विया पण्णवीस धणुइ सत, धूमप्पभाए भवधारणिज्जा पणवीस धणुसत, उत्तर वेउव्विया अड्ढाईज्जाइ धणुसयाइ॥ तमाए भवधारणिज्जा अड्ढाइज्जाइ धणूसताइं, उत्तर वेउव्विया पंचधणुसयाइ॥ अहे सत्तमाए भवधारणिज्जे पंचधणुसयाइ उत्तर वेउव्विया धणुसहस्स एव उक्कोसेण॥ जहण्णेण भवधारणिज्जा अंगुलस्स असंखेज्जतिभाग उत्तर वेउव्विया अंगुलस्स संखेज्जतिभागं ॥६॥ तिरिक्खजोणिय पंचिंदिय वेउव्वियसरीरस्सण भंते! के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ते ? गोयमा! जहण्णेण अंगुलस्स संखेज्जति भागं, उक्कोसेण जोयणसत पुहत्त ॥ मणुस्स पंचिंदिय वेउव्विय सरीरस्सण भंते !

पचीस धनुष्य की धूमप्रभा की भवधारनीय की एक सो पचीस धनुष्य की उत्तर वैक्रेय की दो सो पचास धनुष्य की, तमप्रभा के भवधारनीय की दो सो पचास धनुष्य की उत्तर वैक्रेय की पांच सो धनुष्य की और नीचे सातवी नरक की भवधारनीय की पांच सो धनुष्य की उत्तर वैक्रय की हजार धनुष्य की पांचों २ की जघन्य ? अवगाहना पन्न से जानना ॥ ३ ॥ अहो भगवन्! तिर्यंच पंचिन्द्रिय के वैक्रय शरीर की अवगाहना कितनी कही है ? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट नव सो योजन की अहो भगवन्! मनुष्य के वैक्रेय शरीर

के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स संखेजति भाग उक्कोसेण सातिरेग जोयणसतसहस्स ॥७॥ असुरकुमार भवणवासीदेव पंचिंदिय वेउव्वियसरीरस्सण भंते ! के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! असुर कुमाराण दुविहा सरीरोगाहणा पण्णत्ता तंजहा भवधारणिज्जाय उत्तर वेउव्वियाय, तत्थण जासा भवधारणिज्जा सा जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भाग, उक्कोसेण सत्तरयणीओ, तत्थण जासा उत्तर वेउव्विया सा जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जति भाग उक्कोसेण जोयण सत सहस्स ॥ एवं जाव थणियकुमारा, एवं ओहियाणं

की अवगाहना कितनी कही है ? अहो गौतम ! जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट कुछ अधिक एक लाख योजन विष्णुकुमारादि की ॥७॥ अहो भगवन् ! असुरकुमार भवनपति देवता के वैक्रेय शरीरकी कितनी अवगाहना कही है ? अहो गौतम ! असुरकुमार देवता का शरीर दो प्रकार का कहा है तद्यथा १ भवधारनीय और दूसरा वैक्रेय इस भवधारनीय की जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट सात हाथ की और उत्तर वैक्रेय की जघन्य अंगुल के संख्यातवे भाग उत्कृष्ट एक लाख योजन की इस प्रकार ही यावत् स्थनित कुमार पर्यन्त कहना ऐसे ही औधिक वाणव्यन्तर देव की और ज्योतिषी देव की कहना, ऐसे ही सौधर्म ईशान देवलोक के देवता की कहना, और इस प्रकार ही उत्तर वैक्रेय

वाणमनराणं एव ओहीसियाणवि ॥सोहम्मीसाणं देवाण एवचेव, उत्तर वेउव्विय जाव अच्चुतोकप्पो, णवर सणकुमार भवधारणिज्जा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जति भाग उक्कोसण छ रयणीओ, एव माहिंदेवि ॥ बभलोए लतएसु पचरयणीओ, महासुक्क सहस्सारेसु चत्तारीरयणीओ आणय पाणय आरण अच्चुत तिण्णि रयणीओ ॥ गेवेज्ज कप्पातीते वेमाणिय देव पचिंदिय वेउव्विय सरीरस्सण भते! के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! गविज्जग देवाण एग भवधारणिज्जा सरीरोगाहणा पण्णत्ता, सा जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जति भाग उक्कोसेण दोरयणीओ ॥ एव अणुत्तरोववाइय

शरीर की अवगाहना यावत् अच्युत देवलोक तक कहना, भवधारनीय शरीर की अवगाहना का विक्षेप कहते हैं जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग सर्व स्थान मानना उत्कृष्ट सनत्कुमार माहेन्द्र में छ हाथ की, ब्रह्म लांतक में पांच हाथ की, महाशुक्र सहस्रार में चार हाथ की, आनत प्राणत, आरण और अच्युत इन चार देवलोकों में तीन हाथ की अहो भगवन् ! ग्रैवेयक और अनुत्तर कल्पातीत देव पचेन्द्रियका वैक्रय शरीर कितना बडा कहा है? अहो गौतम! ग्रैवेयक देवता के एक भवधारनीय शरीर ही है उसकी अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट दो हाथ की, ऐसे ही अनुत्तरोपपातिक देवकी भी कहना जिस में इतना विशेष एक हाथ की अवगाहना जानना देवलोक के प्रतरों की अपेक्षा से अवगाहना पन से

सौधर्म ईशान देवलोक की १३ प्रतर की अवगाहना ९

प्रतर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
हाथ	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७
भाग	०	०	०	०	०	०	०			०	०	०	०
छेद	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१३

सनत्कुमार माहेंद्र देवलोककी १२ प्रतरकी अवगाहना १०

प्रतर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
हाथ	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६
भाग	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१	०
छेद	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२

ब्रह्मदेवलोककी अवगाहना ११

प्रतर	१	२	३	४	५	६
हाथ	५	५	५	५	५	५
भाग	१०	९	८	७	६	५
छेद	११	११	११	११	११	११

लंतक देवलोक की अवगाहना १२

प्रतर	१	२	३	४	५
हाथ	५	५	५	५	५
भाग	४	३	२	१	०
छेद	११	११	११	११	११

महाशुक्र देवलोक की अवगाहना १३

प्रतर	१	२	३	४
हाथ	४	४	४	४
भाग	७	६	५	४
छेद	११	११	११	११

सहस्रार देवलोक की अवगाहना १४

प्रतर	१	२	३	४
हाथ	४	४	४	४
भाग	३	२	१	२
छेद	११	११	११	११

आनत देव की १५

प्रतर	१	२	३	४
हाथ	३	३	३	३
भाग	७	६	५	४
छेद	११	११	११	११

१७

आरण देव की अवगाहना

प्रतर	१	२	३	४
हाथ	३	३	३	३
भाग	३	२	१	०
छेद	११	११	११	११

नवग्रैवेयक देव की अवगाहना १९

प्रतर	१	२	३	४	५	६	७	८	९
हाथ	२	२	२	२	२	२	२	२	२
भाग	८	७	६	५	४	३	२	१	०
छेद	११	११	११	११	११	११	११	११	११

१६

प्राणत देव की अवगाहना.

प्रतर	१	२	३	४
हाथ	३	३	३	३
भाग	७	६	५	४
छेद	११	११	११	११

१८

अच्युत देव की अवगाहना

प्रतर	१	२	३	४
हाथ	३	३	३	३
भाग	३	२	१	०
छेद	११	११	११	११

२०

अनुत्तर विमान में.

प्रतर	१	२
सागर	३१	३३
हाथ	१	१
भाग	१	०
छेद	११	११

देवाणवि, णवर एक्कारपणी ॥ ८ ॥ आहारग सरीरेण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगागारे पण्णत्ते, जइ एगागार पण्णत्ते किं मणुस्स आहारग सरीरे अमणुस्सग आहारग सरीरे ? गोयमा ! मणूस्सग आहारग सरीरे नो अमणुस्सग आहारग सरीरे ॥ जइ मणुस्सग आहारग सरीरे किं समुच्छिम मणुस्सग आहारग सरीर, गब्भवक्कतिय मणुस्सग आहारग सरीरे ? गोयमा ! णो समुच्छिम मणुस्सग आहारग सरीरे, गब्भवक्कतिय मणुस्सग आहारग सरीरे ॥ जइ गब्भवक्कतिय मणुस्सग आहारग सरीरे किं कम्मभूमिग गब्भवक्कतिय मणुस्सग आहारग सरीर, अकम्मभूमग गब्भवक्कतिय मणुस्सग आहारग सरीरे, अंतरदीवग गब्भवक्कतिय मणुस्स आहारग

मानना इति वैक्रेय शरीर का अधिकार समाप्त हुवा ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! आहारिक शरीर कितने प्रकार का कहा है ? अहो गौतम ! एक ही प्रकार का कहा है अहो भगवन् ! यदि एक ही प्रकार का है तो क्या मनुष्य के आहारिक शरीर होता है कि मनुष्य सिवाय अन्य के भी आहारिक शरीर होता है ? अहो गौतम ! एक मनुष्य के ही आहारिक शरीर होता है अन्य के नहीं होता है यदि मनुष्य के आहारक शरीर होता है तो क्या संमूर्छिम मनुष्य के आहारक शरीर होता है कि गर्भज मनुष्य के आहारक शरीर होता है ? अहो गौतम ! संमूर्छिम मनुष्य के आहारक शरीर नहीं होता है परंतु गर्भज

सरीर ? गोयमा ! कम्मभूमिग गब्भवक्कंतिय मणूस्स आहारग सरीरे, णो अकम्म भूमग, नो अंतरदीवग गब्भवक्कंतिय मणुस्स आहारग सरीरे ॥ जइ कम्मभूमग गब्भवक्कंतिय मणूस्स आहारग सरीर? किं संखेज्जवासाउय कम्मभूमग गब्भवक्कंतिय मणुस्स आहारग सरीरे असंखेज्जवासाउय कम्मभूमग गब्भवक्कंतिय मणुस्स आहारग सरीरे ? गोयमा ! संखेज्जवासाउय कम्मभूमिग कम्मभूमग गब्भवक्कंतिय मणुस्स आहारग सरीर, णो असंखेज्जवासाउय गब्भवक्कंतिय मणुस्स आहारग सरीरे ॥ जइ संखेज्जवासाउय कम्मभूमग गब्भवक्कंतिय मणुस्स आहारग सरीरे किं पज्जत्त संखेज्ज वासाउय कम्मभूमग गब्भवक्कंतिय मणुस्स आहारग सरीरे, अपज्जत्त संखेज्जवासा-

मनुष्य के ही आहारक शरीर होता है यदि मनुष्य के ही आहारक शरीर होता है तो क्या कर्मभूमी मनुष्य के होता है कि अकर्मभूमी मनुष्य के होता है कि अन्तर द्वीप के मनुष्य के होता है ? अहो गौतम ! कर्मभूमी मनुष्य के ही आहारक शरीर होता है परंतु अकर्मभूमी और अन्तरद्वीप के मनुष्य के आहारक शरीर नहीं होता है, यदि कर्मभूमी मनुष्य के आहारक शरीर होता है तो क्या संख्यात वर्षायुवाले कर्मभूमी मनुष्य के होता है कि असंख्यात वर्षायुवाले कर्मभूमी मनुष्य के होता है ? अहो गौतम ! संख्यात वर्षायुवाले कर्मभूमी मनुष्य के आहारक शरीर होता है परंतु असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले

उय कम्मभूमग गब्भवक्कातिय मणुस्स आहारग सरीरे ? गोयमा ! पज्जत्त सखेज्ज-वासाउय कम्मभूमग गब्भवक्कातिय मणुस्स आहारग सरीरे णो अपज्जत्तग सखेज्ज वासाउय गब्भवक्कातिय कम्मभूमग मणुस्स आहारग सरीर ॥ जइ पज्जत्तग सखेज्ज वासाउय कम्मभूमग गब्भवक्कातिय मणुस्स आहारग सरीर किं सम्मदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्जवासाउय कम्मभूमग गब्भवक्कातिय मणुस्स आहारग सरीरे, मिच्छदिट्ठी पज्जत्तग सखेज्जवासाउय कम्मभूमग गब्भवक्कातिय मणुस्स आहारग सरीरे, सम्मामिच्छदिट्ठी पज्जत्तग सखेज्जवासाउय कम्मभूमग गब्भवक्कातिय मणुस्स आहारग सरीरे गोयमा ! सम्मदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्जवासाउय कम्मभूमग गब्भवक्कातिय मणुस्स

मनुष्य के आहारक शरीर नहीं होता है यदि संख्यात वर्षायु मनुष्य के आहारक शरीर होता है तो क्या पर्याप्त संख्यात वर्षायु मनुष्य के आहारक शरीर होता है कि अपर्याप्त संख्यात वर्षायु मनुष्य के आहारक शरीर होता है ? अहो गौतम ! पर्याप्त संख्यात वर्षायु मनुष्य के आहारक शरीर होता है परंतु अपर्याप्त मनुष्य के आहारक शरीर नहीं होता है यदि पर्याप्त संख्यात वर्षायु मनुष्य के आहारक शरीर होता है तो क्या सम्यक् दृष्टी मनुष्य के आहारक शरीर होता है कि मिथ्या दृष्टी मनुष्य के आहारक शरीर होता है कि समामिथ्या दृष्टी मनुष्य के आहारक शरीर होता है ? अहो गौतम !

कम्मभूमग गब्भवक्कंतिय मणुस्से आहारगसरीरे, अणिड्डिपत्त संजत सम्मदिट्ठि पज्जत्त संखेज्जवासाउय कम्मभूमग गब्भवक्कंतिय मणुस्स आहारगसरीरे ? गोयमा ! इड्ढिपत्तपमत्त सजत सम्मदिट्ठि पज्जत्त ससज्जवासाउय कम्मभूमग गब्भवक्कंतिय मणुस्स आहारगसरीरे णो अणिड्डिपत्तपमत्त सजत सम्मदिट्ठि पज्जत्त कम्मभूमग गब्भवक्कंतिय मणुस्स आहारगसरीरे ॥ ९ ॥ आहारगसरीरेण भंते ! किं सठाण सठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! समचउरस सठाण सठिए पण्णत्ते ॥ १० ॥ आहारगसरीरेणं भंते ! के महालयासरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण देसूणारयणी, उक्कोसेण पडिपुण्णारयणी ॥ ११ ॥ तेयगसरीरेण भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पचविहे

पर्याय कर्मभूमी गर्भज मनुष्य के आहारक शरीर होता है परन्तु बिना ऋद्धिवाला अप्रमत्तसंयति सम्यक् दृष्टि पर्याप्त कर्मभूमी गर्भज मनुष्य के आहारक शरीर नहीं होता है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! आहारक शरीर किस संस्थान से संस्थित है ? अहो गौतम ! समचतुरस्र संस्थान से संस्थित है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! आहारक शरीर की कितनी बडी अवगाहना कही है ? अहो गौतम ! जघन्य कुछ कम एक हाथ की उत्कृष्ट एक हाथ की. इति आहारक शरीर का अधिकार संपूर्ण ॥ ११ ॥ अहो भगवन् तेजस शरीर के

पण्णत्ते तंजहा-एगिंदिय तेयगसरीरे जाव पंचिंदिय तेयगसरीरे ॥ एगिंदिय तेयगसरीरे णं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा-पुढविकाइय जाव वणस्सइकाइय एगिंदिय तेयगसरीरे ॥ एवं जहा ओरालियसरीरस्स भेदो भणिओ, तहा तेयगस्सवि, जाव चउरिंदियाणं ॥ पंचिंदिय तेयगसरीरेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा नेरइय तेयगसरीरे जाव देव तेयगसरीरे णेरइयाणं दुगताभेदो भाणियव्वो जहा वेउव्वियसरीरे ॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया णं मणुस्साणय जहा ओरालियसरीरे भेदा भाणिओ तहा भाणियव्वो ॥ देवाणं जहा

कितने भेद कहे है ? अहो गौतम ! पांच प्रकार कहे हैं तद्यथा—एकेन्द्रिय का तेजस शरीर यावत् पंचेन्द्रियका का तेजस शरीर यों जिस प्रकार औदारिक शरीर के भेदानुभेद कहे उस ही प्रकार तेजस शरीर के भी भेदानुभेद कहना यावत् चौरेन्द्रिय पर्यंत कहना अहो भगवन् ! पंचेन्द्रिय के तेजस शरीर के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! चार भेद कहे हैं तद्यथा–नारकी का तेजस शरीर यावत् देवता का तेजस शरीर पूर्वोक्त प्रकार नारकी के पर्याप्त अपर्याप्त ऐसे दो भेद कहना जिस प्रकार वैक्रय शरीर का पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक के और मनुष्य के जिस प्रकार औदारिक शरीर के भेद कहे उस प्रकार

वेठव्वियसरीरे भेदा भाणियो तहा भाणियव्वो जाव सव्वट्ठसिद्धोगदेवति ॥ १२ ॥ तेयगसरीरण भते ! किं सठाण साठए पण्णत्त ? गोयमा ! णाणा सठाणे साठए पण्णत्त ॥ एगिंदिय तेयगसरीरण भते ! किं संठाण सठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! णाणा सठाण सठिए ॥ पुढविकाइय तेयगसरीरेण भते ! किं सठाण सठिए पण्णत्त? गोयमा ! मसुरचंदसठाण साठए पण्णत्त ॥ एव आरालिय सठाण अणुसारणं भाणियव्वं जाव चउरिंदियाणवि ॥ णेरइयाण भते ! तेयगसरीरे किं सठाण सठिए

कहना देवता के जिस प्रकार वैक्रय शरीर के भेद कहे तैसे ही कहना यावत् सर्वार्थ सिद्ध पर्यंत ॥१२॥ अहो भगवन् ! तेजस शरीर का किस प्रकार का सस्थान कहा है ? अहो गौतम ! अनेक प्रकार का संस्थान कहा है. एकेन्द्रिय के तेजस शरीर का किस प्रकार का संस्थान कहा है ? अहो गौतम ! अनेक प्रकार का सस्थान कहा है पृथ्वीकाय एकेन्द्रिय का क्या सस्थान कहा है ? अहो गौतम ! मसूरकीदाल और चन्द्रमा के सस्थान से संस्थित है यों जिस प्रकार औदारिक शरीर के सस्थान कहे उस अनुसार से कहना यावत् चतुरेन्द्रिय पर्यंत अहो भगवन् ! नरीए के तेजस शरीर का क्या संस्थान कहा है ? अहो गौतम ! जिस प्रकार वैक्रय शरीर का संस्थान कहा उस ही प्रकार इस का भी कहना पंचेन्द्रिय

पण्णत्ते ? गोयमा ! जहा वेउव्वियसरीरे, पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाण मणुस्साण जहा एतेसिं चेव ओरालियत्ति ॥ देवाणं भंते ! किं संठाण संठिए तेयगसरीरे ? गोयमा ! जहा वेउव्वियस्स जाव अणुत्तरोववाइया ॥१२॥ जीवस्सणं भंते ! मारणं तिय समुग्घाएणं समोहयस्स तेयगसरीरस्स के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सरीरप्पमाणमेत्ता, विक्खंभबाहल्लेणं, आयामेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागो उक्कोसेणं लोगताओ लोगंते ॥ एगिंदियस्सणं भंते ! मारणंतिय समुग्घाएणं समोह-

तिर्यंच योनिक का और मनुष्य का जो औदारिक शरीर के जैसा संस्थान कहना अहो भगवन् ! देवता के तेजस शरीर का कैसा संस्थान कहा है ? अहो गौतम ! जैसा वैक्रय शरीर का संस्थान कहा वैसा कहना यावत् अनुत्तरोपपातिक देव पर्यंत यह तेजस शरीर की अवगाहना कही है ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! जीव मारणांतिक समुद्घात समोहया हुवा तेजस शरीरकी कितनी अवगाहना कही है ? अहो गौतम ! शरीर प्रमाण मात्र चौडी अर्थात् बायी तरफस दायी तरफतक जो शरीर जितनी चौडी होती है इस प्रकार ही पृष्ट से छातीतक जाडी भी जानना और लम्बी जघन्य तो अंगुल के असंख्यातवे भाग उस ही स्थान उत्पन्न होवे उस अपेक्षा से और उत्कृष्ट लोक के अन्त पर्यन्त क्यों कि अधोलोक से मरकर ऊर्ध्व लोकान्त तक और ऊर्ध्व लोक से अधो लोकान्त तक ऐसे ही दशों ही दिशा के मूल से मरकर

यस्स तेयासरीरस्स के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता? गोयमा ! एवं चेव ॥ पुढवि आऊ तेऊ वणस्सतिकाइयस्स ॥ बेइंदियस्सणं भंते ! मारणंतिय समुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सरीरप्पमाणमेत्ता विक्खंभबाहल्लेणं, आयामेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जइ भागं उक्कोसेणं तिरिय लोगाओ लोगंता एवं जाव चउरिंदियस्स ॥ नेरइयस्सणं भंते ! मारणंतिय समुग्घाएणं

अन्त में भी जीव उत्पन्न होते हैं उस अपेक्षा से जानना. अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय के मारणांतिक समुद्घात समोहए कर उस तेजस् शरीर की कितनी बडी अवगाहना कही है ? अहो गौतम ! जिस प्रकार समुच्चय कही उस ही प्रकार एकेन्द्रिय की कहना. क्यों कि सूक्ष्म एकेन्द्रिय ही सर्व लोक व्यापक हैं वे ही लोक की आदि से अन्त तक उत्पन्न होते हैं. जिस प्रकार एकेन्द्रिय के तेजस् शरीर की अवगाहना कही उस ही प्रकार पृथ्वीकाया अप्काया तेजस्काया वायुकाया वनस्पति-काया की कहना. अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय मारणांतिक समुद्घात समोहए उस तेजस् शरीर की कितनी बडी अवगाहना कही है ? अहो गौतम ! शरीर के प्रमाण जितनी चौडी तथा जाडी और लम्बपने में जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट तिर्छे लोक के अन्त तक क्यों कि बेइन्द्रिय आदि की उत्पत्ति विकलत्रय समुद्रादि तिर्छे लोक में ही है. बेइन्द्रिय जैसे ही तेइन्द्रिय तथा चौरिन्द्रिय का कहना. अहो भगवन् ! नेरिये मारणांतिक

समोहयस्स तयासरीरस्स के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सरीरप्पमा पमेत्ता विक्खंभबाहल्लेणं आयामेणं जहण्णेणं सातिरेगं जोयणसहस्सं उक्कोसेणं जाव अहेसत्तमापुढवि, तिरियं जाव सयंभूरमण समुद्दे उड्ढं जाव पंडकवणे पुक्खरणीओ, पंचिंदिय तिरिक्खजोणियस्सणं भंते ! मारणंतिय समुग्घाएणं समोहयस्स के महालिया तेयासरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहा बेइंदियस्स सरीरस्स ॥ मणुस्सस्सणं

समुद्घात समोहय तेजस शरीर की कितनी बडी अवगाहना कही है ? अहो गौतम ! शरीर के प्रमाण में चौडी तथा जाडी, और लम्बाई में जघन्य सा कुछ अधिक एक हजार योजन क्यों कि बेइंद्रिय पाताल नरक में देवता में एकेन्द्रिय में विकलेन्द्रिय में उत्पन्न नहीं होते हैं नरक के और तिर्च्छे लोक के मध्य का विभाग एक हजार योजन का आता है, तथा जो पाताल कलश में उत्पन्न होवे तो पाताल कलश की भी ठीकरी एक हजार योजन की जाडी है उस कलश के दूसरे तीसरे विभाग में पानी है उस में जलचर पंचेन्द्रियपने उत्पन्न होवे इस अपेक्षा जघन्य एक हजार योजन प्रमाण और उत्कृष्ट नीचे की सातवीं नरक से तिर्च्छा यावत् स्वयंभूरमण समुद्र पर्यन्त ऊर्ध्व यावत् पंडक वन पर्यन्त पंडक वन की बावडीयों में तिर्यंच पंचेन्द्रियपने उत्पन्न होवे सो जानना अहो भगवन् ! पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक का मारणांतिक समुद्घात समोहय तेजस शरीर की कितनी अवगाहना कही है ? अहो गौतम ! जिस प्रकार बेइंद्रिय

भंते ! मारणंतिय समुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! समयक्खेत्ताओ लोगंताओ॥ असुरकुमाराणं भंते ! मारणंतिय समुग्घाएणं समोहयस्स के महालिया तेया सरीरोगाहणा पण्णत्ता? गोयमा! सरीरप्पमाणमेत्ता विक्खंभ बाहल्लेणं आयामेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्कोसेणं अहे जाव तच्चाए पुढवीए हेट्ठिल्ले चरिमंते तिरियं जाव सयंभुरमण समुद्दस्स बाहिरल्ले वेइयंते, उड्ढं जाव इसीपब्भारा

का क्या तैसा ही कहना अहो भगवन् ! मनुष्य जब मारणांतिक समुद्घात करे तब तैजस शरीर की कितनी बडी अवगाहना कही है ? अहो गौतम ! समय क्षेत्र से लगाकर लोक के अन्त पर्यन्त, क्यों कि विद्याधरों की मेरुगिरद्वीप तक तथा चारण मुनिवरों रुचक द्वीप पर्यन्त जाते हैं इस अपेक्षा से तथा मनुष्य पर के एकेन्द्रिय में उत्पन्न होवे इस अपेक्षा से अहो भगवन् ! असुरकुमार देवता मारणांतिक समुद्घात करे तब कितनी बडी अवगाहना कही है ? अहो गौतम ! शरीर के प्रमाण में चौडी तथा जाडी और लम्बी जघन्य अंगुल के असंख्यातवा भाग क्यों कि असुरकुमार देवता मरकर वहाँ भुवनादि की पृथ्वी-काया में उत्पन्न होवे इस अपेक्षा से उत्कृष्ट नीचे तीसरी नरक का नीचे का चरमान्त पर्यन्त क्यों कि परमाधामी असुरकुमार इतना का गमन है वहाँ आयुष्य पूर्ण करे तो तिर्च्छा स्वयंभूरमण समुद्र की बाहिर की वेदिका पर्यन्त ... पृथ्वीकाया है, ऊंचा यावत् ईषत्प्राग्भार पृथ्वी ...

पुढवि ॥ एवं जाव थणियकुमारा ॥ वाणमंतर जोइसिय सोहम्मीसाणगाय एवं चेव ॥ सणकुमार देवस्सणं भंते ! मारणंतिय समुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सरीरप्पमाणमेत्ता, विक्खंभबाहल्लेणं, आयामेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्कोसेणं अहे जाव महापातालाणं दोच्चति भागं तिरियं जाव सयंभुरमणं समुद्दं उड्ढं

इस प्रकार ही यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त कहना, और ऐसे ही वाणव्यन्तर ज्योतिषी सौधर्म ईशान देवलोक के देवता का कहना अहो भगवन् ! सनत्कुमार देवता मारणांतिक समुद्घात समोहे तब तेजस शरीर की कितनी बड़ी अवगाहना कही है ? अहो गौतम ! शरीर के प्रमाण में तो चौडी तथा जाडी और लम्बाई में जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग क्यों कि यद्यपि सनत्कुमारादि देवलोक के देवता पृथ्वीकायादि में उत्पन्न होते नहीं है तथापि तिर्यंच पंचेन्द्रिय पने उत्पन्न होते हैं ज्योत्स्नवादि के पास के मेरु पर्वतादि पर आये हुवे वावी में स्नान करते मृत्यु पाकर वहां ही मत्स्यादि पने उत्पन्न होजावे इस अपेक्षा से गिने हैं तथा पूर्व सम्बन्धित मनुष्यनी के साथ भोग करते मरकर उस के ही उदर में उत्पन्न होवे इस अपेक्षा से उत्कृष्ट नीचे सो पातालकलशों के दूसरे विभाग में तिरछे यावत् स्वयंभूरमण समुद्र में, ऊपर अच्युत देवलोक तक क्यों कि किसी बारहवे देवलोक के देवता की नेश्राय से तीसरे देवलोक का देवता

जाव अच्चुओकप्पो एवं जाव सहस्सार देवस्स॥ आणय देवस्सणं भंते ! मारणंतिय समुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सरीरप्पमाणमेत्ता विक्खंभ बाहल्लेणं, आयामेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्कोसेणं जाव अहेलोइयगामा तिरियं जाव मणुस्सखेत्ते उड्ढं जाव अच्चुओकप्पो, एवं जाव आरणदेवस्सवि अच्चुयदेवस्स एवं चेव णवरं उड्ढं जाव सयाइं विमाणाइं॥

पहिले देवलोक में भाव और आयुष्य पूर्ण कर जिस प्रकार सनत्कुमार देवता का कहा इस ही प्रकार आठवे सहस्रार देवलोक के देवता तक कहना अहो भगवन् ! आनत देवलोक के देवता मारणांतिक समुद्घात कर तब उन के तैजस शरीर की कितनी बडी अवगाहना होती है ? अहो गौतम ! शरीर के प्रमाण में तो चौडी तथा जाडी और लम्बी जघन्य अंगुल के असंख्यातवा भाग क्योंकि पूर्व भवसंबंधी मनुष्यनी के साथ भोग करते मरकर उसी के उदर में उत्पन्न होवे उत्कृष्ट नीचे सो अधोग्रामवीसी विजय तक तिरछा मनुष्य लोक तक ऊपर यावत् अच्युत कल्पतक, एसे ही इग्यारवे आरण देवलोक के देवता तक कहना + बारवे अच्युत देवलोक के देवता का भी वैसा ही कहना परंतु इतना विशेष ऊ॰ अपने विमान पर्यंत ही।

+ देवता के तो तिर्यं नहीं होता है परंतु प्रथम स्त्री के साथ मनुष्यने भोग किया हो उस का वीर्य चार मुहूर्त तक जीवोत्पत्ति की सत्तावाला रहता है उस में वह आकर उत्पन्न होजावे इसलिये ऐसा कहा।

गेवेज्जगदेवस्सणं भंते ! मारणंतिय समुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सरीरपमाणमत्ता विक्खंभे बाहल्लेणं, आयामेणं जहण्णेणं [illegible] उक्कोसेणं जाव अहेलोइयागामा, तिरियं जाव मणुस्सखेत्त उड्ढं जाव सगाई २ विमाणाई अणुत्तरोववाइयस्सवि एवंचेव ॥ १४ ॥ कम्मगसरीरेणं भंते ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा एगिंदिय कम्मगसरीर जाव पंचिंदिय कम्मगसरीरे एवं जहेव तेयगसरीरस्स भेदो संठाणं ओगाहणाय भणिया

कहना अहो भगवन् ! ग्रैवेयक के देवता मारणांतिक समुद्घात करते हैं तब उन के तेजस शरीर की अवगाहना कितनी होती है ? अहो गौतम ! शरीर प्रमाण तो चौडी और लम्बी जघन्य तो विद्याधरों की श्रेणि पर्यंत क्योंकि इन के उपर वैक्रिय शरीर [illegible] है तथा यह किसी स्थान आवागमन भी नहीं करते हैं इसलिये यहां से नीचे मनुष्य में उत्पन्न होते हुवे वैताढ्य पर्वत पर की विद्याधर की श्रेणि है उस में मनुष्य [illegible] उत्पन्न होते हैं। अपेक्षा उत्कृष्ट नीचे अधोगामिनी विजय पर्यंत, तिरछा यावत् मनुष्य क्षेत्र पर्यंत, ऊंच [illegible] विमान [illegible] देवता का भी [illegible] कहना इति तैजस शरीर का कथन ॥ [illegible] ॥ [illegible] शरीर [illegible] कहे हैं ? अहो गौतम ! पांच प्रकार के कहे हैं [illegible] का कार्मन शरीर यावत् पंचेन्द्रिय का कार्मन शरीर, यों जिस प्रकार तैजस शरीर का

जाव अच्चुओकप्पो एवं जाव सहस्सार देवस्स ॥ आणय देवस्सणं भंते ! मारणंतिय समुग्घाएणं समोहयस्स तयासरीरस्स के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सरीरप्पमाणमेत्ता विक्खंभ बाहल्लेणं, आयामेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जति भागं उक्कोसेणं जाव अहेलोइयगामा तिरियं जाव मणुस्सखेत्ते उड्ढं जाव अच्चुओकप्पो, एवं जाव आरणदेवस्सवि अच्चुयदेवस्स एवं चेव णवरं उड्ढं जाव सयाइं विमाणाइं ॥

सातवे देवलोक में भव और आयुष्य पूर्ण कर जिस प्रकार सनत्कुमार देवता का कहा इस ही प्रकार आठवे सहस्रार देवलोक के देवता तक कहना अहो भगवन् ! आनत देवलोक के देवता मारणांतिक समुद्घात कर तब उन के तेजस शरीर की कितनी बडी अवगाहना होती है ? अहो गौतम ! शरीर के प्रमाण में तो चौडी तथा जाडी और लम्बी जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग क्योंकि पूर्व संबंधी मनुष्यनी के साथ भोग करते मरकर उसी के उदर में उत्पन्न होवे उत्कृष्ट नीचे तो अधोगामीनी विजय तक तिरछा मनुष्य क्षेत्र तक ऊपर यावत् अच्युत देवलोक, एस ही इग्यारवे अरण्य देवलोक के देवता तक कहना + बारवे अच्युत देवलोक के देवता का भी वैसा ही कहना परंतु इतना विशेष ऊंचा अपने विमान पर्यंत ही।

+ देवता को तो स्त्री नहीं होती है परन्तु प्रथम जो ले साथ मनुष्यने भोग किया हो उस का वीर्य बार मुहूर्त तक जीवोत्पत्ति की सत्तावाला रहता है उस में वह स्वतः आकर उत्पन्न होजावे इसलिये ऐसा कहा है

गेवेज्जगदवस्समण भते ! मारणतिय समुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स के महालिया सरीरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सरीरपमाणमत्ता विक्खंभे बाहल्लेणं, आयामेणं जहण्णेणं … उक्कोसेणं जाव अहेलोइयागामा, तिरियं जाव मणुस्सखेत्त उड्ढं जाव सगाइ २ विमाणाइ अणुत्तरोववाइयस्सवि एवचेव ॥ १४ ॥ कम्मगसरीरेणं भंते कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा एगिंदिय कम्मगसरीरे जाव पंचिंदिय कम्मगसरीरे एवं जहेव तेयगसरीरस्स भेदो संठाण ओगाहणाय भणिया

कहना अहो भगवन् ! ग्रैवेयक के देवता मारणांतिक समुद्घात करते हैं तब उन के तेजस शरीर की अवगाहना कितनी होती है ? हो गौतम ! शरीर प्रमाण की चौडी और लम्बी जघन्य तो विद्याधरों की श्रेणि पर्यंत क्योंकि इन के उत्तर वैक्रिय शरीर … है तथा यह किसी स्थान आवागमन भी नहीं करते हैं इसलिये मरे बाद नीचे मनुष्य में उत्पन्न होते हैं। वैताढ्य पर्वत पर जो विद्याधर की श्रेणि है उस में मनुष्य पने उत्पन्न होवे उस अपेक्षा उत्कृष्ट नीचे अधोगामिनी विजय पर्यंत, तिरछा यावत् मनुष्य क्षेत्र पर्यंत, ऊंचा … विमान … अनुत्तर विमान के देवता का भी ऐसा ही कहना इति तैजस शरीर का कथन ॥ १४ ॥ … कार्मण शरीर कितने प्रकार के कहे हैं ? अहो गौतम ! पांच प्रकार के कहे हैं … एकेन्द्रिय का कार्मण शरीर, यों जिस प्रकार तेजस शरीर का

रहइ णिरविसस भाणियव्व जाव अणुत्तरोववातियाति ॥ १५ ॥ ओरालिय सरी० रस्सण भंते ! कइदिसिं पोग्गला चिज्जति ? गोयमा ! णिव्वाघाएण छद्दिसिं वाघायंप डुच्च सियतिदिसिं सियचउदिसिं सियपंचदिसिं सियदिसिं ॥ वेउव्वियसरीरस्सण भंते ! कतिदिसिं पोग्गला चिज्जंति ? गोयमा ! णियमा छद्दिसिं, एवं आहारगसरीरस्सवि, तेयाकम्मगाण जहा ओरालियस्स ओरालियसरीरस्सण भंते ! कइदिसिं पोग्गला

कहा वैसा ही निरविशेष कार्मन शरीर का भी कहना यावत् अनुत्तर विमान के देवता पर्यन्त ॥ इति ॥ १५ ॥ अब पांचों शरीर आश्रिय पुद्गल चयन द्वार कहते हैं अहो भगवन् ! औदारिक शरीर कितने दिशा के पुद्गल औदारिक पने संचय करता है ? अहो गौतम जो अलोक नजीक न हो तो उस को व्याघात न होने से छ ही दिशा के पुद्गलों का ग्रहण करता है और जो औदारिक शरीर धारक लोक के अन्त में हो उन को अलोक की व्याघात होने से या लोक के कौन में होवे तो तीन दिशा के पुद्गलों ग्रहण करे नीचे के या ऊपर के कौन से कुछ ऊंच नीचे होवे तो चार दिशा के पुद्गलों ग्रहण करे और जो एक भीत की तरफ होवे व पांच दिशा के पुद्गलों ग्रहण करे अहो भगवन् ! वैक्रय शरीरवाला कितनी दिशा के पुद्गलों ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! निश्चय से छ ही दिशा के पुद्गलों ग्रहण करते हैं क्यों कि वैक्रय शरीरधारि सदैव लोक के मध्य में ही होते हैं ऐसे ही आहारक शरीर का भी कहना और तेजस्

उवचिज्जंति ? गोयमा ! एवं चेव जाव कम्मगसरीरस्स एव उवचिज्जति अवचिज्जति ॥ १९ ॥ जस्सणं भंते ! ओरालियसरीरं तस्सणं वेउव्वियसरीरं जस्सवेउव्वियसरीरं तस्स ओरालियसरीरं ? गोयमा ! जस्स ओरालियसरीरं तस्स वेउव्वियसरीरं सियअत्थि सियणत्थि जस्सवेउव्वियसरीरं तस्स ओरालियसरीरं सियअत्थि सियणत्थि ॥ जस्सणं भंते ! ओरालियसरीरं तस्स आहारगसरीरं जस्स आहारगसरीरं तस्स ओरालियसरीरं ? गोयमा ! जस्स ओरालियसरीरं तस्स आहारगसरीरं सियअत्थि सियणत्थि,

कार्माण शरीर का जैसा औदारिक शरीर का कहा वैसे कहना जिस प्रकार जितने ग्रहण करने का कहा उस ही प्रकार उपचिनने संग्रह करने का कहना और इस ही प्रकार अनचय-पुद्गलों का छोडने का कहना ॥ १९ ॥ अब शरीर संयोग द्वार कहते हैं—अहो भगवन् ! जिस के औदारिक शरीर होता है उस के वैक्रय शरीर होता है और जिस के वैक्रय शरीर होवे उस के औदारिक शरीर होता है क्या ? अहो गौतम ! जिस के औदारिक शरीर होता है उस के वैक्रय शरीर कदाचित् होता है कदाचित् नहीं भी होता है वैक्रय लब्धिवाले औदारिक शरीरधारी के वैक्रय शरीर होता है अन्य के नहीं होता है और जिस के वैक्रय शरीर होता है उस के भी औदारिक शरीर कदाचित् होता है कदाचित् नहीं होता है क्यों कि लब्धिवत तिर्यंच मनुष्य के होवे अन्य के नहीं है अहो भगवन् ! जिस के औदारिक

जस्स आहारगसरीरं तस्स ओरालियसरीरं णियमा अत्थि ॥ जस्सणं भंते ! ओरालियसरीरं तस्स तेयगसरीरं, जस्स तेयगसरीरं तस्स ओरालियसरीरं ? गोयमा ! जस्स ओरालियसरीरं तस्स तेयगसरीरं णियमाअत्थि, जस्स पुणतेयगसरीरं तस्स ओरालियसरीरं सियअत्थि सियणत्थि ॥ एवं कम्मगसरीरेवि ॥ जस्सणं भंते ! वेउव्वियसरीरं तस्स आहारगसरीरं जस्स आहारगसरीरं तस्स वेउव्वियसरीरं ?

शरीर होता है उन के आहारक शरीर होता है और जिस के आहारक शरीर होता है उस के औदारिक शरीर होता है क्या ? अहो गौतम ! जिस के औदारिक शरीर होता है उस के आहारक शरीर कदाचित् होता है कदाचित् नहीं होता है क्यों कि जो मनुष्य साधु हो चउद पूर्व के पाठी हुए हो आहारक लब्धि प्राप्त हुई हो उन के आहारक शरीर होते हैं, अन्य के नहीं होते हैं और आहारक शरीरधारी के औदारिक शरीर तो नियमा से होता है क्यों कि आहारक लब्धि औदारिक शरीरवाले के ही होती है अहो भगवन् ! जिस के औदारिक शरीर होता है उस के तेजस शरीर होता है क्या और जिस के तेजस् शरीर होता है उस के औदारिक शरीर होता है क्या ? अहो गौतम ! औदारिक शरीरवाले के तेजस् शरीर तो नियमा से होता ही है और तेजस् शरीरवाले को कदाचित् औदारिक शरीर होता है कदाचित् नहीं भी होता है क्यों कि वैक्रय आदि शरीरवाले के तेजस शरीर तो है परंतु औदारिक

गोयमा ! जस्स वेउव्वियसरीरं तस्स आहारगसरीरं णत्थि, जस्सपुण आहारगसरीरं तस्स वेउव्वियसरीरं णत्थि, तेयाकम्माइं जहा ओरालिएणसमं, तहेव आहारगसरीरेणवि समं तेयाकम्माइं तहेव उच्चारियव्वा ॥ जस्सणं भंते ! तेयगसरीरं तस्सकम्मगसरीरं जस्सकम्मगसरीरं तस्स तेयगसरीरं ? गोयमा ! जस्सतेयगसरीरं तस्सकम्मगसरीरं णियमाअत्थि, जस्सवि कम्मगसरीरं तस्सवि तेयगसरीरं नियमाअत्थि ॥ १७ ॥

शरीर नहीं है जिस प्रकार औदारिक तेजस् का सम्बन्ध कहा उस ही प्रकार तेजस् कार्माण का भी सम्बन्ध कहना अहो भगवन् ! जिस को वैक्रय शरीर होता है उस को क्या आहारक शरीर होता है और जिस को आहारक शरीर होता है उस को वैक्रय शरीर होता है ? अहो गौतम ! जिस के वैक्रय शरीर होता है उस के आहारक शरीर नहीं होता है और जिस के आहारक शरीर होता है उस को वैक्रेय शरीर नहीं होता है वैक्रय तेजस कार्मण सम्बन्ध जैसा औदारिक तेजस कार्माण का कहा तैसा ही कहना और आहारक शरीर के साथमें तेजस् कार्माण शरीर नियमासे है तेजस कार्माणक स्थान भी एक शरीरकी भजना है और नहीं भी है अहो भगवन् ! जिस को तेजस शरीर है उस को कार्माण शरीर है और जिस के कार्माण शरीर है उसको क्या तेजस शरीर है ? अहो गौतम ! जिस को तेजस शरीर है उस को कार्माण शरीर नियमा से है और

पत्तेसिण भंते ! ओरालिय वेउब्विय, आहारग तेयग कम्मगसरीराणं दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए दव्वट्ठपदेसट्ठयाए कयरे २ अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा आहारगसरीरा दव्वट्ठयाए, वेउव्विय सरीरा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा ओरालियसरीरा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा तेयाकम्मगसरीरा दोवितुल्ला दव्वट्ठयाए अणंतगुणा ॥ पदेसट्ठयाए-सव्वत्थोवा आहारगसरीरा पदेसट्ठयाए वेउव्वियसरीरा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा ओरालियसरीरा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा तेयगसरीरा पदेसट्ठयाए

जैसे ही कार्मण शरीर है उस के तेजस शरीर भी नियमा से है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! औदारिक वैक्रेय आहारक तेजस कार्मान द्रव्यार्थ पने प्रदेशार्थ पने तथा द्रव्यप्रदेशार्थपने किस २ से कौन बहुत तुल्य विशेष है ? अहो गौतम ! सब से थोडे आहारक शरीर द्रव्यार्थपने क्यों कि थोडे ही होते हैं, २ उस से वैक्रेय शरीर द्रव्यार्थ असंख्यातगुन चारों गति में पाता है, उस से औदारिक शरीर द्रव्यार्थपने असंख्यातगुन क्यों कि पांचो स्थावरोंके भी यह शरीर है, और उससे तेजस कार्मानवाले परस्पर तुल्य द्रव्यार्थपने अनंतगुन क्योंकि सर्व संसारी जीवों के होता है निगोद आश्रिय अनंतगुना कहा है अब प्रदेशार्थ कहते हैं सबसे थोडे आहारक शरीर प्रदेशार्थपने २ उससे वैक्रय शरीर प्रदेशार्थपने असंख्यातगुना, उनसे ३ औदारिक शरीर प्रदेशार्थपने असंख्यातगुना, ४ उससे तेजस शरीर प्रदेशार्थपने अनंतगुना उससे कार्माण शरीर प्रदेशार्थपने अनंतगुना अब द्रव्य प्रदेशार्थपने सब से

अणतगुणा, कम्मगसरीरा पदसट्ठयाए अणतगुणा ॥ दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए सव्वत्थो था आहारग सरीरा दव्वट्ठयाए वेउव्वियासरीरा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, ओरालिय सरीरा दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा, आरालिय सरीरहिंतो दव्वट्ठयाए आहारग सरीरा पदसट्ठयाए अणतगुणा, वेउव्वियसरीरा पदसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, उरालयसरीरा पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, तयाकम्मग सरीरा दोन्निवुल्ला दव्वट्ठयाए अणतगुणा, तयग सरीरा पदसट्ठयाए अणतगुणा, कम्मग सरीरा पदेसट्ठयाए अणतगुणा ॥ एतेसिण भते ! ओरालिय वेउव्विय आहारगा तेय

थोडा आहारक शरीर द्रव्यार्थ, २ वैक्रय शरीर द्रव्यार्थपने असंख्यातगुना, ३ औदारिक शरीर द्रव्यार्थ असंख्यातगुना, ४ औदारिक शरीर क द्रव्यार्थ से आहारक शरीर के प्रदेशार्थ अनंतगुना, ५ उस से वैक्रय शरीर प्रदेशार्थ असंख्यातगुना, ६ उस से औदारिक शरीर प्रदेशार्थ असंख्यातगुना, ७ उस से तेजस कार्मन दोनों परस्पर तुल्य द्रव्यार्थपने अनंतगुन, ८ उस से तेजस शरीर प्रदेशार्थपने अनंतगुना और उस से कार्मन शरीर प्रदेशार्थ अनंतगुना अब अवगाहना आश्रिय अल्पा बहुत्व कहते हैं. अहो भगवन् ! औदारिक वैक्रय आहारक तेजस और कार्मन शरीर में जघन्य उत्कृष्ट अवगाहना में तथा जघन्योत्कृष्ट अवगाहना में कौन २ थोडे ज्यादा तुल्य विशेष हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडी औदारिक

कम्मग सरीराण जहण्णियाए ओगाहणाए उक्कोसियाए ओगाहणाए जहण उक्क । ए ओगाहणाए कयर २ हितो, अप्पा ४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा ओरालिय सरीरस्स जहण्णया ओगाहणा तेयाकम्मगाणं दोण्हवि तुल्ला जहण्णिया ओगाहणा विसेसाहिया वेउव्वियसरीरस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा आहारग सरीरस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा उक्कोसियाओगाहणा सव्वत्थोवा आहा-रगसरीरस्स उक्कोसियाओगाहणा, ओरालिय सरीरस्स उक्कोसिया ओगाहणा संखेज्जगुणा वेउव्वियसरीरस्स उक्कोसिया ओगाहणा संखेज्जगुणा तेयकम्मगाण

होती है तथापि निगोदीय जीव उत्पन्न होवे उन का शरीर बहुत छोटा होता है उस से तेजस कार्मन की परस्पर तुल्य औदारिककी जघन्य अवगाहना से इनकी जघन्य अवगाहना विशेषाधिक क्यों कि मारणांतिक समुद्घात वक्त में शरीर से बाहिर निकले प्रदेश औदारिक शरीर से अधिक होते हैं उस से वैक्रय शरीर की जघन्य अवगाहना असंख्यातगुनी क्यों कि वृक्षादि के उत्पन्न होती वक्त में बडी होती है उस से आहारक शरीर की जघन्य अवगाहना असंख्यातगुनी क्यों कि एक हाथ में कुछ कम की होती है अब उत्कृष्ट अवगाहना की अल्पाबहुत्व कहते हैं—सब से थोडी उत्कृष्ट अवगाहना आहारक शरीर की क्यों कि एक हाथ की ही होती है, उस से औदारिक शरीर की उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुनी क्यों कि कुछ

दोण्हवि तुल्ला उक्कोसिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा॥जहण्णउक्कोसियाए ओगाहणाए सव्व त्थोवा आरालियसरीरस्स जहण्णिया ओगाहणा,तयाकम्माणं दोण्हवि तुल्ला जहण्णिया ओगाहणा विसेसाहिया,वेउव्वियसरीरस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा,आहारगसरीरस्स जहण्णिया ओगाहणा असंखेज्जगुणा,आहारगसरीरस्स जहण्णियाहिंतो ओगाहणाहिंतो तस्सचेव उक्कोसिया ओगाहणा विसेसाहिया आरालियसरीरस्स उक्कोसिया ओगाहणा संखेज्जगुणा, वेउव्वियसरीरस्स उक्कोसिया ओगाहणा संखेज्जगुणा,

अधिक एक हजार योजनकी है, उससे वैक्रय शरीरकी उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुनी क्यों कि कुछ अधिक लक्ष योजन की होती है, उस से तेजस कार्मान परस्पर तुल्य वैक्रय की उत्कृष्ट अवगाहना से इन की उत्कृष्ट अवगाहना असंख्यातगुनी क्योंकि केवल समुद्घात वक्त सर्वलोक व्यापी बनते हैं अब जघन्य उत्कृष्ट अवगाहना का मेला करते हैं—१ सब से थोडी औदारिक शरीर की जघन्य अवगाहना, २ उस से तेजस् कार्माण दोनों की परस्पर तुल्य औदारिक की जघन्य अवगाहना से इन की जघन्य अवगाहना विशेषाधिक, ३ वैक्रय शरीर की जघन्य अवगाहना असंख्यातगुनी, ४ आहारक शरीर की जघन्य अवगाहना असंख्यातगुनी, ५ आहारक शरीर की जघन्य अवगाहना से आहारक

सेयाकम्मगाणं दोण्हवि तुल्ला उक्कोसिया अगाहणा असंखेज्जगुणा ॥ इति पण्ण
वणाए भगवईए एक्कवीसम सरीरपय सम्मत्त ॥ २१ ॥ + ×

शरीर की उत्कृष्ट अवगाहना विशेषाधिक ६ उस से उदारिक शरीर की उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुनी ७ उस से वैक्रय शरीर की उत्कृष्ट अवगाहना संख्यातगुनी, ८ उस से तेजस कार्माण की परस्पर तुल्य वैक्रय की उत्कृष्ट अवगाहना से असंख्यातगुनी अधिक इति पन्नवणा भगवती का इक्कीसवा शरीर पद ॥२१॥

※ द्वाविंशतितम क्रियापदम् ※

कतिण भंते ! किरियाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! पंचकिरियाओ पण्णत्ताओ तंजहा-काइया, अहिगरणिया पाओसिया परियावणिया, पाणातिवायकिरिया ॥ १ ॥ काइयाण भंते ! किरिया कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा-अणुवरयकाइया, दुप्पउत्तकाइया किरिया य ॥ २ ॥ अहिगरणियाण भंते ! किरिया कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा-संजोयणाहिगरणि

अब बावीसवा क्रियापद कहते हैं अहो भगवन् ! कर्मबन्ध के कारण रूप क्रिया कितने प्रकारकी कही है ? अहो गौतम ! क्रिया पांच प्रकार की कही है तथया—१ काया शरीर कर के लगे वह कायिकी क्रिया, खड्गादि शस्त्र कर क्रिया लगे वह अधिकरणी क्रिया, ३ या द्वेष परिणामो कर लगे वह प्रद्वेषनी क्रिया, ४ जो परिताप दुःख की कर्ता होवे वह परितापनी क्रिया और ५ जो प्राणों का घात कर वह प्राणातिपातकी क्रिया ॥१॥ अहो भगवन् ! कायिकी क्रिया कितने प्रकार की कही है ? अहो गौतम ! दो प्रकार की कही है तथया—१ देश से तथा सर्व से प्रतकर पाप से काया की निवृत्ति हुई न होवे वह अनिवृत्ति कायिकी क्रिया, और दुष्ट प्रकार अयत्ना से काया के योग की प्रवृत्ति कर वह दुःप्रयुक्त

याए णिव्वत्तणाहिगरणियाए ॥ ३ ॥ काइयाणं भंते ! किरिया कतिविहा
पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता तंजहा-जेणं अप्पणो वा परस्सवा
तदुभयस्सवा असुभं मणवा धारेति सेत्त पाओसिया किरिया ॥ ४ ॥ परियावणियाणं
भंते ! किरिया कइविहा पण्णत्ता? गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता तंजहा जेणं अप्पणो
वा परस्सवा तदुभयस्सवा असायं वेदणं उदीरेति सेत्त परियावणिया किरिया
॥ ५ ॥ पाणाइवायकिरियाणं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा पण्णत्ता

कायिकी क्रिया, ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! आधिकरणिकी क्रिया के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम !
दो भेद कहे हैं, तद्यथा-संयोजना सो शस्त्र के हाथ आदि का संयोग मिलाये और २ नये शस्त्र बनाये
यह निर्वर्तित क्रिया ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! प्रद्वेषनी क्रिया के कितने भेद कहे ? अहो गौतम ! तीन भेद
कहे हैं तद्यथा—जो अपनी आत्मापर अन्य की आत्मापर तथा अपनी पराई दोनों की आत्मापर मन
परिणाम अशुभ-खोट धारण करे यह प्रद्वेषनी क्रिया ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! परितापनिकी क्रिया के कितने
भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! तीन भेद कहे हैं तद्यथा—अपनी आत्मा को पर की आत्मा को तथा अपनी पर
की दोनों की आत्मा परिताप-दुःख उत्पन्न करे यह परितापनिया क्रिया ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! प्राणातिपात की
क्रिया के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! तीन भेद कहे हैं तद्यथा जो अपनी पराई तथा दोनों की आत्मा के प्राणों

तजहा जण अप्पाणवा परवा तदुभयंश जीवियाओ ववरोवइ सेत्त पाणाइवायकिरिया ॥१॥जीवाण भते!किं सकिरिया अकिरिया?गोयमा! जीवा सकिरियावि अकिरियावि ॥ सेकणट्ठण भते ! एव वुच्चति जीवा सकिरियावि अकिरियावि ? गोयमा ! जीवा दुविहा पण्णत्ता तजहा ससार समावण्णगाय असंसार समावण्णगाय, तत्थण जसे असंसार समावण्णगाय तेण सिद्धा, सिद्धाण अकिरिया ॥ तत्थण जेते ससार समावण्णगा त दुविहा पण्णत्ता तजहा सेलेसि पडिवण्णगाय असेलेसि पडिवण्णगाय ॥

भसग कर वह म णातिपातकी क्रिया ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! जीव सक्रिय है कि अक्रिय है ? अहो गौतम ! जीव सक्रिय भी है और अक्रिय भी है अहो भगवन् ! ऐसा किस कारन कहा कि जीव सक्रिय भी है और अक्रिय भी है ? अहो गौतम ! जीव दो प्रकार के कहे हैं तद्यथा—१ ससार सम्पन्न और २ असंसार सम्पन्न इस में जो असंसार सम्पन्न जीव हैं व सिद्ध कहलाते हैं व सिद्ध भगवंत सो अक्रिय हैं अर्थात् उन को क्रिया नहीं लगती है और जो ससार सम्पन्न जीव हैं उन के दो भेद किये हैं तद्यथा—सेलेशी प्रतिपन्न जो चतुर्दशवे गुणस्थानारूढ मेरु पर्वत की तरह तीनों योगोंका निरोध कर अयोगी बने हैं, और असेलेशी जीव जो तेरहवे गुणस्थानवर्ती जीवों इस में जो सेलेशी

तत्थणं जेते असंपत्ता ते णं पडिवण्णगा तेणं अकिरिया॥तत्थणं जेते असेलेसि पडिवण्णगा य
तेणं सकिरिया से तेणट्टेणं गोयमा ! एवं वुच्चति जीवा सकिरयावि अकिरियावि ॥७॥
अत्थिणं भंते! जीवाणं पाणातिवाएणं किरिया कज्जति? हंता गोयमा! अत्थि॥कम्हिणं भंते!
जीवा पाणातिवाएणं किरिया कज्जति ? गोयमा ! छसु जीवनिकाएसु ॥
अत्थिणं भंते ! नेरइयाणं पाणातिवाएणं किरिया कज्जति ? हंता गोयमा !
एवं चेव जाव निरंतर वेमाणियाणं ॥ अत्थिणं भंते ! जीवाणं मुसावाएणं

प्रतिपन्न हैं वे तो अक्रिय हैं और जो असैलेशी जीव हैं वे सक्रिय हैं इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहा कि जीव सक्रिय भी है और अक्रिय भी है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! जीव क्या प्राणातिपातकी क्रिया करता है ? हां गौतम ! करता है अहो भगवन् ! प्राणातिपात की क्रिया कहां करता है ? अहो गौतम ! पृथ्व्यादि छही काया की हिंसा करते हुवे प्राणातिपातकी क्रिया करता है अहो भगवन् ! नरक के जीवों प्राणातिपातकी क्रिया का कर्ता है क्या ? हां गौतम ! है इस ही प्रकार चौवीस दंडक यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना यह एक समुच्चय जीव का और चौवीस २ दंडक के ऐसे २५ सूत्र प्राणातिपात की क्रिया के हुवे अहो भगवन् ! जीव मृषावाद क्रिया का करता है क्या ?

किरिया कज्जति ? हंता गोयमा ! अत्थि ॥ कहिण भंते ! जीवाणं मुसावाएणं किरिया कज्जइ ? गोयमा ! सव्वदव्वेसु ॥ एवं निरंतर नरइयाणं जाव वेमाणियाणं ॥ अत्थिणं भंते ! जीवाणं अदिण्णादाणेणं किरिया कज्जति ? हंता गोयमा ! कहिणं भंते ! जीवाणं अदिण्णादाणेणं किरिया कज्जइ ? गोयमा ! गहणधारणिज्जेसु दव्वेसु॥ एवं णरइयाणं जाव निरंतरं वेमाणियाणं ॥ अत्थिणं भंते ! जीवाणं मेहुणेणं किरिया कज्जति ? हंता अत्थि ॥ कहिणं भंते ! जीवाणं मेहुणेणं किरिया कज्जति ?

हां गौतम ! है अहो भगवन् ! जीव मृषावाद की क्रिया कहां करता है ? अहो गौतम ! सर्व प्रकार के द्रव्य का अन्यथा प्ररूपता हुवा मृषावाद की क्रिया करता है इस के भी एक समुच्चय जीव का और चौवीस दंडक के एस पचीस सूत्र कहना अहो भगवन् ! जीव क अदत्तादान की क्रिया है क्या ? हां गौतम ! है अहो भगवन् ! जीव अदत्तादान की क्रिया कहां करता है ? अहो गौतम ! किसी भी वस्तु को ग्रहण करता हुवा, धारण करता हुवा अदत्तादान की क्रिया करता है इस के भी समुच्चय जीव और चौवीस दंडक के पचीस सूत्र कहना अहो भगवन् ! जीव के मैथुन की क्रिया है क्या ? हां गौतम ! है अहो भगवन् ! जीव मैथुन क्रिया कहां करता है ? अहो गौतम ! स्त्री आदि के

गोयमा ! रूवेसुवा, रूवसहगतसुवा दव्वेसु, एव नेरइयाणं निरतरं जाव वेमाणियाणं अत्थिण भंते ! जीवाण परिग्गहेण किरिया कज्जति ? हता गोयमा ! अत्थि ॥ कहिण भंते ! जीवाण परिग्गहेण किरिया कज्जति ? गोयमा ! सव्वदव्वेसु ॥ एव णेरइयाण जाव वेमाणियाण ॥ एव कोहेण, माणेण, मायाए, लोभेण, पेज्जेणं दोसेण कलहेण अब्भक्खाणेण, पेसुण्णेणं परपरिवाएण, अरतिरतीए, मायामोसेण मिच्छा दसणसल्लेण, सव्वेसु जीव णेरइय भेदण भाणियव्व, निरतर जाव वेमाणियाणंति ॥

चित्र देखकर अभिलाप होने से या स्त्री आदि के संयोग से विषय के सब द्रव्य में आसक्ति होने से मैथुनकी क्रिया करता है यों नरीये से लगाकर यावत् वैमानिक पर्यन्त पचीस सूत्र कहना अहो भगवन् ! जीव परिग्रह क्रिया करता है क्या ? हां गौतम ! है अहो भगवन् ! किस तरह जीव परिग्रह से क्रिया करता है ? अहो गौतम ! सर्व द्रव्य में यों नेरीये यावत् वैमानिक पर्यन्त पचीस क्रिया कहना जिस प्रकार यह पांच क्रिया कही उस ही प्रकार क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, क्लेश, अभ्याख्यान, पैशुन्य (चुगली), परपरिवाद [निंदा] रति, अरति, [हर्ष शोक] और मिथ्यात्व दर्शन शल्य इन आठारह पापों को समुच्चय जीव और चौवीस दण्डकपर यों पचीस २ सूत्र करना सब ४५० सूत्र बहुत

एव अट्ठारस्स एते दण्डगा ॥ ८ ॥ जीवेण भंते ! पाणाइवातेणं कतिकम्मपगडीओ बधति? गोयमा! सत्तविह बंधएवा अट्ठविह बधएवा एव णेरइए जाव वेमाणिए जीवाणं भंते! पाणाइवाएण कतिकम्मपगडीओ बधति? गोयमा! सत्तविह बधगावि अट्ठविह बधगावि ॥ णेरइयाण भंते! पाणातिवाएण कतिकम्मपगडीआ बधति? गोयमा! सव्वेवि ताव होज्जा सत्त विह बधगा, २ अहवा सत्तविहबंधगाय अट्ठविह बधगेय, ३ अहवा सत्तविहबंधगाय अट्ठविह

जीव आश्रिय कहे ॥ ८ ॥ अब क्रिया कर्म बन्ध का कथन करते हैं अहो भगवन् ! जीव प्राणातिपात करता हुवा कितनी प्रकृति का बन्ध करता है ? अहो गौतम ! जिस वक्त आयुष्य कर्म का बंध नहीं करता है उस वक्त सात कर्म का बंध करता है और जिस वक्त आयुष्य का बंध करता है उस वक्त आठ ही कर्म प्रकृति का बंध करता है क्यों कि आयुष्य का बंध एक भव में एक ही वक्त होता है एसे ही नरक से वैमानिक पर्यंत कहना अब बहुत आश्री कहते हैं. अहो भगवन् ! बहुत जीव प्राणातिपात से कितनी कर्म प्रकृतियों का बंध करते हैं ? अहो गौतम ! सात अथवा आठ अहो भगवन् ! नेरीये प्राणातिपातिक क्रिया से कितनी कर्म प्रकृति का बंध करते हैं ? अहो गौतम ! सब वैसे ही कहना इस के तीन भांगे होते हैं—१ सात कर्म के बंधक तो सदैव बहुत पाते हैं इसलिये सात कर्म बन्धन करने वाले बहुत, सात कर्म के बंधक बहुत और आठ कर्म का बन्धन एक, २ सात कर्म के

बंधमाणा एवं असुरकुमाराणवि जाव थणियकुमाराणवि ॥ पुढवि-आउ तेउ वाऊ-वणस्सति काइयाय एए सव्वेवि जहा ओहिया जीवा, अवसेसा जहा नेरइया ॥ एवं एते जीव एगिंदियवज्जा तिण्णि भंगा सव्वत्थ भाणियव्वत्ति जाव मिच्छादंसण सल्लेणं ॥ एवं एगत्त पोहत्तिया ॥ छत्तिस दंडगा होंति ॥ १ ॥ जीवेणं भंते ! नाणावरणिज्जं कम्मं बंधमाणे कइ किरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए ॥ एवं नेरइए जाव वेमाणिए ॥ जीवाणं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं बंधमाणा कतिकिरिया ?

बन्धक भी बहुत और आठ कर्म के बन्धक भी बहुत इस ही प्रकार तीन भांगे असुरकुमार से यावत् स्तनितकुमार पर्यंत दशों ही भुवनपति देव का कहना पृथ्वी पानी तेऊ वायु वनस्पतिकाय को जैसे औधिक जीव का कहा वैसे कहना ऊपर सब दंडक का जैसा नरियका कहा वैसा कहना यों इस प्रकार एकेन्द्रिय छोडकर सब दंडक पर तीन २ भांग कहना और जैसा प्राणातिपात से कर्म बन्ध का सूत्र कहा ऐसा ही यावत् मिथ्या दर्शन शल्य तक अठाराही पाप से कर्मबन्ध का सूत्र जानना इस प्रकार ही एक जीव आश्रिय १८ सूत्र कहना और अनेक जीव आश्रिय भी १८ सूत्र इस ही प्रकार कहना यों सब ३६ सूत्र दंडक आश्रिय हुए ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! जीव ज्ञानावरणिय बंध करता हुआ कितनी क्रिया करता है ? अहो गौतम ! कदाचित् तीन क्रिया करता है कदाचित् चार क्रिया करता

गोयमा ! तिकिरियावि चउकिरियावि पंचकिरियावि ॥ एवं णेरइया जाव वेमाणिया एवं दरिसणावरणीयं वेयणिज्जं, मोहणिज्जं, आउयं, णामं, गोयं, अंतराइयंच, अट्ठविह कम्मपगडीतो भाणियव्वाओ एगत्तपोहत्तिया सोलस दंडगा भवंति ॥ १० ॥ जीवेणं भंते ! जीवातो कतिकिरिए ? गोयमा ! सियतिकिरिए, सियचउकिरिए, सिय पंचकिरिए सियअकिरिए ॥ जीवेणं भंते ! णेरइयाओ कइकिरिये ? गोयमा ! सियतिकिरिए, सिय चउकिरिए सियअकिरिए ॥ एवं जाव थणियकुमाराओ ॥ पुढविकाइयाओ आउकाइयाओ

है, और कदाचित् पांच क्रिया भी करता है यों नरीये से यावत् वैमानिक ऐसे पचीस सूत्र कहना और जिस प्रकार यह ज्ञानावरणीय कर्म का कहा उस ही प्रकार दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयुष्य नाम, गोत्र, अन्तराय यों आठों ही कर्मों का कहना यों आठों कर्मों के आठ सूत्र एक जीव आश्रिय और आठ सूत्र बहुत जीव आश्रिय यों १६ सूत्र कहना ॥ १० ॥ अब जीव २ की परस्पर क्रिया का कहते हैं अहो भगवन् ! एक जीव अन्य जीव की अपेक्षा कितनी क्रिया करता है ? अहो गौतम ! कदाचित् तीन क्रिया करता है, कदाचित् चार क्रिया करता है कदाचित् पांच क्रिया करता है और कदाचित् अक्रिय भी होता है अहो भगवन् ! जीव को नारकी की अपेक्षा कितनी क्रिया लगती है. अहो गौतम ! स्यात् तीन क्रिया लगती है स्यात् चार क्रिया लगती है और स्यात् अ-

तेउकाइयाओ वाऊकाइयाओ वणस्सइ काइयाओ बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणियमणुस्साओ जहा जीवाओ ॥ वाणमंतरजोइसियवेमाणियातो जहा णरइयातो ॥ ११ ॥ जीवेण भंते ! जीवेहिंतो कइकिरिए ? गोयमा ! सियतिकिरिए सियचउकिरिए सियपंचकिरिए सियअकिरिए ॥ जीवेण भंते ! णेरइएहिंतो कतिकिरिए ? गोयमा ! सियतिकिरिए, सियचउकिरिए, सियअकिरिए ॥ एवं

क्रिय भी होता है परंतु नरक की अपेक्षा पांच क्रिया नहीं लगती है क्योंकि-वैक्रेय शरीरवाले जो कर्मायुष्यी होते हैं किसी के मार मरते नहीं है परन्तु आयुष्य पूरा होने से ही मरते हैं; जिस प्रकार नरकका कहा उस ही प्रकार दशों ही भुवनपति देव तक कहना पृथ्वीकाया अप्काया तेजस्काय वायुकाया वनस्पतिकाया, बेइंद्रिय तेइंद्रिय चौरिन्द्रिय तिर्यंच पंचेंद्रिय और मनुष्यका जैसे समुच्चय जीवका कहा वैसे कहना और वाणव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक का जैसा नारकी का कहा वैसे ही कहना ॥ ११ ॥ अब एक जीव को बहुत जीव आश्रिय प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन् ! एक जीव को बहुत जीव आश्रिय कितनी क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! कदाचित् तीन क्रिया, कदाचित् चार क्रिया, कदाचित् पांच क्रिया लगती है और कदाचित अक्रिय भी होता है अहो भगवन् ! एक जीव को बहुत नरक के नेरीये आश्रिय कितनी क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! स्यात् तीन क्रिया लगती है, स्यात् चार क्रिया लगती है,

जहेव पढमो दंडओ तहा एसोवि विसितो भाणियव्वो जाव वेमाणियाणं॥ १२॥ जीवाणं भंते ! जीवाओ कइकिरिया ? गोयमा ! सियतिकिरियावि सियचउकिरियावि, सिय पंचकिरियावि, सियअकिरियावि॥ जीवाणं भंते! नेरइयाओ कतिकिरिया ? गोयमा ! जहेव आदिल्लदंडओ तहेव भाणियव्वो, जाव वेमाणियत्ति ॥ १३ ॥ जीवाणं भंते ! जीवेहिंतो कइकिरिया ? गोयमा ! तिकिरियावि चउकिरियावि, पंचकिरियावि,

स्यात् अक्रिय भी होता है यों जिस प्रकार प्रथम दंडक जीव आश्रिय कहा वैसे ही यह भी दंडक कहना यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना ॥ १२ ॥ अब बहुत जीव आश्रिय एक जीव को क्रिया लग वह कहते हैं अहो भगवन् ! बहुत जीव आश्रिय एक जीव को कितनी क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! स्यात् तीन क्रिया स्यात् चार क्रिया स्यात् पांच क्रिया लगती है स्यात् अक्रिय भी होता है अहो भगवन् ! बहुत जीवों को एक नरक के जीव आश्रिय कितनी क्रिया लगती है अहो गौतम ! जिस प्रकार प्रथम एक जीव का दंडक कहा वैसे ही यह भी कहना यावत् वैमानिक पर्यन्त ॥ १३ ॥ अब बहुत जीव आश्रिय बहुत जीवों का चौथा दंडक पूछते हैं अहो भगवन् ! बहुत जीवों को बहुत जीव आश्रिय कितनी क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! स्यात् तीन क्रिया लगती है स्यात् चार क्रिया लगती है स्यात् पांच क्रिया लगती है और स्यात् अक्रिय भी होते हैं अहो भगवन् ! बहुत जीवों को [illegible] नरक के जीवों

अकिरियावि ॥ जीवाण भंते ! णेरइएहिंतो कतिकिरिया ? गोयमा ! तिकिरियावि चउकिरियावि, अकिरियावि ॥ असुरकुमारेहिंतो एवंचेव जाव वेमाणिएहिंतो ॥ १४ ॥ ओरालियसरीरेहिंतो जहा जीवेहिंतो ॥ १५ ॥ णेरइएणं भंते ! जीवातो कतिकिरिए ? गोयमा ! सियतिकिरिए सियचउकिरिए, सियपंचकिरिए ॥ णेरइएण भंते ! णेरइयाहिंतो कइकिरिए ? गोयमा ! सियतिकिरिए सियचउकिरिए एवं जाव थणियकुमाराओ, पुढविकाइयाओ जाव मणुस्सातो जहा जीवा, वाणमंतर

आश्रिय कितनी क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! स्यात् तीन क्रिया लगती है स्यात् चार क्रिया लगती है स्यात् अक्रिय होते हैं इस प्रकार असुरकुमार यावत् वैमानिक देव पर्यन्त प्रथम दंडक कहा वैसे ही कहना यह चारों दंडक हुवे ॥ १४ ॥ अब पांच शरीर आश्रिय क्रिया का कहते हैं अहो भगवन् ! जीव को औदारिक शरीर आश्रिय कितनी क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! जैसे समुच्चय जीव का कहा वैसे ही कहना ॥ १५ ॥ अब चौवीस दंडक आश्रिय परस्पर पूछते हैं-अहो भगवन् ! एक नरकके जीव को जीवसे कितनी क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! स्यात् तीन, स्यात् चार व स्यात् पांच क्रिया लगती है अहो भगवन् ! एक नरक के जीव को एक नरक के जीव आश्रिय कितनी क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! स्यात् तीन क्रिया और स्यात् चार क्रिया लगती है. ऐसे ही नरक के जीव को दश भवन

जोइसिया वेमाणियातो जहा णेरइया ॥ १२ ॥ णेरईएण भंते ! जीवेहिंतो कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सियचउकिरिए, सियपचकिरिय ॥ णेरइएण भंते ! णेरइएहिंतो कइकिरिए ? गोयमा ! सियतिकिरिए सियचउकिरिए, एवं जहेव पढमो दंडओ तहा एसो बितिओ भाणियव्वो, एवं जाव वेमाणिएहिंतो, णवरं णेरइयस्स णेरइएहिंतो देवेहिंतोय पंचमाकिरियाणत्थि॥णेरइयाणं भंते! जीवातो कतिकिरिया

पाने आश्रिय तीन तथा चार क्रिया लगती है पृथ्वीकाया से यावत् मनुष्य पर्यन्त जैसा समुच्चय जीवका कहा वैसा कहना वाणव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक का जैसा नेरीया का कहा वैसा कहना, अब एक नरक के जीव को बहुत चोवीस दंडक के जीवों आश्रिय करते हैं अहो भगवन ! एक नरक के जीव को बहुत जीव आश्रिय कितनी क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! स्यात् तीन क्रिया, स्यात् चार क्रिया स्यात् पांच क्रिया लगती है अहो भगवन् ! एक नेरीये को बहुत नरक के, नेरीये आश्रिय कितनी क्रिया लगती है ! अहो गौतम ! स्यात् तीन क्रिया और स्यात् चार क्रिया लगती है यों जिस प्रकार प्रथम दंडक कहा तैसे ही यह दूसरा दंडक भी कहना यों यावत् वैमानिक पर्यन्त जिस में इतना विशेष नारकी को नारकी से तथा नारकी का देवता से पांचवी क्रिया नहीं लगती है अब बहुत नारकी के जीवों को एक चोवीस दंडक के एक जीव आश्रिय करते हैं—अहो भगवन् ! बहुत नरक के जीवों का

गोयमा ! सियतिकिरिया सियचउकिरिया सियपंचकिरिया ॥ एवं जाव वेमाणियाओ णवरं णेरइयाओ देवाओय पंचमाकिरिया णत्थि ॥ १७ ॥ णेरइयाणं भंते ! जीवेहिंतो कइकिरिया ? गोयमा ! तिकिरियावि चउकिरियावि पंचकिरियावि ॥ णेरइयाणं भंते ! णेरइएहिंतो कतिकिरिया ? गोयमा ! तिकिरियावि, चउकिरियावि, एवं जाव वेमाणिएहिंतो, णवरं ओरालियसरीरेहिंतो जहा जीवेहिंतो ॥ १८ ॥ असुरकुमारेणं

एक जीव आश्रिय कितनी क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! स्यात् तीन क्रिया, स्यात् चार क्रिया, स्यात् पांच क्रिया, यों यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना जिस में इतना विशेष नारकी और देवता में पांचवी क्रिया नहीं लगती है ॥ १७ ॥ अब बहुत नरक के जीवों का बहुत जीव आश्रिय क्रिया लगती है वह कहते हैं—अहो भगवन् ! नरीयेको बहुत जीव आश्रिय कितनी क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! तीन भी लगती है चार भी लगती है और पांच भी लगती है अहो भगवन् ! बहुत नरक के नरीय को बहुत नरक के नेरीये आश्रिय कितनी क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! तीन क्रिया भी लगती है और चार क्रिया भी लगती है, यों यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना, जिस में इतना विशेष औदारिक शरीर की अपेक्षा से जैसे समुच्चय जीव आश्रिय कहा वैसे कहना यह नरकके चारों दण्डक संपूर्ण हुवे ॥ १८ ॥ अहो भगवन् !

भंते ! जीवाओं कतिकिरिए ? गोयमा ! जहेव णरइए चत्तारि दंडगा तहेव असुर कुमारेवि चत्तारिदंडगा भाणियव्वा एवं उववज्जिऊण भावेयव्वंति, जीवे मणुस्सेय अकिरिए वुच्चति सेसा अकिरिया न वुच्चति ॥ सव्वजीवा आरालिय सरीरोहिंतो पंच किरिया नेरइय देवोहिंतो पंचकिरिया ण वुच्चति, एवं एक्केक्कजीवपदे चत्तारि २

एक असुरकुमार का एक जीव आश्रिय कितनी क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! जिस प्रकार नरक के चार दंडक कहे उस ही प्रकार असुरकुमार के भी चार दंडक कहना (१ एक जीव आश्रिय एक जीव का, २ एक जीव आश्रिय बहुत जीव का ३ बहुत जीव आश्रिय एक जीव का और बहुत जीव आश्रिय बहुत जीव का) यों चौवीस ही दंडक में जो जो स्थान और उत्पत्ती की है तहां २ चार २ दंडक कहना; इस में समुच्चय जीव और मनुष्यके स्थानसे अक्रियका सूत्र लगाना क्योंकि मनुष्यको ही अक्रिय अवस्था प्राप्त होती है शेष स्थानमें अक्रिय नहीं कहना और सर्वस्थान में औदारिक शरीर के धारक जीव आश्रिय पांच क्रिया कहना, वैक्रेय शरीर वाले नारकी देवता से पांच क्रिया नहीं कहना क्यों कि इनका नोपक्रमी आयुष्य है यह किसी के मारे मरते नहीं है परंतु आयुष्य पूर्ण हुवे ही मरते हैं यों एकेक जीव, पदपे चार २ दंडक कहना यह एक जीव आश्रिय एक जीव से समुच्चय जीव का १ सूत्र और चौवीस दंडक

दडगा भाणियव्वा एव एत दडगसय, सव्वेविय जीवादियादडगा ॥ १९ ॥ कतिणं भते ! किरियाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! पंचकिरियाओ पण्णत्ताओ तंजहा-काइया जाव पाणातिपातकिरिया ॥णेरइयाण भते! कतिकिरियाओ पण्णत्ताओ? गोयमा ! पचकिरियाओ पण्णत्ताओ तजहा-काइया जाव पाणाइवाय किरिया, एव जाव वेमाणियाण ॥ २० ॥ जस्सण भते ! जीवस्स काइया किरिया कज्जति तस्स अहिगरणिया किरियाकज्जति, जस्सण अहिगरणिया किरिया कज्जति तस्स काइयाकिरिया कज्जति? गोयमा! जस्सणं जीवस्स काइया किरिया कज्जंति तस्सणं अहिगरणिया किरिया णियमा कज्जति,जस्सण अधिगरणियाकिरि

के २४ सूत्र यों २५ सूत्र होवे ऐसे एक जीव बहुत आश्रिय भी २५ सूत्र, ऐसे बहुत जीव एक जीव आश्रिय भी २५ सूत्र और ऐसे बहुत जीव बहुत जीव आश्रिय भी २५ सूत्र, यों सब १०० सूत्र होते हैं॥ १९॥ अब परस्पर क्रिया लगने का पूछते हैं—अहो भगवन् ! कितनी क्रिया कही है ? अहो गौतम ! पांच क्रिया कही हैं तथा—१ कायिकी क्रिया यावत् प्राणातिपातकी क्रिया यों यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! जिस जीव को कायिकी क्रिया लगती है उस को अधिकरणी क्रिया भी लगती है क्या और जिस को अधिकरणी क्रिया लगती है उस को कायिकी क्रिया लगती है क्या ? अहो गौतम ! जिस को कायिकी क्रिया लगती है उस को अधिकरणी की क्रिया निश्चय से लगती है और

या कज्जति तस्सवि काइयाकिरिया नियमा कज्जति ॥ १ ॥ जस्सण भंते ! जीवस्स काइया किरिया कज्जति तस्सपाओसिया किरियाकज्जति, जस्स पाओसिया किरिया कज्जति तस्स काइयाकिरिया कज्जति ? गोयमा ! एवचेव ॥ जस्सण भंते ! जीवस्स काइया किरिया कज्जति तस्सण परितावणिया किरिया कज्जति, जस्सण परितावणिया किरिया कज्जति तस्स काइया किरिया कज्जति ? गोयमा ! जस्सण जीवस्स काइया किरिया कज्जति तस्सपरितावणिया किरिया सिय कज्जति सियणो कज्जति, जस्सण पुण परितावणिया किरिया कज्जति तस्सकाइया किरिया णियमा कज्जति एवं पाणाइवाय

जिस को अधिकरणीकी क्रिया है उस के कायिकी क्रिया निश्चय से लगती है अहो भगवन् ! जिस को कायिकी क्रिया है उसको क्या प्रद्वेषनी क्रिया लगती है क्या और जिस को प्रद्वेषनी क्रिया है उस को कायिकी क्रिया लगती है क्या ? अहो गौतम! ऐसे ही जानना अहो भगवन् ! जिस को कायिकी क्रिया है उस को क्या परितापनिकी क्रिया लगती है और जिस को परितापनिकी क्रिया है उस को क्या कायिकी क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! जिस को कायिकी क्रिया होती है उस को परितापनिकी क्रिया कदाचित् होती है और कदाचित् नहीं भी होती है और जिस को परितापनिकी क्रिया होती है उस को कायिकी क्रिया निश्चय ही होती है ऐसे ही प्राणातिपात क्रिया का कहना ऐसे ही पहिले की ती-

किरियावि, एव आदिल्लाओ परोप्परं नियमा तिण्णि कज्जति, जस्स आदिल्लाओ तिण्णि कज्जति तस्स उवरिल्लाआ दोण्णि सिय कज्जति सिय णो कज्जति ॥ जस्स उवरिल्लाआ दोण्णिकज्जति तस्स आदिल्लाओ नियमा तिण्णि कज्जति, ॥ जस्सणं भत ! जीवस्स परितावणिया किरिया कज्जति तस्स पाणातिवायकिरिया कज्जति, जस्स पाणाइवाय किरिया कज्जति तस्स परितावणिया किरिया कज्जति ? गोयमा ! जस्सण जीवस्स परियावणिया किरिया कज्जति तस्स पाणातिवाय किरिया सिय कज्जति सिय

क्रिया परस्पर नियमा होती है जिसको पहिलेकी तीन होती है उसको पीछेकी दो कदाचित् होती है और कदाचित् नहीं भी होती है और जिस को पीछे की दो क्रियाओं होती है उस को पहिले की तीन क्रिया निश्चय से होती है अहो भगवन् ! जिस जीव को परितापनिकी क्रिया होती है उस को क्या प्राणातिपातिकी क्रिया लगती है अथवा जिस को प्राणातिपातकी क्रिया होती है उस को क्या परितापनिकी क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! जिस जीव को परितापनीय क्रिया लगती है उस के प्राणातिपात की क्रिया कदाचित् लगती है और कदाचित् नहीं भी लगती है क्योंकि बान मारा और वह छ महिने पर्यंत मरा नहीं तो उस परितापनी क्रिया ही लगती है प्राणातिपात की क्रिया नहीं लगती है

पच आठो
एव णेरइयाणं
किरिया अत्थि तस्स
जिया किरिया अत्थि त
सचारिवडगा भाणियव्वा,
जीवेणं भंत ! जं समयं का

...त्रायकिरिया,
आतोजिता
...धिगरणिया आओ
...तेण अभिलावेण तेचत्र
...र वेमाणियाणं ॥ २९ ॥
पाउसियाए किरियाए पुट्ठे,

(मायामीया क्रिया करी है ! अहो गौ... वाली क्रिया) क्रिया का पूछत हैं. अहो भगव... तीस मायाजीया क्रिया करी है तद्यथा—१ कायिक क्रिया यावत् प्राणातिपातकी क्रिया, ...नहीं वैमानिक पर्यन्त आया जीया क्रिया कहना, अहो भगवन् ! जिस जीव के काइया क्रिय आधिकरणि होती है उस ही जीव के आधिकरणी क्रिया भी आया जीया होती है ? कही है ! अहो आधिकरणी क्रिया आया जीया होती है उस के कायिकी क्रिया भी आया जीया, २ परिग्रहीया भी गौतम ! उक्त प्रकार इस क भी चार दंडक कहना (१ जो जीव, २ जिस समयस्थानी मन नहीं ४ जिस प्रदेश में) यावत् नारकी से वैमानिक पर्यन्त चौवीस ही दंडक भगवन् ! आरंभियां क्रिया स्पर्शना आश्रिय पूछते हैं—अहो भगवन् ! जीव जिस छठे गुन स्थान तक लगती है अहो

तसमयं पन्निावणियाकिरियाए पुट्ठ पाणाइवायकिरिय० जाव वेमाणियस्स ॥ २४ ॥ जीवे एगतियाओ जीवाओ जसमय काइयाए अ० करणिया किरिया कज्जति, किरियाए पुट्ठ त समय परितावणियाए-किरियाए, पुट्ठ पाणाइ० ज पएस चत्तारि दहग गतिए जीव एगतियाओ जीवाओ जसमय काइयाए अहिगर, किरियाए पुट्ठे तसमय परितावणियाए पुट्ठे, पाणाइवायकिरियाए ? गोयमा ! अत्थेगतिए जीवे एगतियाओ जीवाओ जंसमय काइयाए अधिगरणियाए पुट्ठ तसमय परितावणियाए अपुट्ठे, पाणाइवायाए अपुट्ठ ॥ ३ ॥ अत्थे गइ भो करना

क्रिया का स्पर्शता है उस समय परितापनीकी और प्राणातिपातकी क्रिया से भी स्पर्शता है क्या ? अहो गौतम ! कितनेक जीव तो एक जीव की अपेक्षा जिस समय में कायिकी अधिकरण की मद्वषकी क्रिया से स्पर्शते हैं उस ही समय परितापकी और प्राणातिपात की क्रिया से स्पर्शते हैं २ और कितनेक जीव एक जीव की अपेक्षा जिस समय कायिकी अधिकरणीय प्रद्वषी की क्रिया को स्पर्शते हैं उस समयमें परितापनी की क्रियासे स्पर्शते हैं और प्राणातिपातकी क्रिया नहीं स्पर्शते हैं २ कितनेक जीव अन्य किसी जीव से जिस समय कायिकी अधिकरणी मद्वषकी क्रिया स्पर्शे उस समय परिताप की क्रिया भी स्पर्शे नहीं और प्राणातिपात की क्रिया भी स्पर्शे नहीं (दुःख नहीं उत्पन्न करने से ४ और

जीव एगइयाओ जीवाओ जसमयं काइयाए अहिगरणियाए पाओसियाए किरियाए पुट्ठे, तसमयं परियावणियाए किरियाए अपुट्ठे, पाणाइवाए किरियाए अपुट्ठे ॥२७॥ कतिण भंते! किरियाओ पण्णत्ताओ? गोयमा! पंचकिरियाओ पण्णत्ताओ तंजहा आरंभिया, परिग्गहिया, मायावत्तिया, अपच्चक्खाण किरिया, मिच्छादंसणवत्तिया ॥ आरंभियाणं भंते! किरिया कस्स कज्जति? गोयमा! अण्णयरस्सवि पमत्त संजयस्स ॥ परिग्गहियाणं भंते! किरिया कस्स कज्जति? गोयमा! अण्णयरस्सवि संजयासंजयस्स ॥

कितनेक जीव अन्य किसी जीव से जिस समय, कायिक अधिकरणी की प्रद्वेष की क्रिया स स्पर्श नहीं उस समय परितापनी क्रिया से भी स्पर्शावे नहीं और प्राणातिपातकी क्रिया से भी स्पर्शावे नहीं यह आशय जानना ॥ २७ ॥ अब अन्य प्रकार की पांचक्रिया कहते हैं—अहो भगवन्! कितनी क्रिया कही है? अहो गौतम! पांचक्रिया कही है तद्यथा—१ आरंभिया पृथ्व्यादिका आरंभ करने से लगे, २ परिग्रहीया-जो पर पदार्थ पर मूर्च्छा ममत्व करने से लगे, ३ माया प्रत्ययी-कपट करने लगे, ४ अप्रत्याख्यानी व्रत नहीं करने से लगे और ५ मिथ्यात्व दर्शन प्रत्ययी, मिथ्या श्रद्धा करने लगे अहो भगवन्! आरंभिया क्रिया कौन करता है? अहो गौतम! कोई संयति को भी लगती है, अर्थात् छठे गुन स्थान तक लगती है अहो

मायावत्तियाण भंते ! किरिया कस्स कज्जति ? गोयमा ! अण्णयरस्सवि अप्पमत्त संजयस्स, अपच्चक्खाणकिरियाण भंते ! कस्स कज्जति ? गोयमा ! अण्णयरस्सवि अपच्चक्खाणिस्स, मिच्छादंसणवत्तियाण भंते ! किरिया कस्स कज्जति ? गोयमा ! अण्णयरस्सवि मिच्छादंसणस्स ॥ २८ ॥ णेरइयाणं भंते ! कतिकिरियाओ पण्णत्ता-ओ ? गोयमा ! पंचकिरियाओ पण्णत्ताओ तंजहा-आरंभिया जाव मिच्छादंसण वत्तिया ॥ एवं जाव वेमाणियाणं ॥ जस्सणं भंते ! जीवस्स आरंभिया किरिया

भगवन् ! परिग्रही क्रिया किस को लगती है ? अहो गौतम ! कोईक संयतासंयती (श्रावक) को पांचवे गुणस्थान तक भी लगती है, अहो भगवन् ! मायाप्रत्ययी क्रिया कौन करता है ? अहो गौतम किसी अप्रमत्त संयती को नववे गुणस्थान तक लगती है, ४ अहो भगवन् ! अप्रत्याख्यानी क्रिया किसको लगती है ? अहो गौतम ! किसी अप्रत्याख्यानी को चौथे गुण स्थान तक लगती है, और अहो भगवन् ! मिथ्या दर्शन प्रत्ययी क्रिया किसको लगती है ? अहो गौतम ! अन्य कोई मिथ्यात्वीको लगती है प्रथम गुणस्थान तथा तीसरे गुणस्थानतक लगती है ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! इन पांच क्रिया में से नारकी के कितनी क्रिया कही है ? अहो गौतम ! पांच क्रिया लगती है तद्यथा-आरंभिक यावत् मिथ्यात्व दर्शन प्रत्ययी यों यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना।

कज्जति तस्स परिग्गहिया किरिया कज्जति, जस्स परिग्गहियां किरिया कज्जति, तस्स आरंभिया किरिया कज्जति ? गोयमा ! जस्सण जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जति तस्स परिग्गहिया किरिया सिय कज्जइ सिय णो कज्जइ, जस्स पुण परिग्गहिया किरिया कज्जइ तस्स आरंभिया किरिया णियमा कज्जति॥ जस्सणं भंते! जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जति तस्स मायवत्तिया किरियाकज्जति पुच्छा ? गोयमा ! जस्सणं जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जति तस्सणं मायावत्तिया किरिया णियमा कज्जति,

अर्थात् चोवीस ही दंडक में पांचों क्रिया लगती है अब परस्पर यह पांच क्रिया कहते हैं अहो भगवन् ! जिस का आरंभिका क्रिया लगती है उस को परिग्रह की भी क्रिया लगती है क्या और जिस को परिग्रह की क्रिया लगती है उस को आरंभ की क्रिया लगती है क्या ? अहो गौतम ! जिस जीव को आरंभ की क्रिया लगती है उस जीव को परिग्रह की क्रिया स्यात् लगती है स्यात् नहीं भी लगती है क्योंकि प्रमत्त संयतिको अशनादिकी अनुमोदना से आरंभ की क्रिया तो लगती है परंतु परिग्रहकी क्रिया नहीं लगती है और जिस का परिग्रही क्रिया लगती है उसका आरंभिका क्रिया जरूर ही लगती है अहो भगवन्' जिस जीव का आरंभि का क्रिया लगती है उस को माया प्रत्ययी क्रिया लगती है क्या और जिस

जस्स णं भंते ! जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जति तस्स पारिग्गहिया किरिया सिय कज्जति सिय णो कज्जति ॥ अप्पच्चक्खाण किरिया पुच्छा ? गोयमा ! जस्स णं जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जति तस्स अपच्चक्खाण किरिया सिय कज्जति सिय णो कज्जति, जस्सपुण अपच्चक्खाणिय किरिया कज्जति तस्स आरंभिया किरिया णियमा कज्जति ॥ एवं मिच्छादंसणवत्ति याएवि, सम एवं परिग्गहियावि ॥ तिहिंवि उवरिल्लाहिं समं संचारेयव्वा ॥ जस्सणं

का पाया मस्पी क्रिया लगती है उस को आरंभिया क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! जिस को आरंभिया क्रिया लगती है उस को माया प्रत्ययी क्रिया भी अवश्य लगती है और जिस को माया प्रत्ययी क्रिया लगती है उस को आरंभिया क्रिया कदाचित् लगती है कदाचित् नहीं भी लगती है क्यों कि आरंभिया तो छठे गुणस्थान से आगे नहीं है और माया प्रत्ययी दशवें गुणस्थान तक है अहो भगवन् ! जिस जीव को आरंभिया क्रिया लगती है उस को अप्रत्याख्यान की क्रिया लगती है और जिस को अप्रत्याख्यान की क्रिया लगती है उस को आरंभिकी क्रिया लगती है क्या ? अहो गौतम ! जिस को आरंभ की क्रिया लगती है उस को अप्रत्याख्यान क्रिया स्यात् लगती है स्यात् नहीं भी लगती है, क्योंकि

मायावत्तिया किरिया कज्जति तस्स उवरिल्लओ दोवि सिया कज्जति सिय णो कज्जति, जस्स उवरिल्लाओ दोवि कज्जति तस्स मायावत्तिया नियमा कज्जति, जस्स अपच्चक्खाण किरिया कज्जति, तस्स मिच्छादंसणवत्तिया किरिया सिय कज्जति सिय णो कज्जति, जस्स पुण मिच्छादंसण वत्तिया किरिया कज्जति तस्स अपच्चक्खाण किरिया णियमा कज्जति ॥ णरइयस्स आदिल्लयातो चत्तारि किरिया, परोप्परा नियमा कज्जति, जस्स एतातो चत्तारि कज्जति, तस्स मिच्छादंसणवत्तिया किरिया भइज्जति, जस्सपुण

अप्रत्याख्यानी क्रिया चौथा गुणस्थान तक है और आरंभ की छठ्ठ गुणस्थान तक है और जिस को अप्रत्याख्यान की क्रिया लगती है उस का आरंभ की क्रिया तो निश्चय से लगती है, इस प्रकार ही मिथ्यात्व दर्शन क्रिया के साथ भी कहना और इस प्रकार ही परिग्रही क्रिया का भी कहना तीनों ऊपर की क्रिया साथ ही कहना जिस को माया प्रत्ययी क्रिया लगती है उस को ऊपर की दो क्रिया कदाचित् लगती है कदाचित् नहीं भी लगती है और जिस के ऊपर की दो क्रिया लगती है उस के माया प्रत्ययी क्रिया निश्चय से लगती है जिस के अप्रत्याख्यानी क्रिया लगती है उस के मिथ्यात्व दर्शन क्रिया कदाचित् लगती है कदाचित् नहीं भी लगती है, और जिस के मिथ्यात्व दर्शन क्रिया

मिच्छादसणवत्तिया किरिया कज्जति तस्स एता चत्तारि णियमा कज्जति ॥ एवं जाव थणियकुमारस्स ॥ पुढविकाइयस्स जाव चउरिंदियस्स पचवि परोप्परनियमा कज्जति, पंचिंदिय तिरिक्खजोणियस्स आदिल्लायाओ तिण्णिवि परोप्पर नियमा कज्जति, जस्स एयाओ कज्जति तस्स उवरिल्लातो दोइ भज्जति, जस्स उवरिल्लाओ दोण्णि कज्जति तस्स एताओ तिण्णिवि नियमा कज्जति ॥ जस्स अपच्चक्खाण किरिया तस्स मिच्छादसण वत्तिया किरिया सिय कज्जति सिय णो कज्जति, जस्सपुण मिच्छादसणवत्तिया

लगती है उस को पांचों क्रिया निश्चय से लगती है जैसे नाग क्रिया का विधान कहा इस ही प्रकार एक नरक का दण्डक और दश भुवनपति के दश दंडक यों दंडक कहना पृथ्वीकाया से यावत् चौरिंद्रिय तक पांचों ही क्रिया नियमा से लगती है, तिर्यंच पंचेंद्रिय के पहिले की तीनों क्रिया तो परस्पर नियमा से लगती है और जो इन तीन क्रिया का करता है उस के ऊपर की दो क्रिया की भजना किसी को लगे किसी को नहीं भी लगे और जिस के ऊपर की दो क्रिया लगती है उस के नीचे की तीन क्रिया निश्चय से लगती है जिस के अप्रत्याख्यानी क्रिया लगती है उस के मिथ्यात्व दर्शन प्रत्ययी क्रिया स्यात् लगती है स्यात् नहीं लगती है, और जिस को मिथ्यात्व दर्शन प्रत्ययी क्रिया लगती है उस को

किरिया कज्जति तस्स अपच्चक्खाण किरिया नियमा कज्जति ॥ मणुस्सस्स जहा जीवस्स ॥ वाणमंतर जोइसिय वेमाणियस्स जहा नरइयस्स ॥ २९ ॥ ज समयंण भंते ! जीवस्स आरंभिया किरिया कज्जति तसमय परिग्गहिया किरिया कज्जति, एव एते जस्स जसमय जदेस जप्पदेसेणय चत्तारि दंडगा णेयव्वा॥ जहा नरइयाण तहा सव्वदेवाण णेयव्व, जाव वेमाणियाण ॥ ३० ॥ अत्थिण भंते ! जीवाण पाणाइवाय वेरमणे कज्जति? हंता गोयमा! अत्थि ॥ कम्हाण भंते! जीवाण पाणातिपाय वेरमणे कज्जति ?

अप्रत्याख्यानी क्रिया नियमा से लगती है मनुष्य का कथन जिस प्रकार समुच्चय जीव का कहा वैसा कहना वाणव्यंतर ज्योतिषी और वैमानिक का कथन जैसा नेरीय का कहा वैसा कहना ॥ २० ॥ अब काल आश्रिय कहते हैं—अहो भगवन् ! जिस समय जीव आरंभिया क्रिया करता है उस समय में परिग्रही क्रिया करता है और जिस समय परिग्रही क्रिया करता है उस समय आरंभिया क्रिया करता है क्या? अहो गौतम! यों इसप्रकार १ समुच्चय,२ जिस समय, ३ जिस क्षेत्र,और ४ जिस प्रदेश यों चारों ही दंडक जिस प्रकार नेरीय का कहा उस ही प्रकार सब देवता का भी कहना यावत् वैमानिक पर्यंत ॥ ३० ॥ अब निवृत्ति अधिकार कहते हैं—अहो भगवन् ! जीव को प्राणातिपात की निवृत्ति होती है क्या? अहो गौतम ! होती है अहो भगवन् ! किस प्रकार प्राणातिपात की निवृत्ति होती है ! अहो गौतम !

गोयमा! छसु जीवनिकाएसु॥ अत्थिणं भंते! नेरइयाणं पाणाइवाय वेरमणे कज्जति? गोयमा! णो इणट्ठे समट्ठे एवं जाव वेमाणियाणं, णवरं मणुस्साणं जहा जीवाणं॥ एवं मुसावाएणं जाव मायामोसेणं॥ जीवस्सय मणुस्सस्सय सेसाणं णो इणट्ठे समट्ठे णवरं अदिण्णादाणे गहण धारणिज्जेसु दव्वेसु, मेहुणे रूवेसुवा, रूवसहगतेसुवा दव्वेसु सेसाणं सव्वेसु दव्वेसु॥ अत्थिणं भंते! जीवाणं मिच्छादंसणसल्लवेरमणे कज्जति? हंता गोयमा! अत्थि॥ कम्हाणं भंते! जीवाणं मिच्छादंसणसल्लवेरमणे कज्जति?

छ जीव की काया की यत्ना करने से अहो भगवन्! नेरिये के प्राणातिपात की निवृत्ति होती है क्या? अहो गौतम! यह अर्थ योग्य नहीं अर्थात् नहीं होती है यों यावत् वैमानिक पर्यन्त चौवीसही दंडक का कहना परंतु जिस में इतना विशेष-मनुष्य के जैसा समुच्चय जीव का कहा वैसा कहना इस प्रकार ही मृषावाद का अदत्तादान का यावत् सत्तरहवा पाप माया मृषा की निवृत्ति का भी कहना इन सबही पाप की समुच्चय जीव और मनुष्य तो कदापित् निवृत्ति करसकते हैं और कदापित् नहीं भी करते हैं बाकी तेवीस ही दंडक के जीवों निवृत्ति नहीं करसकते हैं अहो भगवन्! जीव के मिथ्यात्व दर्शन शल्य की निवृत्ती होती है क्या? हां गौतम! होती है अहो भगवन्! किस प्रकार जीव के मिथ्यात्व दर्शन शल्य की निवृत्ति होती है? अहो गौतम! सर्व द्रव्य की यत्न या श्रद्धान का धारने से इस प्रकार ही नेरिये से यावत् वैमानिक

गोयमा ! सव्व दव्वेसु ॥ एवं नेरइयाणं जाव वेमाणियाणं, णवरं एगिंदिय विगलिंदि याणं णो इणट्ठे समट्ठे ॥ ३१॥ पाणातिवात विरएणं भंते! जीवे कतिकम्मपगडीओ बंधती ? गोयमा ! सत्तविह बंधएवा अट्ठविह बंधएवा, छविह बंधएवा, एगविह ,

पर्यंत चौवीस ही दंडक का कहना परंतु इतना विशेष एकेन्द्रिय के और विकलेन्द्रिय के मिथ्यात्व दर्शन शल्य की निवृत्ती नहीं होती है ॥३१॥ अहो भगवन् ! प्राणातिपात से निवृत्ति करने वाला जीव कितने कर्म प्रकृति का बंध करता है ? अहो गौतम ! प्रमत्त छठे अप्रमत्त सातवे आठवे और नववे गुणस्थान में आयुष्य कर्म छोडकर सात कर्म का बन्ध करते हैं, यह भी बहुत मिलते हैं, और प्रमत्त अप्रमत्त आयुष्य के बन्धकाल में आयुष्य का बंध करते हैं यह भी बहुत मिलते हैं, और छ के बंधक अनिवृत्ति बादर गुनस्थान के कदाचित् नहीं भी मिलते हैं क्योंकि इनका विरह उत्कृष्ट छ महीने का होता है और जिस वक्त मिलते हैं उस वक्त जघन्य एक दो उत्कृष्ट एकसो आठ मिलते हैं, उस के दो भांग होते हैं ? आयुष्य बंधकतो इग्यारवे गुनस्थान के, क्षीणमोही बारवे गुनस्थान वाले कदाचित् मिले कदाचित् नहीं भी मिले उस का भी अन्तर पडता है और सयोगी केवली सदैव मिलते हैं इसलिये इग्यारवे बारवे तेरवे गुण स्थान में एकवेदनीय के बंधक हैं अयोगी अबंधक होते हैं, यह भी किसी वक्त मिलते हैं किसी वक्त नहीं मिलते हैं क्योंके इन का भी उत्कृष्ट छ महीने का विरह पडता है जिस वक्त मिलते हैं

बंधएवा अबंधएवा ॥ एवं मणुस्सेवि भाणियव्वे ॥ ३२ ॥ पाणातिपात विरयाणं भंते ! जीवा कइकम्मप्पगडीओ बंधति ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्जा—१ सत्तविह बंधगाय, एगविहबंधगाय २ अहवा सत्तविहबंधगाय एगविहबंधगाय, अट्ठविह बंधगाय ३ अहवा सत्तविह बंधगाय, एगविह बंधगाय, अट्ठविह बंधगाय, ४ अहवा सत्तविह बंधगाय एगविह बंधगाय छव्विह बंधगाय, ५ अहवा सत्तविह बंधगाय, एगविह बंधगाय छव्विह बंधगाय, ६ अहवा सत्तविहबंधगाय, एगविह, बंधगाय,

उस वक्त जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट १०८ मिलते हैं, इस लिये अबंधक के दो भांगे होते हैं इस प्रकार ही मनुष्य का भी कहना यह एक वचन आश्रिय कहा ॥ ३२ ॥ अब बहुत वचन आश्रिय कहते हैं—अहो भगवन् ! प्राणातिपात से निवर्तनेवाले बहुत जीवों कितनी कर्म प्रकृति का बन्ध करते हैं ? अहो गौतम ! उक्त प्रकार ही सब कहना एक पीछे का भांगा और ६ भांगे, यों ७ भांगे, सात प्रकृति के बन्धक बहुत होते हैं, सामायिक चारित्रिया का विरह नहीं पडता है इस लिए, और एक सात प्रकृति के बन्धक तरह गुणस्थानवाले भी बहुत मिलते हैं उन का भी विरह नहीं पडता है यह दोनों सदैव बहुत मिलते हैं इसलिये इन के भांगे होते हैं, और ८ के बंधक, ६ के बंधक, अबंधक इन तीनों का विरह पडता है इसलिये ८ के २७ भांगे होते हैं यह इस प्रकार-एक भांगा तो सात के बंधक का

१

सात के बंध	एक के बंध	आठ के बंध
१	१	०
१	१	१
१	१	३
१	१	बंधक
१	१	अ०
१	१	१
१	१	१

२

सात	एक	आठ	छ
१	१	१	१
१	१	१	३
१	१	१	१
१	१	१	१

।अबंधगोय ७ अहवा सत्तविह बंधगाय, एगविह बंधगाय, अबंधगाय ॥ अहवा १ सत्तविह बंधगाय, एगविह बंधगाय अट्ठविह बंधगेय छव्विह बंधएय, २ अहवा सत्तविह बंधगाय, एगविह बंधगाय अट्ठविहे बंधगेय छव्विह बंधगाय, ३ अहवा सत्तविह बंधगाय, एगविह बंधगाय, अट्ठविह बंधगाय छव्विह बंधगेय, ४ अहवा सत्तविह बंधगाय एगविह बंधगाय

दूसरा न पावे इस आश्रिय एक संयोगी १ भांग कहते हैं १ सात के बंधक भी बहुत एक के बंधक भी बहुत २ अथवा सात के बंधक बहुत, एक के बंधक भी बहुत, और आठ का बंधक एक, ३ अथवा सात के बंधक बहुत, एक के बंधक बहुत, आठ के बंधक भी बहुत, ४ अथवा सात के बंधक भी बहुत, आठ के बंधक बहुत, छ के बंधक भी बहुत. ५ अथवा सात के बंधक भी बहुत, एक के बंधक भी बहुत, अबंधक एक, ७ सात के बंधक भी बहुत, आठ के बंधक भी बहुत और अबंधक भी बहुत यह असंयोगी कहे और एक भांगा सात का बंधक बहुत एक का बंधक बहुत व अबंधक बहुत का सब सात भांगे हुवे. अब द्विकसंयोगी के २ भांगे कहते हैं १ सात कर्म के बंधक बहुत एक कर्म के

३

सात	एक	आठ	अबंध
३	३	१	१
३	३	१	३
३	३	३	१
३	३	३	३

४

सात	एक	छ	अबंध
३	३	१	१
३	३	१	३
३	३	३	१
३	३	३	३

अट्ठविहबंधगाय, छव्विह बंधगाय, अहवा १ सत्तविहबंधगाय एगविह बंधगाय अट्ठविह बंधगाय अबंधएय २ अहवा सत्तविह बंधगाय, एगविह बंधगाय, अट्ठविह बंधएय अबंधगाय, ३ अहवा सत्तविह बंधगाय एगविह बंधगाय अट्ठविह बंधगाय, अबंधएय, ४ अहवा सत्तविह बंधगाय, एगविह बंधगाय, अट्ठविह बंधगाय अबंधगाय ॥ १ अहवा सत्तविह बंधगाय, एगविह बंधगाय छव्विह बंधगेय, अबंधएय २ अहवा सत्तविह बंधगाय, एगविह बंधगाय, छव्विह बंधएय, अबंधगाय, ३ अहवा सत्तविह

बंधक बहुत आठ कर्म का बंधक एक, छ कर्म का बंधक एक, २ सात कर्म के बंधक बहुत, एक कर्म के बंधक बहुत, आठ कर्म के बंधक एक, छ कर्म के बंधक बहुत, ३ सात कर्म के बंधक बहुत, एक कर्म के बंधक बहुत, आठ कर्म के बंधक बहुत छ कर्म का बंधक एक, ४ सात के भी बहुत, एक के भी बहुत, आठ के भी बहुत, और छ कर्म के बंधक भी बहुत, यह सात, एक, आठ और छ कर्म के बंधक के चार भांगे हुवे. अब सात, एक, आठ कर्म के बंधक और अबंधक के चार भांगे कहते हैं—१ सात के बंधक बहुत, एक के बंधक बहुत आठ के बंधक एक और अबंधक एक, २ सात के बंधक बहुत, एक के बंधक बहुत, आठ का बंधक एक,

सात	एक	आठ	छ	अबंधक
३	३	१	१	१
३	३	१	१	३
३	३	१	३	१
३	३	१	३	३
३	३	३	१	१
३	३	३	१	३
३	३	३	३	१
३	३	३	३	३

८ बंधगाय, एगविहबंधगाय छव्विह बंधएय, अबंधएय, ४ अहवा सत्तविह बंधगाय एगविह बंधगाय, छव्विह बंधगाय अबंधगाय॥ १ अहवा सत्तविह बंधगाय, एगविह बंधगाय अट्ठविह, बंधएय, छव्विह बंधगेय अबंधएय २ अहवा सत्तविह बंधगाय, एगविह बंधगाय अट्ठविह बंधएय, छव्विह बंधएप,

अबंधक बहुत, ३ सात के बंधक बहुत, एक के बंधक बहुत, आठ के बंधक बहुत, अबंधक एक, ४ सात के भी बंधक बहुत, एक के भी बहुत, आठ के बंधक भी बहुत और अबंधक भी बहुत अब सात एक छ और अबंधक के ४ भांगे कहते हैं—१ सात के बंधक बहुत, एक के बंधक बहुत, छ का बंधक एक अबंधक एक, २ सात के बंधक बहुत, एक के भी बहुत, छ का बंधक एक, अबंधक बहुत ३ सात के बंधक बहुत, एक के बंधक बहुत, छ के बंधक बहुत, अबंधक बहुत यह १२ भांगे हुए संयोगी हुए ॥ अब त्रिसंयोगी आठ भांगे कहते हैं—१ सात के बहुत एक के बहुत, आठ का बंधक एक, छका बंधक एक, अबंधक एक, २ अथवा सातकर्म के बंधक बहुत, एक प्रकार के बंधक बहुत, आठ प्रकार का बंधक एक, छका बंधक एक, अबंधक बहुत, ३ सात के बंधक बहुत, एक के बंधक बहुत

अबंधगाय, ३ अहवा सत्तविहबंधगाय, एगविह बंधगाय अट्ठविह बंधगेय छव्विह बंधगाय, अबंधएय ४ अहवा सत्तविह बंधगाय, एगविह बंधगाय, अट्ठविह बंधएय छव्विह बंधएय अबंधगाय ५ अहवा सत्तविह बंधगाय एगविह बंधगाय, अट्ठविह बंधगाय छव्विह बंधएय, अबंधएय, ६ अहवा सत्तविह बंधगाय, एगविह बंधगाय, अट्ठविह बंधगाय, छव्विह बंधएय अबंधगाय, ७ अहवा सत्तविह बंधगाय एगविह बंधगाय अट्ठविह बंधगाय छव्विह बंधगाय अबंधएय, ८ अहवा सत्तविह बंधगाय, एगविह बंधगाय, अट्ठविह बंधगाय, छव्विह बंधगाय, अबंधगाय ॥ एव एते अट्ठभगा सव्वेत्रि

आठ का बंधक एक, छके बंधक बहुत अबंधक एक, ४ सात के बंधक बहुत, एक के बंधक बहुत, आठके बंधक एक, छके बंधक बहुत, अबंधक बहुत ५ सात के बंधक बहुत, एक के बंधक बहुत, आठ के बंधक बहुत, छका बंधक एक अबंधक एक, ६ सात के बंधक बहुत, एक के बहुत, आठ के बंधक बहुत, छके बंधक एक, अबंधक बहुत ७ सात के बंधक बहुत, एकके बंधक बहुत, आठ के बंधक बहुत, छके बंधक बहुत अबंधक एक और ८ सात के बंधक बहुत, एक के बंधक बहुत, आठ के बंधक बहुत छके बंधक बहुत और अबंधक भी बहुत, यह आठ भांग मिलयाणी, यों सब मिलकर २७ भांगे हुवे इस प्रकार मनुष्य के भी २७ भांगे करना जिस प्रकार यह प्राणातिपात पाप के स्वामी को कर्म प्रकृति बंधका

मिलिया, सत्तावीस भंगा भवंति॥एवं मणूस्सावि, एवंचेव सत्तावीस भंगा भाणियव्वा॥ एवं मुसावायविरयस्स जाव मायामोसविरयस्सय, जीवस्सय मणुस्सस्सय ॥ ३२ ॥ मिच्छादंसणसल्लु विरएणं भंते ! जीवे कतिकम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविह बंधएवा, अट्ठविह बंधएवा, छव्विह बंधएवा, एगविह बंधएवा, अबंधएवा, मिच्छादंसणसल्लविरएणं भंते ! णेरइए कतिकम्मप्पगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविह बंधएवा अट्ठविह बंधएवा, जाव पंचिंदिय तिरिक्खजोणिए मणुस्से जहा

कथन करा इस ही प्रकार मृषावाद के पाप का भी कहना, यावत् अठारवा पाप मायामृषाका त्यागका भी इस ही प्रकार कहना ॥ ३२ ॥ अहो भगवन् ! मिथ्यात्व दर्शन शल्य की निवृत्ति वाले जीव के कितनी कर्म प्रकृति का बंध होता है ? अहो गौतम ! सात प्रकृतिका भी बंध होता है, आठ का भी बंध होता है, छ प्रकृति का भी बंध होता है, एक प्रकृतिका भी बंध होता है, और अबंधक भी होता है, ॥ अहो भगवन् ! मिथ्या दर्शन शल्य की निवृत्ति करने वाले नेरीये कितनी कर्म प्रकृति का बंध करते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक सात कर्म प्रकृति का बंध करते हैं और कितनेक आठ कर्म प्रकृति का बंध करते हैं इस प्रकार ही दशों भवनपति पांचों स्थावर तीनों विकलेन्द्रिय और तिर्यंच पंचेन्द्रिय तक कहना मनुष्य का जैसे समुच्चय जीव का कहा वैसा कहना और वाणव्यन्तर

जीवे, वाणमंतर जोइसिय वेमाणिए जहा णेरइए ॥ मिच्छादसणसल्ल विरयाणं भंते! जीवा कतिकम्मपगडीओ बंधंति? गोयमा! तत्थ सत्तावीस भंगा भाणियव्वा॥ मिच्छादसणसल्लविरयाणं भंते! णेरइया कतिकम्मपगडीओ बंधंति? गोयमा! सव्वेवि ताव होज्जा-सत्तविह बंधगाय, अहवा सत्तविह बंधगाय अट्ठविह बंधएय अहवा सत्तविह बंधगाय अट्ठविह बंधगाय, एवं जाव वेमाणिया, णवरं मणुस्साणं जहा जीवाणं ॥ ३४ ॥ पाणाइवायविरयस्सणं भंते! जीवस्स किं आरंभिया

ज्योतिषी वैमानिक का जैसा नेरयिका कहा वैसा कहना ॥ अहो भगवन्! मिथ्या दर्शन शल्य की निवृत्ति करनेवाला जीव कितनी प्रकृति का बंध करता है? अहो गौतम! यहां भी पूर्वोक्त प्रकार २७ भांगे कहना ॥ अहो भगवन्! मिथ्या दर्शन शल्य की निवृत्ति करने वाला नेरीया कितनी कर्म प्रकृतियों का बंध करता है? अहो गौतम! सब जैसे हो सकते हैं अर्थात् सातप्रकृति के बंधक भी बहुत हैं २ अथवा सात प्रकृति के बंध बहुत हैं आठ प्रकृति का बंधक एक है, ३ अथवा सात प्रकृति का बंधक भी बहुत हैं और आठ प्रकृति के बंधक भी बहुत हैं ॥ एवं ही यावत् वैमानिक पर्यन्त तीन २ भांगे कहना जिसमें इतना विशेष मनुष्य का जैसा जीव का कहा वैसा कहना ॥ ३५ ॥ अहो भगवन्! प्राणातिपात की निवृत्ति करने वाला जीव आरंभिकी क्रिया करता है कि यावत् मिथ्या दर्शन प्रत्यय की क्रिया करता है? अहो गौतम!

किरिया कज्जति जाव मिच्छादसणवत्तिया किरिया कज्जति ? गोयमा ! पाणाति-वातविरयस्स जीवस्स आरंभिया किरिया सिय कज्जति सिय णो कज्जति॥पाणातिवात विरयस्सण भंते ! जीवस्स परिग्गहिया किरिया कज्जति? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे॥ पाणातिपातविरयस्सण भंते ! जीवस्स मायावत्तिया किरिया कज्जति ? गोयमा ! सिय कज्जति सिय णो कज्जति॥पाणातिपात विरयस्सण भंते! जीवस्स अपच्चक्खाणवत्तिया किरिया कज्जति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ मिच्छादसण वत्तियाए पुच्छा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे॥ एवं पाणातिवातविरयस्स मणुस्सस्सवि॥ एवं जाव माया-

प्राणातिपात की निवृत्ति करनेवाला जीव आरंभकी क्रिया स्यात् करता है स्यात् नहीं भी करता है प्रमत्त संयती आश्रित आहारादि की अनुमोदना में या प्रमाद वश आरंभिकी क्रिया लगती है अन्य अप्रमत्तादि नहीं लगती है अहो भगवन्! प्राणातिपात की निवृत्ति करनेवाला जीव परिग्रही क्रिया क्या करते हैं कि नहीं करते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं अर्थात् नहीं करते हैं अहो भगवन् ! प्राणातिपात की निवृत्ति करनेवाले जीव मायाप्रत्ययी क्रिया करते हैं कि नहीं करते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक प्रमत्त संयति करते हैं कितनेक नहीं करते हैं अहो भगवन् ! प्राणातिपात की क्रिया नहीं करने वाला जीव अप्रत्याख्यानी क्रिया क्या करता है कि नहीं करता है ? अहो गौतम ! नहीं करता है अहो भगवन्! प्राणाति-

जीवे, वाणमंतर जोइसिय वेमाणिए जहा णेरइए ॥ मिच्छादंसणसल्ल विरयाणं भंते ! जीवा कतिकम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा ! तत्थ सत्तावीस भंगा भाणियव्वा। मिच्छादंसणसल्लविरयाणं भंते ! णेरइया कतिकम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्जा-सत्तविह बंधगाय, अहवा सत्तविह बंधगाय अट्ठविह बंधएय अहवा सत्तविह बंधगाय अट्ठविह बंधगाय, एवं जाव वेमाणिया, णवरं मणुस्साणं जहा जीवाणं ॥ ३४ ॥ पाणातिवातविरयस्सणं भंते ! जीवस्स किं आरंभिया

ज्योतिषी वैमानिक का जैसा नारकी का कहा वैसा कहना ॥ अहो भगवन् ! मिथ्या दर्शन शल्य की निवृत्ति करनेवाला जीव कितनी प्रकृति का बंध करता है ? अहो गौतम ! यहां भी उक्त प्रकार २७ भांगे कहना ॥ अहो भगवन् ! मिथ्या दर्शन शल्य की निवृत्ति करने वाला नेरीया कितनी कर्म प्रकृतियों का बंध करता है ? अहो गौतम ! सब नेम ही होते हैं अर्थात् सातप्रकृति के बंधक भी बहुत हैं २ अथवा सात प्रकृति के बंध बहुत हैं आठ प्रकृति का बंधक एक है, ३ अथवा सात प्रकृतिका बंधक भी बहुत है और आठ प्रकृति के बंधक भी बहुत हैं ॥ ऐसे ही यावत् वैमानिक पर्यन्त तीन २ भांगे कहना जिसमें इतना विशेष मनुष्य का जैसा जीव का कहा वैसा कहना ॥ ३४ ॥ अहो भगवन् ! प्राणातिपात की निवृत्ति करने वाला जीव आरंभिक क्रिया करता है कि यावत् मिथ्या दर्शन प्रत्यय की क्रिया करता है ? अहो गौतम !

किरिया कज्जति जाव मिच्छादसणवत्तिया किरिया कज्जति ? गोयमा ! पाणाति वाताविरयस्स जीवस्स आरंभिया किरिया सिय कज्जति सिय णो कज्जति॥पाणातिवात विरयस्सण भं० ! जी०स्स परिग्गहिया किरिया कज्जति? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे॥ पाणातिपातविरयस्सण भंते ! जीवस्स मायावत्तिया किरिया कज्जति ? गोयमा ! सिय कज्जति । सिय नो कज्जति॥पाणातिपात विरयस्सण भंते! जीवस्स अपच्चक्खाणवत्तिया किरिया कज्जति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ मिच्छादंसण वत्तियाए पुच्छा ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे॥ एव पाणातिवातविरयस्स मणुस्सस्सवि ॥ एव जाव माया-

प्राणातिपात की निवृत्ति करनेवाला जीव आरंभकी क्रिया स्यात् करता है स्यात् नहीं भी करता है प्रमत्त संयती प्राभिष आहारादि की अनुमोदना में या प्रमाद वश आरंभिकी क्रिया लगती है अन्य अप्रमत्तादि नहीं लगती है अहो भगवन्! प्राणातिपात की निवृत्ति करनेवाले जीव पारिग्रही क्रिया क्या करते हैं कि नहीं करते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं अर्थात् नहीं करते हैं अहो भगवन् ! प्राणातिपात की निवृत्ति करनेवाले जीव मायाप्रत्यया क्रिया करते हैं कि नहीं करते हैं ? अहो गौतम ! कितनेक अप्रमत्त संयति करते हैं कितनेक नहीं करते हैं अहो भगवन् ! प्राणातिपात की क्रिया नहीं करने वाला जीव अप्रत्याख्यानी क्रिया क्या करता है कि नहीं करता है? अहो गौतम! नहीं करता है अहो भगवन्! प्राणाति-

मोसाविरयस्स जीवस्स मणुस्सस्सय ॥ मिच्छादंसणसल्लविरयस्सण भंते ! जीवस्स किं आरंभिया किरिया कज्जति जाव मिच्छादंसणवत्तिया किरिया कज्जति ? गोयमा ! मिच्छादंसणसल्लविरयस्स जीवस्स आरंभिया किरिया सिय कज्जति सिय णो कज्जति एवं जाव अपच्चक्खाणकिरिया सिय कज्जति सिय णो कज्जति, मिच्छादंसणवत्तिया किरिया नो कज्जति ॥ मिच्छादंसणसल्लविरयस्सण भंते ! णेरइयस्स किं आरंभिया किरिया कज्जति जाव मिच्छादंसणवत्तिया किरिया कज्जति ?

पाप की निवृत्ति करनेवाला जीव मिथ्या दर्शन की क्रिया करता है कि नहीं करता है अहो गौतम! नहीं करता है जैसे प्राणातिपात की निवृत्ति का कहा इस ही प्रकार मृषावाद अदत्तादान यावत् मत्सरता माया मोसा पापकी निवृत्ति का भी कहना जिस प्रकार समुच्चय जीव का कहा उस ही प्रकार मनुष्य का भी कहना अहो भगवन् ! मिथ्या दर्शन शल्य की निवृत्ति करनेवाला जीव आरंभिया क्रिया करता है कि नहीं करता है ! अहो गौतम ! स्यात् करता है स्यात् नहीं भी करता है ऐसे ही परिग्रही माया प्रत्ययी और अप्रत्याख्यानी क्रिया का कहना अहो भगवन् ! मिथ्या दर्शन शल्य का निवृत्तिवाले नेरीये को क्या आरंभिकी क्रिया लगती है यावत् क्या मिथ्या दर्शन प्रत्ययी क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! आरंभिया

गोयमा ! आरंभिया किरिया कज्जति जाव अपच्चक्खाणकिरियावि कज्जति, मिच्छादंसण वत्तिया किरिया णो कज्जति ॥ एवं जाव थणियकुमारस्स ॥ मिच्छादंसणसल्लाविरयस्सणं भंते ! पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियस्स एवमेव पुच्छा ? गोयमा! आरंभिया किरिया कज्जति जाव मायावत्तिया किरिया कज्जति अपच्चक्खाणा किरिया सिय कज्जति सिय णो कज्जति, मिच्छा दंसण वत्तिया किरिया ण कज्जति॥मणुस्सस्स जहा जीवस्स वाणमंतर जोइसिय वेमाणियस्स जहा णेरइयस्स ॥ ३५ ॥ एतासिणं भंते ! आरंभियाणं जाव मिच्छादंसण वत्तियाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ?

परिग्रहिया मायाप्रत्ययी और अप्रत्याख्यान यह चार क्रिया तो करता है मिथ्यात्व दर्शन प्रत्यय प्रत्ययी क्रिया नहीं करता है ऐसे ही यावत् स्थनित कुमार पर्यन्त कहना अहो भगवन् ! मिथ्यादर्शन शल्य निवृत्तिवाले तिर्यंचको आरंभिकी क्रिया क्या लगती है यावत् मिथ्यात्व दर्शन प्रत्ययी क्रिया लगती है ? अहो गौतम! आरंभिकी परिग्रहीया माया प्रत्ययी यह तीन क्रिया लगती है अप्रत्याख्यान क्रिया किसीको लगती है किसीको नहीं भी लगती है क्यों कि यह श्रावक भी होवे हैं और मिथ्यादर्शन प्रत्ययी क्रिया नहीं भी लगती है मनुष्यका जैसा जीवका कहा वैसा कहना वाणव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिकका जैसा नेरीयेका कहा वैसा कहना ॥ १८ ॥ अब अल्पाबहुत्व कहते हैं अहो भगवन् ! आरंभिकी यावत् मिथ्यादर्शन प्रत्ययी क्रियामें

गोयमा ! मच्छादंसण वत्तियाओ मिच्छादंसण वत्तियाओ किरियाओ, अपच्चक्खाण किरियाओ विससाहियाओ पारिग्गहियाओ किरियाओ विससाहियाओ, आरंभियाओ किरियाओ विससाहियाओ, मायावत्तियाओ किरियाओ विसेसाहियाओ॥ इति पण्णवणा भगवईए बावीसम किरिया पय सम्मत्त ॥ २२ ॥

कौन क्या है यावत् विशेषाधिक कौन है ? अहो गौतम ! सब से थोडे मिथ्यात्व दर्शन प्रत्ययी क्रियावाले क्यों कि प्रथम गुणस्थान में ही लगती है, उस से अप्रत्याख्यान क्रियावाले विशेषाधिक क्यों कि चौथे गुणस्थान तक है, उस से परिग्रहीया क्रियावाले विशेषाधिक क्यों कि पांचवे गुणस्थान तक है, उस से आरंभिया क्रियावाले विशेषाधिक क्यों कि छठे गुणस्थान तक है उस से माया प्रत्ययी क्रियावाले विशेषाधिक क्यों कि दशवे गुणस्थान तक है इति पन्नवणा भगवतीका बावीसवा क्रिया पद संपूर्ण हुवा ॥२२॥



॥ त्रयोविंशोतितम कर्मबन्धपदम् ॥

कतिपगडी कहिं बंधइ कतिहिं ठाणेहिं बंधइ जीवो । कइवेदइय पगडी अणुभावो कतिविहो कस्स ॥ १ ॥ कइण भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ तंजहा णाणावरणिज्ज, दरिसणावरणिज्ज, वेदणिज्जं, मोहणिज्ज, आउय, णाम, गोत्त अंतराइय ॥ २ ॥ णेरइयाणं भंते ! कति कम्म पगडीओ पण्णत्ताओ ! गोयमा ! एवं चेव एवं जाव वेमाणिआणं ॥ ३ ॥ कहण्णं

अब तवीसवा कर्म प्रकृति पद कहते हैं जिस के द्वारों :—१ कर्म की प्रकृति कितनी है, २ प्रकृति यों का बंध किस प्रकार होता है, ३ कितने स्थान जीव कर्म प्रकृति बंध करता है, ४ किस प्रकार जीव कर्म प्रकृति वेदता है, और ५ अनुभाग (रस) कितने प्रकार का, यह पांच द्वार कहते हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! कर्म प्रकृति कितनी कही है ? अहो गौतम ! कर्म की आठ प्रकृति कही है तद्यथा—१ ज्ञानावरणीय, २ दर्शनावरणीय, ३ वेदनीय, ४ मोहनीय, ५ आयुष्य, ६ नाम, ७ गोत्र, और ८ अंतराय ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! नरक को कितनी प्रकृति कही हैं ? अहो गौतम ! उक्त आठों प्रकृति कही है, ऐसे ही यावत् वैमानिक तक चौवीस ही दंडक में आठों कर्म प्रकृति है ॥ ३ ॥ अब दूसरा बंध द्वार कहते

भंते ! जीवे अट्ठ कम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा ! णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं दरिसणावरणिज्जं कम्मं नियच्छति दरिसणावरणिस्स कम्मस्स उदएणं दंसणमोहणिज्जं कम्मं णिगच्छइ दंसणमोहणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं मिच्छत्तं णिगच्छइ मिच्छत्तेणं उदिण्णेणं एवं खलु जीवे अट्ठ कम्मपगडीओ बंधइ । कहण्णं भंते ! नरइए अट्ठ कम्म पगडीओ बंधइ ? गोयमा ! एवं चेव एवं जाव वेमाणिए ॥ ४ ॥ कहण्णं भंते ! जीवा अट्ठ कम्मपगडीओ बंधंति एवं चेव जाव वेमाणिया ॥ ५ ॥ जीवेणं भंते णाणावरणिज्जं कम्मं कतिहिं ठाणेहिं बंधति ? गोयमा !

है—अहो भगवन् ! किस प्रकार जीव आठ कर्म की प्रकृति का बंध करता है ? अहो गौतम ! ज्ञानावरणीय कर्म के उदय से दर्शनावरणीय कर्म होता है दर्शनावरणीय कर्म के उदयसे दर्शन मोहनीय कर्म होता है दर्शनमोहनीय कर्मको बांधता हुआ, मिथ्यात्व की वांछा करे, उस मिथ्यात्व के उदय कर आठों कर्म का बांधता है यों निश्चय जीव आठ कर्म प्रकृति का बंध करता है. इस प्रकार ही नारकी से लगाकर वैमानिक पर्यंत चौवीस ही दंडक के जीव कर्म बंध करते हैं ॥ ४ ॥ अब बहुवचन बोलते हैं—अहो भगवन्! किस प्रकार बहुत जीवों कर्म प्रकृति का बंध करते हैं ? अहो गौतम ! उक्त प्रकार ही यावत् वैमानिक पर्यंत कहना ॥ ५ ॥ बंध का कारण द्वार—अहो भगवन् ! जीव ज्ञानावरणीय कर्म का बंध कितने स्थान

दोहिं ठाणेहिं तंजहा रागेणय दोसेणय रागे दुविहे पण्णत्ते तजहा मायाय लोभेय दोसे-दुविहे पण्णत्ते तजहा कोहेय माणेय इच्चेतेहिं चउहिं ठाणेहिं वीरिय उवग्गाहिएहिं, एव खलु जीवे णाणावरणिज्ज कम्म बधइ एव णेरइए जाव वेमाणिए ॥ ९ ॥ जीवाण भते ! णाणावरणिज्ज कम्म कतिहिं ठाणेहिं बधंति ! गोयमा ! दोहिं ठाणेहिं एवं चेव एव णेरइया जाव वेमाणिया एव दसणावरणिज्ज जाव अतराइय एव एए

से करता है ! अहो गौतम ! दो स्थान (प्रकार) से करता है तद्यथा—२ रागभावकर और द्वेष भावकर इस में राग के दो भेद कहे हैं माया और लोभ, वैसे ही द्वेष के भी दो भेद क्रोध और मान इन चारों स्थान में जीव के वीर्यका उपस्थापन करनेवालेको प्रयुंग कर यों निश्चय जीव ज्ञानावरणीय कर्म का बंध करता है इस प्रकार ही नेरीये से यावत् वैमानिक पर्यंत चौवीस ही दंडक के जीवों उक्त चार कारन करके ही ज्ञानावरणीय कर्म का बंध करते हैं ॥ ९ ॥ अब बहुवचन कहते हैं—अहो भगवन् ! बहुत जीवों ज्ञानावरणियकर्म का बंध किस प्रकार करते हैं ? अहो गौतम ! उक्त दोनों स्थान और एकेक स्थान के दो दो भेदों कर इस प्रकार ही चौवीस ही दंडक पर कहना जिस प्रकार यह ज्ञानावरणीय कर्मबंधका कथन कहा उस ही प्रकार दर्शनावरणीय कर्मबंध का यावत् अन्तराय कर्म बंध कहना, आठों ही कर्म रागद्वेष से बंधते हैं यों आठ कर्मों के आठ दंडक एक जीव आश्रिय और आठ दंडक अनेक जीव

एगत्त पोहत्तिया सोलस दण्डगा ॥ ७ ॥ जीवेणं भंते ! णाणावरणिज्ज कम्म वेदेति गोयमा ! अत्थेगइए वेदेइ अत्थेगइए णो वेदेइ णेरइएणं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्म वेदेइ ? गोयमा ! णियमा वेदेइ एवं जाव वेमाणिए णवरं मणुस्से जहा जीवे ॥ ८ ॥ जीवाणं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं वेदेइ ? गोयमा ! एवचेव एवं-

भाश्रिय १६ दंडक कहना ॥ ७ ॥ प्रश्न करते हैं—अहो भगवन् ! जीव ज्ञानावरणीय कर्म को वेदते हैं ! अहो गौतम ! कितनेक जीव वेदते हैं और कितनेक जीव नहीं वेदते हैं अर्थात् जो बारवे गुणस्थान के नीचे के गुणस्थान में जीवों है वे ज्ञानावरणीय कर्म वेदते हैं बारवे आदि गुणस्थान वाले नहीं वेदते हैं अहो भगवन् ! नेरिये ज्ञानावरणीय कर्म को वेदते हैं क्या ! अहो गौतम ! निश्चय से वेदते हैं यों यावत् वैमानिक पर्यंत कहना जिस में इतना विशेष मनुष्य का अधिकार जैसा समुच्चय जीव का कहा वैसा ही कहना अर्थात् कितनेक वेदते हैं कितनेक नहीं वेदते हैं ॥ ८ ॥ यह एक जीव आश्रिय कहा वैसा ही बहुत जीव आश्रिय भी चौवीस दंडक और समुच्चय जीव पर कहना जो जिस प्रकार ज्ञानावरणीय कर्म वेदने का कहा वैसा ही दर्शनावरणीय का मोहनीय कर्म का और अन्तराय कर्म इन चार कर्मों का कहना और वेदनीय आयुष्य नाम और गोत्र कर्म का भी इस प्रकार ही कहना परंतु इतना विशेष कि इन चार कर्मों को सब मनुष्यों निश्चय कर वेदते हैं

जाव वेमाणिया ॥ एवं जहा णाणावरणिज्जं तहा दंसणावरणिज्जं , मोहणिज्जं अंतराइयंच, वेयणिज्जाउय णामगोयाइं एवं चेव णवरं मणुस्सेवि णियमा वेदेइ एवं एते एगत्तपोहत्तिया सोलस दंडगा ॥ ९ ॥ णाणावरणिज्जस्सणं भंते ! कम्मस्स जीवेणं बद्धस्स पुट्ठस्स बद्धफासपुट्ठस्स संचियस्स चियस्स उवचियस्स, आवागपत्तस्स विवागपत्तस्स फलपत्तस्स उदयपत्तस्स जीवेण कयस्स, जीवेणनिव्वत्तियस्स जीवेणं परिणामियस्स

क्यों कि यह चार कर्म बारवे गुणस्थान के ऊपर भी चउदवे गुणस्थान तक पाते हैं यह एक जीव आश्रिय आठ कर्म के आठ दंडक कहे, तैसे बहुत जीवोंके आश्रिय भी आठ दंडक कहना, यों १६ दंडक कहना ॥ ९ ॥ अब अनुभाग का पांचवा द्वार कहते हैं—अहो भगवन् ! ज्ञानावरणिय कर्म जीवने बंधे राग द्वेष कर, सर्व आत्म प्रदेश कर, मजबूत बंधे विशिष्ट बंधकर, विशेष स्पर्श स्पर्शे के संचय किये चिने—एकत्रकिये, उपचीने—अपनी २ जाती में समझाये, उपाधि प्राप्त उदय आने जैसे हुवे, विपाक भाव प्राप्त हुवे, फलपने सन्मुख हुवे, उदय आये, जीवने ही कर्म किये हैं जीवने ही वक्र प्रकार से कर्मों को निष्पन्न किये हैं, जीवने ही भोग रसपने परिणमाये हैं स्वतःने हो उन कर्मों की उदीरणा की है, अन्य जीवों के भी जो कर्मों की उदीरणा हुइ है वह उन के किये कर्मों की ही हुइ है अपने और अन्य के दोनों के उदीरणा होवे उस गति को प्राप्त हुवे जैसे असाता का उदय होवे नरक गति को और साता का

सयत्रा उदिण्णस्स परेणवा उदीरियस्स तदुभयएणवा उदीरिज्जमाणस्स, गतिं पप्प ठितिं पप्प भव पप्प पोग्गल पप्प पोग्गलपरिणामं पप्प कतिविहे अणुभावे पण्णत्ते ? गोयमा ! णाणावरणिज्जस्सण कम्मस्स जीवेण बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामपप्प दसविहे अणुभावे पण्णत्ते सउहा-सोतावरणे, सोयविण्णाणावरणे, णेतवरणे, णेतविण्णाणावरणे, घाणावरणे, घाणविण्णाणावरणे, रसावरणे, रसविण्णाणावरणे, फासावरणे,

उदय होवे देवगति को प्राप्त हुवे, स्थिति को प्राप्त हुवे अर्थात् जो स्थिति बन्ध किया था वह भोगवने लगे भव को प्राप्त हुवे अर्थात् नरकादिक भव को प्राप्त हुवे, पुद्गल (काष्ट लोष्टादि) को प्राप्त हुवे, पुद्गलों के परिणाम (विष का दुःखमय अमृत का सुखमयको) प्राप्त हुवे, इस प्रकार कर्म भोगवे उस के कितने प्रकार के अनुभव कहे हैं ? अहो गौतम ! ज्ञानावरणीय कर्म का जीव को बन्ध होवे उस के पुद्गल परिणाम का दश प्रकार का अनुभव कहा है, तद्यथा—श्रोत्रावरण—१ कानों से शब्द सुनसके नहीं २ श्रोत्र विज्ञानावरण शब्द में समझसके नहीं, ३ नेत्रावरण आंखों से रूप देखसके नहीं, ४ नेत्रविज्ञानावरण-रूप में समझ सके नहीं, ५ घ्राणावरण-गंध ग्रहण करसके नहीं, ६ घ्राणविज्ञानावरण-गंध में समझसके नहीं, ७ रसावरण-रस ग्रहण करसके नहीं, ८ रसविज्ञानावरण रस में समझसके नहीं, ९ स्पर्शावरण-स्पर्श ग्रहण करसके नहीं, और

फासवीण्णाणावरणेय ज वेदति, पोग्गलवा पोग्गलेवा पोग्गलपरिणामंवा वीससावा पोग्गलाण परिणाम तेसिंवा उदएण जाणियव्व, ण जाणति जाणिओकामे, ण जाणति जाणित्तावि ण जाणइ, उच्छण्ण णाणीयावि भवति।णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएण एसण गोयमा ! णाणावरणिज्जे कम्मे, एसण णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स जीवेण बद्धस्स जाव पोग्गल परिणाम पप्प दसविहे अणुभावे पण्णत्ते ॥१०॥ दरिसणावरणिज्जस्सण भंते ! कम्मस्स जीवेण बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणाम पप्प कतिविहे अणुभावे

१ स्पर्श विज्ञानावरण स्पर्श के भव शीतोष्णादि में समझसके नहीं। जो वेदते नहीं हैं पुद्गलों बहुत अथवा पुद्गल एक पुद्गलों का परिणामको साता असाता रूप, विससा पुद्गल परिणाम अर्थात् जैसे पानी कर भराये हुवे बादल स्वभाव से ही पानी की धारा वर्षाते है वैसे ही दर्शन परावित उपघात को प्राप्त होते हैं, ये कर्म उदय को जाने व उदय को परिणमें उसे जाने और उदय का नहीं परिणमें, उन का नहीं जाने कर्म भावका जानने अभिलाषी हुवा भी नहीं जाने, जिससे जानते हुवे भी अज्ञान होवे क्यों कि जिन के ज्ञानगुन ढका गये हैं उस का ज्ञानावरणीय कर्म का उदय हुवा है अहो गौतम ! यह ज्ञानावरणीय कर्म और अहो गौतम ! यही जीवके ज्ञानावरणीय कर्म जीव के प्रदेश के साथ बन्ध हुवे यावत् पुद्गल परिणामको प्राप्त हुवा उस का दशप्रकार का अनुभव कहा ॥१०॥ अहो भगवन् ! दर्शनावरणीय कर्म का जीव को बंध का यावत् पुद्गल परिणाम प्राप्त

पण्णत्ते ? गोयमा ! दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स जीवस्स बद्धस्स जाव पोग्गलपरि णाम पप्प णवविहे अणुभावे पण्णत्ते तंजहा-णिद्दा, णिद्दा णिद्दा, पयला, पयला पयला, थीणद्धी, चक्खुदंसणावरण, अचक्खुदंसणावरणे, ओहिदंसणावरणे, केवल दंसणावरणे, जंवेदेति पोग्गलंवा पोग्गलेवा पोग्गलपरिणामंवा वीससावा पोग्गल परिणाम तेसिंवा उदएणं पासियव्वंवा ण पासति, पासिउकामेवि ण पासति, पासित्तावि ण पासति, उच्छण्णदंसणियावि भवति, दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं

होने जिस का कितने प्रकारका अनुभव कहा है ? अहो गौतम ! दर्शनावरणीय कर्मका जीवके बंधका यावत् पुद्गल परिणाम प्राप्त हुवे जिस का नव प्रकार का अनुभव कहा है. तद्यथा-१ निद्रा सुख से आवे सुख से जाग्रत होवे, २ निद्रा निद्रा दुःख से आवे दुःख से जाग्रत होवे, ३ प्रचला बैठे निद्रा आवे, ४ प्रचला प्रचला चलते चलते निद्रा आवे, और ५ थिणद्धी निद्रा दिन का चिन्तवन किया काम निद्रा में कर इस निद्रा में आवे मनुष्य के जितना बल प्राप्त होवे ६ चक्षु दर्शनावरणीय आंखों से अच्छी तरह देख सके नहीं, ७ अचक्षु दर्शनावरण आंखों बिना चारों इंद्रिय मन से सम्यक् प्रकार देख सके नहीं, ८ अवधि दर्शनावरणीय अवधि दर्शन प्राप्त न होवे, और ९ केवल दर्शनावरणीय केवल दर्शन की प्राप्ति न होवे, इन नव प्रकार से जो वेदे पुद्गलों अथवा पुद्गल, पुद्गलका परिणाम वीससा पुद्गल का परिणाम उन के उदय से देखने योग्यको, नहीं भी

एसण गोयमा ! दरिसणावरणिज्ज कम्मे, एसणं गोयमा ! दरिसणावरणिज्जस्स कम्मस्स जीवेण बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पण्णत्ते नवविहे अणुभवे पण्णत्ते ॥ ११ ॥ सातावेदणिज्जस्सणं भंते ! कम्मस्स जीवेण बद्धस्स जाव पोग्गलपरिणामं पप्प कतिविहे अणुभावे पण्णत्ते ? गोयमा ! सायावेदणिज्जस्स कम्मस्स जीवेण बद्धस्स जाव अट्ठविहे अणुभावे पण्णत्ते तंजहा मणुण्णा सद्दा, मणुण्णा रूवा, मणुण्णा गंधा, मणुण्णारसा, मणुण्णाफासा, मणोसुहता, वतिसुहता, कायसुहता. जे वेदेई पोग्गलंवा पोग्गलेवा पोग्गलपरिणामंवा वीससावापोग्गलाणं परिणामं तेसिंवा उदएण सातावेदणिज्जं

वेद्य देखता हुवा भवेता रहे क्यों कि उस के दर्शन गुण का आवरण हुवा है, यह अहो गौतम ! दर्शनावरणीय कर्म का उदय और अहो गौतम ! यह दर्शनावरणीय कर्म जीव को बंध यावत् पुद्गल परिणाम प्राप्त कर नव प्रकार से अनुभाव कहा ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! साता वेदनीय कर्म का जीव को बंध का यावत् कितने प्रकार परिणाम कहा है ? अहो गौतम ! साता वेदनीय कर्म बंध का यावत् जीव को आठ प्रकार का अनुभव करे हैं. तद्यथा-१ मनोज्ञ शब्द, २ मनोज्ञ रूप, ३ मनोज्ञ गंध, ४ मनोज्ञ रस, ५ मनोज्ञ स्पर्श, ६ मन सुखकारी, ७ वचन सुखकारी और ८ काया सुखकारी जो पुद्गलों तथा पुद्गल २ के परिणाम वीस्रसा पुद्गल के परिणाम उन के उदय से साता वेदनीय कर्म को वेदे यह अहो

कम्मं वेदेति, एसण गोयमा ! सातावेयणिज्जे कम्मे, एसण गोयमा! साता वेयणिज्जस्स जाव अट्ठविह अणुभावे पण्णत्ते॥आसाता वेयणिज्जस्सणं भते! कम्मस्स जीवेणं तहेव पुच्छा?उत्तर च णवर-अमणुण्णासद्दा जाव कायदुहया,एसण गोयमा! असातावेयणिज्जस्स जाव अट्ठविहे अणुभावे पण्णत्ते ॥ १२ ॥ मोहणिज्जस्स भते ! कम्मस्स जावण बद्धस्स जाव कइविहे अणुभावे पण्णत्ते ? गोयमा ! मोहणिज्जस्स कम्मस्स जीवेण बद्धस्स जाव पचविहे अणुभावे पण्णत्ते तजहा सम्मत्तवेयणिज्जे, मिच्छत्तवेयणिज्ज, सम्मामिच्छत्तवेयणिज्जे, कसायवेयणिज्जे, णो कसायवेयणिज्जे,

गौतम ! साता वेदनीय कर्म, और यही अहो गौतम ! साता वेदनीय का यावत् आठ प्रकार का अनुभव कहा है अहो भगवन् ! असाता वेदनीय कर्म का बंध यावत् कितने भेद कहा है ? अहो गौतम ! आठ प्रकार जैसा साता वेदनीय का कहा वैसा ही इसी का भी कहना परंतु यहां अमनोज्ञ शब्द-रूप गंध-रस-स्पर्श और दुःखकारी, मन, वचन, काया के योग कहना ॥१२॥ अहो भगवन् ! मोहनीय कर्म का जीव के बंध यावत् अनुभव कितने प्रकार से होता है ? अहो गौतम ! मोहनीय कर्म के जीव के बंध के पांच प्रकार अनुभव कहा है, तद्यथा—१ सम्यक्त्व वेदनीय, २ मिथ्या वेदनीय, ३ सममिथ्या वेदनीय,

जेवेदेति पोग्गलवा पोग्गलवा पोग्गलपरिणामवा वीससावा पोग्गलपरिणाम, तसिंवा उदएण मोहणिज्ज कम्म वेदति॥एसण गोयमा!मोहणिज्जे कम्मे,एसण गोयमा! मोहणिज्जस्स कम्मस्स जाव पंचविहे अणुभावे पण्णत्ते ॥ १२ ॥ आउयस्सण भंते ! कम्मस्स जीवण तहेव पुच्छा ? गोयमा ! आउयस्सण कम्मस्स जीवेण बद्धस्स जाव चउ व्विहे अणुभावे पण्णत्ते तजहा नेरइयाउए, तिरियाउए, मणुस्साउए, देवाउए जंवेदेति पोग्गलवा पोग्गलवा पोग्गलपरिणामवा वीससावा पोग्गलपरिणामं तेसिंवा उदएण आउय कम्म वेदति, एसण गोयमा ! आउएकम्मे एसण गोयमा! आउय कम्मस्स

४ कषाय वेदनीय और ५ नो कषाय वेदनीय इन के जो वेद पुद्गलों, पुद्गल परिणाम वीससा पुद्गल परिणाम उस के उदय से मोहनीय कर्म वेदता है यह अहो गौतम ! मोहनीय कर्म और यह अहो गौतम ! मोहनीय कर्म के यावत् पांच प्रकार का अनुभव कहा ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! आयुष्य कर्म का बंध जीव को यावत् कितने प्रकार अनुभव होता है ? अहो गौतम ! आयुष्य कर्म के बंधक जीव को चार प्रकार का अनुभव कहा है तद्यथा–१ नारकी का आयुष्य, २ तिर्यंच का आयुष्य, ३ मनुष्यका आयुष्य और ४ देवता का आयुष्य, इन के जो वेदे पुद्गलों, पुद्गल २ के परिणाम वीससा पुद्गल परिणाम उस के उदय कर आयुष्य कर्म वेद यह अहो गौतम ! आयुष्य कर्म और यह आयुष्य कर्म का यावत् चार

आव षठव्विहे मणुभावे पण्णत्ते ॥ १४ ॥ सुहणामस्सण भंते ! कम्मस्स जीवेण पुच्छा ? गोयमा ! सुहनाम कम्मस्स जीवेण बद्धस्स जाव चउद्दसविहे अणुभावे पण्णत्ते तंजहा-इट्ठा सद्दा, इट्ठा रूवा इट्ठा गंधा इट्ठा रसा, इट्ठा फासा, इट्ठा गती इट्ठा ठिती इट्ठा लावण्ण, इट्ठा जसोकित्ती इट्ठे—उट्ठाण—कम्मबल—वीरिय—पुरिसक्कार परक्कम इट्ठस्सरया, कंतस्सरया, पियस्सरया, मणुण्णस्सरया, जंवेदेति पोग्गलवा पोग्गल परिणामवा, वीससावा पोग्गलपरिणामवा तेसिंवा उदएण सुभणामकम्म वेदति, एसण गोयमा ! सुभणामे कम्मे, एसणं गोयमा ! सुभणामस्स कम्मस्स जाव

प्रकार का अनुभव कहा है ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! शुभ नाम कर्म जीव के किस प्रकार बंधते हैं अनुभव होता है ? अहो गौतम ! शुभ नाम कर्मों का यावत् चवदे प्रकार का अनुभव होता है तद्यथा—१ इष्टकारी शब्द, २ इष्टकारी रूप, ३ इष्टकारी गंध, ४ इष्टकारी रस, ५ इष्टकारी स्पर्श, ६ इष्टकारी गति, (चलनेकी) ७ इष्टकारी स्थिति (आयुष्य) ८ इष्टकारी लावण्यता, चतुराइ, ९ इष्टकारी यश कीर्ति, इष्टकारी उत्थान-कर्म-बल-वीर्य पुरुषाकार-पराक्रम ११ इष्टकारी स्वर (वाणी) १२ कान्तकारी स्वर, १३ प्रियकारी स्वर, और १४ मनोज्ञ स्वर इन के जो वेदे पुद्गलों तथा पुद्गल पुद्गलों का परिणाम, वीससा पुद्गलों का परिणाम उस के उदय कर शुभ नाम कर्म को वेदता है यह

चउद्दसविहे अणुभावे पण्णत्ते ॥ दुहणामस्सण भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! एवंचेव णवरं अणिट्ठासरा जाव हीणस्सरता, दीणस्सरया, अणिट्ठस्सरया, अकंतस्सरया, जं वेदेति सेसं तंचेव ॥ जाव चउद्दसविहे अणुभावे पण्णत्ते ॥ १५ ॥ उच्चागोत स्सण भंते ! कम्मस्स जीवेण पुच्छा ? गोयमा ! उच्चागोतस्सकम्मस्स जीवेण बद्धस्स जाव अट्ठविहे अणुभावे पण्णत्ते तंजहा—जातिविसिट्ठिया, कुलविसिट्ठिया, बलविसिट्ठया, रूवविसिट्ठिया, तवविसिट्ठिया, सुयविसिट्ठिया, लाभविसिट्ठिया, इस्सरिय विसिट्ठिया, जं वेदेई पोग्गलंवा पोग्गलेवा पोग्गलपरिणामंवा वीससावा पोग्गल परिणा-

अहो गौतम ! शुभ नाम कर्म और यह शुभ नाम कर्म का चउदह प्रकार का अनुभव कहा अशुभ नाम कर्म की पृच्छा ? अहो गौतम ! शुभ की तरह ही कहना परंतु इतना विशेष अनिष्ट-वर्ण-रूप गंध रस-स्पर्श-गति-स्थिति-लावण्य अकीर्ति, उत्थानादि यावत् हीन स्वर, दीन स्वर, अनिष्ट स्वर, अकंत स्वर, या वेद वह वेदे यावत् चउदह प्रकार अशुभ नाम कर्म का अनुभव कहा ॥ १५ ॥ अहो भगवन् ! ऊंच गोत्र कर्म की पृच्छा ? अहो गौतम ! ऊंच गोत्र कर्म बंध का जीव को आठ प्रकार का अनुभव कहा है तथथा—१ जाति विशिष्ट (उत्तम), २ कुल विशिष्ट, ३ बल विशिष्ट, ४ रूप विशिष्ट,

मे तेसिंवा उदएण जाव अट्ठविहे अणुभावे पण्णत्ते ॥ णीयागोयस्सणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! एवं चेव णवर जातिविहीणया, जाव इस्सिरियविहीणया, जंवेदेति पोग्गलंवा पोग्गलेवा पोग्गलपरिणामंवा वीससवा पोग्गलाण परिणामं तेसिंवा उदएणं जाव अट्ठविहे अणुभावे पण्णत्ते ॥ १९ ॥ अंतराइयस्सणं भंते ! कम्मस्स जीवेणं पुच्छा ? गोयमा ! अंतराइयस्स कम्मस्स जीवेण बद्धस्स जाव

५ बल विशिष्ट, ६ रूप विशिष्ट, ७ लाभ विशिष्ट, और ८ ऐश्वर्य विशिष्ट इन के जो वेदे पुद्गलों पुद्गल पुद्गल का परिणाम विशेषा पुद्गल परिणाम यह ऊंच गोत्रोदय के आठ भेद अनुभव कहा नीच गोत्र की पृच्छा ! अहो गौतम ! ऐसे ही इतना विशेष जाति की हीनता पावे यावत् ऐश्वर्यता की हीनता पावे यों जो वेदे पुद्गलों, पुद्गल, पुद्गलों का परिणाम उस के उदय कर आठ प्रकार का नीच गोत्र का अनुभव कहा ॥१९॥ अहो भगवन् ! अंतराय कर्मका उदय का जीव को अनुभव कितने प्रकारसे होता है ? अहो गौतम ! अन्तराय कर्मका यावत् पांच प्रकारका अनुभव कहा है तद्यथा-१ दानान्तराय दान देनेमें विघ्न प्राप्त होवे, २ लाभान्तराय, ३ भोगान्तराय, ४ उपभोगान्तराय और ५ वीर्यान्तराय श्रेष्ठ मार्गमें बलवीर्य फोरसके नहीं + जिस प्रकार अन्य पुद्गलों पुद्गल यावत्

+ अनुमर्थ वाली पन्नवणा सूत्र मे लिखा है कि १७ काम करने से अन्तराय कर्म का बन्ध होता है तद्यथा-१ कल्याणरहित हे, २ दीनों को दुःखी करे, ३ असमर्थ पर कोप करे, ४ गुरु माता उठावे, ५ तपसी को वन्दन नहीं करे,

पंचविहे अणुभावे पण्णत्ते तंजहा-दाणांतराए,लाभांतराए,भोगांतराए,उपभोगांतराए,वीरियंतराए, जंवेदेइ पोग्गलंवा जाव वीससावा तेसिंवा उदएण अंतराइयं कम्म वेदेति, एसण गोयमा ! अंतराइए कम्म, एसणं गोयमा! जाव पंचविहे अणुभावे पण्णत्ते ॥ इतिकम्मपगडी पये पढमो उद्देसो सम्मत्तो ॥ २३ ॥ * *

कतिणं भंते ! कम्मपगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा! अट्ठकम्मपगडीओ पण्णत्ताओ तंजहा णाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं ॥ १ ॥ णाणावरणिज्जेणं भंते ! कम्मे कति

उन के उदय होवे पांच प्रकार से अन्तराय कर्म को वेदता है ऐसा तीर्थंकर का फरमान है इति कर्म प्रकृति पद का प्रथमोद्देशा ॥ २३ ॥ १ ॥

प्रथमोद्देश में मूल प्रकृति कही दूसरे में उत्तर प्रकृति कहते हैं अहो भगवन् ! कर्म प्रकृति कितनी कही है ! अहो गौतम ! आठ प्रकृति कही है, तद्यथा—ज्ञानावरणीय यावत् अन्तराय ॥ १ ॥ अहो भगवन् !

६ जिन वचन उत्थापे, ७ जैन धर्म में विघ्न डाले ८ सूत्र पढते अन्तरायदे, ९ ज्ञानाभ्यास में अन्तरायदे, १० उत्तम मार्ग में प्रवर्तते अन्तरायदे, ११ परमार्थ कहते हंसी करे, १२ विपरित धर्म प्रकाश करे, १३ असत्य बोले, १४ मरतलेवे, १५ अन्य के मर्म प्रकाशे, १६ सिद्धान्त की हीलना करे, और १७ सिद्धान्त की असातना करे.

गोयमा! दुविहे पण्णत्ते तंजहा-दसणमोहणिज्जेय, चरित्त मोहणिज्जेय॥ दसण मोहणिज्जेण भंते! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते? गोयमा! तिविहे पण्णत्ते तंजहा सम्मत्तवेयणिज्ज, मिच्छत्तवेयणिज्जेय, सम्मामिच्छत्तवेयणिज्जेय चरित्त मोहणिज्जेण भंते! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते? गोयमा! दुविहे पण्णत्ते तंजहा-कसायवेयणिज्जेय, णो कसाय वेयणिज्जेय ॥ कसाय वेयणिज्जेण भंते! कतिविहे पण्णत्ते? गोयमा! सोलसविहे पण्णत्ते तंजहा अणताणुबन्धीकोहे

अहो भगवन्! मोहनीय कर्म के कितने प्रकार कहे? अहो गौतम! दो प्रकार कहे हैं तद्यथा १ दर्शन मोहनीय सम्यक्त्वघातक और चारित्र मोहनीय चारित्र घातक॥ अहो भगवन्! दर्शन मोहनीय के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! तीन भेद कहे हैं तद्यथा-१ सम्यक्त्व वेदनीय सदोष सम्यक्त्व २ मिथ्यात्व मोहनीय अतत्व में तत्त्व और तत्त्व में अतत्वका श्रद्धान ३ सममिथ्यात्व मोहनीय तत्त्व अतत्त्व में एकसा श्रद्धान॥ अहो भगवन्! चारित्र मोहनीय कर्म कितने प्रकार कहा है? अहो गौतम! दो प्रकार कहा है तद्यथा १ कषाय वेदनीय और अकषाय वेदनीय॥ अहो भगवन्! कषाय वेदनीय के कितने भेद कहे हैं? अहो गौतम! सोलह भेद कहे हैं तद्यथा १ अनन्तानु बन्धी क्रोध पर्वत की राड समान, २ अनन्तानु बन्धी मान पत्थर के स्थंभ समान, ३ अनन्तानु बन्धी माया वांसकी जड़ समान, और ४ अनन्तानु बन्धी लोभ किरमचीके रंग समान ५ अप्रत्याख्यानी क्रोध जमीनकी दरार समान, ६ अप्रत्याख्यानी

अणंताणुबंधीमाण अणताणुबंधीमायाए, अणताणुबंधीलोभे ॥ अपच्चक्खाणेकोहे, एवं माणमायालोभे ॥ पच्चक्खाणावरण कोहे एवं माणेमायालोभे ॥ संजलणेकोहे एवं माणेमायालोभे ॥ नो कसायवेयणिज्जेण भंते ! कम्मे कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! नवविहे पण्णत्ते तंजहा इत्थीवेए, पुरिसवेए, णपुंसगवेए, हास, रती, अरती भय, सोग, दुगंछा ॥ ५ ॥ आउएणं भंते ! कम्मे कइविहे पण्णत्ते ?

मान हड्डी के स्थंभ समान, ७ अप्रत्याख्यानी माया मेंढा के शृंगसमान, ८ अप्रत्याख्यानीलोभ खंजन के रंगसमान ९प्रत्याख्यानावरणीय क्रोध रेतीकी लकीर समान, १० प्रत्याख्यानीमान-काष्टकेस्थंभ समान, ११ प्रत्याख्यानी माया चलते बैलके मूत्र समान १२प्रत्याख्यानी लोभ कीचडके लेप समान, १३संज्वलन क्रोध पानी की लकीर समान, १४ संज्वल मान तृणके स्थंभ समान १५ संज्वलन माया बांसकी छीली समान और १६ संज्वलन लोभ पतंगके रंग समान ॥ अहो भगवन् ! नोकषायवेदनीय कर्म के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! नवभेद कहे हैं तद्यथा—१ स्त्रीवेद पुरुष भोगाभिलाषी, २ पुरुषवेद स्त्रीयाभिलाषी, ३ नपुंसक वेद उभयाभिलाषी ४ हास्य, ५ रति, ६ अरति ७ शोक, और ९ दुर्गंछा यों मोहनीय कर्म की २८ प्रकृति कही ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! आयुष्य कर्म कितने प्रकार का कहा ? अहो गौतम ! चार प्रकार के कहे हैं तद्यथा १ नरकायु, २ तिर्यंचायु, ३ मनुष्यायु और देवायु (विशेषार्थवासी पन्नवना में

गायमा पत्ताअङ्ग पण्मत्त सजहा पारइयाउए लिरयआउम् अणुस्साउए दवाउए॥ ६ ॥

१मण रिद्ध गरहाए २० सामदर दयामा है १ साभबान २ मरदर पहुन ३ अन्कार बाहन ४ मिथ्यास्र मे रत ५ मार की घातक ६ मगरपताम, ७ मागाकर ८ कायरता मर ९ महापद ननान १० १मराबाया ११ मामरा १२ मचकाप्रानक १३ पंचेन्द्रियका घातक १४ महारम्भी १५ महापरिग्रही, १६ मासमाहार १७ मदिरापानी, १८ रात्रिभोजन कर, १९ रौद्रध्यानी और २० कृष्णादि भाविनुद्धलेसी॥
१नरीच गतिका मायुष्य ? सामकर स्थ १ कोमाचार रहित २ मत्प का ठग ३ १मथ्याहर पाप ४ कूडवे रवदेनक ५ स्वर मालवाप रत, ६ मायाकर, स ग पाप बम ८ साम मासा मर ९ भव्या गुरा १मपाय,१ केपी है पदार्थ मे मिथ्या १२ गालवस्तु म भेमकर १२ स्वाम्पिमंनु मे मलकर १३ भाम्यघात १४ नागीकरे १० प्रमहकाम १६ पुरमला मतारी वस्तु मे भयकरे १७ कापुरमेशी, १८ तीपमेशी १९ कार्या भार २० मारण्यानी ॥ मनुष्यायु १३ सामने स्थ १ गुरुसेमिक २ चुगली न कर ३ दयालु ४ रुनरंग ५ मारमी ६ ग्रन्गासा ७ पापम दुग्गोपाअी, ८ परका पीडाकारी, ९ परको हितकारी, १० विनयेन ११ महतिका पाईक १२ मनुकम्पावन्त और १३ अमत्सरी ॥ देवायु ११ सालकर स्प भवा॥ १ अरसकापी २ तोगसंतार रहित ३ सरागसंयमी ४ प्रनपारी ५ मदनस्तरी ६ धर्मानुरागी ७ दानरत ८ धर्म ध्यानी ९ बालतपस्वी १० मकामनपरी और ११ शुभपरिनामाला। ॥३॥

णामए भंते ! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! बायालीसतिविहे पण्णत्ते तंजहा-गतिनामे २ जातिनामे, ३ सरीरणामे ४ सरीरोवंगणामे ५ सरीर बंधणणामे ६ सरीर संघायणनामे ७ संघयणणामे ८ संठाणणामे ९ वण्णणामे, १० गंधणामे ११ रसणाम १२ फासणामे १३ अगुरुलहुणामे, १४ उवघायणामे, १५ पराघायणामे १६ आणुपुव्वी णामे १७ उसासणामे, १८ आयवणामे १९ उज्जोयणामे, २० विहाय गतिणामे, २१ तसणामे, २२ थावरणामे, २३ सुहमणामे, २४ बादरणामे, २५

अहो भगवन् ! नाम कर्म के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! ४२ भेद कहे हैं तद्यथा—१ गति नाम-मरकर अन्य गति में गमन करे वह गति, २ जाति नाम, जिस में जीव की पैदास होवे सो जाति ३ शरीर नाम जीव के रहने का स्थान सो शरीर, ४ शरीर के अंगोपांग नाम शरीर के अवयव, ५ शरीर के बंधन नाम शरीर के पुद्गलों का सम्बन्ध ६ शरीर संघातन नाम शरीर के पुद्गलों एकत्र होना ७ संघयन नाम शरीर का पराक्रम, ८ संस्थान नाम-शरीर का आकार ९ वर्ण नाम-रंग, १० गंध नाम-वास, ११ रस नाम-स्वाद १२ स्पर्श नाम-स्पर्श का स्पर्श, १३ अगुरु लघु नाम-हलका भी नहीं भारी भी नहीं ऐसा, १४ उपघात नाम अपने शरीर से, अपनी, घात होवे जैसे सुख प्रकृति में उत्पन्न स रोग मारा जावे,

पज्जत्तणामे २६ अपज्जत्तणामे, २७ साहारण सरीरणामे, २८ पत्तेय सरीरणामे, २९ थिरणामे, ३० अथिरणामे, ३१ सुभणामे, ३२ असुभणामे, ३३ सुभगणामे, ३४ दुभगणामे, ३५ सूसरणामे, ३६ दूसरणामे, ३७ आदेज्जणामे, ३८ अणादेज्जणामे, ३९ जसोकित्तीणामे, ४० अजसोकित्तीणामे ४१ णिम्माणणामे ४२ तित्थगरनामे, गहनामेणं भंते ! कम्मे कतिविह पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा-णेरइय गतिणामे, तिरियगतिणामे, मणुस्सगतिणामे, देवगतिणामे, ॥

१५ पराघात नाम-अन्य उस का दम मनाप भरन नहीं कर सके, तथा अपने शरीर से अन्य का घात होवे जैसे सर्पादि, १६ अनुपूर्वी नाम-विग्रह गति में जाते जीव को अन्यी गति में ले जावे, १७ उश्वास नाम-सुख से श्वासोश्वास लेवे, १८ आताप नाम-आतापवन्त सूर्य के विमान समान, १९ उद्योत नाम-चन्द्र विमान के जैसा उद्योतवन्त शरीरवाला, २० विहाय गति नाम-आकाश में गति करने योग्य शरीर वाला, २१ त्रस नाम-बेइंद्रियादि, २२ स्थावर नाम-पृथव्यादि, २३ सूक्ष्म नाम-छोटे शरीर के धारक, २४ बादर नाम-बडे शरीरवाले, २५ पर्याप्त नाम-पूरी पर्याय के धारक, २६ अपर्याप्त नाम अपूर्ण पर्याय के धारक, २७ साधारण नाम-एक शरीर में अनंत जीववाले, २८ प्रत्येक नाम, २९ स्थिर नाम-मजबूत

जातिणामेण पुच्छा ? गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते तजहा-एगिदिय जातिनामे, जाव पंचिंदिय जातिणामे, ॥ सरीरणामेणं भते ! कम्मकतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते ओरालियसरीरणामे जाव कम्मगसरीरणामे ॥सरीरगोवगणामेणं भते! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिविहे पण्णत्ते तजहा ओरालियसरीरगोवगणाम, वेउव्वियसरीरगोवंगनामे, आहारगसरीरगोवगणामे ॥ सरीरबधणणामेण भते ! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पचविहे पण्णत्ते ? तजहा ओरालिय सरीर

शरीरवाला, १० अस्थिर नाम-चिपिल हड्डियोंवाला, ११ शुभ नाम-सुन्दर शरीरवाला, १२ अशुभ नाम खराब शरीरवाला, १३ सौभाग्य नाम-सर्व को वल्लभकारी, १४ दुर्भाग्य नाम अप्रियकारी, १५ सुस्वर नाम-मधुर स्वरवाला, १६ दुस्वर नाम खराब स्वरवाला, १७ आदेय नाम-उस का वचन सर्व को मान्य होवे, १८ अनादेय नाम-उस वचन कोई माने नहीं, १९ यशोकीर्ति नाम-उस का वचन सर्व को मान्य विख्यातीवंत, ४० अयशोकीर्ति नाम-अपयशी, ४१ निर्माण नाम सर्व अगोपांग यथास्थान होवे, और ४२ तिर्थंकर नाम-तीर्थंकर पद को प्राप्त करानवाला अब इन के भेद कहते हैं—अहो भगवन्! गति के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! चार भेद कहे हैं तद्यथा—१ नरक गति, २ तिर्यंच गति, ३ मनुष्य गति,

बंधणणामे जाव कम्मगसरीरबंधणणामे ॥ संरीरसंघाय णामेण भंते ! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा ओरालियसरीर संघायणामे, जाव कम्मग सरीर संघायणामे ॥ संघयणणामे भंते ! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे पण्णत्ते तंजहा - वइरोसभणारायसंघयणणामे उसभणारायसंघयणणामे णाराय संघयणणामे, अद्धणाराय संघयणणामे, कीलियासंघयणणामे छेवट्ठ संघयणणामे ॥ संठाण नामेण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे पण्णत्ते तंजहा समचउरंस

और ४ देव गति जाति नाम की पृच्छा ? अहो गौतम ! पांच भेद कहे हैं तद्यथा—१ एकेन्द्रिय जाति नाम यावत् पंचेन्द्रिय जाति नाम अहो भगवन् ! शरीर नाम कर्म के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! पांच भेद कहे हैं तद्यथा—१ उदारिक शरीर, यावत् कार्माण शरीर नाम. अंगोपांग नाम के तीन भेद कहे हैं तद्यथा—१ उदारिक शरीर के अंगोपांग, २ वैक्रय शरीर के अंगोपांग और आहारक शरीर के अंगोपांग (तेजस कार्माण शरीर सूक्ष्म होने से अंगोपांग नहीं होते हैं) अहो भगवन् ! शरीर बंधन नाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! पांच भेद कहे हैं तद्यथा—१ औदारिक शरीर बंधन यावत् कार्माण शरीर बंधन [जिस प्रकार लाखादि अन्य पुद्गलों का बंधन करते हैं, वैसे ही

सठाणणामे, नग्गोहपरिमंडल संठाणणामे साइसंठाणणामे, वामणसंठाणणामे, खुज्जसंठाणणामे हुंडसंठाणणामे ॥ वण्णणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा कालवण्णणामे, जाव सुक्किलवण्णणामे ॥ गंधणामेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा सुब्भिगंधणामे, दुब्भिगंधणामे ॥ रसणामेणं पुच्छा ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा तित्तरसणामे जाव महुर रसणामे ॥ फासनामेणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! अट्ठविहे पण्णत्ते तंजहा कक्खड-

औदारिक का शरीर का बन्धन कर वह बंधन नाम। संघातन नाम के भी पांच प्रकार बताया—१ औदारिक शरीर का संघातन यावत् कार्माण शरीर का संघातन (जैसे बुहारी कर बिखरे हुए घास के पूलों का एकत्र करे वह संघातन अहो भगवन् ! संघयन नाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! छ भेद कहे हैं जिनके—१ वज्रऋषभ नाराच संघयन वज्र कीली, ऋषभ पट्टी, नाराच वेष्टन इन युक्त शरीर का बंधन हो वह वज्रऋषभ नाराच संघयन, २ ऋषभ नाराच संघयन जिस में कीला नहीं हो, ३ नाराच जिस में वेष्टन हो ऐसा शरीर, ४ अर्ध नाराच संघयन आधा मर्कट बंध, ५ कीलक संघयन फक्त कीली रूप मर्कट हो, और ६ छेवट्ठ संघयन अस्थि २ छूते हों। अहो भगवन् ! संस्थान नाम के

फासणामे, जाव लुक्खफासणामे ॥ अगुरुलहुणामे एगागारे पण्णत्ते ॥ उवघायणामे एगागारे पण्णत्ते ॥ पराघायणामे एगागारे पण्णत्ते ॥ आणुपुव्वीणामे चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा णेरइय आणुपुव्विणामे, जाव देवाणुपुव्विणामे ॥ ऊसासणामे एगागारे ॥ सेसाणि सव्वाणि एगागाराइं पण्णत्ताइं जाव तित्थगरनामे ॥ णवर विहाय गतिणामे दुविहे पण्णत्ते तंजहा पसत्थ विहायगतिणामय, अपसत्थविहाय गतिणामे

कितने भेद हैं ? अहो गौतम ! छ भेद कहे हैं तद्यथा—समचतुस्र संस्थान सर्वांगोपांग पूर्ण यथायोग्य शरीर २ न्यग्रोध परिमंडल संस्थान वड के समान नाभी ऊपर अच्छा और नीचे खराब शरीरवाला, ३ सादि संस्थान प्रथम नीचे का शरीर अच्छा ऊपर का शरीर खराब, ४ वामन संस्थान ठिगना शरीर, ५ कुब्ज संस्थान और ६ हुण्ड संस्थान भाजे भल मुरद जैसा शरीर. वर्ण नाम पांच प्रकार का कहा है १ कृष्ण वर्ण यावत् शुक्ल वर्ण गंध नाम के दो भेद—१ सुरभिगंध और दुरभिगंध नाम रस नाम के पांच भेद—१ तिक्त रस यावत् मधुर रस नाम. स्पर्श नाम के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! आठ भेद कहे हैं. तद्यथा—कर्कश स्पर्श नाम, यावत् रूक्ष स्पर्श नाम अगुरु लघु नाम, उपघात नाम, पराघात नाम, इन तीनों के एकक ही भेद हैं अनुपूर्वी नाम के चार भेद हैं—नरकानुपूर्वी यावत् देवानुपूर्वी, उश्वास नाम से यावत् तीर्थंकर नाम तक के एकेक ही भेद है जिस में इतना विशेष विहाय गति

॥ ७ ॥ गोएण भंते ! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तंजहा उच्चागोतेय, णीयागोएय ॥ उच्चागोएण भंते ! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! अट्ठविहे पण्णत्ते तंजहा जातिविसिट्ठिया जाव इस्सरिय विसिट्ठिया ॥ एवं णीयागोएवि णवरं जातिविहीणता जाव इस्सरियविहीणता ॥ ९ ॥ अंतराइएणं भंते ! कम्मे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! पंचविहे पण्णत्ते तंजहा दाणंतराइ जाव वीरियंतराइ ॥ १० ॥ णाणावरणिज्जस्सण भंते ! कम्मस्स केवइयं कालठिई पण्णत्ता ?

नाम के दो भेद हैं तद्यथा—१ प्रशस्त विहायगति और अप्रशस्त विहाय गति × ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! गोत्र कर्म के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! दो भेद कहे हैं तद्यथा—१ उच्च गोत्र और नीच गोत्र-जिसमें से उच्चगोत्र के आठ भेद कहे हैं तद्यथा—जाति की उत्तमता यावत् ऐश्वर्य की उत्तमता ऐसे ही नीच गोत्र के आठ में विशेष जाति की हीनता यावत् ऐश्वर्य की हीनता ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! अन्तराय कर्म के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! पांच भेद कहे हैं तद्यथा—१ दानान्तराय यावत् वीर्यान्तराय ॥ १० ॥ अब आठ कर्मों की स्थिति का कहते हैं अहो भगवन् ! ज्ञानावरणीय

× तीर्थंकर नाम कर्मोपार्जन के २० बोल ज्ञातासूत्र में व अन्य स्थान से जानना.

गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तीससागरोवम कोडाकोडीओ, तिण्णिय वाससहस्साति अबाहा अबाहूणिया कम्मट्ठिती कम्मणिसेगो ॥ ११ ॥ णिद्दापंचगस्सणं भंते ! कम्मस्स केवतियं कालठिती पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स तिण्णि सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेजति भागेण ऊणता, उक्कोसेणं तीससागरोवम कोडाकोडीओ, तिण्णियवाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मट्ठिती कम्मनिसेगो ॥ दंसणचउक्कस्सणं भंते ! कम्मस्स केवतियं कालठिती ? गोयमा !

कर्म की कितनी स्थिति कही है ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट सर्व से लघु स्थिति दशवे सूक्ष्म सम्पराय गुनस्थान के परिणाम पर, उत्कृष्ट तीस सागरोपम कोडाकोडी प्रथम गुनस्थान में अतिक्लिष्ट परिणाम वाला, यहां तीन इस का अबाधा काल उत्कृष्ट तीन हजार वर्ष+,बाद कर्म का निषेक अन्त समय तक उदय होवे समय २ लगावे ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! निद्रा पंचक की कितने काल की स्थिति कही है अहो गौतम ! जघन्य तो एक सागर के सात भाग कर उस में के तीन भाग जितनी उस में से भी एक पल्योपम के असंख्यातवे भाग जितनी कम, उत्कृष्ट तीस कोडाकोड सागरोपम की अबाधाकाल तीन हजार वर्ष का अहो भगवन् ! दर्शनचोक की कितने काल की स्थिति कही ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मु-

+ कर्म बन्ध किये बाद उदय में आवे उस के बीच के काल को अबाधा काल कहते हैं।

जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तीससागरोवमकोडाकोडीओ, तिण्णिवाससहस्साइं अबाहा ॥ १२ ॥ साता वेदणिज्जस्स इरियावहियबंधगं पडुच्च अजहण्णमणुक्कोसेणं दो समया, संपराइयबंधगं पडुच्च जहण्णेणं बारस मुहुत्ता उक्कोसेणं पन्नरस्स सागरोवम कोडाकोडीओ, पण्णरसवाससहस्साइं अबाहा ॥ असायावेयणिज्जस्स जहण्णेणं सागरोवमस्स तिण्णिसत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइ भागणं ऊणगा उक्कोसेणं तीससागरोवम कोडाकोडी तीसवाससहस्साइं अबाहा ॥ १३ ॥ सम्मत्तवेदणि ज्जस्स पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छावट्ठिसागरोवमाइं साति

रे की उत्कृष्ट तीस क्रोडाक्रोड सागरोपम की अबाधाकाल तीन हजार वर्ष का इतने काल उदय नहीं आवे ॥ १२ ॥ साता वेदनीय कर्म की इर्यावही के बंध आश्रिय जघन्य उत्कृष्ट दो समय की क्यों कि प्रथम समय बंध होता है और दूसरे समय वेदकर तीसरे समय निर्जरे सम्परायिक बंध आश्रिय जघन्य बारा मुहूर्त उत्कृष्ट पनरे क्रोडाक्रोड सागरोपम की, पनरे सो वर्ष का अबाधाकाल असाता वेदनीय कर्म की जघन्य एक सागरोपम के सात भाग में के तीन भाग जितनी जिस में एक पल्योपम के असंख्यातवे भाग जितनी कम उत्कृष्ट तीस क्रोडाक्रोड सागरोपम की तीन हजार वर्ष का अबाधाकाल ॥ १३ ॥ सम्यक्त्व वेदनीय कर्म की जघन्य अंतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट छासठ क्रोडाक्रोड सागरोपम की कुछ अधिक

रगाइं, मिच्छत्तवेयणिज्जस्स जहण्णेणं सागरोवमं पलिओवमस्सअसंखेज्जतिभागेणं ऊणगं, उक्कोसेणं सत्तरिसागरोवम कोडाकोडीओ सत्तयवाससहस्साइं, अबाहा, ऊणया सम्मामिच्छत्तवेयणिज्जस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, कसायबारसगस्स जहण्णेणं सागरोवमस्स चत्तारिसत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणता, उक्कोसेणं चत्तालीसंसागरोवम कोडाकोडीओ, चत्तालीसं वाससयाइं अबाहा जाव निसेगो ॥ कोहसंजलणे पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं दो मासा उक्कोसेणं चत्तालीसं सागरोवम कोडाकोडीओ, चत्तालीसंवाससयाइं जाव

मिथ्यात्व वेदनीय कर्म की एक सागरोपम उस में से पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम, उत्कृष्ट सित्तर कोडाकोडी सागरोपम की, सात हजार वर्ष का अबाधा काल समामिथ्यावेदनी की जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट भी अन्तरमुहूर्त की बारह कषाय की जघन्य एक सागरोपम के सात भाग करे उस में के चार भाग जितनी उस में से पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम, उत्कृष्ट चालीस कोडाकोडी सागरोपम की, चालीस हजार वर्ष का अबाधा काल संज्वल के क्रोध की जघन्य दो महिने की, उत्कृष्ट चालीस कोडाकोडी सागरोपम की चार हजार वर्ष का अबाधा काल, संज्वल के मान की, जघन्य एक महिने की उत्कृष्ट

निसेगो ॥ माणसंजलणे पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं मासं उक्कोसेणं जहा कोहस्स॥ माया संजलणाए पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अद्धमासं उक्कोसेणं जहा कोहस्स ॥ लोभसंजलणेणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं जहा कोहस्स ॥ इत्थीवेदस्स पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स दिवड्ढसतभागं पलिओवमस्स असंखज्जति भागेणं ऊणगं उक्कोसेणं पण्णरस सागरोवम कोडाकोडीओ, पण्णरस वाससयाइं अबाहा जाव निसेगो, पुरिस वेदस्सणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठ संवच्छराति उक्कोसेणं दससागरोवम कोडाकोडीओ, दसवाससयाइं अबाहा

क्रोध के जितनी, संज्वल के माया की जघन्य १५ दिन की उत्कृष्ट क्रोध जितनी, संज्वल के लोभ की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट क्रोध जितनी स्त्री वेद की एक सागर के सात भाग में के डेढ विभाग उस में से भी पल्योपम के असंख्यातवे भाग जितने कम की, उत्कृष्ट पन्नर कोडाकोड सागरोपम की पन्नरे हजार वर्ष का अबाधा काल, पुरुष वेद की जघन्य आठ वर्ष की उत्कृष्ट दश कोडाकोड सागरोपम की एक हजार वर्ष का अबाधा काल नपुंसक वेद की जघन्य एक सागरोपम के सात भाग में के दो भाग जितनी उस में से पल्योपम के असंख्यातवे भाग जितनी कमी उत्कृष्ट वीस कोडाकोड सागरोपम की:

जाव निसगा॥ पुरिस वेदस्सणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेण सागरोवमस्स दोण्णि सत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेण ऊणया, उक्कोसेणं वीससागरोवम कोडाकोडीओ वीसय वास सयाइ अबाहा जाव निसगो॥ हास रतीण पुच्छा? गोयमा! जहण्णणं सागरोवमस्स एक सत्त भाग पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेण ऊणया उक्कोसेण दससागरोवम कोडा कोडीओ दसयवाससताइ अबाहा ॥ अरति भय, सोग, दुगंछाणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेण सागरोवमस्स दोण्णि सत्तभागा, पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेण ऊणया, उक्कोसेण वीससागरोवम कोडाकोडीओ, वीसयवास सताइ अबाहा जाव निसगो ॥ १४ ॥ नेरइयाउयस्सणं पुच्छा? गोयमा! जहण्णेण दस वास सहस्साइ,

दो हजार वर्ष का अबाधा काल, हास्य और रति की जघन्य स्थिति एक भाग सागरोपम में से पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम की, उत्कृष्ट दश क्रोडाक्रोड सागरोपम की, एक हजार वर्ष का अबाधा काल अरति भय शोक और दुर्गच्छा की, जघन्य एक सागर के सात भाग करे जिस में के दो भाग जितनी, उस में से पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम की, उत्कृष्ट वीस क्रोडाक्रोड सागरोपम की, दो हजार वर्ष का अबाधा काल ॥ १४ ॥ नारकी के आयुष्य की पृच्छा? जघन्य दश हजार वर्ष अन्तरमुहूर्त अधिक (पीछे के भव आश्रिय) उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम व पूर्व क्रोड आयुष्य का तीसरा भाग अधिक

अतोमुहुत्त मब्भहियाइ उक्कोसेण तत्तीससागरोवमाइ पुव्वकोडितिभाग
मब्भहियाई तिरिक्ख जोणियाउयस्स पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोमुहुत्तं
उक्कोसेण पलिओवमाइ पुव्वकोडीतिभाग अब्भहियाइ, एवं मणूसाउयस्सवि
देवाउयस्स जहा णेरइयाउयस्सठिति ॥ १५ ॥ णिरयगतिनामएण भंते !
कम्मस्स पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमसहस्स दोसत्तभागा, पलिओवमस्स
असंखेज्जति भागेणऊणया, उक्कोसेण वीससागरोवमकोडाकोडीओ, वीसवाससयाइ
अबाधा जाव निसगो ॥ तिरियगतिनामए जहा नपुंसग वेदस्स ॥ मणुयगतिनाम

तिर्यच योनिक का जघन्य अन्तर्मुहूर्त का उत्कृष्ट तीन पल्योपम का पूर्व क्रोड का तीसरा भाग अधिक, ऐसा ही मनुष्य का आयुष्य की, देवता का जैसा नेरीयेका कहा वैसा ही कहना॥१५॥नरक गति नामका जघन्य एक हजार सागरोपम के सात भाग कर उस में के दो भाग (२८५७ सागर) इस में पल्योपम का असं-ख्यातवा भाग कम, उत्कृष्ट वीस क्रोड क्रोड सागरोपम, दो हजार वर्ष का अबाधाकाल, तिर्यच गतिका आयुष्य नपुंसक वेद जैसा जानना जघन्य एक सागरोपम के सातीये दो भाग में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट वीस क्रोडाक्रोड सागरोपम मनुष्य गति नाम कर्म का आयुष्य जघन्य एक सागर का

माए पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स तिन्निसत्तभागं पलिओवमस्स असंखे-ज्जतिभागेणं ऊणगं उक्कोसेणं पण्णरससागरोवमकोडाकोडीओ, पण्णरसवाससयाइं अबाहा जाव निसेगो ॥ देवगतिनामाए पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमसहस्स एगसत्तभागं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणयं उक्कोसेणं जहा पुरिसवेदस्स ॥ पंचिंदिय जातिनामाएणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स दोण्णिसत्तभागं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणगं उक्कोसेणं वीसंसागरोवमकोडाकोडीओ, अबाहा जाव निसेगो ॥ वेउव्वियजातिनामाए पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स णवपण्णतीसतिभागा पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणया उक्कोसेणं

सात भाग में का देढ भाग जितना उस में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट पन्नरे क्रोडाक्रोड सागरोपम पन्नरे सो वर्ष का अबाधा काल देव गति नाम कर्म की पृच्छा ? अहो गौतम ! जघन्य एक हजार सागर के सात भाग में एक एक भाग [१।२] पल्योपम के असंख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट पुरुष वेद के जैसा दश क्रोडाक्रोड सागरोपम पंचेन्द्रिय जाति नाम का, जघन्य एक हजार सागरोपम के सात भाग में के दो भाग जितना जिस में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट वीस क्रोडाक्रोड सागरोपम का, दो हजार वर्ष का अबाधा

अट्ठारससागरोवम कोडाकोडीओ अट्ठारसवाससताई अबाहा जाव निसेगो, तइंदिय जातिनामाएण जहण्णेण एवचेव उक्कोसेण अट्ठारससागरोवमकोडाकोडीओ, अट्ठारसवा ससताइ अबाहा जाव निसगो ॥ चउरिंदिय जातिनामाएण पुच्छा ? गोयमा! जहण्णे ण सागरोवमस्स णवपणतिसतिभागा पलिओवमस्स असखेज्जतिभाग ऊणया, उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवम कोडाकोडीओ अट्ठारस वाससताइं अबाहा जाव निसगो पंचिंदियजातिनामाए पुच्छा ? जहण्णेण सागरोवमस्स दोण्णिसतभागा पलिओवमस्स असखेज्जतिभागेण ऊणया, उक्कोसेण वीससागरोवम कोडाकोडीओ वीसयवाससताइं,

काल बेइन्द्रिय जाति नाम कर्म का जघन्य एक सागर के पैंतीस (३५) भाग कर उस में के नव (९) भाग जिस में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम, उत्कृष्ट अठारा क्रोडाक्रोड सागरोपम अठारा सो वर्ष का अबाधा काल तेइन्द्रिय जाति नाम कर्म का जघन्य एक ही उत्कृष्ट अठारा क्रोडाक्रोडी सागरोपम, अठारासो वर्ष का अबाधा काल चौरिन्द्रिय नाम कर्म की जघन्य एक सागर के पैंतीस भाग में के ९ भाग उस में से पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट अठारा क्रोडाक्रोड सागरोपम, अठारे सो वर्ष का अबाधाकाल पंचेन्द्रिय जाति नाम कर्म जघन्य एक सागर के सातिमाग में के दो भाग उस में से पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम, उत्कृष्ट बीस क्रोडाक्रोड सागरोपम, दो हजार वर्ष का अबाधाकाल

अबाहा अबाहुणिया॥ओरालियसरीरत्ति एवचव, वेउव्वियसरीरनामाएण भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमसहस्स दोसत्तभागापलिओवमस्स, असंखेज्जतिभागेण ऊणता उक्कोसेण वीससागरोवमकोडाकोडीओ वीसइवाससताइ अबाहा अबाहुणिया, आहारगसरीरनामएवं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंतोसागरोवम कोडाकोडीओ उक्कोसेणवि अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ ॥ तयाकम्मसरीर नामाए पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण दोण्णिसत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागेण ऊणता,उक्कोसेण वीससागरोवमकोडाकोडीओ, वीसयवासस्तताइ अबाहा जाव निसेगो ॥ सरीरबंधण नामाएवि

औदारिक शरीर का भी इतना ही पचेन्द्रिय जितना कहना, ११ वैक्रय शरीर का जघन्य एक हजार सागर का सात भाग में का दो भाग उसमें से पल्योपम के असंख्यातवे भागकम उत्कृष्ट बीस क्रोडाक्रोड सागरोपम दो हजार वर्ष का अबाधा काल, आहारक शरीर की जघन्य अंतःसागर क्रोडाक्रोड उत्कृष्टभी अंतः सागर क्रोडाक्रोड,तेजस कार्मन शरीर की जघन्य एकसागर के सात भाग में से दो भाग उस में से पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट बीस क्रोडाक्रोड सागरोपम बीस हजार वर्ष का अबाधाकाल जैसी पांच शरीर की स्थिति कही तैसी ही पांचों शरीर के बन्धन की स्थिति मानना, और पांच संघातन की भी इस प्रकार ही कहना, वज्रऋषभ नाराच संघयन की स्थिति नामकर्म की जघन्य एक सागर के सात

पषण्हविपुथचेव,सरीरसघातनामाए पचण्हवि जहा सरीरनामाएवि कम्मस्सठितिचि॥वइ रोसभणाराय सघयणणामाए जहा रतिनामाए ॥ उसभनाराय सघयण णामाएपुच्छा? गोयमा! जहण्णेण सागरोवमस्तछ प्पणतीस तिभागा पलिओवमस्स असखज्जतिभागेण ऊणता उक्कोसेण बारससागरोवम कोडाकोडीओ बार-वाससयाइ अबाहा जाव निसगो ॥ णाराय सघयणणामाए पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णणं सागरोवमस्स सत्तपणतीसतिभागा पलिओवमस्स असखेज्जति भागेण ऊणता, उक्कोसेण चोद्दस सागरोवम कोडाकोडीओ. चाउद्दसवाससताइ अबाहा, जाव निसेगो ॥ अद्ध

भाग में के पच भाग जितनी उम में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट दश कोडाकोड सागरोपम की ऋषभ नाराच संघयन की एक सागर के पेंतीस भाग में के छ भाग जितनी उम में से पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट बार क्रोडाक्रोड सागरोपम की अबाधा काल बारसो वर्ष का, नाराच संघयन की जघन्य एक सागर के पेंतीस भाग में के सात भाग जितनी उम में से पल्योपम का असंख्यात वा भाग कम, उत्कृष्ट चौदे क्रोडाक्रोड सागरोपम की, चौदासो वर्ष का अबाधा काल, अर्धनाराच संघयन की जघन्य एक सागर के पेंतीस भाग में के आठ भाग जिस में से पल्योपम के असंख्यात भाग जितना कम की उत्कृष्ट सोला क्रोडाक्रोड सागरोपम की, सोलासो वर्ष का अबाधा काल, किलका संघयन की जघन्य

नारायसघयणनामस्स पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमस्स अट्ठपण्णती गतिभागा पलिओवमस्स असंखज्जइ भागेण ऊणता, उक्कोसेण सोलस सागरोवम कोडाकोडीओ सोलसवाससताइं अबाहा, जाव निसेगा, कीलिया संघयणणामेण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमस्स णवपणतीसतिभागा पलिओवमस्स असंखज्जतिभागेण ऊणया उक्कोसेण अट्ठारस सागरोवम कोडाकोडीओ, अट्ठारस वाससताइं अबाहा, जाव निसेगा ॥ छेवट्ठसंघयणणामस्स पुच्छा? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमस्स दोण्णिसत्तभागा पलिओवमस्स असंखज्जति भागेण ऊणया,

एक सागर के पैंतीस भाग में से नव भाग जिस में पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम की उत्कृष्ट अठारे कोडाकोडी सागरोपम की अठारासो वर्ष का अबाधाकाल, छेवट संघयनकी जघन्य एक सागर के सात भाग में से दो भाग जिस में से पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम की उत्कृष्ट बीस कोडाकोडी सागरोपम की दो हजार वर्ष का अबाधा काल, जिस प्रकार छ संघयन नाम की स्थिति कही एम ही प्रकार छ संस्थान नाम की भी स्थिति कहना शुक्लवर्ण की जघन्य एक सागरोपम के सात भाग में के एक भाग जिस पल्योपम के असंख्यातवे भाग की कम उत्कृष्ट दश कोडाकोडी सागरोपम की, एक हजार वर्ष का अबाधाकाल, पीले वर्ण की जघन्य एक सागरोपम के अठावीस भाग में से पांच भाग जिस

उक्कोसेण वीस सागरोवम कोडाकोडीओ वीसयवाससताइं, अबाहा जाव निसेगो, एव जहा संघयण णामाते छ भणिया, एव संठाणाएवि छ भाणियव्वा ॥ सुक्किलवण्ण णामाए पुच्छा? गोयमा! जहण्णेण सागरोवमस्स एग सत्तभागं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागेणऊणग, उक्कोसेण दस सागरोवमकोडाकोडीओ, दसवास सयाइं अबाहा जाव निसेगो ॥ हालिद्दवण्णणामाए पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमस्स पंचअट्ठावीसइभागा पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेण ऊणया, उक्कोसेणं अद्धतेरससागरोवम कोडाकोडीओ, अद्धतेरसय वाससयाइं अबाहा, जाव निसेगो,

में से पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम की उत्कृष्ट साडीबारे कोडाकोड सागरोपम की, साडी बारासो वर्ष का अबाधा काल, लाल वर्ण की जघन्य एकसागर के अठावीस भाग में से छ भाग जिसमें पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम, उत्कृष्ट पन्नरे कोडाकोड सागरोपम की, पनरसो वर्ष का अबाधा काल, हरे वर्ण की जघन्य एक सागर के अठावीस भाग में के सात भाग जिस में पल्योपम के असंख्यात भाग जितने कम की उत्कृष्ट साडी सत्तरह सागरोपम की १७५० वर्ष का अबाधा काल, काले वर्ण की छेवट संघयण जितनी अर्थात् जघन्य एक सागर के सात भाग में के दो भाग जितने पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम की उत्कृष्ट वीस कोडाकोड सागरोपम की. सुरभिगंध की शुक्ल वर्ण जितनी, जघन्य एक सागर के सात

लोहितवण्णणामेणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमस्स छ अट्ठावीसति भागा पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेण ऊणया, उक्कोसेणं पण्णरस सागरोवम काडाकोडीओ, पण्णरस वाससताइं अबाहा जाव निसेगो॥ नीलवण्णणामाए पुच्छा ? गोयमा! जहण्णेण सागरोवमस्स सत्त अट्ठावीसतिभागा, पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेण ऊणया उक्कोसेण अट्ठारस सागरोवमकोडाकोडीओ, अट्ठारसवाससताइं अबाहा जाव निसेगो ॥ कालवण्णनामाए पुच्छा ? गोयमा ! जहा छेवट्ठसंघयणस्स सुब्भिगंध नामाए जहा सुक्किलवण्णनामस्स दुब्भिगंधनामाए जहा

भाग में के एक भाग में से पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम की उत्कृष्ट एक कोडाकोड सागरोपम की एक हजार वर्ष का अबाधा काल दुरभिगंध की छेवट्ठ संघयण जितनी अर्थात् जघन्य एक सागर के सात भाग में के दो भाग जिस में पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम की उत्कृष्ट वीस क्रोडाक्रोड सागरोपम की दो हजार वर्ष का अबाधा काल रसों में मधुर रस की आदि पांचों रस की वैसी पांचों वर्ण की कही तैसे ही कहना स्पर्श में जो अप्रशस्त (खराब) चार स्पर्श कर्कश, भारी, रूक्ष, शीत इन चारों की छेवट्ठ संघयण जितनी जघन्य एक सागर के सात भाग में के दो भाग जितनी जिस में पल्योपम के असंख्यातवे भाग जितनी कम, उत्कृष्ट वीस क्रोडाक्रोड सागरोपम, दो हजार वर्ष का अबाधा काल और

उत्कट्ठ संघयणस्स॥रसाण महुरादीण जहावण्णाण भणिय, तहेव परिवाडीओ भाणियव्व फासा जे अपसत्था तेसिं जहा छेवट्ठस्स जेपसत्था तेसिं जहा सुक्किलवण्ण नामस्स, अगुरुलहुनामाए जहा छेवट्ठस्स, एव उवघातेनामाएवि पराघातनामाएवि एवंचेव, निरयाणुपुव्वि नामाए पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमसहस्सदोसत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेण ऊणया, उक्कोसेण वीससागरोवमकोडाकोडीओ वीसय वाससताइ अबाहा जाव निसगा॥ तिरियाणुपुव्वीए पुच्छा ? गोयमा!जहण्णेण

चार प्रसस्त [अच्छे] स्पर्श, लघु मृदु, शीत, स्निग्ध इन की जैसे वर्ण जैसी अर्थात् एक सागर के सात भाग में का एक भाग जिस में पल्योपम के असंख्यातवे भाग कमी, उत्कृष्ट दश क्रोडाक्रोड सागरोपम की, अगुरु लघु नाम की छेवट्ठ संघयन जैसी अर्थात् जघन्य एक सागर के सात भाग में के दो भाग जिस में पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम की उत्कृष्ट वीस क्रोडाक्रोड सागरोपम की, दो हजार वर्ष का अबाधाकाल ऐसे ही उपघात और पराघात नाम की स्थिति जानना नरकानुपूर्वी की जघन्य एक हजार सागरोपम के सात भाग में से पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम की उत्कृष्ट वीस क्रोडाक्रोड सागरोपम की, दो हजार वर्ष का अबाधा काल तिर्यंच अनुपूर्वी की जघन्य एक सागर के सात भाग में के दो भाग जिस में पल्योपमके असं

सागरोवमस्स दो सत्त भागा, पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेण ऊणता, उक्कोसेणं वीससागरोवम कोडाकोडीओ, वीसायवाससताइ अवाहा जाव निसेगो मणुयाणु पुव्विणामेण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमस्स दिवड्ढसत्तभाग पलिओवमस्स असंखज्जति भागेण ऊणग, उक्कोसेण पण्णरस सागरोवम कोडाकोडीओ, पण्णरस वासससताइ अबाहा, जाव निसेगो ॥ देवाणुपुव्विनामात पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमसहस्सएगसत्तभाग पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागेण ऊणग,

स्यात भाग कमकी उत्कृष्ट बीस कोडाकोड सागरोपमकी, दो हजार वर्ष का अबाधाकाल मनुष्यानुपूर्वीकी जघन्य एक सागरोपम के सात भाग में से देढ भाग जितनी जिस में पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम, उत्कृष्ट पनरे क्रोडाक्रोड सागरोपम की पनरे सो वर्षका अबाधाकाल देवानुपूर्वी की जघन्य एक हजार सागरोपम के सात भाग में की एक भाग जितनी उस में से पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम की उत्कृष्ट दश क्रोडाक्रोड सागरोपम की, एक हजार वर्ष का अबाधा काल उश्वास नाम की तिर्यंच अनुपूर्वी जितनी अर्थात् एक सागर के सात भाग में के दो भाग में से पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम जितनी, उत्कृष्ट बीस क्रोडाक्रोड सागरोपम की, ऐसे ही आताप नाम की और उद्योत नाम की. प्रशस्त विहाय गति की

उक्कोसेण दससागरोवमकोडाकोडीओ दससयवासंसताई अबाहा जाव निसेगो, ॥ उरसाभनामाए पुच्छा ? गोयमा ! जहा तिरियाणुपुव्वी ॥ आयवनामाएवि एवचेव, उज्जोय नामाएवि ॥ पसत्थविहायोगति नामाए पुच्छा? गोयमा ! जहण्णेण एगसागरोवमस्स एगसत्तभाग उक्कोसेण दससागरोवम कोडाकोडीओ, दसवाससताइं आबाहा जाव ।न गो, अपसत्थविहायागतिणामस्स पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमस्स दोण्णिसत्तभागा, पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेण, ऊणया, उक्कोसेणं वीससागरोवम

जघन्य एक सागर के सात भाग में के एक भाग जिस में से पल्योपम के असंख्यातवे भाग जितनी कमी, उत्कृष्ट दश क्रोडाक्रोड सागरोपम की एक हजार वर्ष का अबाधा काल अप्रशस्त विहाय गति की जघन्य एक सागरोपम के सात भाग में दो भाग उस में से पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट दश क्रोडाक्रोड सागरोपमकी दो हजार वर्ष का अबाधा काल त्रस नाम की और स्थावर नाम की इतनी ही जानना सूक्ष्म नाम की जघन्य एक सागरोपम के ३५ भाग में के नव भाग जितनी पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम की उत्कृष्ट अठारा क्रोडाक्रोड सागरोपम की, अठारा सो वर्ष का अबाधा काल बादर नाम की जैसे त्रस नाम की कही वैसी अर्थात् एक सागर के सातीय दो भाग की पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम

काडाकाडीओ, वासियवाससताइ अबाहा जाव निसगो ॥ तसनामाए थावरनामाएय एवंचव सुहुम नामाए पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमस्स नवपणतीसइभागा पलिओवमस्स असंखेज्जइ भागण ऊणता उक्कोसेण अट्ठारस सागरोवमकोडाकोडीओ अट्ठारस्स वाससया अबाहाइ बादरनामाए जहा अपसत्थविहायागतिणामस्स पुच्छा ? पज्जत्तनामाएवि अपज्जत्तनामाए जहा सुहुमस्स, पत्तेयसरीरनामाएवि दो सत्तभागा, साहा रणसरीरनामाएवि जहा सुहुमस्स ॥ थिरनामाएण एगंसत्तभाग, अथिरनामाए दो

की उत्कृष्ट बीस न कोडाकोड सागरोपम की, दो हजार वर्ष का अबाधा काल इतनी ही पर्याप्त नाम की अपर्याप्त नाम की सूक्ष्म नाम जैसी अर्थात् एक सागरोपम के पेंतीस भाग में से नव भाग जितनी उस में पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम, उत्कृष्ट अठारा कोडाकोड सागरोपम की प्रत्येक नाम की जघन्य सात भाग में दो भाग जिस में से पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम की उत्कृष्ट बीस कोडाकोड सागर की, दो हजार वर्ष का अबाधा काल ऐसे ही साधारण नाम की जैसी सूक्ष्म नाम की कही वैसी जघन्य एक सागर के पेंतीस में नव भाग पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम की, उत्कृष्ट अठारा कोडाकोड सागर की अठारा सो वर्ष का अबाधा काल स्थिर नाम की एक सागर के सात भाग में के एक भागमें से पल्योपम के असंख्यातवे भाग कमकी उत्कृष्ट दश कोडाकोड सागरोपम की एक हजार वर्ष का अबाधा

सचभागा, सुभगनामाएएगो असुभनामाए दो, सुभगनामाएएगो, दुभगनामाए दो, सुस्सरनामाएएगो, दुस्सरनामाए दो, आदिज्जनामाएएगो, अणादिज्ज नामाए दो ॥ जसोकित्ति नामाएणं पुच्छा ? गोयमा! जहण्णेण अट्ठमुहुत्ता उक्कोसेण दससा गरोवमकोडाकोडीओ, दसवाससताइ अबाहा जाव निसेगो ॥, अजस्सेकित्ति

काल अस्थिर नाम की एक सागर के सात भाग में दो भाग में स पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम उत्कृष्ट बीस कोडाकोड सागरोपम, दो हजार वर्ष का अबाधा काल, शुभ नाम की एक सागर के सात भाग में से एक भाग पल्योपम के असंख्यातवे भाग कमी, उत्कृष्ट दश कोडाकोड सागर अबाधा काल एक हजार वर्ष का, अशुभ नाम की जघन्य एक सागर के सातीये दो भाग पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम, उत्कृष्ट बीस कोडाकोड सागर, दो हजार वर्ष का अबाधा काल, सुभग नाम की जघन्य एक सागर के सात भाग में के एक भाग की पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम उत्कृष्ट दश कोडाकोड सागर एक हजार वर्ष का अबाधा काल दुभग नाम की एक सागर के सात भाग में के दो भाग की पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम, उत्कृष्ट बीस कोडाकोड सागर दो हजार वर्ष का अबाधा काल सुस्वर नाम की एक सागर के सात भाग में से एक भाग पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम, उत्कृष्ट दश कोडाकोड

नामाए पुच्छा ? गोयमा ! जहा अपसत्थ विहायगतिनामस्स, एवं निम्माण नामाएवि, तित्थयर नामाएणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ उक्कोसेणवि अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ ॥ एवं जत्थ एगोसत्तभागो तत्थणं उक्कोसेणं दससागरोवम कोडाकोडीओ दसवाससयाइं अबाहा अबाहूणिया कम्मठिई कम्मनिसेगो, जत्थ

सागर की, एक हजार वर्ष का अबाधा काल दुःस्वर नाम की एक सागर के सात भाग में के दो भाग को पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम की, उत्कृष्ट बीस क्रोडाक्रोड सागर की, दो हजार वर्ष का अबाधा काल आदेय नाम की एक सागर के सात भाग में के एक भाग की, पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम की उत्कृष्ट दश क्रोडाक्रोड सागरोपम की, एक हजार वर्ष का अबाधा काल अनादेय नाम की एक सागर के सात भाग में के दो भाग में से पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम उत्कृष्ट बीस क्रोडाक्रोड सागरोपम, दो हजार वर्ष का अबाधा काल. यशोकीर्ति नाम की जघन्य आठ मुहूर्त की उत्कृष्ट दश क्रोडाक्रोड सागरोपमकी एक हजार वर्षका अबाधाकाल. अयश कीर्ति नामकी जैसे अप्रशस्त विहायगति नामकी अर्थात् जघन्य एक सागर के सातीये दो भाग में से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम, उत्कृष्ट बीस क्रोड क्रोड सागरोपम, दो हजार वर्ष का अबाधा काल इतनी ही निर्माण नाम की और तीर्थंकर नाम की जघन्य अंतःक्रोडाक्रोड सागरोपम की उत्कृष्ट भी अंतःक्रोडाक्रोड सागरोपम की इस प्रकार ९३ नाम कर्मकी प्रकृति

म्हो, सत्तभागा तत्थ उक्कोसेणं वीससागरोवम कोडाकोडीओ वीसयवाससयाइं अबाहा जाव निसेगो॥ १६॥ उच्चगोयस्स पुच्छा? गोयमा! जहण्णेण अट्ठमुहुत्ता उक्कोसेण दससागरोवम कोडाकोडीओ दसवाससयाइं अबाहा॥ णियागोयस्स पुच्छा? गोयमा! जहा अप्पसत्थ विहायगतिणामस्स ॥ १७ ॥ अंतराइएणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णणं

की जघन्योत्कृष्ट स्थिति मानना (मूल में जहां एक सात भाग कहा है वहां उत्कृष्ट दश क्रोडाक्रोड सागरोपम कहना और एक हजार वर्ष का अबाधा काल कहना और जहां दो सात भाग कहे वहां उत्कृष्ट वीस क्रोडाक्रोड सागर की दो हजार वर्ष का अबाधा काल मानना (जहां जितने क्रोडाक्रोड सागर की स्थिति है वहां उतने सो वर्ष का अबाधा काल मानना) इस का खुलासा गये स्थान अर्थ में कर दिया है ॥ १६ ॥ ऊंच गोत्र कर्म की जघन्य आठ मुहूर्त की उत्कृष्ट दश क्रोडाक्रोड सागर की एक हजार वर्ष का अबाधा काल नीच गोत्र की जैसे अप्रशस्त विहाय गति की अर्थात् जघन्य एक सागर के साथीये दो भाग पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम उत्कृष्ट वीस क्रोडाक्रोड सागर की दो हजार वर्ष का अबाधाकाल, ॥ १७ ॥ अन्तराय कर्म की जघन्य अन्तर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तीस क्रोडाक्रोड सागरोपम की तीन हजार वर्ष का अबाधाकाल इतने वर्षों में कर्म का उदय होवे फिर स्थितिप्रमाण कर्म भोगव कर कर्म का क्षय होवे यों सब आठों कर्म की १४८ प्रकृति के बन्ध स्थिति कही इस में से—२ एकेन्द्रिय

अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण तीसं सागरोवम कोडाकोडीओ, तिण्णिय वाससहस्साइं अबाहा, अबाहूणिया कम्मठिई कम्मणिसेगो ॥ १८ ॥ एगिंदियाणं भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधंति ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स तिण्णि सत्तभागो पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेणंऊणए उक्कोसेणं तचेव पडिपुण्णे बंधंति, एवं णिद्दापंचगस्सवि, दंसणचउक्कस्स वि ॥ एगिंदियाणं भंते ! जीवा सातावेयणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधंति ? गोयमा !

२ श्रुति ज्ञान ३ अवधिज्ञान, ४ मनःपर्यव ज्ञान, ५ चक्षु दर्शन, ६ अचक्षुदर्शन, ७ अवधि दर्शन ८ पुरुष वेद, ९-१२ संज्वल का चौक, १३-१७ पांचों अंतराय इन १७ प्रकृति का एक स्थानिया दो स्थानिया, तीन स्थानिय, चतुस्थानिय रस होता है शेष १०३ प्रकृति का अथवा १३१ प्रकृति का दो स्थानीय तीन स्थानिया चउ स्थानिया रस होता है, दृष्टान्त-जैसे अफीमादि का पानी में घोल एक सेर रस बनावे वह एक स्थानीय, उस अग्नि पर तपा कर तीन भागरखे वह दो स्थानीय अधसेर रखे वह त्रिस्थानिया और पाव रखे वह चतुस्थानीया रस जान जानना यह अशुभ प्रकृतियों का दृष्टान्त मानना और शुभ प्रकृतियों के लिए गुड के पानी का दृष्टान्त मानना ॥ १८ ॥ अब एकेन्द्रिय पर प्रकृति समुच्चय करते हैं अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय जीव ज्ञानावरणीय कर्म का बन्धन की स्थिति कितनी करते हैं? अहो गौतम ! जघन्य एक सागरोपम के सात विभाग में तीन भाग उस में पल्योपम के असंख्यात भाग कम की क्योंकि पीछे मिथ्यात्व मोहनीय

जहण्णेण सागरोवमस्स दिवड्ढसत्तभाग पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागेणंऊणय, उक्कोसेण तचेव, पडिपुण्ण बंधति, असायावेदणिज्जस्स जहा णाणावरणिज्जस्स एगिंदियाणि भंत ! जीवा सम्मत्त वेदणिज्जस्स किं बंधति ? गोयमा ! णत्थि किंचिबंधति ॥ एगिंदियाणं भंते! जीवा मिच्छत्तवेयणिज्जस्स कम्मस्स किंबंधति ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमं पलिओवमस्स असंखज्जतिभागणं ऊणय, उक्कोसेण तचेव पडिपुण्णं बंधति॥

की उत्कृष्ट स्थिति कोडाकोड सागर का पल्योपम के तीनसे सितर के भाग का हरन करते असंख्यात भाग हीन होवे इस लिये जघन्य स्थिति में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम कहना उत्कृष्ट एक सागर के सात भाग में के तीन भाग पूरे का बंध करे, ऐसे ही ५ ज्ञानावरणीय ९ दर्शनावरणी १ वेदनीय, ५ अन्तराय यों २० प्रकृति का एकेन्द्रिय आश्रिय स्थिति जानना अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय जीव साता वेदनीय कर्म की कितनी स्थिति का बंध करते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक सागरोपम के सात भाग में के ढेढ भाग जितनी उस में से भी पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम, उत्कृष्ट पूर्ण ढेढ भाग की असाता वेदनीय की ज्ञानावरणीय कर्म जैसी जानना अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय जीव सम्यक्त्व वेदनीय का कितना बंध करते हैं? अहो गौतम! किंचिन्मात्र भी बंध नहीं करते हैं क्योंकि एकेन्द्रिय को सम्यक्त्व वेदनीय कर्म नहीं है अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय जीव मिथ्या वेदनीय का किस प्रकार बंध करते हैं ? अहो

एगिंदियाणं भंते ! जीवा सम्मामिच्छत्तवेयणिज्जस्स किंबंधति ? गोयमा ! णत्थि किंचिवि बंधति ॥ एगिंदियाण भंते! कसायबारसगस्स किंबंधति ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमस्स चत्तारि सत्तभागे, पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेणऊणए उक्कोसेणं तचेव पडिपुण्णंबंधति ॥ एवं कोह संजलणाएवि, जाव लोभसंजलणाएवि ॥ इत्थिवेयस्स जहा सातावेदस्स एगिंदिय पुरिसवेदस्स कम्मस्स जहण्णेणं सागरोवमस्स एगसत्त भागं पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागेणऊणय, उक्कोसेणं तचेव पडिपुण्णं बंधति, एगिंदिया णपुंसग

गौतम ! जघन्य एक सागरोपम में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट एक सागरोपम पूर्ण अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय जीव समामिथ्यात्व वेदनीय का बंध किस प्रकार करते हैं ! अहो गौतम ! किंचित् मात्र भी नहीं बंधते अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय जीव बारे कषाय (४ अनन्तानबंधी, ४ अप्रत्याख्यानी, ४ प्रत्याख्यानावरणी) का बंध कितना करते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक सागरोपम के सात भाग में से चार भाग जिसमें पल्योपमका असंख्यातवा भाग कम, उत्कृष्ट चारभाग पूर्ण ऐसे ही संज्वलन की चारों प्रकृति का जानना ऐसे ही स्त्री वेद का बंध जैसा साता वेदनी का कहा अर्थात् जघन्य एक सागरके सात भागों में का एक भाग में से पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम, उत्कृष्ट पूरा डेढ भाग, पुरुष वेदका जघन्य एक सागर के सात भाग में का एकभाग में से पल्योपम का असंख्यातवा भागकम उत्कृष्ट पूर्ण

वेदस्स कम्मस्स पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमस्स दोसत्तभागे पलिओवमस्स असंखज्जतिभागणं ऊणते, उक्कोसेणं तंचेव पडिपुण्णं बधति ॥ हासरतीए जहा पुरिस-वेदस्स, अरतिभयसोगदुगछा ? जहा नपुसगवेदस्स ॥ नेरइयाउय देवाउय, नेरयगतिनाम देवगइनामं, वेउव्वियसरीरनाम, आहारगसरीरनाम, नेरइयाणुपुव्विनाम देवाणुपुव्विनाम, तित्थिगरनाम, एताणिपदाणि ण बंधति तिरिक्खजोणियाउयस्स पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्त उक्कोसेणं पुव्वकोडीसत्तेहिं वाससहस्सेहिं,

भाग पूर्ण नपुंसक वेद का जघन्य एक सागर के सात भाग में का दो भाग में स पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम. उत्कृष्ट पूर्ण दो भाग हास्य और रति का बंध पुरुष वेद जैसा अरति भय शोग और दुगंछा का नपुंसक वेद जितना नरकायु २ देवायु, ३ नरक गति नाम, ४ देवगति नाम, ५ वैक्रय शरीर, ६ आहारक शरीर, ७ नरकानुपूर्वी ८ देवानुपूर्वी और ९ तीर्थंकर नाम इन ९ प्रकृति का बंध एकेन्द्रिय के नहीं होता है तिर्यचयोनी आयुष्य का जघन्य अंतर्मुहूर्त का उत्कृष्ट एक पूर्व क्रोड और बावीस हजार वर्ष का तीसरा भाग अधिक परभवायु बंध करे अप्काय अपेक्षा सात हजार वर्ष एक हजार वर्ष का तीसरा भाग अधिक यों आगे भी तिर्यंच की स्थिति कहना ऐसे ही मनुष्यायु का भी कहना. तिर्यंच योनिक गति नाम का नपुंसक वेद जैसा कहना मनुष्य गति नाम का भी ऐसे ही कहना.

वाससहस्सति भागेणय अभिहियबंधति, एवं मणुस्साउयस्सवि, तिरिक्खजोणियगतिना-माए जहा नपुंसगवेयस्स, मणुयागतिनामाए जहा सातावेदणिज्जस्स, एगींदियजातिनामाए पंचिंदियजातिनामाएय जहा नपुंसगवेयस्स, बेइंदिय तेइंदिय जातिनामाए जहण्णेणं सागरोवमस्स, णवपण्णतिसातिभागे पलिओवमस्स, असंखेज्जतिभागेणं ऊणग उक्कोसेणं तचव पडिपुण्णेबंधति चउरिंदियनामापवि जहण्णेणं सागरोवमस्स णवपण्णतीसतिभागे पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेणऊणगा उक्कोसेणं तचव पडिपुण्णेबंधति, एवं जत्थ

जैसा साता वेदनीय का कहा एकेन्द्रिय पंचेन्द्रिय जाति नामका नपुंसक वेद जैसा कहना बेन्द्रिय तेन्द्रिय जाति नाम का जघन्य एक सागरोपम के पैंतीस वें नव भाग पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम, उत्कृष्ट नव भाग प्रतिपूर्ण चौरिन्द्रिय नाम का जघन्य एक सागरोपम के पैंतीस भाग में के नव, भाग पंचेन्द्रिय का असंख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट नव भाग पूर्ण इस प्रकार ही जहां जघन्य सातीये दो भाग तीन भाग चार भाग, अठ्ठावीसीये सात भाग होवे वहां जघन्य वो उतनी ही पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम करना और उत्कृष्ट प्रति पूर्ण करना (पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम नहीं करना] जहां सातीया एक भाग देढ भाग वहां वैसा ही करना [पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम करना) उत्कृष्ट प्रति पूर्ण करना यशोकीर्ति ऊंच गोत्र का एक सागरोपम का सातीया एक भाग पल्योपम के असंख्यातवे

जहण्णग दोसत्तभागा, तिण्णिवा सत्तारि वासत्तभागा अट्ठावीसइभागो भवति तस्सेण जहण्णए तेचेव पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागेणं ऊणगा भाणियव्वा, उक्कोसेण तेचेव पडिपुण्णा बधंति, जत्थण जहण्णेणं एगोवा दिवड्ढोवा सत्तभागो तत्थ जहण्णेण तचेव भाणियव्व उक्कोसेणं तचेव पडिपुण्णबधति, जसोकित्ति उच्चागोयाण जहण्णेण सागरोवमस्स एग सत्तभाग, पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेणऊणय, उक्कोसेण तचेव पडिपुण्ण बधति, अतराइयस्सण भंते! पुच्छा? गोयमा! जहा णाणावरणिज्जस्स जाव उक्कोसेणं तचेव पडिपुण्णबधति ॥ १९ ॥ बेइंदियाण भंते ! जीवा णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बधति? गोयमा! जहण्णेण सागरोवम पणवीसाए तिण्णिसत्तभागा पलिओवमस्स

भाग कम उत्कृष्ट एक भाग पूर्ण अन्तराय कर्म का ज्ञानावरणीय कर्म जैसा ही कहना यावत् उत्कृष्ट पूरी भातिपूर्ण बंध करे एकेन्द्रिय के १४८ प्रकृति में से १ सम्यक्त्व मोहनीय, २ मिश्र मोहनीय, ३ नरकायु, ४ देवायु, ५ नरकगति, ६ देवगति, ७ वैक्रेय शरीर, ८ वैक्रेय अंगोपांग, ९ वैक्रेय बंधन, १० आहारक शरीर, ११ आहारक अंगो १२ आहारक बंधन १४ आहारक संघातन, १५ नरकानुपूर्वी, १६ देवानुपूर्वी, और १७ तीर्थंकरनाम इन १७ प्रकृति का बंध एकेन्द्रिय के नहीं होता है, बाकी १३१ प्रकृति का बंध होता है ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय के जीव के ज्ञानावरणीय कर्मकी कितनी प्रकृति का कितना स्थिति बंध होता है ?

असंखेज्जति भागऊणता, उक्कोसेणं तंचेव पडिपुण्णे बंधति ॥ एवं णिद्दापंचगस्सवि, एवं जहा एगिंदियाण भणिय तहा बेइंदियाणवि भाणियव्व, णवरं सागरोवम पणवीसाए सह भाणियव्वा, पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेण ऊणय, सेस तंचेव, जत्थ एगिंदिया ण बंधंति तत्थ एतेवि ण बंधति॥बेइंदियाण भंते! जीवे मिच्छत्त वेदणिज्जस्स किं बंधति ? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवम पण्णवीस पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेण ऊणता, उक्कोसेणं तंचेव पडिपुण्णे बंधति ॥तिरि-क्खजोणियपाउयस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कोसेण पुव्वकोडी, चउहिं

कहो गोतम! जघन्य पचीस सागरोपमका सातभाग करे उस में के तीनभाग उस में से पल्योपमका असंख्यातवा भाग कम, उत्कृष्ट तीन भाग पूर्ण, ऐसे ही निद्रा पंचक में भी जिस प्रकार एकेन्द्रिय की स्थिति कही वैसे ही बेइन्द्रिय की भी जानना जिस में इतना विशेष पचीस सागरोपम के सात भाग करना उस में पल्योपम का असंख्यात वा भाग कम करना, शेष एकेन्द्रिय जैसे जानना यह भी एकेन्द्रिय में कही हुई १७ प्रकृति का बंध नहीं करते हैं, शेष १११ प्रकृति का बंध करते हैं अहो भगवन् बेइन्द्रिय जीव मिथ्यात्व वेदनीय कर्म का बंध कितनी स्थिति का करते हैं ? अहो गोतम ! जघन्य पचीस सागरोपम के

घासेहिं अहिय बंधति एव मणुयाउयस्सवि सेस जहा एगिंदियाण जाव अंतराइ-यस्स तइंदियाणं भंत ! नाणावरणिज्जस्स किंबंधति ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवम पण्णास तिण्णिसत्तभागा पलिओवमस्स असंखेज्जति भागणं ऊणय, उक्कोसेणं तंचेव पडिपुण्णं बंधति एव जस्स जतिभागा, ते तस्स सागरोवमपण्णासाए सह भाणियव्वा ॥ २० ॥ तेइंदियाणं मिच्छत्तवेयणिज्जस्स किं बंधति? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवम पण्णासं पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेणं ऊणय, उक्कोसेण तचेव पडि-

पल्योपमका असख्यातवा भाग कम, उत्कृष्ट पूर्ण पचीस सागरोपम तिर्यच योनिक आयुष्यका जघन्य अंत मुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोडाक्रोड और चार वर्ष अधिक का बंध करे ऐसे ही मनुष्यायु का भी शेष जैसा एकेन्द्रिय का कहा वैसा कहना यावत् अन्तराय कर्म पर्यंत कहना ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! तेइन्द्रिय जीव क ज्ञानावरणीय का बंध कितना होता है ? अहो गौतम ! जघन्य पचास सागरोपम के सात भाग का एक भाग पल्योपमका असख्यातवा भाग कम, उत्कृष्ट पूरे तीन भाग यों जिस के जितने भाग कहे उन सब का सागरोपम के पचास भाग करना अठाइस क भाग अठाइस भाग करना, पैंतीस के भाग पैंतीस भाग करना परंतु सब स्थान पचास सागर क ही भाग करके कहना. तेइंद्रिय के मिथ्यात्व वेदनीय

पुण्ण भवति ॥ तिरिक्खजोणियाउयस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी, सोलसहि राइंदिएहिं रातिंदियातिभागेणय अहियभवति ॥ एव मणुस्साउयस्सवि सेस जहा बेतिंदियाणं जाव अतराइयस्स ॥ २१ ॥ चउरिंदियाण भंते ! जीवा णाणाव रणिज्जस्स कम्मस्स किं भवति ? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमस्स तिण्णिसत्त भागा, पलिओवमस्स असंखज्जति भागेणं ऊणते, उक्कोसेण तचेव पडिपुण्णे भवति ॥ एव जस्स जति भागो ते तस्स सागरोवमसतेण भाणियव्वो ॥

का बंध कितना होता है ? अहो गौतम ! जघन्य पचास सागरोपम में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट पचास सागरोपम पूर्ण तिर्यंच योनिक आयुष्य का जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व क्रोड, सोलह रात्रिदिन एक रात्रि का तीसरा भाग अधिक ऐसे मनुष्यायु भी कहना शेष जैसा बेइन्द्रिय का कहा वैसा कहना यों यावत् अन्तराय कर्म पर्यन्त कहना ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! चौरिन्द्रिय के ज्ञाना वरणीय कर्म का कितना बंध होता है ? अहो गौतम ! जघन्य एक सौ सागरोपम के सात भाग कर उस में के तीन भाग उस में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट तीन भाग पूरे यों जिस के जितनी भाग की स्थिति होवे उतने भाग कहना जघन्य बंधन में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम

तिरिक्खजोणियाउस्स जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी दोहिं मासेहिं, अहिय॥ एवं मणुस्साउयस्सवि, सेसं जहा बइंदियाणं णवरं मिच्छत्तवेदणिज्जस्स जहण्णेणं सागरोवमसयं पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेणं ऊणयं उक्कोसेणं तंचेव पडिपुण्णं बंधति सेसं जहा बइंदियाणं जाव अंतराइयस्स ॥ २२ ॥ असण्णीणं भंते ! जीवा पंचिंदिया णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बंधति ? गोयमा ! जहण्णेणं सागरोवमसहस्सं तिण्णिय सत्त भाग पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेणं ऊणयं, उक्कोसेणं तंचेव पडिपुण्णे बंधति, एवं सोचेवगमो जहा बइंदियाणं णवरं सागरोवमस्स सहस्सेणं

करना उत्कृष्ट पूर्ण उतने ही भाग करना परंतु सर्व स्थान सो सागरोपम के हो ७-२८ ३५ जितने भाग का उतने करना तिर्यंच योनिक आयुष्य का जघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व कोटी दो महिने अधिक ऐसे ही मनुष्यायु का भी कहना शेष कथन बेइन्द्रिय जैसा कहना, जिस में इतना विशेष मिथ्यात्व वेदनिय का जघन्य सो सागरोपम पल्योपम के असंख्यातवे भाग कम उत्कृष्ट पूरे सो सागरोपम शेष जैसा बेइन्द्रिय का कहा वैसा कहना यों यावत् अन्तराय कर्म पर्यन्त कहना ॥ २२ ॥ अहो भगवन् ! असंज्ञी पंचेन्द्रिय जीव ज्ञानावरणीय कर्म का बंध कितना करते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य एक हजार

सम भाणियव्वो जस्स जाति, आगाचि मिच्छत्तवेयणिज्जस्स जहण्णेणं सागरोवम् सहस्स पलिओवमस्स असंखेज्जति भागेण ऊणय, उक्कोसेण तंचेव पडिपुण्णं॥ णेरइया उयस्स जहण्णेण दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्त मब्भहियाइं, उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जति भाग पुव्वकोडीत्ति भाग मब्भहिय बंधति, एवं तिरिक्खजोणियाउयस्सवि, णवर जहण्णेण अंतोमुहुत्तं एव मणुस्साउयस्सवि, देवाउयस्स जहा णेरइयाउयस्स ॥ असण्णीण भंते ! जीवा णिरयगतिणामाए कम्मस्स किंबधति ? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमसहस्स दोसत्तभाग पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागेण

सागरोपम के सात भाग करे उस में के तीन भाग उस में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम, उत्कृष्ट तीन भाग प्रतिपूर्ण इस प्रकार जिस के जितने भाग होवे उतने कहना परन्तु एक हजार सागरोपम के ७—२८—३५ भाग कहना जघन्य में पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम कहना पूरा भाग कहना मिथ्यात्व वेदनीय का जघन्य एक हजार सागरोपम में पल्योपमका असंख्यातवा भाग कम, उत्कृष्ट पूरा हजार सागरोपम नरकायु का जघन्य दशहजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त अधिक, उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवा भाग पूर्व कोडी का तीसरा भाग अधिक, ऐसे ही तिर्यंच योनिक का भी कहना,

उक्कोसेण दो पडिपुण्णे, सम्मत्तसम्मामिच्छत्तओ० णिजस्स जहण्णेणं सागरोवमं तचेव पडिपुण्ण॥ णेरइया णामाए, ण किंचि बधति अवसेस जहा बेइंदियाण, जस्स मिणो पलिओवमस्स सागरोवमसहस्सेण सह भाणियव्वा सव्वेसिं अणुपुव्वीए जाव अंत० णियाउयस्सवि, सण्णीण भते ! जीवा पंचिंदिया णाणावरणिज्जस्स कम्मस्स किं बधति जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तीसंसागरोवम कोडाकोडीओ, तिण्णिवाससहस्स ॥ अबाहा जाव निसेगा ॥ सण्णीण भते ! पंचिंदिया णिद्दापंचगस्स किं बधति ? गोयमा !

एक हजार सागरोपम के सात भाग में के दो भाग पल्योपम का असंख्यातवा भाग कम, उत्कृष्ट दो भाग प्र ण पूर्ण सम्यक्त्व वदनी सम्यग्मिथ्यात्व वदनी आहारक शरीर तीर्थंकर नाम इन प्रकृति का बंध नहीं होता है शेष बेन्द्रिय के जैसा ही कहना जिस में इतना विशेष जिस के जितने भाग की स्थिति होवे उस के उतने भाग एक हजार सागरोपम के कहना, सब अनुक्रम से कहना यावत् अन्तराय कर्म का कहना ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! संज्ञी पंचेन्द्रिय ज्ञानावरणीय कर्म की कितनी स्थिति का बन्ध करता है ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तीस कोडाकोडी सागरोपम का तीन हजार वर्ष का अबाधाकाल. अहो भगवन् ! संज्ञी पंचेन्द्रिय निद्रा पंचक का कितनी स्थिति का बंध करता है ? अहो

जहण्णेण अंतोसागरोवम कोडा॰
तिण्णियवासमसहस्साइ अबाहा, दस॰
णिज्जरस्स जहा आहिया ठिती भाणिया तहेव
मपराइयवधयच अमायावयणिज्जस्स जहा नि॰
सम्मामिच्छत्तवेदणिज्जस्सय जहा ओहिया ठिती भणिया तवच ।पज्जस्स
जहण्णणं अंतोसागरोवमकोडाकोडीओ, उक्कोसेण सत्तरिसागराव डाकोडीओ,
सत्तवासससहस्सातिं अबाहा, जाव निसगा ॥ कसाय बादरगस्स जहण्णेणं एवमेव,

गौतम ! जघन्य अंतो सागरोपम कोडाकोडी उत्कृष्ट तीस सागरोपम कोडाकोडी तीन हजार वर्ष की अबाधाकाल दर्शन मोह का ज्ञानावरणीय जैसा कहना साता वेदनीय का औधिक जैसा कहना, फिर आठ क्रिया आश्रित दो समयकी साम्परायिक बंध आश्रय असाता वेदनीयकी जैसी निद्रापंचक, फिर सी वेद सम्यक्त्व वेदनीय की मिथ्या वेदनीय की जैसा औधिक की कही वैसी कहना मिश्र, शोक, दुगंछा, इन जघन्य अन्त कोडाकोडी सागरोपम की उत्कृष्ट सित्तर कोडाकोडी सागरोपम की,, पुरुष वेद के कारण अबाधाकाल चार कषाय की जघन्य इतनी उत्कृष्ट चालीस कोडाकोड सागरोपम संज्वल के क्रोध को सर्वत्त

उक्कोसेणं चत्तालीसं सागरोवम कोडाकोडीओ चत्तालीसवास सयाइं, गणिजस्स जहण्णेणं सागरोवम तचेव पडिपुण्णं॥ णरइया

कोह माण माया लोभ संजलणाए दोमासा मासो अद्धमासो अंतोमुहुत्तो, सेसाणं पलिओवमस्स

सेसं पुणजहा कसायबारसगस्स ॥ चउण्हवि आउयाणं जाइ ओहिया ठिती पियाउयस्सवि,

बंधति ॥ आहारगसरीरस्स तित्थगरणामाएय जहण्णेण अंतोसागरोवमकोडाको।

उक्कोसणवि अंतोसागरोवम कोडाकोडी बंधति ॥ पुरिसवेदस्स जहण्णेणं अट्ठ स्स ॥

संवच्छराति उक्कोसेणं दससागरोवम कोडाकोडीतो दसवाससयाणि अबाहा,

जसोकित्ति णामाए उच्चागोतस्स एवं चेव, णवरं जहण्णेणं अट्ठ मुहुत्ता॥ अंतराइयस्स

भवाधाकाल संज्वल के क्रोध की दो महिने की मान की एक मास की माया की पनेर दिन की लोभ की अंतर्मुहूर्त की और उत्कृष्ट जैसी बारे कषाय की कही वैसी चारों प्रकार के आयुष्य की जैसी औधिक की कही वैसी, आहारक शरीर और तीर्थंकर नाम की जघन्य उत्कृष्ट अन्तः क्रोडाक्रोडी सागरोपम की, पुरुष वेद की जघन्य आठ वर्ष की उत्कृष्ट दश क्रोडाक्रोडी सागरोपम की, एक हजार वर्ष का अबाधा, काल यशोकीर्ति नाम की उच्च गोत्र की इतनी ही कहना जिस में इतना विशेष जघन्य आठ मुहूर्त की अन्तराय कर्म की जैसी ज्ञानावरणिय की, शेष सर्व संघयन संस्थान पांच वर्ण दो गंध की जघन्य

संधए, तव्वतिरित्ते अजहण्णे एवं एतेणं अभिलावेणं मोहाउ... तचत्र पाढपुण्णा॥ ...२५॥

माणियव्व ॥ मोहणिज्जस्सणं भंते ! कम्मस्स जहण्णठिती बंधत... ...रेसेणं पलिओवमस्स

अण्णयर बायरसंपराते उवसामएवा खवएवा एसणं गोयमा ! ...णियाउयस्सवि, को...

कम्मस्स जहण्णट्ठिति बंधति, तव्वइरित्ते अजहण्णेणं ॥ आउयस्सणं ... ...स्स ॥

कम्मस्स जहण्णट्ठिती बंधते के? गोयमा! जेणं जीवे असंखेप्पं अद्धापविट्ठे, सव्वे

श्रेणि का कहते हैं—प्रथम अनन्तानुबंधी कषाय का चौक और दर्शनमोहनीय इन सात प्रकृति का उपशम चौथे गुणस्थान से आठवे गुणस्थान पर्यन्त मानना फिर नवमे अनिवृत्ति बादर गुणस्थान में पहिले की सात प्रकृति से लगाकर इकीस प्रकृति तक उपशमावे, वह कहते हैं प्रथम उक्त ७ प्रकृति उपशमावे फिर नपुंसक वेद उपशमावे ९ फिर स्त्री वेद उपशमावे फिर १०-१६ हास्य रति अरति भय शोक दुगंछा इन ७ प्रकृति को उपशमावे; १६ फिर पुरुष वेद उपशमावे, १७-१८ फिर प्रत्याख्यानी, अप्रत्याख्यानी क्रोध उपशमावे, १९ फिर संज्वल का क्रोध उपशमावे, २० २१ फिर प्रत्याख्यानी अप्रत्याख्यानी मान उपशमावे. २२ फिर संज्वलका मान उपशमावे २३-२४ फिर प्रत्याख्यानी अप्रत्याख्यानी माया उपशमावे २५ फिर संज्वल की माया उपशमावे, २८ प्रकृति नवम गुनस्थान तक उपशमावे, ३६ २७ फिर प्रत्याख्यानी अप्रत्याख्यानी लोभ उपशमावे दशवे सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान में इन २७ प्रकृति

निरुद्धसे आउते ससे सव्वमहतीए, आउयबंधद्धाए, तीसेणं आउय बंधद्धाए चरम कालसमयंसि सव्वजहण्णियं ठिइं, अपज्जत्तापज्जत्तीए निव्वत्तेइ ? गोयमा ! आउय

का उपशम होवे, फिर इग्यारवे गुनस्थान में भप्रत्याख्यान का प्रत्याख्यान उपशमावे तब सब २८ मोहनिय कर्म की प्रकृति उपशमावे इस में उपशम आणी गत नवम (गुणस्थानवाला चार संज्वल की कषाय और पुरुष वेद इन पांच प्रकृति का जघन्य स्थिति का बंध करे। अब क्षपक श्रेणि का स्वरूप कहते हैं—अनंतानु बन्धी चौक और तीन मोहनीय यह सात प्रकृति चौथे पांचवे छठे सातवे आठवे गुणस्थान तक क्षय करे, अनिवृत्ति बादर गुणस्थान के १ थिणद्धि, २ निद्रानिद्रा, ३ प्रचलाप्रचला ४ नरकगति, ५ नरकानुपूर्वी, ६ तिर्यंच गति, ७ तिर्यंचानुपूर्वी, ८ बेइन्द्रिय, ९ तेइन्द्रिय, १० चौरिन्द्रिय, ११ स्थावर नाम, १२ आताप नाम, १३ उद्योत नाम, १४ सूक्ष्म नाम, १५ एकेन्द्रिय जाति और १६ साधारण नाम, यह १६ प्रकृति अनि वृत्ति बादर गुणस्थान का असंख्यातवा भाग रहे तब क्षय करे, सब २३ प्रकृति हुई और फिर आठ कषाय अप्रत्याख्यानी प्रत्याख्यानी चौक एवं ३१, फिर ३२ नपुंसक वेद क्षय कर, ३३ फिर स्त्री वेद क्षय करे, [यह नवमे गुणस्थान के अन्तिम समय में] फिर हास्य, रति, अरति, भय, शोक, दुगंछा, इन ६ नो कषाय का क्षय कर, सब ३९ हुई, फिर ४० पुरुष वेद का क्षय करे, ४१ पुरुष वेद के कारण विशेष करके संज्वल के क्रोध को दूसरा गुणस्थान में प्रवेश कर विशेष करके संज्वल के क्रोध को सर्वथा

कम्मस्स जहण्णाठितीयचस्से तस्सइरिते, अजहण्णे उक्कोसकाळ ठितीयाठएण भते! णाणावर
णिज्जं कम्म कि णेरइओ बधति तिरिक्खजोणिओ बधति तिरिक्खजोणिणी बधति, मणुस्सो

के पान में प्रक्षेप, फिर करण विशेष कर अप्रत्याख्यान के पान को संज्वल की माया में प्रक्षेपे फिर करण विशेष कर संज्वल की माया का लोभ के क्षोभ में प्रक्षेप फिर बाकी रहे सूक्ष्म लोभ को क्षयातादि करके तीनों का क्षय करे, इतना दशवे गुणस्थान में किये बाद क्षीण कषायी होवे, बारवे गुणस्थान बाद फिर क्षीण कषाय के अन्तिम समय में, निद्रा और प्रचला का क्षय करे, सब ४९ छद्मस्थ अवस्था में क्षय करे. फिर ५ ज्ञानावरणीय ९ दर्शनावरणीय और ५ अन्तराय इन १४ प्रकृति का छद्मस्थताके अन्तिम समयमें साथ ही क्षय करे, सब ६० हुई फिर तेरवे गुणस्थान में देवगति के सहचारीमि—१ वैक्रय शरीर, २ आहारक शरीर, ३ ४ दोनों के बन्धन, ५ ६ दोनों के संघातन, ७ ८ दोनों के अंगोपांग, ९ देवगति, १० देवानुपूर्वी, यह प्रकृति क्षय करे, फिर औदारिक तेजस कार्माण यह तीन शरीर, इन तीनों का इन तीनों के संघातन, एव ९ २ औदारिक अंगोपांग, १ संस्थान ६ संघयन, ४ वर्ण, १ मनुष्यानुपूर्वी पराघात नाम, २ उपघात नाम, १ अगुरुलघु नाम, २ गति एव १२, १ प्रत्येक नाम, २ पर्याप्त नाम, ३ उश्वास नाम ४ स्थिर नाम, ५ अस्थिर नाम, ६ शुभनाम ७ अशुभ नाम, ८ सुस्वर नाम, ९, दुस्वर नाम, १० सौभाग्य नाम ११ दौर्भाग्य नाम, १२ अनादेय नाम, १३ अपयशोकीर्ति नाम, १४ निर्माण नाम-

बधेसि मणुस्सीबधंति,देवाबधंति देवी बधंति ? गोयमा! णेरइयेवि बंधति जाव देवीवि

एवं सब ४५ प्रकृति नाम कर्म की और और गोत्र कर्म की एक यों ४७ प्रकृति तेरवे गुणस्थान के अंतिम समय में क्षय करे यथाता साता दोनों प्रकार की वेदनी का चरम समय क्षय होय १ मनुष्य की गति २ पंचेन्द्रिय की जाति, ३ मनुष्यायु, ४ मनुष्यानुपूर्वी, ५ त्रसपना, ६ बादरपना, ७ पर्याप्त पना, ८ सुभग ९ आदेय, १० यशकीर्ति और ११ तीर्थंकर नाम १२ असातावेदनी तथा सातावेदनी दोनों में की एक १३ ऊंचगोत्र यह १४ चउदवे गुनस्थान के अंतिम समय क्षयकर, समुच्चय ७ प्रकृति आठवे गुनस्थान में क्षय कर, ३६ प्रकृति नव वे गुणस्थान में क्षय करे, ११ प्रकृति दशवे गुणस्थान में क्षय कर १६ प्रकृति १२ वे गुणस्थान में क्षय करे, ४७ तेरवे गुणस्थान में क्षय करे, और १३प्रकृति चौदवे गुणस्थान में क्षय कर, यों १४० प्रकृति का क्षयकर फिर मोक्ष पावे उस क्षय की श्रेणि कहना इस प्रकार अहो गौतम ! मोहनीय कर्म की जघन्य स्थितिबन्ध नववे गुणस्थान वाले क्षपक श्रेणि के धारक को जानना दशवे गुनस्थान में प्रदेश बंध भोग उस से जघन्य सात गुनस्थान में उत्कृष्ट स्थिति विना जघन्य २ ३ ५ ६-७-८ गुनस्थान में मध्यम स्थिति बंध करे अहो भगवन् ! आयुष्य कर्म का जघन्य स्थिति बंध कौन करता है ? अहो गौतम ! जो जीव असंक्षेप काल में अपेक्षाकृपा वह पर्याप्त असंक्षेप,काल तीसरे भागादि के प्रकार के काल को संक्षेप कर न सके उस काल में सर्व आयुष्य भोगवे पाछा काल का जघन्य आयुष्य बंधे शेष बहुत काल बाकी रहे सर्व काल सर्व प्रकार उत्कृष्ट २ बंधा भा

भवति। केरिसएण नरइए उक्कोस कालट्ठितीय णाणावराणिज्ज कम्म बंधति गोयमा ! सण्णी

कर्ष करे वह आठ अकर्पना करके सर्वोत्कृष्ट आयुर्बंध करे वह आयुबन्ध करे वह बन्ध करना अवक्क यों सर्वथा प्रकार जघन्य आयुष्य अपर्याप्त में ऐसा आयुष्य न करे, यहां चरम काल वह एक आकर्षना समान चरमसमय काल ग्रहण से किस प्रकार स्तोक काल आयुष्य का बंध समझे क्योंकि जघन्य स्थिति वह लघु स्थिति जानना अपर्याप्त जीव उत्कृष्ट आयुष्य निश्माने असमर्थ क्योंकि आहार पर्याय, शरीर पर्याय इन्द्रिय पर्याय निष्पन्न कर वह हीन काम निष्पन्न करने समर्थ है सर्व से हीन भरमव का आयुर्बंध करके मरे-वह औदारिक वैक्रय आहारक शरीर के योग्य वर्तते हुवे आयुबन्ध करे, परंतु तेजस कार्मन औदार कादि का मिश्र इन तीनमें जो बन्ध करे वो जघन्य स्थिति बंध के स्वामी बताते हैं ५ ज्ञानावरणीयकी, ४ दर्शनावरणीय, १ सातावेदनीय[संपरायिक, १ यशनाम १ ऊंचगोत्र, यों १, अंतराय ५ यों १७ प्रकृति सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान में उपशम श्रेणिगत जघन्य स्थिति का बंध कर, और क्षपक श्रेणि का धनी करे तो मृत्यु पावे, और जो आहारकादिक तथा तीर्थंकर नाम इन तीन के जघन्य स्थिति पंच आठवे गुणस्थान में कर, और मोहनीय कर्म की २९ प्रकृति है उस में संज्वल का चौक और पुरुषवेद इन पांच प्रकृति का जघन्य स्थिति बन्ध नववे गुणस्थान का धनी उपशम श्रेणि में चढा हुवा कर और क्षपक श्रेणि में चढा हुवा यह पांच मोहनीय की प्रकृति बंध तो दशवे गुणस्थान में चढकर काल करे और एक संज्वल के लाभ का बंध करे वह दशवे गुणस्थान में अंतिम समय क्षय करे यह २५ हुए अब

पंचिंदिए सव्वाहिं पज्जत्तीहिं पज्जत्ते सागारेजागरसुत्ते वउत्ते मिच्छादिट्ठी कण्हलेस्से ठक्को

नैरुप षटक (नमाद्रिक, २ वैक्रयद्विक, २ वैद्द्विक) का मघन्य स्थिति बंध असज्ञी तिर्यंच पचन्द्रिय पर्याप्त करे, सब ११ हुई आयुष्य की ४ प्रकृति जघन्य स्थिति बंध संज्ञी असज्ञी दोनों के होवे सर्व १५ हुई, ९ निद्रा, १ असाता वदनी १२ कषाय १ हास्य, १ रति १ अरति १ भय, १ शोक, १ दुगछा, १ स्त्री वेद १ पुरुष वद, १ नपुंसक वद, १ मिथ्यात्व मोहनीय यों २५ मोहनीय की प्रकृति का सर्व ७३ तथा २ नीच गोत्र, एवं ३८ और ५७ प्रकृति तीर्थंकर नाम कर्म की यों ८५ प्रकृति का जघन्य स्थिति बंध बादर एकेन्द्रिय का पर्याप्त कर, सर्व १२० हुई १८ प्रकृति भी इसी में मिलाइ है, मघन्य स्थिति बंध उस उपरांत मध्यम स्थिति बंध कर अब उत्कृष्ट स्थिति बंध की पृच्छा करते हैं, अहो भगवन! ज्ञानावरणीय कर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध नेरीय करते हैं कि तिर्यंच करते हैं कि तिर्यंचणी करती है, कि मनुष्य करते हैं, कि मनुष्यनी करती है कि देवता करते हैं कि देवी करती है? अहो गौतम! उक्त सब ही करते हैं अहो भगवन्! नरीय ज्ञानावरणीय कर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध कितना करते हैं? अहो गौतम! सब संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त से प्राप्त हुआ ज्ञान के उपयोग युक्त संप्रत तथा द्रव्य निद्राकर सूता हुआ तथा अज्ञान सूत्राभिलापी ज्ञान के उपयोग युक्त मिथ्यात्व दृष्टी कृष्ण लेशी उत्कृष्ट संक्लिष्ट परिणामी तथा ईषत् मध्यम परिणामी इस प्रकार का, अहो गौतम! नेरीया उत्कृष्ट ज्ञानावरणीय की स्थिति का बंध करता है अहो भगवन्! किस प्रकार का तिर्यंच योनिक ज्ञानावरणीय कर्म का उत्कृष्ट स्थिति बंध करता है?

॥ चतुर्विंशतितम कर्मस्थितिपदम् ॥

कतिणं भंते ! कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठकम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ तंजहा णाणावरणिज्ज जाव अंतराय एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ॥ १ ॥ जीवेणं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं बंधमाणे कतिकम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा ! सत्तविहबंधए वा अट्ठविहबंधए वा छव्विहबंधए वा ॥ २ ॥ णेरइएणं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं बंधमाणे कतिकम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा !

अब चौबीसवे पद में कर्मों की स्थिति कहते हैं अहो भगवन् ! कितनी कर्म प्रकृति कही है ? अहो गौतम ! कर्म की प्रकृति आठ कही है उन के नाम—१ ज्ञानावरणीय कर्म यावत् अन्तराय कर्म इस प्रकार आठों कर्म यावत् वैमानिक पर्यन्त पाते हैं ॥ १ ॥ अब एक जीव आश्रिय प्रश्न अहो भगवन् ! जीव ज्ञानावरणीय कर्म का बंध करता हुवा कितनी कर्म प्रकृति का बंध करता है ? अहो गौतम ! सब ही आयुष्य कर्म छोड सातों कर्म की प्रकृति का बंध निरंतर करता है आयुष्य कर्म बांधते वक्त आठ कर्म का बंध करते हैं कितने आयुष्य और मोहनीय कर्म छोडकर छ कर्म का भी बंध करते हैं, दशवे गुणस्थानवाले, कितने एक वेदनीय कर्म का बंध करते हैं वीतरागी ॥ २ ॥ अब चौबीस दंडक आश्रिय कहते हैं अहो भगवन् ! नेरीये ज्ञानावरणीय कर्म का बंध करते हुवे कितनी

सत्तविहबंधएवा अट्ठविह बंधएवा एवं जाव वेमाणिए, णवर मणूसे जहा जीवे ॥ २॥ जीवाण भंते ! णाणावरणिज्ज कम्मं बंधमाणा कति कम्मप्पगडीओ बंधति ? गोयमा ! सव्वेवितात्र होज्जा सत्तविहबंधगाय अट्ठविह बंधगाय, २ अहवा सत्तविह बंधगाय अट्ठविह बंधगेय ३ अहवासत्तविहबंधगाय छव्विह बंधगेय ४ अहवा सत्तविह बंधगाय, छव्विह बंधगाय ॥ णेरइयाण भंते ! णाणावरणिज्ज कम्मं बंधमाणा कतिकम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्जा, सत्तविहबंधगाय अहवा सत्तविह बंधगाय

कर्म प्रकृति का बंध करते हैं ? अहो गौतम ! आयुष्य नहीं बंधे तब सात कर्म प्रकृति का बंध करते हैं, आयुष्य बंधे तब आठ कर्म प्रकृति का बंध करते हैं ऐसे ही यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना जिस में इतना विशेष मनुष्य का जैसे समुच्चय जीव का कहा वैसे कहना ॥ २ ॥ अब बहुत जीव आश्रिय कहते हैं अहो भगवन्! बहुत जीव ज्ञानावरणीय कर्म का बंध करते हुवे कितने कर्म का बंध करते हैं ? अहो गौतम! सबही वैसे होवे आयुष्य बिना सात कर्म के बंधनवाले बहुत, आयुष्य युक्त आठ कर्म के बंधने वाले बहुत २ अथवा सात बंधनवाले बहुत, आठ भी बंधनेवाले एक सात बंधन वाले बहुत, छ बंधनेवाले बहुत, ४ अथवा सात बंधनेवाले बहुत, छ बंधनवाले भी बहुत अहो भगवन्! बहुत नेरीये ज्ञानावरणीय कर्म का बंध करते हुए कितनी कर्म प्रकृति का बंध करते हैं ? अहो गौतम ! सब वैसे ही होवे

अट्ठविह बंधगेय, अहवा सत्तविह बंधगाय अट्ठविह बंधगाय तिण्हिभंगा ॥ एवं जाव थणिय कुमारा ॥ पुढवि काइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! सत्तवि बंधगावि अट्ठविह बंधगावि एवं जाव वणस्सइकाइया ॥ विगलिंदियाण पंचिंदियातिरिक्ख जोणियाण तियभंगो, सव्वेवि तावहोज्जा सत्तविह बंधगाय अहवा सत्तविह बंधगाय अट्ठविह बंधगेय अहवा सत्तविह बंधगाय, अट्ठविह बंधगाय ॥ मणुस्साण भंते ! णाणावर णिज्जस्स पुच्छा ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्जा सत्तविह बंधगाय, २ अहवा सत्त-

सात कर्म के बंधनेवाले अथवा सात कर्म बंधनवाले बहुत और आठ कर्म बंधनेवाला एक, ३ अथवा सातभी बंधनवाले बहुत और आठ भी बंधनेवाले बहुत यह तीन भांगे पाते हैं, ऐसे ही तीन भांगे असुरकुमार से यावत् स्तनित कुमार तक पाते हैं पृथ्वी काया की पृच्छा ? अहो गौतम ! सात कर्म के बंधनेवाले भी बहुत मिलते हैं और आठ कर्म के बन्धक भी बहुत मिलते हैं यों पांचों स्थावर में एक ही भांगा पाता है विकलेन्द्रिय में और पंचेन्द्रिय तिर्यंच में नरक के जैसे तीनों भांगे पाते हैं यथा—१ सात कर्म के बंधनेवाले बहुत, २ अथवा सात के बंधनेवाले बहुत आठ के बंधने वाला एक, ३ अथवा सात के भी बंधने वाले भी बहुत और आठ के बंधने वाले भी बहुत ॥ अब मनुष्य में ९ भांगे पाते हैं ॥ अहो भगवन् ! बहुत मनुष्यों ज्ञानावरणीय कर्म का बंध

विह बंधगाय अट्ठविह बंधगाय २, अहवा सत्तविह बंधगाय, अट्ठविह बंधगाय ३, अहवा सत्तविह बंधगाय छव्विह बंधगाय ४, अहवा सत्तविह बंधगाय छव्विह बंधगाय ५ अहवा सत्तविह बंधगाय, अट्ठविह बंधगेय, छव्विह बंधगेय, ६, अहवा सत्तविह बंधगाय अट्ठविह बंधगेय छव्विह बंधगाय ७, अहवा सत्तविह बंधगाय, अट्ठविह बंधगाय, छव्विह बंधगेय, ८ अहवा सत्तविह बंधगाय, अट्ठविह बंधगाय, छव्विह बंधगाय एव एते णव भगा, सेसा वाणमंतराइया जाव वेमाणिया जहा

करते हुवे कितने कर्म का बंध करते हैं ? अहो गौतम ! सब भी वैसे ही आयुबिना सात कर्म के बंधक बहुत मिलते हैं २ अथवा सात के बंधनेवाले एक हैं आठका बंधने वाला एक है, ३ अथवा सातके बंधनेवाले बहुत आठ के बंधनेवाले बहुत ४ अथवा सात के बंधनेवाले भी बहुत हैं, छका बंधनेवाला एक है ५ अथवा सात के बंधनेवाले भी बहुत हैं और छके बंधनेवाले भी बहुत हैं, ६ अथवा सातके बंधने वाले बहुत हैं आठके बंधने वाला एक है छका बंधन वाला एक है, ७ अथवा सातके बंधनेवाले बहुत हैं, आठका बंधनेवाला एक है, छ के बंधनेवाले बहुत हैं ८ अथवा सातके बंधनेवाले बहुत आठके बंधनेवाले बहुत छ के बंधनेवाला एक ९ सातके बंधने वाले बहुत हैं आठके बंधनेवाले भी बहुत हैं, छ के बंधनेवाले भी बहुत हैं यह नव भांगे पाते हैं शेष रहे जो वाण

भाग के बंधक बहुत

१	सात	आठ	
२	१	१	
३	१	१	
	सात	छ	
४	१	१	
५	१	१	
	सात	आठ	छ
६	१	१	१
७	१	१	१
८	१	१	१
९	१	१	१

यह मनुष्य का भांग

णेरइया, सत्तविहाणि बधया भाणिया तहा भाणियव्वा ॥ ४ ॥ एव जाव णाणावरण बधमाणा जहिं भणिया दसणा वरणपि बधमाणा ताहिं जीवादीया एगत्तपोहत्तेहिं भाणियव्वा ॥ ५ ॥ वेयणिज्ज बधमाणे जीवे कतिकम्मपगडी बधति ? गोयमा ! सत्तविह बधएवा अट्ठविह बधएवा छव्विह बधएवा, एगविह बधएवा ॥ एव मणूसेवि सेसा नारगादिया सत्तविह बधगा अट्ठविह बंधगा, जाव वेमाणिए ॥ जीवाण भते !

व्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक इन का जैसा नेरीये का कहा वैसा कहना ॥ ४ ॥ यों जिस प्रकार ज्ञानावरणीय कर्म बंध के भांगे कहे वैसे ही दर्शनावरणीय कर्म बंध के भी एक जीव की अपेक्षा भी कहना और बहुत जीव की आश्रिय भी कहना ॥ ५ ॥ अब वेदनीय कर्म के कहते हैं—अहो भगवन् ! जीव वेदनीय कर्म का बंध करता हुवा कितनी कर्म प्रकृति का बंध करता है ? अहो गौतम ! सात कर्मका भी बंध करता है आठ का भी बंध करता है, छ का भी बंध करता है और एक का भी बंध करता है यह जैसे समुच्चय जीव का कहा वैसे मनुष्य का भी कहना शेष नरकादि जीव के सात का, कर्म और आठ कर्म का बंध कहना यावत् वैमानिक पर्यन्त, बहुत जीव आश्रिय—अहो भगवन् ! बहुत

वेयणिज्जं कम्मं बंधमाणा कतिकम्म पगडीओ बंधइ? गोयमा! सव्वेवि ताव होज्जा सत्तविह बंधगाय अट्ठविह बंधगाय एगविह बंधगाय छव्विह बंधगाय, अहवा सत्तविह बंधगाय अट्ठविह बंधगाय, एगविह बंधगाय, छव्विह बंधएय, अहवा सत्तविह बंधगाय, अट्ठविह बंधगाय एगविह बंधगाय छव्विह बंधगाय ॥ अवसेसा नरगादिया जाव वेमाणिया जाहिं णाणावरण बंधमाणा बंधति ताहिं भाणियव्वा णवरं मणुस्साणं भंते ! वेदणिज्जं कम्मं बंधमाणा कतिकम्मपगडीओ बंधति ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्जा १ सत्तविह बंधगाय एगविह बंधगाय २ अहवा सत्तविह बंधगाय एगविह बंधगाय अट्ठविह बंधगेय, ३ अहवा सत्तविह

जीवों वेदनीय कर्म का बंध करते हुए कितनी कर्म प्रकृति का बंध करते हैं? अहो गौतम! सब वैसे ही १ सात कर्म के बंधक बहुत, आठ कर्म के बंधक बहुत, एक कर्म के बंधक बहुत २ अथवा सात के बंधक बहुत आठ के बंधक बहुत एक के बंधक भी बहुत, छ का बंधक एक, ३ अथवा सात के बंधक बहुत, आठ के बहुत, एक के बंधक बहुत, छ के बंधक बहुत, अपर शेष नरक जैसे यावत् वैमानिक पर्यन्त जैसे ज्ञानावरणीय के बंधक का कहा वैसा कहना जिस में इतना विशेष मनुष्य वेदनीय कर्म का बंध करता हुआ—१ सब सात के बंध करनेवाले बहुत, एक का बंध करनेवाले भी बहुत. २ अथवा सात के बंध

बधगाय एगविह बधगाय, अट्ठविह बधगाय ४ अहवा सत्तविह बधगाय, एगविह बधगाय, छव्विह बधगाय ५ अहवा सत्तविह बधगाय एगविह बधगाय छव्विह बधगाय, ६ अहवा सत्तविह बधगाय, एगविह बधगाय, अट्ठविह बधएय छव्विह बधएय ७ अहवा सतविह बधगाय, एगविह बधगाय अट्ठविह बधएय छव्विह बधगाय ८ अहवा सत्तविह बधगाय एगविह बधगाय अट्ठविह बधगाय छव्विह बधगाय, ९ अहवा सत्तविह बधगाय, एगविह बधगाय, अट्ठविह बधगाय छव्विह बधगाय एए नव भंगा भाणियव्वा ॥ ६ ॥ मोहणिज्ज कम्म बधमाण जीवे कति पुच्छा ? गोयमा ! जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो जीवेगिंदिया सत्तविहबधगावि, अट्ठवि-

करनेवाले बहुत, एक का बंध करनेवाले भी बहुत, आठ का बंध करनेवाला एक, ३ अथवा सात के बंधक बहुत, एक के बंधक बहुत, आठ के बंधक भी बहुत, अथवा सात के बंधक बहुत, एक के बंधक बहुत, छ का बंधक एक ५ अथवा सात के बंधक बहुत, एक का बंधक बहुत, छ के बंधक बहुत, ६ अथवा सात के बंधक बहुत, एक के बंधक बहुत, आठ के बंधक एक छ का बंधक एक, ७ अथवा सात के बंधक बहुत, एक के बंधक बहुत, आठ का बंधक एक छ के बंधक बहुत, ८ अथवा सात के बंधक बहुत एक के बंधक बहुत, आठ के बंधक बहुत, छ का बंधक एक, ९ अथवा सात के बंधक बहुत, एक के बंधक बहुत, आठ के बंधक भी बहुत और छ के भी बंधक बहुत यों नव भांग करना ॥ ६ ॥ अहो भग-

इमंधगावि ॥ जीवेण भंते! आउय कम्म बधमाणे पुच्छा ? गोयमा! नियमाअट्ठ, एवं नेरइए जाव वमाणिए एव पुहुत्तणवि ॥ णाम गोय अतराइय, बधमाणे जीवे कति कम्म ? गोयमा ! जाहिं णाणावरणिज्ज बधमाणे बधाति ताहिं भाणियव्वो ॥ एवं णेरइयावि जाव वेमाणिए ॥ एव पुहुत्तेणावि भाणियव्व ॥ पण्णवणा भगवइए चोवीसइम कम्मबधपय सम्मत्त ॥ २४ ॥ × +

वन् ! मोहनीय कर्म का बंध करता हुवा जीव कितने कर्म का बंध करता है ? अहो गौतम ! एकेंद्रिय जीव को छोडकर बाकी में तीन भांग पाते हैं और एकेन्द्रिय में सात के बंधक भी बहुत हैं आठ के बंधक भी बहुत हैं अहो भगवन् ! जीव आयुष्य कर्म का बंध करता हुवा कितने कर्म प्रकृति का बंध करता है ? अहो गौतम ! निश्चय से आठों ही कर्म का बंध करता है यों नेरीये से यावत् वैमानिक पर्यन्त चोवीस ही दंडक का कहना एक जीव आश्रिय भी कहना और बहुत जीव आश्रिय भी कहना अहो भगवन्! नाम, गोत्र व अन्तराय कर्मका बंध करते हुवे जीव कितने कर्मका बंध करते हैं ? अहो गौतम ! जैसा ज्ञानावरणीय कर्म का कहा वैसा ही कहना, यों नेरीये से यावत् वैमानिक पर्यन्त चोवीस दंडक का कहना ऐसे ही एक जीव आश्रिय बहुत जीव आश्रिय कहना इति पन्नवणा भगवती का चोवीसवा पद समाप्त हुवा ॥ २४ ॥

॥ पंचविंशतितम कर्मवेदनापदम्॥

कतिण भंते ! कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ तंजहा णाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं ॥ एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं ॥ जीवेणं भंते ! णाणावरणिज्जं कम्मं बंधमाणे कति कम्मप्पगडीओ वेदेति ? गोयमा ! णियमा अट्ठ कम्मप्पगडीओ वेदेति ॥ एवं णेरइए जाव वेमाणिए ॥ एवं पुहुत्तेणवि ॥ एवं वेदणिज्जं वज्जं जाव अंतराइयं ॥ जीवेणं भंते ! वेदणिज्जं कम्मं बंधमाणे कतिकम्म प्पगडीओ वेदेति ? गोयमा ! सत्तविह वेयएवा अट्ठविह वेयएवा, चउव्विह वेयएवा

अहो भगवन् ! कर्म प्रकृति कितनी कही है ? अहो गौतम ! आठ कर्म प्रकृति कही है तद्यथा— ज्ञानावरणीय यावत् अन्तराय यों नेरीये से यावत् वैमानिक पर्यन्त चौवीस ही दंडक कहना अहो भगवन् ! जीव ज्ञानावरणीय कर्म का बंध करता हुवा कितने कर्म की प्रकृति का वेदता है ? अहो गौतम ! नियम से आठों कर्म की प्रकृति वेदता है यों नेरीये से यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना ऐसे ही एक जीव आश्रिय तथा बहुत जीव आश्रिय कहना यों वेदनीय छोड अन्तराय कर्म तक कहना, अहो भगवन् ! जीव वेदनीय कर्म बंधता हुवा कितनी कर्म प्रकृति को वेदता है ? अहो गौतम ! सात कर्म भी वेदता है पश्चात् योंही आठ अकर्म भी वेदता है मिथ्यात्व दृष्टी से सूक्ष्म सम्पराय गुणस्थान तक, चार

एवं मणूसवि ॥ ससा णेरइयाइए, एगत्तणवि पुहत्तेणवि नियमा अट्ठकम्मप्पगडीओ वेदेति जाव वेमाणिया ॥ जीवाण भंते ! वेदणिज्जकम्मं बंधमाणा कतिकम्मप्पगडीओ वेदति ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्जा अट्ठविहवेदगाय चउव्विह वेदगाय, अहवा अट्ठविहवेदगाय सत्तविहवेदगाय, अहवा अट्ठविह वेदगाय चउव्विह वेदगाय, सत्तविह वेदगाय, ॥ एवं मणुस्सावि भाणियव्वा ॥ इति पण्णवणा भगवईए पणवीसम कम्मवेय पयं सम्मत्त ॥ २५ ॥ ×

कर्म भी वेदता है केवली की अपेक्षा, ऐसे ही मनुष्य का भी कहना शेष नरक से यावत् मनुष्य छोड वैमानिक तक एक वचन आश्रिय बहुत वचन आश्रिय नियमा आठों कर्म का वेदन करते हैं अहो भगवन् ! बहुत जीवों वेदनीय कर्म बंधते हुवे कितनी कर्म प्रकृति वेदते हैं? अहो गौतम! सब ऐसे ही कहना आठ के वेदक बहुत चार के वेदक भी बहुत, अथवा आठ के वेदक बहुत चार के वेदक भी बहुत सात का वेदक एक अथवा आठ के भी बहुत, चार क बहुत, सात के भी बहुत ऐसे ही मनुष्य का भी कहना इति पन्नवणा भगवती का कर्म वेदना नामक पचीसवा पद समाप्त ॥ २५ ॥

※ षडविंशतितम कर्म प्रकृति पदम् ※

कतिण भंते! कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ? गोयमा! अट्ठ कम्मप्पगडीओ पण्णत्ताओ तंजहा णाणावरणिज्जं जाव अंतराइयं एवं नेरइया जाव वेमाणियाणं ॥ १ ॥ जीवेणं भंते! णाणावरणिज्जं कम्मं वेदमाणे कति कम्मप्पगडीओ बंधति? गोयमा! सत्तविह बंधएवा, अट्ठविह बंधएवा छव्विह बंधएवा एगविह बंधएवा ॥ २ ॥ नेरइएणं भंते! णाणावरणिज्जं कम्मं वेदमाणे कतिकम्म बंधति? गोयमा! सत्तविह बंधएवा

अहो, भगवन्! कितनी कर्म की प्रकृति कही है? अहो गौतम! आठ कर्मों की प्रकृति कही है यथा—ज्ञानावरणीय यावत् अंतराय यों नेरीय से यावत् वैमानिक पर्यन्त चौवीस ही दंडक में आठ ही कर्म प्रकृति पाती है ॥ १ ॥ अहो भगवन् जीव ज्ञानावरणीय कर्म को वेदता कितनी कर्म की प्रकृति को बांधता है? अहो गौतम! आयुष्य बिना सात कर्म प्रकृति का भी बंध करता है, आयुष्य सहित आठ कर्म प्रकृति का भी बंध करता है आयुष्य और मोहनीय बिना दशवे गुनस्थान वाला छ प्रकृति का भी बंध करता है और केवली की अपेक्षा एक वेदनीय का बंध करता है ॥ २ ॥ अहो भगवन् नेरीया ज्ञानावरणीय कर्म वेदता हुआ कितनी कर्म प्रकृति का बंध करता है? अहो गौतम! सात कर्म का भी बंध करता

अट्ठविह बंधएणा, एव जाव वेमाणियां ॥ मणुस्से जेहा जीवे ॥३॥ जीवाण भंते ! णाणावरणिज्जं कम्म वेदमाणा कतिकम्म पगडीओ बंधति ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्जा, सत्तविह बधगाय अट्ठविह बंधगाय, २ अहवा सत्तविह बधगाय अट्ठविह बधगाय छव्विह बंधगाय, ३ अहवा सत्तविह बंधगाय, अट्ठविह बधगाय, छव्विह बधगाय ४ अहवा सत्तविह बधगाय, अट्ठविह बधगाय, एगविह बधगय, ५ अहवा सत्तविह बधगाय, अट्ठविह बधगाय एगविह बंधगाय १ अहवा सत्तविह बधगाय अट्ठविह बधगाय,

और आठ कर्म का भी बंध करता है यों नेरीये से यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना इस में मनुष्य का जैसे समुच्चय जीव का कहा वैसा कहना ॥ ३ ॥ अब बहुत जीव आश्रिय कहते हैं अहो भगवन् ! बहुत जीव ज्ञानावरणीय कर्म का वेदते हुए कितनी कर्म प्रकृति का बंध करते हैं ? अहो गौतम ! सब वैसे ही जानना १ सात कर्म के बंधक भी बहुत, आठ कर्म के बंधक भी बहुत, २ अथवा सात कर्म के बंधक भी बहुत, आठ कर्म के बंधक भी बहुत, छ कर्म का बन्धक एक, ३ अथवा सात कर्म के बंधक भी बहुत, आठ कर्म के बंधक भी बहुत, छ कर्म के बंधक भी बहुत ४ अथवा सात कर्म के बंधक भी बहुत, आठ कर्म के बंधक भी बहुत, एक का बंधक एक, ५ अथवा सात कर्म के बंधक भी बहुत, आठ कर्म के बंधक भी भी बहुत, एक कर्म के बंधक भी बहुत

त्र

र्थ

छव्विह बंधगेय, एगविह बंधगेय ७ अहवा सत्तविह बंधगाय अट्ठविह बंधगाय, छव्विह बंधगेय, एगविह बंधगाय ८ अहवा सत्तविह बंधगाय, अट्ठविह बंधगाय छव्विह बंधगाय, एगविह बंधगय, ९ अहवा सत्तविह बंधगाय अट्ठविह बंधगाय छव्विह बंधगाय, एगविह बंधगेय एव एत णवभगा, अवसेसाण एगिंदिय मणुस्स वज्जाण तियभगा जाव वेमाणियाण ॥ एगिंदियाण सत्तविह बंधगाय अट्ठविह बंधगाय ॥ मणुस्साण पुच्छा ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्जा ? सत्तविह बंधगा, २ अहवा

६ अथवा सात कर्म के बंधक भी बहुत, आठ कर्म के बंधक भी बहुत, छ कर्म का बंधक एक, एक कर्म का बंधक एक ७ अथवा सात कर्म बंधक बहुत, आठ कर्म बंधक बहुत, छ का बंधक एक, एक के बंधक बहुत, ८ अथवा सात के बंधक बहुत, आठ के बंधक बहुत, छ का बंधक बहुत, एक के बंधक एक और ९ अथवा सात के बंधक बहुत, आठ के बंधक बहुत, छ के बंधक बहुत, एक के बंधक भी बहुत यों यह नव भांगे अपर शेष सब के एकेन्द्रिय और मनुष्य छोडकर सबस्थान तीन भांगा यावत् वैमानिक पर्यन्त १८ दंडक जानना एकेन्द्रिय में सात के बंधक भी बहुत, आठ के बंधक भी बहुत मनुष्य की पृच्छा ? अहो गौतम ! सर्व में रो ही होवे सात कर्म के बंधक २ अथवा सात के बंधक बहुत, आठ का बंधक एक ३ अथवा सात के बंधक भी बहुत, आठ के बंधक भी बहुत, ४ अथवा सात के बंधक बहुत,

सत्तविह बंधगाय, अट्ठविह बंधगेय २ अहवा सत्तविह बंधगाय, अट्ठविह बंधगाय, ४ अहवा सत्तविह बंधगाय छव्विह बंधगेय, ५ एवं छव्विह बंधएणवि सम दो भगा, ७एगविहबंधएणवि सम दो भागा, अहवा सत्तविह बंधगाय अट्ठविह बंधएय छव्विह बंधएय, चउभगा, ११ अहवा सत्तविह बंधगाय, अट्ठविह बंधएय, एगविह बंधएय चउभगो १५ अहवा सत्तविह बंधगाय, छव्विह बंधएय, एगविह बंधएय

छ का बंधक एक, ५ सात का बंधक बहुत छ का बंधक भी बहुत, यों छक बंधक के दो भांगे ६ सात के बंधक बहुत, एक का बंधक एक, ७ सात के बंधक बहुत एक के बंधक भी बहुत यों एक के बंधक के दो भांग ८ सात के बंधक बहुत, आठ का बंधक एक, छ का बंधक एक, ९ सात के बंधक बहुत, आठ के बंधक एक छ का बंधक बहुत, १० सात के बंधक बहुत, छ का बंधक एक, ११ सात के बंधक बहुत, आठ के बंधक बहुत यों तीन के चार भांग हुवे १२ अथवा सात के बंधक बहुत आठ का बंधक एक एक का बंधक एक, १३ अथवा सात के बहुत, आठका बंधक एक एकके बंधक बहुत, १४ अथवा सात के बंधक बहुत आठ के बंधक बहुत एक का बंधक एक १५ अथवा सात के बंधक बहुत, आठ के बंधक बहुत एक के बंधक बहुत, यों चार भांगे १६ सात के बंधक बहुत छ का एक एकका बंधक एक १७ सात के बहुत छका एक, एक के बहुत १८ सात के बहुत छ के बहुत, एक के बहुत

	सात के	आठ के
२	३	१
३	३	३

	सात के	छ के
४	३	१
५	३	३

	सात के	एक के
६	३	१
७	३	३

	सात के	आठ के	छ के
८	३	१	१
९	३	१	३
१०	३	३	१
११	३	३	३

	सात के	आठ के	एक के
१२	३	१	१
१३	३	१	३
१४	३	३	१
१५	३	३	३

	सात	छ के	एक के
१६	३	१	१
१७	३	१	३
१८	३	३	१
१९	३	३	३

चउसंयोगी ८ भांगे होते हैं

	सात	आठ	छ	एक
२०	३	१	१	१
२१	३	१	१	३
२२	३	१	३	१
२३	३	१	३	३
२४	३	३	१	१
२५	३	३	१	३
२६	३	३	३	१
२७	३	३	३	३

सत्तभंगा १९ अहवा सत्तविह बंधगाय, अट्ठ विह बंधएय छव्विह बंधएय, एगविह बंधएय भंगा अट्ठ॥ एवं एते सत्तावीस भंगा ॥ ५ ॥ एवं जहा पाणाइवाएणं तहा परिग्गहावत्तिएणं

१९ सात के बहुत छ के बहुत एक के भी बहुत यह भी चार भांगे तीन संयोगी १२ भांगे हुवे २० सात के बंधक बहुत आठका बंधक, छका बंधक एक एक का बंधक एक इस के आठ भांग करना सब २७ हुवे ॥ ५ ॥ जैसे यह भांगा पापस्थानक के २७ भांगे कहे वैसे ही पांचवा परिग्रह के भी २७ भांगे कहना और

अतराइयवि ॥ ५ ॥ जीवेण भते ! वेयणिज्ज कम्मं वेदमाणे कइ कम्मपगडीओ बधति ? गोयमा ! सत्तविह बंधएवा, अट्ठविह बंधएवा, छव्विह बंधएवा, एगविह बंधएवा अबंधएवा ॥ एव मणुस्सेवि अवसेसा णरइयादि सत्तविह बधगाय अट्ठविह बधगाय, एव जाव वेमाणिया ॥ जीवाणं भते ! वेदणिज्जं कम्मं

अन्तराय कर्म के भी २१ भांग कहना ॥ ५ ॥ अहो भगवान ! जीव वेदनीय कर्म को वेदता हुवा कितने कर्म की प्रकृति का बंध करता है ? अहो गौतम ! सात कर्म का भी बंध करता है, आठ कर्म का भी बंध करता है, छ कर्म का भी बंध करता है और एक कर्म का भी बंध करता है कोई क बंध नहीं भी होता है जैसे यह समुच्चय जीव का कहा ऐसा ही मनुष्य का भी कहना अपर शेष नारकी आदि सात कर्म के भी बंधक बहुत हैं, आठ कर्म के भी बंधक बहुत हैं यों यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना अहो भगवन् ! बहुत जीवों वेदनीय कर्म को वेदते हुए कितनी कर्म प्रकृति का बंध करते हैं ! अहो गौतम ! सब वैसे ही कहना सात कर्म के बंधक भी बहुत हैं आठ कर्म के बंधक भी बहुत हैं एक कर्म के बंधक भी बहुत हैं, १ अथवा सात कर्म के बंधक बहुत हैं, आठ कर्म के बंधक भी बहुत हैं एक कर्म के बंधक भी बहुत, छ कर्म का बंधक एक है, २ अथवा सात कर्म के बंधक भी बहुत हैं, आठ कर्म के बंधक भी बहुत हैं, एक कर्म के बंधक भी बहुत हैं छ कर्म के बंधक भी

मेदेमाणा कति कम्मप्पगडी बधंति ? गो यमा ! सव्वेवि ताव होज्जा, सत्तविह बंध बंधगाय एग अहवा सत्त अट्ठविह बंध बंधगाय छ- अहवा सत्त अट्ठविह बंध-

१

सात	एक	छ
३	३	१
३	३	३

सात	एक	आठ
३	३	१
३	३	३

सात	एक	अबं
३	३	१
३	३	३

सात	आठ	एक	छ	अब
३	३	३	१	१
३	३	३	१	३
३	३	३	३	१
३	३	३	३	३

२

सात	एक	छ	आठ
३	३	१	१
३	३	१	३
३	३	३	१
३	३	३	३

सात	एक	छ	अब
३	३	२	१
३	३	१	३
३	३	३	१
३	३	३	३

सात	एक	आठ	अब
३	३	१	१
३	३	१	३
३	३	३	१
३	३	३	३

सात	आठ	एक	छ
३	३	३	१
३	३	३	२

सात	आठ	एक	अबं
३	३	३	१
३	३	३	३

गाय अट्ठविह विह बंधगाय, विह बंधगाय गाय एगविह विह बंधगाय, विह बंधगाय,

बहुत हैं यों अबंधक का भी बराबर दो भांगे करना. अथवा सात कर्म के बंधक बहुत हैं, आठ कर्म के बंधक भी बहुत हैं, एक कर्म के बंधक भी बहुत हैं, अबंधक एक है इस की चौभंगी करना यों यह

गाय, एगविह बंधगाय छव्विह बंधगाय एव अबंधगणवि सम दो भंगा भाणियव्वा अहवा सत्तविह बंधगाय, अट्ठविह बंधगाय, एगविह बंधगाय, छव्विह बंधगाय अबंधगाय चउभंगो एव एते नवभंगा॥ एगिंदियाण अभंगयं नारगा दीण तियभंगा जाव वेमाणियाण, णवर मणुस्साण पुच्छा ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्जा सत्तविह बंधगाय एगविह बंधगाय अहवा सत्तविह बंधगाय, एगविह बंधगाय, छव्विह बंधगेय, अट्ठविह बंधगेय, अबंधएय एव एते सत्तावीस भंगा

नव भांग होते हैं, एकेन्द्रिय को अभंग जानना नारकी आदि के तीन भांग यावत् वैमानिक पर्यन्त मनुष्य की पृच्छा ? अहो गौतम ! सब ही होवे यावत् १ सात कर्म के बंधक बहुत, एक कर्म के बंधक भी बहुत, (क्यों कि जघन्य दो क्रोड करोड एक समय में पाते हैं) अथवा सात कर्म के बंधक बहुत, एक कर्म के बंधक बहुत, छ कर्मका बंधक एक (दशवे गुणस्थान आश्रिय) आठ कर्म का बंधक एक [आयु बंध का] अबंधक भी एक (चउदह गुणस्थानवर्ती) यों इस के भी सत्ताइस भांगे कहना, जिस प्रकार क्रिया पद में प्राणातिपात विरमण व्रत के कहे यों जिस प्रकार वेदनीय कर्म के भांग कहा उस ही प्रकार आयुष्य कर्म मोहनीय कर्म वेदता हुआ जीव सात कर्म बंधे आठ कर्म बंधे छ कर्म का बंध भी

भाणियव्वा ॥ जहा किरियासु पाणातिपातविरियस्स ॥ एवं जहा वेदणिज्ज तहा आउय नाम गोयच भाणियव्व ॥ मोहणिज्ज वेदेमाणे जहा बंध ॥ णाणावरणिज्ज तहा भाणियव्व ॥ पण्णवणा भगवईए छव्वीसइम कम्मवेदपय सम्मत्त ॥ २६ ॥ *

कर जैसा ज्ञानावरणियका कहा वैसा ही कहना ऐसे ही मनुष्य का भी कहना इति पन्नवणा भगवती का कर्म वेदना नामक छब्बीसवा पद समाप्त ॥ २६ ॥ + + +



॥ सप्तविंशतितम क्रिया पदम् ॥

कतिण भंते! कम्म प्पगडीओ पण्णत्ताओ? गोयमा! अट्ठ कम्म प्पगडीओ पण्णत्ताओ तंजहा णाणावरणिज्ज जाव अंतराइय एवं णेरइयाण जाव वेमाणियाण ॥ ॥ जीवेणं भंते ! णाणावरणिज्ज कम्म वेदेमाणे कति कम्म प्पगडीओ वेदेति ? गोयमा ! सत्तविहवेदए अट्ठविहवेदए वा, एवं मणुस्सेणवि अवसेसा, एगत्तेणवि पुहत्तेणवि णियमा अट्ठकम्म प्पगडीओ वेदेति जाव वेमाणिया ॥ जीवाणं भंते ! णाणावरणिज्ज कम्मं वेदेमाणा कति कम्मप्पगडीओ वेदेंति? गोयमा! सव्वेवि ताव होज्जा अट्ठविह वेदगाय अहवा

अहो भगवन् ! कर्मों की प्रकृति कितनी कही है ? अहो गौतम ! आठ कर्मों की प्रकृति कही है तद्यथा—ज्ञानावरणीय यावत् अन्तराय यों नारकी से लगाकर वैमानिक पर्यन्त कहना अहो भगवन् ! जीव ज्ञानावरणीय कर्म वेदता हुवा कितने कर्म की प्रकृति को वेदता है ? अहो गौतम ! उपशान्त मोह क्षीणमोह की अपेक्षा सात कर्म वेदे, और सूक्ष्म सम्परायादि की अपेक्षा आठ कर्म वेदे ऐसे ही मनुष्य का भी कहना अपर शेष एक जीव आश्रिय बहुत जीव आश्रिय निश्चय से आठ ही कर्म की प्रकृतियों वेदते हैं यावत् वैमानिक पर्यंत ॥ बहुत जीव ज्ञानावरणीय कर्म को वेदते हुवे कितनी कर्म प्रकृति को वेदते हैं ? अहो गौतम ! सब वैसे ही कहना आठ कर्म के वेदक हैं, २ अथवा आठ कर्म के वेदक बहुत, सात कर्म का वेदक एक, ३ अथवा आठ कर्म के वेदक भी बहुत, सात कर्म के वेदक भी बहुत

षउसथागी ८ भंगि का यंत्र

सात	आठ	छ	एक
३	१	१	१
३	१	१	३
३	१	३	१
३	१	३	३
३	३	१	३
३	३	३	३
१	३	३	३
३	३	३	३

अट्ठविह वेदगाय सत्तविहवेदगेय, छव्विहा अट्ठविह वेदगाय सत्तविह वेदगाय एवं मणुस्साणवि ॥ दरिसणा वरणिज्ज कम्म अतराइयंप एवं चेव भाणियव्वं वेदणिज्ज आउय णाम गोयाइ वेदमाणे कति कम्मप्पगडीओ वेदेति गोयमा ! जहा बंधगा वेदगस्स वेदणिज्ज तहा भाणियव्वा॥ जीवेण भंते ! मोहणिज्ज कम्म वेदमाणे कति कम्मप्पग डीओ वेदेति ? गोयमा ! णियमा अट्ठ कम्मप्पगडीओ वेदति ॥ एवं णेरइए जाव वेमाणिए ॥ एवं पुहुत्तेणवि

इति पण्णवणा भगवतीए सत्तावीसइम वेदपय सम्मत्त ॥ २७ ॥ *

एसे ही मनुष्य का भी कहना दर्शनावरणीय कर्म का और अन्तराय कर्म का भी एसे ही कहना वेदनीय आयुष्य नाम, गोत्र, कर्म वेदता हुवा कितनी प्रकृति वेदता है ? अहो गौतम ! जैसा बंधक वेदक का कहा वैसा ही कहना अर्थात् नरकादि २३ दंडक आठों ही कर्म वेदते हैं बहुवचन आश्रिय समुच्चय जीव आश्रिय मनुष्य आश्रिय तीन भांग पाये अहो भगवन् ! जीव मोहनीय कर्म वेदता कितनी कर्म प्रकृति वेदता है? अहो गौतम! नियमा से आठों ही कर्मकी प्रकृति वेदता है एसे ही नेरीये से यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना और एसे ही बहुत जीव आश्रिय कहना इति पन्नवणा का वेदपद संपूर्ण

॥ अष्टाविंशतितम आहारपदम् ॥

सचित्ता हारट्ठी, केवति किंवा विसव्वतो चव ॥ कतिभाग, सव्वे खलु, परिणामे चेव बोधव्वे ॥ १ ॥ एगींदिय सरीरादि लोमाहारो तहेव मणभक्खी ॥ एतेसिं तु पदाण, विभावणा होति कायव्वा ॥ २ ॥ १॥ णेरइयाणं भंते ! किं सचित्ताहारा, अचित्ता हारा मीसाहारा ? गोयमा ! णो सचित्ताहारा अचित्ताहारा णो मीसाहारा ॥ एवं असुरकुमारा जाव वेमाणिया ॥ उरालियसरीरा जाव मणुस्सा सचित्ताहारावि

अब अठावीसवा आहार पद कहते हैं जिस के द्वार के नाम—१ सचित्तादि आहार का २ आहार की इच्छा, ३ कितने काल में आहार की इच्छा हो, ४ किस का आहार करे, ५ सर्व से किस प्रकार परिणमे, ६ कितने भग से आहार ग्रहण करे, ७ जितने पुद्गल ग्रहे उतने ही आहारे क्या, ८ आहारके परिणाम, ९ एकेन्द्रियादि शरीर का आहार करे, १० लोम आहार का कथन, ११ मन भक्षी आहारका कथन, यह इग्यार द्वार के नाम कहे अब इनका विस्तार करते हैं ॥ २ ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नेरीये क्या सचित्त (सजीव वस्तु का) आहार करते हैं, कि अचित्त आहार करते हैं कि मिश्र आहार करते हैं ? अहो गौतम ! नेरीये सचित्त और मिश्र आहार नहीं करते है परंतु एक अचित्त (निर्जीव) पुद्गल का आहार करते हैं यों असुरकुमार से यावत् वैमानिक पर्यंत कहना जिस में इतना विशेष औदारिक

अचित्ताहारावि, मीसाहारावि ॥ २ ॥ नेरइयाणं भंते ! आहारट्ठी ? हंता गोयमा ! आहारट्ठी ॥ णेरइयाणं भंते ! केवति कालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति ? गोयमा ! णेरइयाणं दुविहे आहारे पण्णत्ते तंजहा आभोगणिव्वत्तिएय, अणाभोगणिव्वत्तिएय तत्थणं जसे अणाभोगणिव्वत्तिए सेणं अणुसमयं अविरहिए आहारट्ठे समुप्पज्जति तत्थणं जसे आभोगणिव्वत्तिए सेणं असंखेज्ज समइए अंतोमुहुत्तिए आहारट्ठे समुप्पज्जति ॥ ३ ॥ णेरइयाणं भंते ! किं आहारं माहारंति ? गोयमा ! दव्वतो अणंतपदेसियाइं,

शरीर पाय नव दंडक [पांच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, तिर्यंच पचेन्द्रिय और मनुष्य] सचित्त अचित्त और मिश्र तीनों प्रकार का आहार करते हैं ॥ २ ॥ दूसरा द्वार—अहो भगवन् ! नेरीये आहार के अर्थी (इच्छक) हैं क्या ? हां गौतम ! आहार के अर्थी हैं अहो भगवन् ! नरक के जीव को कितने काल से आहार की इच्छा होती है ? अहो गौतम ! नेरीय का आहार दो प्रकार का कहा है तद्यथा—आभोगनिवृत्ती उपयोग युक्त आहार करे, और २ अनाभोग निवृत्ति उपयोग विना आहार करे जैसे वायुके जीव का वायु के पुद्गलों का आहार होवे इस में जो अनाभोग निवृती आहार की तो प्रतिसमय निरंतर इच्छा होती है, और उस में जो आभोग निवृती है वह असंख्यात समय के अन्तर्मुहूर्त से आहार की इच्छा होती है ॥ ३ ॥ तीसरा द्वार—अहो भगवन् नेरीये किस प्रकार का आहार करते हैं ?

खेत्ताओ असंखेज्ज पदसोगाढाइं, कालतो अण्णतर कालठितियाइं, भावतो वण्णमंताइं, गंधमंताइं रसमंताइं फासमंताइं, जाइं भावतो वण्णमंताइं आहारेंति ताइं किं एगवण्णाइं आहारेंति जाव किं पंचवण्णाइं आहारेंति ? गोयमा ! ठाणमग्गणं पडुच्च एगवण्णाइंपि आहारेंति जाव पंचवण्णाइंपि आहारेंति ॥ विहाणमग्गणं पडुच्च कालवण्णाइंवि आहारेंति जाव सुक्किलवण्णाइं आहारेंति ॥ जाइं वण्णओ कालवण्णाइं आहारेंति ताइं किं एगगुण कालाइं आहारेंति जाव दसगुण कालाइं आहारेंति, संखेज्जगुण असंखेज्जगुण अणंत

अहो गौतम ! द्रव्य से तो अनंत प्रदेशात्मक अनंत प्रदेशी स्कन्ध के द्रव्य का ग्रहण करे, क्षेत्रसे असंख्यात आकाश प्रदेश का अवगाह कर रहे द्रव्य का आहार ग्रहण करे, कालसे अन्तररहित समय कालकी स्थितिवाले पुद्गलों का आहार ग्रहण करे भाव से वर्णवाले गंधवाले रसवाले स्पर्शवाले पुद्गलों का आहार करे ॥ यदि भाव से वर्णमंत पुद्गलों का आहार ग्रहण करे तो क्या एक वर्ण के पुद्गलों का आहार ग्रहण करे कि यावत् पांचों वर्ण के पुद्गलों का आहार ग्रहण करे ? अहो गौतम ! स्थान सामान्य मार्ग अपेक्षी एक वर्ण के पुद्गलों का भी आहार करे [यह वचन व्यवहारनय की अपेक्षा है अनंत प्रदेशी स्कन्ध में निश्चय से वर्ण पांच ही पाते हैं परन्तु व्यवहार में जिस रंगमय वह दिखाता है उसी रंगमय उसे गिना है जैसे तोता हरा इत्यादि] यावत् पांचों वर्ण के पुद्गलों का भी आहार करे

गुण कालाइ आहारेंति ? गोयमा ! एगगुण कालाइंवि आहारेंति जाव अणतगुण कालाइंवि आहारेंति, एव जाव सुकिल्लाइं एव गधतोवि रसतोवि जाइं भावतो फासमताइ ताइ णो एगफासाइ आहारेंति णो दुफासाइ आहारेंति णो तिफासाइ आहारेंति चउफासाइंपि आहारेंति जाव अट्ठफासाइंपि आहारेंति, विहाणमग्गणपडुच्च, कक्खडाइंपि आहारेंति जाव लुक्खाइंपि आहारेंति जाइं फासतो कक्खडाइं आहारेंति ताइं किं एगगुणकक्खडाइं आहारेंति जाव अणंतगुण कक्खडाइं आहारेंति? गोयमा!

विधान मार्ग (भेद २ भग) की अपेक्षा कृष्ण वर्ण के पुद्गलों का भी आहार करे यावत् शुक्लवर्ण के पुद्गलों का भी आहार करे ॥ यदि वर्ण से काले वर्ण के पुद्गलों का आहार ग्रहण करे तो क्या एक गुन काले वर्ण पुद्गलों का आहार ग्रहण करे कि यावत् दश गुण काले वर्ण के पुद्गलों का आहार ग्रहण करे, संख्यात गुन काले वर्ण के पुद्गलों का आहार ग्रहण करे कि असंख्यात गुन काले वर्ण के पुद्गलों का आहार ग्रहण करे कि अनंत गुन काले वर्ण के पुद्गलों का आहार ग्रहण करे ? अहो गौतम ! एक गुन काले पुद्गलों का भी आहार करे यावत् अनंत गुन काले पुद्गलों का भी आहार ग्रहण करे ॥ जैसा यह काले वर्ण का कहा ऐसे ही पांचों वर्णों का यावत् शुक्ल पर्यन्त कहना जैसे ही पांचों वर्णों के आहारका कथन किया ऐसे ही दो गंध के पुद्गलों का पांच रस के

एगगुण कक्खडाइंपि आहारेंति जाव अणतगुण कक्खडाइंपि आहारेंति, एव अट्ठ वि फासा भाणियव्वा जाव अणतगुण लुक्खाइंपि आहारेंति ॥ जाइं भंते ! अणतगुण लुक्खाइं आहारेंति ताइं किं पुट्ठाइं आहारेंति अपुट्ठाइंति आहारेंति ? गोयमा पुट्ठाइं आहारेंति णो अपुट्ठाइं आहारेंति, जहा भासाउद्देसए जाव णियमा छद्दिसिं आहारेंति, उसण्णकारण पडुच्च वण्णओ कालवण्णाइं, णीलवण्णाइं, गधओ दुब्भिगंधाइं

पुद्गलों का भी कथन करना अब स्पर्श का कहते हैं—अहो भगवन् ! यदि भाव से स्पर्शवाले पुद्गलोंका आहार करता है तो क्या एक स्पर्शवाले पुद्गलों का आहार करता है कि दो स्पर्शवाले पुद्गलों का आहार करता है कि तीन स्पर्शवाले पुद्गलों का आहार करता है कि चार स्पर्शवाले पुद्गलों का आहार करता है कि यावत् आठ स्पर्शवाले पुद्गलों का आहार करता है ! अहो गौतम ! एक स्पर्श दो स्पर्श तीन स्पर्शवाले पुद्गलों का आहार नहीं करता है परंतु चार पांच छ सात आठ स्पर्शवाले पुद्गलों का आहार करता है विधान मार्ग मत्यय कर्कश स्पर्शवाले पुद्गलों का भी आहार करे यावत् रूक्ष पुद्गलों का भी आहार करे यदि स्पर्श से कर्कश पुद्गलों का आहार करे तो क्या एक गुन कर्कश पुद्गलों का आहार करे कि यावत् अनंत गुन कर्कश पुद्गलों का आहार करे ! अहो गौतम ! एक गुन कर्कश पुद्गलों का भी आहार करे यावत् अनंत गुन कर्कश पुद्गलों का भी आहार करे यों आठों ही स्पर्श का

रसओ तित्तरसकडुअंति, फासओ कक्खडगुरुय सियलुक्खाइ, तेसिं पोराणा वण्ण गुण गंधगुणे, रसगुणे फासगुणे विपरिणामइत्ता परिपीलइत्ता परिसाडइत्ता परिविद्धंस इत्ता अपुव्वे वण्णगुणे गंधगुणे फासगुणे, उप्पाइत्ता; आयसरीर खेत्तोगाढे पोग्गल सव्वप्पणायाए आहार आहारेंति ॥ णेरइयाणं भंते ! सव्वतो आहारेंति सव्वतो परि णामेंति सव्वओ ऊससंति सव्वओ नीससंति, अभिक्खणं २ आहारेंति, अभिक्खणं २

करना यावत् अनंतगुन लुक्ख पुद्गलों का आहार करे यदि अहो भगवन् ! अनंतगुन रूक्ष पुद्गलों का आहार करे तो क्या स्पर्शे हुए पुद्गलों का आहार करे कि बिना स्पर्शे पुद्गलों का आहार करे ? अहो गौतम ! स्पर्श पुद्गलों का आहार करे परंतु बिना स्पर्शे पुद्गलों का आहार नहीं करे यों जिस प्रकार भाषा उद्देशे में कहा वैसा कहना यावत् नियमा छ दिशा के पुद्गलों का आहार करे प्रायः कारण अपेक्षा (बहुत कारण तथा बहुत नारकी आश्रिय वर्ण से काला वर्ण और हरे वर्ण इन दो वर्ण के पुद्गलों का आहार करे, गंध से दुरभिगंध के पुद्गलों का, रस से तिक्त रस और कडुवे रस का, स्पर्श से कर्कश गुरु शीत और रूक्ष स्पर्श का वे आहार के पुद्गल उन के वर्णादि गुन कर पुराने गंध गुन स्पर्श के गुन कर इन के परिणाम कर पलटे हुवे खराब पने हुवे सडे हुवे गुणकर विध्वंस पाये हुवे अन्य प्रकार के वर्ण गंध रस स्पर्श कर उपयोग पन आत्म शरीर क्षेत्र में रहे हुवे पुद्गल सर्व आत्म के प्रदेशपने आहारपने

परिणामेंति, अभिक्खणं ऊससंति, अभिक्खणं नीससंति, आहच्च आहारेंति आहच्च परिणामेंति आहच्च ऊससंति आहच्च नीससंति ? हंता गोयमा ! णेरइया सव्वतो आहारेंति एवंचेव जाव आहच्च नीससंति ॥ णेरइयाणं भंते! जे पोग्गले आहारत्ताए गिण्हंति तेणंतसिं पोग्गलाणं सयालंसि कतिभाग आहारेंति कइभाग आसायंति? गोयमा! असंखेज्जति भाग आहारेंति अणंतभाग आस्साति॥णेरइयाणं भंते! जे पोग्गले आहारत्ताए गिण्हंति ते किं सव्वे आहारेंति णोसव्वे आहारेंति? गोयमा! तेसव्वे अपरिसेसिए आहारेंति ॥

ग्रहण कर चौथा द्वार—अहो भगवन् ! नेरीय सर्व प्रकार आत्मप्रदेश कर आहार करे सर्व आत्म प्रदेश कर परिणम सर्व उश्वास निःश्वासपने ग्रहण करे, वारम्वार आहारे, वारम्वार परिणमे वारम्वार उश्वास निःश्वास ग्रहण करे कदाचित् आहार करे, कदाचित् परिणमे, कदाचित् उश्वास निःश्वास लेवे ? अहो गौतम ! नेरीय सर्व प्रकार आहार करे ऐसे ही यावत् कदाचित् उश्वासनि श्वास लेवे पांचवा द्वार अहो भगवन् ! नरीये जिन पुद्गलों को आहारपने ग्रहण करे व उन पुद्गलों का आगमिक काल में कितने भाग का आहार कर कितने भाग का अस्वाद न करे ? अहो गौतम ! असंख्यातवे भाग के पुद्गल का आहार ग्रहण करे और अनंत वे भाग पुद्गलों का अस्वादन करे (शरीर क धातु आदिरूप परिणमे) वे आहार किये और जितने रसेन्द्रिय को स्पर्शे उतने अस्वादन किये अहो भगवन् ! नारकीने जो पुद्गल

णेरइयाण भंते! जे पोग्गले आहारेत्ताए गिण्हंति तेणं तेसिं पोग्गला कीसत्ताए भुज्जो २ परिण मंति? गोयमा! सोइंदियत्ताए जाव फासिंदियत्ताए, अणिट्ठत्ताए अकंतत्ताए अप्पियत्ताए असुभत्ताए अमणुण्णत्ताए अमणामत्ताए अणिच्छियत्ताए अभिज्झियत्ताए असुहत्ताए अहत्ताए णोउड्ढ त्ताए दुक्खत्ताए, णोसुहत्ताए तेसिं भुज्जो २ परिणमंति ॥ ३ ॥ असुरकुमाराणं भंते! आहारट्ठी? हंता गोयमा! आहारट्ठी, एवं जहा णेरइयाणं तहा असुरकुमाराणवि भाणियव्वं, जाव तेसिं भुज्जो २ परिणमंति तत्थणं जे से आभोगणिव्वत्तिए सेणं जहण्णेणं

आहारपने ग्रहण किये उन सब का आहार करता है किंवा सब का आहार नहीं करता है? अहो गौतम! वे सब निर्विशेष आहारपने ग्रहण करे, बचे नहीं अहो भगवन्! नेरीये जिन पुद्गलों को आहार पने ग्रहण करे वे किस प्रकार वारम्वार परिणमें? अहो गौतम! श्रोत्रेन्द्रियपने यावत् स्पर्शेन्द्रियपने अनिष्ट कारी अकंतकारी अप्रियकारी अमोज्ञ अमणाम इच्छने योग्य नहीं अभिलाषा रहितपने अशुभपने नीचा स्थानपने परंतु ऊंच स्थानपने नहीं, दुःखपने परंतु सुखपने नहीं वे पुद्गलों वारम्वार परिणमे यह नरक का दण्डक पूर्ण हुआ ॥ ३ ॥ अहो भगवन्! असुरकुमार देवता आहार के अर्थी हैं क्या? हां गौतम! आहार के अर्थी हैं यों जिस प्रकार नेरीये का वर्णन किया उसी प्रकार असुरकुमार देवता का भी कहना यावत् उन के वारम्वार पुद्गलों परिणमते हैं, उस में जो अनाभोग निवृती है वे अपन्य सो चौथ

घंठत्थभत्तस्स, उक्कोसेण सातिरेगस्स वाससहस्सस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति उसण्ण कारण पडुच्च वण्णतो हालिद्दसुक्किल्लाइं, गंधतो सुब्भिगंधाइं, रसतो अंबिलमहुराइं, फासतो मउअलहुयनिद्धुण्हाति। तेसिं पोराणे वण्णगुणे जाव फासिंदियत्ताए जाव मणामत्ताए इच्छियत्ताए भिज्झियत्ताए उड्ढत्ताए णो अहत्ताए सुहत्ताते णो दुहत्ताते, एतेसिं भुज्जो २ परिणमति, सेस जहा णेरइयाण एवं जाव थणियकुमाराण, णवर आभोगणिव्वत्तिए उक्कोसेण दिवस पुहुत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति ॥ ४ ॥ पुढवि-

भक्त (एक दिनान्तर) उत्कृष्ट कुछ अधिक एक हजार वर्षान्तर (ऐसा नियम है कि जिस देवता को जितने सागरोपम का आयुष्य होता है उनको उतने ही हजार वर्ष में आहार की इच्छा होती है, असुरकुमार देव का एक सागरोपम से कुछ अधिक आयुष्य है इसलिये ऐसा कहा है) यावत् आहार की इच्छा उत्पन्न होती है, कृष्णकारण प्रत्यय वर्ण से पीत वर्ण के और शुक्ल वर्ण के गंध से सुगंधमय के रस से खट्टे और मधुर रस के, स्पर्श से मृदु लघु उष्ण और स्निग्ध (चिकने) स्पर्श मय पुद्गलों श्रोतेन्द्रियपने यावत् स्पर्शेन्द्रियपने इष्टकारी यावत् मनापने हैं, इच्छने योग्य अभिलाषने योग्य ऊंच प्रकार के परंतु नीच भाव के नहीं सुख रूप परंतु दुःख रूप नहीं वे पुद्गलों वारम्वार परिणमते हैं. शेष कथन जैसा नेरीयों का कहा वैसा ही कहना यों यावत् स्तनित कुमार पर्यंत कहना परंतु इतना विशेष—आभोग निवृति उत्कृष्ट पृथक्त्व

काइयाणं भंते ! आहारट्ठी ? हंता आहारट्ठी. पुढविकाइयाणं भंते ! केवइय कालस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति ? गोयमा ! अणुसमयं अविरहिते आहारट्ठे समुप्पज्जति॥ पुढविकाइयाणं भंते! किमाहारमाहरांति एवं जहा णेरइयाणं जाव ताइं भंते! कतिदिसिं आहारेंति ? गोयमा ! निव्वाघाएणं छद्दिसिं, वाघायं पडुच्च सियतिदिसिं सिय चउदिसिं सिय पंचदिसिं णवरं उसण्णं कारणं ण भण्णति वण्णतो काल नील लोहित हालिद्द सुकिल्लाति, गंधता सुब्भिगंध दुब्भिगंधाति रसता तित्तरसाइं कडुअ

दिनान्तर आहार की इच्छा उत्पन्न होती है यह ११ दंडक हुवे ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकाय के जीव आहार के अर्थी हैं क्या ? अहो गौतम ! आहार के अर्थी हैं अहो भगवन् ! पृथ्वीकाय के जीव को कितने काल बाद आहार की इच्छा होती है ? अहो गौतम ! समय २ निरंतर आहार की इच्छा होती है अहो भगवन् ! पृथ्वीकाय के जीव किस प्रकार का आहार करते हैं ? अहो गौतम ! जिस प्रकार नेरीये का कहा उस ही प्रकार पृथ्वीकाय का भी कहना यावत् अहो भगवन् ! पृथ्वीकाय के जीव कितनी दिशा के पुद्गलों का आहार करते हैं ? अहो गौतम ! जो अलोक की व्याघात न हो लोक के मध्य हो वे पृथ्वीकाय के जीवों छ ही दिशा के पुद्गलों का आहार करते हैं, और जिन के अलोक नजीक में है लोक के एकतरफे हैं वे जीव कदाचित तीन दिशा का, कदाचित चार दिशा का, और कदाचित पांच

रसाइं, कसाय अंबिलमहुराइं, फासतो कक्खड फास-गुरुय लहुय सीत उसिण णिद्ध-लुक्खाति तेसिं पोराणा वण्णगुणा सेसं जहा णेरइयाणं, जाव आहच्च णीससंति ॥ पुढविकाइयाणं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गिण्हंति तेसिणं भंते ! पोग्गलाणं सेयालंसि कतिभागं आहारेंति कतिभागं अस्सायंति ? गोयमा ! असंखेज्जति भागं आहारेंति अणंत भागं अस्सायंति ॥ पुढवि काइयाणं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गिण्हंति तं किं सव्वे आहारेंति, णो सव्वे आहारेंति ? गोयमा ! जहेव

दिशा का आहार ग्रहण करते हैं, जिस में इतना विशेष—यह उष्णकारण अल्पय नहीं कहना क्यों कि पृथ्वीकाय के जीवों पांचों वर्ण के पुद्गलों का आहार ग्रहण करते हैं परंतु कम वर्ण पुद्गलों का आहार ग्रहण नहीं करते हैं वैसे ही दोनों गंध के पांचों रस के और स्पर्श कर्कश गुरु लघु आदि आठों स्पर्श के पुद्गलों का आहार ग्रहण करते हैं व भी पुराने वर्णादिगुण पलट हुवे यावत् शेष कथन जैसा नेरिये का कहा तैसा कहना यावत् कदाचित निःश्वास लेते हैं वहांतक कहना अहो भगवन्! पृथ्वीकाय जिन पुद्गलोंको आहार पने ग्रहण करे उन पुद्गलों में से आगमिक काल में कितने आहारपने परिणमें कितने अस्वादपने परिणमें ? अहो गौतम! असंख्यातवे भागका आहार करे और अनंतवे भाग का अस्वाद ग्रहण करे अहो भगवन्! पृथ्वी काय जीव जिन पुद्गलों को आहारपने ग्रहण करे वे सब पुद्गलों का आहार करते हैं या सब का आहार नहीं

णेरइया तहेव ॥ पुढविकाइयाण भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गिण्हति तेण तेसिं पोग्गलाण कीसत्ताए भुज्जो २ परिणमति ? गोयमा ! फासिंदिय वेमायत्ताए तेसिं भुज्जो २ परिणमति एव जाव वणप्फतिकाइयाण ॥ ५ ॥ बेइंदियाण भंते ! आहारट्ठी ? हता गोयमा ! आहारट्ठी ॥ बेइंदियाण भंते ! केवइ कालस्स आहरट्ठे समुप्पज्जति ? जहा णेरइयाण णवर तहथण जे से आभोगानिव्वत्तए सेण असंखेज्जाति समए अंतोमुहुत्तिए वेमायाए आहारट्ठे समुप्पज्जति सेस जहा पुढवि

करते हैं ? अहो गौतम ! जैसा नेरीये का कहा वैसा ही कहना अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया जिन पुद्गलों को आहारपने ग्रहण करे वे पुद्गलों किसपने वारम्वार परिणमते हैं ? अहो गौतम ! एक स्पर्शेन्द्रियपने वेमाय-असमान से वारम्वार परिणमते हैं, यों यावत् वनस्पतिकाया पर्यन्त कहना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! बेइंद्रिय के जीव आहार के अर्थी हैं क्या ? अहो गौतम ! जैसा नेरीये का कहा वैसा ही कहना, जिस में इतना विशेष जो आभोग निवृति वह असंख्यात समय का अन्तरमुहूर्त में अस पाण आहार की इच्छा उत्पन्न होती है शेष जैसा पृथ्वी काया का कहा वैसा कहना यावत् कदाचित् भाषोभास होते हैं यहां तक कहना परन्तु इतना विशेष की नियमा म छ ही दिशा का आहार ग्रहण

काइयाण जाव आहच्च णीससति, पवरं णियमा छदिसिं ॥ बेइंदियाण पुच्छा? गोयमा! जे पोग्गले आहारत्ताए गिण्हति तेण तेसिं पोग्गलाण कइभागं आहारेंति कतिभाग आसायंति एव जहा णेरइयाणं ॥ बेइंदियाण भंते! जे पोग्गले आहारत्ताए गिण्हति ते किं सव्वे आहारइ णो सव्वे आहारेइ? गोयमा! बेइंदियाणं दुविहे आहारे पण्णत्ते तंजहा-लोमाहारेय, पक्खेवाहारेय, जे पोग्गल लोमाहारत्ताए गिण्हंति ते सव्वे अपरिसेसे आहारेंति, जे पोग्गले पक्खेवाहारत्ताए गिण्हति, तेसिं असंखेज्जाति भाग

करते हैं क्यों कि त्रस जीव लोक के मध्य में ही पाते हैं अहो भगवन्! बेइंद्रिय जिन पुद्गलों का आहार पने ग्रहण करते हैं उन में का आगामिक काल में कितना भाग आहारपने परिणमता है कितना भाग आस्वादपने परिणमता है? अहो गौतम! जैसा नेरीये का कहा वैसा ही कहना अहो भगवन्! बेइंद्रिय आहार के लिए जितने पुद्गल ग्रहण करते हैं उन सब का आहार करते हैं कि सब का आहार नहीं करते हैं? अहो गौतम! बेइंद्रिय के दो प्रकार का आहार कहा है, तद्यथा—रोम आहार जो त्वचा कर (रोम के छिद्रों कर) ग्रहण किया जावे और २ प्रक्षेप आहार जो मुख में प्रक्षेप कर खाया जावे इस में से जो पुद्गल रोम आहारपने ग्रहण कर वे सब विशेष रहित आहार करे और जो प्रक्षेप

तिरिक्खजोणियाणं भंते ! जे पोग्गले आहार पुच्छा ? गोयमा ! सोइंदियचक्खिदं-दिय,घाणिंदिय जिब्भिंदिय फासिंदिय वेमायत्ताते भुज्जो २ परिणमंति ॥ ७ ॥ मणूसा एवंचेव णवर अभोगनिव्वत्तिए जहण्णेणं अंतोमुहुत्तस्स उक्कोसेणं अट्ठमभत्तस्स आहारट्ठे समुप्प ज्जति ॥८॥ वाणमंतरा जहा णागकुमारा एवं जोइसिया णवरं आभोगनिव्वत्तिए जहण्णेणं दिवसपुहुत्तस्स, उक्कोसेणवि दिवसपुहुत्तस्सवि, आहारट्ठे समुप्पज्जति एवं वेमाणियावि णवरं आभोगनिव्वत्तिए जहण्णेणं दिवसपुहुत्तस्स, उक्कोसेणं तत्तीसाए वाससहस्साणं

युगल तिर्यंच की आपेक्षा] आहार की इच्छा उत्पन्न होती है अहो भगवन् ! पंचेन्द्रिय तिर्यंच जो पुद्गल आहारपने ग्रहण करते हैं वे किसपने परिणमते हैं ? अहो गौतम ! श्रोत्रेन्द्रिय चक्षुइन्द्रिय घ्राणेन्द्रिय रसेन्द्रिय और स्पर्शेन्द्रिय पने अभमात्र बारम्बार परिणमते हैं ॥ ७ ॥ मनुष्य को भी ऐसा ही कहना जिस में इतना विशेष आभोग निवृति जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अष्टमभक्त आहार का अर्थ उत्पन्न होता है [सुखमा सुखम आरे के तथा देवकुरु उत्तरकुरु के मनुष्य की आपेक्षा] ॥८॥ वाणव्यन्तर देवता का जैसा नागकुमार देवता का कहा वैसा कहना, ज्योतिषी का भी ऐसा ही कहना जिस में इतना विशेष आभोग निवृति जघन्य उत्कृष्ट पृथक्त्व [दो से नव तक] दिन के अन्तर आहार की इच्छा होती है ऐसे ही वैमानिक का भी कहना जिस इतना विशेष आभोग निवृति जघन्य पृथक्त्वदिनांतर उत्कृष्ट तेत्तीस

आहारट्ठे समुप्पज्जति सेस जहा असुरकुमाराण जाव एतेसिं भुज्जो २ परिणमति ॥ १ ॥ सोहम्मेकप्पे आभोगणिव्वत्तिए जहण्णेण दिवसपुहुत्तस्स उक्कोसेण दोण्ह वाससहस्साण, ईसाणे पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण दिवसपुहुत्तस्स सातिरेगस्स, उक्कोसेण सातिरगाण दोण्हं वाससहस्साण ॥ सणकुमाराण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णे दोण्ह वाससहस्साण उक्कोसेण सत्तण्ह वाससहस्साणं, माहिंदेण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं दोण्ह वाससहस्साणं सतिरेगाण, उक्कोसेणं सत्तण्ह वाससहस्साण सातिरेगाणं, बम्भलोग पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तण्हं वाससहस्साण उक्कोसेणं

हजार वर्ष के अन्तर से आहार की इच्छा होती है शेष जैसा असुरकुमार का कहा वैसा कहना यावत् उन को वारम्वार परिणमता है ॥ १ ॥ अब सब देवलोक का अंतर कहते हैं अनाभोगनिवृति सौधर्म देवलोक में जघन्य पृथक्त्वदिन के अन्तर से उत्कृष्ट दोहजार वर्ष के अन्तर आहार की इच्छा उत्पन्न होवे, ईशान देवलोक में जघन्य पृथक्त्व दिन से कुछ अधिक के अन्तर से उत्कृष्ट दो हजार वर्ष कुछ अधिक अन्तर से, सनत्कुमार देवलोक में जघन्य दो हजार वर्ष के अन्तर, उत्कृष्ट सात हजार वर्ष में, सहस्रार देवलोक में जघन्य दो हजार वर्ष कुछ अधिक के अन्तर उत्कृष्ट सात हजार वर्ष

दसण्हं वाससहस्साणं ॥ लंतएणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसण्हं वाससहस्साणं उक्कोसेणं चोद्दसण्हं वाससहस्साणं ॥ महासुक्के पुच्छा ? जहण्णेणं चोद्दसण्हं वाससहस्साणं उक्कोसेणं सत्तरसण्हं वाससहस्साणं ॥ सहस्सारे पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तरसण्हं वाससहस्साणं उक्कोसेणं अट्ठारसण्हं वाससहस्साणं, आणएणं पुच्छा ? जहण्णेणं अट्ठारसण्हं वाससहस्साणं, उक्कोसेणं एगुणवीसाए वाससहस्साणं पाणएणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं एगुणवीसाए वाससहस्साणं उक्कोसेणं वीसाए वाससहस्साणं आरणेणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं वीसाए वाससहस्साणं उक्कोसेणं एक्कवीसाए

कुछ अधिक के अन्तर, ब्रह्म देवलोक में जघन्य सात हजार वर्ष में उत्कृष्ट दश हजार वर्ष में लांतक देवलोक में जघन्य दश हजार उत्कृष्ट चौदह हजार वर्ष में, महाशुक्र में जघन्य चौदह हजार उत्कृष्ट सतरा हजार वर्ष में, सहस्रार में जघन्य सतरे हजार वर्ष में, उत्कृष्ट अठारा हजार वर्ष में, आनत में जघन्य अठारा हजार उत्कृष्ट उन्नीस हजार वर्ष में, प्राणत में जघन्य उन्नीस हजार उत्कृष्ट बीस हजार वर्ष में, आरन में जघन्य बीस हजार वर्ष में उत्कृष्ट इक्कीस हजार वर्ष में, अच्युत देवलोक में जघन्य इक्कीस हजार वर्ष में उत्कृष्ट बावीस हजार वर्ष में यों सर्व स्थान कहना यावत् सर्वार्थ सिद्ध पर्यन्त नीचेकी

वाससहस्साणं ॥ अच्चुएण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एक्कवीसाए वाससहस्साण उक्कोसेण बावीसाएवाससहस्साण, हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जगाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण बावीसाए वाससहस्साण उक्कोसेण तेवीसाए वाससहस्साण, एवं सव्वत्थ सहस्साणि भाणियव्वाणि जाव सव्वट्ठं सिद्धं ॥ हेट्ठिममज्झिमाण पुच्छा ? गोयमा जहण्णेण तेवीसाए उक्कोसेण चोवीसाए, हेट्ठिमउवरिमाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं चउवी साए उक्कोसेण पणवीसाए, मज्झिमहेट्ठिमाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण पणवीसाए उक्कोसेण छव्वीसाए मज्झिममज्झिमाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण छव्वीसाए उक्को

नीचे की ग्रैवेयक में जघन्य बावीस हजार वर्ष उत्कृष्ट तेवीस हजार वर्ष में नीचे की मध्य की ग्रैवेयक में जघन्य तेवीस हजार वर्ष में उत्कृष्ट चौवीस हजार वर्ष में नीचे की ऊपर की ग्रैवेयक में जघन्य चौवीस उत्कृष्ट पचीस हजार वर्ष में, मध्य के नीचे की ग्रैवेयक में जघन्य पचीस हजार उत्कृष्ट छब्बीस हजार वर्ष में, मध्य के मध्य की ग्रैवेयक में जघन्य छब्बीस उत्कृष्ट सत्तावीस हजार वर्ष में, मध्य के ऊपर की ग्रैवेयक में जघन्य सत्तावीस उत्कृष्ट अट्ठावीस हजार वर्ष में ऊपर के नीचे की ग्रैवेयक में जघन्य अट्ठावीस उत्कृष्ट गुनतीस हजार वर्ष में ऊपर के मध्य की ग्रैवेयक में जघन्य गुनतीस उत्कृष्ट तीस हजार वर्ष में, ऊपर

सेण सत्तावीसाए, मज्झिमउवरिमाण पुच्छा ? गोयमा! जहण्णेण सत्तावीसाए उक्कोसेण अट्ठावीसाए, उवरिमहेट्ठिमाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अट्ठावीसाए उक्कोसेण एगुणतीसाए, उवरिममज्झिमाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एगुणतीसाए उक्कोसेण तीसाए, उवरिमउवरिमाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण तीसाए उक्कोसेण एक्कतीसाए, विजय वेजयंत जयंत अपराजियाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एक्कतीसाए उक्कोसेण तेत्तीसाए, सव्वट्ठगदेवाणं पुच्छा? गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसेण तेत्तीसाए वास सहस्साणं आहारट्ठे समुप्पज्जति ॥ १० ॥ णेरइयाण भंते ! किं एगींदियस सरीराइं आहारेंति जाव पंचिंदियसरीराइं आहारेंति ? गोयमा ! पुव्वभाव पण्णवण पडुच्च

की ऊपरकी ग्रैवेयक में जघन्य तीस हजार वर्ष में उत्कृष्ट एकतीस हजार वर्ष में आहारकी इच्छा होती है, विजय वेजयंत जयंत और अपराजित इन चार अनुत्तर विमान में जघन्य इकतीस हजार वर्ष में उत्कृष्ट तेतीस हजार वर्ष में आहार की इच्छा होती है और सर्वार्थ सिद्ध महा विमान में अजघन्योत्कृष्ट तेतीस हजार वर्ष बीते बाद आहार की इच्छा होती है ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! नारकी क्या एकेन्द्रिय के शरीर का आहार करते हैं कि यावत् पंचेन्द्रिय शरीर का आहार करते हैं ? अहो गौतम !

एगिंदियसरीराइंपि आहारेंति जाव पंचिंदियसरीराइंपि आहारेंति, पडुप्पन्नभावपण्णवणं पडुच्च णियमा पंचिंदिय सरीराइं आहारेंति, एवं जाव थणियकुमारा ॥ पुढवि काइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! पुव्वभाव पण्णवणं पडुच्च एवं चेव, पडुप्पणभाव पण्णवणं पडुच्च णियमा एगिंदिय सरीराइं आहारेंति ॥ बेइंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! पुव्वभाव पण्णवणं पडुच्च एवचेव, पडुप्पण्णभाव पण्णवणं पडुच्च नियमा बेइंदिय सरीराइं आहारेंती ॥ एवं जावं चउरिंदिया जाव पुव्वभाव

पूर्व के भाव की अपेक्षा अर्थात् आहारपने वे पुद्गल परिणम नहीं उस काल की अपेक्षा कर पहिले एकेन्द्रिय का शरीर का भी आहार करते हैं यावत् बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय पंचेन्द्रिय के शरीर के पुद्गलों का भी आहार करते हैं और प्रत्युपन्न (वर्तमान) कालकी अपेक्षा अर्थात् जिस वक्त वे ग्रहण किये पुद्गल आहारपने परिणमते हैं उस वक्त नियमा से पंचेन्द्रिय के शरीरका आहार करते हैं क्यों कि प्रथम ग्रहण किये पुद्गलों पंचेन्द्रिय के शरीरपने परिणमे हैं उस आभ्यन्तर शरीर का आहार करते हैं इस प्रकार यावत् स्तनित कुमार पर्यन्त कहना ॥ पृथ्वी काय की पृच्छा ? अहो गौतम ! पूर्व भाव की अपेक्षा तो एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के पुद्गलों का आहार करते हैं और वर्तमान की अपेक्षा एकेन्द्रिय के शरीर का आहार

पण्णवण पडुच्च एवमव, पडुप्पण भावपण्णवण पडुच्च नियमा जस्स जइ इंदियाइं तस्स इंदियसरीराइं ते आहारेंति सेसं जहा णेरइया जाव वेमाणिया ॥ णेरइयाणं भंते ! किं लोमाहारा पक्खेवाहारा ? गोयमा ! लोमाहारा णो पक्खेवाहारा, एवं एगिंदिया सव्व देवाय भाणियव्वा जाव वेमाणिया ॥ बेइंदिया जाव मणुस्सा लोमाहारावि पक्खेवाहारावि ॥ नेरइयाणं भंते ! ओयाहारा मणभक्खी ? गोयमा ! ओयाहारा णो मणभक्खी, एवं सव्वे उरालिय सरीरावि सव्वासव्वे जाव वेमाणिया ओयाहारावि

करते हैं ॥ बेइन्द्रिय की पृच्छा ? गौतम! पूर्व भाव की अपेक्षा एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक का आहार करते हैं प्रत्युत्पन्न कालापेक्षा नियमा बेन्द्रिय के शरीर का आहार करते हैं, यों ही यावत् पंचेन्द्रिय पर्यन्त कहना, पूर्व भाव प्रज्ञापना की अपेक्षा सब के लिये एक सा और प्रत्युत्पन्न भावापेक्षा, बेन्द्रिय तेन्द्रिय के शरीर का चौरिन्द्रिय चौरिन्द्रिय के शरीर का आहार करते हैं शेष कथन जैसा नेरीये का कहा तैसा कहना यावत् वैमानिक पर्यंत अहो भगवन् ! नेरीये के क्या लोम आहार है कि प्रक्षेप आहार है ? अहो गौतम ! लोम आहार है परन्तु प्रक्षेप आहार नहीं है यों एकेन्द्रिय और सब देवता का कहना इन सब के लोम आहार है प्रक्षेप आहार नहीं है तीनों विकलेन्द्रिय तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य के लोम आहार प्रक्षे

मणभक्खीवि, तत्थण जं ते मणभक्खी देवा तेसिण इच्छामणे समुप्पज्जति, इच्छामाण मणभक्खण करित्तए तएण तेहिं देवेहिं एवं मणसीकते समाणे खिप्पामेव जे पोग्गला इट्ठा कंता जाव मणामा एतेसिं मणभक्खत्ताए परिणमति से जहा णामए सीया पोग्गला सीयं पप्प सीयंचेव अतिवइत्ताण चिट्ठति, उसिणा वा पोग्गला उसिणं पप्प उसिणं चेव अतिवतित्ताण चिट्ठति, एवामेव तेहिं

आहार कितनों प्रकार के आहार हैं अहो भगवन् ! नारकी के ओज आहार (जो वस्तुओं की वस्तु ग्रहण कर वह) है कि मनभक्षी आहार (मन इच्छित पुद्गलों का ग्रहण) है ? अहो गौतम ! नारकी को ओज आहार है परंतु मन भक्षी आहार नहीं है यों सब औदारिक शरीर [पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय तिर्यंच पंचेन्द्रिय मनुष्य] में भी ओज आहार है परंतु मनभक्षी आहार नहीं है और भवनपति से यावत् वैमानिक पर्यंत चारों जाति के ओज आहार भी है और मनभक्षी आहार भी है उस में जो मनभक्षी आहार देवता के है वह जिस वक्त मन की इच्छा हो उस ही वक्त व मन भक्षी आहार कर उन देवता को इस प्रकार मन में विचार करते ही शीघ्र ही इष्टकारी कान्तकारी प्रियकारी मनोज्ञ मणाम पुद्गल उन के मन के मनोज्ञ परिणमते हैं यथादृष्टान्त—जिस प्रकार शीत योनिक जीव को शीतल पुद्गल मिले व उसे पाकर बहुत शीतलीभूत होवे परस्पर अंगीकार कर रहे जो उष्ण योनिक हैं उन को उष्ण पुद्गल

पण्णवण पडुच्च एवमेव, पडुप्पण भावपण्णवण पडुच्च नियमा जस्स जइ इंदियाइ तस्स इंदियसरीराइ ते आहारेंति सेस जहा णेरइया जाव वेमाणिया ॥ णेरइयाण भंते ! किं लोमाहारा पक्खेवाहारा ? गोयमा ! लोमाहारा णो पक्खेवाहारा एवं एगिंदिया सव्व एवाए भाणियव्वा जाव वेमाणिया ॥ बेइंदिया जाव मणुस्सा लोमाहारावि पक्खेवाहारावि ॥ नेरइयाण भंते ! ओयाहारा मणभक्खी ? गोयमा ! ओयाहारा णो मणभक्खी, एवं सव्वे उरालिय सरीरावि एवासव्वे जाव वेमाणिया ओयाहारावि

करते हैं ॥ बेइन्द्रिय की पृच्छा ? गौतम ! पूर्व भाव की अपेक्षा एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक का आहार करते हैं प्रत्युत्पन्न भावापेक्षा नियमा बेन्द्रिय के शरीर का आहार करते हैं, यों ही यावत् पंचेन्द्रिय पर्यन्त कहना, पूर्व भाव प्ररूपना की अपेक्षा सब के लिए एक सा और प्रत्युत्पन्न भावापेक्षा, बेन्द्रिय तेन्द्रिय के शरीर का चौरिन्द्रिय चौरिन्द्रिय के शरीर का आहार करते हैं शेष कथन जैसा नेरिये का कहा वैसा करना यावत् वैमानिक पर्यंत अहो भगवन् ! नेरीये के क्या लोम आहार है कि प्रक्षेप आहार है ? अहो गौतम ! लोम आहार है परंतु प्रक्षेप आहार नहीं है यों एकेन्द्रिय और सब देवता का कहना इन सब के लोम आहार है प्रक्षेप आहार नहीं है तीनों विकलेन्द्रिय तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य के लोम आहार प्रक्षे

कि आहारए अणाहारए ? गोयमा ! णो आहारए अणाहारए ॥ २ ॥ जीवाणं भंते ! किं आहारया अणाहारया ? गोयमा ! आहारयावि अणाहारयावि ॥ णेरइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! सव्वेवि ताव होज्जा आहारगा अहवा आहारगाय अणाहारएय, अहवा आहारगाय अणाहारगाय, एवं जाव वेमाणिया, णवरं एगेंदिया जहा जीवा ॥ सिद्धाणं पुच्छा ? गोयमा ! णो आहारगा अणाहारगा ॥ ३ ॥ भवसिद्धिएणं

अहो गौतम ! सिद्ध सदैव अनाहारक ही होते हैं ॥ २ ॥ अब बहुत जीवों आश्रिय कहते हैं अहो भगवन् ! जीवों आहारक हैं कि अनाहारक हैं ? अहो गौतम ! आहारक भी हैं और अनाहारक भी हैं नारकी का प्रश्न ? अहो गौतम ! सब तैसे ही होवे आहारक जीव बहुत होते हैं परंतु विरहकाल में [मिश्र गतिकाल नहीं मिलनेसे अनाहारक नहीं पावे अथवा किसीवक्त आहारक बहुत होवे और अनाहारक एक होवे, और किसी वक्त में आहारक भी बहुत होवे तथा अनाहारक भी बहुत होवे, आहारक बहुत संसारी जीव आश्रिय और अनाहारक बहुत सिद्ध आश्रिय तथा निगोद में समय २ अनंत जीव [ ]ग्रहगति में पाते हैं वे अनाहारक ही होते हैं इस आश्रिय एस ही तीन भांग नारकी से यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना जिस में इतना विशेष एकेन्द्रिय के पांच दंडक छोड देना क्यों कि एकेन्द्रिय में समय २ संख्यात असंख्यात अनंत जीवों उत्पन्न होते हैं सिद्ध आश्रिय पृच्छा ? अहो गौतम ! सिद्ध आहारक नहीं है परंतु अनाहारक हैं ॥ ३ ॥ दूसरा भव्याभव्य द्वार—अहो भगवन् ! भव्य सिद्धिक

भते ! जीवे किं आहारए अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए सिय अणाहारए एवं जाव वेमाणिए ॥ भव सिद्धियाण भत ! जीवा किं आहारगा अणाहारगा ? जीवे गिंदियवज्जा तियभगा ॥ अभवसिद्धिएवि एवचेव णा भवसिद्धिए णो अभवसिद्धिएण भते ! जीव किं आहारए अनाहारए ? गायमा ! णो आहारए आणाहारए एव सिद्धा भवसिद्धिया ना अभवसिद्धिया किं आहारगा अणाहारगा ? गोयमा ! णो आहारगा अणहारगा एव सिद्धवि ॥ ४ ॥ सण्णीण भत ! जीवे किं आहारए

जीव आहारक हैं कि अनाहारक हैं ? अहो गौतम ! कदाचित आहारक हैं कदाचित् अनाहारक हैं यो यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना अब बहुत जीव आश्रिय कहते हैं अहो भगवन् ! भव्य सिद्धिक जीवों आहारक हैं कि अनाहारक हैं ? अहो गौतम ! एकेन्द्रिय छोडकर बाकी सर्व स्थान पूर्वोक्त प्रकार तीनों ही भांग पाते हैं ऐसे ही अभव्य सिद्धिक जीवों का भी कहना णो भव्य सिद्धिक णो अभव्य सिद्धिक सिद्ध भगवन्त सदैव अनाहारक ही होते हैं ऐसे ही बहुत जीवों और सिद्धों आश्रिय कहना ॥ ४ ॥ तीसरा सज्ञा द्वार—अहो भगवन् ! सज्ञी जीव क्या आहारक हैं कि अनाहारक हैं ? अहो गौतम ! सज्ञी कदाचित् आहारक हैं कदाचित अनाहारक हैं [विग्रहगतिवाले के मन नहीं होनेसे सज्ञी नहीं कहा जाता है परन्तु जो विग्रहगति से सज्ञी होनेवाला है पर सज्ञा का आयुष्य वेदता है उस सज्ञी को यहां ग्रहण किया है] यों यावत् वैमानिक तक चौवीस ही दंडक कहना परन्तु पांच दंडक

अणाहारए? गोयमा! सिय आहारए सिय अणाहारए, एवं जाव वेमाणिए, णवर एगिंदिय विगलिंदिया ण पुच्छिज्जति॥ सण्णीण भंते! जीवा किं आहारगा अणाहारगा? गोयमा! जीवा-इआ तियभंगा जाव वेमाणिया॥ असण्णीणं भंते! जीवे किं आहारए अणाहारएय? गोयमा! सिय आहारए सिय अणाहारए एवं णरइए जाव वाणमंतरे नो रए जोइसिय वेमाणिए ण पु च्छिज्जति असण्णीण भंते! जीवा किं आहारगा अणाहारगा? गोयमा! आहारगावि अणा

एकेन्द्रिय के और तीन दण्डक विकलेन्द्रिय के नहीं कहना बहुत सन्नी जीव आहारक हैं कि अनाहारक हैं? अहो गौतम! मनुष्य के जीव के भेद तीनों भांगे कहना यावत् वैमानिक पर्यन्त अहो भगवन्! असंज्ञी जीव आहारक है कि अनाहारक है? अहो गौतम! कदाचित् आहारक है कदाचित् अनाहारक है यों नेरिये से यावत् वाणव्यन्तर देव तक कहना आगे असंज्ञी नहीं है इस लिये ज्योतिषी वैमानिक की पृच्छा नहीं करना॥ बहुत असंज्ञी जीवों आहारक हैं कि अनाहारक हैं? अहो गौतम! आहारक भी बहुत हैं अनाहारक भी बहुत हैं यह एक ही भांगा पाता है क्यों कि एकेन्द्रिय में सदैव बहुत पाते हैं॥ अहो भगवन्! असंज्ञी नेरिया आहारक हैं कि अनाहारक हैं? अहो गौतम! छ भांग पाते हैं? आहारक बहुत और अनाहारक नहीं क्योंकि बहुत से असंज्ञी जीव प्रथम नरक में उत्पन्न हो आहार-पर्याप्ति का बंध किया है वे आहारक हो चुके परन्तु मन भाषा पर्याप्ति बन्ध कर पूर्ण पर्याप्त

हारगावि, एगोभंगो॥ असण्णीणं भंते ! णेरइया किं आहारगा अणाहारगा? गोयमा! आहारगावि अणाहारगावि अहवा आहारएय अणाहारएय अहवा आहारएय अणाहारगाय, अहवा आहारगाय अणाहारएय, अहवा आहारगाय अणाहारगाय एवं एते छभंगा एवं जाव थणियकुमारा, एगिंदिएसु अभंगयं ॥ बेइंदिय जाव पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएसु तियभंगा, मणुस्स वाणमंतरेसु छ भंगा ॥ णो सण्णी णो असण्णीणं

अवस्था को प्राप्त न हुए इस लिये असंज्ञी गिने जाते हैं उस पक्ष असंज्ञी विग्रह गती में कोई भी नहीं है, जिस से अनाहारक नहीं २ आहारक नहीं अनाहारक भी बहुत अर्थात् बहुत से असंज्ञी जीव मरकर नरक के रास्ते में विग्रह गति पर गमन कर रहे हैं वे नरकका आनुपूर्वी है इस लिये अनाहारक बहुत परंतु उस पक्ष अपर्याप्त नरक में असंज्ञी एक भी नहीं है ३ अथवा आहारक भी एक और अनाहारक भी एक अर्थात् दो जीव नरकायु बांधकर चले जिस में एक जीव तो उत्पन्न हो आहार पर्याप्त से पर्याप्त हुआ है और एक जीव विग्रह गति में है ४ अथवा आहारक एक, अनाहारक बहुत, ५ अथवा आहारक बहुत अनाहारक एक, और ६ आहारक बहुत और अनाहारक भी बहुत ॥ यों छभांगे मानना ऐसे ही यावत् स्थनितकुमार पर्यन्त कहना एकेन्द्रिय में भांगा नहीं पाता है क्यों कि आहारक अनाहारक दोनों अनंत ही पाते हैं बेइन्द्रिय से लगाकर पंचेन्द्रिय तक तीन भांग पाते हैं

भंते ! जीवे किं आहारए अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए सिय अणाहारए, एवं मणुस्सावि सिद्धे अणाहारगए ॥ पुहत्तेण णो सण्णी णोअसण्णी जीवा आहारगावि अणाहारगावि मणुस्सेसु तियभंगो, सिद्धा अणाहारगा ॥ ५ ॥ सलेसेण भंते ! जीवे किं आहारए अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए सिय अणाहारए एवं

अथवा—१ विग्रहगति में कोई न हो तब सब अनाहारक बहुत होवे, २ अथवा आहारक बहुत अनाहारक एक, क्यों कि विग्रहगति में एक ही जाव पावे तब और ३ आहारक भी बहुत अनाहारक भी बहुत मनुष्य आश्रिय १ और वाणव्यंतर आश्रिय नरक के जैसे छ ही भांगे पाते हैं अहो भगवन् ! णो सन्नी णो असन्नी जीव आहारक हैं कि अनाहारक हैं ? अहो गौतम ! स्यात् आहारक भी हैं क्यों कि ना संज्ञी ना असन्नी केवल ज्ञानी हैं उस में समुद्घात करते तीसरे चौथे पांचवे समय अथवा सिद्ध भगवंत तो अनाहारक है बाकी के अवस्थ केवली आहारक हैं ऐसे ही मनुष्य का भी कहना और सिद्ध अनाहारक हैं बहुत णो सन्नी णो असन्नी जीवों आहारक भी बहुत हैं क्यों कि जघन्य दो क्रोड केवली पाते हैं और अनाहारक भी बहुत हैं क्यों कि अनंतसिद्ध हैं, बहुत मनुष्यों में उक्त तीन भांग पाते हैं, केवल समुद्घात आश्रिय बहुत सिद्ध सदैव आहारक हैं ॥ ५ ॥ लेश्या द्वार—अहो भगवन् ! सलेशी जीव आहारक हैं कि अनाहारक हैं ? अहो गौतम ! कदाचित्

जाव वेमाणिए ॥ सलेसाण भंते ! जीवा किं आहारगा अणाहारगा ? गोयमा ! जीवेगिंदिय वज्जो तियभंगो ॥ एवं कण्हलेस्साएवि णीललेस्साएवि काऊलेस्साएवि, जीव एगिंदियवज्जो तियभगो ॥ तेऊलेस्साए पुढवि आऊवणस्सति काइयाण छभंगा, सेसाण जीवादिओतियभगो जेसिं अत्थि तेऊलेस्सा, पम्हलेस्साए सुक्कलेस्साएय जीवादिओ तियभगो ॥ अलेसा जीवा मणुस्सा सिद्धाय एगत्तेणवि पुहुत्तेणवि णो आहारगा अणाहारगा ॥ ९ ॥ सम्मदिट्ठीण भंते ! जीवे किं आहारए अणाहारए ?

आहारक हैं कदाचित् अनाहारक हैं, यों यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना बहुत सलेशी जीव आहारक हैं कि अनाहारक हैं ? अहो गौतम ! एकेन्द्रिय छोड बाकी सर्वस्थान तीन भांग कहना सलेशी का कहा वैसा ही कृष्ण नील कापोत लेशी का कहना सब के एकेन्द्रिय छोडकर तीन २ भांगे कहना तेजो लेश्या आश्रित पृथ्वी पानी वनस्पति आश्रित छ भांग असन्नी नारकी कहे वैसे ही कहना शेष स्थान में जीवादिक सब स्थान में छ भांगे कहना जिस २ स्थान तेजो लेश्या हो उस २ स्थान का कहना ॥ पद्मलेश्या और शुक्ललेश्या के जीवादि सर्वस्थान तीन भांगे कहना समुच्चय जीव मनुष्य तिर्यंच पंचेन्द्रिय और वैमानिक इन में पाती है, समुच्चय अलेशी जीव अलेशी मनुष्य और सिद्ध पद आहारक नहीं परंतु अनाहारक हैं ॥ ३ ॥ पांचवा दृष्टी द्वार—अहो भगवन् ! सम्यक् दृष्टी जीव आहारक हैं कि

छ भांगे		
	आ	अना
१	३	
२	०	३
३	१	१
४	१	३
५	३	१
६	३	३

तीन भांगे		
	आ	अना
१	३	०
२	३	१
३	३	३

गोयमा ! सिय आहारगाय सिय अणाहारगा ॥ बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय छभगा, सिद्धा अणाहारगा अवसेसाण तियभगो॥ मिच्छदिट्ठीसु जीवे एगिंदिय वज्जा तियभगो, ॥ सम्मामिच्छदिट्ठीण भंते ! किं आहारए अणाहारए? गोयमा! आहारए णो अणाहारए, एवं एगिंदिय विगलिंदिय वज्ज जाव वेमाणिए ॥ एवं पुहुत्तेणवि ॥ ७ ॥ सजएण भंते ! जीवे किं आहारए अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए सिय अणाहारए, एवं मणुस्सेवि ॥ पुहुत्तेणं तियभंगो ॥ असजएण पुच्छा ? गोयमा ! सिय आहारए सिय अणाहारए, पहुत्तेण जीवेगिंदिय

अनाहारक है ? गौतम ! कदाचित आहारक है कदाचित अनाहारक है सम्यग् दृष्टी बेइंद्रिय तेइन्द्रिय चौरिन्द्रिय में छ भांग कहना, सिद्ध सम्यक दृष्टी अनाहारक है, बाकी सबमें तीन भांग पाते हैं ॥ मिथ्यात्वी जीव के एकेन्द्रिय छोडकर बाकी सर्व स्थान तीन भांग ॥ और समामिथ्या (मिश्र दृष्टी जीव आहारक ही होते हैं क्योंकि मिश्र दृष्टी पर्याप्त अवस्था में ही पाती है एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय छोडकर क्योंकि इन में मिश्र दृष्टी नहीं पाती है, बाकी सर्व स्थान यावत् वैमानिक पर्यंत कहना ॥ ऐसेही बहुत जीवों आश्रिय भी कहना ॥ ७ ॥ छठा संयति द्वार—अहो भगवन् ! संयति जीव आहारक हैं कि अनाहारक हैं ? अहो गौतम ! स्यात् आहारक हैं और स्यात् अनाहारक भी हैं । केवल

घज्जो तियभंगो सजया सजते जीवे पचिंदिय तिरिक्खजोणिए मणूस्सेय, एते एगत्तेणवि पुहुत्तेणवि आहारगा अणाहारगा नो संजते नो असंजते नोसंजतासंजत जीवे सिद्धेय एते एगत्ते पुहुत्तेणवि नोआहारगा अणाहारगा॥८॥ सकसाईण भंते! जीवे किंआहारगे अणा-हारगे? गोयमा! सिय आहारए सिय अणाहारए, एव जाव वेमाणिए, पुहुत्तेणं जीवेगिंदिय वज्जो तियभंगा, कोहकसाईसु जीवादिसु एवचेव णवरं देवेसु छभंगा, माणकसाईसु

समुद्घात आश्रिय तथा सेलेशी अवस्थावाला एमेही मनुष्यका भी कहना बाकी अन्यस्थान सयति नही है बहुत जीव आश्रिय तीन भांगे कहना १ सब आहारक होवे अब समुद्घातक तथा सेलेशी कोई न होवे, २ आहारक बहुत अनाहारक एक जब एक समुद्घाती होवे तथा सेलेशी अवस्था में हो तब और ३ आहारक भी बहुत और अनाहारक भी बहुत, समुद्घाती होवे तथा सेलेशी बहुत होवे तब यह ३ भांग ॥ असंयति का प्रश्न ? अहो गौतम ! कदाचित् आहारक हैं कदाचित् अनाहारक हैं, बहुत जीव आश्रिय एकेन्द्रिय छोडकर तीन भांग सयतासंयति की (श्रावक) तिर्यंच योनिक और मनुष्य में ही पाते हैं पर एक जीव अथवा बहुत जीव आहारक ही होते हैं परंतु अनाहारक नहीं होते हैं नो संयति नो असंयति नो संयतासंयति जीव सिद्ध एक अथवा अनेक आहारक नहीं है परंतु अनाहारक हैं ॥ ८ ॥ सातवा कषाय द्वार—अहो भगवन् ! सकषायी जीव क्या आहारक हैं कि अनाहारक हैं ? अहो गौतम ! स्यात् आहारक हैं स्यात् अनाहारक हैं यों यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना. बहुत जीव आश्रिय एकेन्द्रिय छोडकर

रइणेरईएसु छभगा अवसेसाण जीवे एगिंदियवज्जो तियभंगो मायाकसाइ लोभक साइसु देवणरईएसु छभगा अवसेसेसु जीवेगिंदियवज्जो तियभगो, अकसाइ जहा णा सण्णी णोअसण्णी ॥ १ ॥ णाणी जहा सम्मदिट्ठी, आभिणि बोहियणाणी सुयणाणीसु बइंदिय तेइंदिय चउरिंदिएसु छभगा, अवसेसेसु जीवादीओ तियभगो, जेसिं अत्थि ओहिणाणी पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया मणुस्साय आहारगा णोअणाहारगा, अवसेसेसु जीवादिओ तियभगो, जेसिं अत्थि ओहिणाण मणपज्जव

सर्व स्थान तीन भांगे पावे हैं, क्रोध कषायवाले समुच्चय जीव से यावत् चौवीस ही दंडक का भी इस ही प्रकार कहना जिस में इतना विशेष-देवता में छ भांग कहना क्यों कि देवता में लोभ कषाय सब से ज्यादा है इस लिये क्रोध कषायवाले एकादि मिलते हैं, मान कषायवाले के देवता नारकी में छ भांग एक प्रकार ही और सब जीवों में एकेन्द्रिय छोडकर तीन भांग पावे माया कषाय और लोभ कषाय वाले देवता नरक में छ भांगे अपर शेष एकेन्द्रिय छोडकर सब जीवों में तीन भांगे अकषायी का जैसा ना सन्नी नो असन्नी का कहा तैसा कहना ॥२॥ आठवा ज्ञान द्वार समुच्चय ज्ञानी का जैसे सम्यक्दृष्टीका कहा तैसा कहना मति ज्ञानी श्रुत ज्ञानी आश्रिय बेइन्द्रिय तेइंद्रिय चौरिंद्रिय की अपेक्षा छ भांग कहना अपर शेष जीवादिक की अपेक्षा तीन भांग जिस में दो ज्ञान पावे हो उस में कहना अवधि ज्ञानी तिर्यंच पचेंद्रिय में तो आ

णाणी जीवा मणुस्साय एगत्तेणवि पुहुत्तेणवि, आहारगा णो अणाहारगा, कवलणाणी जहा णोसण्णी णोअसण्णी॥ अण्णाणी मतिअण्णाणी सुयअण्णाणी जीवएगिंदियवज्जो तियभंगो विभंगणाणी पाचिंदिय तिरिक्खजोणिया मणूसाय आहारगा नो अणाहारगा अवसेससु जीवादिओ तियभंगो ॥१०॥ सजोगी जीवएगिंदियवज्जो तियभंगा, मणजोगी वइजोगीय जहा सम्मामिच्छादिट्ठी णवरं वइजोगी विगलिंदियाणवि, कायजोगीसु जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, ॥ अजोगी जीव मणुस्स सिद्धा अणाहारगा

हारक हैं परन्तु अनाहारक नहीं होता है अपर शेष समुच्चय जीवमें और एकेन्द्रिय विकलेन्द्रिय छोडकर सब जीवोंमें तीन भांगे कहना, जिस में अवधि ज्ञान पावे उस में मन पर्यव ज्ञानी समुच्चय जीव और मनुष्य एक तथा बहुत आहारक ही होते हैं परंतु अनाहारक नहीं होते हैं केवल ज्ञानीका जैसा नोसंज्ञी नोअसंज्ञीका कहा वैसा कहना आठवा अज्ञान द्वार—मति अज्ञानी श्रुति अज्ञानी का एकेन्द्रिय छोड कर तीन भांगे कहना विभंगज्ञानी पंचेन्द्रिय तिर्यंच में मनुष्य में आहारक ही होते हैं अनाहारक नहीं होते हैं अपर शेष समुच्चय जीवादि में तीनों भांग पाते हैं ॥ १० ॥ योग द्वार—सजोगी में एकेन्द्रिय छोड तीनों भांगे पाते हैं, मनयोगी वचन योगी का जैसा सम्यक् दृष्टी का कहा वैसा कहना (एक वचन आश्रिय आहारक ही होते हैं) जिस में इतना विशेष वचन योगी विकलेन्द्रिय में भी कहना काया योगी का एकेन्द्रिय छोड कर तीन भांगे कहना अयोगी समुच्चय जीव मनुष्य अजोगी और सिद्ध यह अनाहारक ही होते हैं॥११॥

॥ ११ ॥ सागार अणागारउवउत्तेसु जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, सिद्धा अणाहारगा ॥ १२ ॥ सवेदी जीव एगिंदिय वज्जो तियभंगो, इत्थिवेद पुरिसवेदसु जीवादिओ तियभंगो णपुंसगवेदेय जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, अवेदएय जहा केवलणाणी ॥ १३ ॥ ससरीर जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, ओरालिय सरीरेसु जीव मणुस्सेसु तियभंगा अवसेसा आहारगा नो अणाहारगा, जेसिं अत्थि ओरालिय सरीर वेउव्विय सरीरी आहारग सरीरीय आहारगा णो अणाहारगा, जेसिं अत्थि,

दसवा उपयोग द्वार—साकार उपयोगी और अनाकार उपयोगी, दोनों में एकेन्द्रिय छोड़ कर बाकी सब जीव में तीन भांग सिद्ध अनाहारक ही होवे है॥ १२॥ इग्यारवा वेद द्वार—सवेदी में समुच्चय जीव आश्रिय एकेन्द्रिय छोड़कर तीन भांग स्त्री वेद पुरुष वेद में सर्व स्थान तीन भांग नपुंसक वेद के एकेन्द्रिय छोड़कर सर्व स्थान तीन भांगे अवेदी का जैसा केवल ज्ञानी का कहा वैसा कहना ॥ ११ ॥ बारवा शरीर द्वार—सशरीर जीव में एकेन्द्रिय छोड़कर तीन भांगे औदारिक शरीर आश्रिय समुच्चय जीव और मनुष्य में तीन भांगे केवल समुद्धात आश्रि अपर शेष आहारक भी बहुत अनाहारक भी बहुत जिन जीव के औदारिक शरीर पाता हो उन का कहना वैक्रय शरीरी और आहारक शरीरी आहारक है परंतु अनाहारक नहीं है जिन के वैक्रय शरीर हो उन का नाम लेना तेजस और कार्मन शरीर जीव

तेयकम्मगसरीरी जोगेगिंदियवज्जो तियभगो सरीरी जीवा सिद्धाय नो आहारगा अणाहारगा ॥ १४ ॥ आहार पज्जत्ती पज्जत्तए सरीरपज्जत्ती पज्जत्तए इंदियपज्जत्ति पज्जत्तए आणापाण पज्जत्ति पज्जत्तए एतासु चउसुवि पज्जत्तीसु जीवेसु मणुस्सेसुय तीय भगो अवसेसा आहारगा णो अणाहारगा, भासामणपज्जत्ति पंचिंदियाण अवसेसाण णत्थि ॥ आहार पज्जत्तिअपज्जत्तए णो आहारए अणाहारए, एगत्तेणवि पुहुत्तेणवि, सरीरपज्जत्ती अपज्जत्तए सिय आहारए सिय अणाहारए ॥ उवरिल्लियासु चउसु अपज्जत्तिसु

एकेन्द्रिय छोडकर तीन भांगे, अशरीरी सिद्ध अनाहारक हैं ॥ १४ ॥ तेरहवा पर्याप्त द्वार—आहारपर्याप्त से पर्याप्त, शरीर पर्याप्त से पर्याप्त, इन्द्रिय पर्याप्त से पर्याप्त, श्वासोश्वास पर्याप्त से पर्याप्त, इन में चार पर्याप्त जीव मनुष्य में तीन भांगे केवली आश्रिय बाकी सर्वस्थान आहारक जानना परंतु अनाहारक नहीं है, भाषा मनपर्याप्त पंचेन्द्रिय में है अपर शेष स्थान में नहीं है. आहार पर्याप्त में अपर्याप्त अनाहारक हैं परंतु आहारक नहीं है क्यों कि प्रथम आहार पर्याप्त ही है इस बिना विग्रह गति वाले जीव ही होते हैं एक जीव आश्रिय और बहुत आश्रिय ऐसा ही कहना २ शरीर पर्याप्त में अपर्याप्त हुवा स्यात् आहारक है स्यात् अनाहारक है इन दो पर्याप्त का छोड बाकी की चार पर्याप्त से अपर्याप्त

नेरइय देव मणुस्सेसु छभंगा, अवसेसाणं जीवेगिंदियवज्जो तियभंगो, भासामण पज्जत्तिए जीवेसु पंचिंदिय तिरिक्खजोणिएसुय तियभंगो णेरइयदेवमणुस्सेसु छभंगा सव्वपदेसु ॥ एगत्तपुहुत्तेणं जीवादिओ दंडगा पुच्छाए भाणियव्वा, जस्स जं अत्थि तस्स तं पुच्छिज्जति जं णत्थि तं न पुच्छिज्जति जाव भासा मणपज्जत्तिएसु अपज्जत्तए नेरइय देव मणुस्सु छभंगा, सेसेसुय तियभंगा ॥ इतिबीओ उद्देसो सम्मत्तो ॥ २८ ॥ २ ॥ पण्णवणा भगवईए अट्ठावीसम आहारपय सम्मत्त ॥ २८ ॥ + ×

में नरक देव मनुष्य में छ भांगे पाते हैं अपर शेष जीव में एकेन्द्रिय छोडकर तीन भांगे पाते हैं भाषा मन पर्याप्त जीव में तिर्यंच योनिक में तीन भांगे नरक देवता मनुष्य में छ भांगे यह अधिकार से आगा सब पद में एक जीव आश्रिय तथा बहुत जीव आश्रिय जीवादि दंडक की पृच्छा करना, जिस के जो हो उस की पृच्छा करनी नहीं हो तो न पूछना यावत् भाषा मन पर्याप्ति से अपर्याप्त देव मनुष्य नेरीये में छ भांगे शेष स्थान तीन भांगे इति द्वितीयोद्देशा समाप्त ॥ २ ॥ इति पन्नवना भगवति का अठावीसवा आहार पद समाप्तम् ॥ २८ ॥ + ×

❋ एकोनत्रिंशत्तम उपयोग पदम् ❋

कतिविहण भंते ! उवओगे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे उवओगे पण्णत्ते तंजहा सागारउवओगेय अणागारोवओगेय ॥ १ ॥ सागारोवओगेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! अट्ठविहे पण्णत्ते तंजहा आभिणिबोहियणाण सागारोवओगे, सुयणाण सागारोवओगे ओहिणाण सागारोवओगे, मणपज्जवणाण सागारोवओगे, केवलणाण सागारोवओगे ॥ मतिअण्णाण सागारोवओगे, सुयअण्णाण सागारोवओगे, विभंगणाण सागारोवओगे ॥ २ ॥ अणागारोवओगेणं भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा !

अब ज्ञान परिणाम पद कहते हैं—अहो भगवन् ! कितने प्रकार के उपयोग कहे हैं ? अहो गौतम ! दो प्रकार के उपयोग कहे हैं तद्यथा-१ साकार उपयोग सो ज्ञान का और २ अनाकार उपयोग सो दर्शन का ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! साकार उपयोग के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! आठ भेद कहे हैं तद्यथा-१ अपनी स्वयं की मति कर जाने सो आभिनिबोधिक ज्ञान साकार उपयोगी २ शब्द श्रवण कर जाने सो श्रुत ज्ञान ३ मर्यादा युक्त द्रव्यादि जाने सो अवधि ज्ञान, ४ मन के सूक्ष्म पर्याय को जाने सो मन पर्यव ज्ञान और ५ सब द्रव्यादि का जाने सो केवल ज्ञान ६ विपरीत बुद्धि होवे सो मति अज्ञान ७ पढ़सुन कर जाने सो श्रुत अज्ञान, और ८ विपरीत द्रव्यादि जाने सो विभंग ज्ञान

चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा चक्खुदंसण अणागारोवओगे, अचक्खुदंसण अणागारोवओगे, ओहिदंसण अणागारोवओगे, केवलदंसण अणागारोवओग ॥ एवं जीवाणं॥ ३ ॥ नेरइयाणं भंते ! कतिविहे उवओगे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे उवओगे पण्णत्ते तंजहा-सागारोवओगेय अणागारोवओगेय ॥ नेरइयाणं भंते ! सागारोवओगे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! छव्विहे पण्णत्ते तंजहा मतिणाण सागारोवओगे, सुयणाण सागारोवओगे ओहिणाण सागारोवओगे मतिअण्णाण सागारोवओगे, सुयअण्णाण सागारोवओगे, विभंगणाण सागारोवओग ॥ नेरइयाणं भंते ! अणागारोवओग

॥ २ ॥ अहो भगवन् ! अनाकार उपयोग के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! चार भेद कहे हैं तद्यथा—१ चक्षु इन्द्रिय कर देखे वह चक्षु दर्शन २ चक्षु बिना चार इन्द्रिय कर तथा मन कर देखे वह अचक्षु दर्शन ३ अवधि कर देखे वह अवधि दर्शन, और ४ सब द्रव्यादि देखे वह केवल दर्शन यों समुच्चय जीव के उपयोग के १२ भेद कहे हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! नेरिये के कितने प्रकार के उपयोग कहे हैं ? अहो गौतम ! दो प्रकार के उपयोग कहे हैं तद्यथा—१ साकार उपयोग, और २ अनाकार उपयोग अहो भगवन् ! नेरिये में साकार उपयोग के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! छ भेद कहे हैं तद्यथा—१ मति ज्ञान, २ श्रुति ज्ञान, ३ अवधि ज्ञान, ४ मति अज्ञान, ५ श्रुति अज्ञान और

* एकोनत्रिंशत्तम उपयोग पदम् *

कतिविहेण भते ! उवओगे पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविहे उवओगे पण्णत्ते तंजहा सागारवउगेय अणागारोवउगय ॥ १ ॥ सागारोवऊगेयण भते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! अट्ठविहे पण्णत्ते तंजहा आभिणिबोहियणाण सागारोवओग, सुयणाण सागारोवओगे ओहिणाण सागारोवओगे, मणपज्जवणाण सागारोवओग केवलणाण सागारोवओगे ॥ मतिअण्णाण सागारोवओगे सुयअण्णाण सागारोवओगे, विभगणाण सागारोवओगे ॥ २ ॥ अणागारोवओगेण भंते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा !

अब ज्ञान परिणाम पद कहते हैं—अहो भगवन् ! कितने प्रकार के उपयोग कहे हैं ? अहो गौतम ! दो प्रकार के उपयोग कहे हैं तद्यथा-१ साकार उपयोग सो ज्ञान का और २ अनाकार उपयोग सो दर्शन का ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! साकार उपयोग के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! आठ भेद कहे हैं तद्यथा-१ अपनी स्वयं की मति कर जाने सो आभिनिबोधिक ज्ञान साकार उपयोगी २ शब्द श्रवण कर जाने सो श्रुत ज्ञान ३ मर्यादा युक्त रूप्यादि जाने सो अवधि ज्ञान, ४ मन के सूक्ष्म पर्याय को जाने सो मनःपर्यव ज्ञान और ५ सब द्रव्यादि को जाने सो केवल ज्ञान ६ विपरीत बुद्धि होवे सो मति अज्ञान ७ सत्सूत्र कर जाने सो श्रुत अज्ञान, और ८ विपरीत द्रव्यादि जाने सो विभंग ज्ञान

गोयमा ! दुविहे उवओगे पण्णत्ते तंजहा-सागारेय, अणागारेय ॥ बेइंदियाण भते ! सागारोवओगे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउव्विहे पण्णत्ते तंजहा आभिणिबोहिय णाण सागारोवओगे,सुयणाण सागारोवओगे,मतिअण्णाण सागारोवओगे, सुयअण्णाण सागारोवओग ॥ बेइंदियाण भते ! अणागारोवउगे कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! एगे अचक्खु दसण अणागारोवओगे।एव तेइंदियाणवि। चउरिंदियाणवि एवचेव णवरं अणागा रोवओग दुविहे पण्णत्ते तंजहा चक्खु दसण अणागारोवउगेय अचक्खु दसण अणागारोव ओगय पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाणं जहा णेरइयाण ॥ मणुस्साण जहा ओहिए उवओगे

बेइन्द्रिय पूछा ! अहो गौतम ! दो प्रकार के उपयोग कहे हैं तद्यथा—१ साकार उपयोग और २ अनाकार उपयोग अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय का साकार उपयोग कितने प्रकार का कहा है ? अहो गौतम ! चार प्रकारका कहा है तद्यथा—१ मतिज्ञान, २ श्रुतिज्ञान, ३ मति अज्ञान और ४ श्रुति अज्ञान अनाकार उपयोग कितने प्रकार का कहा है ? अहो गौतम ! एक अचक्षुदर्शन अनाकार उपयोग कहा है ऐसे ही तेन्द्रिय चौरिन्द्रिय का भी कहना जिस में इतना विशेष चउरींद्रिय में अनाकार उपयोग दो प्रकार का—१ चक्षुदर्शन और २ अचक्षुदर्शन पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक का जैसा नेरीया का कहा वैसा छ साकार उपयोग और तीन अनाकार उपयोग कहना मनुष्य का जैसे समुच्चय जीव का कहा वैसे बारे

भणिते तहेव भाणियव्वं वाणमंतर जोइसिय वेमाणियाण जहा नेरइयाण ॥ ४ ॥ जीवाणं भंते ! किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता ? गोयमा ! सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति जीवा सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि? गोयमा ! जेणं जीवा आभिणिबोहियणाण सुयणाण ओहिणाण मणपज्जवणाण केवल णाणमतिअण्णाण सुयअण्णाण विभंगणाणोवउत्ता तेणं जीवा सागारोवउत्ता जेणं जीवा चक्खुदंसण अचक्खु दंसण ओहिदंसणा केवलदंसणो वउत्ता तेणं जीवा अणागारोवउत्ता, से तेणट्ठेणं गोयमा !' एवं वुच्चति जीवा सागारो

उपयोग कहना, और वाणव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक के जैसा नेरीय का कहा वैसा कहना ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! जीव क्या साकार उपयोगी है कि अनाकार उपयोगी है? अहो गौतम ! जीव साकार उपयोगी है और अनाकार उपयोगी है अहो भगवन् ! किस कारन ऐसा कहा कि जीव साकार उपयोगी भी है और अनाकार उपयोगी भी है ? अहो गौतम ! जो जीव मतिज्ञानी श्रुतिज्ञानी अवधि ज्ञानी मनःपर्यव ज्ञानी केवल ज्ञानी मतिअज्ञानी श्रुतिअज्ञानी विभंग ज्ञानी है वह साकार उपयोगी है और जो जीव चक्षुदर्शनी अचक्षु दर्शनी अवधि दर्शनी केवल दर्शनी है वे जीव अनाकार उपयोगी है इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहा कि जीव

वउत्तावि अणागारोवउत्तावि ॥णेरइयाणं भंते ! किं सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ता? गोयमा ! नेरइया सागारोवउत्तावि अणागारोवउत्तावि ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति ? गोयमा ! णेरइया जेणं आभिणिबोहियणाण सुयणाण ओहिणाण, मतिअण्णाण सुय अण्णाण विभंगणाणो वउत्ता तेण नेरइया सागारोवउत्ता, जेणं नेरइया चक्खुदंसण अचक्खुदंसण ओहिदंसणोवउत्ता तेण नेरइया अणागारोवउत्ता, से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चति जाव अणागारोवउत्तावि एवं जाव थणियकुमारा ॥ पुढविकाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! तहेव जाव जेणं

साकार उपयोगी भी है और अनाकार उपयोगी भी है अहो भगवन्! नेरिये साकार उपयोगी हैं कि अनाकार उपयोगी हैं? अहो गौतम ! नेरिये साकार उपयोगी भी हैं और अनाकार उपयोगी भी हैं। किस कारन अहो भगवन्! नेरिये साकार अनाकार दोनों प्रकार के उपयोगी हैं ? अहो गौतम ! जो नेरिये मतिज्ञानी श्रुतिज्ञानी अवधि ज्ञानी मतिअज्ञानी श्रुति अज्ञानी विभंग ज्ञानी है वे साकार उपयोगी है और जो नेरिये चक्षुदर्शनी अचक्षु दर्शनी अवधि दर्शनी है वे अनाकार उपयोगी हैं इस कारण अहो गौतम ! एसा कहा कि नेरिये साकार अनाकार दोनों उपयोग वाले हैं ॥ यों यावत् स्तनित कुमार

पुढविकाइया मतिअण्णाण सुयअण्णाणोवउत्ता तेणं पुढविकाइया सागारोवउत्ता, जेण पुढविकाइया अचक्खुदसणोवउत्ता तेण पुढविकाइया अणागारोवउत्ता, से तणट्टेण गोयमा ! एव वुच्चति जाव वणप्फइकाइयाण, बेइंदियाण अट्ठसहिया तहेव पुच्छा ? गोयमा ! जाव जेण बेइंदिया आभिणिबोहियणाण सुयणाण मतिअण्णाण सुयअण्णाणोवउत्ता तेण बेइंदिया सागारोवउत्ता, जेण बेइंदिया अचक्खु दसणोवउत्ता तेण बेइंदिया अणागारोवउत्ता से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चति ॥ एव जाव चउरिंदिया णवर चक्खुदसण अब्भहिय चउरिंदियाणति॥पचिंदिय तिरिक्ख-

पर्यन्त कहना पृथ्वीकाय की पृच्छा ? अहो गौतम ! तैसे ही कहना यावत् जो पृथ्वीकाय मति अज्ञान श्रुति अज्ञान वाली है वह साकार उपयोगी है और जो पृथ्वीकाय अचक्षु दर्शन वाली है व अनाकार उपयोगी है इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा ऐसे ही यावत् वनस्पतिकाय पर्यंत कहना बेन्द्रिय की अर्थ पहित वैसे ही पृच्छा ? अहो गौतम ! यावत् जो बेइन्द्रिय मति ज्ञानी श्रुतिज्ञानी मति अज्ञानी श्रुति अज्ञानी हैं वे साकार उपयोगी है और जो बेन्द्रिय अचक्षु दर्शनी है वह अनाकार उपयोगी है इसलिये ऐसा कहा ऐसे ही यावत् चौरेन्द्रिय पर्यंत कहना, इतना विशेष चौरेन्द्रिय के चक्षु दर्शन अधिक कहना

जाणिया जहा णरइया ॥ मणुस्सा जहा जीवा वाणमंतर जोतिसिया वेमाणिया जहा नेरइया ॥ इति पण्णवणाए भगवतीए एगुणतीसम उवओगपय सम्मत्त २९ ॥ *

रियंच पंचेन्द्रिय का न िर जैसा कहना मनुष्य का समुच्चय जीव जैसा कहना और वाणव्यन्तर जोतिषी वैमानिक का नेरीये जैसा कहना इति पन्नवणा भगवतीका गुनतीसवा उपयोग पद समाप्तम् ॥ २९ ॥



पुढविकाइया मतिअण्णाण सुयअण्णाणोवउत्ता तेण पुढविकाइया [illegible] जेण पुढविकाइया अचक्खुदंसणोवउत्ता तेण पुढविकाइया अणागारोवउत्ता, से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चति जाव वणप्फइकाइयाण, बेइंदियाण अट्ठसहिया तहेव पुच्छा ? गोयमा ! जाव जेण बेइंदिया आभिणिबोहियणाण सुयणाण मतिअण्णाण सुयअण्णाणोवउत्ता तेणं बेइंदिया सागारोवउत्ता, जेण बेइंदिया अचक्खु दंसणोवउत्ता तेण बेइंदिया अणागारोवउत्ता से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चति ॥ एवं जाव चउरिंदिया णवरं चक्खुदंसण अब्भहियं चउरिंदियाणति॥ पंचिंदिय तिरिक्ख-

पर्यन्त कहना पृथ्वीकाय की पृच्छा ? अहो गौतम ! वैसे ही कहना यावत् जो पृथ्वीकाय मति अज्ञान श्रुति अज्ञान वाली है वह साकार उपयोगी है और जो पृथ्वीकाय अचक्षु दर्शन वाली है व अनाकार उपयोगी है इसलिये अहो गौतम ! ऐसे कहा ऐसे ही यावत् वनस्पतिकाय पर्यंत कहना बेन्द्रिय की अर्थ सहित वैसे ही पृच्छा ? अहो गौतम ! यावत् जो बेइन्द्रिय मति ज्ञानी श्रुतिज्ञानी मति अज्ञानी श्रुति अज्ञानी हैं वे साकार उपयोगी है और जो बेन्द्रिय अचक्षु दर्शनी है वह अनाकार उपयोगी है इसलिये ऐसा कहा ऐसे ही यावत् चौरेन्द्रिय पर्यंत कहना, इतना विशेष चौरेन्द्रिय के चक्षु दर्शन अधिक कहना

सुयअण्णाण सागार पासणया, विभंगणाण सागार पासणया ॥ २ ॥ अणागार पासणयाण भंते! कतिविहा पण्णत्ता? गोयमा! तिविहा पण्णत्ता तंजहा चक्खुदंसण अणागार पासणया ओहिदंसण अणागार पासणया, केवलदंसण अणागार पासणया ॥ एवं जीवाण ॥ ३ ॥ णेरइयाण भंते! कतिविहा पासणया पण्णत्ता? गोयमा! दुविहा पासणया पण्णत्ता तंजहा-सागार पासणया अणागार पासणया ॥ णेरइयाण भंते! सागार पासणया कतिविहा पण्णत्ता? गोयमा! चउव्विहा पण्णत्ता तंजहा-सुयणाणसागार पासणया, ओहिणाण सागार पासणया, सुयअण्णाण सागार पासणया, विभंगणाण

यह मनःपर्यवज्ञान साकार पासनता और केवल ज्ञान रूप साक्षात् कर देखे वह केवल ज्ञान साकार पासनता ॥ २ ॥ अहो भगवन्! अनाकार पासनता कितने प्रकार की कही है? अहो गौतम! अनाकार पा नता तीन प्रकार की कही है तद्यथा पहिले चार अनाकार उपयोग है उस में से अचक्षु दर्शन यहां ग्रहण नहीं किया है क्यों कि अचक्षु दर्शन उसे ही कहते हैं कि जो किसी वस्तु का स्फुट प्रगट देख नहीं सके तथा अचक्षु दर्शन का उपयोग भी थोडे काल का है स्फुट प्रगट पने विशेष काल रहता नहीं है इस लिये तीन ही अनागार पासणया कही है तद्यथा १ चक्षुदर्शन अनागार पासनता, २ अवधि दर्शन अनागार पासनता और केवल दर्शन अनागार पासनता ॥ जैसे यह पासनताका स्वरूप कहा

सागार पासणया ॥ णेरइयाणं भंते अणागार पासणया कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा चक्खुदंसण अणागार पासणया ओहिदंसण अणागार पासणया ॥ एवं जाव थणियकुमारा ॥ पुढवि काइयाणं भंते ! कतिविहा पासणया पण्णत्ता ? गोयमा ! एगा सुयअण्णाण सागार पासणया पण्णत्ता ॥ एवं जाव वणस्सइ काइयाणं ॥ बेइंदियाणं भंते ! कतिविहा पासणया पण्णत्ता ? गोयमा! एगासागारपासणया पण्णत्ता ॥ बइंदियाणं भंते ! सागार पासणया कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा सुयणाण सागार पासणया, सुयअण्णाण

कहा ऐसा समुच्चय जीव का भी पासनता का स्वरूप कहना ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नारकी के कितनी प्रकार की पासनता कही है ? अहो गौतम ! दो प्रकार की पासनता कही है तद्यथा १ साकार पासनता और अनाकार पासनता नारकी की साकार पासनता चार प्रकार की है तद्यथा १ श्रुत ज्ञान, २ अवधि ज्ञान, ३ श्रुत अज्ञान और ४ विभंग ज्ञान नारकी के अनाकार पासनता दो प्रकार की है तद्यथा चक्षु दर्शन और अवधी दर्शन ॥ इस प्रकार ही दशों ही भुवनपति देवता का भी कहना ॥ पृथ्वीकाय के एक प्रकार की श्रुति अज्ञान रूप साकार पासनता है अनाकार पासनता नहीं है ऐसे ही यावत् वनस्पति काया पर्यन्त कहना ॥ बेन्द्रिय के दो प्रकार की साकार पासनता है श्रुति ज्ञान और श्रुति अज्ञान

सागारपासणया ॥ एवं तेइंदियाणवि ॥ चउरिंदियाण पुच्छा ? गोयमा ! दुविहा सागार पासणया अणागारपासणता य सागारपासणता जहा बेइंदियाण, चउरिंदियाण भंते ! अणागारपासणता कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! एगा चक्खुदंसण अणागारपास णता पण्णत्ता ॥ मणुस्साण जहा जीवाण सेसा जहा णेरइया जाव वेमाणिया ॥ ४ ॥ जीवाण भंते ! किं सागारपस्सी अणागारपस्सी ? गोयमा ! जीवा सागारपस्सीवि अणागारपस्सीवि ॥ से केणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चइ जीवा सागारपस्सीवि अणागारपस्सीवि? गोयमा ! जेण जीवा सुयणाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणी केवलणाणी,

अनाकार पासनता नहीं है ॥ ऐसे ही तेइन्द्रिय का भी कहना चौरिन्द्रिय के साकार पासनता भी है और अनाकार पासनता भी है जिस में साकार पासनता दो प्रकार की है श्रुत ज्ञान और श्रुतअज्ञान अनाकार पासनता एक प्रकार की है चक्षुदर्शन तिर्यंचपंचेन्द्रिय की पासनता नरक जैसी कहना मनुष्य की पासनता समुच्चय जीव जैसी कहना और वाणव्यन्तर ज्योतिषी की पासनता भी नरक जैसी कहना ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! जीव साकार पेसी है कि अनाकार पेसी है ? अहो गौतम ! जीव साकार पेसी भी है और अनाकार पेसी भी है किस कारन अहो भगवन् ! ऐसा कहा कि जीव साकार पेसी भी है और अनाकार पेसी भी है ?

तेण चउरिंदिया सागारवस्सी जेण चउरिंदिया चक्खुदंसणी तेण चउरिंदिया अणागार पस्सी से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति ॥ मणुस्सा जहा जीवा अवसेसा जहा नेरइया जाव वेमाणिया ॥ ५ ॥ केवलीणं भंते ! इमं रयणप्पभं पुढविं आगारेहिं हेऊहिं उवमाहिं दिट्ठतेहिं वण्णेहिं संठाणेहिं पमाणेहिं पडोयारेहिं जंसमयं जाणति तं समयं पासति जं समयं पासति तं समयं जाणति? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति केवलीणं इमं रयणप्पभं आगारेहिं जाव जं समयं

आकार करे कि यह रत्नप्रभा के सात कांड. प्रथम रत्न कांड हजार योजन का है फिर पंक कांड सहस्र योजन, फिर वैडुर्य कांड इत्यादि आकार को माने हेतु जो किस कारन रत्नप्रभा कही, अर्थात् प्रथम रत्न कांड होने से रत्नप्रभा कही ओपमा सो रत्नप्रभा पृथ्वी के रत्न कांड किस प्रकार का है तो कि पद्मराग जैसा है दृष्टांत से घटादि के दृष्टान्त कर सिद्ध करना वर्ण विभाग संख्यात असंख्यात अनंत वर्ण विभाग तथा तत्सक्षण से गंध रस स्पर्श भी ग्रहण करना संस्थान-नरक का आकार अन्दर से वर्तुल बाहिर से चतुरस्र प्रमाण सो एक लाख अस्सी हजार योजन पृथ्वी का पिंड तथा एक रज्जु प्रमाण लम्बी चौडी सर्वथ घनादधि आदि वलियादि प्रति द्वार-सर्व दिशा विदिशा में एकसा विभाग इत्यादि जिस समय में जानते हैं उस समय में देखते हैं क्या और जिस समय देखे उस समय जानते हैं क्या ! अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं अर्थात् एक ही समय में जानना और देखना ऐसे दो कार्य

जाणति णो तंसमयपासति ज समय पासति णो त समय जाणति ? गोयमा! सागारे स णाणे भवति अणागारस दसणे भवति, से तेणट्ठेण गोयमा! जाव णो त समय जाणति एव जाव अह सत्तमे ॥ एव सोहम्मकप्प जाव अच्चुत गेवज्जगाविमाणा अणुत्तरविमाणा ईसिप्पभारा पुढवि परमाणुपोग्गल दुपदसिय खध जाव अणत पदसिय खध ॥ केवलीण भते ! रयणप्पभ पुढवि अणागारहिं अहेऊहिं अणुवमाहिं अदिट्ठतहिं अवण्णेहिं असठाणेहिं अपमाणहिं अपडोयारहिं पासति न जाणति?

नहीं होते हैं अहो भगवन्! किस कारन से ऐसा कहा केवल ज्ञानी इस रत्नप्रभा पृथ्वी के आकारादि को जिस समय जानता है उस समय नहीं देखते हैं और जिस समय देखते हैं उस समय नहीं जानते हैं? अहो गौतम! ज्ञान साकारिक होता है और दर्शन अनाकारिक होता है अर्थात् दोनों भिन्न २ होने से जिस समय में ज्ञान स्वरूप आत्म प्रदेश होते हैं उस समय दर्शन स्वरूप नहीं होते हैं और जिस समय दर्शन स्वरूप होते हैं उस समय ज्ञान स्वरूप नहीं होते हैं यों ज्ञान दर्शन के परस्पर विरुद्धता होने से एक समय में जानना और देखना ये काम नहीं होते हैं इसलिये अहो गौतम! ऐसा कहा जिस समय जानते हैं उस समय देखते नहीं हैं और जिस समय देखते हैं उस समय जानते नहीं हैं जिस प्रकार यह रत्नप्रभा पृथ्वी का कहा उस ही प्रकार यावत् सातवी नरक पर्यन्त कहना और ऐसे ही सौधर्म देवलोक से यावत् अच्युत देवलोक नवग्रैवेयक पांच अनुत्तर विमाने इषत्प्राग्भारा पृथ्वी- परमाणु

हता गोयमा ! केवली इमं रयणप्पम पुढविं अणागारेहिं जाव पासति ण जाणसि॥ सेकेणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चति केवलीण इमं रयणप्पभं पुढविं अणागारेहिं जाव पासति ण जाणति ? गोयमा ! अणागारेसे दसणे भवति सागारे से णाणे भवति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति केवली इमं रयणप्पभं पुढविं अणागारेहिं जाव ईसिपब्भारं पुढविं परमाणुपोग्गलं जाव अणंत पदेसियं खंधं पासति ण जाणति ॥ इति पण्णवणाए भगवईए पासणिया तीसइम पयं सम्मत्तं ॥ ३० ॥

पुद्गल द्विप्रदेशिक स्कन्ध यावत् अनंत प्रदेशिक स्कन्ध तक सब का एक सरीखा कथन करना अहो भगवन् केवल ज्ञानी रत्नप्रभा पृथ्वी का अनाकार कर अहेतुकर अनोपमाकर अदृष्टान्त कर अवर्णादिकर असंस्थान कर अप्रमान कर अप्रत्याहारकर देखते हैं परंतु जानते नहीं है ? अहो गौतम ! केवल ज्ञानी रत्नप्रभा पृथ्वी को अनाकार से यावत् देखते हैं परंतु जानते नहीं हैं अहो भगवन् ! किस कारन ऐसा कहा कि केवली रत्नप्रभा पृथ्वी को आकार से यावत् देखते हैं परंतु जानते नहीं हैं ! अहो गौतम ! क्योंकि अनाकार दर्शन है साकार ज्ञान है इस लिये ऐसा कहा कि केवली इस रत्नप्रभा पृथ्वी के आकार को यावत् देखते है परंतु जानते नहीं हैं ऐसे ही यावत् ईषत प्राग्भार पृथ्वी पर्यंत कहना, परमाणु पुद्गल से अनंत प्रदेशीक स्कन्ध देखते हैं परंतु जानते नहीं हैं ॥ इति पन्नवना भगवती का पासनता नामक तीसवा पद समाप्तम् ॥ ३० ॥

॥ एकत्रिंशत्तम् संज्ञी पदम् ॥

जीवाणं भंते ! किं सण्णी असण्णी नोसण्णी नो असण्णी ? गोयमा
असण्णीवि, णो सण्णी णोअसण्णीवि ॥ णेरइयाणं पुच्छा ?गोयमा! नेरइ
असण्णिवि णो णोसण्णी ना असण्णी एव असुरकुमारा जाव थणियकुमारा पुढवि
काइयाणं पुच्छा?गोयमा! नोसण्णी असण्णी णो नोसण्णी णा असण्णी एव जाव चउरिंदिय
तेइंदिय चउरिंदियावि ॥ मणुस्सा जहा जीवा पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया वाणमंतराय

अब एकतीसवा संज्ञी पद कहते हैं ॥ अहो भगवन् ! जीव संज्ञी है कि असंज्ञी है कि नोसंज्ञी नोअसंज्ञी है ? (मन भाव स्मरण के पर्याय लोचन युक्त अथवा विशिष्टस्मरणादिरूप के विज्ञान युक्त वह संज्ञी और इस लक्षणों से विपरीत वह असंज्ञी तथा केवल ज्ञानी और सिद्ध नो संज्ञी नो असंज्ञी केवली के मन है परंतु स्मरण विषय को प्राप्त करते नहीं हैं) अहो गौतम ! जीव संज्ञी भी है असंज्ञी भी है और ना संज्ञी नो असंज्ञी है ॥ अहो भगवन् ! नरीय संज्ञी है कि असंज्ञी है कि नो संज्ञी नो असंज्ञी है ? अहो गौतम ! नेरीये संज्ञी भी हैं असंज्ञी भी हैं [असंज्ञी मरकर प्रथम नरकमें उत्पन्न होता है जहां तक मनःपर्याप्ति का बन्ध नहीं करे वहां तक असंज्ञी कहा जाता है इस अपेक्षा से परंतु नो संज्ञी नो असंज्ञी नहीं है ऐसे ही असुरकुमार से स्तनित कुमार पर्यंत कहना यह

जहा णेरइया जोतिसिया वेमाणिया सण्णी णो असण्णी, नो नोसण्णी ना असण्णा ॥ सिद्धाण पुच्छा ? गोयमा ! नो सण्णी, णो असण्णी णोसण्णीणोअसण्णी, णेरइय तिरिक्खाय मणुस्साय, यावरतह चेव, वाणमतरया विगिलिंदिया असण्णी जोतिस वेमाणिया सण्णी ॥ पण्णवणाः भगवईए सण्णापय इगतीसम सम्मत्त ॥ ३१ ॥

काय अपकाय तेजस्काय वायुकाय वनस्पतिकाय, बेइन्द्रिय तेन्द्रिय चौरिन्द्रिय यह सब एक असंज्ञी है संज्ञी भी नहीं और ना संज्ञी नो असंज्ञी भी नहीं है मनुष्य का समुच्चय जीव जैसा कहना अर्थात् तीनों प्रकार के हैं. तिर्यंच पंचेन्द्रिय में संज्ञी असंज्ञी दोनों ही हैं वाणव्यन्तर देवता का नारकी जैसा कहना ज्योतिषी और वैमानिक संज्ञी है असंज्ञी और नो संज्ञी नो असंज्ञी नहीं है. और सिद्ध भगवन् ! संज्ञी भी नहीं है असंज्ञी भी नहीं है परन्तु दोनों से विपरीत नो संज्ञी नो असंज्ञी है गाथा—संज्ञी, और असंज्ञी की उत्पत्ति तो मनुष्य और तिर्यंच में है समूर्च्छिम होवे हैं व असंज्ञी ही होते हैं नरक भवनपति और वाणव्यन्तरदेव में मात्र उत्पत्ति आश्रिय असंज्ञी गिने हैं एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय असंज्ञी ही होते है और ज्योतिष वैमानिक संज्ञी ही होते हैं ॥ इति पन्नवणा का संज्ञी पद इकतीसवा समाप्त ॥ ३१ ॥

॥ द्वात्रिंशत्तम संजया पदम् ॥

जीवाण भंते ! किं संजया, असंजया संजयासंजया, णो संजया णो असंजया नो संजयासंजया ? गोयमा ! जीवा संजतावि, असंजयावि, संजयासंजयावि, णो संजता णो असंजता णो संजतासंजतावि । णेरइयाण भंते ! किं संजया, असंजया, संजयासंजया णो संजया णो असंजया णो संजयासंजया ? गोयमा ! णेरइया णो संजता, असंजता, णो णोसंजयासंजया, णोसंजता णोअसंजता णोसंजतासंजता, एवं जाव चउरिंदिया, पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया, णोसंजया असंज

अब संयति असंयति की पृच्छा का बत्तीसवा पद कहते हैं ॥ अहो भगवन् ! जीव क्या संयति है कि असंयति है कि संयता संयति हैं कि नो संयति नो असंयति नो संयता संयती है ? (सर्व विरतिसाधु को संयति कहते हैं, अव्रति को असंयति कहते हैं, अव्रतमति-देशव्रति-श्रावक को संयतासंयती कहते हैं सिद्ध को नोसंयति नोअसंयति नोसंयतासंयति कहते हैं) ? अहो गौतम ! जीव संयति भी है असंयति भी है संयतासंयति भी है और नोसंयति नोअसंयति नोसंयतासंयति भी है अहो भगवन् ! नेरिये क्या संयति है इत्यादि चारों प्रश्न ? अहो गौतम ! नेरिये संयति भी नहीं है संयता संयति भी नहीं और नो संयती नो असंयती ना संयतासंयती भी नहीं है परंतु एक असंयति है ॥ ऐसे ही दशों ही भुवनपतिदेव, पांचों स्थावर तीनों विकलेन्द्रिय यह सब असंयति है पंचेन्द्रिय तिर्यंच असंयति है और [illegible]

साणं, सजतासजयावि, णो णोसंजया णो असजया णो संजया सजया ॥ मणुस्सा पुच्छा? गोयमा! मणुस्सा सजतावि असजयावि, सजयासजयावि णो णोसजता णोअसजया णो संजयासजता वाणमंतर जोइसिया वेमाणिया जहा णेरइया ॥ सिद्धाणं पुच्छा? गोयमा! सिद्धा नो सजता नो असजता नो सजतासजता, णो सजया णो असजता णो सजतासजता । सजयअसजयमीसगाय, जीवा तहेव मणुस्साय, सजत रहिया तिरिया ॥ सेसा असजता होंति ॥ इति पण्णवणाए भगवइए सजय पय बत्तीसतिमं सम्मत्त ॥ ३२ ॥ * * * *

क्यों कि जातिस्मरणादि के अभाव से वेषधारीपना धारन करते हैं परंतु संयति और ना संयति नो असंयति नो संयता संयति नहीं है मनुष्य संयती भी हैं साधु आश्रिय, असयति हैं अव्रती आश्रिय, संयतासंयती भी है श्रावक आश्रिय, परंतु नो संयति नो असंयति नो संयता संयती नहीं है ॥ वाण व्यन्तर ज्योतिषी और वैमानिक नारकी के जैसे एक असंयति है सिद्ध भगवन्! संयति भी नहीं है असंयती भी है संयतासंयती भी नहीं है परंतु नो संयति नो असंयति नो संयतासंयती हैं गाथार्थ सर्व व्रती संयति, व्रत रहित असंयती, व्रताव्रती [मिश्र] श्रावक जीव और मनुष्यमें तीनों हैं तिर्यंच पंचेंद्रिय असंयति और संयतासंयति हैं और शेष सब असंयति हैं ॥ इति पन्नवना भगवती का संयतासंयति नामक बत्तीसवा पद समाप्त ॥ ३२ ॥ + + +

॥ तयास्त्रिशत्ताम अवधि पदम् ॥

भेद विसय संठाणे अभिंतर बाहिरय देसोही ॥ ओहिस्सयखय वुड्ढी पडिवाय चेव अपडिवाइ ॥१॥ कतिविहाणं भंते ! ओही पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा ओही पण्णत्ता तंजहा भवपच्चइयाय खओवसमियाय दोण्हं भवपच्चइया तंजहा देवाणय णेरइयाणय दोण्हं खओवसमिया तंजहा मणुस्साण पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणय ॥२॥ नेरइयाणं भंते ! केवइयं खेत्तं ओहिणा जाणंति पासंति ? गोयमा ! जहण्णेणं अद्धगाउय उक्कोसेणं चत्तारि गाउयाइं

अब अवधि पद कहते हैं ॥ इस के द्वारों के नाम १ भेदद्वार, २ विषयद्वार, ३ संस्थानद्वार, ४ आभ्यन्तरद्वार, ५ बाह्यद्वार, ६ देशावधिद्वार, ७ अवधि क्षयद्वार, ८ वृद्धिद्वार, ९ प्रतिपातिद्वार, और १० अप्रतिपातिद्वार, ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! अवधिज्ञान कितने प्रकार का कहा है ? अहो गौतम ! अवधि ज्ञान दो प्रकार का कहा है, तद्यथा—१ भव प्रत्यय सो जन्म से होवे और २ क्षयोपशम प्रत्यय सो करनी करने से होवे इस में से भव प्रत्यय अवधि के दो भेद हैं तद्यथा—१ देवता के और २ नरक के [तीर्थंकर के भी भव प्रत्यय ही अवधि ज्ञान होता है परन्तु यहां दोने से यहां ग्रहण नहीं किये] क्षयोपशम प्रत्यय के भी दो भेद कहे हैं. तद्यथा—१ मनुष्य के और २ तिर्यंच पंचेन्द्रिय के ॥ २ ॥ नरक

ओहिणा जाणति पासति ॥ रयणप्पभा पुढवि णेरइयाण भंते ! कवतिय खेत्त ओहिणा जाणति पासति ? गोयमा ! जहण्णेण अद्धुट्ठाइं गाउयाइं उक्कोसेण चत्तारि गाउयाइं ओहिणा जाणति पासति, सक्करप्पभा पुढवि णेरइया जहण्णेण तिण्णिगाउयाइं उक्कोसेण अद्धुट्ठाइं ओहिणा जाणति पासति, वालुयप्पभा पुढवि णेरइया जहण्णेणं अड्ढाइज्जाइं गाउयाइं ओहिणा जाणंति पासति उक्कोसेण तिण्णिगाउयाइं, ओहिणा जाणति पासंति ॥ पंकप्पभा पुढवि णेरइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं दुण्णि गाउयाइं उक्कोसेण अड्ढाइज्जाइं गाउयाइं ओहिणा जाणाति पासति, धूमप्पभा पुढवि णेरइयाण

विषय द्वार—अहो भगवन् ! नेरीये अवधि ज्ञान करके कितना क्षेत्र जानते हैं देखते हैं ? अहो गौतम ! जघन्य आधा कोश उत्कृष्ट चार कोश अवधि ज्ञान कर जानते देखते हैं अब अलग २ नरक का कहते हैं—रत्नप्रभा के नेरीये जघन्य साढे तीन कोश उत्कृष्ट चार कोश, शर्कर प्रभा के नेरीये जघन्य तीन कोश उत्कृष्ट साढे तीन कोश, वालुक प्रभा के नेरीये जघन्य अढाइ कोश उत्कृष्ट तीन कोश, पंक प्रभा के नेरीये जघन्य दो कोश, उत्कृष्ट अढाइ कोश धूम्रप्रभा के नेरीये जघन्य देढ कोश उत्कृष्ट दो कोश तम प्रभा के नेरीये जघन्य एक कोश उत्कृष्ट देढ कोश, और तमतमा प्रभा के नेरीये जघन्य आधा कोश उत्कृष्ट एक

पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण दिवड्ढ गाउयाइं, उक्कोसेण दोगाउयाइं ओहिणा जाणति पासति तमा पुढवि पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण गाउय उक्कोसेण दिवड्ढ गाउयाइ ओहिणा जाणति पासति, अहे सत्तमाए पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अद्धगाउयाइं उक्कोसेण गाउयाइ ओहिणा जाणति पासति ॥ असुरकुमाराण भंते ! ओहिणा केवतिय खेत्तं जाणति पासति ? गोयमा ! जहण्णेण पण्णवीस जोयणाइ उक्कोसेण असखेज्ज दीवसमुद्दे ओहिणा जाणति पासति ॥ णागकुमाराण पुच्छा ? गोयमा! जहण्णेणं पण्णवीस जोयणाइ उक्कोसेणं असखेज्ज दीव समुद्द ओहिणा जाणंति पासति, एव जाव थणियकुमारा ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण भंते ! केवतिय

क्षेत्र सब अवधि ज्ञान कर जानते देखते हैं असुरकुमार देवता जघन्य पच्चीस योजन उत्कृष्ट असंख्यात द्वीप समुद्र यह नियम है कि पल्योपम के आयुष्य वाले संख्यातद्वीप समुद्र और साग रोपम के आयुष्य वाले असंख्यात द्वीप समुद्र अवधि ज्ञान कर जानते देखते हैं नागकुमार देवता जघन्य पच्चीस योजन उत्कृष्ट संख्यात द्वीप समुद्र अवधि ज्ञान से जानते देखते हैं ऐसे ही यावत् स्तनित कुमार देवता को कहना तिर्यंच पंचेन्द्रिय जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट असंख्यात

अणुत्तरोववाइया देवाणं भंते ! केवतियं खेत्तं ओहिणा जाणंति पासंति ? गोयमा ! जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभाग उक्कोसेणं अहेसत्तमाए पुढवीए हेट्ठिल्ले चरिमंत तिरियं खेत्ते जाव असंखज्जे दीव समुद्दे उड्ढं जाव सयाइं विमाणाइं ओहिणा जाणंति पासंति ॥ अणुत्तरोववाइया देवाणं भंते ! केवतियं खेत्तं ओहिणा जाणंति पासंति ? गोयमा ! संभिण्णलोगणालिं ओहिणा जाणंति पासंति ॥ २ ॥ णेरइयाणं भंते ! ओही किं संठिए पण्णत्ते ? गोयमा ! तप्पागार संठिए पण्णत्ते, असुरकुमाराणं पुच्छा ? गोयमा ! पल्लगसंठाण संठिए एवं जाव थणियकुमाराणं पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं

अच्युत देवलोक के देवता ऊंचा तिर्च्छा वतना ही देखे, नीचा पांचवी नरक के चरमान्त तक देखे नीचे की ओर मध्य की ग्रैवेयक के देवता ऊंचा तिर्च्छा वतना ही नीचे छठी नरक के चरमान्त तक देखे ऊपर के ग्रैवेयक के देवता ऊंचा तिर्च्छा वतना ही नीचे सातवी नरक का नीचे का चरमान्त अनुत्तर विमान के देवता लोक नालिका में, कुछ कम मुक्तिशिला छोडकर संपूर्ण लोक जाने ॥ २ ॥ तीसरा संस्थान द्वार अहो भगवन् ! नरिये का अवधि ज्ञान किस संस्थानमय है ? अहो गौतम ! तिपाइ के संस्थान संस्थित है असुर कुमार देवता पटह ([illegible]) के संस्थान, ऐसे ही यावत्

पुच्छा ? गोयमा ! णाणा संठाण संठिए पण्णत्ते एवं मणूसाणवि वाणमंतराणं पुच्छा ? गोयमा ! पडह संठाण संठिए पण्णत्ते जोइसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! झल्लरि संठाण संठिए पण्णत्ते, सोहम्मग देवाण पुच्छा ? गोयमा ! उड्ढमुइंगागार संठिए पण्णत्ते एवं जाव अच्चुय देवाण गेविज्जग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! पुप्फचंगेरि संठिए पण्णत्ते, अणुत्तरोववाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जवणालिया संठित ओही पण्णत्ते ॥ ४ ॥ णेरइयाण ओहिस्स भंते ! किं अंतो बाहिं ? गोयमा ! अंतो णो बाहिं, एवं जाव थणियकुमारा, पंचेंदियतिरिक्खजोणियाण

स्तनित कुमार देवता का कहना, तिर्यंच पंचेन्द्रिय नाना प्रकार के संस्थान से देखे, ऐसे ही मनुष्य का भी कहना वाणव्यन्तर देवता पडह [मादिम] के संस्थान देखे, ज्योतिषी देवता झालर के संस्थानदेख, सौधर्म देवलोक के देवता खड़े [सड] मादल के संस्थानदेख, ऐसे ही बारवे अच्युत देवलोक पर्यंत कहना, ग्रैवेयक के देवता फूलकी चंगेरी के संस्थान देखे, और अनुत्तर विमान के देवता मरन नालिक [मूसल नाल के पास में के] संस्थानदेख, ॥ ॥ अब बाह्य आभ्यन्तर द्वार कहते हैं अहो भगवन् ! नेरीए के आभ्यन्तर अवधि ज्ञान है बाहिर अवधि ज्ञान है ? अहो गौतम ! आभ्यन्तर अवधि ज्ञान है परन्तु बाहिर अवधि ज्ञान नहीं है एस ही यावत् स्तनितकुमार तक कहना पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक के आभ्यन्तर नहीं होता है

पुच्छा ? गोयमा ! नो अत्थि बाहिं ॥ मणुस्साणं पुच्छा ? गोयमा ! अंतोवि बाहिंवि वाणमंतर जोइसिय वेमाणियाणं जहा णेरइयाणं ॥ ५ ॥ णेरइयाणं भंते ! किं देसोही सव्वोही ? गोयमा ! देसोही णो सव्वोही एवं जाव थणियकुमाराणं पांचेंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! देसोहीवि सव्वोहीवि वाणमंतरजोइसियवेमाणियाणं जहा णेरइयाणं ॥ ६ ॥ णेरइयाणं भंते ! ओही किं अणुगामिए, अणाणुगामिए वड्डमाणए, हायमाणए, पडिवाइए अप्पडिवाइए, अवट्ठिए अणवट्ठिए ? गोयमा !

परंतु बाहिर होता है, मनुष्य के आभ्यन्तर और बाह्य दोनों प्रकार का होता है वाणव्यन्तर ज्योतिष और वैमानिक का जैसा नैरीया का कहा वैसा अभ्यन्तर अवधि ज्ञान होता है बाह्य नहीं होता ॥ ५ ॥ देश सर्व द्वार (जो यथायुक्त प्रमाणयुक्त देशदेश का अवबोध और सम्पूर्ण सम्यक् का सर्वावधि) अहो भगवन् ! नरक के देश अवधि ज्ञान है कि सर्व अवधि ज्ञान है ? अहो गौतम ! देश अवधि ज्ञान है परंतु सर्व अवधि ज्ञान नहीं है ऐसे ही दशोंही भवनपति का भी कहना, तिर्यंच पंचेन्द्रिय को भी देश अवधि ज्ञान है सर्व अवधि ज्ञान नहीं है, मनुष्य के देश अवधि और सर्व अवधि दोनों प्रकार के हैं वाणव्यन्तर ज्योतिषी और वैमानिक के देश अवधि है परंतु सर्व अवधि नहीं है ॥ ६ ॥ अब अनुगामिकादि द्वार कहते हैं ॥ अहो भगवन् ! नैरीये के क्या १ अनुगामी अवधि है कि २ अनानुगामी अवधि है ३ वृद्धमान है ४ कि हायमान है ५ प्रतिपाती है कि ६ अप्रतिपाती है ७ अवस्थित है (जो उत्पन्न के दूर का

स्वामी	भेद	उत्कृष्ट विषय			संस्थान	बाह्य अभ्यंतर	देश सर्व	अनुगामी अननुगामी	अवस्थित अनवस्थित	प्रतिपाति अप्रतिपाति
		ऊपर	नीचे	तिरछा						
नरक	भव प्रत्यय	१ ४, २ ३॥ ३ ३॥, ४ ३॥, ५ ३, ६ १॥ ७-१ कोस			तिपाईक	अभ्यन्तर	देश से	अनुगामी	अवस्थित	अप्रतिपाती
असुर कुमार	भव प्रत्यय	सौधर्म देवलोक	बालुकप्रभा नरक	असं० द्वीप समुद्र	पालकी	"	"	"	"	"
नवनीकाय	भव प्रत्यय	"	रत्नप्रभा नरक	सं० द्वीप समुद्र	"	"	"	"	"	"
तिर्यंच पंचेन्द्रिय	क्षयोपशम	"	"	असं० द्वीप समुद्र	नाना प्रकार	बाह्य	"	अनुगामी अननुगामी	अवस्थित अनवस्थित	प्रतिपाती अप्रतिपाती
मनुष्य	भव प्रत्यय क्षयोपशम	सम्पूर्ण लोक और लोक जैसे असं० खण्ड अलोक में			"	अभ्यन्तर बाह्य	देश सर्व दोनों	अनुगामी अननुगामी	"	"
वाणव्यन्तर	भव प्रत्यय	सौधर्म देवलोक	रत्नप्रभा पर्यन्त	सं० द्वीप समुद्र	पटह (ढफ)	अभ्यन्तर	देश से	अनुगामी	अवस्थित	अप्रतिपाती
ज्योतिषी	भव प्रत्यय	"	रत्नप्रभा चरमान्त	"	झालर (पडिवाय)	"	"	अनुगामी	"	"

सौधर्म ईशान	मनमवक	अपमविमान की ध्वजा	रत्नप्रभा	से असं द्वीप समुद्र	ऊर्ध्व मृदंग के स्थान	अभ्यन्तर	देश से	अनुगामी	अवस्थित	प्रम
सनत्कुमार माहेन्द्र	,,	,,	शर्करप्रभा	असंख्यात द्वीप समुद्र	,,	,,	,,	,,	,,	
ब्रह्म व लांतक दे.	,,	,	बालुकप्रभा	,,	,,	,,	,,	,,	,,	
महाशुक्र, सहस्रार	,,	,,	पंकप्रभा	,,	,,	,,	,,	,,	,,	
आनत	,,	,,	धूम्रप्रभा	,,	,,	,,	,,	,,	,,	
प्राणत आरण अच्युत मध्य की त्रिक	,,	,,	तमप्रभा	,,	,,	,,	,,	,,	,,	
दूसरी तीसरी त्रिक	,,	,,	तमस्तम प्रभा	,,	फूल चंगेरी	,,	,,	,,	,,	
पांच अनुत्तर विमान के देव	,,	,,	लोकांत में कुछ कम	,,	पसोमे का	,,	,,	,,	,,	

अणुगामिए णो अणाणुगामिए, णो वड्ढमाणए णो हायमाणए णो पडिवाई अपडिवाई अवट्ठिए, णो अणवट्ठिएत्ति ॥ एवं जाव थणिय कुमाराणं॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणुगामिएत्ति जा[illegible]वट्ठिएत्ति एवं मणूसाणवि । वाणमंतर जोइसिय वेमाणियाणं जहा णेरइयाणं ॥ इति ओहिपय सत्तीसम सम्मत्त ॥ ३३ ॥

अनुगामी आगपीछे साथ देख वह अननुगामी जो गृह दीपक वह अधपान घटता जावे सो हायमान, जो पडवाय वह प्रतिपाति, नहीं जाय वह अप्रतिपाति, आयुष्यांत पर्यंत रहे वह अवस्थित, थोडे काल रहे वह अनवस्थित) अहो गौतम ! नेरीये के अनुगामी अवधि है परन्तु अननुगामी नहीं हायमान वृद्धमान, और पडवाइ तीनों प्रकार का नहीं परंतु अपडवाइ और अवस्थित है अनवस्थित भी नहीं है ऐसे यावत् स्तनित कुमार पर्यंत कहना पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक के अहो गौतम ! अनुगामी भी है यावत् अवस्थित भी है अर्थात् आठही प्रकार का है, ऐसे ही मनुष्य का भी कहना अर्थात् मनुष्य के भी आठही प्रकार का होता है वाणव्यन्तर ज्योतिषी और वैमानिक के नरीये के जैसा अनुगामी अपडवाइ और अवस्थित होता है ॥ इति पन्नवणा भगवती का तेतीसवा अवधि पद समाप्त ॥ ३३ ॥

❖ चतुस्त्रिंशत्तम परिचारणा पदम् ❖

अणंतरागयाहार आहारे भोयणाइया पोग्गल नेवजाणंति, अज्झवसाणेय, आहिया ॥ १ ॥ सम्मत्तस्स अहिगमे, ततापरियारणाय बोधव्वा काएफासे रूवे, सद्दय मणेय अप्पाबहु ॥ २ ॥ १ ॥ णेरइयाणं भंते ! अणंतराहारा तओणिव्वत्तणया, तओपरियाइयणया ततो परिणामणया ततोपरियारणया ततो पच्छा विउव्विणया ? हंता गोयमा ! णेरइया अणंतराहारा ततोणिव्वत्तणया

अब चौतीसवे पद में परिचारणा कहते हैं इन के द्वारों के नाम १ अन्तर आहार द्वार, २ आभोग अनाभोग आहार द्वार, ३ आहार के पुद्गल जानने का द्वार, ४ अध्यवसाय द्वार, ५ सम्यक्त्व का अभिगम द्वार, ६ परिचारणा द्वार, ७ काया स्पर्श रूप शब्दमन और अपरिचारणा की अल्पाबहुत्व द्वार ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नेरिये उत्पन्न होकर उस ही समय अन्तर आहार करके फिर शरीर की निष्पत्ति करते हैं, फिर सर्व भाग पुद्गल ग्रहण करते हैं, फिर पुद्गल परिणमाकर ऊंच नीच शयन शब्दादि रूप परिचारणा करते हैं तब फिर वैक्रेय शरीर करते हैं क्या ? हां गौतम ! नेरिये नरक में उत्पन्न होकर तत्काल उस ही समय अन्तर रहित आहार ग्रहण करते हैं फिर शरीर निपजाते हैं फिर उस

गोयमा ! तचेव जाव परियारणया णो चेवण विउव्वणता ॥ एवं जाव चउरिंदिया, णवरं वाउकाइयाण पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया मणुस्साय जहा णेरइया, वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥ ४ ॥ णेरइयाण भंते ! आहारे किं आभोगनिव्वत्तिए अणाभोगनिव्वत्तिए ? गोयमा ! आभोगनिव्वत्तिएवि अणाभोगणिव्वत्तिएवि, एवं असुरकुमाराण जाव वेमाणियाण णवरं एगिंदियाण नो आभोगनि

परिणमावे फिर इन्द्रिय आदि के रूपपने परिणमें ऊंच नीच होवे पश्चात् कर तब फिर वैक्रय करे ? अहो गौतम ! उक्त प्रकार ही कहना परन्तु वैक्रय करने का नहीं कहना ऐसे ही यावत् चौरिन्द्रिय के दण्डक पर्यंत कहना जिस में इतना विशेष वायुकाय के वैक्रय करने का कहना पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक का और मनुष्य का जैसा नेरीया का कहा तैसा ही कहना वाणव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक का जैसा असुर कुमार का कहा वैसा कहना ॥ ४ ॥ दूसरा द्वार अहो भगवन् ! नेरीये के आभोग निवृति आहार है कि अनाभोग निवृति आहार है ? (मन की इच्छा सहित आहार करे वह आभोग निवृति और इच्छा बिना समय २ आहार करे वह अनाभोग निवृति आहार कहलाता है] अहो गौतम ! आभोग निवृति आहार भी है और अनाभोगनिवृति आहार भी है इस प्रकार ही असुरकुमार से यावत् वैमानिक पर्यन्त चौवीस ही दण्डक का कहना जिस में इतना विशेष एकेन्द्रिय के आभोग निवृति आहार नहीं है अर्थात् वे जानकर आ

न्विचिए, अणाभोगनिव्वत्तिए ॥ ५ ॥ णेरइयाणं भंते ! जे पोग्गले आहारत्ताए गिण्हति ते किं जाणति पासति आहारति उदाहु न याणति न पासति आहारेंति ? गोयमा ! न जाणति ण पासति आहारेंति एवं जाव तेइंदिया चउरिंदियाण पुच्छा ? गोयमा ! अत्थगतिया जाणति पासति आहारेंति अत्थेगतिया णजाणति पासति आहारेंति ॥ पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! अत्थेगतिया जाणति पासति आहारेंति अत्थेगतिया जाणति नपासति आहारेंति, अत्थेगतिया नजाणति

हार नहीं करते हैं परन्तु अनाभोग निवृत्ति आहार ही है॥५॥ अहो भगवन्! नेरीए जो आहार के पुद्गल ग्रहण करते हैं उन का जानकर देखकर आहार करते हैं कहिये या विना देखे विना जाने आहार करते हैं ? अहो गौतम ! विना जाने विना देखे आहार करते हैं क्यों कि राम आहार के पुद्गल सूक्ष्म होने से नारकी के अवधि न्यून होने से जान सकते देख सकते नहीं हैं, एसे ही यावत् तेइन्द्रिय तक कहना चौरिन्द्रिय की पृच्छा ? अहो गौतम ! कितनेक नहीं जानते हैं परन्तु चक्षु इन्द्रिय से देख कर आहार करते हैं, कितनेक विना जाने विना देखे आहार करते हैं [मिथ्यात्वोदय से न जाने अन्धकार कर न देखे] पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की पृच्छा ? अहो गौतम ! कितनेक ज्ञान कर जान कर आंखों कर देख कर भी आहार करते हैं, कितने सज्ञी के ज्ञान कर जानते हैं परन्तु आंखों का विषय विराध होने से नहीं देखा

पासति आहारेति अत्थगतिया ण जाणति ण पासति आहारेति ॥ एव मणुस्साणवि, एगतिया ... या ? मणूसियाण पुच्छा ? गोयमा ! अत्थगतिया जाणति प... अत्थगतिया ण जाणति ण पासति आहारेति ॥ स केण ट्ठेण भते ! एव वुच्चइ वेमाणिया अत्थेगतिया जाणति पसति आहारेति, अत्थगतिया ण जाणति ण पसति आहारेति ? गोयमा ! वेमाणिया दुविहा पण्णत्ता तजहा माइमिच्छादिट्ठी उववण्णगाय अमाइ सम्मदिट्ठी उववण्णगाय, एव

भी आहार करते हैं, कितनेक अज्ञान कर नहीं जानते हैं परन्तु आंखों से देख कर आहार करते हैं और कितनेक अज्ञान कर जानते भी नहीं हैं और दृष्टि के विराध कर देखते भी नहीं है परन्तु आहार करते हैं एसे ही मनुष्य का भी कहना, वाणव्यन्तर और ज्योतिषी का जैसा नेरीये का कहा वैसा कहना वैमानिक का प्रश्न ? अहो गौतम ! १ कितनेक जान कर देख कर आहार करते हैं, २ कितनेक बिना जाने बिना देखे आहार करते हैं अहो भगवन् ! किस कारन से ऐसा फरमाते हो की कितनेक वैमानिक जानते देखते हैं और कितनेक वैमानिक नहीं जानते नहीं देखते हैं ? अहो गौतम ! वैमानिक दो प्रकार कहे हैं तद्यथा—१ मायी मिथ्यात्व दृष्टि उत्पन्न हुए और अमायिक सम्यक् दृष्टि उत्पन्न होते हैं इस में जो मायिक मिथ्यादृष्टि हैं वे जानते भी नहीं हैं और देखते भी नहीं है ज्ञान की अपेक्षा कर और मा अ

जहा इंदिय उद्देसए पढमे भणियं तहा भणियव्वं जाव से तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चति ॥ ६ ॥ णेरइयाणं भंते ! कतिया अज्झवसाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! असंखेज्जा अज्झवसाणा पण्णत्ता तेणं भंते ! किं पसत्था अपसत्था ? गोयमा ! पसत्थावि, अपसत्थावि एवं जाव वेमाणियाणं ॥ ७ ॥ णेरइयाणं भंते ! किं सम्मत्ताभिगमा, मिच्छत्ताभिगमा, सम्मामिच्छत्ताभिगमा ? गोयमा ! सम्मत्ताभिगमावि मिच्छत्ताभिगमावि, सम्मामिच्छत्ताभिगमावि एवं जाव वेमाणियावि, णवरं एगिंदिया विगलिंदिया णो सम्मत्ताभिगमा, मिच्छत्ताभिगमावि, णो सम्मामिच्छत्ताभिगमा ॥ ८ ॥ देवाणं भंते ! किं सदेवीया

मायिक सम्यक् दृष्टि हैं व जानते हैं ज्ञान कर यों जिस प्रकार प्रथम उद्देश में कहा वैसा कहना यावत् इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा है ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! नारकी के कितने प्रकार के अध्यवसाय (परिणाम) कहे हैं ? अहो गौतम ! असंख्यात अध्यवसाय कहे हैं अहो भगवन् ! वे अध्यवसाय प्रशस्त (अच्छे हैं) कि अप्रशस्त (बुरे) हैं ? अहो गौतम ! प्रशस्त भी हैं और अप्रशस्त भी हैं यों यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! नारकी सम्यक्त्व सन्मुख हैं कि मिथ्यात्व सन्मुख हैं कि मिश्र के सन्मुख हैं ? अहो गौतम ! तीनों प्रकार के हैं यों यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना परंतु इतना विशेष एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय सम्यक्त्व और मिश्र दृष्टि नहीं है परंतु केवल मिथ्यात्व दृष्टि हैं (यही विक

सपरिवारा, सदेवीया अपरिवारा, अदेवीया सपरिवारा, अदेवीया अपरिवारा ? गोयमा! अत्थेगतिया देवा सदेवीया सपरिवारा, अत्थेगतिया देवा अदेवीया सपरिवारा, अत्थेगतिया देवा अदेवीया अपरिवारा णो चेवणं देवा सदेविया अपरिवारा ॥ सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति अत्थेगतिया देवा सदेवीया सपरिवारा, तंचेव जाव णो चेवणं देवा सदेवीया अपरिवारा ? गोयमा ! भवणवति वाणमंतर जोतिसिय सोहम्मीसाणसु कप्पेसु देवा सदेवीया सपरिवारा सणकुमार महिंद बंभलोग लंतक महासुक्क सहस्सार आणय पाणय आरण अच्चुएसु कप्पेसु देवा अदेवीया सपरिवारा, गवेज्ज अणुत्तरोववाइया देवा

सेन्द्रिय अपर्याप्त सम्यक्त्वाभिगम भी है परन्तु किंचित् व मतिपाति होने से यहां ग्रहण नहीं किया है) अहो भगवन् ! देवता हैं सो क्या देवी सहित और परिवार सहित हैं, कि देवी सहित और परिवार रहित हैं कि देवी रहित और परिवार सहित है कि देवी और परिवार दोनों रहित हैं? कितनेक देवता देवी सहित और परिवार सहित हैं, कितनेक देवता देवी रहित और परिवार सहित हैं और कितनेक देवता देवी रहित और परिवार रहित भी हैं परंतु देवी सहित और परिवार रहित एस देवता नहीं हैं अहो भगवन्! किस कारन से ऐसा कहा कि कितनेक देवता देवी सहित और परिवार सहित हैं यावत् कितनेक देवता देवी सहित और परिवार रहित नहीं है ? अहो गौतम ! भुवनपति वाणव्यन्तर ज्योतिषी और सौधर्म ईशान

अप्पदेवीया अपरियारा णो चेवणं देवाणं सदेवीया अपरियारा, सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति अत्थेगतिया देवा सदेवीया सपरियारा तचेव णो चेवणं देवा सदेवीया अपरियारा ॥ ८ ॥ कतिविहाण भंते ! परियारणा पण्णत्ता? गोयमा! पंचविहा पण्णत्ता तंजहा कायपरियारणा फासपरियारणा रूवपरियारणा, सद्दपरियारणा, मणपरियारणा, सेकेणट्ठेण भंते ! एवं वुच्चति पंचविहा परियारणा पण्णत्ता तंजहा कायापरियारणा जाव मणपरियारणा ? गोयमा ! भवणवासि वाणमंतर जोतिसि सोहम्मीसाणेसु

देवलोक के देवता देवी सहित और परिवार सहित हैं सनत्कुमार देवलोक से लगाकर यावत् अच्युत देवलोक पर्यन्त के देवता देवी रहित हैं परन्तु परिवार सहित हैं ग्रैवेयक और अनुत्तर विमान के देवता देवी और परिवार दोनों रहित हैं इस लिये अहो गौतम ! ऐसा कहा कि कितनेक देवता देवी और परिवार दोनों सहित हैं और यावत् देवी और परिवार रहित कोई देवता नहीं है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! कितनी प्रकार की परिचारणा (मैथुन सेवना) कही है ? अहो गौतम ! पांच प्रकार की परिचारना कही है तथथा–१ काया परिचारना, २ स्पर्श परिचारना, ३ रूप परिचारना, ४ शब्द परिचारना, और ५ मन परिचारना अहो भगवन् ! किस कारन ऐसा कहा है कि पांच प्रकार की परिचारना कही है तथथा–काया परिचारना यावत् मन परिचारना ॥ अहो गौतम ! भुवनपति वाणव्यन्तर ज्योतिषी

कप्पेसु देवा कायपरियारगा सणकुमारमाहिंदेसु कप्पसुदेवा फासपरियारगा बम्भलोयलंत गेसु कप्पसुदेवा रूवपरियारगा महासुक्कसहस्सारेसु कप्पसुदेवा सद्दपरियारगा आणय पाणय आरण अच्चुएसु देवा मणपरियारगा, गवेज्जग अणुत्तरोववाइयादेवा अपरियारगा सेतेणट्ठेणं गोयमा! तंचेव जाव मणपरियारगा ॥ १ ॥ तत्थणं जे ते कायपरियारगा देवा तेसिणं इच्छामणे समुप्पज्जइ इच्छामोणं अच्छराहिं सद्धिं कायपरियारकरित्तए, तएणं तेहिं देवेहिं

और सौधर्म ईशान देवलोक के देवता के काया की परिचारना है सनत्कुमार और माहेन्द्र देवलोक के देवता के स्पर्श की परिचारना है ब्रह्म और लांतक देवलोक के देवता के रूप की परिचारना है महा शुक्र और सहस्रार देवलोक के देवता के शब्द की परिचारना है आनत प्राणत और आरण अच्युत देवलोक के देवता के मन की परिचारना ग्रैवेयक और अनुत्तर विमान के देवता के अपरिचारना है क्यों कि उन के काम की इच्छा नहीं है ॥ इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा है कि पांच प्रकार की परिचारना है काया परिचारना यावत् मनपरिचारना ॥ १ ॥ उक्त पांच प्रकार की परिचारना में से जो देवता काया परिचारना वाले हैं उन को जिस वक्त इस प्रकार इच्छा होवे कि मैं अप्सरा देवीयों के साथ कायपरिचारना करना चाहता हूं उस वक्त वह देवता इस प्रकार मनमें विचार करते ही शीघ्रता से उन की अप्सराओं उदार मनोज्ञ, सर्व युक्त मनोज्ञ मनोहर मनोरम्य उत्तर वैक्रय रूप वैक्रय करे, वैक्रय कर उस देवता के पास आवे तब वह

एस मणसिकए समाणे खिप्पामेव ताओ अच्छराओ उरालाई सिंगाराई मणुण्णाइ मणोहराइ मणोरमाइ उत्तरवेउव्वियाइ रूवाइ विउव्वित्ति विउव्वित्ता तेसिं देवाणं अंतियं पाउब्भवति ॥ तएणं ते देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं कायपरियारणं करेंति, करतिया से जहा' नामए सीता पोग्गला सीतपप्प सीतचेव अतिवातित्ताण चिट्ठति, उसिणाणा पोग्गला उसिणंपप्प उसिणचेव अतिवइत्ताण चिट्ठति, एवमवतेहिं देवेहिं ताहिं अच्छ-

देवता उन अप्सरा के साथ कायपरिचारना करे, किस प्रकार करे ? सो कि यथा दृष्टांत जिस प्रकार शीत योनिक जीवों का शीतल पुद्गल के योग से उत्पन्न हाव सुख सब विशेष शीतल पुद्गल को प्राप्त कर उन शीतल पुद्गलों में अपनी आत्मा को स्थापन कर उस में मस्तपकर रहे, तथा उष्ण योनिक जीव को उष्ण पुद्गल के योग से सुख प्राप्त होवे वह उष्ण पुद्गल को प्राप्त कर उन उष्ण पुद्गलों में अपनी आत्मा को स्थापे—उस में प्रक्षेप करे आसक्त होकर रहे इस प्रकार वे देवताओं उन अप्सरा को प्राप्त कर जिस प्रकार मनुष्य पशु सेवन करते हैं उस प्रकार काया परिचारना करे इस प्रकार काया परिचारना करता हुवा व जिस प्रकार उस की मन की इच्छा हो उस प्रकार शीघ्रता से प्रवर्तते हैं मैथुन सेवन करते हैं अहो भगवन् ! उस देवता के शुक्र के पुद्गल होते हैं क्या ? अहो गौतम ! होते हैं वे केवल वैक्रय या वैक्रय शरीर के अन्तर्गत हो गर्भ आत्मा सचोप पावें, प्रमुप्रसुख पावे, तथा देवी के

राहिं सद्धिं कायपरियारणं करेइ समाणे इच्छा मणे खिप्पामेवावेति ॥ अत्थिणं भंते ! तेसिणं देवाणं सुक्कपोग्गला ? हंता अत्थि ॥ तेणं भंते ! तासिं अच्छराणं कीसत्ताए भुज्जो २ परिणमंति ? गोयमा ! सोतिंदियत्ताए चक्खिंदियत्ताए घाणिंदियत्ताए रसिंदियत्ताए फासिंदियत्ताए इट्ठत्ताए कंतत्ताए मणुन्नत्ताए मणामत्ताए सुभगत्ताए, सोहग्गरूवजोव्वणगुणलावण्णत्ताए ते तासे भुज्जो २ परिणमंति ॥ १० ॥ तत्थणं जे से फास परियारगा देवा तेसिणं इच्छामणे समुप्पज्जइ एवं जहेव कायपरियारगा

शरीर के पुद्गल देवता के शरीर में परिणमें और देवता के शरीर के पुद्गल देवी के शरीर में परिणमें यों परस्पर भोगते हुवे अनुपम सुख का अनुभव करते हैं तब फिर वे दोनों ही तृप्ति को प्राप्त होते हैं दोनों की इच्छा की निवृत्ति होती है। (परंतु जिस प्रकार मनुष्य मनुष्यनी के औदारिक शरीर के शुक्र के पुद्गल होते हैं वैसे देवता के नहीं होते हैं यहां फक्त सुखानुभव अपेक्षा इच्छा तृप्ति की अपेक्षा शुक्र के वैक्रय रूप अन्य प्रकार के कहे हैं) अहो भगवन् ! उन अप्सरा के व पुद्गलों किस प्रकार वारम्वार परिणते हैं? अहो गौतम! श्रोतेन्द्रियपने चक्षुइन्द्रियपने घ्राणेन्द्रियपने रसेन्द्रियपने स्पर्शेन्द्रियपने इष्टकारी हो कान्तकारी हो, मनोज्ञकारी हो, मणामकारी हो, शुभपने, सौभाग्यपने, यौवनता व गुन लावण्यतापने वारम्वार परिणमते हैं। यह कायापरिचारक का कथन हुआ ॥ १० ॥ उन में जो स्पर्श परिचारक देवता हैं उन के मन

तहेव णिरवसेसं भाणियव्वं ॥ ११ ॥ तत्थणं जेते रूवपरियारगा देवा तेसिणं इच्छामणे समुप्पज्जइ इच्छामोणं अच्छराहिं सद्धिं रूवपरियारणं करित्तए, ततेणं से तेहिं देवेहिं एवं मणसीकएसमाणे तहेव जाव उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विउव्वंति वेउव्वित्ता जणामेव तेदेवा तेणामेव उवागच्छंति २त्ता तेसिं देवाणं अदूरसामंते ठिच्चा ताइं उरालाइं जाव मणोरमाइं उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं उवदंसेमाणी २ उवचिट्ठति, तएणं तेदेवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं रूवपरियारणंकरोति,सेसं तमेव जाव भुज्जो २ परिणमति

में इच्छा उत्पन्न होवे तब जिस प्रकार काया परिचारक का कहा उस ही प्रकार निर्विशेष कहना उस देवी को ग्रहण कर अनंगक्रिडा कर सान्त तृप्त अतुल सुख के अनुभव करते हैं ॥ ११ ॥ उस में जो रूप परिचारक देवता हैं उन का इच्छा होती है कि अप्सरा के साथ रूप परिचारना करूं, उस वक्त उन देवताको इस प्रकार विचार होते ही उन की अप्सरा पूर्वोक्त प्रकार तत्काल उत्तर वैक्रेय रूप बनाकर जहां वह देवता होता है वहां आती है और उस देवता से बहुत दूर नहीं वैसे ही बहुत नजीक नहीं इस प्रकार खडी रहकर वह उसका उत्तर वैक्रय औदार प्रधान यावत् मनाम रूप उस देवता का रूप (अंगोपांग) देखाती हुई रहती है तब वह देवता भी अपनी चपलता रहीकर उस का शृंगार अंगोपांग का निरक्षण कर परिचारना करता है इस कथन उक्त प्रकार यावत् उस का पांचों इन्द्रियपने अतुल सुख वारम्वार

॥ १८ ॥ तत्थणं जेते सद्दपरियारगा देवा तेसिणं इच्छा मणे समुप्पज्जइ इच्छामोणं अच्छराहिं सद्धिं सद्दपरियारणं करेत्तए, ततेणं तेहिं देवेहिं एवं मणसीए कए समाणे तहेव जाव उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं वेउव्वंति २ त्ता जेणामेव ते देवा तेणामेव उवागच्छंति २ त्ता तेसिं देवाणं अदूरसामंते ठिच्चा अणुत्तराइं उच्चावयाइं सद्दाइं समुदीरमाणीओ २ चिट्ठति ततेणं ते देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं सद्दपरियारं करेंति सेसं तंचेव, जाव भुज्जो २ परिणमंति ॥

परिणमकर वह तृप्त होता है ॥ १९ ॥ यहां जो शब्द परिचारक देवता हैं उन के मन में इच्छा होती कि मैं अप्सरा संग शब्द परिचारणा करूं तब वह देवता इस प्रकार विचार करते ही उसकी अप्सरा उक्त प्रकार ही उत्तर वैक्रेय रूप करके उस देवता के पास आती है आकर उस के पास खडी रहकर अनुत्तर प्रधान ऊंच प्रकार के अनेक शब्दों बोलती हुई रहती है तब वह देवता उस अप्सरा के साथ शब्द मधुरकर शब्द परिचारना करता है यह पूर्वोक्त प्रकार यावत् पांचों इन्द्रियपने वारम्वार मनुक्षमनुक्षानु मनकर तृप्त होते हैं ॥ उस में जो मन परिचारक देवता हैं उन के मन में इच्छा होवे कि मैं अप्सरा के साथ मन परिचारना करूं, तब उस देवता का इस प्रकार विचार होते ही शीघ्रता से उस की अप्सरा-देवी अपने स्वस्थान विमान में ही रही हुई मनुष्य ऊंच प्रकार का विषयानुकूल मन के परिणाम परिणमाकर रहती है यावत् तब मन के पुरुष

परिणमति ॥ तत्थणं जेते मणपरियारगा देवा तेसिं इच्छामणे समुप्पज्जति इच्छामोणं

अच्छराओ मणसा परियारणं करित्तए तएणं तहिं देवाहिं एवं मणसीकएसमाणे

खिप्पामेव ताओ अच्छराओ तत्थगयाओ चेव समाणीओ अणुत्तराइं उच्चावयाइं मणाइं

पसरर परिणमकर अनुक्रम सुखानुभव करते हैं (यह अर्थ वाली पन्नवना में लिखा है कि स्पर्श परिचारक से काया परिचारक के सुख अनंतगुने, काया परिचारक से रूप परिचारक के सुख अनंतगुने, रूप परिचारक से शब्द परिचारक के सुख अनंतगुने, शब्द परिचारक से मन परिचारक के सुख अनंतगुने, और मन परिचारक से अपरिचारक के सुख अनंतगुने हैं ॥ और भी उक्त कथन का विशेष खुलासा इस प्रकार करते हैं कि प्रथम सौधर्म देवलोक में अपरिग्रही देवी के ६ लाख विमान हैं उन में रहने वाली देवीयों की स्थिति जघन्य एक पल्योपम की उत्कृष्ट पचास पल्योपम की है उस में एक पल्योपम से दश पल्योपम की स्थितिवाली देवियां प्रथम देवलोक के देवता के भाग में आती हैं दश पल्योपम से एक समय अधिक २० पल्योपम के आयुष्यवाली देवीयों तीसरे देवलोक के देव के भाग में आती है, बीस पल्योपम से एक समय अधिक तीस पल्योपम के आयुष्य वाली देवी पांचवे देवलोक के देव के भाग में आती है और तीस पल्योपम से एक समय अधिक चालीस पल्योपम के आयुष्यवाली देवी सातवे देवलोक के देव के भाग में आती है, चालीस पल्योपम से एक समय अधिक पैंतालीस पल्योपम के आयुष्यवाली

पडुप्पमाणीतार चिट्ठति तंतेणं ते देवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं मणपरियारणं करेति सेस निरवसेस जाव भुज्जो २ परिणमंति ॥ एतेसिणं भंते ! देवाणं कायपरियारगाण जाव मणपरियारगाण अपरियारगाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा !

देवी नवमे देवलोक के देव के भोग में आती है और पैंतालीस पल्योपम से एक समय अधिक पचास पल्योपम के आयुष्यवाली देवी इग्यारवे देवलोक के देव के भोग में आती है ॥ ऐसे ही दूसरे देवलोक में अपरिग्रही देवी के चार लाख विमान हैं उस में से रहने वाली देवीयों का जघन्य एक पल्योपम से कुछ अधिक उत्कृष्ट पचावन ५५ पल्योपम का आयुष्य है उस में से एक पल्योपम से कुछ अधिक पनरे पल्योपम के आयुष्य वाली देवी दूसरे देवलोक के देव के भोग में आती है, पनरे पल्योपम से एक समय अधिक पचीस पल्योपम के आयुष्य वाली देवी चौथे देवलोक के देवता के भोगवने में आती है, पचीस पल्योपम से एक समय अधिक पैंतीस पल्योपम के आयुष्यवाली देवी छठे देवलोक के देव के भोगवन में आती है पैंतीस पल्योपम से एक समय अधिक पैंतालीस पल्योपम के आयुष्यवाली देवी आठवे देवलोक के देवता के भोग में आती है. पैंतालीस पल्योपम से पचीस पल्योपम के आयुष्यवाली देवी दसवे देव लोक के देव के भोगवन में आती है और पचास पल्योपम से एक समय अधिक पचपन पल्योपम के आयुष्यवाली देवी बारवे देवलोक के देवता के भोग में आती है आठवे देवलोक तक देवी जाती है)

सव्वत्थोवा देवा अपरियारगा, मणपरियारगा संखेज्जगुणा, सद्दपरियारगा असंखेज्जगुणा रूवपरियारगा असंखेज्जगुणा फासपरियारगा असंखेज्जगुणा, कायपरियारगा असंखेज्ज गुणा ॥ इति पण्णवणाए भगवतीए परियारणा पय चौवीसम सम्मत्त ॥ ३४ ॥ *

अहो भगवन् ! काया परिचारक यावत् अपरिचारक इन देवों में कौन ज्यादा तुल्य विशेषाधिक कौन ? हैं? अहो गौतम ! सब से थोडे अपरिचारक देव हैं क्यों कि ग्रैवेयक और अनुत्तर विमानवासी ही हैं व क्षेत्र पल्योपम के असंख्यातवे भाग वर्ति आकाश प्रदेश समान हैं २ उन से मन परिचारक संख्यातगुने क्यों कि नवये दशवे इग्यारवे बारवे देवलोक के देव हैं व क्षेत्र पल्योपम के असंख्यातवे भाग में जो आकाश प्रदेश की राशी समान है ३ उनसे शब्द परिचारक देव असंख्यातगुने हैं क्योंकि सातवे आठवे देव लोकवाले हैं व घनी कृत लोक के एक आकाश प्रदेश की श्रेणि के असंख्यातवे भाग में जितने आकाश प्रदेश हैं उतने हैं ४ उन से रूपपरिचारक असंख्यातगुने क्यों कि पांचवे छठे देवलोक के देव हैं व श्रेणि के असंख्यातवे भाग गत आकाश प्रदेश समान हैं ५ उस से स्पर्श परिचारक असंख्यातगुने क्यों कि तीसरे चौथे देवलोक के देव हैं व श्रेणि के असंख्यातवे भाग गत आकाश प्रदेश समान हैं, और ८ उनसे काया परिचारक असंख्यातगुने क्यों कि वे भुवनपति वाणव्यन्तर ज्योतिष पहला दूसरा देवलोक के देव हैं व संख्यात प्रतरके असंख्यात भागवर्ती आकाश प्रदेश समान हैं॥ इति चौवीसवा पद॥

॥ पञ्चत्रिंशत्तम वेदनापरिणामपदम् ॥

सीताय दव्व सारीर साय तह वेयणा हवंति दुक्खा, अब्भुवगमोवक्कमिया, निदाय अणिदाय णायव्वा ॥ १ ॥ सातमसातं सव्वे, सुहं च दुक्खं अदुक्खमसुहं च, माणसरहियं विगलिंदियाओ, सेसा दुविहमेव ॥ २ ॥ १ ॥ कतिविहा णं भंते ! वेयणा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा वेदणा पण्णत्ता तंजहा सीता, उसिणा सितो सिणा ॥ णेरइया णं भंते ! किं सीतं वेदणं वेदंति उसिणं वेदणं वेदंति, सितोसिणं

अब पेंतीसवा वेदना पद कहते हैं ॥ जिस के १७ द्वार के नाम १ शीतादि वेदना, २ द्रव्यादि वेदना, ३ शारीरिकादि वेदना, ४ सातादि वेदना, ५ वेदना द्वार, ६ दुःखादि का, ७ अभ्युगम उपक्रम वेदना, ८ णिदा ९ अणिदा १० साता असाता, ११ सुख, १२ दुःख, १३ असुख १४ अदुःख, १५ मानसी, १६ विगलेंद्रिय, और १७ शेष दो प्रकार की ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! कितने प्रकार की वेदना कही है ? अहो गौतम ! तीन प्रकार की वेदना कही है, तद्यथा-शीत वेदना,२ उष्ण वेदना,और ३ शीतोष्ण वेदना अहो भगवन् ! नरक के जीवों किस प्रकार की वेदना वेदते हैं? अहो गौतम ! शीत वेदना भी वेदते हैं, उष्ण वेदना भी वेदते हैं परन्तु शीत उष्ण (मिश्र) वेदना नहीं वेदते हैं क्योंकि यहां एकान्त दुःख रूपी वेदना है अब एकेक पृथ्वी की वेदना कहते

वेदणं वेदति ? गोयमा ! सीयंपि वेदण वेदति, उसिणपि वेदण वेदति णो सितोसिण वेदण वेदति ॥ केईएकेच्चीए पुढवीए वेदणाओ भणति रयणप्पमा पुढवी णरइयाणं भते ! पुच्छा? गोयमा ! णो सीत वेदण वेदति, उसिणं वेदण वेदति, णो सीतासिण वेदण वेदति, एव जाव वालुयप्पमा पुढवि नेरइयाण ॥ पंकप्पमा पुढवि णेरइयाण ॥ पुच्छा? गोयमा ! सीतपि वेदण वेदति उसिणपि वेदणं वेदेंति, णो सितोसिण वेदण वेदति, ते बहुयतरागा जे उसिण वेदण वेदति ते थोव

है रत्नप्रभा पृथ्वी नेरीये की पृच्छा ! अहो गौतम ! शीत की और शीत उष्ण की वेदना नहीं वेदते हैं परंतु एक ऊष्ण की ही वेदना वेदते हैं क्यों कि य शीत यानिक हैं॥ऐसेही शर्करप्रभा और बालुकप्रभा पृथ्वी का कहना ॥ पंकप्रभा की पृच्छा ! अहो गौतम ! शीत वेदना भी वेदते हैं, ऊष्ण वेदना भी वेदते हैं परतु शीतोष्ण वेदना नहीं वेदते हैं इस में से बहुत से जो ऊपर के नरकावासा में उत्पन्न हुवे नेरीये हैं वे ऊष्ण की वेदना वेदते हैं और थोडे से जो नीचे के नरकावासा में उत्पन्न हुवे हैं शीत की वेदना वेदते हैं ऊष्णता से शीत की वेदना का दुःख ज्यादा है ॥ ऐसे ही धूम्रप्रभा पृथ्वी का भी कहना यहां भी दो प्रकार की ही वेदना है परतु इतना विशेष ऊपर के भाग पाथडा में वो ऊष्ण वेदना वेदते हैं और

सराागा अ सीत वेदण वेदेंति ॥ धूमप्पभाए एवचेव तुविहा, णवर ते बहुयतरागा जे सीत वेदण वेदंति, ते थोवतरागा जे उसिण वेदण वेदंति ॥ तमाए तमतमाएय सीत वेदण वेदंति, नो उसिण वेदण वेदंति णो सितोसिण वेदण वेदंति ॥ असुरकुमाराण पुच्छा? गोयमा! सीतंपि वेदण वेदंति उसिणंपि वेदण वेदंति सीतोसिणंपि वेदण वेदंति ॥ एवं जाव वेमाणिया ॥ २ ॥ कतिविहाणं भंते! वेदणा पण्णत्ता? गोयमा! चउव्विहा वेदणा पण्णत्ता तंजहा दव्वाओ, खेत्ताओ, कालाओ, भावाओ ॥ णेरइयाणं भंते!

नीच के बहुत थोड़े वाले शीत की वेदना वेदते हैं ॥ तमा और तमतमा पृथ्वी वाले एक शीत वेदना वेदते हैं बाकी की दो वेदना नहीं वेदते हैं असुरकुमार की पृच्छा? अहो गौतम! शीत की वेदना भी वेदते हैं, उष्ण की वेदना भी वेदते हैं और शीतोष्ण की (मिश्र वेदना भी) वेदते हैं जब वे शीतल जलादि में स्नानादि करते हैं तब शीत वेदते हैं जब कोई महाऋद्धिक देव कोप कर तेज छोड़ कर देवे तब उष्ण वेदना भी वेदते हैं जैसे ईशानेन्द्र ने चमर चंचा राजधानी के देव को परितापित किये अन्यथा सदैव तो शीतोष्ण [मिश्र] सुखमय वेदना ही वेदते हैं एसे ही यावत् वैमानिक पर्यन्त चौवीस दंडक का ही कहना ॥ २ ॥ अहो भगवन्! कितने प्रकार की वेदना कही है? अहो गौतम! चार प्रकार की वेदना कही है, तद्यथा—१ द्रव्य की वेदना, २ क्षेत्र की वेदना, ३ काल की वेदना

किं दव्वओ वेदण वेदति जाव किं भावतो वेदण वेदति ? गोयमा ! दव्वतोवि वेदण वेदति, जाव भावतोवि वेदति एव जाव वेमाणिया ॥ २ ॥ कतिविहाण भंते ! वेदणा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा वेदणा पण्णत्ता तंजहा सारीरि, माणसी, सारीरमाणसी ॥ णेरइयाण भंते ! किं सारीरिं वेदण वेदति माणसिं वेदण वेदति सारीमाणसिं वेदण वेदति ? गोयमा ! सारीरिं वेदण वेदंति, माणसिं वेदणं वेदंति॥ सारीरामणसिंपि वेदण वेदति एव जाव वेमाणिया, णवर एगिंदिय वेगलिंदिया

और भाव की वेदना भव प्रकार वेदना करते अहो भगवन्! नेरीये द्रव्य वेदना वेदते हैं कि यावत् भाव वेदना वेदते हैं? अहो गौतम ! द्रव्य वेदना भी वेदते हैं यावत् भाव वेदना भी वेदते हैं यों यावत् वैमानिक तक कहना नरक में दु:ख रूप वेदना में सुख रूप और मनुष्य तिर्यंच में मिश्रता रूप ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! कितने प्रकार की वेदना कही है ? अहो गौतम ! तीन प्रकार की वेदना कही है तद्यथा—शरीर से उत्पन्न होवे वह शारीरिक २ मन से उत्पन्न होवे वह मानसिक और शरीर मन से दोनों से होवे वह शारीरिक मानसिक. अहो भगवन् ! नेरीये क्या शारीरिक वेदना वेदते हैं कि मानसिक वेदना वेदते हैं कि शारीरिक मानसिक वेदना वेदते हैं ? अहो गौतम! शारीरिक भी वेदना वेदते हैं मानसिक भी वेदना वेदते हैं और शारीरिक मानसिक भी वेदना वेदते हैं यों यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना. जिस में इतना विशेष एकेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय फक्त शारीरिक

सारीरं वेदण वेदति, णो माणसं वेदण वेदति, णो सारीरमाणसि वेदण वेदंति ॥४॥ कतिविहाण भंते ! वेदणा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा वेदणा पण्णत्ता साता असाता, सातासाता ॥ नेरइयाण भंते ! किं सात वेदण वेदति असाता वेदण वेदति, सातासात वेदण वेदति ? गोयमा ! तिविहंपि वेदण वेदंति एवं सव्व जीवा जाव वेमाणिया ॥ ५ ॥ कतिविहाण भंते ! वेदणा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा वेदणा पण्णत्ता तंजहा दुक्खा सुहा, अदुक्खमसुहा ॥ णेरइयाण भंते ! किं दुक्ख

वेदना वेदते हैं परंतु मानसिक व शारीरिकमानसिक वेदना नहीं वेदते हैं क्यों कि इन के मन नहीं है ॥४॥ अहो भगवन् ! कितने प्रकार की वेदना कही है ? अहो गौतम ! तीन प्रकार की वेदना कही है तद्यथा—१ साता २ असाता, और ३ साता असाता अहो भगवन् ! नेरीये क्या साता वेदना वेदते हैं कि असाता वेदना वेदते हैं कि साता असाता (मिश्र) वेदना वेदते हैं? अहो गौतम! तीनों प्रकार की वेदना वेदते हैं, तीर्थंकर के जन्मादि वक्त में साता भी वेदते हैं सब वेदना परधामी कृत असाता भी वेदते हैं और पूर्व भव सम्बन्धी कोई मित्र देव दुःख से बचाने आवे तब साताअसाता दोनों वेदते हैं क्यों कि दुःख से बचते नहीं है ॥ ऐसे ही वैमानिक पर्यंत कहना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! कितने प्रकार की वेदना कही है ? अहो गौतम ! तीन प्रकार की वेदना कही है तद्यथा १ दुःख, २ सुख और ३ दुःख सुख दोनों

पिर्वेदण वेदति ? गोयमा ! दुक्खपि वेदण वेदति, सुहपि वेदणं वेदति, अदुक्खम सुहपि वेदणं वेदति ॥ एव जाव वेमाणिया ॥ ६ ॥ कतिविहाण भते ! वेदणा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा वेदणा पण्णत्ता तजहा अब्भोवगमियाय उवक्कमियाय ॥ णेरइयाण भते ! किं अब्भोवगमिय वेदण वेदति उवक्कमिय वेदण वेदति ? गोयमा ! णो अब्भोवगमियं वेदण वेदति, उवक्कमिय वेयण वेदति एव जाव चउरिंदिया ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणिया मणुस्साय दुविहपि वेदण वेदति, वाणमतरा जोइसिया वेमाणिया जहा

रहित मध्यस्थभाव ॥ अहो भगवन् ! नरीय तीनों प्रकार की वेदना में से किस प्रकार की वेदना वेदते हैं? अहो गौतम ! तीनों प्रकार की वेदना वेदते हैं उक्त कथन अनुसार ही यों यावत् वैमानिक पर्यंत कहना (कर्मोदय कर मन दुःख होता है और पुद्गल संयोगों कर साता असाता होती है) ॥६॥ अहो भगवन् ! कितने प्रकार की वेदना कही है ? अहो गौतम ! दो प्रकार की वेदना कही है तथया अभ्योपगमिक जो स्वयं वेदना की उदीरना कर जैसे साधु लोचादि करते हैं और २ उपक्रमिक वेदना सो कर्मोदय कर उत्पन्न होवे जैसे ज्वरादि अहो भगवन् ! नारकी क्या अभ्योपगमिक वेदना है कि उपक्रमिक वेदना है ? अहो गौतम ! अभ्योपगमिक वेदना नहीं है परन्तु उपक्रमिक वेदना है एम ही यावत् दश भुवनपति पांचस्थावर तीनों विकलेन्द्रिय पर्यंत कहना पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक और मनुष्य के दोनों प्रकार की

नेरइया ॥ ७ ॥ कतिविहाण भंते ! वेदणा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा वेदणा पण्णत्ता तंजहा णिदाय अणिदाय ॥ णेरइयाण भंते ! किं णिदाय वेदण वेदति अणिदाय वेदण वेदति ? गोयमा ! णिदायपि वेदण वेदति, अणिदायपि वेदण वेदति ॥ से केण ट्ठेण भंते ! एव वुच्चति णेरइया णिदायपि वेदण वेदति अणिदायपि वेदण वेदति गोयमा ! णेरइया दुविहा पण्णत्ता तंजहा सण्णीभूताय, असण्णीभूताय, तत्थण जेते सण्णीभूया तेण णिदाय वेदणं वेदति तत्थण जेते असण्णीभूया तेण अणिदाय वेदण वेदति स तेणट्ठेण गोयमा ! एवं वुच्चति, णेरइया णिदायंपि वेदण वेदति अणि-

वेदना है क्योंकि वह कर्म क्षय करने के उद्यमी भी होते हैं ॥ वाणव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक नेरीये की तरह एक उपक्रमी ही वेदना वेदते हैं ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! कितने प्रकार की वेदना कही है ? अहो गौतम ! दो प्रकार की वेदना कही है तद्यथा १ मन के जानपने युक्त वह निदावेदना और जाने बिना हो सो अनिदा वेदना ॥ अहो भगवन् ! नेरीया निदा वेदना वेदते हैं कि अनिदा वेदना वेदते हैं ? अहो गौतम ! दोनों प्रकार की वेदते हैं ॥ किस कारन अहो भगवन् ! एसा कहा कि नेरीये दो प्रकार की वेदना वेदते हैं ? अहो गौतम ! नेरीये दो प्रकार के हैं तद्यथा १ सन्नीभूत जो कृत कर्म का पश्चात्ताप करे और असन्नीभूत जो कृत कर्म का पश्चात्ताप नहीं करे, इस में जो सन्नी भूत हैं व निदावेदना वेदते हैं और असन्नीभूत हैं

दाय णिवेदण वेदेति ॥ एवं जाव थणियकुमारा ॥ पुढविकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! नो णिदाय वेदण वेदंति अणिदाय वेदण वेदंति॥ से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चति पुढविकाइया नो णिदाय वेदण वेदंति अणिदाय वेदण वेदंति ? गोयमा ! पुढवि काइया सव्वे असण्णी भूया, अणिदाय वेदणं वेदंति, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति पुढविकाइया णो णिदाय वेदण वेदंति अणिदाय वेदणं वेदंति ॥ एवं जाव चउरिंदिया ॥ पंचिंदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा वाणमंतरा जहा णेरइया ॥ जोइसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! णिदायपि वेदण वेदंति अणिदायपि वेदण वेदंति ॥

वे अनिदा वेदना वेदते हैं ॥ इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा नेरीये दोनों प्रकार की वेदना वेदते हैं ॥ ऐसे ही यावत् स्तनित कुमार पर्यंत कहना ॥ पृथ्वीकाय निदा वेदना नहीं वेदती है परंतु अनिदा वेदना वेदती है अहो भगवन् ! किस कारन ऐसा कहा कि पृथ्वीकाय निदा वेदना नहीं वेदती है अनिदा वेदना ही वेदती है ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाय सब असंज्ञी भूत ही है ऐसे ही यावत् चौरिन्द्रिय पर्यंत कहना, पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक मनुष्य और वाणव्यंतर इनका नेरीया जैसा कहना दोनों प्रकारकी वेदना वेदते हैं. ज्योतिषी ... अहो भगवन् ! ज्योतिषी दोनों प्रकारकी

से केणट्ठेण भंते ! एव वुच्चति जोतिसिया मिच्छायपि वदण वदेंति अणिदायपि वेदण वेदति ? गोयमा ! जोइसिया दुविहा पण्णत्ता तंजहा माईमिच्छदिट्ठी उववण्णगाय अमाई सम्मदिट्ठी उववण्णगाय तत्थण जे ते माई मिच्छादिट्ठी उववण्णगा तेण अणिदाय वेदण वदति तत्थण जे ते अमायी सम्मदिट्ठी उववण्णगा तेण णिदाय वेदण वदति से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चति जोतिसिया दुविहंपि वदण वेदति एव वेमाणियावि ॥ इति पण्णवणाए भगवतीए वेदनापय पेंतीसम सम्मत्त ॥ ३५ ॥

वदना किस प्रकार वदते हैं ? अहो गौतम ! ज्योतिषी दो प्रकार के कहे हैं ? तद्यथा-मायायुक्त मिथ्यात्व दृष्टी और मायारहित सम्यग्दृष्टी इस में जो मायीमिथ्यादृष्टी उत्पन्न हुवे हैं वे विवेक के अभावकर अनिदा वेदना वदते हैं और जो अमायी सम्यक्दृष्टी हैं व विवेक के सद्भाव से निदा वदना वेदते हैं इस प्रकार अहो गौतम ! एसा कहा ज्योतिषी दोनों प्रकार की वेदना वेदते हैं एसा ही वैमानिक का भी कहना ॥ इति पेंतीसवा वदना पद समाप्त ॥ ३५ ॥

॥ षट्‌त्रिंशत्तम समुद्घातपदम् ॥

वेयण कसाय मरणे वेउव्विय तेयए य आहारे, केवलिए समुग्घाए जीवमणुस्साणं सत्तेव ॥ १ ॥ १ ॥ कतिणं भंते ! समुग्घाया पण्णत्ता ? गोयमा ! सत्तसमुग्घाया पण्णत्ता तंजहा-वेयणासमुग्घाए, कसाय समुग्घाए, मारणंतिय समुग्घाए, वेउव्विय

अब छत्तीसवा समुद्घात पद कहते हैं ॥ नाम १ वेदना समुद्घात वेदनीय कर्मोदय, २ कषाय समुद्घात चारित्र मोहनी कर्मोदय ३ मरणांतिक समुद्घात आयुष्य कर्मोदय, ४ वैक्रेय समुद्घात-नाम कर्मोदय, ५ तेजस समुद्घात नाम कर्मोदय ६ आहारक समुद्घात नाम कर्मोदय, और ७ केवली समुद्घात वेदनी नाम गोत्र कर्म के आश्रय यह सातों समुद्घात समुच्चय जीव में और मनुष्य में पाती है (जिस वक्त आत्मा वेदनीयादिक अनुभव के उपयोग में परिणमें उस वक्त दूसरा उपयोग न होवे इसलिये एकी भाव प्रबल रूप प्राप्त होवे क्योंकि वेदनादि समुद्घात पने परिणमे हैं व बहुत वेदनीयादि कर्मोदय के दल कालान्तर में अनुभवन योग्य थे उन को उदीरणा करके आकर्षकर उदय में प्रक्षपकर भोगवकर निर्जरा कर जो जीव के प्रदेश से लगाय उन का क्षय करे उसे समुद्घात कहते हैं) ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! कितने प्रकार की समुद्घात कही है ? अहो गौतम ! सात प्रकार समुद्घात कही है तद्यथा १ वेदनी समुद्घात, २ कषाय

मारणांतिय समुग्घाए वेउव्विय समुग्घाए, तेया समुग्घाए, णवरं मणुस्साण सत्तविहा समुग्घाया पण्णत्ता तंजहा वेयणा समुग्घाए कसाय समुग्घाए, मारणांतिय समुग्घाए वेउव्विय समुग्घाए, तेया समुग्घाए आहार समुग्घाए, केवली समुग्घाए ॥ ४ ॥ एगमेगस्सण भंते ! णेरइयस्स केवतिया वेदणा समुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइअत्थि कस्सइणत्थि, जस्सत्थि जहण्णेण एक्कोवा, दोवा, तिण्णिवा, उक्कोसेण संखेज्जावा असंखेज्जावा अणंतावा ॥ एवं

तीन समुद्घात कही है, तद्यथा—१वेदनी, २कपाय, ३ मारणांतिक, ४वैक्रय, और ५तेजस, जिस में इतना विशेष मनुष्य के सातों समुद्घात कही है तद्यथा—१ वेदनीय, २ कपाय, ३ मरणांतिक, ४ वैक्रय ५ तेजस, ६ आहारक और ७ केवल ॥ ४ ॥ अब चौवीस दंडक पर एक जीव आश्रिय पृच्छा करते हैं अहो भगवन् ! एकेक नारकी नरीयेन गतिकाल में वेदनी समुद्घात कितनी वक्त की है ? अहो गौतम ! अनंती वक्त की है क्योंकि गतकाल में अनंतभव किये हैं और एकेक भव में सेंकडों वक्त वेदना समुद्घात की है इस आश्री अहो भगवन्! एकेक नेरीयाने आगामिक काल में वेदनी समुद्घात कितनी वक्त करेगा? अहो गौतम! कोइ करेगा और कोइ नहीं भी करेगा, जो करेगा तो जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात कोई अनंत भी करेगा, एस ही असुरकुमार से यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना और यह जैसा वेदनीय

अपुरकुमारस्सवि, णिरतर जाव वेमाणियस्सा ॥ एव जाव तेयग समुग्घाए एव तयच चउवीस दडगा ॥ एगमगस्सण भते ! णेरइयस्स केवइया आहारग समुग्घाता अतीता ? गोयमा! कस्सइअत्थि कस्सइणत्थि जस्सत्थि जहण्णेण एक्कोवा दोवा उक्कोसेण तिण्णि केवइया पुरेकडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्सत्थि। जहण्णेण एक्कोवा दोवा तिण्णिवा, उक्कोसेण चत्तारि ॥ एव णिरतर जाव

समुद्घात का कहा वैसा ही कषाय मारणांतिक वैक्रेय और तेजस समुद्घात का कहना यों पांचों ही समुद्घात पर चौवीसों ही समुद्घात का कहना अहो भगवन् ! एकेक नेरीयेने आहारक समुद्घात गत काल में कितनी की है ? अहो गौतम ! किसी नेरीयेने की है और किसीने नहीं भी की है क्यों कि जो मनुष्यगति को प्राप्त हो साधु बन चौदह पूर्व का ज्ञान पढ आहारक लब्धी को प्राप्त करता है उसी को आहारक समुद्घात होती है, इसलिये जिसने की है सो जघन्य एक वक्त उत्कृष्ट तीन वक्त की है परंतु चार वक्त नहीं की है क्यों कि चार वक्त आहारक समुद्घात करनेवाला जघन्य अंतक भवसाक उत्कृष्ट भवाथ सिद्धक भाना है यथा कम क्षय कर मोक्ष भी जाता है अहो भगवन् ! नरीया आगामिक काल में आहारक समुद्घात कितनी वक्त करेगा ? अहो गौतम ! कोई करेगा कोई नहीं भी करेगा, जो करेगा सो जघन्य एक वक्त दो वक्त तीन वक्त उत्कृष्ट चार वक्त करेगा यों निरंतर यावत् वैमानिक

णेरइयाणं भंते ! केवतिया केवलि समुग्घाया अतीता ? गोयमा ! णत्थि, केवतिया पुरेकडा ? गोयमा ! असंखेज्जा ॥ एवं जाव वेमाणियाणं, णवर वणप्फतिकाइय मणूसेसु इमं णाणत्तं वणप्फतिकाइयाणं भंते ! केवतिया केवलि समुग्घाया अतीता ? गोयमा ! णत्थि केवइया पुरेकडा ? गोयमा ! अणंता ॥ मणुस्साणं भंते ! केवतिया केवलि समुग्घाया अतीता ? गोयमा ! सिय अत्थि सिय णत्थि, जइअत्थि जहण्णेणं

अिम मनुष्य आश्रिय एसा ही आगामिक काल आश्रिय भी कहना अहो भगवन् ! बहुत नेरीयेने आहारक समुद्धात गत काल में कितने बक्त का ? अहो गौतम ! नहीं की. आगामिक काल में कितनी बक्त करेंगे ? अहो गौतम ! असंख्यात बक्त करेंगे यों यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना, जिस में इतना विशेष वनस्पतिकायाका व मनुष्यका इतना फर्क अहो भगवन् ! वनस्पतिकाया के जीवोंने अतीत काल में केवल समुद्धात कितन बक्त की ? अहो गौतम ! नहीं की अनागत काल में कितनी बक्त करेंगे ? अहो गौतम ! अनंत बक्त करेंगे अहो भगवन् ! मनुष्योंने गत काल में केवल समुद्धात कितने बक्त की ? अहो गौतम ! किसीने की किसीने नहीं भी की जिन्होंने की है तो एक ही बक्त की है बहुत जीवों आश्रिय जघन्य एक दो तीनबक्त उत्कृष्ट प्रत्येक सो [२००से९०० तक] एकबक्तमें इतने केवली समुद्धात से निवृत्ति पाये हुवे पावे हैं अनागत काल में कितनी बक्त करेंगे ? अहो गौतम !

एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण सयपुहुत्त, केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! सिय सम्वज्जा सिय असंखेज्जा ॥ ९ ॥ एगमेगस्सणं भंते ! णेरइयस्स णेरइयत्ते केवतियया वेयणा समुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइणत्थि जस्सअत्थि जहण्णेण एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जावा असंखेज्जवा अणंतावा, एवं असुरकुमारत्ते जाव वेमाणियत्ते ॥ एगमेगस्सणं भंते ! असुरकुमारस्स णेरइयत्ते केवतिया वेयणासमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणंता,

कितनेक संख्यात वक्त गर्भज मनुष्य आश्रिय कितनेक असंख्यात वक्त समूर्च्छिम मनुष्य आश्रिय, फिर वे गर्भज मनुष्य का समुद्घात करेंगे ॥ ९ ॥ अब चौवीस दण्डक की परस्पर एक जीव आश्रिय पृच्छा करते हैं अहो भगवन् ! एकेक नरक के नेरीयने नरकपने वेदना समुद्घात अतीत काल में कितनी वक्त की ? अहो गौतम ! अनंत वक्त की आगामिक काल में कितनी वक्त करेंगे ? अहो गौतम ! कोइ करेगा और कोइ नहीं भी करेगा क्योंकि जो नरक में पुनः आवेगा वह नरकपने वेदनी समुद्घात करेगा और नहीं आवेगा वह नहीं करेगा जो करेगा वो जघन्य एक, वक्त दो वक्त तीन, वक्त उत्कृष्ट संख्यात वक्त असंख्यात वक्त कितनेक अनंत वक्त भी करेगा क्योंकि संख्यात भव करनेवाला संख्यात करेगा असंख्यात भव करने वाला असंख्यात वक्त करेगा और अनंत भव करने वाला अनंत वक्त करेगा॥ ऐसे ही असुर कुमार से लगाकर यावत् वैमानिक देव पर्यंत कहना ॥ अहो भगवन् ! एकेक असुरकुमारने

केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि तस्स सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा, सिय अणंता, एगमेगस्सणं भंते! असुरकुमारस्स असुरकुमारत्ते केवतिया वेयणा समुग्घाता अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सअत्थि कस्सणत्थि जस्सत्थि जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेणं संखेज्जावा असंखेज्जावा अणंतावा॥ एवं णागकुमारत्तेवि जाव वेमाणियत्ते ॥ एवं जहा वेयणासमुग्घाएणं तेणं असुरकुमारा णेरइयाइ वेमाणियपज्जवसाणेसु

नेरीयपने गतकाल में वेदनीय समुद्घात कितनी वक्त की ? अहो गौतम ! अनंत वक्त की आगमिक काल में कितनी वक्त करेंगे ? कोइ करेंगे कोइ नहीं भी करेंगे ? जो करेंगे वो स्यात् संख्यात स्यात् असंख्यात स्यात् अनंत भी करेंगे असुर कुमारपने गतकाल में वेदनीय समुद्घात कितनी वक्त की ? अहो गौतम ! अनंत वक्त की, आगमिक काल में कितनी वक्त करेंगे ? अहो गौतम ! कोइ करेंगे कोइ नहीं भी करेंगे जो करेंगे वो जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात अनंत करेंगे ॥ ऐसे ही नागकुमार से लगाकर यावत् वैमानिक पर्यंत कहना ॥ यों जिस प्रकार वेदना समुद्घातका असुरकुमार के दण्डक का नरक से लगाकर वैमानिक तक का कथन कहा वैसे ही नागकुमारादिक अपर देव स्वस्थानपने परस्थानपने कहना यावत् वैमानिक पर्यंत में उत्पन्न होवे वहां तक का कहना यों इस प्रकार चौवीस ही दण्डक होते हैं

भाणिए,तहा णागकुमारादिया अवसेसेसु ठाणपरट्ठाणेसु भाणियव्वा जाव वेमाणियत्ते, एवमेत्र चउवीसा दंडगा भवंति ॥ एगमेगस्सणं भंते ! णेरइयस्स णेरइयत्ते केवतिया कसायसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणंता, कवइया पुरेक्खडा ? गोयमा! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सअत्थि सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा सिय अणंता एगमेगस्सणं भंते ! णेरइयस्स असुरकुमारत्ते केवतिया कसाय समुग्घाया अतीता? गोयमा ! अणंता, केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि

भव कषाय समुद्घात का करते हैं ॥ अहो भगवन् ! एकेक नेरीयेने नेरीयेपने अतीत काल में कषाय समुद्घात कितनी यक्त की है ? अहो गौतम ! अनंत की है आगमिक काल में कितनी करेंगे ? अहो गौतम! कोइ करेंगे कोइ नहीं भी करेंगे जो नारकीपने उत्पन्न होंगे वे करेंगे, जो करेंगे वे संख्यात भव करनेवाले संख्यात यक्त, असंख्यात भव करनेवाले असंख्यात यक्त, और अनंत भव करने वाले अनंत यक्त करेंगे अहो भगवन् ! एकेक नेरीयेने असुरकुमारपने गतकाल में कषाय समुद्घात कितनी यक्त की ? अहो गौतम ! अनंत यक्त की आगामिक काल में कितनी यक्त करेंगे ? अहो गौतम ! कोइ करेगा कोइ नहीं भी करेगा जो करेगा वो स्यात संख्यात ,स्यात असंख्यात स्यात् अनंत यक्त इस ही प्रकार नेरीये का कथन स्तनित कुमार तक कहना पृथ्वीकाय

जस्सअत्थि सियसखेज्जा सियसखेज्जा सिय अणता, एव जाव णेरइयस्स थाणियकुमारत्ते, पुढविकायत्ते एगुत्तरियाए णेयव्व, एव जाव मणुस्सत्ते, वाणमंतरत्त जहा असुरकुमारत्ते जोइसियत्त अतीता अणता, पुरकडा कस्सइत्थि कस्सइणात्थि जस्सअत्थि सिय सखेज्जा सिय असंखेज्जा सिय अणता, एव विमाणियत्तेवि सिय असखेज्जा सिय अणता, असुरकुमारस्स नेरइयत्ते अणता अतीता पुरेकडा कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि सिय सखेज्जा सिय असखेज्जा सिय अणता, असुरकुमारस्स असुरकुमारत्ते

मे यावत् मनुष्य पर्यंत अतीत काल आश्रिय उक्त प्रकार आगामिक काल आश्रिय कोइ करेगा कोइ नहीं करेगा जो करेगा तो जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट संख्यात असंख्यात कोइ अनंत भी करेगा क्यों कि इन में अन्तर मुहूर्त का आयुष्य होने से कोइ एक भव ही कषाय समुद्घात करमर वाणव्यन्तर का असुर कुमारवत् का कहा वैसे कहना ज्योतिषीका गतकालमें अनंत की अनागतमें कोइ करेगा कोइ नहीं भी करेगा जो करेगा तो स्यात् असंख्यात स्यात् अनंत भी करेगा इनमें संख्यात नहीं कहना क्योंकि इनका असंख्यात वर्ष का आयुष्य है ऐसे ही वैमानिक का भी कहना यह नरक आश्रिय चौवीस दंडक की पृच्छा हुई अब असुरकुमार आश्रिय पृच्छा करते हैं असुरकुमार देवताने नेरीये पने कषाय समुद्घात गतकाल में अनंती की ही वर्तमान काल में कोइ करेगा कोइ नहीं भी करेगा जो करेगा तो कोइ संख्यात कोइ असंख्यात

अतीता अणता पुरकडा एगुत्तरिया, एवं नागकुमारत्ते निरतरं जाव वेमाणियत्ते जहा नेरइयस्स भणिय तहेव भाणियव्व, एव जाव थणियकुमारस्सवि वेमाणियत्ते णवर सव्वेसिं सट्ठाणे एगुत्तरिओ परट्ठाणे जहा चेव असुरकुमारस्स, पुढविकाइयस्स नेरइयत्त जाव थणियकुमारत्ते अतीता अणता पुरेकडा कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्सत्थि सिय सखेज्जा सिय असखेज्जा सिय अणता ॥ पुढवि

काइ अनत भी करेगा असुरकुमारदेवने असुरकुमारपने गतकाल में अनंती की अनागत में कोइ एक दो तीन (जिन का थोडा आयुष्य बाकी रहा है वे इतन वक्त करे के आयुष्य पूर्ण कर आवे फिर असुर कुमार में नहीं आवे इस आश्रिय) उत्कृष्ट सख्यात असंख्यात अनत यों निरतर यावत् वैमानिक पर्यंत कहना सब का स्वस्थान में एक दो तीन कहना परस्थान में जैसा असुरकुमार का कहा वैसा कहना पृथ्वीकाय का नरीये से यावत् स्तनित कुमार तक अतीत कालमें अनत की, अनागत कालमें कोई करेगा कोइ नहीं करेगा जो करेगा तो स्यात् संख्याती स्यात् असंख्याती स्यात् अनंत वक्त पृथ्वीकाया से यावत् मनुष्य पर्यन्त एक दो यावत् अनंत वक्त तक कहना क्यों कि इन का अंतमुहूर्त का भी आयुष्य होता है वाण व्यन्तरमें जैसा नेरीय का कहा वैसा कहना ज्योतिषी और वैमानिकमें स्यात् असंख्यात स्यात् अनंती वक्त करेगा, ऐसे यावत् मनुष्य का भी कहना, वाणव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक का जैसा असुरकुमार

काइयत्ते जाव मणूसत्ते एगुत्तरिया वाणमंतरत्ते जहा णेरइयत्ते जोइसिय वेमाणियत्ते अतीता अणंता, पुरेक्खडा कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्सत्थि सिय असंखेज्जा सिय अणंता, एवं जाव मणुस्सस्सवि णेयव्वं वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया जहा असुरकुमारा णवरं सट्ठाणे एगुत्तरियाए भाणियव्वे जाव वेमाणियस्स, वेमाणियत्ते एवं एते चउव्वीस चउव्वीसा दंडगा भाणियव्वा ॥ वेउव्वियसमुग्घाओ जहा मारणांतिय समुग्घाओ णवरं जस्सअत्थि एवं

का कहा वैसा कहना स्वस्थान एक दो आदी से कहना यावत् वैमानिक पर्यन्त वैमानिक में उत्पन्न होवे यों इस प्रकार चौवीस दंडक कहना मारणांतिक समुद्घात स्वस्थान में भी एक मे लगाकर अनंत तक कहना क्यों कि मारणांतिक समुद्घात तो सब के एक भव में एक वक्त ही होती है यों यावत् वैमानिक पर्यंत करना यों इस प्रकार चौवीस ही दंडक कहना वैक्रय समुद्घात का वैसा निरविशेष कहना जिस में इतना विशेष जिस स्थान वैक्रय शरीर होवे उस स्थान का कहना और चार स्थावर तीन विकलेन्द्रिय के वैक्रय शरीर नहीं है तो उन का नहीं कहना यों चौवीस ही दंडक कहना अर्थात् जिस प्रकार नरक का और नरकपने गतकाल में २४ दंडके अनंत की आगामिक काल में कोइ करेगा कोइ नहीं भी करेगा जिन के है वह एक से लगा अनंत तक करेगा, यों नरक का जीव असुर कुमारपने कोइ करेगा कोइ नहीं करेगा जो करेगा वह स्यात् संख्यात करेगा यावत् असंख्यात भी करेगा और

एतेवि चउवीस। दडगा भाणियव्वा चउव्वीसा दडगा मारणंतिय समुग्घासो सट्ठाणेवि परट्ठाणेवि एगुत्तरियाए नयव्वा जाव वेमाणियस्स वेमाणियत्ते एव मेते चउविस चविसा दडगा भाणियव्वा ॥ वेउव्विय समुग्घासे जहा कसाय समुग्घाओ तहा निरवसेसो भाणियव्वा णवर जस्सअत्थि तस्स त वुच्चइ एत्थवि चउवीस, चउव्वीसा दंडगा भाणियव्वा तेयगसमुग्घाओ जहा मारणातिय समुग्घाओ, णवर जस्सथि तस्सत वुच्चइ एवं एत चउव्वीस चउव्वीसा दडगा भाणियव्वा॥ एगमेगस्सण भते! णेरइयस्स णेरइयत्ते केवइया आहारग समुग्घाया अतीता? गोयमा! णत्थि, केवतिया पुरक्डा?

करेगा और कोइ अनंत भी करेगा यों दशों भवनपति का जानना चार स्थावर में वैक्रय शरीर नहीं है वायुकाय आश्रिय जघन्य एक दो तीन यावत् अनंत करेगा तीन विकलेन्द्रिय में वैक्रेय शरीर नहीं है तिर्यंच पंचेन्द्रिय मनुष्य का वायुकाया जैसा कहना वाण व्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक का असुरकुमार जैसा कहना यह जिस प्रकार नारकी के जीव का चौवीस दंडक पर कथन कहा वैसा असुरकुमार का भी चौवीस दंडक अनुक्रम २ अनुक्रम से कहना दश भवनपति व्यन्तर ज्योतिषी वैमानिकका परस्पर स्वस्थानक संख्यात असंख्यात कहना, वायुकाया तिर्यंच पंचेंद्रिय मनुष्य परस्पर स्वस्थानक एक दो तीन कहना यह वैक्रेय समुद्घात कही अब तेजस् समुद्घात कहते हैं जिस प्रकार मारणांतिक समुद्घात कही उस प्रकार तेजस् समुद्घात भी कहना जिस में इतना विशेष तेजस् समुद्घात को स्वस्थान एक से कहना और जिस को तेजस समुद्घात नहीं है उस के नहीं कहना [illegible]

णत्थि, एव जाव वेमाणियत्ते णवरं मणुस्से अतीता कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि जहण्णेण एक्कोवा दोवा उक्कोसेण तिण्णि, केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्सत्थि जहण्णेण एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण चत्तारि एव सव्वजीवाण मणुस्सेसु भाणियव्व ॥ मणुस्सेसु मणुसत्ते अतीता ? कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि,जस्सत्थि जहण्णेण एक्कोवा दोवा तिण्णिवा,उक्कोसेण चत्तारि,

पांच स्थावर तीन विकलेन्द्रिय इन में तेजस् समुद्घात नहीं है यों चौवीस दंडक का कहना अब आहारक समुद्घात का कहते हैं अहो भगवन् ! एकेक नेरीयेने नेरीयेपने आहारक समुद्घात गये काल में कितनी की ? अहो गौतम ! नहीं की आगामिक काल में कितनी करेगा ? अहो गौतम ! नहीं करेगा यों यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना जिस में इतना विशेष,मनुष्य की अपेक्षा गये काल में किसीने की है और किसीने नहीं भी की है जिसने की है सो जघन्य एक दो उत्कृष्ट तीन की है, आगामिक काल में कोई करेगा कोई नहीं भी करेगा सो जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट चार वक्त करेगा यों सब जीवों का मनुष्यपने कहना और मनुष्य का मनुष्यपने गत काल में किसीने की है किसीने नहीं भी की जिसने की है उस के जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट चार की है, ऐसे ही आगामिक में करने का भी कहना, यों इस प्रकार चौवीस ही दंडक का यावत् वैमानिकने वैमानिकपने कितनी की इत्यादि कहना

मय पुरेकडात्रि,एवं मेते चउवीस चउव्वीसा दंडगा,जाव,वेमाणियस्स विमाणियत्ते॥एगमेगे रसणभते!णेरइयाण णेरइयत्ते केवतिया केवलि समुग्घाया भतीता?गोयमा!णत्थि, केवइया पुरक्खडा ? गोयमा ! णत्थि एव जाव वेमाणियत्त णवर मणुस्सत्त अतीता णत्थि पुरेकडा कस्सइअत्थि कस्सइणत्थि जस्सत्थि एक्को,माणूसस्स मणूसत्ते अतीता, कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्सत्थि एक्का एव पुरेकडात्रि,एवमेते चउवीसं चउवीसा दंडगा॥७॥ णेरइयाण भते! णेरइयत्ते केवइया वेदणा समुग्घाता अतीता ? गोयमा! अणता, केवतिया

अब केवल समुद्घात का कहते हैं अहो भगवन्! एकेक नेरीयेने नरीयेपने केवल समुद्घात गत काल में कितनी की है ? अहो गौतम ! नहीं की आगामिक काल में कितनी करेगा ? अहो गौतम ! नहीं करेगा यों यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना, जिस में इतना विशेष मनुष्यपने अतीत काल में जो मनुष्य छोड तेवीस ही दंडकवाले किसीने भी नहीं की आगामिक काल में कोई करेगा कोई नहीं भी करेगा जो करेगा वो एक ही वक्त करेगा और मनुष्य का मनुष्यपने केवल समुद्घात गत काल में किसीन की है किसीने नहीं भी की जो की है वो एक ही वक्त की है वे अशरीरस्थ हुवे है और जो करेंगे वे,एकही वक्त करेंगे॥७॥ अब बहुत जीव आश्रिय परस्पर पृच्छा करते हैं अहो भगवन्! बहुत नरक के नेरीयेने नेरीयेपने अतीत कालमें वेदनीय समुद्घात कितने वक्त की है? अहो गौतम! अनंत वक्त की है, आगामिक कालमें अनंतवक्त करेंगे यों यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना और इसही प्रकार सब आश्रिय परस्पर कहना यावत्

पुरेकडा? गोयमा! अणंता, एवं जाव वेमाणियत्ते॥ एवं सव्वजीवाणं भाणियव्वा जाव वेमाणि-याणं वेमाणियत्ते, एवं जाव तेयग समुग्घातो, णवरं उवउज्जिऊण णेयव्वं, जस्सत्थि वेउव्विय तेयगा॥ णेरइयाणं भंते! णेरइयत्ते केवतिया आहारग समुग्घाता अतीता? गोयमा! णत्थि, केवइया पुरेकडा? गोयमा! णत्थि, एवं जाव वेमाणियत्ते, णवरं मणूसत्ते अतीता असंखेज्जा, पुरेकडा असंखेज्जा, एवं जाव वेमाणियाणं, णवरं वणप्फइकाइयाणं

वैमानिकने वैमानिकपने कितनी की? अनन्ती, कितनी करेंगे? अनन्ती जैसे यह वेदनीय समुद्घात का बहुत जीव आश्रिय परस्पर चौवीस दण्डक पर कथन किया उस ही प्रकार कषाय समुद्घात का, मारणांतिक समुद्घात वैक्रेय समुद्घात का और तेजस् समुद्घात का कथन करना, जिस स्थान जो समुद्घात पाती हो वह कहना वैक्रेय और तेजस समुद्घात सब स्थान नहीं पाती है उस का विचार कर कहना अब आहारक समुद्घात का कहते हैं अहो भगवन्! बहुत से नेरीयेने नेरीयेपने भूतकाल में आहारक समुद्घात कितने बक्त की? अहो गौतम! नहीं की, आगामिक काल में कितनी बक्त करेंगे? अहो गौतम! नहीं करेंगे ऐसे ही यावत् वैमानिक पर्यंत कहना जिस में इतना विशेष मनुष्य आश्रियगये काल में असंख्यात बक्त कहना क्योंकि असंख्यात जीव हैं और आगामिक काल आश्रिय भी असंख्यात बक्त ही कहना यों यावत् वैमानिक

मणुस्सत्ते अतीता अणता, पुरेक्खडा अणता, मणुस्साण मणूसत्ते अतीता सिय संखेज्जा सिय असखेज्जा, एव पुरेक्खडाविं, सेसा सव्वे जहा नेरइया, एव एते चउव्वीस चउव्वीसा दंडगा ॥ णेरइयाण भंते ! नेरइयत्ते केवइया केवलि समुग्घाता अतीता ? गोयमा ! णत्थि, केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! णत्थि एव जाव वेमाणियत्ते, णवर मणूसत्ते अतीता णत्थि, पुरेक्खडा असखेज्जा, एवं जाव वेमाणिया, णवरं वणप्फति काइयाण मणुस्सत्ते अतीता णत्थि, पुरेक्खडा अणंता ॥ मणूसाण मणूसत्ते अतीता सिय

तक कहना जिस में इतना विशेष मनुष्यगति के जीवोंने मनुष्यपने आहारक समुद्घात गतकाल में अनंत वक्त की क्योंकि अनंत जीवों हैं आगामिक काल में भी अनंत वक्त करेंगे और मनुष्यने मनुष्यपने अतीत काल में स्यात सख्याती की गर्भज मनुष्य आश्रिय, और स्यात् असंख्यात की संमूर्च्छिम मनुष्य आश्रिय आगामिक काल आश्रिय भी इसी प्रकार कहना शेष दंडक का जैसा नेरीया का कथन कहा वैसा कहना यों चौवीस ही दंडक का चौवीस ही दंडक पर बहुत जीवों आश्रिय कथन करना अब केवल समुद्घात आश्रिय कहते हैं अहो भगवन् ! नेरीयेने नेरीयपने अतीत काल में कितनी केवल समुद्घात की ? अहो गौतम ! नहीं की आगामिक काल में भी नहीं करेंगे यों यावत् वैमानिक पर्यंत कहना जिस में इतना विशेष मनुष्य ने मनुष्यपने गतकाल में नहीं की अनंत गतकाल में असंख्यात करेंगे

अत्थि सिय णत्थि, जस्सअत्थि एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण सयपुहुत्ते केवतिया पुरेकडा ? गोयमा ! सिय संखेज्जा सिय असंखेज्जा, एवं एते चउव्वीस दंडगा, सव्वे पुच्छाए भाणियव्वा जाव वेमाणियाणं वेमाणियत्ते ॥ ८ ॥ एतेसिणं भंते ! जीवाणं वेदणा समुग्घातेणं, कसाय समुग्घातेणं, मारणंतिय समुग्घातेणं, वेउव्विय समुग्घातेणं, तेयग समुग्घातेणं, आहारग समुग्घातेणं, केवली समुग्घातेणं, समोहयाणं असमो--

यों यावत् वैमानिक पर्यंत कहना जिस में इतना विशेष वनस्पतिकाय पने गये काल में तो नहीं की अनागत काल में अनंत करेंगे क्योंकि अनंत जीव हैं. और मनुष्यने मनुष्य पने गये काल में किसीने की किसीने नहीं भी की जो कि है तो एक दो तीन उत्कृष्ट प्रत्यक्त्व सो की है इतने केवली समुद्घात कृत एक वक्त में पाते हैं अनागत काल में करेंगे वे स्यात् संख्यात गर्भज आश्रिय स्यात् असंख्यात सम्मूर्छिम आश्रिय यों इस प्रकार चौवीस ही दंडक का सर्व स्थान प्रश्नोत्तर कहना यावत वैमानिकने वैमानिकपने कितनी की ? नहीं की वहां तक कहना ॥ ८ ॥ अब अल्पा बहुत्व कहते हैं. अहो भगवन् ! इन १ वेदनीय, २ कषाय, ३ मारणांतिक, ४ वैक्रय, ५ तैजस, ६ आहारक और ७ केवली इन सातों समुद्घात में कौन २ समुद्घात वाले अल्प हैं बहुत हैं, तुल्य हैं, विशेषाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे जीव आहारक समुद्घात समोहने वाले हैं क्योंकि इन का छ महीने का विरह भी पडता है और जब

हयाणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा आहारग समुग्घातेणं समोहया, केवलि समुग्घातेण समोहया संखेज्जगुणा, तेयग समुग्घाएण समोहया असंखेज्जगुणा वेउव्विय समुग्घातेण समोहया असंखेज्जगुणा, मारणंतिय समुग्घातेण समोहया अणंतगुणा, कसाय समुग्घाएण समोहया असंखेज्जगुणा, वेयणा समुग्घातेण समोहया विसेसाहिया, असमोहिया असंखेज्जगुणा

मिलते हैं वह जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट पृथक्त्व सो है १ यह आहारक शरीर के आरंभ काल वाले गिने हैं २ उन से केवल समुद्घात समोहने वाले संख्यातगुने क्योंकि यह एक वक्त में पृथक्त्व शत मिलते हैं, ३ उन से तेजस समुद्घात समोहने वाले असंख्यातगुने क्योंकि पंचेन्द्रिय तिर्यंच मनुष्य और देवता में भी पाते हैं ४ उन से वैक्रेय समुद्घात के समोहने वाले असंख्यातगुने, क्योंकि नरक और वायुकाय वाले बढगये, ५ उन से मारणांतिक समुद्घात समोहने वाले अनंत गुने क्यों कि यह वनस्पति आदि सर्व स्थान में पाते हैं, ६ उन से कषाय समुद्घात समोहने वाले असंख्यातगुने क्यों कि मारणांतिक समुद्घात तो एक भव में एक ही वक्त होती है और यह बहुत वक्त होती है, और ७ उस से वेदनीय समुद्घात समोहनेवाले विशेषाधिक क्यों कि कषाय दशवे गुन स्थान तक है और वेदना समुद्घात चवदवे गुणस्थान तक है, और ८ उस से असमुद्घात वाले असंख्यातगुने क्योंकि निगोदादि में समुद्घात से निवर्ते

॥ ९ ॥ एतेसिणं भंते ! णेरइयाणं वेदणा समुग्घातेणं कसाय समुग्घातेण, मारणंतिय समुग्घातेण, वेउव्विय समुग्घातेण, समोहताण असमोहताण कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा णेरइया मारणंतिय समुग्घातेण समोहया, वेउव्विय समुग्घातेण समोहया असंखेज्जगुणा, कसाय समुग्घातेण समोहया संखेज्जगुणा, वेदणा समुग्घाएणं समोहया संखेज्जगुणा, असमोहया संखेज्जगुणा ॥ १० ॥ एतेसिणं भंते ! असुरकुमाराणं वेदणा समुग्घातेण, कसाय समुग्घातेण,

पाकर असमुद्घाती हुवे सो कौन बहुत हैं ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! नेरिये वेदनी समुद्घातिक, कषाय समुद्घातिक मारणांतिक समुद्घातिक और वैक्रेय समुद्घातिक इन चारों समुद्घात समोहने असमोहनेवाले में म कौन २ अल्प बहुत तुल्य विशेष है ? अहो गौतम ! सब से थोडे नेरिये मारणांतिक समुद्घातिक, क्योंकि यह एक भव में एक ही वक्त होती है २ उन से वैक्रेय समुद्घातिक असंख्यातगुने क्योंकि वह भावकी उदीरणा करके नेरिये उत्तर वैक्रयरूप बहुत वैक्रेय करते हैं ३ उन से कषाय समुद्घात के समोहनेवाले संख्यातगुने क्यों कि क्रोध का उदय बहुत वक्त रहता है और ४ उन से वेदनीय समुद्घात समोहनेवाले संख्यातगुने क्योंकि वेदना बहुत काल रहती है और उनसे असमोहिये असंख्यातगुने क्योंकि इसमें अधिक काल रहते हैं ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! इन असुर कुमार देवों में १ वेदनीक, २ कषाय, ३ मारणांतिक, ४

मारणतिय समुग्घातेण, वेउव्विय समुग्घातेण, तेयग समुग्घातेण, समोहयाणं असमो हयाणय कयर २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा असुरकुमारा तेयग समुग्घातेण समोहता, मारणातिय समुग्घातेण समोहता असंखेज्जगुणा, वेदणा समुग्घातेणं समोहता असंखेज्जगुणा, कसाय समुग्घातेण समोहता संखेज्जगुणा, वेउव्विय समुग्घातेण समोहता, संखेज्जगुणा, असमोहया असंखेज्जगुणा, एवं जाव थणियकुमारा ॥ ११ ॥ एतेसिणं भंते ! पुढविकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविकाइया मारणातिय समुग्घातेणं समोहया, कसायसमुग्घाएणं

वैक्रय और ५ तेजस समुद्घाती समोह असमोह में कौन २ कमी ज्यादा तुल्य विशेष हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे असुरकुमार तेजस समुद्घात समोहने वाले क्यों कि कभी किसी के होती है २ उन से मारणांतिक समुद्घात के समोहने वाले असंख्यातगुने एक एक सब के होती है, ३ उन से वेदना समुद्घात समोहन वाले असंख्यातगुने, ४ उन से कषाय समुद्घात समोहनेवाले संख्यातगुने, ५ उन से वैक्रय समुद्घात समोहने वाले संख्यातगुने, और उनसे असमोहिये असंख्यातगुने, यों यावत् स्तनित कुमार पर्यंत कहना ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकाय के वेदना, कषाय मारणांतिक समुद्घात के समोहया असमोहया में कौन २ कमी ज्यादा तुल्य विशेष हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे पृथ्वीकाया

समोहया संखिज्जगुणा, वेदणा समुग्घाएणं समोहया विसेसाहिया, असमोहया असंखेज्जगुणा ॥ एवं जाव वणप्फइ काइयाण, णवरं सव्वत्थोवा वाउकाइया वेउव्विय समुग्घातणं समोहया मरणांतिक समुग्घातेण समोहया असंखे ज्जगुणा, कसाय समुग्घाएण समोहता असंखज्जगुणा, वेदणा समुग्घातेण समोहया विसेसाहिया, असमोहया असंखज्जगुणा ॥ १२ ॥ बेइंदियाण भंते ! वेदणा समुग्घातणं, कसाय समुग्घातेण, मारणंतिय समुग्घाएणं समोहयाण असमो हयाण कयरे२हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बेइंदिया मारणंतिय समुग्घा- तेणं समोहया, वेदणा समुग्घातेण समोहया असंखेज्जगुणा, कसाय समुग्घातेण

मारणांतिक समुद्घात समोहनेवाले, कषाय समुद्घात समोहनेवाले संख्यातगुने, ३ वेदना समुद्घात समो- हनेवाले विशेषाधिक, ४ उन से असमोहिक असंख्यातगुने ऐसे ही यावत् वनस्पतिकाया तक कहना, जिसमें इतना विशेष सब से थोडे वायुकाया में वैक्रय समुद्घात समोहनेवाले, २ उन से मारणांतिक समुद्घात समोहनेवाले असंख्यातगुने, ३ कषाय समुद्घात समोहनेवाले असंख्यातगुने ४ उस से वेदना समुद्घात समोहनेवाले विशेषाधिक, ५ उन से असमोहे असंख्यातगुने ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय में वेदना कषाय मारणांतिक समुद्घात में कौन २ कमी ज्यादा है ? अहो गौतम ! सब से थोडे बेइन्द्रिय मारणां तिक समुद्घात समोहनेवाले, २ उनसे वेदना समुद्घात समोहनेवाले असंख्यातगुने, ३ उनसे कषाय समुद्घात

समोहया संखेज्जगुणा असमोहया असंखेज्जगुणा ॥ एवं जाव चउरिंदिया ॥ १३ ॥ पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियाण भंते ! वेदणा समुग्घातेण समोहयाण, कसाय समुग्घातेण समोहयाणं मारणंतिय समुग्घातेण समोहयाण, वेउव्विय समुग्घातेण समोहयाण तेया समुग्घाते समोहयाण, असमोहयाण कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया तेयासमुग्घातेण समोहया, वेउव्विय समुग्घातेण समोहया असंखेज्जगुणा मारणंतियसमुग्घातेण समोहया असंखेज्जगुणा, वेदणासमुग्घातेण समोहया असंखेज्जगुणा, कसायसमुग्घातेण समोहया असंखेज्जगुणा,

समोहनेवाले संख्यातगुने, ४ असमोहक संख्यातगुने, एसे ही यावत् चौरिंद्रिय पर्यन्त कहना ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक में वेदना कषाय मारणांतिक वैक्रय, तेजस् समुद्घात के समोहये असमोहय में कौन २ कमी ज्यादा है ? अहो गौतम ! सब से थोडे तिर्यंच पंचेन्द्रिय तेजस् समुद्घात करनेवाले, २ उन से वैक्रय समुद्घात समोहनेवाले असंख्यातगुने, क्यों कि जिस को लब्धि होती है वे ही यह समुद्घात कर सकते हैं, ३ उन से मारणांतिक समुद्घात समोहनेवाले असंख्यातगुने असंज्ञी आश्रिय ४ उन से वेदना समुद्घात समोहनेवाले असंख्यातगुने, ५ उन से कषाय समुद्घातवाले असंख्यातगुने,

असमोहया संखेज्जगुणा ॥ १४ ॥ मणुस्साणं भंते ! वेदणासमुग्घातेणं समोहयाणं कसायसमुग्घातेणं समोहयाणं, मारणंतिय समुग्घातेणं समोहयाणं, वेउव्वियसमुग्घातेणं समोहयाणं तेयगसमुग्घातेणं समोहयाणं, आहारसमुग्घातेणं समोहयाणं, केवलिसमुग्घातेणं समोहयाणं कयरे२ अप्पावा बहुयावा तुल्लाएवा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा मणुस्सा आहारग समुग्घातेणं समोहया, केवलिसमुग्घातेणं समोहया संखेज्जगुणा, तेयग समुग्घातेणं समोहया संखेज्जगुणा, वेउव्विय समुग्घातेणं समोहया संखेज्जगुणा, मारणंतिय समुग्घातेणं समोहया असंखेज्जगुणा, वेदणा समुग्घातेणं समोहया असंखेज्ज

० उन से असमुद्घातिक संख्यातगुने ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य में वेदना, कषाय, मारणांतिक, वैक्रय, तेजस् आहारक केवली इस के समोहनेवाले असमोहनेवाले में कमी ज्यादा कौन २ हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे आहारक समुद्घात के समोहनेवाले, केवल समुद्घात के समोहनेवाले संख्यातगुने, (यह दोनों समुच्चय जीव में कहे वैसे जानना) १ उन से तेजस् समुद्घात समोहनेवाले संख्यातगुने, क्यों कि एक वक्त में एक लाख तक मिलते हैं, उन से वैक्रय समुद्घातवाले संख्यातगुने क्यों कि एक क्रोड प्रमान मिलते हैं. चक्रवर्ती, वासुदेव विद्याधर लब्धि पात्र मुनि आदिक के होती है, ४ मारणांतिक समुद्घातवाले असंख्यातगुने, समूर्छिम मनुष्य आश्रिय, ५ वेदना समुद्घातवाले असंख्यातगुने क्यों कि

गुणा कसायसमुग्घातेण समोहया संखेज्जगुणा, असमोहया असंखेज्जगुणा ॥ वाणमंतर जाइसिय वेमाणिया जहा असुरकुमारा ॥ १५ ॥ कतिण भंते ! कसाय समुग्घाता पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कसाय समुग्घाता पण्णत्ता तंजहा कोहसमुग्घाते, माणसमुग्घाते मायासमुग्घाते लोभसमुग्घाते ॥ णेरइयाणं भंते ! कति कसाय समुग्घाता पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कसाय समुग्घाता पण्णत्ता, एवं जाव वेमाणियाणं ॥ एगमेगस्सणं भंते ! णेरइयस्स केवतिया कोह समुग्घाता अतीता ? गोयमा ! अणंता केवतिया पुरेक्खडा ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जस्सअत्थि

बहुत बके होती है ९ कषाय समुद्घातवाले असंख्यातगुने स्वभाव से ८ असमोही असंख्यातगुने वाण व्यन्तर ज्योतिषी और वैमानिक देव की अल्पाबहुत्व जैसी असुरकुमार देव की कही वैसी कहना ॥१८॥ अब समुद्घात के भेद कहते हैं, अहो भगवन् ! कितने समुद्घात कितने प्रकार की कही है ? अहो गौतम ! चार प्रकार की कही है तद्यथा—१ क्रोध कषाय समुद्घात २ मान कषाय समुद्घात, ३ माया कषाय समुद्घात और ४ लोभ कषाय समुद्घात अहो भगवन् ! नेरीये के कषाय समुद्घात कितने प्रकार की कही है ? अहो गौतम ! चारों प्रकार की कही है ऐसे ही यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना अहो भगवन् ! एकेक नेरीये के क्रोध समुद्घात अतीत काल में कितने बके हुई ? अहो गौतम !

जहण्णेणं एक्कोवा दोवा तिण्णिवा उक्कोसेण सखेज्जावा असखेज्जावा, अणंतावा, एवं जाव वेमाणियस्स॥ एवं जाव लोभ समुग्घाते, एते चत्तारि दंडगा ॥ नेरइयाण भंते! केवतिया कोह समुग्घाता अतीता ? गोयमा! अणंता, केवतिया पुरेकडा ? गोयमा ! अणंता एवं जाव वेमाणियाण एवं जाव लोभससमुग्घाए चत्तारि दंडगा ॥ एग मगस्सण भंते ! णेरइयस्स णेरइयत्ते केवतिया कोह समुग्घाता अतीता ? गोयमा ! अणंता, एवं जहा वेदणा समुग्घातो भणितो तहा कोहसमुग्घातोवि भाणितव्वो निरव सेस जाव वेमाणियत्ते ॥ माणसमुग्घाए मायासमुग्घाएय निरवसेस जहा मारणंतिय

अनंत वक्त हुए आगामिक काल में कितने वक्त होगी? अहो गौतम ! किसी के होगी किसी के नहीं भी होगी जिस के होगी सो जघन्य एक वक्त दो वक्त तीन वक्त उत्कृष्ट संख्यात वक्त असंख्यात वक्त अनंत वक्त भी होगी और जैसा क्रोध कषाय समुद्घात का कहा वैसा ही यावत् लोभ कषाय का कहना यों चारों कषाय के चार दंडक कहना अहो भगवन् ! बहुत नेरीयोंने क्रोध कषाय समुद्घात अतीत काल में कितने वक्त की है ? अहो ! अनंत वक्त की है आगामिक काल में कितनी वक्त करेंगे ? अहो गौतम ! अनंत वक्त करेंगे यों यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना. और वैसे ही यावत् लोभ कषाय पर्यन्त कहना यों बहुत जीव आश्रिय भी चार कषाय के चार दंडक कहना अब परस्पर एकेक नेरीये आश्रिय चौवीस दंडक

समुग्घाते, लोहसमुग्घाते जहा कसाय समुग्घाते,णवरं सव्वजीवा असुरादि नेरइएसु लोभकसाएणं भते ! एगुत्तरिया णेयव्वा ॥ नरइयाण भते ! णेरइयत्त केवतिया कोहसमुग्घाता अतीता ? गोयमा ! अणता, केवइया पुरेक्खडा ? गोयमा ! अणता, एवं जाव वेमाणियत्ते, एव सट्ठाण परट्ठाणेसु, सव्वत्थवि भाणियव्वा, सव्व जीवाण चत्तारि समुग्घाता जाव लोभ समुग्घाओ, जाव वेमाणियाणं विमाणियत्ते ॥ एतेसिणं भते ! जीवाण कोहसमुग्घातेणं माणसमुग्घातेणं, मायासमुग्घातेणं, लोभसमुग्घातेणं

१२ क्रोध कषाय का कहते हैं अहो भगवन् ! एकेक नेरीयने नारकी पने क्रोध कषाय अतीत काल में कितनी वक्त की ? अहो गौतम ! अनती वक्त की यों जिस प्रकार पहिले वेदना समुद्घात का कहा उस ही प्रकार क्रोध कषाय समुद्घात का कहना यों यावत् वैमानिक पर्यन्त चौवीसही दंडक कहना इस प्रकार ही मान कषाय समुद्घात का और माया कषाय का भी निरविशेष जैसा मारणांतिक समुद्घात का कहा वैसा ही कहना और लोभ कषाय समुद्घात का जैसा कषाय समुद्घात का कहा वैसा कहना उस में इतना विशेष सब जीवों आश्रिय असुरकुमार आदि नेरीये आदि के लोभ कषाय जघन्य एक दो आदि कहना अब बहुत जीव आश्रिय परस्पर पूछते हैं-अहो भगवन् ! बहुत नेरीयों नेरीयेपने कितनी क्रोध

समोहयाण अकसायसमुग्घाते समोहयाण असमोहयाण कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अकसाय समुग्घाएण समोहया, माणसमुग्घाएण समोहया अणंतगुणा कोह कसाय समुग्घातेण समोहया वि सेसाहिया माया समुग्घातेण समोहया विसेसाहिया, लोभकसाय समुग्घातेण समोहया विसेसाहिया, असमोहया संखेज्जगुणा ॥ एतासिणं भंते ! णेरइयाण कोह समुग्घाएणं माणसमुग्घाएण, मायासमुग्घाएण लोभ समुग्घाएण समोहताण असमोहताणय कयरे २

कषाय समुद्घात अतीत काल में की ? अहो गौतम ! अनंत वक्त की आगामिक काल में कितनी करेंगे ? अहो गौतम ! अनंत वक्त करेंगे यों यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना यों स्वस्थान परस्थान सर्व कहना सब जीवों के चार प्रकार की समुद्घात यावत् लोभ कषाय पर्यंत कहना यावत् वैमानिक देवने वैमानिक देव पने कितनी की यहां तक कहना अब इन चारों की अल्पाबहुत्व कहते हैं अहो भगवन् ! इन जीवों में क्रोध समुद्घात वाले, मान समुद्घात वाले, माया समुद्घात वाले और लोभ समुद्घात वाले समोहित असमोहित में कौन ज्यादा तुल्य विशेष कौन २ हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे जीव अकषायी समुद्घात के समोहन वाले इस में वेदनादि छवों समुद्घात वाले आगये उस से मान कषाय के समोहक अनंतगुने

हिंतो अप्पावा ४? गोयमा ! सव्वत्थोवा णेरइया लोभ समुग्घाएणं समोहया, माया समुग्घातेणं समोहया संखेज्जगुणा, माणसमुग्घातेण समोहया संखेज्जगुणा, कोह समुग्घातेणं समोहया संखेज्जगुणा, असमोहया संखेज्जगुणा ॥ असुरकुमाराणं पुच्छा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा असुरकुमारा कोहसमुग्घातेणं समोहया माण समुग्घातेण समोहया संखेज्जगुणा, मायासमुग्घातेण समोहया संखेज्जगुणा, लोभसमुग्घातेण समोहया संखेज्जगुणा, असमोहया संखेज्जगुणा ॥ एवं सव्वदेवा

वनस्पति आश्रिय, उस से क्रोध कषाय समोहक विशेषाधिक, उस से माया कषाय के समोहक विशेषाधिक उस से लोभ कषाय के समोहक विशेषाधिक, उस से असमोहक संख्यातगुने अहो भगवन् ! इन नेरीये में क्रोध कषाय समुद्घातक, मान कषाय समुद्घातक, माया कषाय समुद्घातक, लोभ कषाय समुद्घातक, और असमुद्घातक, इन में कौन २ थोडे ज्यादा हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडे नेरीये लोभ कषाय के समोहने वाले, उन से माया कषाय के समोहन वाले संख्यातगुन, उन से मान कषाय समुद्घातक समोहक संख्यात गुन, उन से क्रोध कषाय समोहक संख्यातगुने, उन से असमोहक संख्यातगुने, असुरकुमार की पृच्छा ? गौतम ! सब से थोडे असुर कुमार क्रोध समुद्घातक, मान कषाय के समुद्घातक संख्यातगुने, माया, कषाय

जाव वेमाणिया॥ पुढविकाइयाण पुच्छा? गोयमा! सव्वत्थोवा पुढविकाइया माण समुग्घातेणं समोहया, कोह समुग्घातेण समोहया विसेसाहिया, मायासमुग्घातेण समोहया विसेसाहिया लोभसमुग्घातेण समोहया विसेसाहिया, असमोहया संखेज्जगुणा ॥ एवं जाव पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया, मणुस्सा जहा जीवा णवर माणकसाय समुग्घाएणं समोहया असंखज्जगुणा, ॥ १९॥ कतिण छउमात्थिया समुग्घाता पण्णत्ता? गोयमा! छउमत्थिया समुग्घाता पण्णत्ता तंजहा? वेदणा समुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतिय

के समुद्घातक सख्यातगुने, लोभ कषाय के समुद्घातक मख्यातगुने, असमुद्घातक संख्यातगुने यों ही सब दण्डकों की वैमानिक पर्यन्त अल्पाबहुत्व कहना। पृथ्वीकायिककी पृच्छा। अहो गौतम! सबसे थोडे पृथ्वीकायिक मान कषाय के समुद्घातिक, क्रोध कषाय समुद्घातिक विशेषाधिक, माया कषाय के समुद्घातिक विशेषाधिक, ४ लोभ कषाय के समुद्घातिक विशेषाधिक, असमोहिक संख्यातगुना. यों यावत् पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक पर्यन्त कहना मनुष्य का जैसे समुच्चय जीव का अल्पाबहुत्व कहा वैसा ही कहना, परंतु इतना विशेष मान कषाय असंख्यातगुने कहना ॥ १९ ॥ अब छद्मस्थ की समुद्घात का प्रश्न करते हैं? अहो भगवन्! छद्मस्थ के कितनी समुद्घात होती है? अहो गौतम! छद्मस्थ की ६ समुद्घात होती है तद्यथा—१ वेदना समुद्घात, २ कषाय समुद्घात, ३ मार

समुग्घाए वेउव्विय समुग्घाए, तेयग समुग्घाए, आहारग समुग्घाएणं,णेरइयाणं भंते ! कति छाउमत्थिया समुग्घाया, पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि छाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता तंजहा वेयणा समुग्घाए, कसाय समुग्घाए मारणंतिय समुग्घाए, वेउव्विय समुग्घाए ॥ असुरकुमाराणं पुच्छा ? गोयमा ! पञ्चछाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता तंजहा वेदणा समुग्घाते, कसाय समुग्घाते, मारणंतिय समुग्घाते,

णांतिक समुद्घात, ४ वैक्रेय समुद्घात, ५ तेजस् समुद्घात और ६ आहारक समुद्घात अहो भगवन् ! नेरीये के छद्मस्थ समुद्घात कितनी है ? अहो गौतम ! नेरीये के चार छद्मस्थ समुद्घात है, तद्यथा-१ वेदना समुद्घात २ कषाय समुद्घात, ३ मारणांतिक समुद्घात, ४ वैक्रेय समुद्घात असुर कुमार की पृच्छा ? अहो गौतम ! पांच छद्मस्थ की समुद्घात है ? तद्यथा-१ वेदना, २ कषाय, ३ मारणांतिक,४वैक्रेय, और ५ तेजस यों यावत् स्तनित कुमार पर्यंत कहना एकेन्द्रिय विकलेन्द्रिय की पृच्छा ! अहो गौतम ! तीन छद्मस्थ समुद्घात है तद्यथा १ वेदना, २ कषाय और ३ मारणांतिक इसमें इतना विशेष वायुकाय के चार छद्मस्थ समुद्घात हैं तद्यथा १ वेदना, २ कषाय, ३ मारणांतिक और ४ वैक्रेय पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच योनिक की पृच्छा ! अहो ग॰ ‍न ! पांच छद्मस्थ की समुद्घात हैं तद्यथा १ वेदना, २ कषाय, ३ मारणांतिक,

वेउव्विय समुग्घाते, तेय समुग्घाते ॥ एव जाव थणियकुमाराण, एगिंदिय विगलिंदियाण पुच्छा ? गोयमा ! तिण्णि छाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता, तजहा वेदणा समुग्घाए, कसाय समुग्घाए, मारणतिय समुग्घाए, णवर वाउकायाण्णं चत्तारि समुग्घाया पण्णत्ता तजहा वेदणा समुग्घाते, कसाय समुग्घाते, मारणतिय समुग्घाते, वेउव्विय समुग्घाए ॥ पचिंदिय तिरिक्खजोणियाण, पुच्छा ? गोयमा ! पच समुग्घाता पण्णत्ता तजहा वेयणासमुग्घाए, कसाय समुग्घाए,

वैक्रय, और ५ तेजस मनुष्य की पुच्छा ? अहो गौतम! मनुष्य के छवी छद्मस्त की समुद्घात है तद्यथा ? वेदनीय, २ कषाय, ३ मारणांतिक, ४ वैक्रय, ५ तेजस और ६ आहारक वाणव्यन्तर ज्योतिषी और वैमानिक के जैसा असुरकुमार का कहा वैसा कहना अब समुद्घात की क्षेत्र स्पर्शना कहते हैं ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! जीव वेदना समुद्घात समोहवे समोहकर जो पुद्गल निकाले वे पुद्गल कितना क्षेत्र बिना स्पर्श छोडते हैं और कितना क्षेत्र स्पर्शते हैं ? अहो गौतम ! शरीर प्रमाण लम्बा चौडा शरीर प्रमाने ही जाडपने क्षेत्र स्पर्श कर रहता है [यह लोक के मध्यवर्ती जीव आश्रिय कहा है अन्य या लोक किनारे रहे जीवों तीन चार पांचदिशा के पुद्गल स्पर्श करते हैं] बाकी के क्षेत्र बिना स्पर्श रहता है यह क्षेत्र स्पर्शता है अब काल आश्रिय कहते हैं अहो भगवन् ! यह क्षेत्र कितने कालतक अंतस्पर्शी रहता है

मारणतिय समुग्घाए, वेउव्विय समुग्घाय, तेयग समुग्घाए। मणुस्साण मते ! कति छाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता? गोयमा! छ छाउमत्थिया समुग्घाया पण्णत्ता तजहा वेदणं समुग्घाए, कसाय समुग्घाए मारणतिय समुग्घाए, वेउव्विय समुग्घाए, तेयग समुग्घाए, आहारग समुग्घाए, वाणमतर जाइसिया वेमाणिया जहा असुरकुमारा॥ १७॥ जीवेण मते ! वेदणा समुग्घातणं, समोहए समोहणित्ता जे पोग्गले निच्छुमति तेहिणं मंते ! पोग्गलेहिं केवतिते खेत्ते आपुन्न, केवतिते खेत्ते फुडे ? गोयमा ! सरीर

और कितने कालतक स्पर्श रहता है ? अहो गौतम ! एक समय दो समय तीन समय विग्रहगति अपेक्षा इतने क्षेत्र में व्यापकर रहे अर्थात् जितना लम्बपने चौडेपन क्षेत्र वेदनी के योग पुद्गल कर पूर्ण वे एक दो तीन समय जितना क्षेत्र अवगाहे इतने काल विना स्पर्शा रहे, इतन काल स्पर्शा रहे अहो भगवन् ! वे पुद्गल कितने काल में क्षयकरे ? अहो गौतम ! जघन्य उत्कृष्ट अन्तर मुहूर्त काल में क्षयकर अहो भगवन् ! वे पुद्गल छूटे हुवे प्राण भूत जीव सत्व को घात करते हैं, मर्दन करते हैं घसते हैं, परस्पर एकेक को घातकरते हैं, एकेक का सपर्श करते हैं परिताप उपजाते हैं किलामना उत्पन्न करते हैं उपद्रव करते हैं ? अहो गौतम ! उक्त प्रकार करते हैं अहो भगवन् ! जिस के शरीर से वे पुद्गल

प्पमाणमत्त खित्तम वाइक्कोप्प नियमा छादास एव तित स्सच अपुण्णे एवातितेसचे फुडे, ॥ तेणं भंते ! खेत्ते केवतिकालस्स आपुण्णे, केवति कालस्स फुडे ? गोयमा ! एगसमएणवा दुसमएणवा, तिसमएणवास, विग्गहेणं एवइ कालस्स आपुण्णे, एवइ कालस्स फुडे ॥ तेणं भंते ! पोग्गले केवति कालस्स निच्छुमति ? गोयमा ! जहण्णणं अंतोमुहुत्तस्स, उक्कोसेणावि अंतोमुहुत्तस्स तण भंते ! पोग्गला निच्छुढास 'माणा जाइ तत्थ पाणाइ भूयाति जीवाइ सत्ताइ अभिहणति वत्तति लेसति

फूट उसे कितनी क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! किसी को वा किंचित् बाधा उत्पन्न करता है उसे तीन क्रिया लगती है, जो विशेष परिताप उत्पन्न करता है उसे चार क्रिया लगती है, और जिन के प्राण चाले होजावे तो पांच क्रिया भी लगती है अहो भगवन् ! वह एक जीव एक वेदना समुद्धात करते बहुत जीवों वेदना समुद्धात करे उस का प्रथम बहुत जीव की घात की आगे उन से भी बहुत जीव मारे गये, और उन से भी आगे बहुत से जीवों मारे गये यों परम्परा से घात होती एक जीव से अन्य जीवों को कितनी क्रिया लगे ? अहो गौतम ! उक्त प्रकार तीन भी लगती है चार भी लगती है और पांच भी लगती हैं अहो भगवन् ! नेरीये को वेदना समुद्धात समोहणे कितनी क्रिया लगती है ?

सघायति सघट्टति परितावेति, किलावेति, उद्दवेति ? हंता गोयमा !
तेहिंताणं भंते ! से जीवे कतिकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए॥ तेणं भंते! ताओ जीवाओ कतिकिरिया? गोयमा! सिय तिकिरिया, सिय चउकिरिया, सिय पंचकिरिया ॥ तेणं भंते ! जीवे तेयजीवा अण्णोसिं जीवाणं परिघाएणं कतिकिरिया ? गोयमा ! तिकिरियावि चउकिरियावि पंचकिरियावि ॥ णेरइएणं भंते ! वेदणा समुग्घाएणं समोहते एवं जहेव जीवे णवरं णेरइयाभिलावो, एवं निरवसेसं जाव वेमाणिये ॥ एवं कसायसमुग्घातेवि भाणियव्वो

अहो गौतम ! जैसा ऊपर जीव का कहा वैसा ही नेरिये का कहना यों यावत् वैमानिक पर्यंत निर्विशेष कहना ऐसे ही कषाय समुद्घात का भी कहना अब मारणांतिक समुद्घात का कथन है । अहो भगवन् ! जीव मारणांतिक समुद्घात समवहत हुवा जो पुद्गल पृष्ट उन पुद्गलों कर कितना क्षेत्र नहीं स्पर्शते हैं कितना क्षेत्र स्पर्शते अहो गौतम ! शरीर प्रमाण चौडा जाडा और लम्बपने में जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट असंख्यात योजन एक दिशामें इतना क्षेत्र आपूर्ण और इतना क्षेत्र स्पर्शा अहो भगवन् ! वह कितने काल में स्पर्शा वह कितने काल स्पर्शा रहे ! अहो गौतम ! एक समय दो समय तीन समय चार समय विग्रहगति के काल पर्यन्त इतना काल नहीं स्पर्शे इतना काल स्पर्शे शेष वैसा ही कहना यावत् स्पर्श

जहण्णेण अंगुलस्स असंखेज्जतिभाग उक्कोसेण संखेज्जाइं जोयणाइं, एगदिसिं विदिसं वा एवइएखेत्ते आपुण्णे एवतिए खेत्तेफुडे, सेणं भंते ! केवति कालस्स आपुण्णे केवति कालस्स फुडे ? गोयमा ! एगसमएणवा दुसमएणवा तिसमएणवा विग्गहेण एवति कालस्स आपुण्णे एवति कालस्सफुडे, सेस तचेव जाव पंचकिरियावि ॥ एव णेरइएणवि णवर आयामेण जहण्णणं अंगुलस्स संखेज्जइभाग उक्कोसेण संखेज्जाइं जोयणाइं एगदिसिं एवतिते खेत्ते केवतिकालस्स तचेव, जहा जीवपदे, एवं जहा णेरइयस्स, तहा असुरकुमारस्स, णवरं एगादिसिं विदिसिंवा, एव जाव थणियकुमारस्स

कहना ऐसे ही नरीये का भी कहना, इतना विशेष लम्बापने में जघन्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट संख्यात योजन प्रमाण एक दिशा में इतना क्षेत्र भरपूरे. इतना क्षेत्र, स्पर्शे कितने काल लगे ! जैसा जीव पद में कहा वैसा कहना यों जैसा नेरीये का कहा वैसा असुर कुमार का भी कहना इतना विशेष एकेन्द्रिय आश्रिय दो दिशा कहना यों यावत् स्थनित कुमार पर्यंत कहना वायुकाय का समुच्चय जीव जैसा कहना जिस में इतना विशेष एकदिशा ही कहना पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक का निर्विशेष जैसा नेरीये का कहा वैसा ही कहना मनुष्य वाणव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक का जैसा असुर कुमार इनका कहा वैसा ही कहना अब तेजस समुद्घात का कहते हैं, अहो भगवन् ! जीव तेजस समुद्घात जिस

वाउक्काइयस्स जहा जीवपदे, णवरं एगादिसिं॥ पंचिंदिय तिरिक्खजोणियस्स निरवसेस जहा णेरइयस्स, मणुस्सवाणमंतर जोतिसिय वेमाणियस्स निरवसेस जहा असुर-कुमारस्स ॥ जीवेणं भंते! तेयसमुग्घाएणं समोहए समोहणित्ता जे पोग्गले निच्छुभति तेहिणं भंते ! पोग्गलेहिं केवतिते खेत्ते आफुण्णे, एवं जहेव वेउव्विय समुग्घाए तहेव णवरं आयामेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असखेज्जतिभाग सेसं तथेव, एव जाव वेमाणियस्स, णवरं पंचिंदिय तिरिक्खजोणियस्स एगादिसिं एवतिए खेत्ते फुडे॥ जीवेणं भंते ! अहारग समुग्घाएण समोहणित्ता जे पोग्गले निच्छुभइ तेहिण भंते! पोग्गलेहिं

पाद जो पुद्गलों निकाले वे कितना क्षेत्र नहीं स्पर्शे यों यावत् जैसा वैक्रेय समुद्घात का कहा तैसा ही कहना परंतु इतना विशेष लम्बाइ में जघन्य अंगुल का असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट संख्यात योजन शेष तैसे ही कहना यों यावत् वैमानिक पर्यंत कहना, जिस में इतना विशेष पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक एकदिशा में इतना क्षेत्र स्पर्शे आहारक समुद्घातका कहते हैं अहो भगवन् ! जीव आहारक समुद्घात समोहकर जो पुद्गलों दूर हैं वे कितना क्षेत्र नहीं स्पर्शे कितना क्षेत्र स्पर्शे ? अहो गौतम ! शरीर के प्रमाण में जाडा चौडा, लम्बापने में जघन्य अंगुल के असंख्यातवा भाग उत्कृष्ट संख्यात योजन एक दिशा में

केवइए खेत्ते आपुण्णे केवइए खेत्ते फुडे? गोयमा! सरीरप्पमाणमेत्ते विक्खंभबाहल्लेणं आयामेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखतिभाग उक्कोसेणं संखेज्जाइं जोयणाइं एगदिसिं एवतिए खेत्ते एगसमएणवा दुसमएणवा, तिसमएणवा, विग्गहेणं एवतिं कालस्स आपुण्णे एवति कालस्स फुडे, तेणं भंते! पोग्गला केवइकालस्स निच्छुभति? गोयमा! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तस्स॥ तेणं भंते! पोग्गला निच्छूढासमाणा जाइं तत्थ पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणंति जाव उद्दवंति तओणं भंते! जीवे कति किरिए? गोयमा! सिय तिकिरिए सिय चउकिरिए सिय पंचकिरिए॥ तेणं भंते! जीवा ताओ जीवाओ

इतना क्षेत्र, काल से एक समय दो समय तीन समय विग्रह गति से इतना क्षेत्र, स्पर्शे, इतना समय काल से स्पर्शे, अहो भगवन्! वे पुद्गल कितने काल में छूटे? अहो गौतम! जघन्य भी उत्कृष्ट भी अंतर्मुहूर्त अहो भगवन्! वे पुद्गल छूटे हुवे वहां आवे वहां प्राणभूत जीव सत्व की घात करे यावत् उपद्रव करे उन को कितनी क्रिया लगे? अहो गौतम! स्यात् तीन स्यात् चार स्यात् पांच अहो भगवन्! आग भी उन जीवों से छूट कर वे पुद्गल अन्य जीव को लगे, अन्य जीवों से छूट अनेक अन्य को लगे, उन जीवों को कितनी क्रिया लगे? अहो गौतम! एक प्रकार तीन चार पांच क्रिया

कति किरिए? गोयमा! एवं चेव॥ तेण भंते! जीवे तेय जीवा अण्णेसिं जीवाण परंपराघाएण कति किरिए? गोयमा! तिकिरियावि, चउकिरियावि पंचकिरियावि॥एवं मणूसेवि ॥१८॥ अणगारस्सणं भंते ! भावियप्पणो केवलि समुग्घाएणं समोहयस्स जे चरिमा निज्जरा पोग्गला सुहुमाणं पण्णत्ता तेपोग्गला सव्वलोगंपियणं फुसित्ताणं चिट्ठंति ? हंता गोयमा ! अणगारस्स भावियप्पणो केवलिसमुग्घाएणं समोहयस्स जे चरिमा निज्जरा पोग्गला सुहुमाणं पण्णत्ता तेपोग्गला समणाउसो! सव्वलोगंपियणं फुसित्ताणं चिट्ठंति ॥ छउमत्थेण भंते ! मणुस्से तेसिं णिज्जरापोग्गलाणं किंचि वण्णेणं वण्णं,

उनसे मागे परम्परा से जीवों की घात होवे उन के कितनी क्रिया लगे ? अहो गौतम ! तीन चार पांच क्रिया लगे ऐसे ही मनुष्य का भी कहना ॥ १८ ॥ अब केवल समुद्घात आश्रिय कहते हैं। अहो भगवन् ! संयम तपादि कर अपनी आत्मा को भावने वाले अनगार (साधु) केवल समुद्घात समोह कर जो अन्तिम निर्जरा के सूक्ष्म पुद्गल कहे हैं अहो श्रमण आयुष्मन्तों ! वे पुद्गलों सब लोक को स्पर्श कर रहते हैं ? अहो गौतम ! भावितात्मा अनगार केवल समुद्घात समोह कर जो अन्तिम निर्जरा के पुद्गल सूक्ष्म पुद्गल कहे हैं अहो श्रमण आयुष्मन्तो ! सर्व लोक को स्पर्श

नेति नवं, गंधेणं गंधं, रसेणं रसं, फासेणं फासं, जाणति पासति ? गोयमा

नो इणट्ठे समट्ठे ! एव सुयाति छउमत्थेण मणुस्से नोवि

किसिणे वन्नेण वन्नेण, गंधेणं गंधे, रसेण रसं, फासेण फासे

गोयमा ! अयण्णं जम्बूद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए

तेल्लापूयसंठाण संठिए वट्टे रहचक्कवाल संठाण संठिते,

संठाण संठिते, वट्टे पडिपुण्ण चंद संठाण संठिते, एगं जोयण

विक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलससहस्साइं दोण्णि

इ एगदिसि एवंतिए

लस्स आपुण्णे एवंति

गोयमा! जहण्णेणावि

त्थ पाणाई भूयाइं

किरिए? गोयमा!

ताओ जीवाओ

कहते हैं अहो भगवन् ! छद्मस्थ मनुष्य कर्म निर्जरा हुवे सूक्ष्म पुद्गलों को

र स्पर्श से स्पर्शकर जानसके देख सके ? अहो गौतम ! यह अर्थ सम

अहो भगवन् ! किस कारन ऐसा कहा छद्मस्थ मनुष्य कर्म निर्जरा के

देखकर, गंध से गंधकर, रससे रसकर, स्पर्श से स्पर्श करने का ज्ञान समर्थ

गौतम-यह जम्बूद्वीप नामक द्वीप सर्व द्वीप समुद्रों के अन्दर का सब से

गंध, स्पर्श, इतना

जघन्य भी उत्कृष्ट

की बात करे यावत्

स्पर्श पांच अहो

तेलों से हुए अनेक

चार पांच क्रिय

तेणिय कोसे अट्ठावीसंच धणुसत तेरस अंगुलाई अद्धंगुलंच किंचि विसेसाहिय परिक्खेवेणं पण्णत्ते देवेणं महिड्डिए जाव महासोक्खे एगमहं सविलेवणं गंध समुग्गयं गहाय तं अवद्दालेति, तमहं एगं सविलेवणं गंधसमुग्गयं अवद्दालइत्ता इणामेवत्तिकट्टु केवल कप्पं जंबूद्दीवं दीवं तिहिं अच्छरानिवातेहिं तिसत्तक्खुत्तो अणुपरियट्टित्ताणं हव्वं मागच्छेज्जा, सेणूणं गोयमा! से केवल कप्पे जंबूदीवे दीवे तेहिं घाण पोग्गलेहिं फुडे ? हंता फुडे छउमत्थेणं गोयमा! मणूसे तेसिं घाणपोग्गलाणं किंचि वण्णेणं वण्णं गंधेणं गंधं, रसेणं रसे, फासेणं फासे जाणति पासति ? भगवं! णो इणट्ठे

गोल मतिपूर्ण चन्द्रमा के संस्थान से संस्थित एक लाख योजन का लम्बा चौडा, तीन लाख सोलहजार दो सो सत्तावीस योजन तीन गाउ एकसो अठावीस धनुष्य साडीतेरे अंगुल से किंचित विशेष परीधि है कोइ देवता महाऋद्धिक यावत् महासौख्यवान एक विलेपन सुगंधी द्रव्य से भरा हुवा डब्बा हस्त में धारन कर उस का मुख खुला रखे उस सुगंधी चूर्ण का डब्बा खुला रखता सम्पूर्ण जम्बूद्वीप को तीन चपटी बजाय इतने में इक्कीस चक्कर लगाकर पुनः पीछा आवे अहो गौतम! सम्पूर्ण जम्बुद्वीप में रहे जीव की उस सुगंधी चूर्ण के द्रव्यपुद्गल नासिका का को स्पर्श हुवा? अहो भगवन्! स्पर्श हुवा गौतम!
[illegible] वर्ण से वर्णकर, गंध से गंधकर रस से रसकर स्पर्श से

समट्ठे से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चति छउमत्थेणं मणुस्से तेसिं निज्जरापोग्गलाण णो किंचि वण्णेण वण्ण, गंधेण गंधं, रसेणरस, फासेणफासे जाणति पासति, ए सुहुमाण ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्वलोगपियणं फुसित्ताण चिट्ठति ॥ १९ ॥ कम्हाण भंते ! केवलि समुग्घायं गच्छति ? गोयमा ! केवलिस्स चत्तारि कम्मंसा अक्खीणा अवेदिता अणिज्जिणा भवति तंजहा वेयणिज्जे, आउए, णामे, गोत्ते, सव्वबहुए से वेदणिज्जे कम्मे हवति सव्वत्थोवे से आउए कम्मे भवति, विसमसम करेति बंधणेहिं ठितीहिय विसम समीकरणताए बंधणेहिं ठितीहिय, एव खलु केवली

स्पर्शकर जाने की यह अमुक द्रव्य और है दृष्ट क्या? अहो भगवन् ! यह अर्थ समर्थ नहीं इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा है कि छद्मस्थ मनुष्य उन निर्जरा के पुद्गलों को किंचितमात्र भी वर्ण से वर्णकर, गंध से गंधकर, रस से रसकर स्पर्श से स्पर्शकर जाने देखे नहीं इस प्रकार के सूक्ष्म पुद्गल वे कहे हैं अहो श्रमण आयुष्मतो ! वे पुद्गलों सर्व लोक का स्पर्श कर रहे हैं ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! किस कारन से केवली समुद्घात होती है? अहो गौतम! केवली के चार कर्म क्षीण नहीं होवे विना भद रहे, निर्जरा नहीं हुई उन चार कर्म के नाम १ वेदनीय कर्म, २ आयुष्य कर्म, ३ नाम कर्म, और गोत्र कर्म इन में सब से अधिक प्रदेशों वाला तो वेदनीय कर्म रहा और सब स्वल्प प्रदेश वाला (थोडा) आयुष्य कर्म रहा, यह विषम

समोहणति ॥ एव समुग्घाय गच्छइ ॥ २० ॥ सव्वेविण भंते ! केवली समोहण्णइ, सव्वेविण भंते ! केवली समुग्घाय गच्छति ? गोयमा ! णो इणट्ठसमट्ठ ॥ ! जस्साउपुण तुल्लाइ बंधणेहिं ठितीहिय भवोवग्गहकम्माइ समुग्घाय सेण गच्छति आगताण समुग्घायं अणता केवली जिणा जरामरण विप्पमुक्का सिद्धिंवरगतिंगता ॥ २१ ॥ कति समइएणं भंते !

(ज्यादा कम) है इन का सम [बराबर] करने वास्ते जघन्य आत्मप्रदेश के साथ लोलीभूतपना किया उन की स्थिति को विषम का सम करन बंधन की स्थिति कहिये यों निश्चय केवलीके समुद्घात होती ॥२०॥ अहो भगवन् ! सब केवल ज्ञानी के समुद्घात होती है ? अहो भगवन् ! सब केवली समुद्घात करते हैं ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं, परन्तु जिस के आयुष्य कर्म की अन्य कर्मों के तुल्य बन्ध स्थिति न होवे वे मनोपग्राही कर्म को सम करने को समुद्घात करते हैं और अनंत केवली जिनेश्वर बिना समुद्घात किये ही जरा मरण विमुक्त हो सिद्ध भगवानगति को गये हैं (बहु अर्थी पन्नवना में लिखते हैं जिन का छ महीना बाकी आयुष्य रहे उन को केवल ज्ञान उत्पन्न होवे उस में कोईक विषम कर्म केवल समुद्घात करते हैं शेष समकर्म वाले और छ महीने से नास्ति आयुष्य वाले को केवल ज्ञान उत्पन्न हुवा हो उनके केवल समुद्घात नहीं होती है यह कथन गोमट्टसार ग्रन्थ में भी है) ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! कितने समय में आत्मा

समट्ठ से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति छउमत्थेणं मणुस्से तेसिं निज्जरापोग्गलाण णो किंचि वण्णेणं वण्णं, गंधेणं गंध, रसेणरस, फासेणफासे जाणति पासति, ए सुहुमाणं ते पोग्गला पण्णत्ता समणाउसो ! सव्वलोगंपियणं फुसित्ताण चिट्ठति ॥ १९ ॥ कम्हाणं भंते ! केवलि समुग्घायं गच्छति ? गोयमा ! केवलिस्स चत्तारि कम्मंसस असा अक्खीणा अवेदिता अणिज्जिणा भवति तजहा वेयणिज्जे, आउए, णामे, गोते, सव्वबहुए से वेदणिज्जे कम्म हवति सव्वत्थोवे से आउए कम्मे भवति, विसमसमं करेति बंधणेहिं ठितीहिय विसम समीकरणताए बंधणेहिं ठितीहिय, एव खलु केवली

एथकर माने की यह अमुक द्रव्य और है इस क्या! अहो भगवन् ! यह अर्थ समर्थ नहीं इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा है कि छद्मस्थ मनुष्य उन निर्जरा के पुद्गलों को किंचितमात्र भी वर्ण से वर्णकर, गंध से गंधकर, रस से रसकर स्पर्श से स्पर्शकर माने वस नहीं इस प्रकार के सूक्ष्म पुद्गल वे कहे हैं अहो श्रमण आयुष्मन् ! वे पुद्गलों सर्व लोक का स्पर्श कर रहे हैं ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! किस कारन से केवली ...घात होती है? अहो गौतम! केवली के चार कर्म क्षीण नहीं होवे विना वेदे रहे, निर्जरा नहीं हुई उन नाम १ वेदनीय कर्म, २ आयुष्य कर्म, ३ नाम कर्म, और गोत्र कर्म इन में सब से अधिक वेदनीय कर्म रहा और सब स्वल्प प्रदेश मात्रा (थोडा) आयुष्य कर्म रहा, यह विषम

अट्ठसमइए पण्णत्ते तंजहा पढमे समए दंडकरेति बीए समए कवाड करोति, तत्तिए

ि उत्तर दिशा में मुख हो पूर्व पश्चिम दिशा में कपाट करे [उस कपाट के समय में १ साता वेदनिय, २ ...गात ३ मनुष्यगति ४ देवानुपूर्वी ५ मनुष्यानुपूर्वी, ६ पंचेन्द्रिय जाति, पांच शरीर, एवं ११, तीन अंगोपांग एवं १४ प्रशस्त वर्णादि ४ एवं १८ प्रथम संघयन प्रथम संस्थान २०, अगुरुलघु नाम २२ पराघात नाम, २३ उश्वास नाम २४ प्रशस्त विहायगति, २५ त्रसनाम, २६ बादर नाम २७ पर्याप्त नाम, २८ प्रत्येक नाम २९ आताप, ३० उद्योत ३१ स्थिर, ३२ शुभ, ३३ सौभाग्य, ३४ सुस्वर, ३५ आदेय, ३६ यशकीर्ति, ३७ निर्माण नाम, ३८ तीर्थंकर नाम, और ३९ ऊंच गोत्र इन ४० प्रकृतियों के अनुभाग में अप्रशस्त प्रकृति के अनुभाग क्षपकर घातकरे उस समुद्धात के ऊपर की स्थिति का जो असंख्यातवा भाग में का एक भाग के फिर असंख्याते भाग करे २९ प्रकृति सब के भी अनंत भाग करे उस ... कपाट के समय में स्थिति के असंख्यातवे भाग की घातकरे, फिर एक भाग असंख्यातवा रहे और एक अवशेष एक अनुभाग मारकर अनंत अनुभाग का घात करे] ३ तीसरे समय उस कपाट का प्रतर (पूरा) करे, उस समय अवशिष्ट रहा जो स्थिति उसका एक असंख्यातवा भाग के असंख्यात भाग करे, और एक अनंतवा भाग रहा है उस प्रकृति के एक भाग के भी फिर अनुक्रम से अनंत भाग करे तब तीसरे समय स्थिति के असंख्यातवे भाग की घात करे और पहिले की स्थिति का

आउजीकरणे पण्णत्ते ? गोयमा ! असंखेज्ज समइए अंतोमुहुत्तिए आउजीकरणे पण्णत्ते ॥ २२ ॥ कतिसमइएणं भंते ! केवलीसमुग्घाए पण्णत्ते ? गोयमा !

करण [मनादि के योग की उद्वता हो आत्मा का मोक्ष सन्मुख करने का] कहा है ? अहो गौतम ! असंख्यात समय के अंदर मुहूर्त काल में आउज्जी करन होता है, ॥ २२ ॥ अहो भगवन् ! केवल समुद्घात कितने समय की कही है ? अहो गौतम ! आठ समय की केवल समुद्घात कही है तथथा—१ आत्म प्रदेश का अपने शरीर प्रमान जाडा चौडा और चउदह राजलोक प्रमान दंडकर (उस वक्त वेदनीय नाम गोत्र कर्म की स्थिति पल्योपम के असंख्यातवे भाग मात्र रहे और आयुष्य थोडा होवे या वेदनीय नाम गोत्र कर्म की ज्यादा है उस की स्थिति का नाश करके असंख्यात भाग कर वहां दंडक समय देह करतेही असंख्यात भाग की घात कर, और एक संख्यातवा भाग बाकी रहे और शेष जो कर्म है उन की प्रकृति का अनंत भाग करे उन के नाम-१ प्रथम संस्थान छोडकर पांच संस्थान, प्रथम संघयन छोडकर पांच संघयन, असाता वेदनी एवं ११ अप्रशस्त वर्णादि चार, उपघात नाम, अप्रशस्त विहायगति, दुर्भाग्य नाम, अस्थिर नाम, अपर्याप्त नाम, अशुभ नाम अनादेय नाम, अपयशकीर्ति नाम, नीच गोत्र इन २९ प्रकृति के पुद्गल के अनंत विभाग हैं उस में का एक अनंतवा विभाग छोडकर नाश करे)२ दूसरे समय जो पूर्वोक्त करती वक्त पूर्वदिशा में मुख होवे उत्तर दक्षिण दिशामें कपाट करे

छट्ठेसमए मथं पडिसाहरति, सत्तमेसमए कवाड पडिसाहरति, अट्ठमेसमए दडपडिसाहरति

अनंतगुन अधिक है वे चौथे समय में रह ५ पांचवे समय में जो चौथे समय में लोकान्तर आत्म प्रदेश कर पूर्ण किया था उसे आकर्ष कर सहारे. चौथे समय शेष तीनों कर्मोंकी स्थितिका जो असंख्यातवा भाग कहा है और प्रकृति के अनुभाग का अनंतवा भाग रहा है उस का फिर बुद्धि कर अनुक्रम से असंख्यातवा एक भाग के फिर असंख्यात भाग करे और अनंतवे भाग करना वहां अवकाशका अन्तर के पांचवे संहरन समय जो तीनों कर्मकी स्थिति के असंख्याते भाग की घात करे शेष एक असंख्यातवा भाग छोडे और अनुभाग के अनंतवे भाग की घात करे शेष एक अनंतवा भाग और रहे यहां दण्डादिक के प्रथम समय से लगाकर पांच न लोक संहारन समय तक प्रत्येक समय २ तीनों कर्मों की स्थिति का कर और प्रकृतिका अनुभाग के अनंत भाग रूप कर के घात कर, यह यहां पांच वे समय के बाद आयुष्य २ तीनों कर्म की स्थिति के प्रकृति के अनुभाग का सर्व समान अन्तर मुहूर्त के काल में बराबर करे और यहां छठ समय से आरंभ कर जो स्थिति के परमाणु अन्तर मुहूर्त के काल में विनाश करे, यह तो यहां पीछे के समय से प्रत्यक्ष पने से भेद भाव होवे इसलिये पश्चादि समय में सब के टुकडे २ समय २ में एक २ खण्ड में जितना अणु है उस ने काल में अन्तर मुहूर्त का चरम समय सब टुकडे उदीरणा करे, क्षयकरे यों अन्तर मुहूर्त के काल स्थिति अणु के

समए मथकरेति, चउत्थे समए लोगपुरेति, पंचमेसमएलोगं पडिसाहराति,

असंख्यातवा भाग छोड और अप्रशस्त प्रकृति के २८ के अनुभाग अनंत भाग कर के एक भाग छोडे अनुभाग के अनंते भाग की घात करे, एक अनंत छोडे भाग करे प्रशस्त प्रकृति के अनुभाग की घात करे प्रशस्त प्रकृति के अनंत अनुभाग है उन को अप्रशस्त प्रकृति के अनुभाग में प्रक्षेप कर घात करे, यहांभी फिर तीसरे समय अवशेष काल की स्थिति और अनुभाग रहे ४ चौथे समय मथन में जो लोक की जगह खाली रही हो उसे लोक के अन्त तक पूर्ण करे संपूर्ण लोक को पानी के घट की परे आत्म प्रदेश कर परिपूर्ण भर दे (उस समय तीसरे समय में अल्प काल की स्थिति रही है एक असंख्यातवा भाग रहा है. अन्य प्रकृति का एक अनंतवा भाग रहा है उस का बुद्धिकर अनुक्रम से काल की स्थिति के असंख्यातवे एक भाग के और भी असंख्यात भाग करे अन्य प्रकृति का एक अनंतवा भाग के फिर अनंत भाग करे वे चौथे समय जिस स्थिति के असंख्यातवे भाग की घात करे और एक भाग छोडे वह असंख्यातवा भाग शेष रहे अन्य प्रकृति के अनुभाग का एक अनंतवे भाग की घात करे वह एक अनंत भाग शेष रहे यह भी प्रशस्त प्रकृति के अनंत अनुभाग पीछे के भाग साथ ही घात कर यों स्थिति की और प्रकृति की घात करे, इस तरह चौथे समय में केवली भगवंत के वेदनीयादिक की स्थिति आयुकर्म की स्थिति से असंख्यातगुनी अधिक थी और प्रकृति का अनुभाग है वे अनुभाग

छट्ठेसमए मथं पडिसाहराति, सत्तमेसमए कवाड पाडिसाहराति, अट्ठमेसमए दंडपडिसाहराति

अनंतगुन अधिक है वे चौथे समय में रहे ५ पांचवे समय में जो चौथे समय में लोकान्तर आत्म प्रदेश कर पूर्ण किया था उसे आकर्ष कर सहारे चौथे समय शेष तीनों कर्मोंकी स्थितिका जो असं ख्यातवा भाग रहा है और प्रकृति के अनुभाग का अनंतवा भाग रहा है उस का फिर बुद्धि कर अनुक्रम से असंख्यातवा एक भाग के फिर असंख्यात भाग करे और अनंतव भाग करना यहां अपकाशका अन्तर के पांचवे संहरन समय जो तीनों कर्मकी स्थिति के असंख्या गते भाग की घात करे शेष एक असंख्यातवा भाग छोडे और अनुभाग के अनंतवे भाग की घात करे शेष एक अनंतवा भाग और रहे यहां दंडादिक के प्रथम समय से लगाकर पांच वे लाक संहारन समय तक प्रत्येक समय २ तीनों कर्मों की स्थिति का रूप और प्रकृतिका अनुभाग के अनंत भाग रूप कर के घात कर, वह यहां पांच वे समय के बाद आयुष्य १ तीनों कर्म की स्थिति के प्रकृति के अनुभाग का सर्व समान अन्तर मुहूर्त के काल में बराबर करे और यहां छठे समय से आरम्भ कर जो स्थिति के परमाणु अन्तर मुहूर्त के काल में विनाश कर, वह तो यहां पीछे के समय से प्रथम पने से भेद भाव होवे इसलिये पश्चादि समय में सब के टुकडे २ समय २ में एक २ पक्ष में जितना अणु है उतने काल में अन्तर मुहूर्त का चरम समय सब टुकडे उदीरणा करे, क्षपकरे यों अन्तर मुहूर्त के काल स्थिति अणु के

पड पाडेसाहरित्ता ततो पच्छा सरीरत्थे भवति॥ २३ ॥सेण भंते ! तहा समुग्घाय गते किं मणजोग जुंजति,वइजोग जुंजइ कायजोग जुंजति? गोयमा! णो मणजोग जुंजति णो वइजोग जुंजति, कायजोगजुंजति ॥ कायजोगेण भंते ! जुंजमाणे किं ओरालिय सरीर कायजोगं जुंजति, ओरालिय मिस सरीर कायजोग जुंजति, किं वेउव्विय

अनुभाग के अवस्थाके चरम समय में सर्व आयुष्य की स्थिति अनुभाग अणु असंख्यात सम काल में क्षय करे इसलिये पांचवे समय लोक साहरन कर सर्व स्थिति बराबर करे छठे समय जो तीसरे समय में मथन रूप किये थे उन प्रदेशों को आकर्ष का संहरे वह स्थिति क प्रकृति के अनुभाग का आयुष्य का शरीर व अणु क्षपावे, फिर ७ सात वे समय में दूसरे समय में जो कपाट कियाथा उसको आकर्षे यहां स्थिति के पृथ क्करण किया का था उसका आकर्ष करे यहां भी चारों कर्मके अणु एक स क्षय करे इस प्रकार दंडक सर्व प्रदेश हरन करके सर्व प्रदेशों का स्वतः के शरीर में समावेश करके पुरुषपने ॥ २३ ॥ अहो भगवन् ! उस समुद्घात को करते हुवे क्या मन योग प्रयुंजते हैं, वचन योग को प्रयुंजते हैं कि काया योग को प्रयुंजते हैं ? अहो गौतम ! मन योग को और वचन योग को नहीं प्रयुंजते हैं परंतु काया योग को प्रयुंजते हैं यदि काया जोग को प्रयुंजते हैं तो क्या उदारिक कायजोग को प्रयुंजते हैं कि औदारिक

सरीर काय जोग जुजति वेउव्विय मीस सरीर काय जोग जुजति, किं आहारग सरीर काय जोग जुंजति, आहारग मीस सरीर कायजोग जुजति, किं कम्मग सरीर काय जोग जुजति ? गोयमा ! ओरालिय सरीर काय जोग जुजति, ओरालिय मीस सरीर कायजाग जुजति, णो वेउव्विय सरीर काय जोग जुजति, णो वेउव्विय मीस सरीर काय जाग जुजति, णो आहारग सरीर कायजोग जुजइ, णो आहारग मीस सरीर कायजोग जुजति कम्मगसरीर कायजोग जुजति पढमट्ठमेसु समएसु ओरालिय सरीर कायजोग जुजइ बीतियछट्ठसत्तमेसु समएसु आरालिय

मिश्र काया योग को प्रयुंजते हैं कि वैक्रयकाया योग को प्रयुंजते कि वैक्रय मिश्रकाय योग को प्रयुंजते हैं आहारक काया योग को प्रयुंजते हैं, कि आहारक मिश्र काया योग को प्रयुंजते हैं, कि कार्मन काया योग को प्रयुंजते हैं ? अहो गौतम ! औदारिक काया योग प्रयुंजते हैं, औदारिक मिश्र काया योग प्रयुंजते हैं, वैक्रय काया योग नहीं प्रयुंजते हैं, वैक्रय मिश्र काया योग नहीं प्रयुंजते हैं, आहार काया योग नहीं प्रयुंजते हैं, आहारक मिश्रकाया योग नहीं प्रयुंजते, परंतु कार्मन काया योग प्रयुंजते हैं, इसमें पहिले समय और आठवे समय में औदारिक काया योग को प्रयुंजते हैं, दूसरे छठे सातवे समय औदारिक मिश्र काया योग प्रयुंजते हैं, तीसरे चौथे और पांचवे समय कार्मन योग प्रयुंजते हैं यहां केवली अनाहारिक होते हैं (वन

भीसा सरीर कायजोग जुजति, ततिय चउत्थ पंचमेसु समएसु कम्मग सरीर कायजोग जुंजति ॥२४॥ सेण भंते ! तहा समुग्घाय गते सीज्झति बुज्झति मुच्चति परिनिव्वाति सव्वदुक्खाण अंत करति ? गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे ॥ सेण ततो पडिनियत्ति पडिनियत्तित्ता इह मागच्छइ २ त्ता ततो पच्छा मणजोगंपि जुंजति, वइजोगंपि जुंजति, कायजोगंपि जुंजति ॥ मणजोगेण जुंजमाणे किं सच्चमणजोग जुंजइ मोसमण जोग जुंजति सच्चामोसमण जोग जुंजति, असच्चामोसमण जोग जुंजति ? गोयमा ! सच्चमण

तब इस भाव में से मनबल, वचनबल और श्वासो श्वास बिना अस भाव केवली के पाते हैं) ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! केवल ज्ञानी समुद्घात करते हुवे सिद्ध बुद्ध मुक्त परिनिर्वाण हो सर्व दुःख का अन्त करते हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं अर्थात् तत्काल सिद्धबुद्ध मुक्त नहीं होते हैं परंतु उस समुद्घात से मार्गनिवृत्त होकर यहां आते हैं अर्थात् शरीरस्थ होते हैं [ग्रन्थकार लिखते हैं कि समुद्घात होती वक्त केवली के आठ रुचक प्रदेश लोक के मध्य पर्वतमे रुचक आदि रुचक प्रदेश के स्थान रहते हैं तथा संपूर्ण लोक में घन के आत्मा के प्रदेश फैलाये जाते हैं, नहीं तो लोक के बाहिर निकल जावे किन्तु ऐसा होना असंभव है शास्त्रकामी फरमान है कि एक आत्म के प्रदेश लोक समान है] फिर मनयोग भी युंजते हैं वचन योगभी युंजते हैं और काययोग भी युंजते हैं ॥ अहो भगवन् ! मनयोग

जोग जुजति, णो मोसमणजोग जुजति णो सच्चामोसमणजोग जुजति, असच्चामोस मणजोग जुजति ॥ वतिजोग जुजमाण किं सच्चवइ जोग जुजति, मोसवइजोग जुजति, सच्चामोसवइजोग जुजति असच्चामोसवइजोग जुजति ? गोयमा! सच्चवतिजोग जुजति, णो मोसवइजोग जुजति, णो सच्चामोसवतिजोग जुजति, असच्चामोसवइजोगं जुजति ॥ कायजोग जुजमाणे आगच्छज्जवा, गच्छेज्जवा, चिट्ठेज्जवा, निसिएज्जवा तुयट्टेज्जवा उल्लंघज्जवा, पल्लंघेज्जवा, पाडिहारिय पीढफलगसेज्जा संथारग पच्चप्पिणेज्जा,

युंजते हुवे क्या सत्यमनयोग युंजते हैं कि मृषामनयोग युंजते हैं कि मिश्रमनयोग युंजते हैं कि व्यवहार मनयोग युंजते हैं? अहो गौतम! सत्यमनयोग और व्यवहार मनयोग युंजते हैं किन्तु असत्यमन और मिश्रमनयोग नहीं युंजते हैं वचन योग युंजते हुवे क्या सत्यवचनयोग युंजते हैं कि असत्यवचनयोग युंजते हैं, कि मिश्रवचन योग युंजते हैं कि व्यवहार वचन योग युंजते हैं? अहो गौतम! सत्य और व्यवहार वचन योग युंजते हैं किन्तु असत्य व मिश्रवचन योग नहीं युंजते हैं और काययोग युंजते हुवे आवागमन करते हैं, खडे रहते, बैठते हैं शयन करते हैं, उल्लंघन, पल्लंघन करते हैं, पडिहारे लाये हुवे पीढा संथारक पीठफलग पीछे देते हैं [पन्नवणा पन्ना में लिखा है कि पवरूमस हु भासमणो मिन्त्र महुत्तो विमेसओ, कालो अभासरमेयं, छम्मासमुक्को समुग्घायंति अथात् आयुष्य के छमास से रहते हैं तब समुद्घात की वांछा करते हैं जघन्य अन्तर मुहूर्त

ततो अणतर सुहुमस्स पणगजीवस्स अपज्जत्तयस्स जहण्णजोगिस्स हेट्ठा असंखेज्ज गुण परिहीण तच्च कायजोग निरुभइ सेण एतेण उवाएण पढम मणजोग निरुभति पढम मणजोग निरुभित्ता, वतिजोग निरुभति, वतिजोग निरुभित्ता, कायजोग

नीलन फूलन क अपर्याप्त का जो प्रथम समय का उत्पन्न हुआ काया योग उतना जघन्य काया योग से भी अवर धीर्यवाला, उस से भी नीच का योग असंख्यातगुना हीन, असंख्यातवे भाग हीन उसे समय २ निरुंधन करते यों असंख्यात समय में काया योग का निरुंधन करे इस का निरुंधन करते सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाती तीसरे शुक्ल ध्यान के पायमे ऊपर चढम उदारिक शरीरमें रहे विवर-छिद्र पूणकरे तब शरीर के तृतीय भाग प्रदेशरहे यों तीसरा काया योगका निरुंधन कर फिरभी उक्त उपायमे प्रथम मनयोगको रूपे, मनयोग योग को रूंधकर वचनयोग को रूंधे, वचनयोग को रूंधकर कायायोग का रूंध कायायोग को रूंधकर योगका सर्वथा निरुंधन करे, योगका सपूर्ण निरुंधन कर यों योग के निरुंधन कालान्तर अन्तिम अन्तर मुहूर्त में पहली आदि तीनों कर्म की प्रकृति को अलग २ संक्रमकर और भी संक्रमने योग्य कर, कर के उन की अन्तिम प्रदेशकी रचना कर, वह इस प्रकार-प्रथमतो कर्म के बहुत स्थितिवाले प्रदेश का निर्जरे दूसरे समय असंख्यात गुनहीन निर्जरे, यों तीसरी वक्त कम निर्जरे, यों चरमस्थ स्थिति को

निरुभति, कायजोगं निरुंभित्ता जोगनिरोहं करेति जोगनिरोह करेत्ता अजोगत्त पाउणइ २ त्ता, ईसि हस्सपंचक्खरुच्चारणद्धाए असंखेज्ज समइय अंतोमुहुत्तिय सेलेसिं पडिवज्जइ, पुव्वरइयगुण सेढीय चणं कम्मं तीसे सेलेसि मद्धाए असंखेज्जाहिं

स्थापना ० ० ० ० ० ० ० दूसरी रचना प्रथम थोडे निर्जरे फिर ज्यादे निर्जरें, इस की स्थापना ० ० ० ० ० ० ० तीसरी स्थिति की रचना, तीसरी प्रथम सम थोडे निर्जरे फिर सम विषम निर्जरे ० ० ० ० ० ० ० ० चौथी रचना प्रथम बहुत फिर सम ० ० ० ० ० ० ० ० पांचवी रचना समय२ प्रति असंख्यातगुन निर्जरे ० ० ० ० ० ० ० ० यह मनयोग निरुपन का कहा, वैसा ही वचन जोग का भी करना यों तीसर विभाग काया जोग के पुद्गल सकेल कर अयोगीपना का प्राप्त करे यों अजोगी पने के सन्मुख होकर स्तोक (थोडा) काल शैलेशीपना प्राप्त करने पर कहते हैं "अ इ उ ऋ लृ" इन पांच अक्षरों के उच्चार करनेका जितना काल है उतना काल कर्मों इतने काल में पुन श्रेणि कर प्रथम समय बहुत कर्म निर्जरें दूसरें तीसरें समय थोडे ? कर्म निर्जरें, उनकी स्थापना ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० ० इस प्रकार से कर्म सब

गुणसेढीहिं असखेज्जकम्म खवे खवयंति सवइत्ता वेदणिज्जाउयणामगोत्ते, इवत्ते घचारि कम्म से जुगव खवेइ २ त्ता ओरालिय तया कम्मगाइ सव्वाहिं विप्पजहं-पणाहिं विप्पजहइ २ त्ता उज्जुसेढी पडिवण्णे अफुसमाणगती एग समएण अविग्गहेण

करते दस प्रकार गुनश्रेणि की रचना करे यों असख्यात समय का अन्तर मुहूर्त प्रमाण होवे तब फिर मेरु पर्वत की तरह निश्चय समस्त भावना के स्थिर पने की स्थापना अवस्था पाव. इस तरह सब प्रवर रूप चारित्र ग्रहण करे, वह निष्पन्न करे, गुन श्रेणिकर कर्म क्षय करे, कम क्षय करन रूप यों प्रथम कर्मका बहुलापना फिर अल्पपने रूप बहुत कर्म निर्जरे फिर दुसर समय थोडे निर्जरे, तीसरे समय उस से भी थोडे निर्जरे, स्थापना उक्त प्रकार ही जानना यों कालान्तर में भोगवने योग्य कर्म प्रथम समय योग, फिर ज्यादा यों शीघ्रतासे कर्म क्षय करे शैलेशीरूप निश्चलपने रहकर इतने काल में असख्यात गुन श्रेणि कम क्षय रूप होके यों समय २ असख्यात गुनश्रेणि की स्थापनाकर असख्यात कर्म स्कन्धका क्षयकर अनंत भेद कर्मोंश क्षय करे यों क्षय करता हुआ वेदनी आयुष्य नाम गोत्र चारों कर्मोंका एक साथ क्षय करे, क्षय कर के उदारिक तेजस कार्माण तीनों शरीर को सर्व प्रकारे दुर करे, प्रथम योग प्रदेश फिर बहुत प्रदेश यों सर्व शरीर ा समश्रेणि प्रतिपन्न बंधनमुक्त ऊपर ऊर्ध्वगतिके

दसणणाणोवउत्ता णिट्ठियट्ठा णीरया णिरेयणा निम्मला वितिमिरा
विसुद्धा सासयमणागयद्धं कालं चिट्ठंति ॥ २६ ॥ से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति

जितने आत्म प्रदेश अवगाहे उतने आकाश प्रदेश स्पर्शता हुवा सीधी श्रेणिसे जावे किन्तु इधर उधर न मुडे इसलिये अस्पर्शमानगति कही है, जिस समय इन चारों कर्मोंका नाश हुवा उसही समय एकही समय में वक्रगति रहित सिद्ध क्षेत्र को प्राप्त करे, उतनेही आकाश प्रदेश सिद्ध क्षेत्र के अवगाह कर सिद्ध स्थान में रहे, साकार ज्ञान उपयोग सहित ॥ किन्तु प्रदेश उपयोग उस वक्त नहोवे क्यों कि एक समय में दो उपयोग नहीं होते हैं। इस प्रकार वहां लोकाग्र में सिद्ध होवे उदारिकादि पांचों शरीर रहित आत्मा के सघन प्रदेश सहित केवल ज्ञान, केवल दर्शन के उपयोग युक्त सर्व प्रकार के कार्य क्षोष सर्व प्रयोजन पूर्ण हुवे कर्म रहित आगामिक काल में भी कर्म का बन्ध नहीं करते प्रदेशो के हलन चलन रहित निश्चल, भोक्रिय होने से कर्म रजका अस्पर्श्य पुन बन्धे कर्म क्षय होने से कर्म रहित तथा द्रव्य मेल रहित अज्ञान रूप तमिस्र रहित अत्यन्त विशुद्ध अविनाशी शाश्वत, अनागत अनंत काल पर्यन्त यहां सिद्ध बनकर रहे ॥ २६ ॥ अहो भगवन् ! ऐसा किस कारन से कहा कि वे वहां सिद्ध होते है शरीर रहित होकते

तेण तत्थसिद्धा भवति असरीरी जीवघणा दसणणाणोवउत्ता णिट्ठियट्ठा णीरया णिरेयणा निम्मला वितिमिरा विसुद्धा सासयमणागद्ध काल चिट्ठति ? गोयमा ! स जहा णामए बीआण अग्गिदड्ढाण पुणरवि अकुरुप्पत्ति ण भवति एवामेव सिद्धाणवि कम्मबीएसु दड्ढेसु पुणरवि जम्मुप्पत्ति नभवइ से तेणट्ठेण गोयमा ! एव वुच्चति तेण तत्थ सिद्धा भवति असरीरा जीवघणा दसणणाणोवउत्ता णिट्ठियट्ठा णीरया णिरेयणा विनिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सासय मणागयद्ध काल चिट्ठति ॥ २७ ॥ णिच्छिण्ण सव्वदुक्खा जाति जरा मरण बधण विमुक्का,

जीव सघन प्रदेश रहते हैं दर्शन ज्ञान के उपयोग सहित हैं, सर्व अर्थ के साधक हैं, कर्म रज रहित हैं, निश्चल हैं, क्रिया कम की रज रहित हैं, निर्मल, अज्ञान तमिस्र तिमिर रहित विशुद्ध शाश्वत,अनागत कालमें अनंत काल तक रहते हैं ! अहो गौतम ! यथादृष्टान्त भूंजा हुआ धनाज, अथवा बीज अग्नि में दग्ध किया हुवा पुनरपि वह अंकूर उत्पत्ति नहीं कर सकता है इसही प्रकार सिद्ध भगवतने भी कर्म बीज का दग्ध कर दिया पुनरपि भवांकूर को उत्पन्न नहीं करते हैं इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा है वे वहां सिद्ध होते हैं, शरीर रहित जीव के सघन प्रदेश युक्त केवल ज्ञान केवल दर्शन के उपयोग युक्त निष्ठितार्थ सर्व कार्य साधक प्रयोजन सम्पूर्ण हुवे कर्म रज रहित हुवे हैं, निश्चल हुआ है क्रिया रहित कर्म रहित निर्मल, अज्ञान तमिस्र रहित, विशुद्ध शाश्वत अनागत काल में रहते हैं ॥ २७ ॥ अ[illegible] उप मक्रम अतिशय से

सासय मव्वाबाह चिट्ठति सुही सुहपत्ता ॥ इति पण्णवणा भगवईए समुग्घाय पए छत्तिसमं सम्मत्त ॥ ३६ ॥ * * * * *

जन्म जरा मरणादि सब दुःखसे विमुक्त बन हुए शाश्वत अव्याबाध सुखको सुख में सदैव रहते है ॥ इति पन्नवना भगवती का समुद्घात नामक छत्तीसवा पद समाप्तम ॥ ३६ ॥ + + + ×

* इति पञ्चदश *

पण्णवणा सूत्र समाप्तम्. ॥

वीर संवत २४४९ मगसर शुक्ला १४ वार चंद्र